स्वाध्याय स्वमन्थन स्वावलम्बन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

उत्तर प्रदेश सरकार का एकमात्र मुक्त विश्वविद्यालय

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

B.T.S.-05
पारिस्थितिकी, पर्यावरण और पर्यटन

IGNOU

खण्ड - 1 : हमारा पर्यावरण - एक परिचय
खण्ड - 2 : पर्यावरण और संरक्षण कर्तव्य बोध
खण्ड - 3 : पर्यावरणीय समस्याएँ एवं पर्यटन विकास
खण्ड - 4 : पर्यावरण, समुदाय और पर्यटन
खण्ड - 5 : पर्यटनः संरक्षण के साधन के रूप में
खण्ड - 6 : नीति एवं ढाँचागत सुविधाएं
खण्ड - 7 : दबाव एवं न्यूनतम सीमारेखाएं
खण्ड - 8 : पर्यावरण पर प्रभाव
खण्ड - 9 : पर्यावरणीय प्रभाव - 2



सेक्टर-एफ, शान्तिपुरम, फाफामऊ, प्रयागराज-211021

www.uprtou.ac.in

टोल फ्री नम्बर - 1800-120-111-333

खंड

1

हमारा पर्यावरण – एक परिचय

इकाई 1
हमारा पर्यावरण 5

इकाई 2
प्रकृति में संयोजन 18

इकाई 3
विश्व के जीवोम 36

इकाई 4
प्रकृति में समुदाय 58

विशेषज्ञ समिति

श्री अजय माहुरकर
इतिहास संकाय
इग्नो

श्री अशोक चंदोला
टूरिज्म कंसलटेंट
नई दिल्ली

श्री आशिष कुमार सिंह
मैनेजिंग डायरेक्टर
केरल टूरिज्म डेवलेपमेंट
कारपोरेशन
त्रिवेंद्रम

डॉ. गीता कैकर
विज्ञान विद्यापीठ
इग्नो

डॉ. इकबाल मलिक
निदेशक, वातावरण
नई दिल्ली

श्री जहांगीर घड़ियाली
जनरल मैनेजर वेलकम
ग्रुप होटल
औरंगाबाद

डॉ. जसवंत सोखी
विज्ञान संकाय
इग्नो

प्रो. कपिल कुमार
निदेशक
सेंटर फॉर एक्सटेंशन
एजुकेशन, इग्नो

श्री के.टी. सुरेश
कोआर्डिनेटर, इक्वेशन
बैंगलोर

सुश्री लतिका नाथ
वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ फाउंडेशन
देहरादून

डा. नीना राव
हेड, डिपार्टमेंट ऑफ
टूरिज्म, कॉलेज ऑफ
वोकेशनल स्टडीज
नई दिल्ली

श्री प्रदीप सांखला
मैनेजिंग डायरेक्टर
डायनेमिक टूर एंड
ट्रैवेल्स प्राइवेट लिमिटेड
नई दिल्ली

श्री पी. राज
डायरेक्टर
फ्लाईट सरविसेज बीबीडीडी
वर्ल्ड वाइड नेटवर्क त्रिवेंद्रम
मुम्बई

डॉ. रवीन्द्र कुमार (*संयोजक*)
इतिहास संकाय
इग्नो

कार्यक्रम संयोजक : प्रो. कपिल कुमार

पाठ्यक्रम दल:	डॉ रवीन्द्र कुमार श्री अजय माहुरकर } **पाठ्यक्रम संयोजक** डॉ. गीता कैकर	डॉ. जसवंत सोखी श्री सलिल मिश्र प्रो. कपिल कुमार

खंड निर्माण दल

इकाई संख्या	**इकाई लेखक**	**संकाय सदस्य**
1 व 3	डा. वी. के शर्मा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन नई दिल्ली एवं डा. गीता कैकर	डा. गीता कैकर विज्ञान विद्यापीठ
2 व 4.	डा. वी. के. शर्मा एवं डा. जसवन्त सोखी	डा. जसवन्त सोखी विज्ञान विद्यापीठ
खंड संपादक	**खंड संयोजक**	**सहयोग**
प्रो. सी. के. वार्ष्णेय पर्यावरण विज्ञान विद्यापीठ ज. ने. वि. वि., नई दिल्ली	डा. गीता कैकर डा. जसवन्त सोखी	श्री आर. सेठी सुश्री विद्या आनन्द श्री एल. डी. नॉबर्ट

अनुवाद

प्रो. मोहम्मद अमीर
अध्यक्ष, भूगोल विभाग
इटावा महाविद्यालय, इटावा

संकाय सदस्य

डा. गीता केकर
डा. जसवन्त सोखी

सामग्री निर्माण

प्रो. शोभिता जैन
निदेशक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

सितम्बर, 1998

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 1998

ISBN 81-7605-407-0

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के अनुमति से पुनः मुद्रित। उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज की ओर से डॉ. अरूण कुमार गुप्ता, कुलसचिव द्वारा पुनः मुद्रित एवं प्रकाशित, 2021
मुद्रक : चन्द्रकला यूनिवर्सल प्रा.लि. 42/7 जवाहर लाल नेहरू रोड, प्रयागराज, 211002

पर्यावरण की सुरक्षा और पर्यटन का विकास अलग-अलग चुनौतियां नहीं हैं। आजकल अक्सर पर्यटन के भविष्य पर चिंता की जाती है। कारण है पर्यावरण में तथाकथित अन्धाधुन्ध वृद्धि, पर्यावरणीय निम्नीकरण और इससे उत्पन्न पारिस्थितिकी दबाव। इन सब के स्पष्ट अर्थ हमें जानने होंगे क्योंकि पारिस्थितिकी, पर्यावरण और पर्यटन लगातार कारणों और प्रभावों के जाल में पहले से अधिक अन्तर्ग्रथित होते जा रहे हैं।

हालांकि पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जागरूकता का महत्व हमारे लिए प्रमुख है। पर इसके साथ ही साथ हमें उन ठोस उपायों से भी अवगत होना चाहिए जिनके द्वारा पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों, जैसे पर्यटन के प्रभाव, से उसे बचाया जा सके तथा उसे और अधिक सुधारा जा सके। यह पाठ्यक्रम इन्हीं चिन्ताओं के विभिन्न स्वरूपों को प्रतिबिम्बित करता है। पाठ्यक्रम यह भी इंगित करता है कि पर्यावरणीय समस्याओं को लेकर केवल शिकायत करना ही काफी नहीं है – कुछ सकारात्मक करने की आवश्यकता है।

यहाँ हमारा उद्देश्य आपको :

- पारिस्थितिकी और पर्यावरण की मौलिक धारणाओं से अवगत कराना,
- अपनी पारिस्थितिकीय और पर्यावरणीय सम्पदा के अद्वितीय महत्व का स्मरण कराना,
- पर्यटन व्यवसायी के रूप में वर्तमान समस्याओं के प्रति आप को संवेदनशील बनाना, और
- पर्यावरण सम्बन्धी विविध मूल्यों के प्रति पर्यटकों को भी संवेदनशील बनाने की आवश्यकता पर बल देना और आपको पर्यावरण व्याख्याता की भूमिका समझाने और इस विद्या में आवश्यक दक्षता विकसित करने योग्य बनाना है।

यह पाठ्यक्रम खण्ड-1 के अध्याय हमारा पर्यावरण से प्रारंभ होता है तथा प्रकृति में संयोजन, विश्व के जीवोम और प्रकृति में समुदायों का एक-एक कर के विवरण देता है। खण्ड-2 संरक्षण नीति शास्त्र को समर्पित है। जो मुख्य रूप से भारतीय दर्शन और पर्यावरण पर आधारित है। अगले तीन खण्ड अर्थात् खण्ड-3, 4 और 5 (तीन उपखण्डों सहित) पर्यावरण और पर्यटन के बीच अन्तरापृष्ट के मुख्य वर्ण्य-विषय को प्रारंभ करने और विकसित करने के उद्देश्य से तैयार किए गए हैं।

खण्ड-3 पर्यावरण विकास विषय की जांच परख करता है; खण्ड-4 समुदाय और पर्यटन के सहजीवन पर विचार करता है और खण्ड-5 पर्यटन को संरक्षण के उपकरण के रूप में उपयोग करने के विश्य में है। पर्यावरण और पर्यटन में पाए जाने वाले नीतिपूरक विषयों के मध्य संयोजन खण्ड-6 की परिचर्चा का प्रकरण है। खण्ड-8 वनस्पति, वन्य प्राणी, पर्वतों, होटलों और सैर गाहों आदि पर पड़ने वाले पर्यावरणीय प्रभावों का अध्ययन है। दूसरे दो खण्डों-7 और 9 का विषय एक जैसा है - पर्यावरण में विकास के अव्यवों को समझना और उनका मूल्यांकन करना। इसी विषय पर दूसरे नज़रिये से बहस की गई है खण्ड-7 में/इसी खण्ड में, पर्यावरण पर पड़ने वाले दबावों की पहचान और उनके प्रारंभ की समझ को प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया है। खण्ड-9 भू-दृश्य, प्राणी समूह और वनस्पति समूह, (पर्यटक) व्यवहार और स्थानीय सम्प्रदाय के संदर्भ में पर्यावरण की व्याख्या पर आधारित है। प्रत्येक खण्ड के अन्त में हम ने कुछ अभ्यास प्रस्तावित किए हैं। हमारा सुझाव है कि आप उन में से प्रत्येक का प्रयास करेंगे जो आप के पर्यटन व्यवसायी कौशल को विकसित करने में सहायक होंगे। ऐसी ही कुछ अभ्यास नियत कार्य का भाग होंगें जो कि पाठ्यक्रम की अनिवार्य घटक हैं।

ऑडियो-वीडियो निवेश :

हमारे पाठ्यक्रम मानव पर्यावरण (AHE-01) के जो केसेट्स तैयार किए जा चुके हैं वे इस प्रकार हैं:

वीडियो : 1. जीवमण्डल : एक दृष्टि
2. चिलका झील – एक अध्ययन
3. जीव आवर्धन

ऑडियो :1. विकिरण – जीवन का एक सत्य
2. क्रियाशील ऊर्जा

सामाजिक विज्ञान में प्रारंभिक पाठ्यक्रम (PSS-01)

वीडियो : 1. जनाकीर्ण मरुस्थल
2. भविष्य के लिए वृक्ष

(ऊपर दिए गये सभी कैसेट् आपके अध्ययन केन्द्र में उपलब्ध हैं।)

आप दूरदर्शन नेटवर्क पर प्रसारित होने वाले कुछ अन्य कार्यक्रम जैसे टर्निंग प्वाइण्ट और लिविंग ऑन द एज और डिस्कवरी चैनल पर कई दूसरे पर्यावरण सम्बन्धी कार्यक्रम भी देख सकते हैं।

आप आकाश को, धरती की गरमाहट को कैसे खरीद या बेच सकते हैं? ये कल्पना ही हमारे लिये आश्चर्यजनक है। यदि हम हवा की ताज़गी और पानी की जगमगाहट उत्पन्न कर ही नहीं सकते तो उन्हें खरीद कैसे सकते हैं? पृथ्वी मनुष्य की नहीं है, परन्तु मनुष्य पृथ्वी का है।

स्यूक्वामिश और अन्य अमरीकी जनजातियों के मुखिया (सीएटिल) द्वारा दिये गये भाषण के प्रारंभिक वाक्य जिन्हें इण्डिया मैगज़ीन से कृतज्ञता सहित लिया गया।

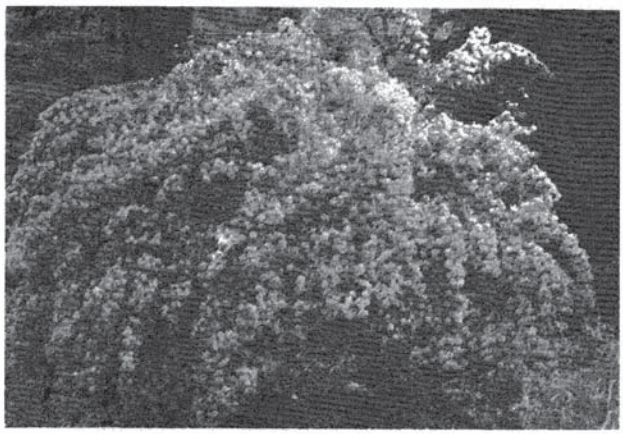

खंड-1 पर्यावरण – एक परिचय

यह खंड, पर्यावरण का और व्यापक स्वरूप प्रस्तुत करने के लिए अभिकल्पित किया और लिखा गया है यहां हमने पारिस्थितिकी की मौलिक धारणाओं तथा सिद्धान्तों की गूढ़ परिभाषाओं व समर्थक आंकड़ों को प्रत्यक्ष एवं कम जटिल भाषा में प्रस्तुत किया है। इस खण्ड में चार इकाईयां (1 से 4) हैं। इनमें से प्रत्येक इकाई की विषय-वस्तु सविस्तार निम्नवत् है।

इकाई-1 हमारा पर्यावरण, एक परिचायक इकाई है जिसमें पर्यावरण के अध्ययन की सामान्य रूपरेखा प्रस्तुत की गई है। ये पर्यावरण के मूल घटकों की चर्चा से प्रारंभ होकर पर्यावरण में निरंतर होने वाले परिवर्तनों के महत्व को स्पष्ट करता है। ये एक चौंका देने वाले सत्य पर बल देता है – मनुष्य के द्वारा किए जा रहे हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप परिवर्तन की गति में त्वरण।

इकाई-2 प्रकृति में संयोजन, जीवों और उनके पर्यावरण के मध्य मूलभूत पारिस्थितिक अन्योन्य क्रियाओं के विषय पर विचार करता है। इन अन्योन्यक्रियाओं को नियन्त्रित करने वाले सिद्धान्तों का ज्ञान जीवन चक्र के सम्पूर्ण चित्र को समझने में आपकी सहायता करेगा और आपको पर्यटन संबंधी विभिन्न गतिविधियों को प्रकृति से जोड़ने के योग्य बनाएगा।

इकाई-3 है विश्व के जीवोम। पृथ्वी पर बहुत से क्षेत्र ऐसे हैं जहां जलवायु, स्थलाकृति और मिट्टी की समान परिस्थितियां पाई जाती हैं। परिणामस्वरूप समान विशेषताओं वाले जैविक समुदाय प्रकृति में विकसित हुए। ये विस्तृत समुदाय जीवोम कहलाते हैं और इस इकाई के वर्ण्य विषय इन्हीं पर आधारित हैं।

इकाई-4 प्रकृति में समुदाय। यह इकाई व्यक्तियों और जनसमूहों में जटिल अन्योन्य क्रियाओं के चक्रव्यूह पर प्रकाश डालती है। इस में जीवविविधता संरक्षण का विश्लेषण भी है जो वर्तमान समय के प्रमुख पर्यावरणीय प्रकरणों से सम्बन्धित है। इसका उद्देश्य उन समस्त लोगों सहित, जो पर्यटन उद्योग से जुड़े हुए हैं, हर क्षेत्र के लोगों में आत्म विश्लेषण और उत्तरदायित्व उत्प्रेरित करना भी है।

इकाई 1 हमारा पर्यावरण

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य
1.1 प्रस्तावना
1.2 अजैविक पर्यावरण
  1.2.1 वायुमण्डल
  1.2.2 प्रकाश
  1.2.3 तापमान
  1.2.4 पवन
  1.2.5 आर्द्रता
  1.2.6 जल
  1.2.7 मृदा
1.3 समय के साथ पर्यावरण में परिवर्तन
  1.3.1 मंदगति परिवर्तन
  1.3.2 तीव्रगामी परिवर्तन
1.4 सारांश
1.5 शब्दावली
1.6 बोध प्रश्नों के उत्तर



1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- पारिस्थितिकी, पर्यावरण और पारिस्थितिक तंत्र के बीच अन्तर समझ सकेंगे,
- पर्यावरण और पर्यावरणीय कारकों को समझ सकेंगे,
- प्राणियों के अपने पर्यावरण में अन्योन्याश्रय के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे,
- समय के साथ पर्यावरण में होने वाले मंद और तीव्र परिवर्तनों के विषय में जान सकेंगे, और
- परिवर्तनशील पर्यावरण में आधुनिक मानव की भूमिका समझ सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

पारिस्थितिकी (ecology), पर्यावरण (environment), और पारिस्थितिक तंत्र (ecoseptem) ऐसे तीन सामान्य शब्द हैं जिन्हें हम प्रतिदिन किसी न किसी संदर्भ में सुनते हैं। पहले हमें इन तीनों महत्वपूर्ण शब्दों के बीच के अन्तर को समझ लेना चाहिए।

यदि आप अपने प्रतिवेश पर चारों ओर दृष्टि डालें तो आप देखेंगे कि कोई भी प्राणी अपने आप को अपने प्रतिवेश से अलग नही रख पाता है। प्रत्येक जीव एक जटिल रूप से संयोजित तंत्र का भाग है जिस में उसके अतिरिक्त अजीव तत्व भी सम्मितित हैं। पारिस्थितिकी (ecology ग्रीक में Oikos = घर) वह विज्ञान है जिस में हम यह अध्ययन करते हैं कि जीव (जन्तु, वनस्पति और जीवाणु) किस प्रकार प्राकृतिक जगत में और उसके साथ अन्योन्यक्रिया (पारस्परिक क्रिया) करते है। किस प्रकार जीव अपने प्रतिवेश के अनूरूप ढल जाते हैं, कैसे, अपने प्रतिवेश को उपयोग में लाते है या कोई क्षेत्र किस प्रकार जीवों की उपस्थिति के कारण बदलता या प्रभावित होता है। वह सब जो किसी जीव को उसके जीवनकाल में प्रभावित करता है सामूहिक रूप से उसका पर्यावरण (ग्रीक Environ = प्रतिवेश) कहलाता है। पर्यावरण उन सभी आवश्यकताओं की आपूर्ति करता है जो प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से जीव

को प्रभावित कर सकते हैं, जैसे अपेक्षित आहार, पोषक और ऊर्जा आदि। इसलिये पर्यावरण दो प्रकार के हो सकते हैं – जैविक या अजैविक।

जैविक या जीवीय पर्यावरण के घटक वह सारे जीवधारी (पौधे और पशु) है: जिनके साथ जीव, उसके समूह या पूरा सम्प्रदाय अन्योन्यक्रिया करता है। इसे एक उदाहरण द्वारा अधिक अच्छे ढंग से समझा जा सकता है। यदि आप किसी वन में जाएं तो आप देखेंगे कि वनस्पति जातियों में या पशुओं के मध्य बहुत सी अन्योन्यक्रियाए (interactions) चल रही हैं। कुछ जातियां पूर्णतया: आहार, जल, पोषक के लिए दूसरी जातियों पर निर्भर हैं (परजीवी) जबकि दूसरी ओर सहजीवन (symbiosis) भी देखा जा सकता है जिसमें दोनों जातियां साथ रहते हुए एक दूसरे को सहयोग देती हैं और परस्पर हितकर सम्बन्ध स्थापित करती है। इस प्रकार अन्योन्यक्रिया करने वाली प्रत्येक जाति दूसरी जातियों के लिए जैविक पर्यावरण का अंश हैं। भौतिक और रसायनिक घटक जो प्राणियों को प्रभावित करते हैं अजीवीय या अजैविक पर्यावरण को संघटित करते हैं। ये घटक वायुमण्डल, जलवायु, जल, पोषक, सूर्य का प्रकाश और मृदा हैं।

पारिस्थितिक तंत्र एक ऐसा तंत्र है जिसकी रचना जीवों के विविध प्रकारों की एक दूसरे के साथ और अपने भौतिक पर्यावरण से अन्योन्यक्रिया के कारण होती है। अत: इसका संघटन एक विशिष्ट क्षेत्र में निवास कर रहे समस्त सम्बन्धित जीवों और क्षेत्र के भौतिक लक्षणों द्वारा होता है। पारिस्थितिक तंत्र प्राकृतिक हो सकता है जैसे कोई वन, घासस्थल, मरुस्थल झील आदि, या वह मानव द्वारा निर्मित हो सकता है जैसे खेत। वह बहुत छोटा हो सकता है (जैसे जल जीवशाला aquarium) या फिर विशाल (जैसे महासागर)। हमारा ग्रह कई विस्तृत क्षेत्रीय प्रकारों के पारिस्थितिक तंत्रों से बना है। इन्हें जीवोम (biomes) कहते हैं और इनकी चर्चा इकाई-3 में की जाएगी।

यह इकाई पर्यावरण के अध्ययन से आपका परिचय कराती है। हम इस इकाई में अजैविक कारकों की चर्चा करेंगे जो भौतिक पर्यावरण संघटित करते हैं। आप इसमें जान सकेंगे कि समय के साथ किस प्रकार पर्यावरण बदला है और निरंतर बदल रहा है। हम इसकी संक्षिप्त चर्चा भी करेंगे कि हमारे उद्यमों ने किस प्रकार प्राकृतिक पर्यावरण को प्रभावित किया है। आपको यह समझने में सहायता होगी कि प्राकृतिक तंत्रों की क्रियाशीलता कुछ निश्चित दबावों के अन्तर्गत विभंगित क्यों हो जाती है। यह इकाई जैव विविधता संरक्षण के संभव उपाय खोजने पर और दीर्घ कालीन पर्यावरण प्रबन्ध के लिए भी आपको प्रेरित करेगी। इस प्रकार का विवेक प्रत्येक पर्यटन व्यवसायी के लिए आवश्यक है ताकि एक ऐसे विश्वस्त पर्यटन को बढ़ावा दे सके जो प्रकृति से समन्वय रखता हो। आगामी इकाई – प्रकृति में संयोजन, में आप जीवों और उनके भौतिक पर्यावरण के मध्य विभिन्न संयोजनों के विषय में पढ़गे।

1.2 अजैविक पर्यावरण

हम जानते हैं कि जैव जगत् अजैविक पर्यावरण में निवास करता है और उस पर निर्भर है। यदि हम अपनी पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों में जीवों की उत्तरजीविता, वितरण और अनुकूलन को समझना चाहें तो पर्यावरण के अजैविक घटकों का ज्ञान बहुत महत्वपूर्ण है। उदाहरणार्थ कुछ अजैविक पर्यावरणीय कारक जैसे किसी क्षेत्र की जलवायु, मृदा और धरातल उस क्षेत्र में विशेष प्रकार की वनस्पति के लिए उत्तरदायी होते हैं। यही कारण है कि शिमला और उडगमंडलम की वनस्पति जयपुर और जैसलमेर की वनस्पति से भिन्न है। विभिन्न अजैविक कारकों का उपयोग करने, सहन करने या उस से संघर्ष करने की जीवों की योग्यता में विविधता पाई जाती है जो उनके वितरण, व्यवहार और दूसरे जीवों के साथ उनके सम्बन्धों को सीमित कर देती है। आइए हम कुछ ऐसे महत्वपूर्ण अजैविक कारकों पर विचार करें जो जीवन के लिए निर्णायक हैं।

1.2.1 वायुमण्डल

हमारा वर्तमान वायुमण्डल अनेक गैसों और निलंबित कणों का मिश्रण हैं। निचले वायुमंडल में निरंतर समिश्रण चलता रहता है जिसके परिणामस्वरूप 80 कि. मी. की ऊंचाई तक हर स्थान पर हमारे वायुमंडल का संघटन लगभग एक सा रहता है। 80 कि.मी. से अधिक ऊंचाई पर ये गैसें स्तरित हो जाती है अर्थात भारी गैसें निम्न स्तर पर पाई जाती है जबकि ऊंचे स्तर पर हल्की गैसे होती हैं।

सारणी-1 में आप देख सकते हैं कि जल वाष्प को छोड़कर निचला वायुमंडल 78.08% नाइट्रोजन द्वारा संघटित हैं। वायुमण्डलीय नाईट्रोजन को जीव (कुछ प्रकार के जीवाणुओं और नीले हरे शैवालों को छोड़कर) प्रत्यक्ष रूप से उपयोग में नहीं ला सकते । ये पहले नाइट्रेट में परिवर्तित किया जाता है और फ़िर पौधे एवं अन्य प्राणी इसे उपयोग में लाते है। ये प्रक्रिया प्रकृति में नाईट्रीफिकेशन कहलाती है। आक्सीजन 20.95 प्रतिशत है और वह न केवल हमारी श्वसन क्रिया के लिए आवश्यक है बल्कि इस पृथ्वी के सम्पूर्ण प्राणियों (अवायु जीवाणु (anaerobic bacterea) को छोड़ कर) के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है और ऊर्जानिर्मुक्ति क्रिया के लिए भी आवश्यक है। इन के अतिरिक्त अधिक पाई जाने वाली गैसें ऑर्गन और कार्बन डाईऑक्साइड हैं। कार्बन डाईऑक्साइड (CO_2) सारे हरे पौधों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्रकाश संश्लेषण क्रिया में हरे पौधे कार्बन डाईऑक्साइड (CO_2) और जल को कच्चे माल के रूप में उपयोंग कर के सौर ऊर्जा को रासायनिक ऊर्जा, जिस पर सम्पूर्ण जैविक तंत्र निर्भर है, में परिवर्तित करते है। वायुमण्डल में जलवाष्प भी अल्पमात्रा (लगभग 1 प्रतिशत) में पाई जाती है और कई दूसरी गैसें भी उपस्थित हैं इन में ओज़ोन (O_3) भी है जो वायुमंडल की ऊपरी परत में ऑक्सीजन पर सूर्य की क्रिया के कारण बनती है और जो सूर्य से विकिरित होने वाली पराबैंगनी किरणों के हानिकारक प्रभावों से समस्त जीवधारियों को बचाती है। इन गैसों (जैसे कि जलवाष्प और कार्बन डाईऑक्साइड) का आयतन समय के अनुसार और एक स्थान से दूसरे स्थान पर बदलता रहता हैं।

ओज़ोन पृथ्वी की सतह से 20-22 किलोमीटर ऊपर वायुमण्डल के समताप मण्डलीय क्षेत्र में सकेन्द्रित है।

वायुमण्डल में द्रव या ठोस सूक्ष्म कण पाये जाते है। इन्हें एरोसॉल (aerosol) कहते हैं। इन में से अधिकांश पृथ्वी की सतह के निकट पाए जाते हैं और इनकी उत्पत्ति वायु द्वारा मृद्रा अपरदन, जंगल की आग के कारण, महासागरीय फुहार से प्राप्त नमक के क्रिस्टल और ज्वालामुखी उद्गार के कारण होती है। एरोसॉल का एक दूसरा श्रोत औद्योगिक और कृषीय कार्य है। यद्यपि वायुमण्डल में एरोसॉल की मात्रा बहुत कम है तथापि ये निलंबित कण बहुत महत्वपूर्ण है। उदाहरणार्थ कुछ कण मेघ और वर्षा की रचना के केंद्र बनते हैं और कुछ दूसरे कण सूर्य के प्रकाश से अन्योन्यक्रिया करके हवा के ताप को प्रभावित करते है।

सारणी-1 : निचले वायुमण्डल में पाई जाने वाली गैसों (जलवाष्प को छोड़कर) के सापेक्षित अनुपात

गैस	आयतन (प्रतिशत में)
नाइट्रोजन	78.08
आक्सीजन	20.95
आर्गन	0.93
कार्बन डाईऑक्साइड	0.03
नीऑन	0.0018
हीलियम	0.00052
मीथेन	0.00015
क्रिप्टॉन	0.00010
नाइट्रस ऑक्साइड	0.00005
हाइड्रोजन	0.00005
जेनान	0.00009
ओज़ोन	0.000007

1.2.2 प्रकाश

जीवन के लिए प्रथम और सर्वाधिक आवश्यकता ऊर्जा और सूर्य का प्रकाश है। सौर विकिरण इस ग्रह पर ऊर्जा का प्रमुख स्रोत है। सूर्य का प्रकाश जल को वाष्पित करता है जो बाद में वर्षा के रूप में गिरता है। यहीं उर्जा पृथ्वी को असमान रूप से गर्म कर के पवन प्रवाह का कारण बनती है। पौधे, जो पृथ्वी पर हर प्रकार के जीवन के मौलिक आधार है, पृथ्वी पर पड़ने वाले सौर विकिरण के कुछ अंश को अपने उपयोग में लाने के लिए सक्षम हैं। जैसा कि इस से पूर्व बताया जा चुका है कि हरे पौधों की सब से महत्वपूर्ण शारीरिक क्रिया प्रकाश-संश्लेषण है जिस में कार्बन डाईऑक्साइड में उपलब्ध कार्बन, ऊर्जा समृद्ध ग्लूकोज़ में परिवर्तित कर दिया जाता है। ये ऊर्जा जो ग्लूकोज़ में संचित होती है प्रकाश से प्राप्त होती है। अतः हरे पौधे सूर्य के प्रकाश को ग्रहित करने के लिए विभिन्न प्रकार के रुपान्तरण अथवा अनुकूलन दर्शाते है। पौधों में और भी कई प्रकार की शारीरिक क्रियाएं होती है जो प्रत्यक्ष रूप

हरे पौधे प्रकाश-संश्लेषण हेतु प्रकाश के CO_2, जल और कुछ खनिजों से आहार बनाने के लिए ऊर्जा स्रोत के रूप में उपयोग करते हैं। जीवन के लिए अति आवश्यक गैस ऑक्सीजन प्रकाश संश्लेषण में उपोत्पाद के रूप में मुक्त होती है।

से प्रकाश द्वारा नियन्त्रित होता है, जैसे वाष्पोत्सर्जन क्रिया (transpiration), पुष्पण (दीप्तिकालिता (photoperiodism)) और अंकुरण (germination)। सूर्य का प्रकाश प्राणियों के जीवन में भी महत्वपूर्ण है। अधिकतर प्राणी प्रकाश के प्रति संवेदनशील होते हैं। बहुत से प्राणियों में प्रकाशग्राही होते हैं और जीवों की अधिकांश संख्या की क्रियाशीलता का सामंजस्य प्रकाश द्वारा नियन्त्रित होता है। अधिकांश कीट, पक्षी और प्राणी दिन में सक्रिय होते है किन्तु कुछ कीट जैसे तिलचट्टे पतंगे और कुछ जीव जैसे चमगादड़ प्राकृतिक रूप से रात में अधिक सक्रिय होते है। अर्थात् उनकी क्रियाशीलता प्रकाश की अनुपस्थिति से प्रभावित होती है।

1.2.3 तापमान

सारे प्राणी तापमान से प्रभावित होते हैं। अधिकांश प्राणी एक परिमित तापीय परिसर में जीवित रह सकते हैं। वास्तव में प्रत्येक जाति में अपने ही एक तापमान के परिसर में सीमित रहने की प्रवृति पाई जाती है जिसमें वह सामान्य रूप से क्रियाशील रह सके। यदि इस परिसर से तापमान घटता या बढ़ता है तो उसकी क्रियाशीलता प्रभावित होगी यहां तक कि उसका अस्तित्व भी खतरे में पड़ सकता है। तापमान का वह परिसर जिसमें प्राणी का अस्तित्व बना रह सकता है 'सहनशक्ति सीमा (tolerance limit) कहलाती है। प्रत्येक शारीरिकक्रिया के लिये एक न्यूनतम, अधिकतम और अनुकूलतम तापमान होता है। न्यूनतम तापमान वह होता है जिस पर क्रिया प्रारंभ होती है, अधिकतम वह, जिस से बढ़ने पर क्रिया संभव नही होती और अनुकूलतम वह तापमान है जिस पर क्रिया की गति तीव्रतम होती है। अपेक्षाकृत कुछ ही जीव 45°C के शारीरिक तापमान से अधिक पर जीवित रहते है। कुछ जीव शारीरिक एवं व्यवहारात्मक अनुकूलन करके अत्यधिक तापमान सहन कर लेते हैं। यदि आप राजस्थान की यात्रा करें तो आप वहां की वनस्पति को अन्य क्षेत्रों की वनस्पति से नितान्त भिन्न पाएंगे। मरुस्थलों में उगने वाले पौधों के पत्तों तनों और अन्य भागों में अनेकों आकारिक परिवर्तन हैं (चित्र 1) इसी प्रकार रेगिस्तान के प्राणी तीव्र तापमान से बचने के लिए बिलों में रहते हैं। शीत ऋतु में शीत प्रदेशों से गर्म प्रदेशों की ओर पक्षियों का प्रव्रजन (migration) और फिर ग्रीष्म ऋतु में अपने ठंडे प्राकृतिक वास की ओर वापसी तापमान के प्रति अनुकूलन का एक और उदाहरण है। स्तनी वर्ग (mammals) की अनेकों जातियां हैं जो ताप या शीत की चरमसीमा से सुरक्षित रहने के लिए ऐसा ही प्रव्रजन करती हैं। दुसरी ओर बहुत सी जातियां ऐसी हैं जो प्रव्रजन कर नहीं पाती हैं और शीत अथवा ग्रीष्म की चरमसीमा से बचने के लिए शारीरिक रूप में प्रसुप्त अवस्था में चली जाती हैं जैसे ध्रुवीय रीछ हिम ताप में जीवित रह सकते हैं किन्तु चरम शीत ऋतु बिताने के लिए वह निष्क्रिय (hiber nate) हो जाते है।



चित्र 1: नागफनी के पौधे शुष्क जलवायु में अनुकूलन के अच्छे उदाहरण हैं

1.2.4 पवन

पवन अथवा वायु का तीव्रगामी प्रवाह मौसम की अवस्था को निर्धारित करता है और कुछ जीवों के लिए महत्वपूर्ण पर्यावरणीय कारक बन जाता है। पौधे पवन से बहुत अधिक प्रभावित होते हैं। शारीरिक क्रियाओं में से कुछ जैसे वाष्पोत्सर्जन, तीव्र अथवा मन्द पवन से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता है। अधिक ऊंचाइयों पर जहां पवन का वेग बहुत अधिक रहता है पवन का संघात आसानी से देखा जा सकता है। कभी कभी सम्पूर्ण वृक्ष वितान हवा की शक्ति के प्रभाव में हवा की दिशा के अनुरूप बदल जाता है। वृक्षों के विभिन्न भाग जैसे शाखाएं, पत्तियां, फल और फूल क्षतिग्रस्त होकर टूट जाते हैं

और कभी कभी तो कम गहरी, कमजोर जड़ों वाले वृक्षों का जड़ से उखड़ कर गिर जाना भी सामान्य सी घटना होती है। हवा बीजों और फलों के प्रकीर्णन में सहयोग देती है।

1.2.5 आर्द्रत

वायुमण्डल में जलवाष्प या नमी की मात्रा को आर्द्रता (humidity) कहते हैं जब वायुमण्डल में एक निश्चित तापमान और दबाव पर नमी की अधिकतम मात्रा उपलब्ध होती है तो उसे निरपेक्ष आर्द्रता (absolute humidity) कहते हैं।

वायु में व्याप्त वास्तविक आर्द्रता और आर्द्रता का वह अनुपात जिसे उस तापमान पर हवा धारण कर सकती है आपेक्षिक आर्द्रता (relative humidity RH) कहलाता है।

$$\text{आपेक्षित आर्द्रता (RH \%)} = \frac{\text{हवा में उपस्थित नमी (जलवाष्प) की मात्रा} \times 100}{\text{हवा को संतृप्त करने के लिए नमी (जलवाष्प) की मात्रा}}$$

किसी विशेष क्षेत्र की आपेक्षित आर्द्रता तापमान, वायु दाब, ऊंचाई, पवन वेग, वनस्पति और मिट्टी की नमी से प्रभावित होती है। परिणामस्परूप वायुमण्डलीय नमी की मात्रा, तापमान और अपेक्षित आर्द्रता में घनिष्ठ सम्बन्ध है। यदि वायुमण्डल का तापमान बढ़ जाए तो आपेक्षित आर्द्रता घट जाएगी और तापमान कम हो जाने पर आपेक्षित आर्द्रता बढ़ जाएगी। धरातलीय जीवों के शरीर की सतह से वाष्पोत्सर्जन, स्वेदन आदि जैसी शारीरिक क्रियाओं के द्वारा होने वाले वाष्पीकरण की दर वायुमण्डलीय आर्द्रता द्वारा ही नियन्त्रित होती है। यदि आप किसी ऐसे पर्वतीय स्थल की यात्रा करें जहां ग्रीष्म ऋतु को छोड़ कर शेष मौसमों में आर्द्रता अधिक रहती है तो आप पाएंगे के उस प्रकृति में रहते ए पौधों और अन्य जीवों ने ऐसे पर्यावरण के अनुसार स्वयं में कितना अनुकूलन कर लिया है। अधिक आपेक्षिक आर्द्रता में उगने वाले पौधों को आर्द्रतोभिद (hygrophytes) जैसे लाइकेन आदि के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

1.2.6 जल

जल जीवन की एक मौलिक आवश्यकता है। क्या आप जानते हैं कि पौधों और जंतुओं की कोशिकाओं में सब से अधिक जल का ही प्रतिशत होता है? किसी भी प्रकार के जीव जल के बिना जीवित नहीं रह सकते हैं। अगर आप ने जाति के विकास पर कोई पुस्तक पढ़ी है तो आप अवगत होंगे कि जीवन का आरंभ जल में ही हुआ है। यदि आप इतिहास के विद्यार्थी है तो आप यह भी जानते होंगे कि अधिकांश सभ्यताएं नदियों के निकट या नदी तट पर विकसित हुई क्योंकि जल जीवन का आधार है। घरेलू कार्यों, सिंचाई और औद्योगिक उद्देश्यों के लिए इसकी आवश्यकता होती है।

यदि आप किसी झील, तलैया या अपने निकटवर्ती क्षेत्र की नदी तक जाएं तो आप देखेंगे कि काफी पौधे और जीव जल में निवास करते है। कुछ जीव ऐसे भी होते है जो जल और थल दोनों पर रहते है (जलस्थली (amphibians), उदाहरण मेंढक)। नदियों में विविध प्रकार की मछलियां पाई जाती हैं। तीव्र प्रवाही जल में रहने वाली मछली और अन्य प्राणियों में ऐसी युक्तियां होती हैं जिनके द्वारा वे तेज धाराओं में आराम से रह पाते हैं। वे तीव्र जलधाराओं में बच सकने में सक्षम होते हैं और इस प्रकार के प्रवाही तंत्र में जीवित रह सकते हैं। इस के साथ की कुछ ऐसे जीव भी है जो कुशल तैराक नहीं हैं, और पत्थरों के नीचे, नदी तल की विदरिकाओं में या फिर रेत में बने बिलों में रहते हैं जैसे कि घोंघे, सीपियां और स्तग।

जल की आवश्यकता अलग अलग जीवों में अलग अलग होती है और जीवों का वितरण आवश्यकता और जल संरक्षण हेतु विशेष अनुकूलन पर आधारित है। उदाहरणार्थ जलीय पौधे (जलोद्भिद) तथा प्राणी (मछली) जलीय पर्यावरण में निवास करने के लिए भलीभांति अनुकूलित हैं। उनमें जलीय पर्यावरण में जीवित रहने के लिए आकारिक, शारीरिक और शरीरक्रियात्मक संशोधन हैं। चित्र 2 (a) में उन मैंग्रोव (गरानों) को दिखाया गया हैं जिनकी जड़ें ऑक्सीजन और कार्बन डाईऑक्साइड के विनिमय के लिए विशेष प्रकार से अनुकूलित होती हैं क्योंकि वे ऐसे क्षेत्र में उगते है जहां ऑक्सीजन बहुत कम होती है। चित्र 2 (b) में मैंग्रोव की एक ऐसी स्पीशीज को दिखाया है जिसकी पत्तियों से अतिरिक्त नमक के निःस्त्रावण के लिए अनुकूलन है। ऐसा इस लिए आवश्यक है क्योंकि गरानों की ये स्पीशीज़ अंशत: खारी जल में डूबे रहते हैं

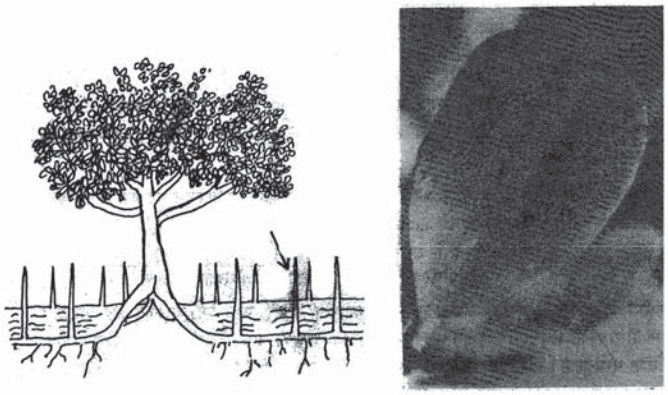

चित्र 2: (a) गरानों की जड़ों से निकले हुए स्पंजी उद्‌वर्ष रेत और जल से ऊपर उठे होते है (तीर के निशान को देखिए) वे गैसों के विनिमय में सहयोग देते हैं। (b) गरानों की कुछ स्पीशीज अपनी पत्तियों से अतिरिक्त नमक का निःस्त्रावण करती है जो उनकी सतह पर अवक्षेपित हो जाता है।

जहां कहीं जल का अभाव होता है, जैसे मरुस्थल में, वहां जीव जल की क्षति के लिए अनुकूलित होते हैं। जैसे कंगारु चूहा (चित्र-3) भलीभांति लगभग जलरहित पर्यावरण में जीवित रहने के लिए सब से अधिक उपयुक्त है। उसकी बृहदांत्रा उत्सर्गी पदार्थों से अधिकांश जल अवशोषित कर लेती है और इस प्रकार वह उस जल की आपूर्ति कर लेते हैं जो सांस लेते हुए फेफड़ों से वाष्पीकृति हो जाता है। वह अपनी गतिविधियों को रात के लिए प्रतिबन्धित करके और दिन के समय बिल में छुप कर गर्मी से बचा रहता है।

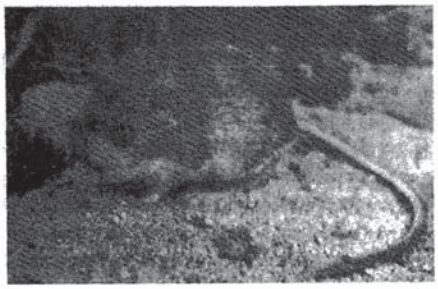

चित्र 3: कंगारु चूहा मरुस्थलीय पर्यावरण के लिये भलीभांति अनुकूलित होता है।

1.2.7 मृदा

मृदा खनिज तत्वों (पोषक) का प्रमुख भण्डार है जिन की पौधों और प्राणियों को आवश्यकता होती है। पौधे मृदा में घुलित अवस्था में उपलब्ध बृहत् और सूक्ष्म-पोषक प्राप्त करते हैं। मृदा में उपलब्ध पोषकों की मात्रा, जल को अपने अन्दर रोके रखने की क्षमता और मृदा का वातन, मृदा की उर्वरता को निर्धारित करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यही उर्वरता पौधे की उत्पादकता को प्रभावित करती है और उन जीवों की संख्या को भी निर्धारित करती है, मृदा जिनका पोषण कर सकती है। उदाहरणार्थ दुमटी मृदा रेत और चिकनी मिट्‌टी के कणों का मिश्रण है और कृषि तथा वनवर्धन की दृष्टि से उत्तम समझी जाती है। इस में जल को अपने अन्दर रोके रखने की अच्छी क्षमता है और

पर्याप्त मात्रा में जल और वायु को रोके रखती है। इसीलिए दुमटी मृदा में मूल और मूल रोम का गहराई तक बेधन सरल हो जाता है।

आप अगर मृदा का अनुलम्ब परिच्छेद काटें तो आप तीन स्पष्ट परतें (A, B और C संस्तर, देखिए चित्र-4) पायेंगे। वास्तविकता ये है कि A- संस्तर या ऊपरी संस्तर अर्थात् ऊपरी मृदा सब से महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी में बीज अंकुरित होता है और यहीं से पौधे पोषण प्राप्त करते हैं। यही कारण है कि हम ऊपरी मृदा को विभिन्न विधियों द्वारा बचाना या सुरक्षित रखना चाहते हैं। **विभिन्न बलों जैसे वायु और जल आदि के द्वारा ऊपरी मृदा के हटने को मृदा अपरदन (soil erosion) कहते हैं और अपरदन से बचाव को मृदा संरक्षण (soil conservation) कहते हैं।** मृदा संरक्षण के लिए कई तकनीक को उपयोग में लाया जाता है। B संस्तर या अवमृदा में कार्बनिक पदार्थ कम होता है अत: ये संस्तर की A की अपेक्षा कम उर्वर होता है। इस के नीचे C-संस्तर होता है जो अंशत: अपघटित निचली आधार शैल या अवसादों द्वारा निर्मित खनिज की परत है। C-मृदा की उर्वरता कम है।

सारे पर्यावरणीय कारक जैसे धूप, तापमान, वर्षा, वायुमण्डलीय आर्द्रता पवन आदि अलग अलग रह कर स्वतन्त्र रूप से कार्य नहीं करते। कारकों में एक घनिष्ट संयोजन है। प्रकाश व तापमान घनिष्ट रूप से संयोजित हैं। धरातल और जलस्थल सूर्य का प्रकाश पाकर गर्म हो जाते हैं। पृथ्वी की सतह से पुन: विकिरण पृथ्वी के निकटवर्ती वायुमण्डल को गरम कर देता है।

जब प्रकाश किसी हरे भरे क्षेत्र पर पड़ता है तो अधिकतर प्रकाश हरे पौधों द्वारा रोक लिया जाता है और उसका बहुत कम अंश पृथ्वी तल पर पहुंच पाता है किन्तु जब प्रकाश किसी ऐसे क्षेत्र पर पड़ता है जो वनस्पति आवरण रहित हो तो मृदा की सतह बहुत जल्दी गर्म हो जाती है। पत्थर, कंकड़, रेत और यहां तक कि ईंटें भी और अधिक गर्म हो जाती है। यही कारण है कि शहरी क्षेत्रों की सूक्ष्म जलवायु (micro climate), जहां ठोस पथरीला निर्माण पाया जाता है, स्पष्ट रूप से ग्रामीय जलवायु से भिन्न होती है जहां घर मकान आमतौर से मिट्टी के बने होते हैं और जिनके परिवेश में अधिक हरियाली होती है।

इसी प्रकार तापमान और वर्षा में भी घनिष्ट सम्बन्ध है। उच्च तापमान अधिक वाष्पीकरण दर (जल की खुली सतह से) और पौधो से वाष्पोत्सर्जन (transpiration) के लिए उत्तरदायी है। समुद्र, झीलों और तलैयों से चलने वाली गर्म वायु अत्याधिक आर्द्र होती हैं। ये गर्म और नम हवाएं ऊंचे भागों की ओर बढ़ते हुए ठंडी और संघनित होकर वर्षा में परिवर्तित हो जाती हैं जो पृथ्वी पर ताज़े जल का प्रमुख स्रोत है।

तापमान का संबध वायु के परिसंचारण और कई दूसरे कारकों जैसे वायुमण्डलीय दाब, ऊंचाई, वनस्पति और मृदा आर्द्रता से है अत: यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सारे वायुमण्डलीय कारक परस्पर और जैव कारको से संयोजित हैं।

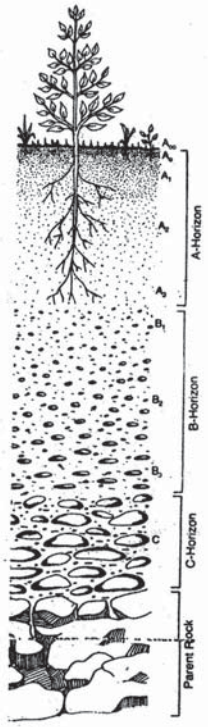

चित्र 4 : मृदा संस्तर

बोध प्रश्न 1

1) पारिस्थितिकी और पर्यावरण को परिभाषित कीजिये। पर्यावरणीय कारक से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

2) किसी क्षेत्र में पैदा होने वाले पौधों की संख्या को मृदा स्वरूप किस प्रकार प्रभावित कर सकता है?

.....

.....

.....

3) इस खण्ड का अध्ययन करने के पश्चात् क्या आप संक्षिप्त रूप से बता सकते हैं कि किसी क्षेत्र के पर्यावरण का ज्ञान प्राप्त करना क्यों महत्वपूर्ण है?

.....

.....

.....

.....

1.3 समय के साथ पर्यावरण में परिवर्तन

हमारे सौर मण्डल या पृथ्वी ग्रह के इतिहास से यह स्पष्ट हो चुका है कि हमारे पर्यावरण में क्रमिक किन्तु निरन्तर परिवर्तन होता रहा है। इन में से कुछ परिवर्तन धीमे हैं और कुछ तीव्रगामी हैं।

1.3.1 मंदगति परिवर्तन

मंदगति परिवर्तनों को एक जीवन काल या सौ दो सौ वर्षों की अवधि में नही देखा जा सकता । इस प्रकार के परिवर्तनों का अध्ययन जीवाश्म अभिलेखों (fossil records) के माध्यम से किया जा सकता है। उदाहरणार्थ चन्द्रमा से लाई गई शिलाएं लगभग चार अरब वर्ष पुरानी थीं जबकि पृथ्वी पर पाई जाने वाली प्राचीनतम शिला तीन अरब वर्ष पुरानी हैं। जीवाश्म अभिलेखों से किसी विशेष क्षेत्र के पर्यावरण और जीवों में होने वाले धीमे परिवर्तनों का अध्ययन किया जा सकता है।

पृथ्वी मण्डल का सर्वप्रथम संगठन उस समय प्रारंभ हुआ जब अपनी उत्पत्ति से 800,00,000 वर्षों के अन्दर ही वह द्रवित होना शुरू हुई। लोहे और दूसरे भारी धातुओं ने पृथ्वी के केन्द्र या कोड की ओर निमग्न प्रारंभ किया और हल्के धातु गैसों के रूप में बाहर फेंक दिए गए। इस प्रकार प्रथम वायुमण्डल की रचना हुई। उस समय कोई मुक्त ऑक्सीजन (O_2) नहीं थी। जब ग्रह ठंडा हुआ, आवरण की बाहरी परत भूपृष्ठ के रूप में ठोस हो गई। उसके बाद गिरते हुए उल्कापिंडों के कारण बहुत से परिवर्तन आए क्योंकि उन उल्कापिंडों ने न केवल आदि कालिक भूपृष्ठ को छिद्रित किया बल्कि उसे गर्म कर दिया। इस के परिणामस्वरूप वायुमण्डल की बहुत सी प्रारंभिक गैसे निकल गई। पृथ्वी भूवैज्ञानिक रूप से क्रियाशील हो गई, ज्वालामुखी क्रिया के कारण लावा राख जिनकी रचना गैसों से हुई थी बहुत अधिक मात्रा में बाहर फेंक दी गई। प्रमाणों द्वारा विदित है कि उस समय भी और आज भी कार्बन डाईऑक्साइड, नाइट्रोजन और जल वाष्प जैसी गैसे ज्वालामुखी निस्तरण (जलयोजित खनिजों से मुक्त हुई) की महत्वपूर्ण संघटक हैं। जलवाष्प के ठंडा होने के कारण बादलों की रचना हुई और परिणामस्वरूप होने वाले वर्षण के कारण महासागरों, नदियों, आदि की इस ग्रह पर रचना हुई। इस वर्षण के साथ होने वाली तड़ित-झंझा की आदिकालिक वायुमण्डल के तत्वों के संकर अणुओं के रूपान्तरण में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यही संकर अणु जीवन की रचना के महत्वपूर्ण आधार हैं।

समय बीतने के साथ ही भूपृष्ट मोटा होता गया। सूर्य के प्रकाश से पृथ्वी को ऊष्मा प्राप्त हुई। भूपृष्ट पर ये गरमी प्रारंभ में असमान थी। तापक्रम में निरन्तर परिवर्तन हो रहा था। यही तापीय असमानता और बदलाव वायुमण्डल में गैसों और जल के प्रवाह का कारण बने। वायुमण्डल में तड़ित-विसर्जन के कारण तप कर बने कार्बन, हाइड्रोजन और नाइट्रोजन के संकर अणु महासागरों में एकत्र हुए और प्रारंभिक जीव की उत्पत्ति हुई यानि जीव सर्वप्रथम महासागर में विकसित हुआ। धीरे धीरे प्रकृति और वायुमण्डल में बदलाव आया। एक ऐसे जीव की उत्पत्ति हुई जिस में क्लोरेफ़िल नामक यौगिक था। इस यौगिक में सौर ऊर्जा को ग्रहण कर कार्बन डाईऑक्साइड और समुद्री जल का उपयोग कर के कार्बोहाइड्रेट बनाने की क्षमता थी। इस अभिक्रिया में ऑक्सीजन गौण उपज (byproduct) के रूप में प्राप्त हुई। इस से पूर्व वायुमण्डल नाइट्रोजन, कार्बन डाईऑक्साइड और हाइड्रोजन द्वारा ही निर्मित था। आज हम ये कल्पना भी नही कर सकते कि पृथ्वी के प्रारंभिक वायुमण्डल में ऑक्सीजन नहीं थीं। वास्तव में प्रारंभ के जीवों में ऑक्सीकरण (oxidation) की प्रवृति थी। जैसे-जैसे आक्सीजन वायुमण्डल में हरे पौधों के द्वारा हुए प्रकाश संश्लेषण के कारण संचित होना प्रारंभ हुई, वैसे-वैसे कार्बन डाईआक्साइड घटने लगी। नव निर्मित ऑक्सीजन का कुछ अंश महासागरों में घुले हुए लोहे द्वारा अवशोषित कर लिया गया। गैसों के, आक्सीजन सहित इस नए संयोग में संभवता ऐसे नए जीव

विकसित हुए होंगे जिन में ऑक्सीजन सहन करने की शक्ति और उसको उपयोग करने की कुछ अधिक योग्यता रही होगी जिससे कि जीवन प्रक्रम भलीभांति चल सके। इस प्रकार ऑक्सीजन वायुमण्डल में नाइट्रोजन के बाद दूसरे नम्बर की सब से अधिक पाई जाने वाली गैस बन गई और कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा बहुत कम हो गई।

वायुमण्डल में ऑक्सीजन की वृद्धि के कारण एक और महत्वपूर्ण परिवर्तन उस समय हुआ जब कुछ मात्रा में ऑक्सीजन ओज़ोन के रूप में परिवर्तित हुई। जैसा कि आपको ज्ञात है समतापीय मण्डल (stratosphere) में ओज़ोन की परत बहुत से जीवों के लिए सूर्य से उत्सर्जित पराबैंगनी विकिरण के विरुद्ध सुरक्षा आवरण का काम देती है। लगभग साठ करोड़ वर्ष पूर्व प्रारंभ हुए वायुमण्डल में मन्द गति के परिवर्तनों के कारण आज के इस वायुमण्डल की रचना हुई। वायुमण्डल की ये अवस्था जीवन के लिए बहुत सुखद है। किन्तु मानवीय कार्यकलापों के प्रभावों के कारण वायुमण्डल की यह अवस्था भी तीव्र गति से परिवर्तनशील है जिसका हम दूसरी इकाईयों में वर्णन करेंगे।

भूखण्ड में परिवर्तन या महाद्वीपीय संचलन

जर्मन वैज्ञानिक एल्फ्रेड वैगनर (Alfred Wegener) के अनुसार लगभग बीस करोड़ वर्ष पूर्व पृथ्वी पर एक ही महाद्वीप था जिसे उसने पेन्जिया (Pangaea) के नाम से पुकारा। पेन्जिया एक ग्रीक शब्द है जिस का अर्थ है 'समस्त भूमि' (देखिए चित्र-5)।

वैज्ञानिक मानते है कि महाद्वीप धीरे-धीरे विस्थापित होते हैं, लगभग पन्द्रह से.मी. प्रति वर्ष की दर से। इस क्रमिक विस्थापन ने चालीस करोड़ वर्षों में पृथ्वी को वह आकृति प्रदान की है जैसा इसे आज हम देखते हैं। वैज्ञानिक प्रमाण मिले हैं जिन से पता चलता है कि भारतीय प्लेट (भूखण्ड) भी गोंडवानालैण्ड से विस्थापित होकर लारेशिया से जा मिला और भारतीय महाद्वीप को आज की आकृति प्रदान की। इन दोनों महाद्वीपों के संयोजन के समय हुई टक्कर से हिमालय की उत्पत्ति हुई।

पृथ्वी के अन्दर भी कई प्रकार की मन्द क्रियाए चल रही हैं। क्रोड (core) या पृथ्वी के गर्भ की रचना पिघले हुए सघन और अत्यन्त तप्त धातु से हुई है। क्रोड को घेरे हुए एक आवरण (mantle) है जो गरम चट्टान की आनम्य परत है। इस क्षेत्र में संवहन धाराओं (connection current) का बड़े पैमाने पर चक्रण होता है। यही ज्वालामुखी विस्फोटों, भूकम्पों और पर्वतों के निर्माण आदि का कारण है।

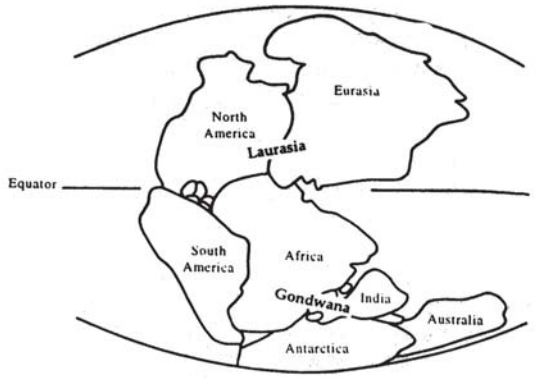

चित्र 5 : मध्य जीव कल्प के प्रारंभ में समस्त महाद्वीप पेन्जया के रूप में संयोजित थे। उस समय की विभिन्न महाद्वीपों की स्थिति।

अत: यह स्पष्ट है कि पृथ्वी के अन्दर और बाहर वायुमण्डल में निरंतर परिवर्तन होता रहा है। इस ग्रह पर समस्त स्पीशीज़ का विकास जीवों की पर्यावरणीय परिस्थितियों से अनुकूलन करने की क्षमता पर निर्भर है। इन वायुमण्डलीय परिवर्तनों का जलवायु पर सुस्पष्ट प्रभाव पड़ता है और जलवायु पृथ्वी की उत्पत्ति से लेकर अब तक, बहुत बदल चुकी है।

1.3.2 तीव्रगामी परिवर्तन

मनुष्य के कुछ ऐसे कार्यकलाप हैं जिनके कारण हमारे पर्यावरण और जलवायु दोनों में तीव्रगामी परिवर्तन हुए हैं। औद्योगिक क्रान्ति के बाद अत्याधिक प्रौद्योगिकीय प्रगति और आर्थिक उपलब्धियों का आधुनिक सभ्यता के लिए महत्वपूर्ण योगदान है। मानव समाज के लिए अभूतपूर्व सम्पन्नता भी उसी के द्वारा आई है। किन्तु इसके साथ ही, इस के कारण हम अभूतपूर्व खतरो और संकट की ओर भी बढ़े है और इन से सम्बद्ध समस्याओं को मानव भविष्य के हित में तुरन्त सुलझाना अति आवश्यक है। यदि आप कुछ औद्योगिक नगर जैसे मुम्बई, दिल्ली, कानपुर (उ. प्र.) मण्डी गोबिन्दगढ़ (पंजाब) कोरबा (म. प्र.) सूरत (गुजरात) विशाखापटनम (आं. प्र) आदि की यात्रा करें तो पाएंगे कि इन नगरों का पर्यावरण बदल रहा है। महानगरों में मोटर गाड़ियों के द्वारा प्रदूषण प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है जो वायुमण्डलीय प्रदूषण का सब से बड़ा कारण है। यदि आप अपने माता, पिता या बड़ों से पूछें तो वह आप को बताएंगे कि पर्यावरणीय परिस्थितियां शहरी एवं ग्रामीय दोनों ही क्षेत्रों में कितनी तेज़ी से बदली हैं। कुछ सार्वभौमिक पर्यावरणीय समस्याएं जैसे जलवायु परिवर्तन, मुख्यतः मनुष्य के कार्यकलापों जैसे कोयला, पेट्रोल या अन्य जीवाष्मीय ईंधन जलाना, बड़े पैमाने पर वन-अपरोपण और खनन आदि के कारण होते हैं। ये पर्यावरण में होने वाले तीव्रगामी परिवर्तनों का उदाहरण है। इसे केवल एक पीढ़ी में ही नहीं बल्कि दस बीस वर्षों में भी देखा जा सकता है।

ग्रीन हाउस प्रभाव और बदलता वायुमण्डल

सारणी-2: प्रदूषण के कारण

कारण	प्रदूषण प्रतिशत
परिवहन	42%
ईंधन	21%
उद्योग	14%
ठोस अपशिष्ट प्रयोजन	5%
अन्य	18%

रसायनिक प्रदूषण पृथ्वी के वायुमण्डल की संरचना को परिवर्तित कर रहा है और जलवायु को बदल देने, पौधों की पैदावार के प्रारूप को परिवर्तित कर देने और मनुष्य तथा जीवों को खतरनाक पराबैंगनी (ultraviolet) विकिरण से अरक्षित कर देने का भय उत्पन्न कर रहा है। प्रदूषण के मूल कारण सारणी-2 में दिए गए है।

प्रदूषण के इन कारणों में से जीवाष्मीय ईंधन का जलाया जाना और वनों का जलाया जाना कार्बन डाईऑक्साइड चक्र में असंतुलन का कारण बना है। हाल ही में जितनी कार्बन डाईऑक्साइड हरे पौधे और वृक्ष अवशोषित करते हैं उससे अधिक मुक्त हो रही है। कार्बन डाईऑक्साइड की बढ़ती हुई मात्रा वायुमण्डल में छाती जा रही है और उसने वहां एक मोटा आवरण बना लिया है जो सौर विकिरण के लिए पारदर्शी है और दृश्य प्रकाश को धरातल की सतह तक पहुंच जाने देता है, किन्तु पुनर्विकिरण के रूप में वापस लौटती हुई ऊष्मीय तरंगे (अवरक्त विकिरण) उस आवरण के द्वारा रोक ली जाती है। ऊष्मा वापस पृथ्वी पर लौटा दी जाती हैं और इस तरह ग्रीनहाउस प्रभाव (greenhouse effect) का कारण बनती हैं।

वह पांच गैसें जो ग्रीन हाउस प्रभाव में योगदान प्रदान करती हैं निम्नवत् हैं:

- कार्बन डाईऑक्साईड (CO_2) - 50%
- क्लोरोफ़्लोरो कार्बन्स (CFC_s) - 14%
- मीथेन (CH_4) - 18%
- ओज़ोन (O_3) - 12%
- ट्रोपोस्फ़ेरिक नाइट्रस ऑक्साइड - 6%

यह स्पष्ट है कि इन गैसों में से ग्रीनहाउस प्रभाव या वायुमण्डलीय तापन में कार्बन डाईऑक्साइड का सर्वाधिक योगदान है। वायुमण्डल में कार्बन डाईऑक्साइड के एकत्रीकरण में गत दो दशकों में तीव्रगति से वृद्धि हुई है। कार्बन डाईऑक्साइड (CO_2) का 1958 में एकत्रीकरण दस लाख में 315 अंश था जो 1990 में बढ़ कर 353 अंश प्रति दस लाख हो गया और 1.5% की अनुमानित दर से प्रति वर्ष बढ़ रहा है। ये बहुत कम प्रतीत होता है किन्तु ये कार्बन डाईऑक्साइड की बढ़ती हुई दरं भयप्रद है और वैज्ञानिकों की भविष्यवाणी है कि यदि इसी दर से बढ़ती रही तो पृथ्वी क औसत तापक्रम वर्ष 2030 ई० तक 3-4°C बढ़ जाएगा । समुद्रों की सतह 3 से 7 फीट तक ऊपर उठ जाएगी और बहुत से छोटे द्वीपों और विभिन्न महाद्वीपों के तटीय क्षेत्र डूब जाएंगे।

बॉक्स 1 : ग्रीनहाउस प्रभाव

आपने देखा होगा कि अगर आप तपती हुई धूप में खड़ी कार की सारी खिड़कियां बन्द कर दें तो अन्दर असहनीय रूप से गर्मी हो जाती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि प्रकाश खिड़कियों के शीशे से गुज़र कर अन्दर पहुंच जाता है। प्रकाशीय ऊर्जा ऊष्मीय ऊर्जा में परिवर्तित होकर वहां रह जाती है और कार को गरम कर देती है। ग्रीन हाऊस या पादप गृह पौधे उगाने के लिए बनाए जाते हैं और इसी सिद्धांत पर कार्य करते है। चूंकि वे शीशों के बनाए जाते हैं अत: प्रकाश अन्दर पहुंच जाता है किन्तु ऊष्मा बाहर नही निकल सकती। कार्बन डाईऑक्साइड का गुण भी ऐसा ही है कि सूर्य का प्रकाश वायुमण्डल से गुज़र जाने देती है किन्तु ऊष्मा को वायुमण्डल से निकलने नही देती। इस प्रकार सामान्य मात्रा में कार्बन डाईऑक्साइड वायुमण्डल के तापमान को बनाए रखती है। परन्तु यदि वायुमण्डल में कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा में वृद्धि होती है तो वायुमण्डल में अधिक ऊष्मा रोक ली जाएगी जो उसका तापमान बढ़ा देगी। ऊष्मा का इस प्रकार वायुमण्डल में रोक लिया जाना ही 'ग्रीन हाउस प्रभाव' कहलाता हैं।

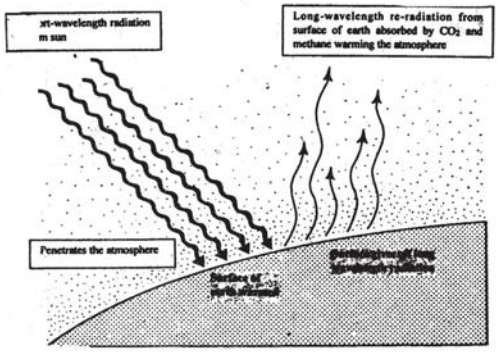

चित्र-6 : आरेखीय ग्रीनहाउस प्रभाव। लघु तरंगदैर्ध्य विकिरण वायुमण्डल से गुज़रती है जबकि कार्बन डाईऑक्साइड और ग्रीन हाउस प्रभाव की अन्य गैसें गर्म धरातल से आने वाली दीर्घ तरंगदैर्ध्य (अवरक्त) विकिरण को ग्रहण करती है।

ओज़ोन की परत में अवक्षय हमारे वायुमण्डल में दूसरा सबसे महत्वपूर्ण तीव्रगामी परिवर्तन है। इससे पहले के अनुभाग में आप ने पढ़ा कि ओज़ोन की परत समताप मंडल में आने वाली पराबैंगनी विकिरण (लघु तरंगदैर्ध्य 200-400 nm) का अवशोषण कर लेती है। यदि यह पराबैगनी प्रकाश ओज़ोन द्वारा निस्यंदित न हो तो सूक्ष्मजीवों का सर्वनाश कर देगी और पशुओं तथा मनुष्यों में कई बीमारियों का कारण भी बन सकती है। यह पौधों और वृक्षों को नुकसान पहुंचा सकती है। प्लांकटन और दूसरे समुद्री जीवों, यहां तक कि मानवों के असंक्रम्य तन्त्र (immune system) को भी क्षतिग्रस्त कर सकती है।

कई प्रकार के रसायन विशेष रूप से क्लोरोफ्लोरो कार्बन (CFCs) और उस से कुछ कम मात्रा में हेलान्स, कार्बन टेट्राक्लोराइड और मेथिल क्लोरोफॉर्म वायुमण्डल में छोड़ी जाती है। CFCs का उपयोग बड़े पैमाने पर रेफ्रीजरेटरों, एअर कन्डीश्नर आदि में शीतलकों के रूप में और ऐरोसॉल स्प्रे के डिब्बों में नोदकों के रूप में होता है। ये CFCs ऊपर समताप मण्डल की ओर स्थानान्तरित हो जाते हैं। लगभग 25 किलोमीटर की ऊंचाई पर ये CFCs पराबैंगनी विकिरण द्वारा विघटित कर दी जाती हैं और परिणामस्वरूप क्लोरीन मुक्त हो जाती है, जो आसानी से ओज़ोन के साथ क्रिया करके उसे नष्ट कर देती है। एक श्रृखला-क्रिया द्वारा क्लोरीन का एक परमाणु 1,000,000 ओज़ोन के अणुओं को नष्ट कर देता है। इस मन्द क्रिया के कारण ओज़ोन की परत पतली होती जा रही है और वैज्ञानिकों ने कुछ ऐसे स्थान देखे है जहां ओजोन इस सीमा तक कम हो चुकी है कि वहां 'ओजोन विवर' (होल) बन गया है।

सम्पूर्ण विश्व में ओज़ोन परत क्षीण होती जा रही है किन्तु ध्रुवीय क्षेत्रों, विशेषकर अन्टारटिका पर अधिक प्रभाव देखा जा सकता है। ओजोन परत के क्षीण हो जाने के करण पृथ्वी की सतह पर

पराबैंगनी विकिरण बहुत बढ़ जाता है और धूपतापन या त्वचा के केन्सर का कारण बनता है। व्यवहारिक अनुभवों के आधार पर कहा जाता है कि समताप मण्डलीय ओज़ोन में 1% कमी का अर्थ है ओज़ोन परिरक्षक में से होकर गुज़रने वाले जीवीय दृष्टि से प्रभावी विकिरण में 2% की वृद्धि। वैज्ञानिक आगामी 30-40 वर्षों में पराबैंगनी विकिरण के 5% से 20% तक बढ जाने की शंका व्यक्त कर रहे हैं।

अब इस विषय में काफी जागरूकता आ चुकी है और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रकार के प्रदूषण को रोकने और ओज़ोन परत को सुरक्षित रखने के प्रयास किए जा रहे हैं।

उन समस्त घटकों का अध्ययन करने के बाद, जिन से हमारे पर्यावरण की रचना हुई है, हमें इस बात पर फिर ज़ोर देना चाहिए कि पर्यावरण इन सारे घटकों के जटिल समिश्र के रूप में जीवों को प्रभावित करता है। ध्यान में रखने की बात यह है कि यदि एक कारक भी अव्यवस्थित होता है तो अक्सर ऐसी श्रृंखला अभिक्रिया प्रारंभ हो जाती है जिस के परिणामों की कभी प्रत्याशा न की गई हो।

बोध प्रश्न 2

1) विभिन्न भूवैज्ञानिक कल्पों में पर्यावरण में होने वाले मंद गति परिवर्तनों का अध्ययन आप कैसे करेंगे?

.....

.....

.....

.....

2) क) कुछ ग्रीन हाउस गैसों के नाम बताइये।

ख) कौन सी गैस ग्रीन हाउस प्रभाव में सर्वाधिक योगदान देती है?

.....

.....

.....

.....

3) कौन सा रसायन या कौन कौन से रसायन ओजोन परत में क्षीणता के सर्वाधिक कारण हैं?

.....

.....

.....

.....

1.4 सारांश

किसी जीव का प्रतिवेश ही उसका पर्यावरण है। यह दो प्रकार का होता है जैविक तथा अजैविक। बहुत से पर्यावरणीय कारक जीवों, पौधों और पशुओं पर प्रभाव डालते हैं और पृथ्वी पर वनस्पति समूह और प्राणी समूह के अस्तित्व के लिए उत्तरदायी भी यही हैं। अजैविक पर्यावरणीय कारक स्वतन्त्र रूप से कार्य नहीं करते बल्कि जैविक कारकों से घनिष्ट रूप से जुड़े रहते है। पर्यावरण कभी स्थायी नहीं रहा, वह बदलता रहा है और निरंतर बदल रहा है। कुछ परिवर्तन मंदगति से होते है जिन्हें हम 100-200 वर्षों में भी नहीं देख सकते जैसे किसी भूभाग का संचलन और महाद्वीपों का निर्माण। किन्तु कुछ परिवर्तन इतने तीव्रगामी होते हैं कि उन्हें बहुत आसानी से देखा या अनुभव करा जा सकता है। आधुनिक युग में प्रौद्योगिक विकास के कारण मनुष्य ने गम्भीर पर्यावरणीय समस्याएं पैदा कर ली हैं जैसे वायुमण्डलीय सार्वभौमिक तापन और ओज़ोन परत की क्षीणता। इन समस्याओं के प्रति न केवल राष्ट्रीय सतर्कता चाहिए बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग भी आवश्यक है। इसके अतिरिक्त इस सम्बन्ध में बड़े पैमाने पर जागरूकता अभियान की भी आवश्यकता है।

1.5 शब्दावली

रासायनिक ऊर्जा (Chemical energy) : रासायनिक बंधन के रूप में संग्रहित ऊर्जा।

गोंडवानालेण्ड (Gondwana land) : वह विशाल भूखण्ड जो 213 से 248 लाख वर्ष पूर्व ट्राइऐसिक काल में दक्षिणी गोलार्द्ध में पेन्जिया से अलग हुआ।

लॉरेशिया (Laurasia) : उत्तरी गोलार्द्ध का विशाल भूखण्ड जो 213 से 248 लाख वर्ष पूर्व ट्राईएसिक काल में पृथ्वी के एकमात्र महाद्वीप पेन्जिया से अलग हुआ

उल्कापिंड (Meteorites) : पथरीले पदार्थ, या वह धत्विक टुकड़े जो बाहरी अन्तरिक्ष से पृथ्वी की सतह पर गिरते है।

आकृतिक परिवर्तन (Morphological changes) : संरचना में परिवर्तन

प्रकाशग्राही (Photoreceptors) : प्रकाश से प्रतिक्रिया दिखने वाले ग्राही जो जीवों के शरीर में होते हैं।

प्रकाश-संश्लेषण (Photosymthesis) : जीव रसायनिक क्रियाएं जिन के द्वारा हरे पौधे और कुछ जीवाणु प्रकाशीय ऊर्जा को रोक कर उस के उपयोग से रसायनिक बन्ध बनाते हैं तथा कार्बन डाईऑक्साइड और जल का उपयोग कर के ऑक्सीजन और साधारण शर्करा बनाते हैं।

सौर-ऊर्जा (Solar energy) : सूर्य से प्राप्त ऊर्जा।

1.6 बोधप्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 1.1 देखिए।

2) भाग 1.2 देखिए।

3) अपना स्पष्टीकरण दीजिए।

बोध प्रश्न 2

1) उपभाग 1.3.1 देखिए।

2) क) कार्बन डाइऑक्साइड, क्लोरोफ्लोरोकार्बन्स (CFCs) ओज़ोन, नाईट्रस ऑक्साइड, मीथेन।

ख) कार्बन डाईऑक्साइड।

3) क्लोरोफ्लोरोकार्बन्स (CFCs)

इकाई 2 प्रकृति में संयोजन

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 पारिस्थितिक तंत्र

2.3 पारिस्थितिक तंत्र के घटक

2.4 आहार श्रृंखला, आहार जाल एवं पोषण स्तर

2.5 अन्तर्सबन्ध और अन्योन्याश्रय

2.6 संयोजन

2.7 पर्यटन उद्योग का प्रकृति से सम्बद्ध करने का प्रयत्न

2.8 सारांश

2.9 शब्दावली

2.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

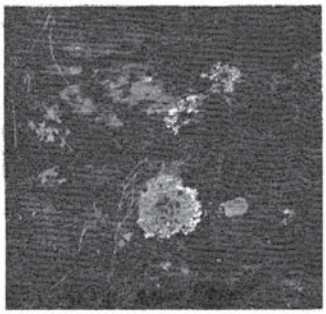

2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य होने चाहिएं कि आप :

- पारिस्थितिक तंत्र को परिभाषित कर सकें,
- पारिस्थितिक तंत्र की विशेषताओं का वर्णन कर सकें,
- पारिस्थतिक तंत्र के घटकों को वर्णित कर सकें,
- जैविक घटकों के विभिन्न वर्गों में पहचान कर सकें,
- पारिस्थितिक तंत्र के विभिन्न सप्राण जीवों के मध्य अन्तर्सम्बन्धों को स्पष्ट कर सकें,
- आहार-श्रृंखला, आहार जाल और पोषण स्तर की परिभाषा दे सकें और पारिस्थितिक तंत्र में उनके कार्यात्मक सम्बन्धों को व्यक्त कर सकें,
- पारिस्थितिक तंत्र में ऊर्जा प्रवाह और विभिन्न पोषण स्तरों में ऊर्जा स्थानान्तरण जटिलताओं का उल्लेख कर सकें,
- यह समझ सकें कि पारिस्थितिक तंत्र के किसी भी घटक का एकल रूप में अस्तित्व नहीं है, और
- पर्यटन उद्योग की विभिन्न गतिविधियां किस प्रकार प्रकृति के पारिस्थितिक सिद्धान्तों और सम्बन्धों के अनुरूप हो सकती हैं, इसकी व्याख्या करें।

2.1 प्रस्तावना

यदि आप से आज के संदर्भ में, आमतौर से चर्चित पांच वर्तमान विषयों की सूची बनाने को कहा जाए तो "पर्यावरण" निश्चित रूप से आप की सूची में स्थान पाएगा। पर्यावरण का अर्थ विभिन्न लोगों के लिए अलग-अलग है और उसी के अनुसार लोग भिन्न-भिन्न रूप से उसकी व्याख्या करते हैं। पिछली इकाई में आपने पारिस्थिति विज्ञानी द्वारा दी गई पर्यावरण की परिभाषा पढ़ी। हम सब चाहे किसी भी प्रकार से पर्यावरण की व्याख्या करें, पर हर व्याख्या प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रकृति के गतिशील होने का संकेत देती है। आप प्रश्न करेंगे कि वे क्या हैं जोकि पर्यावरण को गतिशील बनाते हैं? इसका कारण है इसके विविध प्रकार के जीवरूप। इसके अतिरिक्त उन असंख्य जीवरूपों के परस्पर संयोजन

पर्यावरण को गतिशील बनाते हैं। अब आप प्रश्न उठा सकते हैं कि ये संयोजन क्या हैं? संयोजन, पर्यावरण के विभिन्न घटकों के मध्य अन्योन्य सम्बन्धों को निरूपित करते हैं। इस इकाई में हम इन विभिन्न संयोजनों के विषय पर ही विचार करेंगे। जब कभी आप प्रकृति में संयोजनों की खोज करें तो आप **अन्योन्याश्रय** की धारणा को सदैव ध्यान में रखें, और आप यह भी नोट कर लें कि यह सभी पारिस्थितिक सम्बन्धों का भी आधार है।

2.2 पारिस्थितिक तंत्र

पर्यावरण और प्रकृति की परिभाषा देने का प्रयास कीजिए। क्या ये वर्णन एक दूसरे को अतिछादित करते हैं? सामान्यत: पर्यावरण और प्रकृति अवियोज्य प्रतीत होते हैं, तथा ये दोनों शब्द अक्सर समानार्थक रूप से व्यक्त किए जाते हैं। इस इकाई में, हम भी इन शब्दों को इसी रूप में व्यक्त करेंगे।

जीवमण्डल - ये महासागरों की गहराइयों से प्रारंभ होकर वायुमण्डल में कुछ किलोमीटर तक ऊंचे, कुल लगभग बारह किलोमीटर का एक पतला क्षेत्र है।

पर्यावरण का विस्तार बहुत विशाल है और ये सम्पूर्ण जीवमण्डल को आवृत करता है (चित्र-1)। जैसा आप जानते हैं कि पर्यावरण के अनगिनत घटक हैं। उनमें इतने प्रकार के जीव अर्थात् जैविक घटक हैं कि कल्पना भी नहीं की जा सकती। ये जीवरूप जीवन का जाल बनाते हुए सम्पूर्ण जीवमण्डल में फैले हुए हैं – पृथ्वी से महासागरों की तह तक, और ऊपर हवा में उच्चतम पर्वत की ऊंचाई से भी अधिक ऊंचाई तक। इसके अतिरिक्त उतने ही विविध प्रकार के **अजैविक** कारक भी हैं जोकि भौतिक पर्यावरण की संरचना करते हैं। भौतिक पर्यावरण जीवन के अस्तित्व के अनुकूल परिस्थितियों का सृजन करता है। यदि हम अपने पर्यावरण को समझने के लिए उन समस्त सफल प्रौद्योगिक साधनों का उपयोग करके जो हमें उपलब्ध हैं, से पारिस्थितिक अभियान आयोजित करें तो एक जीवन काल भी उसके लिए बहुत कम पड़ेगा। तो फिर हमें क्या करना चाहिए? आप यह भी प्रश्न कर सकते हैं कि फिर पर्यावरण के विषय में इतनी विशाल जानकारी हमें कैसे और कहां से प्राप्त हुई जो सारे ही पृथ्वी ग्रह के बारे में है। आज हम जो कुछ भी अपने पर्यावरण के बारे में जानते हैं वह उन अनगिनत परिस्थिति विज्ञानियों, प्रकृति विज्ञानियों और अन्य वैज्ञानिकों के अध्ययनों का ही परिणाम है जिन्होंने उसके विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया। उन सबके अत्याधिक परिश्रम, तथा किसी विशेष पक्ष पर उनके जीवन भर के अध्ययनों एव अनुभवों से ही, आज हमें पर्यावरण को समझने में अत्याधिक मदद मिली है।

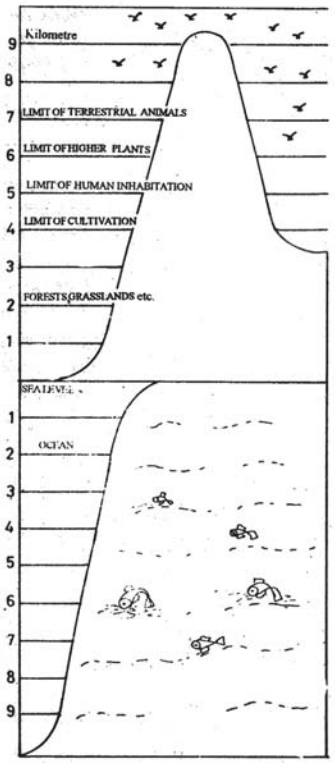

चित्र 1 : जीव मण्डल के विस्तार के विषय में अत्यधात्मक विचार को दर्शाते हुए आरेखी चित्रण।

पर्यावरण के मौलिक पारिस्थितिक सिद्धान्तों को समझने के लिए सर्वप्रथम, उपयुक्त क्षेत्र का चुनाव करना जरूरी है। क्षेत्र का चुनाव करते समय आप तीन बातों का ध्यान रखें : वहां तक पहुंचने की सुगमता, कार्य संचालन की सुविधा और क्षेत्र का उचित विस्तार। सम्पूर्ण जीवमण्डल – अध्ययन के लिए इकाई के रूप में बहुत बड़ा रहेगा। और इसी तरह उसके दो प्रमुख घटक वायुमण्डल और पृथ्वी भी बड़े रहेंगे। यदि हम पृथ्वी को इकाई के रूप में चुने, तो उसके उपभाग महाद्वीप भी बड़े रहेंगे। इसके आगे महाद्वीप के उपभाग-वन मरुस्थल आदि की बहुत विस्तारीय है। यदि हम इसी प्रकार पृथ्वी के उप.....उप..... उप विभाग करके अपने अध्ययन के लिए एक छोटा सा क्षेत्र लें जैसे कि सरोवर या फिर घास का मैदान। हमारा चयनित क्षेत्र मान लीजिए यदि कोई द्वीप है, जोकि उपरोक्त तीनों आवश्यक बातों को पूरा करता है तथा प्रकृति में पारिस्थितिक सिद्धांतों और सम्बन्धों के अध्ययन लिए एक उपयुक्त तंत्र प्रतीत होता है।

उपरोक्त विवेचन का सारांश क्या है?

प्रथम, पारिस्थितिक तंत्र वह है जिसका हम चुनाव करते हैं। ये जीवमण्डल हो सकता है या फिर पृथ्वी,

वन, नदी, सरोवर, द्वीप, गेंहु का खेत, कोई जलशाला, तालाब के जल से भरा कोई मर्तबान, और यहां तक कि कोई चट्टान जिस पर लाइकेन उग रहे हों, भी हो सकता है। इस प्रकार पारिस्थितिक तंत्र एक ऐसा परिचित शब्द है जिसे किसी भी पैमाने पर उपयोग में लाया जा सकता है। पर्यटन में इसे अक्सर गन्तव्य के संदर्भ में उपयोग किया जाता है अर्थात् किसी स्थान विशेष का पारिस्थितिक तंत्र।

दूसरा, किसी पारिस्थितिक तंत्र के अन्दर भी पारिस्थितिक तंत्र होता है और उसमें भी एक और पारिस्थितिक तंत्र, और इसी प्रकार पहले में दूसरा फिर दूसरे में तीसरा आदि। सम्पूर्ण जीवमण्डल पारिस्थितिक तंत्र है और उसके घटक अर्थात् पृथ्वी और वायुमण्डल, स्वयं उनके अन्दर भी छोटे पारिस्थितिक तन्त्र हैं।

तीसरा, पारिस्थितिक तंत्र प्रकृति की इकाई है जिसका अपना स्वतंत्र कार्यशील अस्तित्व है।

चौथा, पारिस्थितिक तंत्र एक जटिल तंत्र है जो जैविक और अजैविक कारकों पर आधारित है। इन घटकों में जटिल अन्तर्क्रियाएं होती हैं जिनके द्वारा ये परस्पर जुड़े रहते हैं।

पांचवां, पारिस्थितिक तंत्रों की जटिलता में विविधता पाई जाती है अर्थात् यदि एक पारिस्थितिक तंत्र में एक प्रकार की जटिलता होगी तो दूसरे में दूसरी प्रकार की।

छटा, विविधता होते हुए भी इन पारिस्थितिक तंत्रों के मौलिक सिद्धांतों और प्रक्रमों में बड़ी समानता देखी जाती है।

अभी तक हमने पारिस्थितिक तंत्र के दो पहलुओं पर विचार किया है। इनमें प्रथम है कि पारिस्थितिक तंत्रा क्या है? और दूसरा इस की रचना किन तंत्रों से हुई है। तृतीय पक्ष जिस पर विचार करने की आवश्यकता है वह यह है कि पारिस्थितिक तंत्र किस प्रकार कार्य करता है?

2.3 पारिस्थितिक तंत्र के घटक

हम फिर द्वीपीय पारिस्थितिक तंत्र के उदाहरण की ओर लौटते हैं जिसे हमने अपने अध्ययन के लिए चुना है। दूर से देखने पर द्वीप बहुत हरा भरा और जीवन से भरपूर दिखाई देता है। वहां ऊंचे वृक्ष, झाड़ियां, बूटियां, कृन्तक, पक्षी, तितलियां और बहुत से जीव रूप हैं। वहां का धरातल सूखी पत्तियों, टहनियों और गिरी हुई शाखाओं से ढका हुआ है। साधारण रूप से देखने पर वे निर्जीव और जीर्ण-शीर्ण दिखाई देंगे। वास्तव में वे मिट्टी के ऐसे छुपे हुए संसार की रचना करते हैं जो विभिन्न प्रकार के कीड़ों मकोड़ों, कवक और अनगिनत सूक्ष्म रूपों को समेटे हुए है। इसके नीचे दबी मृदा भी गतिविधियों से भरपूर है, क्योंकि उस में बिल, सुरंगे और विभिन्न प्रकार के जन्तुओं के वास स्थान भी पाए जाते हैं। द्वीप पर पाए जाने वाले अत्याधिक प्रकार के जीव रूपों के अतिरिक्त, अजैविक घटक जैसे मृदा, जल, वायु और प्रकाश भी द्वीपीय पारिस्थितिक तंत्र के अभिन्न भाग हैं। इन कारकों के मध्य चलने वाली जटिल अन्योन्यक्रियाएं ऐसी परिस्थितियों की रचना करती हैं जो जीवन अस्तित्व के लिए अनुकूल हैं। दोनों घटक, जैविक तथा अजैविक पारिस्थितिक तन्त्र की रचना करते हैं (चित्र-2)।

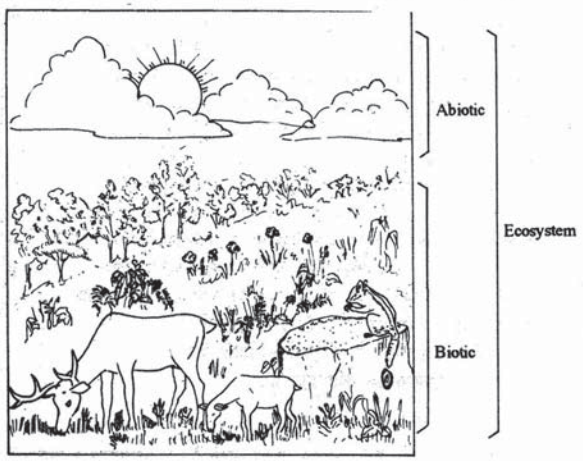

सजीव प्राणियों को विभिन्न क्रियाओं के लिए ऊर्जा और शरीर की रचना तथा रख रखाव के लिए सामग्री की आवश्यकता होती है। यह ऊर्जा तथा सामग्री जीवों के द्वारा ग्रहण किए गए आहार से प्राप्त होते हैं। किसी पारिस्थितिक तंत्र में रहने वाले जीव, भोजन के माध्यम से आपस में संबन्धित होते हैं। मोटे रूप से जीव दो वर्गों में विभक्त किए जाते हैं – **उत्पादक** (producer) और **उपभोक्ता** (consumer)। हरे पौधे उत्पादक होते हैं क्योंकि उनमें अपना आहार स्वंय तैयार करने की क्षमता है। वे अपना आहार उपलब्ध जल आपूर्ति और कार्बन डाईआक्साइड से सूर्य के प्रकाश को ऊर्जा के साधन के रूप में उपयोग करके तैयार करते हैं। ये प्रक्रिया **प्रकाश संश्लेषण** (photosynthesis) कहलाती है। केवल बड़े वृक्षों में ही सौर ऊर्जा स्थायीकरण प्रक्रिया को सम्पन्न करने की क्षमता नहीं है। डायटम (diatoms), हरे शैवाल (algae), पादपप्लवक (phytoplankton) आदि भी अपना भोजन

हरे पौधे प्रकाश संश्लेषण की क्रिया में प्रकाश को, कार्बन डाइऑक्साईड जल और कुछ खनिजों से भोजन बनाने में, ऊर्जास्रोत के रूप में उपयोग करते हैं। ऑक्सीजन जो उत्तरजीविता हेतु नितान्त आवश्यक है प्रकाश संश्लेषण में गौण उत्पाद के रूप में मुक्त होती है।

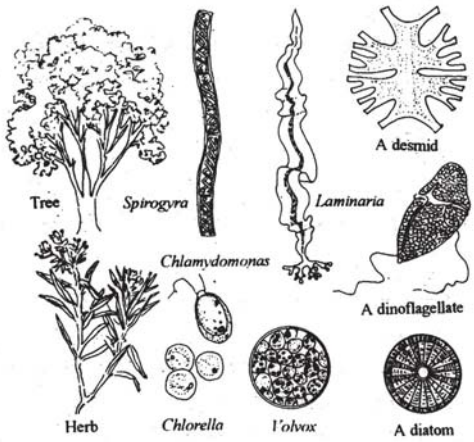

चित्र-3: विविध प्रकार के उत्पादक। इस चित्र में दर्शाए गए विभिन्न जीवरूप एक ही पैमाने पर नहीं बनाए गए हैं।

पशुओं व अधिकतर सूक्ष्म जीवों में पौधों की विपरीत स्थिति देखी जा सकती है। हरे पौधे तो सूर्य से प्राप्त ऊर्जा को ग्रहण कर अपना भोजन बना सकते हैं, परन्तु अन्य, जैसा की ऊपर बताया गया है, ऐसा करने में असमर्थ होते हैं। ऊर्जा और पोषण की प्राप्ति हेतु वे पौधों को खाते हैं। अथवा उन पौधों को खाने वाले अन्य जीवों को खा कर, अप्रत्यक्ष रूप से उर्जा और पोषण प्राप्त करते हैं। अतः पशु और अधिकतर सूक्ष्म जीव उपभोक्ता हैं।

उपभोक्ता अपने आहार स्रोतों के अनुसार निम्नवत् चार वर्गों में से किसी एक वर्ग के हो सकते हैं

शाकाहारी (herbivores),

मांसाहारी (carnivores),

सर्वाहारी (omnivores), और

अपरदहारी (detritus feeders)।

कोई उपभोक्ता जो केवल पौधों से भोजन प्राप्त करते हैं शाकाहारी कहलाते हैं, और वे पशु जो दूसरे जीवों को खाते हैं मांसाहारी कहलाते हैं। वनस्पति और मांस, दोनों खाने वाले जीव सर्वाहारी कहलाते हैं। हमने ऊपर दिये वर्गों के उदाहरण नहीं लिखे हैं, अतः आप इन वर्गों के जीवों की एक लम्बी सूची स्वंय तैयार कर सकते हैं। सूची तैयार करते समय अपने आप को भी इसमें शामिल जरूर कीजिए। आप स्वंय को किस वर्ग में रखेंगे?

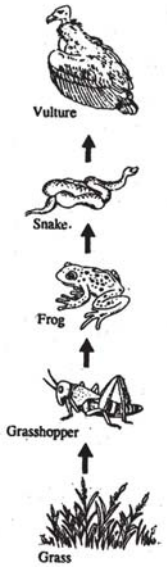

चित्र 4: आहार श्रृंखला–जब एक जीव दूसरे जीव को खाता है तब ऊर्जा और पोषकों का प्रवाह होता है।

अपरदहारी या अपघटनकर्त्ता अपरद खाते हैं, अर्थात् पौधों और पशुओं के मृत अथवा अंशतः अपघटित अवशेष ग्रहण करते हैं और मृत जैव पदार्थों से ऊर्जा और पौषण दोनों प्राप्त कर पर्यावरण में पदार्थों को पुनः संचारण में सहायता करते हैं। विविध प्रकार के असंख्य जीवाणु जैसे कवक, केंचुए, दीमक और कीड़े अपघटकों के कुछ मुख्य उदाहरण हैं।

बोध प्रश्न 2

1) किसी पारिस्थितिक तंत्र की रचना करने वाले मुख्य घटकों की सूची बनाइये।

.....

.....

.....

2) पारिस्थितिक तंत्र किसे कहते हैं? पारिस्थितिक तंत्र के दो जैविक और दो अजैविक कारको के नाम बताइये।

.....

.....

.....

3) शाकाहारियों, मांसाहारियों और सर्वाहारियों के मध्य भेद बताइये और प्रत्येक के दो उदाहरण दीजिये।

.....

.....

.....

4) यदि एक विशाल पोस्टर स्टिकर पर यह लिखा हो–''क्या आज आपने हरे पौधों को धन्यवाद दिया है?'' उनके प्रति ऐसा आभार क्यों? इसके दो कारण बताइये।

.....

.....

.....

5) उत्पादक पर्यावरण के परमावश्यक घटक क्यों हैं?

.....

.....

.....

6) अपघटकों के महत्वपूर्ण वर्गों की सूची प्रस्तुत कीजिये उनकी गतिविधियां, किस प्रकार अन्य उपभोक्ताओं की गतिविधियों से भिन्न हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7) यदि समस्त अपघटक एक सप्ताह के लिये अपना कार्य बन्द कर दें तो क्या होगा, क्या आप कल्पना कर सकते हैं?

.....

.....

.....

2.4 आहार श्रृंखला, आहार जाल, एवं पोषण स्तर

जैसा कि हम पिछले अध्याय में बता चुके हैं कि विभिन्न वर्गों के जीव आहार के माध्यम से परस्पर सम्बन्धित हैं। ऊर्जा संश्लेषण करने वाले हरे पौधे यानि उत्पादकों का उपभोग शाकाहारी करते हैं जो स्वंय मांसाहारियों द्वारा खा लिये जाते हैं। इस प्रकार सजीव प्राणी ऊर्जा के माध्यम से परस्पर सम्बन्धित हैं और वे आहार श्रृंखला की रचना करते हैं। दूसरे शब्दों में ये सभी खाने वाले और खाए जाने वाले एक श्रृंखला में बंधे हुए हैं जिसे आहार श्रृंखला कहते हैं (चित्र-4)। आहार श्रृंखलाएं अधिकतर क्रमिक होती हैं और पौधों से प्रारंभ होती हैं जिसके पश्चात् शाकाहारियों और मांसाहारियों या परभक्षियों के दो क्रम होते हैं। ऐसी आहार श्रृंखलाएं **चारण आहार श्रृंखला (grazing food chain)** या **परभक्षी आहार श्रृंखला (predator -food chain)** कहलाती हैं (चित्र-5a) इसके अतिरिक्त वह आहार श्रृंखला जो मृत जैव पदार्थों से प्रारंभ होती है और जिनका बहुत से परजीवी (parasites) और परात्परजीवी (hyperparastes) उपभोग करते हैं उन्हें **अपरद आहार श्रृंखला (detritus food chain)** या **मृत्तोपजीवी आहार श्रृंखला (saprophytic food chain)** कहते हैं (चित्र -5b देखिए)। ये आहार श्रृंखलाएं प्रकृति में अधिकतर परस्पर संयोजित होती हैं (देखिए चित्र -5c)।

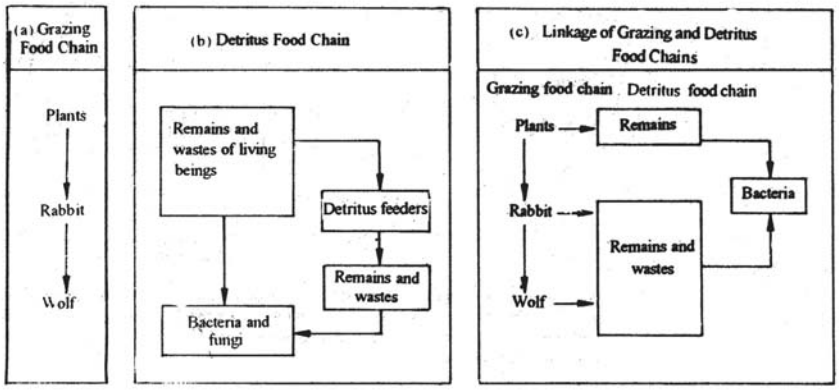

चित्र-5: (a) चारण आहार श्रृंखला (b) अपरद आहार श्रृंखला। कवक और अन्य जीव पौधों का चारण करते हैं या पशुओं के अवशेषों को खाते हैं। (c) चारण तथा अपरद आहार श्रृंखलाएं संयोजित हैं।

आइए हम पांच कड़ीयों पर आधारित एक सरल आहार श्रृंखला पर ध्यान दें जिसका क्रम निम्नवत् है:

घास ⟶ टिड्डा ⟶ मेंढक ⟶ सांप ⟶ गिद्ध

आहार श्रृंखला में प्रत्येक कड़ी अथवा संयोजन **पोषण स्तर (trohic level)** या आहार स्तर कहलाता है (चित्र-6) । हरे पौधे प्रथम पोषण स्तर की रचना करते हैं, शाकाहारी दूसरे पोषक स्तर की और उच्चतर पोषण स्तर (तृतीय, चतुर्थ, पंचमी आदि) मांसाहारियों द्वारा रचित होते हैं। उपरोक्त आहार श्रृंखला को एक बार फिर देखिए। किसी जीव का पोषण स्तर उत्पादकों अर्थात् हरे पौधों के सापेक्ष उसकी स्थिति को निर्दिष्ट करता है।

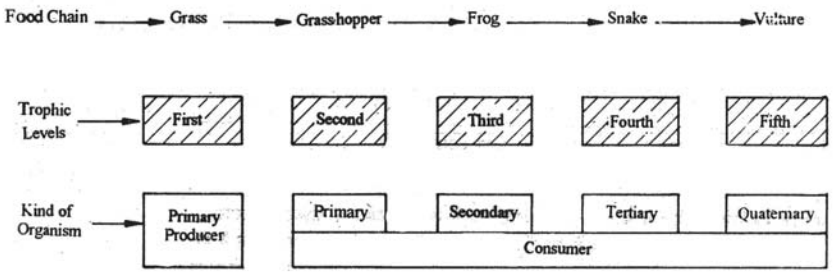

चित्र-6: चित्र-4 में दर्शाई गई आहार श्रृंखला का पोषण स्तर आरेख।

आहार श्रृंखला एक प्रवाह चार्ट है जो आहार-ऊर्जा के पारिस्थितिक तंत्र में मार्ग को दर्शाता है (चित्र-4, 5 और 6 देखिए)। ये याद रखना महत्वपूर्ण है कि पारिस्थितिक तंत्र से ऊर्जा प्रवाह निचले स्तर से ऊंचे स्तर की ओर तथा एक दिशीय होता है (चित्र-7 देखिए)।

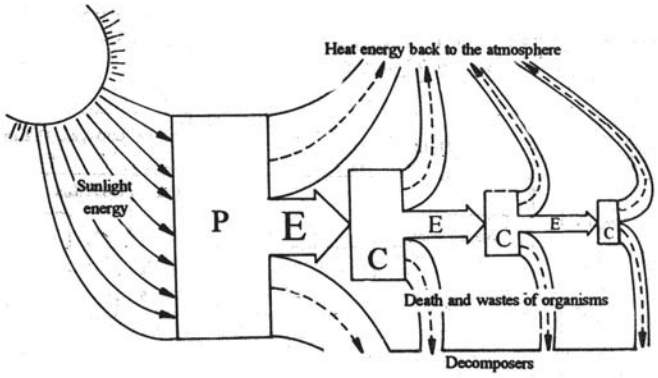

चित्र-7: आहार श्रृंखला से ऊर्जा प्रवाह। उत्पादकों द्वारा सौर ऊर्जा संश्लेषित होकर, एक पोषण स्तर से दूसरे पोषण स्तर की ओर आगे प्रवाहित हो जाती है और उपचटकों तक पहुंचती है। ध्यान में रखिए कि ऊर्जा का केवल कुछ ही अंश (यहां अक्षर E के विभिन्न आकारों द्वारा प्रदर्शित) ही अगले स्तर तक स्थानान्तरित होता है और एक बड़ा अंश का उष्मा के रूप में ह्रास हो जाता है। P-उत्पादक; E-उपभोक्ता।

अब हमें आहार श्रृंखला के विभिन्न स्तरों पर ऊर्जा की स्थिति पर ध्यान देना होगा (चित्र-7 देखिए)। जैसे-जैसे हम एक पोषण स्तर से दूसरे पर जाते हैं तो हर स्तर पर ऊर्जा का उष्मा के रूप में ह्रास होता है और केवल एक छोटा सा अंश ही (लगभग 10%) अगले स्तर तक पहुंचता है। परिणामस्वरूप ऊर्जा, प्राथमिक उत्पादकों से दूसरे स्तरों पर निरन्तर तीव्र गति से कम होती हुई उच्चतम उपभोक्ता (मांसाहारी) तक पहुंचती है। इससे ये स्पष्ट हो जाता है कि आहार श्रृंखला में कड़ीयों की संख्या इतनी कम है। चौथी या पांचवीं (कड़ी या स्तर) के बाद और अगले पोषण स्तर के निर्वाह के लिए पर्याप्त ऊर्जा नहीं बचती। इस धारणा को थोड़ा आगे बढ़ाते हुए सोचें तो इस निष्कर्ष पर पहुंचेगे कि पृथ्वी पर और अधिक मानव जनसंख्या का भरण पोषण मांसाहारी आहार की अपेक्षा शाकाहारी भोजन द्वारा ही संभव है। शाकाहारी भोजन के ग्रहण से, ऊर्जा एक ही चरण में, उपभोक्ता जोकि इस संदर्भ में मानव

है, तक सीधे पहुंच जाती है। चित्र-8 ऊर्जा प्रवाह पर उपरोक्त विचारों की पुष्टि के लिए धारणात्मक मॉडल है।

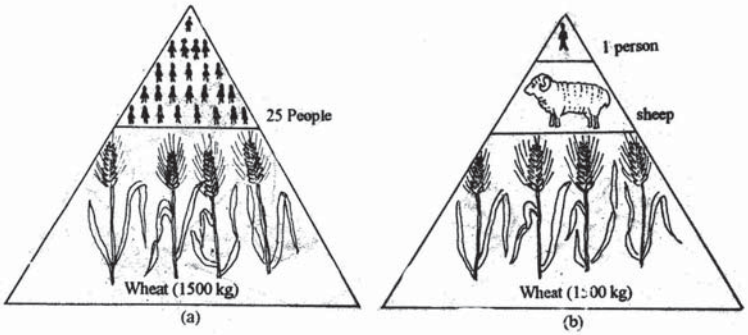

चित्र-8: मानव जनसंख्या के भरणपोषण के लिए शाकाहारी और मांसाहारी आहार के उपयोग का तुलनात्मक मॉडल। यदि 1500 कि.ग्रा. खाद्य पदार्थ 25 शाकाहारी व्यक्तियों का निर्वाह एक निश्चित समय तक कर सकता है (चित्र a देखें) तो उतने ही खाद्य पदार्थ से केवल एक मांसाहारी व्यक्ति का निर्वाह उतने ही समय तक हो सकता है (चित्र b देखें) दिए गए आंकड़े परिकल्पित है।

नीचे दिखाए गए पोषण स्तर आरेख में दो आहार श्रृंखलाओं की तुलना कीजिए (चित्र-9)। उपरोक्त आरेख को देखने के बाद क्या आप बता सकते हैं कि दोनों आहार श्रृंखलाओं में से कौन-सी श्रृंखला अधिक मानव जनसंख्या का निर्वाह कर सकती है?

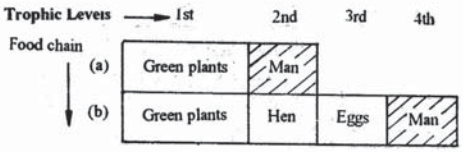

चित्र-9: पोषण स्तर आरेख जिसमें दो आहार श्रृंखलाएं (a एवं b) दिखाई गई हैं जिसमें मनुष्य अन्तिम पोषण स्तर पर है।

उपरोक्त विवेचन से आपको यह नहीं समझ लेना चाहिए कि किसी पारिस्थितिक तंत्र में आहार संबन्ध ऐसे सरल होते हैं जिसमें एक ही रैखिक आहार श्रृंखला होती है। लगभग प्रत्येक प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र में उपभोग का प्रारूप इतना जटिल होता है कि उसमें विभिन्न जीवों को जोड़ने वाले बहुत से तिर्यक संयोजन पाए जाते हैं। अत: जब किसी उपभोक्ता का आहार स्रोत एक से अधिक होता है तो परिणामस्वरूप आहार श्रृंखलाओं की शाखाएं भी पृथक हो जाती हैं और परस्पर संबन्धित होकर आहार जाल बनाती हैं (चित्र-10)। इस प्रकार एक आहार जाल समस्त आहार श्रृंखलाओं का संयोजन होता है जिससे हमें ये पता चलता है कि किसी पारिस्थितिक तंत्र में कौन किसका उपभोग करता है। आहार जाल पारिस्थितिक तंत्र के जीवों के मध्य ऊर्जा और पोषकों के स्थानान्तरण को दर्शाता है जबकि आहार श्रृंखला एक ही मार्ग प्रस्तुत करती है या आहार जाल की एक ही कड़ी को दर्शाती है।

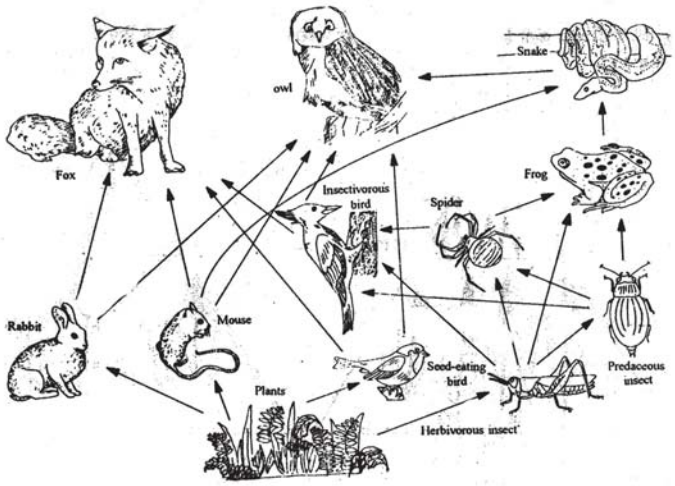

चित्र-10: सरलीकृत आहार जाल आरेख जिसमें आहार श्रृंखलाओं का अन्तःसम्बद्ध नेटवर्क (तंत्र) प्रदर्शित किया गया है।

किसी आहार जाल में बहुत-सी स्पीशीज़ (जातियां) एक से अधिक पोषण स्तर पर हो सकती हैं। इन स्पीशीज़ को बहुस्तरीय उपभोक्ता या सर्वाहारी कहते हैं। मानव इस स्थिति का अच्छा उदाहरण है। मानव जब पौधों से प्राप्त भोजन का उपभोग करते हैं तब वह द्वितीय पोषण स्तर पर होता है, और जब वह पशुओं के उत्पाद का उपभोग करता है तो वह तीसरे पोषण स्तर पर या फिर और ऊंचे स्तर पर होता है (चित्र-11 देखिए)।

Trophic Levels				
1st	2nd	3rd	4th	5th
Wheat →	Rat →	Snake →	Peacock →	Man
Plants →	Insects →	Hen →	Man	
Grass →	Goat →	Man		
Wheat →	Man			

चित्र-11: चार आहार श्रृंखलाएं जो ये प्रदर्शित करती हैं कि एक जीव (मानव) विभिन्न पोषण स्तरों पर हो सकता है।

बोध प्रश्न 2

1) आहार श्रृंखलाओं की दो मुख्य प्रकार कौन-कौन-से हैं? वे एक-दूसरे से किस प्रकार भिन्न हैं? उन में क्या समानता है?

.....

.....

.....

2) आहार जाल और आहार श्रृंखला किस प्रकार एक-दूसरे से भिन्न हैं ?

.....

.....

.....

3) किसी पारिस्थितिक तंत्र में ऊर्जा प्रवाह चक्रीय न होकर एक-दिशीय क्यों है?

.....

.....

.....

4) किसी बढ़ती जनसंख्या के आहार आवश्यकता पूरा करने के लिये आप शाकाहारी भोजन की सलाह देंगे या मांसाहारी की? स्पष्ट कीजिये।

.....

.....

.....

5) ''समस्त मांस घास है।'' इसकी पारिस्थितिकीय शब्दों में व्याख्या कीजिये।

.....

.....

.....

.....

6) एक किलोग्राम मांस एक किलोग्राम गेहूँ से मँहगा क्यों है? पारिस्थितिकीय संदर्भ में स्पष्ट कीजिये।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.5 अन्तर्सम्बन्ध और अन्योन्याश्रय

किसी पारिस्थितिक तंत्र के पोषण संबन्धों को पारिस्थितिक पिरामिडों के रूप में संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है (चित्र-12) पिरामिड का आधार उत्पादकों यानि की प्रथम पोषण स्तर को प्रदर्शित करता है और शेष भाग उपभोक्ताओं को निरूपित करता है जबकि शीर्ष तृतीय उपभोक्ता स्तर को चित्रित करता है। पारिस्थितिक पिरामिड तीन प्रकार के होते हैं। संख्याओं का पिरामिड (Pyramid of numbers) जो प्रत्येक पोषण स्तर पर जीवों की संख्या को प्रदर्शित करता है (चित्र 12a)। दूसरा जीवभार का पिरामिड (Pyramid of biomass) (चित्र 12b), किसी निश्चित समय पर जीवित पदार्थ का शुष्क भार होता है। उत्पादकों के जीवभार के परिकलन के लिए एक निश्चित क्षेत्र के पौधों को

एकत्र करके तोलना होता है। परन्तु उपभोक्ताओं के जीव भार का परिकलन करने के लिए, सर्वप्रथम पशुओं के विभिन्न प्रकारों की संख्या की गणना की जाती है। फिर कुल जीव प्रकार संख्या को प्रति वैयक्तिक भार से, गुणा करने पर प्राप्त गुणनफल ही प्रत्येक पोषण स्तर का लगभग जीव भार होता है। तीसरे प्रकार का पिरामिड ऊर्जा का पिरामिड (Pyramid of energy) कहा जाता है और यह पारिस्थितिक तंत्र में ऊर्जा संरचना को दर्शाता है (चित्र 12-c)। प्रत्येक अनुवर्ती पोषण स्तर में ऊर्जा प्राप्यता में कमी होती चली जाती है। क्या आप स्मरण कर सकते हैं कि ऐसा क्यों होता है? शायद आप चित्र-7 को पुन: देखना चाहेंगे।

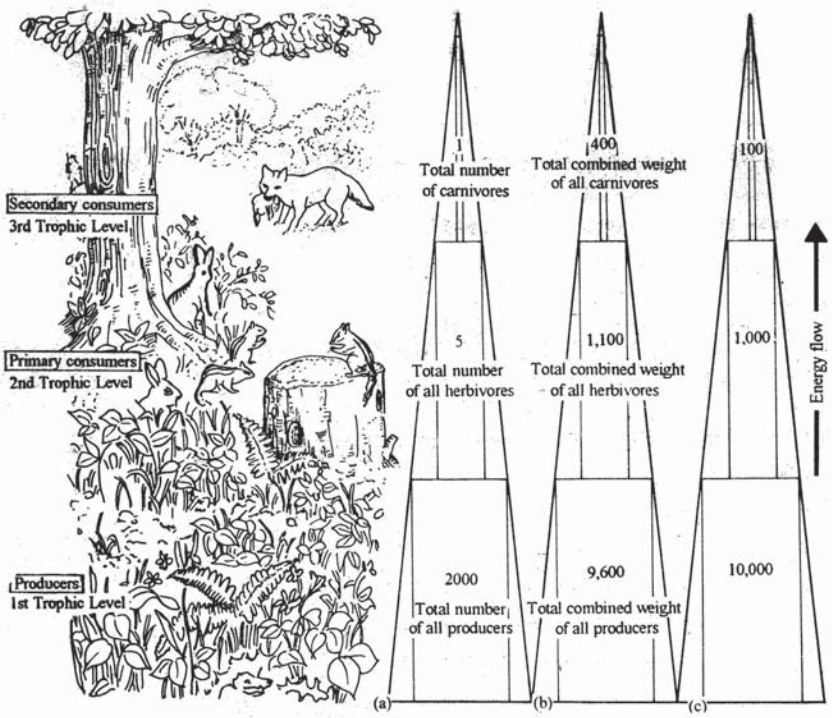

चित्र-12: (a) संख्या का पिरामिड (b) जीव भार का पिरामिड (c) ऊर्जा का पिरामिड। उपरोक्त पिरामिड में लिखे आंकड़े परिकल्पित हैं और जीवों को एक ही स्केल पर नहीं बनाया गया है।

जैसा कि आपको ज्ञात है कि उत्पादक पिरामिड के आधार की रचना करते हैं और उपभोक्ताओं के विभिन्न स्तर पिरामिड के ऊपरी भाग को आकार देते हैं। पिरामिडी आकृति किसी पारिस्थितिक तंत्र के विभिन्न पोषण स्तरों के मध्य 'संतुलन' को दर्शाती है। पारिस्थितिक पिरामिड के अध्ययन की उपयोगिता और समबद्धता को उपरोक्त तीन उदाहरणों में प्रदर्शित किया गया और नीचे उस पर विचार किया गया है। ये जानने का प्रयास कीजिए कि निम्नवत् परिस्थितियों में से प्रत्येक परिस्थिति का पारिस्थितिक पिरामिड किस प्रकार का होगा? कभी-कभी मानवीय कार्यों के कारण विभिन्न पोषण स्तरों के मध्य अन्योन्य सम्बन्धों और संयोजनों में गड़बड़ी आ जाती है। उदाहरणार्थ यदि हम किसी वन के सारे बाघ, शेर और अन्य सर्वोच्च मांसाहारी मार दें तो शाकाहारी जैसे हिरन, मृग, खरगोश आदि की संख्या बहुत बढ़ जाएगी और परिणामस्वरूप समस्त पारिस्थितिक तंत्र में असंतुलन हो जाएगा।

इस परिस्थिति को प्रदर्शित करने के लिए पारिस्थितिक पिरामिड के आकार की परिकल्पना कीजिए। आइए अब एक-दूसरे उदाहरण को देखें। यदि किसी क्षेत्र में बड़े पैमाने पर वन-अपरोपण (deforestation) हो तो हरे पौधों पर निर्भर शाकाहारी या तो आस-पड़ोस के क्षेत्रों में चले जाएंगे तथा स्वयं को (नई पारिस्थितियों के) अनुरूप अनुकूलित कर लेंगे और वहां बस जाएंगे या फिर स्वयं को उन नई परिस्थितियों के अनुरूप न ढाल पाने के कारण नष्ट हो जाएंगे। वन अपरोपण एक झटके में शाकाहारियों के आवास को बिल्कुल बदल देता है और उनके आहार स्रोतों को नष्ट भी कर देता है। यही वन अपरोपण अपने देश के प्राकृतिक वनों में फल-फूल रहे विशेष क्षेत्री नरवानर जातियों के धीरे-धीरे लुप्त हो जाने के कुछ प्रमुख कारणों में से एक महत्वपूर्ण कारण है।

इसी प्रकार खेतों में, जो कि मानव-निर्मित पारिस्थितिक तंत्र हैं, हम लोग अपने खेतों को कृषि नाशक रोगों से बचाने और अच्छी फसल लेने के लिए अत्याधिक जीवनाशक, कीटनाशक और रोगनाशक पदार्थों का उपयोग करते हैं। इन रोग नाशकों के उपयोग की हमें भारी कीमत चुकानी पड़ती है क्योंकि एक लम्बी अवधि तक उनका प्रयोग पारिस्थितिक तंत्र को अस्तव्यस्त कर देता है। कैसे? प्रकृति में बहुत से ऐसे सूक्ष्मजीव हैं जो अवांछित नहीं हैं बल्कि वे कुछ विशिष्ट भूमिकाएं निभाते हैं। उनमें से कुछ परागणकारी के रूप में कार्य करते हैं अर्थात् वे पराग कणों को एक पुष्प से दूसरे पुष्प तक पहुंचाते हैं। ऐसा करके वे फसलों और जंगली पौधों की जातियों में उर्वरण और बीज विन्यास क्रिया सम्पन्न करते हैं। जैविक साधनों द्वारा इस प्रकार पराग कणों का एक पुष्प से दूसरे तक स्थानान्तरण अतिआवश्यक जननिक अदला बदली में सहयोग देता है जिसके फलस्वरूप उच्च जननिक ढाँचे वाली जातियों और किस्मों का उत्पादन होता है। आइए अब हम जीवनाशकों (biocides) के प्रयोग से होने वाले लाभों और हानियों के विषय में चर्चा करें। उसके प्रयोग से एक ही लाभ है और वह ये कि इससे कीटों का नियन्त्रण होता है किन्तु इसकी हानियां अनेक हैं। इनके अधिक उपयोग से ये प्राकृतिक भण्डारों में धीरे-धीरे संचयित होते रहते हैं, तथा अन्य कई उपयोगी जीव और अलक्षित अवयवियों को, जिनमें कुछ परागणकारी भी हैं, को नष्ट करते हैं। ये स्वाभाविक है कि परागणकारीयों के विनाश से बीज विन्यास या उपज बहुत अधिक घट जाने की संभावना रहती है। हम में से वह सब लोग जो स्वाभाविक रूप से प्रकृति के न केवल निकट हैं पर उसमें पाए जाने वाले नाजुक संबन्धों को समझने के प्रति भी चिन्तित रहते हैं, वे सब प्रायः इस प्रकार की परिस्थितियों में अपने कार्यों के चुनाव में सतर्क रहते हैं। आजकल शिक्षित और पर्यावरण के प्रति सजग कृषक भी इन रासायनों के निरन्तर प्रयोग से प्रकृति को पहुंचने वाली संभावित हानि को ध्यान में रख कर ही अपनी सारी विभिन्न प्रकार की फसलों के कुल व्यय और लाभ का मूल्यांकन करते हैं।

विशेषक्षेत्री जातियां (endemic species) विश्व के किसी क्षेत्र या भाग में सीमित जातियां

2.6 संयोजन

प्रमुख पारिस्थितिक तंत्र के घटकों और उनके संयोजनों का अध्ययन कर लेने के पश्चात् अब हमें पारिस्थितिक तंत्र को सम्पूर्णता में देखना चाहिए। किसी भी प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र जैसे झील, वन या किसी द्वीप की कल्पना कीजिए। इन सबमें एक बात आप अवश्य देखेंगे कि कोई भी जीव अपने आप में अकेला नहीं है। प्रत्येक जीव का पारिस्थितिक तंत्र में वास करने वाले दूसरे जीवों से संयोजन होता है। किसी निश्चित क्षेत्र में रहने वाले जीव मिलकर एक **सम्प्रदाय (community)** की रचना करते हैं। किसी सम्प्रदाय में जीव – सूक्ष्म जीव अथवा वृहत्जीव प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अन्योन्य आश्रित हैं। इसके अतिरिक्त जीवों का अपने अजैविक पर्यावरण के साथ भी घनिष्ट और जटिल संयोजन है। आइए देखें ऐसा कैसे है?

जीवित रहने के लिए सारे जीवों को अपने पर्यावरण से ऊर्जा और पोषकों को प्राप्त करना पड़ता है। प्राथमिक उत्पादक पारिस्थितिक तंत्र में ऊर्जा प्रवेश के द्वार हैं। एक पारिस्थितिक तंत्र में सारी अभिक्रियाओं को सामर्थ्य प्रदान करने का मूलभूत स्रोत सौर ऊर्जा है। सौर ऊर्जा का प्रयोग तथा उसे कार्बोहाइड्रेटों के रूप में संग्रहित कर प्राथमिक उत्पादक अजैविक और जैविक घटकों के मध्य संयोजन स्थापित करते हैं। शाकाहारी अपनी ऊर्जा की आवश्यकताओं की आपूर्ति हरे पौधों से प्राप्त आहार से करते हैं और इस प्रकार मांसाहारियों के लिए ऊर्जा स्रोत बनते हैं। किसी पारिस्थितिक तंत्र में आहार श्रृंखला और आहार जाल के विभिन्न ऊर्जा स्थानान्तरण अनुक्रम, जीवों को एक-दूसरे से संबद्ध करते

हैं तथा संयोजन प्रस्तुत करते हैं। इनमें से कोई भी जीव प्राप्त की हुई ऊर्जा का शत प्रतिशत उपयोग नहीं कर पाता। यदि इसका विपरीत सच होता तो आहार जाल कैसे चलता? वास्तव में, किसी भी स्तर पर प्राप्त ऊर्जा का केवल एक छोटा सा अंश मात्र ही उपयोग में आता है और शेष ऊर्जा का ताप के रूप में पर्यावरण में क्षय हो जाता है। इस क्रिया से **जैविक और अजैविक घटकों के मध्य महत्वपूर्ण संयोजन** को देखा जा सकता है। उपापचयी अपशिष्ट और मृत जैविक पदार्थ जैविक और अजैविक घटकों के मध्य एक और प्रमुख संयोजन का स्वरूप है। संयोजन की कहानी यहीं समाप्त नहीं हो जाती। जीवाणु, कवक, कृमि और अन्य अपघटक अपनी जीवन प्रक्रियाओं के लिए आवश्यक ऊर्जा की आपूर्ति मृत जैविक पदार्थों से करते हैं। इस प्रक्रिया में वे अनावश्यक अपशिष्टों का प्रयोग कर उन्हें प्राथमिक तत्वों जैसे कार्बन, ऑक्सीजन और नाइट्रोजन के रूप में विघटित करते हैं। यह प्राथमिक तत्व अन्ततोगत्वा पर्यावरण में हरे पौधों के पोषकों के रूप में पुनः उपलब्ध होते हैं। ये एक और **जैविक–अजैविक संयोजन** को दर्शाता है। हरे पौधों द्वारा ग्रहण किये गये पोषक एक बार फिर अपनी चक्रिय यात्रा प्रारंभ कर देते हैं। इस प्रकार जैविक–अजैविक घटकों के बीच विविध प्रकार के अन्तर्ग्रथित संयोजन, पर्यावरण की कार्यात्मक अखंडता के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

जो कुछ भी आपने अभी देखा वह केवल छोटे पारिस्थितिक तंत्र के लिए ही सत्य नहीं है बल्कि वृहत् पारिस्थितिक तंत्र (megaecosystem) के लिए या सम्पूर्ण पृथ्वी के लिए भी सत्य है। सार्वभौम स्तर पर भी वैसी ही ऊर्जा अभिग्रहण और चक्रीय अभिक्रिया चलती रहती है जैसा कि छोटे पारिस्थितिक तंत्रों में देखा जा चुका है। अपघटक भी मृत जीव अवशेषों और अपशिष्टों से तत्वों को प्राप्त करने और पुनः चक्रित करने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। इसके अतिरिक्त जल, जो जीवन के अस्तित्व के लिए अति आवश्यक कारक है, भी जल चक्र द्वारा निरन्तर उपलब्ध होता रहता है। ये चक्र भी सौर ऊर्जा की शक्ति द्वारा चलता रहता है। इस प्रकार पोषकों और ऊर्जा के संदर्भ में भौतिक और जैविक तत्वों के मध्य संतुलन बना रहता है। ये अवस्था प्राकृतिक संतुलन (natural equilibrium) भी कही जाती है। ये एक ऐसा शब्द है जो पारिस्थितिकी और पर्यावरण सुरक्षा से सम्बंधित समस्याओं पर विचार करते समय अक्सर हमारे सामने आ जाता है। इस ग्रह पर जीवित रहने के लिए इन मौलिक बातों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि हमारे कार्यों का चुनाव इन प्रक्रमों के लिए गतिरोधक सिद्ध हो और अन्ततोगत्वा इस ग्रह पर जीवित रहना असंभव हो जाए।

2.7 पर्यटन उद्योग का प्रकृति से सम्बद्ध करने का प्रयत्न

आधुनिक युग में मानव कार्यकलापों में से पर्यटन महत्वपूर्ण होता जा रहा है। यहां तक कि आज राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन उद्योग बहुत तीव्रता के साथ एक प्रमुख आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है। आप अचंभे में होंगे कि हम अचानक एक बिल्कुल नए मुद्दे पर क्यों विचार करने लगे। ऐसा इसलिए है कि यही आपके पाठ्यक्रम का केन्द्रीय विषय है जिसके बारे में यहां से आगे हम आप से बात करना प्रारंभ कर रहे हैं। अभी तक जितनी पर्यावरणीय मौलिक बातें आपने पढ़ी हैं वह आपको पर्यटन उद्योग अर्थात् पर्यावरण के विभिन्न कार्यकलापों के विश्लेषण के लिए तैयार करने में सहायक होंगी। अब प्रश्न यह उठता है कि आखिर ये पर्यटन क्या है? पर्यटन एक ऐसा शब्द है जो कुछ विशिष्ट उद्देश्यों को लेकर लोकजन यात्रा और देश/विदेश के विभिन्न भागों के भ्रमण से जुड़े सभी सम्बन्धों और प्रक्रमों को निरूपित करता है। पर्यटन में दो अन्योन्यक्रियाशील घटक सम्मिलित हैं – पर्यटक और पर्यावरण। पर्यटक का उद्देश्य चाहे जितना भी सौम्य क्यों न हो फिर भी स्थानीय पर्यावरण पर उसका कुछ-न-कुछ प्रभाव अवश्य ही पड़ता है। कैसे? उदाहरणार्थ आप सैलानियों के किसी ऐसे छोटे ग्रुप की कल्पना कीजिए जो किसी क्षेत्र में जाकर भूदृश्य और वन्य जीवों के अवलोकन से आनन्दित होने के साधारण उद्देश्य से कुछ दिनों के लिए ठहर जाते हैं। ऐसे पर्यटकों की न्यूनतम आवश्यकताओं जैसे आवास के लिए उपयुक्त सुविधाएं, परिवहन सुगमता, और सम्पूर्ण आपूर्ति से सम्बन्धित इन्फ्रास्ट्रक्चर की उचित व्यवस्था होनी आवश्यक है। पर्यटकों के व्यवहार-सहित ये सारी क्रियाएं पर्यावरण पर निश्चित रूप से किसी-न-किसी प्रकार का दबाव डालती हैं। अतः प्रयास यह होना चाहिए कि पर्यावरण पर अत्याधिक दबाव न पड़े जिससे कि वह पर्यटकों के लौटने के बाद जल्द ही पूर्व मूल स्थिति में आ सके। देखना यह है कि यह सब केवल दर्शन के स्तर तक ही सीमित नहीं रह

जाए बल्कि भीतर से हम सब में पर्यावरण के प्रति दायित्व का अहसास जागृत हो।

अतः यह जरूरी है, कि हम पर्यावरण संरक्षण एवं इसके नाजुक संतुलन को बचाए रखने के लिए पर्यटन और पर्यावरण के मध्य अन्योन्य क्रियाओं को भली-भांति समझें। जब हम ऐसा कहते हैं तो उसका यह अर्थ नहीं है कि इस पहलू पर पहली बार विचार किया जा रहा है। ऐसे लोगों ने जो पर्यटन उद्यमों से जुड़े हुए हैं अतीत में इनमें से कुछ ने समस्याओं को अनुभव किया और पर्यटकों द्वारा डाले गए प्रभावों का अध्ययन किया। इन अध्ययनों ने पर्यटन से संबन्धित कार्यों के कारण, पर्यावरण पर पड़ने वाले हानिकर प्रभावों को उजागर किया और क्षति के स्तर को रिकार्ड किया, किन्तु क्षति पहुंचाने वाले प्रक्रमों की पहचान शायद ही कभी की गई हो। इस प्रकार की छानबीन की एक और कमी यह भी है कि किसी पर्यटन स्थल के केवल एक ही घटक का अकेले, अध्ययन किया जाता है और सम्पूर्ण पर्यावरण के घटकों के सम्बन्धों और अन्योन्याश्रयों के व्यापक अवलोकन की उपेक्षा की जाती रही है। संक्षेप में ये कहा जा सकता है कि इनमें से अधिकांश अध्ययन प्रतिक्रियात्मक हैं अर्थात् घटना के उपरान्त का विश्लेषण हैं। निम्नलिखित पांच उदाहरण इस तथ्य को स्पष्ट कर देंगे। विभिन्न परिस्थितियों से लिए गए ये उदाहरण कुछ पर्यटन संबंधी कार्यों के हानिकर प्रभावों के सारांश और वास्तविक आंकड़ों पर आधारित हैं, परन्तु हमने जानबूझ कर उन आंकड़ों को यहां प्रस्तुत नहीं किया है।

- संवेदनशील पारिस्थितिक तंत्र जैसे की टिब्बों (dunes) में सड़कों पर वाहनों का प्रयोग।
- पर्यटकों द्वारा वन्य जीवों का अवलोकन जन्तुओं और पक्षियों के चारण और प्रजनन को बाधा पहुंचाता है।
- पर्यटकों द्वारा छोड़े गए अपशिष्ट, कई वर्षों में काफी मात्रा में एकत्र हो जाते हैं और उन क्षेत्रों में गन्दगी इतनी बढ़ जाती है कि वहाँ स्वास्थ्यकर समस्याएं पैदा हो जाती हैं। बहुत से ऐसे ही क्षेत्रों में तो ये स्थिति इतनी अधिक बिगड़ जाती है कि उस पर्यटन स्थान का स्वरूप ही संकट में पड़ जाता है।
- समुद्र के पर्यटन सैरगाहों में पर्यटकों के आवासों से निकलने वाला संसाधित विषाक्त मलजल समुद्रों में गिराया जाता है जो जलीय जीवों, तटीय क्षेत्रों तथा आसपास के क्षेत्रों में निवास करने वाले जीवों के समुदायों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।
- भ्रमण और लापरवाही से आयोजित शैक्षिक यात्राओं के कुछ प्रतिकूल प्रभाव हैं : दुर्लभ या महत्वपूर्ण पौधों का पर्यटकों के हाथों उखाड़ा जाना और वनस्पति का पैरों तले रौंदा जाना। इस प्रकार की गतिविधियों से जैव विविधताओं को अपरिहार्य क्षति पहुंचती है।

इस संदेश को व्यक्त करने के लिए अनेकों प्रभावशाली उदाहरणों की कोई कमी नहीं है तथा यह काफी संख्या में लिखित रूप में उपलब्ध हैं। परन्तु ये केवल पुस्तकों, पत्रिकाओं, तथा प्रौद्योगिक जर्नलों में बन्द रहते हैं। भविष्य में भी ऐसे बहुत से उदाहरण वर्तमान सूची में जुड़ कर उसे और भी लम्बा बना देंगे। चूंकि पर्यटन आने वाले वर्षों में निश्चित रूप से अन्तरराष्ट्रीय व्यापार का एक प्रमुख क्षेत्र जल्द ही बन जाएगा इसलिए पर्यटन के पर्यावरण पर प्रभाव का पुनरावलोकन अतिशीघ्र आवश्यक है। पारिस्थितिकीय रूप से एक उचित और विश्वस्त योजना तथा प्रबन्ध की आवश्यकता है जो ऐसे मामलों का निपटारा कर सके। पर्यटन उद्योग से संबन्ध हर व्यक्ति को सुग्राहित बनाकर पर्यटन उद्यम के हर चरण पर समाविष्ट करना कार्यविधि का महत्वपूर्ण भाग होना होगा। यदि हम सब – पर्यटक और पर्यटन अधिकारी, इस बात से सचेत हों कि हमारे कार्यकलाप पर्यावरण पर गहरा प्रभाव डालेंगे तो उसकी सुरक्षा बिना किसी प्रयास कार्यान्वित होती चली जाएगी। इस दिशा में कोई भी शुभारंभ चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो व्याप्त होकर सारे विश्व में फैल जाएगा।

बोध प्रश्न 3

1) पिरामिड के जैवभार के घटने से क्या उलझनें उत्पन्न हो सकती हैं? घटते हुए जैवभार तथा जीवों की संख्या के मध्य पाए जाने वाले संबंधों की समीक्षा कीजिये।

.....

.....

.....

2) यदि किसी बाघ-क्षेत्र के सारे हिरण,खरगोश और अन्य शाकाहारी मार दिये जाएं तो निम्नलिखित पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

अ) उस क्षेत्र में वृक्षों/ वनस्पतियों की पैदावार पर;

ब) बाघों और अन्य मांसाहारियों पर;

स) अपघटकों पर?

.....

.....

.....

3) एक आहार जाल बनाकर उसमें प्रकृति में संयोजनों को स्पष्ट कीजिए।

2.8 सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा कि :

- पर्यावरण जैविक और अजैविक घटकों द्वारा निर्मित है जो पारिस्थितिक तंत्र के रूप में परस्पर संबन्धित है।
- सम्पूर्ण पारस्थितिक तंत्रों के लिए मूलभूत ऊर्जा स्रोत सूर्य है। उत्पादक सौर ऊर्जा को ग्रहण कर उसे जैवभार के रूप में परिवर्तित करने में सक्षम है।
- शाकाहारियों का आहार उत्पादक हैं, और शाकाहारियों को मांसाहारी खा लेते हैं, तथा इनको दूसरे मांसाहारी अपना भोजन बनाते हैं। इस प्रकार आहार श्रृंखला की रचना होती है।
- चारण आहार श्रृंखला का प्रारंभ बिन्दु सदैव उत्पादक होता है उसके पश्चात् उपभोक्ताओं की श्रृंखला है जो अपने से पहले स्तर वाले जीवों से अपना भोजन प्राप्त करते हैं। अपरद आहार श्रृंखला, मृत जैव पदार्थों से प्रारंभ होती है जिसका उपभोग अपघटक, जैसे कि जीवाणु कवक और कई प्रकार के मृदा जीव करते हैं।

- आहार श्रृंखला का प्रत्येक स्तर, पोषण स्तर कहलाता है।
- पारिस्थितिक तंत्र का सामान्य रूप से अपेक्षाकृत बड़ा उत्पादक-आधार होता है जिसके बाद क्रमशः कम होते हुए शाकाहारी, मांसाहारी और उच्चतम मांसाहारी बाद वाले स्तरों पर होते हैं।
- पारिस्थितिक तंत्र में ऊर्जा प्रवाह होता है और पोषण स्तर, आहार श्रृंखला एवं आहार जाल इस ऊर्जा प्रवाह का मार्ग दर्शाते हैं। जब भी ऊर्जा एक से अगले पोषण स्तर की ओर प्रवाहित होती है तो लगभग 90% ऊर्जा ह्रास हो जाता है और केवल 10% ऊर्जा ही अगले पोषण स्तर के जीवों के शरीर के ऊतकों में समाविष्ट हो पाती है।
- जैविक समुदाय किसी क्षेत्र के परस्पर क्रियाशील जीवों की जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। जीव आहार श्रृंखलाओं के माध्यम से विविध रूपों में परस्पर संबन्धित होते हैं तथा बहुत सी अंतः ग्रंथित आहार श्रृंखलाएं आहार जाल बनाती हैं। इस प्रकार के अन्तःपाषन के कारण होने वाले समुदायिक परिवर्तनों का तंत्र व्यापी प्रभाव पड़ता है।
- किसी पारिस्थितिक तंत्र के पोषण संबन्धों को संख्या, जीव भार और ऊर्जा पिरामिड्स के रूप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है।
- समस्त जैविक और अजैविक घटक जटिल रूप से आपस में संयोजित हैं।
- प्रकृति में पाए जाने वाले संयोजनों को समझना इसलिए आवश्यक है कि प्रकृति को भावी विघटनों से बचाय जा सके।

2.9 शब्दावली

अजैविक (abiotic) : प्राणरहित जैसे शैल आदि।

जैवमण्डल (biosphere) : पृथ्वी का वह समस्त धरातल, जल और वायुमण्डल जिसमें सप्राण जीव पाए जाते हैं।

जैविक (biotic) : सप्राण जैसे पशु, सूक्ष्म जीव, पक्षी और वनस्पति आदि।

उपभोक्ता (consumer) : जीवीय आहार को खाने वाले।

अपघटक (decomposer) : जीव जैसे जीवाणु, कवक आदि जो मृत जैव पदार्थों को विघटित करके उनके तत्वों को प्रकृति में वापस लाने का कारण बनते हैं।

अपरद (detritus) : वनस्पति या जन्तु मूल का सड़ता गलता हुआ या ... जैव पदार्थ।

पारिस्थितिक पिरामिड (ecological pyramids) : किसी पारिस्थितिक तंत्र के विभिन्न क्रमिक पोषण स्तरों पर व्यष्टियों की संख्या या जैव भार या फिर उपलब्ध ऊर्जा प्रदर्शित करने वाला त्रिभुजाकार आरेख।

पारिस्थितिक तंत्र (ecosystem) : पर्यावरण की ऐसी इकाई जिसमें जैविक और अजैविक घटक ऊर्जा और पोषकों के आदान प्रदान द्वारा अन्योन्य क्रिया करते हैं।

आहार श्रृंखला (food chain) : उत्पादक से उपभोक्ता तक पोषक और ऊर्जा का विशिष्ट और सुनिश्चित मार्ग।

आहार जाल (food web) : जैविक समुदाय में आहार श्रृंखलाओं का जटिल अन्तःपाषन प्रारूप।

प्रकाश-संश्लेषण (photosynthesis) : वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा पौधे सौर ऊर्जा का उपयोग करके, अपने क्लोरोफिल से भरे ऊतकों में, कार्बन डाईऑक्साइड और जल से, कार्बोहाइड्रेट संश्लेषित करते हैं। ऑक्सीजन इस क्रिया का गौण उत्पाद (by-product) है।

उत्पादक (producer) : वे जीव जो सूर्य की प्रकाश ऊर्जा को रासायनिक बन्धन ऊर्जा में परिवर्तित करते हैं, हरे पौधे उत्पादक हैं।

पोषण स्तर (trophic level) : किसी पारिस्थितिक तंत्र में आहार संबन्धों के आधार पर जीवों का कार्यात्मक वर्गीकरण।

2.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) अन्योन्यक्रियाशील जीव और उनके भौतिक पर्यावरण।

2) पारिस्थितिक तंत्र प्रकृति की एक गतिशील, आत्मसंपोषित इकाई है जिसमें जीव और उनका भौतिक पर्यावरण शामिल है। उदाहरण आप स्वयं लिखें।

3) भाग 2.3 देखिए।
कुछ उदाहरण : शाकाहारी : बकरी, गाय; मांसाहारी : बाघ, भेड़िया; सर्वाहारी : मनुष्य, भालू।

4) प्रथम, हरे पौधे प्रकाश-संश्लेषण द्वारा सौर ऊर्जा का संचयन जैव पदार्थ के रूप में कर उपभोक्ताओं के आहार के रूप में प्रयोग में आते हैं। द्वितीय, हरे पौधे प्रकाश संश्लेषण अभिक्रिया के समय गौण उत्पाद के रूप में ऑक्सीजन का निरंतर उत्पादन करते रहते हैं। इस प्रकार यह प्राणाधार गैस बिना रुकावट के हमें मिलती रहती है। इन दो कारणों से हमें इनके महत्व को समझना तथा उनका आभारी होना चाहिए।

5) उत्पादक किसी पारिस्थितिक तंत्र में ऊर्जा के प्रवेश द्वार हैं। वे अपनी प्रकाश संश्लेषण नामक अद्वितीय ऊर्जा अभिग्रहण क्रिया द्वारा वह सौर ऊर्जा के योगीकरण और भण्डारण में सक्षम हैं जैसे कार्बोहाइड्रेट्स। ये भण्डारित ऊर्जा प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उपभोक्ताओं तक पहुंच जाती है।

6) उदाहरण – फफूंदी, जीवाणु।
अपघटक मृत पौधों और पशुओं तथा पशुअपशिष्टों को खाकर उनसे ऊर्जा की प्राप्ति में विशिष्टता रखते हैं। अपने इस कार्य से वे विभिन्न जैविक अपशिष्टों में निहित तत्वों को प्रकृति में लौटाने का महत्वपूर्ण कार्य भी करते हैं।

7) विभिन्न रूपों में उत्पादित जैविक अपशिष्ट गन्दगी के बड़े ढेर के रूप में एकत्र हो जाएगे। तत्वों को उनके प्राकृतिक भण्डारों तक मुक्त करके पहुंचाने वाला चक्र रुक जाएगा तथा अप्रत्यक्ष प्रभाव जैसे विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों और महामारियों का प्रकोप प्रारंभ हो जाएगा।

बोध प्रश्न 2

1) चारण आहार श्रृंखला और अपरद आहार श्रृंखला। अन्तर – चारण आहार श्रृंखला हरे पौधों से प्रारंभ होती है जबकि अपरद आहार श्रृंखला मृत जैव पदार्थ से शुरू होती है। समानता – पोषण स्तरों में ऊर्जा का आगे की ओर स्थानान्तरण दोनों ही में सम्मिलित है।

2) आहार जाल, पारिस्थितिक तंत्र में पोषक और ऊर्जा स्थानान्तरण का सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है जबकि आहार श्रृंखला आहार जाल में एक मार्ग मात्र का प्रतिनिधित्व करती है।

3) ऊर्जा एकदिशीय रूप में, आहार श्रृंखला में उत्पादक से उपभोक्ता तक स्थानान्तरित होती है। ऊर्जा की राशि आहार श्रृंखला में क्रमशः कम होती चली जाती है, और अन्तस्थ पोषण स्तर तक पहुंचते-पहुंचते अगले पोषण स्तर के भरण पोषण के लिए पर्याप्त ऊर्जा नहीं बचती। इस प्रकार ऊर्जा प्रवाहित होती है चकित नहीं होती।

4) शाकाहारी – भाग 2.4 देखिए विशेष रूप से चित्र 8।

5) समस्त मांस – जोकि उपभोक्ताओं से प्राप्त है, वह उत्पादकों से पोषकों और ऊर्जा के स्रोत प्राप्त करके ही उत्पन्न हुआ है। और उत्पादक की प्रायः घास से निरूपित किया जाता है।

6) संकेत: एक किलो मांस बनने के लिए एक जीव कई गुना अधिक अनुपात में, अपने से नीचे वाले

पोषण स्तर से ऊर्जा और पोषक प्राप्त करते हैं। ये स्थानान्तरण एक अक्षम प्रक्रिया है क्योंकि कोई भी जीव अपने शरीर के ऊतक में उपलब्ध ऊर्जा का मात्र 10% ही समाविष्ट कर सकता है। एक किलो मांस हेतु निचले पोषण स्तर के जैव भार के रूप में भारी लागत लगानी पड़ती है। भाग 2.4 और 2.5 भी देखिए।

बोध प्रश्न 3

1) भाग 2.5 देखिए। हम आहार-श्रृंखला के उच्चतम पोषण स्तर की ओर जैसे-जैसे आगे बढ़ते जाते हैं। उपभोक्ताओं की संख्या घटती जाती है।

2) अ) शाकाहारियों की अनुपस्थिति में वृक्ष/पौधे घने लम्बे और शानदार ढंग से बढ़ेंगे।

   ब) शाकाहारियों की अनुपस्थिति में, मांसाहारियों को बड़ा आघात पहुंचेगा क्योंकि वही उनका मुख्य आहार हैं। मांसाहारी भुखमरी से नष्ट हो जाएंगे।

   स) अपघटक मृत जैव पदार्थों पर जीवित रहते हैं जो किसी-न-किसी प्रकार उपलब्ध रहते ही हैं।

3) भाग 2.4 से संदर्भ लीजिए।

इस इकाई के लिये अभ्यास

अभ्यास 1

किसी खेत पर जाइए और ये सूचीबद्ध कीजिए कि कितने प्रकार की जातियां निम्नवत् वर्गों को संघटित करती हैं?

अ) उत्पादक

ब) उपभोक्ता

स) अपघटक

अभ्यास 2

इस अभ्यास के लिए एक सप्ताह का समय और आंकड़ों के सावधानीपूर्वक एकत्र कर रिकार्ड करें। यह कार्य आप सोमवार से प्रारंभ करके रविवार तक करें। इस दौरान आप यह नोट करें कि आप नाश्ते में क्या-क्या उपभोग करते हैं? इन आंकड़ों पर पुनर्विचार करके निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

अ) उपभोग किए गए पदार्थों को विभिन्न श्रेणीयों में वर्गीकृत कीजिए (देखिए भाग 2.3)।

ब) प्रत्येक वस्तु के पोषण स्तर का पता लगाने के लिए आहार श्रृंखला की रचना कीजिए।

स) उपभोग किए गए खाद्य पदार्थों को आधार बनाते हुए स्वयं को शाकाहारी, मांसाहारी, उच्चतम मांसाहारी और सर्वाहारी इत्यादि के रूप में वर्गीकृत कीजिए।

द) उपरोक्त (स) में वर्णित चार वर्गों में से कौन-से वर्ग में आप स्वयं को उचित रूप से वर्गीकृत करेंगे?

अभ्यास 3

ऐसा आहार जाल बनाइए जिसमें आप स्वंय भी सम्मिलित हैं।

अभ्यास 4

पर्यटकों और उन सारे लोगों को सुग्राही बनाने के लिए एक रणनीति बनाइए जोकि पर्यटन उद्योग जिसका मूल विषय पर्यावरणीय संरक्षण है, से जुड़े हैं। आप इस कार्य के लिए किसी भी सैरगाह को मॉडल के रूप में चुन सकते हैं।

इकाई 3 विश्व के जीवोम

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 विश्व के स्थलीय जीवोम

- 3.2.1 टुण्ड्रा
- 3.2.2 शंकुवृक्षी वन और टैगा
- 3.2.3 शीतोष्ण पर्णपाती वन
- 3.2.4 शीतोष्ण गुल्म प्रदेश
- 3.2.5 घासस्थल
- 3.2.6 मरुस्थल
- 3.2.7 उष्णकटिबंधीय सवाना
- 3.2.8 उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन
- 3.2.9 उष्णकटिबंधीय वर्षा वन

3.3 जलीय जीवोम

- 3.3.1 अलवण जलीय जीवोम
- 3.3.2 समुद्री जीवोम

3.4 भारत के जीवोम

3.5 सारांश

3.6 शब्दावली

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर



3.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे कि :

- जीवोम की संकल्पना का अर्थ क्या है,
- विश्व के स्थलीय व जलीय जीवोमों और अपने देश में पाए जाने वाले जीवोमों की क्या विशेषताएं हैं,
- जलवायु और जीवोमों के मध्य क्या संबंध हैं,
- प्रत्येक जीवोम की प्रमुख विशेषताएं क्या हैं।

3.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में हमने पारिस्थितिक तंत्र के जैविक और अजैविक घटकों के मध्य अन्योन्यक्रिया और अन्योन्याश्रय का अध्ययन किया। हमने ये भी पढ़ा कि जीवन केवल जीवमण्डल में पाया जाता है और जीवमण्डल में विविध प्रकार के भूदृश्य, वनस्पतियां और जंतु समुदाय पाए जाते हैं। कुछ क्षेत्र हरे-भरे

वनों से घिरे हो सकते हैं और कुछ दूसरे क्षेत्र, केवल मरुस्थल हैं या हिम से ढ़के हुए हो सकते हैं। हमारे ग्रह पर इस भूदृश्य में विविधता का क्या कारण है? सामान्य रूप से हम कहते हैं कि इन क्षेत्रों की जलवायु में भिन्नता ही इस विविधता का कारण है। जिन क्षेत्रों में समान जलवायु पाई जाती है, वहां धरातल और मिट्टी में भी समानता होती है, उनमें एक जैसे पौधे और समरूप जंतु पाए जाते हैं। आइए इसे उदाहरण द्वारा समझने का प्रयास करें, जैसे केरल के उष्णकटिबंधीय वर्षा-वनों (tropical rain forests) में बड़ी पत्तियों वाली ऊंचे वृक्ष दिखाई देते हैं जिनमें बहुरंगी चिड़ियां और तितलियां उड़ती रहती हैं। हजारों मील दूर अफ्रीका और दक्षिणी अमेरिका के उष्णकटिबंधीय वन बिल्कुल ऐसे ही दिखाई देते हैं हालांकि पास से निरीक्षण करने पर पता चलता है कि यहां वृक्षों की जातियां, चिड़ियों और तितलियों की किस्में केरल के वनों से भिन्न हो सकती हैं। यह विस्तृत, अलग और सरलतापूर्वक पहचान लिए जाने वाले संघटन या समुदाय जिनमें विशेष प्रकार की वनस्पति समूह और जंतु समूह पाए जाते हैं परिस्थिति विज्ञानियों द्वारा जीवोम (biome) के नाम से पुकारे जाते हैं। ये जीवोम सामान्य रूप से वहां सर्वाधिक पाए जाने वाली पौधों की जातियों या समुदायों के नाम से ही पुकारे जाते हैं।

विश्व के जीवोमों के विषय में बात करते समय हमें याद रखना चाहिए कि प्रमुख सामुदायिक संघटनाओं में महाद्वीपों के अतिरिक्त महासागरों, नदियों और झीलों के जल भी सम्मिलित हैं। अत: इस इकाई में हम स्थलीय जीवोम और साथ ही विशाल जलीय जीवोम का वर्णन करेंगे। दो पड़ोसी जीवोमों के मध्य सीमा रेखा विविक्त अथवा स्पष्ट शायद ही कभी होती हो बल्कि वे जीवोम अंतर्वर्ती क्षेत्र, जो "इकोटोन" (ecotone) कहलाता है, के द्वारा मिले होते हैं। इस अंतर्वर्ती क्षेत्र में आसपास के जीवोमों की अपेक्षा सामान्यत: अधिक विविधता वाली जातियां पायी जाती हैं और उनका घनत्व भी अधिक होता है।

इस इकाई में हमने विश्व के प्रमुख जीवोमों और उसके बाद भारतीय क्षेत्र के जीवोमों का वर्णन किया है। इनमें हमने विशेष जीवोमों की भौतिक परिस्थितियों और जैविक समुदायों का संक्षिप्त वर्णन किया है। इस इकाई का अध्ययन कर लेने के बाद आप जैवमण्डल में विविधता के महत्व को समझ सकेंगे और आगे आने वाले खण्ड में मानवीय हस्तक्षेप पर परिचर्चा को आगे बढ़ाने के लिए मंच तैयार हो जाएगा।

3.2 विश्व के स्थलीय जीवोम

चित्र-1 में विश्व के प्रमुख स्थलीय जीवोमों को दर्शाया गया है। जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं कि प्राथमिक कारक जो जीवोमों की रचना को प्रभावित करते हैं वे हैं जलवायु जैसे वर्षा, तापक्रम, हवाएं और किसी भी मौसम की आत्यन्तिकता जैसे बेहद सर्दी या गर्मी। इनके अतिरिक्त स्थलाकृति और प्रकाश भी महत्वपूर्ण कारक है। इनमें से वर्षा प्रमुख प्रतिबंधक है जिसके कारण जीवोम मरुस्थल होता है या घास का मैदान या फिर कोई वन। यदि औसत वार्षिक वर्षा 25 से.मी. से कम हो तो वह क्षेत्र मरुस्थल होगा और उसमें वनस्पति बहुत कम होगी चाहे यह औसत तापक्रम और प्रकाश तथा मिट्टी की किस्म कुछ भी हो अगर क्षेत्र में साधारण औसत वर्षा 25-75 से.मी. प्रति वर्ष हो तो वह घासस्थल होगा। यदि वर्षा औसत प्रतिवर्ष 75 से.मी. से अधिक हो तो वहां वन होगा। फिर भी औसत तापक्रम और औसत वर्षा मिलकर यह निर्धारित करते हैं कि किसी क्षेत्र का मरुस्थल, वन या घास स्थल किस किस्म का होगा।

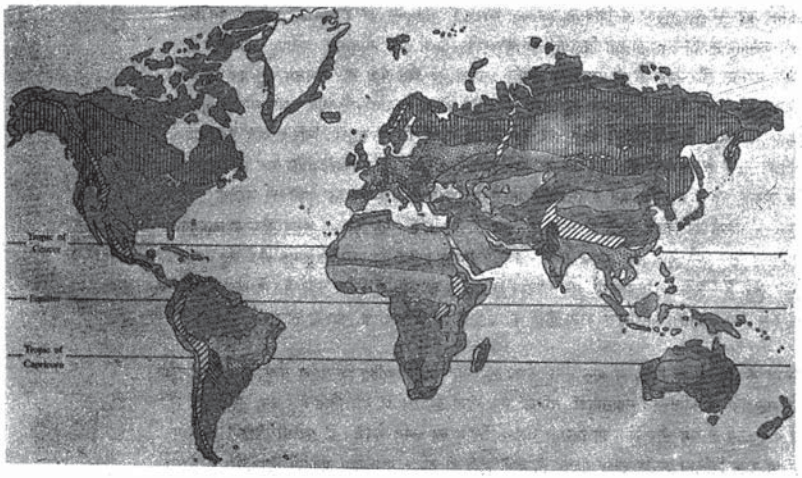

चित्र-1: विश्व के स्थलीय जीवोमों को वनस्पति की चरम अवस्था के आधार पर पहचाना जा सकता है। ध्यान दीजिए कि टुण्ड्रा और टैगा मोटे रूप से विश्व के चारों ओर एक पेटी के समान विस्तृत हैं, अन्य जीवोमों के वितरण में निरंतरता कम है (स्टार एवं टे गार्ट-1987 पर आधारित)।

यदि आप चित्र-2 को देखें तो आप अनुभव करेंगे कि स्थलीय जीवोम उत्तरी गोलार्ध में अक्षांश के अनुसार व्यवस्थित दिखाई देते है। रोचक बात ये है कि किसी भी भौगोलिक स्थान पर ऊंचाई में परिवर्तन के साथ ही जलवायु और वनस्पति भी बदली हुई दिखाई देगी। अत: किसी पर्वत के आधार पर जटिल वनस्पति पाई जाएगी और जैसे-जैसे हम चढ़ाई पर ऊपर चढ़ेंगे वनस्पति विरल होती मिलेगी और पर्वत की शिखर पर टुण्ड्रा जैसे क्षेत्र मिलेंगे जहां मॉस और लाईकेन प्रभावी रहते हैं।

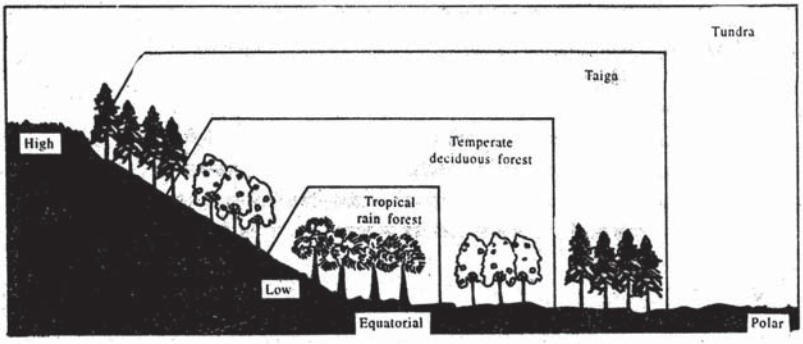

चित्र-2: तुंगीय विविधता प्राय: अंक्षाशीय विविधता की प्रांतविंब प्रतीत होती है।

आइए अब हम ये कल्पना करें कि आपके पास विश्व भ्रमण के लिए समय और साधन दोनों हैं और उत्तरी ध्रुव से भूमध्य रेखा की ओर यात्र करने की योजना है। इस यात्रा में आप सामान्य रूप से कौन-कौन से जीवोमों से होकर गुजरेंगे। आप विश्व के जीवोमों की अपनी यात्रा उत्तरी ध्रुव के समुद्र पर प्लवमान हिम खण्डों से आरंभ कर सकते हैं। ये एक उजाड़ शीत प्रदेश है। जब आप और दक्षिण की ओर आएंगे तो आप आर्कटिक टुण्ड्रा पहुंचेंगे जहां समुद्र धरातल से मिलता है। यही अत्यंत उत्तरी जीवोम है। अगर आप दक्षिण में और आगे भूमध्यरेखा की ओर बढ़ें तो आप जिन-जिन जीवोमों से गुज़रेंगे वे क्रमशः टैगा (taiga कोणधारी वन), शीतोष्ण पर्णपाती वन (temperate deciduous forest), मरुस्थल, घास स्थल और अंततः ग्रह के उष्णकटिबंधीय क्षेत्र हैं।

आइए अब हम विश्व के प्रमुख जीवोमों की मुख्य विशेषताओं का अध्ययन करें। हम टुण्ड्रा से प्रारंभ करेंगे जो सबसे कम जटिल जीवोम है।

3.2.1. टुण्ड्रा

हमारे ग्रह का अत्यंत उत्तरी जीवोम आर्कटिक टुण्ड्रा है जिसके उत्तर में ध्रुवी हिमच्छद (icecaps) और दक्षिण में वन है, यह उनके मध्य वृक्षरहित आर्द्र प्रतिध्रुवी (circumpoler) पट्टी के रूप में स्थित है। इसके प्रमुख पौधे लाइकेन, घासें, सेज और वामन काष्ठीय (dwarf woody) पौधे हैं। वृक्षों का अभाव होते हुए भी जंतु धरातल, वायु और निकटवर्ती महासागर में पाए जाते हैं। प्रत्येक अक्षांश के ऊंचे पवर्तों पर इसी प्रकार के जीव समुदाय पाये जाते हैं जिनसे एलपाइन टुण्ड्रा की रचना होती है। यहां जलवायु बहुत ठण्डी है और वर्धन काल बहुत छोटा होता है। मिट्टी वर्ष के अधिकांश समय में हिमीभूत रहती है और आर्कटिक टुण्ड्रा के छोटे ग्रीष्मकाल में मिट्टी की 0.5 मीटर ऊपरी परत ही पिघलती है (चित्र-3)। इसके नीचे की स्थायी रूप से जमी मिट्टी "स्थायी तुषार भूमि" (permafrost) कहलाती है। ग्रीष्मकाल में आप केरीबू के संमूह मुरगाबियों के झुण्ड और मच्छरों के दल के दल देख सकते हैं। ये कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वहां पौधों और प्राणियों की बहुत कम जातियां पाई जाती हैं क्योंकि यहां मौसम ही इतना कठोर होता है। संक्षिप्त में ये कहा जा सकता है कि वर्धन काल (growing season) बहुत छोटा होते हुए भी उस मौसम में काई, लाईकेन, कुछ घासें और जल्दी उगने वाले पौधे भूदृश्य पर छाए दिखाई देते हैं। प्रवासी पक्षियों के झुण्ड के झुण्ड ग्रीष्म काल में अपने चूज़ों के पालन-पोषण के लिए टुण्ड्रा में उतर पड़ते हैं और ग्रीष्म काल की समाप्ति पर दक्षिण की ओर उड़ जाते हैं। कुछ सामान्य रूप से वहीं निवास करने वाले जंतुओ में से कस्तूरी मृग, ध्रुवीय भालू, भूरा रीछ, भेडिए, बर्फीले उल्लू, उत्तर ध्रुवीय ख़रगोश, मिंक और वीज़ल आदि प्रमुख जंतु हैं। टुण्ड्रा एक बहुत ही नाजुक पारिस्थितिक तंत्र है क्योंकि वहां जैव पदार्थों के अपघटन की दर बहुत धीमी है। अतः पौधे बहुत धीरे-धीरे बढ़ते हैं और टुण्ड्रा किसी विघटन से उभरने में काफी समय लेता है।



चित्र-3: ग्रीष्मकाल में आर्कटिक टुण्ड्रा

3.2.2 शंकुवृक्षी वन और टैगा

जब आप टुण्ड्रा से दक्षिण की ओर यात्रा प्रारंभ करेंगे तो आपका प्रवेश शंकुवृक्षी वनों (coniferous

forests) की परिध्रुवी पेटी में होगा जो उत्तरी अमेरिका से यूरेशिया तक विस्तृत है और टैगा (taiga) के नाम से प्रसिद्ध है। ये शब्द टैगा रूसी शब्द है जिसका अर्थ है "आदिम युगीन वन"। टैगा झीलों, दलदलों और कच्छों (marshes) का प्रदेश है। जलवायु ठण्डी है, यहां शीत ऋतु लम्बी और ग्रीष्म ऋतु छोटी होती है। प्रमुख वृक्ष शंकुधारी जैसे स्प्रूस, फर और चीड़ (चित्र-4) हैं जिनकी पत्तियां सुईं के समान होती हैं जो शीतकाल की अत्यधिक ठंडक को सहन कर सकती हैं। इस क्षेत्र में पाए जाने वाले विशेष पशु मूस, भेड़िए, लिन्क्स, भालू ग्रेजे आदि हैं। इनमें से अधिकांश शीत ऋतु में जीवित रहने के लिए शरीर में एकत्र वसा पर ही निर्भर रहते हैं।

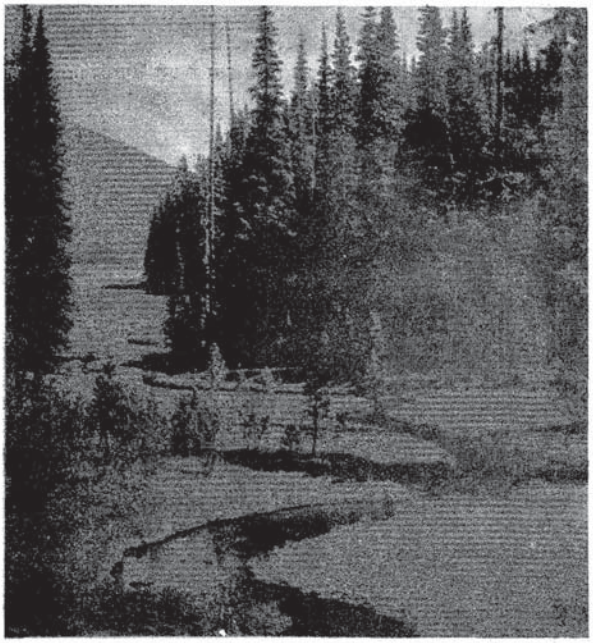

चित्र-4: ग्रीष्म ऋतु में टैगा

3.2.3 शीतोष्ण पर्णपाती वन

टैगा के और दक्षिण में आपको ग्रह का शीतोष्ण क्षेत्र मिलेगा (चित्र-1) इस क्षेत्र में औसतन सामान्य तापमान अनुभव किया जाता है। वर्ष में चार स्पष्ट ऋतुएं होती हैं। यहां ग्रीष्म ऋतु लम्बी और शीत ऋतु बहुत कठोर नहीं होती है और वर्ष भर व्यापक वर्षा होती है। चौड़ी पत्ती वाले पर्णपाती वृक्ष यहां की प्रमुख वनस्पति है जिनमें बलूत, हिकोरी, मेपिल, पॉपुलर, बीच और साईकामोर आदि वृक्ष हैं जो अपनी पत्तियां गिराकर और प्रसुप्त अवस्था में रहकर शीतऋतु में भी जीवित रह जाते हैं। (चित्र-5a और b)। शीतोष्ण क्षेत्र विश्व के अत्यधिक उत्पादी क्षेत्र हैं जिसमें अतिउत्तम कृषि भूमि पाई जाती है। आपको याद होगा कि धीमी गति से पदार्थों के अपघटन के कारण टुण्ड्रा की मिट्टी ख़राब है किंतु शीतोष्ण क्षेत्र में अपघटन नियंत्रित है अतः मिट्टी अधिक उर्वर है।





चित्र-5: शीतोष्ण पर्णपाती वन a) ग्रीष्म ऋतु में b) शीत ऋतु से पहले गिरते समय रंग बदलते पत्ते

3.2.4 शीतोष्ण गुल्म प्रदेश

ये वह क्षेत्र है जहां वृक्षों की अपेक्षा प्राकृतिक झाड़ियों की अधिक प्रधानता है। ऐसे क्षेत्रों में जहां भूमध्य सागरीय प्ररूपी जलवायु पाई जाती है अर्थात् गर्म शुष्क ग्रीष्म और ठंडी आर्द्र शीत, में झाड़ियां पास-पास और उगती हैं जिनकी पत्तियां चर्म के समान चिकनी मोटी होती हैं। ऐसे ही गुल्म प्रदेश (scrubland) संयुक्त राज्य अमेरिका में केलिफोरनिया के तटीय पर्वतों पर, चिली में, अफ्रीका के निचले सिरे पर और दक्षिण पश्चिमी आस्ट्रेलिया में पाए जाते हैं। अमेरिका में ऐसे वनस्पति समुदाय को "चैपेरल" (chaparral) या "बांज वन" कहते हैं (चित्र-6)। इनमें आग लगना सामान्य बात है और पौधों तथा प्राणी इसके अनुसार अनुकूलित होते हैं।

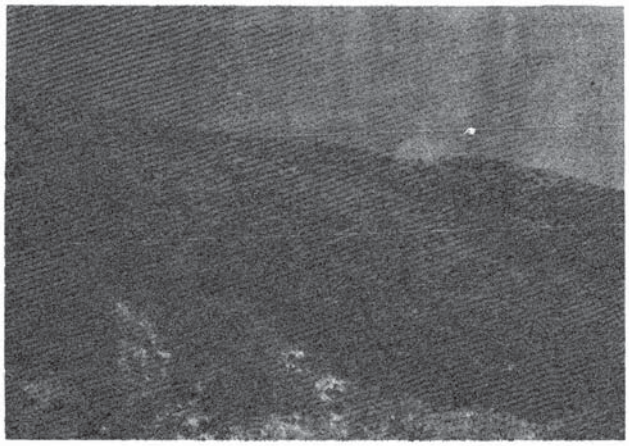

चित्र-6: 'चेपेरल' जीवोम

3.2.5 घासस्थल

उत्तरी गोलार्ध के विशाल मैदानों में घासस्थल (grassland) बड़े क्षेत्र पर विस्तृत दिखाई देते हैं। ऐसे घास के मैदान उत्तरी अमेरिका में प्रेअरी (prairie), एशिया में स्टेपीज़ (steppes) और दक्षिणी अमेरिका में पम्पास (pampas) कहलाते हैं। (चित्र-7)। आस्ट्रेलिया में ऐसे घासस्थल देश भर में फैले मरुस्थल के बराबर है। कभी-कभी घासस्थल मरुस्थलों में विलीन हो जाते हैं। घासस्थल की प्रधानता वाले क्षेत्रों में वर्षा लगभग 25-100 से. मी. होती है जो तापक्रम और मौसमी वितरण पर निर्भर है (घासस्थल उन स्थानों तक सीमित है जहां वर्षा की मात्रा वनों के लिए अपर्याप्त और मरुस्थलों से अधिक होती है)। एक और कारण है जिससे घासस्थल वन में परिवर्तित नहीं हो पाते और वह है अक्सर लगने वाली प्राकृति आग। घासस्थल चराई करने वाले पशुओं के लिए अच्छी चरागाह है। घासस्थलों में मृदा अच्छी और उर्वर है। हमारे आज के बहुत से खाद्यानों के पौधे (अनाज) इन्हीं जंगली घासों से प्राकृतिक चयन की प्रक्रिया द्वारा विकसित हुए हैं और ये नई खाद्यानों की जातियों के विकास के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण अनुवंशिक संग्रह है। घास-स्थलों को घासों की आपेक्षिक ऊंचाइयों के अनुसार तीन संवर्गों में बांटा जा सकता है–ऊंची घासें (1.5 से 2 मी.) मध्यम ऊंचाई की घासें



चित्र-7: घासस्थल

(30 से 60 से.मी) छोटी घासें (3 से 16 से.मी)। घासस्थलीय जीवोम सामान्यत: शाकाहारियों जीवों की एक बड़ी संख्या का निर्वाह करते हैं जबकि यहां मांसाहारी जीव बहुत कम हैं जैसे काइयोट, वीज़ल, बिज्जू लोमड़ियां, उल्लू और रैटलसर्प आदि।

3.2.6 मरुस्थल

शीतोष्ण प्रदेश में यात्रा करते समय पर्वतों और घासस्थलों के बीच ऐसे क्षेत्र मिलेंगे जो बहुत शुष्क और जीवन के लिए प्रतिकूल हैं। ये मरुस्थल है (चित्र-8)। यदि आप अपनी यात्रा दक्षिण की ओर जारी रखें तो 20° से 30° उत्तर और दक्षिण अक्षांशों में आपका सामना मरुस्थल से होगा। मरुस्थल अशरण्य स्थानों का चित्र प्रस्तुत करते हैं किंतु वास्तव में वे बहुत विविध है। विश्व का विशालतम मरुस्थल सहारा है। उसके बाद विशाल आस्ट्रेलियाई मरुस्थल का स्थान है। इनका पर्यावरण अत्यधिक शुष्क है और 30 से.मी. से भी कम वर्षा होती है (कभी-कभी कुछ अधिक वर्षा होती है किंतु असमान वितरण होता है)। मरुस्थलों में दिन का तापमान अधिक होता है, वर्षा और आर्द्रता कम होती है किंतु ठंडे उत्तरी मरुस्थल भी हैं जहां शीतकालीन हिम वर्षा सामान्य है उदाहरणार्थ तिब्बत और बोलीनिया। फिर भी सारे मरुस्थल, दिन और रात के तापक्रमों में बहुत बदलाव का प्रदर्शन करते हैं। मृदा बलुई या लवणीय होती है।

शुष्कतम मरुस्थल सहारा, जहां वर्षा 3 से.मी. प्रति वर्ष से भी कम होती है बहुत कम जीव संख्या का निर्वाह कर पाता है किंतु ऐसे मरुस्थल जहां मौसम कम कठोर है ऐसे प्राणियों का पालन पोषण करते हैं जो वहां के मौसम के अनुसार अनुकूलित हैं।

तीन प्रकार के पादप जीवरूप (life forms) मरुस्थलीय पर्यावरण के लिए सबसे अधिक अनुकूलित हैं।

1) एकवर्षी पौधे (annuals) जो जलाभाव से बचने के लिए उसी समय उगते हैं जब पर्याप्त आर्द्रता हो।

2) मांसलोद्मद् (succulents) जैसे कैक्टस जो जल भण्डारन के लिए अनुकूलित है और संचित जल को लुप्त होने से बचाते हैं।

3) कठोर मरुस्थली क्षुप, जिन के तने छोटे, शाखाएं और पत्तियां मोटी किंतु कम होती हैं।

मरुस्थल के पशु मुख्यतया संधिपाद प्राणी (arthropods), सरीसर्प (reptiles), स्तनी और पक्षी हैं। विशालकाय पशु सामान्य रूप से नहीं पाए जाते हैं, छोटी लोमड़ियां छोटे कृन्तक ही प्रमुख स्तनी प्राणी हैं। शाकाहारियों में कीड़ों की प्रधानता है। विभिन्न प्रकार की कीटाहारी छिपकलियां सामान्य रूप से देखी जाती हैं। लगभग सारे पशु अपने क्रिया-कलाप प्रात:काल या फिर सूर्य अस्त होने के बाद तक ही सीमित रखते हैं।



चित्र-8: मरुस्थल

मरुस्थली मृदा पोषकों की दृष्टि से धनी होती है किंतु जल का अभाव प्रतिबंधक है। यदि मरुस्थली जीवोमों को जल उपलब्ध करा दिया जाए तो उनमें बहुत अच्छा उत्पादन हो सकता है क्योंकि यहां सूर्य का प्रकाश प्रचुर है।

3.2.7 उष्णकटिबंधीय सवाना

मरुस्थलों से होकर जब आप उष्णकटिबंधी (tropical) प्रदेशों मे प्रवेश करेंगे तो आपको सवाना (savanna) जीवोम मिलेगा जो घास के मैदान और वृक्षों के झुरमुट का सम्मिश्रण है। ये विशेष प्रकार के घासस्थल अक्सर उष्णकटिबंधीय वर्षा वनों (tropical rain forests) के किनारों पर होते हैं। जलवायु गरम होती है और वार्षिक वर्षा 100-150 से.मी. है। मौसम शुष्क रहता है और शुष्कता की अवधि लम्बी होती है जिसमें आग का लगना एक सामान्य बात है। वर्षा का कोई समय नियमित नहीं होता है।

इस घासस्थल में वृक्ष इधर-उधर उगे रहते हैं और इसी लिए सवाना के किसी भाग में भी ऊपर घने होकर कनोपी (canopy) के रूप में दिखाई नहीं देते (चित्र-9)। वृक्षों की ऊंचाई 20 मीटर तक पाई जाती है जिसमें मोटी पर्णपाती या सदाबहार (evergreen) पत्तियां होती हैं। घासें 1 से 1 5 मीटर तक ऊंची होती हैं और नाना प्रकार के चराई वाले पशुओं के लिए चारे की आपूर्ति करते है। सबसे बड़ा सवाना अफ्रीकी महाद्वीप में पाया जाता है। आस्ट्रेलिया और दक्षिणी अमेरिका में भी सवाना पाए जाते है और विश्व के लगभग 8 प्रतिशत धरातल को घेरे हुए हैं। इस जीवोम के प्रमुख पशु बडे चराई अले पशु हैं जैसे ज़िराफ़, बारहसिंगा, हाथी, भैंसा और परभक्षी जैसे सिंह और चीता आदि।



चित्र-9: अफ्रीकी सवाना में विशेष प्रकार के चपटी छतरी जैसा बबूल (acacia) और शुष्क घास स्थल।

3.2.8 उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन

अपनी अंतिम मंज़िल भूमध्य रेखीय प्रदेश, पर पहुंचने से पूर्व आपको मार्ग में उष्णकटिबंधीय पर्णपाती (tropical deciduous forests) या मौसमी वन मिलेंगे। दक्षिण पूर्व एशिया, मध्य और दक्षिणी अमेरिका, उत्तरी ऑस्ट्रेलिया पश्चिमी अफ्रीका और प्रशांतीय क्षेत्रों में पाए जाने वाले इन वनों को मानसूनी वन भी कहते हैं।

यहां वर्षा अधिक होती है। कभी-कभी उष्णकटिबंधीय वनों से भी अधिक किंतु मौसम के अनुसार ही होती है। इस क्षेत्र में बहुत स्पष्ट नमी और शुष्कता का समय होता है और इसी प्रकार शीत ऋतु और ग्रीष्म ऋतु भी स्पष्ट होते हैं। मृदा भूरे रंग की ओर पोषकों में धनी होती है।



चित्र-10: उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन

वनस्पति में ऊर्ध्वाधर स्तरण काफी सरल है जिसमें वृक्षों के नीचे कई स्तरीय वृक्ष न होकर केवल एक ही स्तर के पौधे पाए जाते हैं। वृक्ष एक मौसम में पत्ते गिरा देते हैं किंतु धरातलीय वनस्पति सदाबहार बनी रहती है। टीक और साल वन इस प्रकार के जीवोम के अच्छे उदाहरण हैं। वृक्ष 20-30 मी. ऊंचे होते हैं किंतु कभी-कभी 40 मी. से भी ऊंचे निकल जाते हैं। बांस भी इस क्षेत्र की एक चरम झाड़ी है।

3.2.9 उष्णकटिबंधीय वर्षावन

जैसे ही आप भूमध्यरेखा पर पहुंचेंगे तो जलवायु अधिक गरम होती जाएगी और मौसमी उतार-चढ़ाव कम होता हुआ मिलेगा। परिणामस्वरूप वर्ष भर जलवायु एक जैसी ही रहती है। ये उष्णकटिबंधी प्रदेश जीवन से भरपूर है और इसमें हज़ारों प्रकार के पौधे और प्राणी देखे जा सकते हैं हालांकि किसी विशेष जाति की प्रधानता नहीं है। उष्णकटिबंधीय वर्षावन (tropical rainforests) भूमध्य रेखा के दोनों और दक्षिण पूर्व एशिया, अफ्रीका, दक्षिण मध्य अमेरिका और उत्तर-पूर्वी ऑस्ट्रेलिया में पाए जाते हैं।

तापक्रम और आर्द्रता बहुत अधिक होती है और हमेशा बनी रहती है। वर्षा सालभर पड़ती है और वार्षिक औसत 200 से.मी. से अधिक है।

मिट्टी में पोषकों का अभाव है क्योंकि अपघटन के अत्यधिक ऊंचे दर के बावजूद पोषक मिट्टी में ठहर नहीं पाते। वे तीव्रता के साथ या तो पौधों द्वारा अवशोषित हो जाते हैं या वर्षा का जल उन्हें बहा ले जाता है और मिट्टी कृषि हेतु लगभग बेकार हो जाती है। उष्णकटिबंधीय वर्षावन पृथ्वी की सतह के लगभग 7% क्षेत्र हैं किंतु अनुमानतयः 40% पौधों और प्राणियों की जातियां इनमें निवास करती हैं। उष्णकटिबंधीय वर्षावनों के पौधे हमारे लिए परिचित और अपरिचित दोनों हैं। परिचित इसलिए हैं कि अधिकांश शोभाकारी पौधे जो हमारे घरों और कार्यालयों में उगाए जाते हैं वे उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के ही हैं। उष्णकटिबंधीय वर्षावनों की वनस्पतियों में बहुत स्पष्ट स्तरण पाया जाता है। इन वनों में ऊंचे वृक्षों का प्रभुत्व है। ये पतले तनों वाले 25-30 मी. ऊंचाई तक पहुंचते हैं और एक दम उनसे शाखाएं फूट कर छतरीनुमा वितान (canopy) बनाती हैं जिसमें चिकनी मोटी सदाबहार पत्तियां घनापन प्रदान करती हैं। ये वितानावरण अधिकांश प्रकाश को रोक लेता है जिससे वन की धरातल काफी हद तक वनस्पति रहित हो जाती है। मौसम का कोई भी समय हो कुछ वृक्षों में या तो फूल आ रहे होते हैं या

फल उग रहे होते हैं। इनमें अधिपादपों (epiphytes) और कठलाताओं (liana) की प्रधानता है (चित्र-11)।

जहां-जहां वितानावरण में से धूप छनकर धरातल तक पहुंच पाती है वहां धरातलीय वनस्पति की कई परतें देखी जा सकती हैं जैसे झाड़ियां, बूटियां पर्णांग और काई। इस जीवोम में जंतुओं की असंख्य जातियां दिखाई देंगी जिनमें से कई जातियों इस वितानावरण के विभिन्न स्तरों में जीवित रहने के लिए अनुकूलित है। जंतुओं में कीड़ों और पक्षियों की प्रधानता है। पनामा में एक बहुत छोटे छः वर्गमील में विस्तृत द्वीप, बैरो कोलोरैडो (Barro Colrado) में कीड़ों की 20,000 जातियां हैं। इन वर्षावनों में जंतुओं के लिए फल और दीमक प्रधान आहार है। इस बहुत रोचक जीवोम में रंग बिरंगे पक्षियों की अनगिनत किस्में जैसे धनेश (hornbill) तोते और टूकन (toucan) के अतिरिक्त बंदर और परभक्षी बिल्ली जातियों का निवास है।



चित्र-11: उष्णकटिबंधीय वर्षावन

बोध प्रश्न 1

1) जीवोम और इकोटोन को परिभाषित कीजिये।

.....

.....

.....

3.3 जलीय जीवोम

यदि आप कोई एटलस या ग्लोब देखें तो आप पाएंगे कि पृथ्वी की अधिकतर सतह (लगभग 71%) महासागरों के जल से ढ़की है। जल स्तर के नीचे विविध प्रकार के जीवों और उनके निवास स्थानों का एक पूरा संसार बसा हुआ है जिसकी विविधता की तुलना किसी भी स्थलीय जीवोम से की जा

सकती है। किंतु वह आपको स्थलीय जीवोमों से उतनी ही भिन्न लगेंगी जैसे किसी अन्य विश्व की जातियां हो। जलीय पारिस्थितिक तंत्रों के जीवों की किस्मों और संख्याओं को प्रभावित करने वाले कारक जल की लवणता और समुद्र की वह गहराई जहां तक सूर्य का प्रकाश पहुंच पाता है। इनके अतिरिक्त जल में घुलती हुई ऑक्सीजन और जल का तापक्रम भी प्रभाव कारक है। विश्व में जल के वितरण को लवणता के स्तर के आधार पर दो प्रकारों में अलग किया जाता है, अलवण जल और समुद्री जल। हम पहले अलवण जल के जीवोम का अध्ययन करेंगे।

3.3.1 अलवण जलीय जीवोम

अलवण जलीय जीवोम में उसमें घुले हुए लवणों की अल्प मात्रा ही उसकी विशिष्टता है। अलवण जल वह होता है जिसमें घुले हुए नमक की मात्र लगभग 0.005 प्रतिशत होती है। अलवण जीवोम में स्थिर जल के आंतरिक जलराशि जैसे सरोवर, जलाशय, तलैया, जलस्थल और प्रवाहित जल जैसे सरिताएं और नदियां आदि सम्मिलित हैं। इन जलाशयों की प्रकृति जलवायु पर आधारित न होकर उन विशेष स्थलों पर आधारित होती हैं जहां वह पाए जाते हैं।

कोई झील, या स्थिर जलराशि को सूर्य के प्रकाश के आधार पर तीन क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है। ये क्षेत्र हैं वेलांचली या तटीय क्षेत्र (littoral) सरोवरी (limnetic) और गहरा जलीय (profundal) क्षेत्र। इनमें से प्रत्येक की भौतिक रासायनिक विशेषताएं और इनमें पाय जाने वाले प्राणियों की विशिष्टता अलग-अलग हैं। (चित्र-12)

तटीय क्षेत्र वह क्षेत्र होता है जहां सूर्य का प्रकाश तल तक पहुंचता है। इस क्षेत्र के प्रधान जलीयं जीव मुक्त रूप से तैरते हुए पौधे, गहरी जड़ों वाले पौधे, बहुत से जलीय कीट, घोंघे, उभयचर (amphibians) मछलियां, कछुए और जल पक्षी हैं।

खुले हुए जल का क्षेत्र सरोवरी क्षेत्र कहलाता है। ये जल का वह क्षेत्र या वह गहराई है जहां तक सूर्य का प्रकाश पहुंच सकता है इस क्षेत्र में पादपप्लवकों (phytoplankton) के साथ शैवालों की किस्में, विभिन्न प्रकार के प्राणीप्लवकों (zoopankton) की जातियां और मछलियां बहुतायत में पाई जाती हैं। सरोवरी क्षेत्र के नीचे पाया जाने वाला क्षेत्र गहरा या गहन जलीय क्षेत्र कहलाता है। ये अपेक्षाकृत ठण्डा और अंधेरा है जिसमें ऑक्सीजन कम मात्र में होती है। मछलियां जो इन कठोर परिस्थितियों के प्रतिबल को झेलने में सक्षम हैं इस क्षेत्र की प्रमुख निवासी हैं। झील के तल में जीवाणु, कवक, रुधिर कृमि (blood worms) और अन्य अपघटक है जो मृत पौधें और ऐसे जैविक पदार्थों पर निर्भर रहते हैं जिनमें जंतु और उनके उपापचयी अपशिष्ट सम्मिलित हैं।

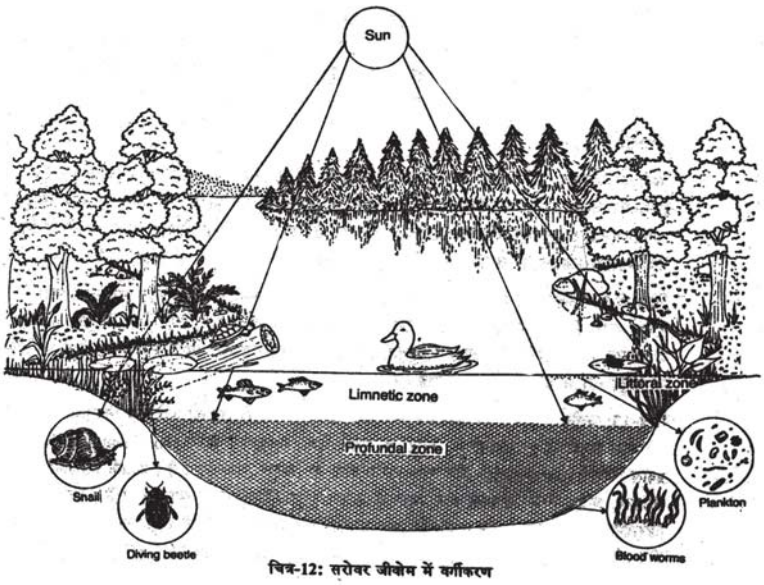

चित्र-12: सरोवर जीवोम में वर्गीकरण

वर्षण जो मिट्टी से वाष्पित नहीं होता या उसमें प्रविष्ट नहीं होता वह मृदा की सतह पर रुक कर अपवाह का कारण बनता है और पर्वतों से नीचे सरिताओं और नदियों के रूप में बहकर समुद्र से मिल जाता है। नदियों का अधोगामी प्रवाह तीन चरणों में सम्पन्न होता है। प्रथम चरण वह है जब सरिता का ठण्डा और स्वच्छ जल तीव्र ढालों पर, जहां जल में अधिक ऑक्सीजन घुली होती है, नीचे की ओर तेज़ी से उतरता है। बहुत से जीव जो निम्न तापक्रमों के लिए अनुकूलित हैं और जिनको जल में घुली ऑक्सीजन की अधिक मात्रा की आवश्यकता होती है, यहां पाए जाते हैं। द्वितीय चरण वह है जब नदी हलके ढाल पर चौड़ी घाटी में प्रवाहित होती है। यहां जल का तापमान अपेक्षाकृत अधिक होता है। ठंडे और गरम जल की बहुत सी मछलियां ऐसे ही क्षेत्र में पाई जाती हैं क्योंकि इन्हें अपेक्षाकृत कुछ कम घुली हुई ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है। तीसरा चरण वह है जहां नदी समुद्र में मिलती है। इस स्थान पर नदी कई छोटे जल मार्गों में विभिन्न होकर डेल्टा (delta) की रचना करती है।

नदियां और नाले जो अलवण जल के प्रवाहित जलाशय हैं, झीलों तथा तालों से तीन तरह से भिन्न हैं।

1) इनमें जल धारा प्रमुख नियंत्रण रखने वाली और सीमाकारी कारक हैं।

2) स्थल-जल के बीच विनिमय प्रवाहित जल तंत्र के छोटे आकार और कम गहराई के कारण अधिक होता है।

3) यदि नदियों में प्रदूषण अधिक न हो तो उनका जल ऑक्सीजन से परिपूर्ण होता है।

सरिताओं और नदियों में निवास करने वाले जीव किसी-न-किसी सतह से सम्बद्ध होते हैं और स्वतंत्र रूप से तैरने वाले जीव असाधारण रूप से शक्तिशाली तैराक होते हैं।

अलवण जल का उपयोग आहार के प्रमुख स्रोत के रूप में, मनोरंजनात्मक उद्देश्यों के लिए, अपशिष्टों को ठिकाने लगाने के लिए और जलमार्ग का उपयोग परिवहन के लिये होता है। इन गतिविधियों द्वारा हम किसी भी अलवण जलीय पारिस्थितिक तंत्र और उसके समुदायों पर विशेष प्रभाव डालते हैं।

3.3.2 समुद्री जीवोम

समुद्री जीवोमों में विश्व के महासागर और उससे संबद्ध क्षेत्र जैसे तटरेखा, द्वीप भित्ति और ज्वारनदमुख सम्मिलित हैं। समुद्री जल में नमक 3.5 प्रतिशत तक पाया जाता है जिसमें अधिकतर सोडियम क्लोराइड होता है। इस जल के सारे निवासी इन लवणीय परिस्थितियों के लिए पूर्णतय: अनुकूलित होते हैं। धरती पर वास करने के कारण हम अक्सर पृथ्वी को अधिकतर स्थल ही समझते हैं और ये भूल जाते हैं कि हमारे ग्रह की सतह का 71 प्रतिशत महासागरों से घिरा हुआ है। इसलिए कभी-कभी हमारे ग्रह को "वाटर प्लैनेट" या जल का ग्रह भी कहते हैं।

महासागर

पृथ्वी पर जलवायु के निर्धारण और जीवन के सम्पोषण में महासागर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। महासागर जलधाराओं और वाष्पन द्वारा सौर ऊर्जा का पुनर्वितरण करते है। वह कार्बन डाईऑक्साइड, ऑक्सीजन और दूसरे खनिजों का विशाल भण्डार है और प्रतिवेशी तापक्रम को नियमित करने के लिए वायुमण्डलीय संघटन को बनाए रखता है। वह विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों के स्रोत भी हैं।

विश्व के सारे महासागर और समुद्र आपस में जुड़े हुए हैं और पृथ्वी पर एक विश्व महासागर की रचना करते हैं। महासागर की औसत गहराई लगभग 3.7 किलोमीटर है किंतु पृथ्वी के कुछ भागों में ये गहराई 11.5 किलोमीटर तक जा पहुंचती है। इसकी तुलना माऊण्ट एवरेस्ट की ऊंचाई से कीजिए जो समुद्र तल से 8848 मीटर ऊंचा है।

चित्र-13: जलीय पर्यावरण का ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज अनुक्षेत्र वर्गीकरण का आरेखीय निरूपण है। अधिकांश समुद्री जीवन महासागरों, समुद्रों के उथले क्षेत्रों, महाद्वीपीय शेल्फ (continental shelves) प्रवाल भित्तियों (coral reefs) और महासागरीय द्वीपों के किनारे पाया जाता है। अधिक गहराईयों में अंधकार, अधिक निम्न तापक्रम और दबाव के कारण बहुत सीमित जीवन पाया जाता है। अत्यधिक गहराइयों में मुख्य रूप से वह अपमार्जक और परभक्षी जीव पाए जाते हैं जो समुद्र सतह से अपरद वर्षा और मृत जैविक पदार्थों को भोजन बनाकर ही जीवित रहते हैं। वह खाद्य पदार्थ जो महासागरों के बड़े

और विविध समुदायों का पोषण करता हैं पादपप्लवको द्वारा महासागरों के ऐसे खुले जल के ऊपरी क्षेत्र में तैयार किया जाता है जहां सूर्य के प्रकाश की पहुंच संभव होती है। ऐसा क्षेत्र जहां उजाला हो, स्वच्छ समुद्री क्षेत्रों में 200 मी. की औसत गहराई तक पाया जाता है।

प्राकृतिक समुद्री वास प्रदूषण और संसाधन उपयोग के कारण विनाश का सामना कर रहे हैं। तटरेखा और खुले समुद्र मानवीय गतिविधियों से पीड़ित हैं जैसे मछुवाही, मनोरंजन संबंधी कार्यों, भूसम्पत्ति विकास, कूड़े कचरे और गंदे जल का निपटारा, तेल का बहाव, रेडियो धर्मी अपशिष्ट का निपटारा और समुद्री जल में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का शोषण आदि।

तटरेखाएं महासागरीय द्वीप और भित्तियां

महासागरीय तटरेखाओं में शैलतट और रेतीले तट सम्मिलित हैं जो विशेष रूप से विविध जैव प्रकारों में घनी हैं। शैलतट विविध प्रकार के ऐसे जीवों का पोषण करते हैं जो किसी ठोस आधार से लगकर बढ़ते हैं। रेतीली तट रेखाएं उन जीवों को शरण प्रदान करती हैं जो रेतीले आधार के बिलों में रह सकते हैं।

रेतीले समुद्री किनारे हमारे संदर्भ में इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि सर्वोत्तम पर्यटक सैरगाह और निवास स्थल उनके किनारे ही बनाए गए हैं।

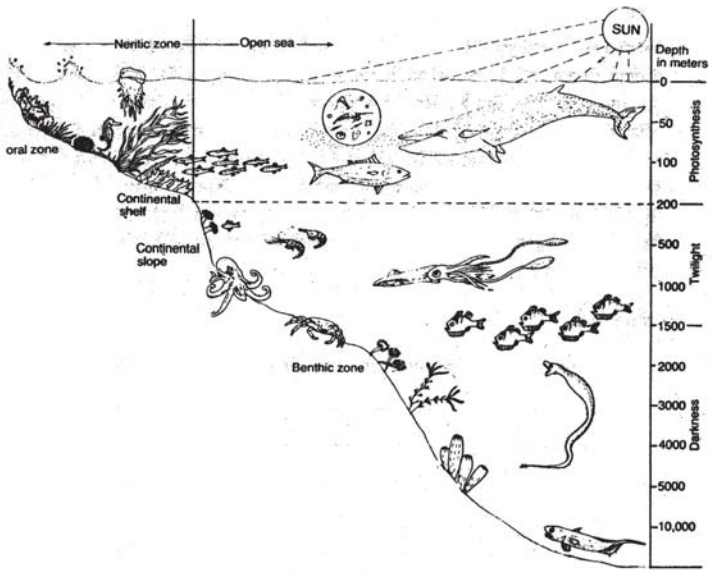

चित्र-13: महासागर में अनुक्षेत्र वर्गीकरण

महासागरीय द्वीप रोचक एवं किसी सीमा तक विशेष प्रकार के जीवोम हैं जो महाद्वीपों से टूट कर अलग हुए हैं। ऐसे द्वीपों के वनस्पति तथा जीव समूह अपने महाद्वीपीय मूल के वनस्पति तथा जीव समूहों के सामान है। ज्वालामुखी और प्रवाल द्वीपों में संयोगी उपनिवेशन दिखाई देता है।

प्रवाल भित्तियाँ : प्रवाल भित्तियां स्वच्छ कोष्ण उष्णकटिबंधीय समुद्रों में बनती हैं और इनका विकास विशेष रूप से दक्षिणी प्रशांत में बहुत अच्छा हुआ है। इनकी रचना छोटे-छोटे निवह-प्राणियों की कई पीढ़ियों के कैल्सियमी कंकालों के संचयन द्वारा होती है। इन छोटे निवह-प्राणियों को प्रवाल या मूंगा (coral) कहते हैं। ये प्रवाल भित्तियां सामान्य रूप से उथले शैल्फ या तटों के समीप विकसित होती हैं और उनकी गहराई उस सीमा तक होती हैं जहां तक सूर्य की किरणें जल में विसरित हो सकती हैं।

जाति विविधता (species diveristy) के दृष्टिकोण से प्रवाल भित्तियों की तुलना उष्णकटिबंधीय वन्य समुदायों से की जा सकती है। यहां विभिन्न चमकीले रंगों वाले अनगिनत रोचक प्राणी समूह पाए जाते हैं।

आर्द्रस्थलों और ज्वारनदमुख

आर्द्रस्थल (wetlands) और ज्वारमुखनद (estuaries) सांक्रांतिक जीवोम हैं। वह स्थल जो वर्ष के किसी-न-किसी भाग में या स्थायी रूप से मीठे पानी या नमकीन पानी से ढ़का रहता है आर्द्रस्थल कहलाता है। दलदल, अनूप (swamp) और कच्छ (marshes) अलवण जल से भरे होते हैं और अंत:स्थलीय रूप में पाए जाते हैं। इन्हें अंत:स्थलीय आर्द्रस्थल (inland wetlands) कहते हैं। और वे जो समुद्री तटों पर पाए जाते हैं और समुद्री जल से भरे होते हैं तटीय आर्द्रस्थल (coastal wetlands) कहे जाते हैं। आर्द्रस्थलों में विविध प्रकार की मछलियां और वन्य जीव पाए जाते हैं और ये जल पक्षियों तथा तट पक्षियों के प्रमुख प्रजनन केंद्र, घोंसला बनाने और बसेरा करने तथा प्रवसन के महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। इनका महत्व इसलिए और भी बढ़ जाता है क्योंकि ये उस क्षेत्र से होकर जाने वाले जल को रोक कर और निस्पन्दित करके बाढ़ की संभावना को कम करते हैं। परिणामस्वरूप अवसाद जमा होते हैं और आर्द्रस्थल में रासायनिक अन्योन्यक्रियाएं जल में उपस्थित पदार्थों को विष रहित करके निष्क्रिय कर देती हैं। धरातल में जल का मंद गति से निस्पन्दन भूमिगत जल के भण्डार में जल की आपूर्ति बनाए रखने में सहयोग भी देता है।

ज्वारनदमुख : ज्वानदमुख अलवणीय और समुद्री जल की मिश्रित जल राशियां हैं जो नदी और समुद्र के संगम पर बन जाती है। ज्वारमदमुख में प्राय: ऐसे अवसादों का बाहुल्य होता है जिनसे पंक मैदानों (mudflats) की रचना होती है। ज्वारनदमुख बहुत उत्पादी क्षेत्र है जिनमें जातियों की विविधता बहुत अधिक होती है। वे आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मछलियों और मोलस्कों सहित महासागरीय मछलियों का संवर्धन स्थान है। ज्वारनदमुख आंतरिक भागों में बढ़कर तटीय आर्द्रस्थलों की रचना करते हैं। शीतोष्ण प्रदेशों में तटीय आर्द्रस्थल प्राय: खाड़ियों, खारे कच्छ और लेंगून का मिश्रण होते है जबकि उष्णकटिबंधीय प्रदेशों में मैंग्रोव अनुप (mangrove swamps) पाए जाते हैं जिनमें मैंग्रोव वृक्षों और मैंग्रोव वनों का बाहुल्य पाया जाता है। ये सदाबहार, चौड़ी पत्ती वाले वृक्ष उष्णकटिबंधीय प्रदेशों के खारे जल में उगते हैं।

बोध प्रश्न 2

1) तीन समुद्री जीवोमों के नाम बताइये और उनकी विशेषताओं को सूचीबद्ध कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) दो अलवण जल के जीवोमों के नाम बताइए। उनमें जीव एक-दूसरे से किस प्रकार भिन्न हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 भारत के जीवोम

रॉजर्स और पैंवार, 1988, के अनुसार भारत को 10 जैव भौगोलिक क्षेत्रों (चित्र-14 देखिए) में विभाजित किया जा सकता है। प्रत्येक क्षेत्र के जैव भौगोलिक मण्डल, जैविक प्रदेश और जीवोम प्रकार तालिका-1 में प्रस्तुत हैं। इन जीवोमों की कुछ और सविस्तार चर्चा तालिका के पश्चात् की गई है।



	1	TRANSHIMALAYAN		6	DECCAN PENINSULA
	2	HIMALAYAN		7	GANGETIC PLAN
	3	INDIAN DESERT		8	NORTH- EAST INDIA
	4	SEMI- ARID		9	ISLANDS
	5	WESTERN GHATS		10	COASTS

(From: W.A. Rodgers and H.S. Panwar 'Planning a Wildlife Protected Area Network in India' Vol. 1., 1988. Department of Environment, Forests and Wildlife.)

चित्र-14: भारत के जैव भौगोलिक क्षेत्र

तालिका-1: भारत का जैव भौगोलिक वर्गीकरण (रॉजर्स और पैंवार-1988)।

	जैव भौगोलिक क्षेत्र	जैव प्रदेश	जीवोम
A	पैलीआर्कटिक		
1)	पार-हिमालय (तिब्बती)	क) लद्दाख	टुण्ड्रा घाटी झीले और कच्छ
2)	हिमालय	ख) उत्तर पश्चिमी हिमालय ग) पश्चिमी हिमालय घ) मध्य हिमालय	सारा एल्पाइन क्षेत्र शीतोष्ण शंकुवृक्ष शीतोष्ण चौड़ी पत्ती वन वाले
		च) पूर्वी हिमालय	उपोष्ण वन

B	पैलिओट्रॉपिकल : अफ्रीकन		
3)	मरुस्थल	क) कच्छ	साल्ट फ्लेट्स गुल्म भूमि
		ख) थार	साल्ट फ्लेट्स मरुस्थली घासस्थल गुल्म भूमि
4)	अर्ध-शुष्क	क) पंजाब	गुल्म भूमि भाबर वन आर्द्रस्थल
		ख) गुजरात-रजवाड़ा	शुष्क पर्णपाती वन पहाड़ी वन कंटक वन गुल्म भूमि आर्द्रस्थल
C	पैलिओट्रॉपिकल:इंडो-मालायन		
5)	पश्चिमी घाट	क) मालाबार तट	सदाबहार वन आर्द्र पर्णपाती वन आर्द्रस्थल
		ख) पश्चिमी घाट	सदाबहार वन पर्वत आर्द्र पर्णपाती वन पर्वतीय वन/घासस्थल आर्द्रस्थल।
6)	दक्षिणी प्रायद्वीप	क) दक्षिणी पठार (दक्षिण)	
		1) तमिलनाडू के मैदान	शुष्क पर्णपाती वन
		2) पूर्वी घाट (दक्षिण)	कंटक वन
		3) कर्नाटक	आर्द्रस्थल
		ख) मध्य पठार (उत्तर)	उपोष्ण वन शुष्क पर्णपाती वन
		1) महाराष्ट्र	आर्द्र पर्णपाती वन
		2) तैलंगाना	आर्द्रस्थल
		ग) पूर्वी पठार	उपोष्ण वन
		1) पूर्वी घाट	आर्द्र पर्णपाती वन
		2) छत्तीसगढ़ एवं दण्डकारणी	तटवर्ती मैदानी आर्द्रस्थल
		घ) छोटा-नागपुर	शुष्क पर्णपाती वन
		1) छोटा नागपुर पठार	आर्द्र पर्णपाती वन
		2) गढ़जाट पहाड़ियां	पठारी आर्द्रस्थल
		च) मध्यवर्ती उच्च भूमि	उपोष्ण वन
		1) सतपुड़ा-मैकाल	शुष्क पर्णपाती वन
		2) विंध्या-बाघेलखण्ड	आर्द्र पर्णपाती वन आर्द्रस्थल
7)	गंगा का मैदान	क) ऊपरी गंगा का मैदान	शिवालिक भाबर-तराई जलोढ़ मैदान आर्द्रस्थल/नदियां

	ख) निचला गंगा का मैदान	भाबर-तराई जलोढ़ मैदान आर्द्रस्थल/नदियां
8) उत्तरी-पूर्वी भारत	क) ब्रह्मपुत्र घाटी	भाबर-तराई जलोड मैदान-घासस्थल जलोढ़ मैदान-वनस्थली सदाबहार वन आर्द्र पर्णपाती वन आर्द्र स्थल/नदी
	ख) असम पर्वत	सदाबहार वन आर्द्र पर्णपाती वन उपोष्ण वन शीतोष्ण वन आर्द्रस्थल
9) तट	क) पश्चिमी तट	गरान (मैंग्रोव)
	ख) पूर्वी तट	खारी झील - लैगून पंक मैदान रेतीला/चट्टानी बेलांचल
10) द्वीप	क) अण्डमान द्वीप	सदाबहार वन आर्द्र पर्णपाती वन तटीय आवास
	ख) निकोबार द्वीप	सदाबहार वन आर्द्र पर्णपाती वन तटीय आवास
	ग) लक्षद्वीप	गुल्म भूमि तटीय आवास

1) टुण्ड्रा – ये जीवोम लद्दाख क्षेत्र तक सीमित हैं किंतु सिक्किम और भूटान के कुछ क्षेत्रों में भी इसका विस्तार मिलता है। उत्तर-पश्चिमी हिमालय, मध्यवर्ती और पूर्वी हिमालय के कुछ भागों और अधिक ऊंचाइयों पर उच्चपर्वतीय या अल्पाइन वनस्पति पाई जाती हैं। टुण्ड्रा वनस्पति के रूप में कम ऊंची झाड़ियों और घासभरी चरागाहें पाई जाती हैं जिनमें विशेष प्रकार के टुण्ड्रा क्षेत्र के जन्तु समूह पाए जाते हैं।

2) शीतोष्ण शंकुवृक्षी वन – ये जीवोम हिमालय नीलगिरी पर्वतों की 1600 मीटर ऊंचाई तक सीमित हैं। शंकुवृक्षी वन 20 से 25 मीटर ऊंचे होते हैं। देवदार और बलूत के वन इस जीवोम की चरम वनस्पति हैं।

3) उष्णकटिबंधीय सदाबहार वर्षावन – ये जीवोम् उन क्षेत्रों में पाया जाता है जहां वर्षा बहुत अधिक (250 सें.मी. प्रति वर्ष से अधिक) होती है। पश्चिमी घाट, असम, पश्चिमी बंगाल और अण्डमान द्वीप के कुछ भागों में ये जीवोम विस्तृत दिखाई देते हैं। इन जीवोमों में जातियों की बड़ी विविधता है। विभिन्न ऊंचाईयों के वृक्षों, झाड़ियों, जड़ी-बूटियों, अंघिपादपों, कठलताओं आदि के कई स्तर हैं। घनी सदाबहार वनस्पति अभेद्य हो जाती है। डिपटेरोकार्पस, (*Dipterocarpus*) होपिया (*Hopea*), आर्टोकार्पस (*Artocarpus*), जैसी जंगली सदाबहार जातियों के अतिरिक्त फलों के वृक्ष जैसे आम (*Mangifera*) आँवला (*Emblica*) आदि, तथा बहुत-सी लताओं की जातियां भी यहां पाई जाती हैं।

4) उष्णकटिबंधीय सदाबहार वर्षावन – इसे दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

क) **उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वन** – ये केरल, कर्नाटक और मध्य प्रदेश के साथ ही उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल और उडीसा के कुछ भागों में भी पाये जाते हैं। वनों के वृक्षों का

वितानावरण घना और छतरीनुमा होता है। सुप्रसिद्ध साल और सागौन (*teak*) के वन इस जीवोम के अच्छे उदाहरण हैं। कर्नाटक के चंदन के वन इसी श्रेणी में आते हैं।

ख) **उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन**—ये जीवोम, उत्तर प्रदेश, पंजाब, बिहार और उड़ीसा तक सीमित हैं। इस प्रकार के वनों में औसत ऊंचाई के वृक्ष पाए जाते हैं जिनका छतरीनुमा वितानावरण कम घना है। कांटेदार झाड़ियों, घासों और बांसों के साथ ही इमली (*Terminalia tomentosa*) की दर (*Acacia*) आंवला (*Emblica*) वृक्षों में सालू (*Shorea*) और चिरौंजी (*Buchababua*) के वृक्ष भी मिश्रित रूप से मिलते हैं जो इस जीवोम की विशेषता है। इन दोनों जीवोमों के जंतु समूह सामान्य और मिलते-जुलते हैं जैसा कि इससे पहले उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वनों में वर्णन किया जा चुका है।

5) सवाना—अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के कुछ भागों के समरूप भारत में कोई वास्तविक सवाना जीवोम नहीं है। किंतु मिश्रा (1983) ने भारत के सम्पूर्ण घासस्थलों को सवाना ही माना है। सवाना में घासस्थली वनस्पति पाई जाती है जिसमें वृक्ष और झाड़ियां बिखरी हुई मिलती हैं। यहां उपोष्ण घासस्थल भी हैं जिनमें *ऐकेशिया* (कीकर), *मिमोसा, ज़िज़ीफस, फोनिक्स* और *केलोट्रापिस* जातियां भी मिली-जुली हैं।

6) घासस्थल—भारतीय घासस्थल अमरीका और कनाडा के वास्तविक घासस्थलों जैसे नहीं हैं। इनमें वृक्षों और झाड़ियों की मिश्रित पैदावार मिलती है। कुछ वैज्ञानिकों ने इसे जैसा कि पहले बताया जा चुका है सवाना का नाम दिया है। प्रमुख जातियों के आधार पर घासस्थलों की 8 किस्में हैं। यह जीवोम देश के उत्तरी भाग से दक्षिणी भाग तक और पूर्वी भाग से पश्चिमी भाग तक विस्तृत है।

7) मरुस्थल—यह जीवोम राजस्थान, पंजाब, कच्छ और गुजरात के भागों में विस्तृत है। इसमें गरम और शुष्क ग्रीष्म ऋतु और ठंडी शीत ऋतु जैसी मरुस्थल की विशिष्ट जलवायु पाई जाती है। वर्षा 30 और 70 से.मी. के मध्य और कुछ क्षेत्रों में मात्र 10 से 15 से.मी. के मध्य ही होती है। बबूल या कीकर (*Acacia arabica*) प्रमुख झाड़ी है।

हाल ही में कुछ नई जातियां मरुस्थल में उगाई जाने लगी हैं जैसे *ऐकेशिया* जातियां *पारकिनसोनिया सैकैसुर मुनजा तामारिक्स प्रोसोपिस* आदि।

भारत विभिन्न जलवायु क्षेत्रों वाला विशाल देश है अतः इसमें विभिन्न जीवोम भी पाए जाते हैं। ये मृदा, जलवायु, जंतु और वनस्पति की विविधताओं से भरपूर अनोखा देश है। इस देश की सांस्कृतिक और जननिक विविधता विदेशी पर्यटकों/यात्रियों के लिए बहुत बड़ा आकर्षण है।

बोध प्रश्न 3

1) भारत में कितने जैव भौगोलिक क्षेत्र हैं?

.....

.....

.....

.....

2) कौन से क्षेत्रों में उष्णकटिबंधीय वन पाए जाते हैं।

.....

.....

.....

.....

3.5 सारांश

जीवोम जलवायु की दृष्टि से ऐसे विशिष्ट क्षेत्र होते हैं जिनमें विशेष प्रकार की वनस्पतियों और जंतुओं की जातियां पाई जाती हैं। मोटे तौर पर विश्व के जीवोमों को दो स्पष्ट भागों, स्थलीय और जलीय, में बांटा जा सकता है। विश्व में 10 प्रमुख स्थलीय जीवोम हैं जिनके नाम उनमें पाई जाने वाली प्रधान वनस्पतियों के अनुसार होते है। अति उत्तर का अत्यंत ठंडा स्थलीय जीवोम टुण्ड्रा है जिसमें कम ऊंचे शीत प्रतिरोधी पौधों की जातियों की प्रधानता है। इस क्षेत्र में अपेक्षाकृत पौधों की जातियां कम हैं परंतु उनकी संख्या बहुत है। टैगा ऐसा जीवोम है जिसमें शंकुधारी वृक्षों की प्रधानता है और ये क्षेत्र उत्तरी गोलार्ध के महाद्वीपों पर परिध्रुवी कटिबंध के रूप में पाया जाता है। **शीतोष्ण पर्णपाती वन** एक ऐसा जीवोम है जहां चौड़े पत्तों वाले वृक्ष, जिनके पत्ते शीत ऋतु में गिर जाते हैं, प्रधान रूप से पाए जाते हैं। इन जीवोमों में ग्रीष्म ऋतु गरम और नम होती है। **शीतोष्ण गुल्मस्थल** तटीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहां शीतकालीन वर्षा और ग्रीष्मकालीन सूखा सुस्पष्ट रूप से अनुभव किए जाते हैं और इन परिस्थितियों के लिए अनुकूलित सदाबहार वृक्षों की प्रधानता है। मरुस्थलों से अधिक किंतु वनों के लिए अपर्याप्त वर्षा वाले क्षेत्र **घासस्थल** कहलाते हैं ये अमेरिका, एशिया और ऑस्ट्रेलिया महाद्वीपों के शुष्क आंतरिक भागों में पाए जाते हैं। **मरुस्थलों** में दिन गरम, रातें ठंडी और वर्षा बहुत कम होती हैं। यहां पाई जाने वाली वनस्पति और प्राणियों की जातियां यहां की परिस्थितियों से पूर्णतयः अनुकूलित हैं। **उष्णकटिबंधी क्षेत्रों** के घासस्थलों को **सवाना** कहते हैं जहां कहीं-कहीं पर पेड़ों की झुरमुट होती है। उष्णकटिबंधी क्षेत्र जिसमें अत्यधिक पौधों और प्राणियों की जातियां पाई जाती हैं **उष्णकटिबंधीय वर्षावन** हैं। इनमें उच्च तापमान और वर्षा के कारण पौधे वर्ष भर उगते रहते हैं। उन उष्णकटिबंधीय प्रदेशों में जहां वर्षा बहुत अधिक किंतु विशेष मौसम में होती है **मानसूनी वन** या पर्णपाती वन पाए जाते हैं।

विश्व के जलीय जीवोमों को जल की लवणता के अनुसार अलवणीय और समुद्री जीवोमों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। अलवण जलीय जीवोम नदियों, सरिता और झीलों आदि के क्षेत्र हैं और यहां के जीव तथा पौधे पूर्णरूप से इन परिस्थितियों से अनुकूलित हैं।

समुद्री जीवोमों में महासागर, तटीय क्षेत्र, और द्वीप सम्मिलित हैं। जंतु और पौधों का वितरण प्रकाश और पोषकों की प्राप्यता के अनुसार सीमित है। प्रवाल भित्तियां, ज्वारनदमुख और आर्द्रस्थल विशिष्ट समुद्री जीवोम हैं।

भारतीय उपमहाद्वीप की जलवायु, मृदा प्रकारों और फलस्वरूप वनस्पति में बहुत विविधता पाई जाती है। यही कारण है कि विश्व के सारे जीवोमों का प्रतिनिधित्व यहां मिलता है।

3.6 शब्दावली

अधिपादप (Epiphyte) : वह पौधा जो किसी अन्य पौधे या कभी-कभी किसी वस्तु पर उगता है परन्तु उस पर आश्रित या परपोषी नही होता है, जैसे आर्किड।

आर्द्रस्थल (Wetlands) : ऐसे क्षेत्र जैसे दल-दल, अनूप, या कच्छ जहां मृदा बहुत नम हो या जल में डूबी हुए हो।

पर्णपाती वन (Deciduous forest) : मौसम परिवर्तन के साथ ही प्रतिकूल मौसम में पत्ते गिरा देने वाले वृक्षों के वन।

कठलता (Liana) : उष्णकटिबंधीय आरोही पादप की एक किस्म।

गहराजलीय क्षेत्र (Profundal zone) : झील की वह गहराई जहां सूर्य का प्रकाश न पहुंच सके।

ज्वारनदमुख (Estuary) : वह क्षेत्र जहां नदियां समुद्र में गिरती हैं और मीठा जल नमकीन जल में मिलता है।

टुण्ड्रा (Tundra)	: एक ऐसे जीवोम जिसकी विशेषता समतल अथवा ऊँचे नीचे वृक्षरहित उत्तर ध्रुवीय या उप-उत्तर ध्रुवीय मैदान हैं जो काई और लाइकेन की विभिन्न किस्मों की घनी पैदावार और छोटी जड़ी बूटियों और झाड़ियों की पैदावार के लिए उपयुक्त है। ये मैदान तुषार भूमि (pernafrost) के नीचे दबे रहते हैं और शीत मौसम में बर्फ से ढके रहते हैं।
टैगा (Taiga)	: उप-उत्तरी ध्रुवी जीवोम जिसमें स्प्रूस और देवदार के वृक्षों की प्रधानता है। ये उत्तरी अक्षांशों और अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में स्थित हैं।
वेलांचल (Likttoralzone)	: 1) समुद्रतटीय क्षेत्र जिसमें आस पास की भूमि, किनारे के पास का जल और अंतराज्वरीय क्षेत्र भी सम्मिलित है। 2) झील के किनारे का क्षेत्र।
शीतोष्ण क्षेत्र (Temperate rone)	: ऐसा क्षेत्र जिसमें प्रधान वृक्षों की जातियां और अन्य वृक्ष पर्णपाती हैं जो सर्दियों में पर्ण रहित हो जाते हैं।
स्थायी तुषार भूमि (Pernafrost)	: उत्तर ध्रुवीय क्षेत्र और उच्च अक्षांशीय टुण्ड्रा की स्थायी रूप से जमी हुई मृदा की परत या अवमृदा दोनों ही परतें।
संधिपाद (arthropods)	: संयुक्त पाद वाले अकशेरूकि जंतु जैसे कीट, केकड़े, मकड़ी और कानखजूरे आदि।
सरोवरी क्षेत्र (Limnetic zone)	: वह क्षेत्र या गहराई जहां तक प्रकाश पहुंचता है और जहां तक प्रकाश संश्लेषण हो सकता है।
सवाना (Savana)	: एक घासस्थली जीवोम जिसमें शुष्क और वर्षा की ऋतुएं एक के बाद एक आती हैं। घास और छितरे हुए वृक्ष अनगिनत चारण करने वाले पशुओं का निर्वाह करते हैं।

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) जीवोम एक विशाल और जलवायु की दृष्टि से विशिष्ट क्षेत्र होता है जिसकी पहचान उसमें पाए जाने वाले विशेष पौधों और प्राणियों से होती है। जीवोमों का नाम उस क्षेत्र में प्रधान रूप से पाए जाने वाले पौधों की जातियों के अनुसार रखा जाता है। इकोटोन दो पड़ौसी जीवोमों के मध्य परिवर्ती क्षेत्र को कहते हैं।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 3.2 (टुण्ड्रा और मरुस्थली जीवोम) से संदर्भ लीजिए।

2) दोनों जीवोमों में घासस्थली जातियों की प्रधानता है। सवाना में घासस्थल में कहीं-कहीं छितरे वृक्ष भी होते हैं। इन दोनों जीवोमों के जंतु समूहों में बड़ी भिन्नता है।

बोध प्रश्न 3

1) खुले समुद्र, तटीय आर्द्रभूमि, ज्वारनदमुख।। उप-भाग 3.2.2 से विस्तृत वर्णन के लिए संदर्भ लीजिए।

2) झीलें और नदियां। झीलों में उपस्थित जीव ऑक्सीजन की मात्रा और प्रकाश की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति के लिए अनुकूलित हैं।

नदियों के जीव जल प्रवाह और ऑक्सीजन की मात्रा के लिए अनुकूलित हैं। नदी के तेज़ प्रवाह वाले भाग के प्राणी अच्छे तैराक होते हैं या उनमें चट्टानों के सहारे या आधार में चिपके रहने की युक्तियां होती है जिससे वह तेज़ जल धारा के साथ बह न जाएं।

बोध प्रश्न 4

1) दस

2) असम, पश्चिमी घाट, पश्चिमी बंगाल और अण्डमान द्वीप समूह के कुछ भाग।

इस इकाई के लिये अभ्यास

अभ्यास 1

आपको दस व्यक्तियों को साथ लेकर उष्णकटिबंधीय वन्य जीवोम को दिखाने के लिए यात्रा करनी पड़े तो a) आप उन्हें भारत में कहां ले जाएंगे? b) वास्तविक उष्णकटिबंधीय वन के क्षेत्र तक पहुंचने से पहले यात्रा के दौरान में आप इस जीवोम की कौन-कौन-सी प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करेंगे?

अभ्यास 2

कुछ ऐसे नियमो की सूची बनाइये जिससे समुद्र के तटीय क्षेत्रों ज्वारनदमुखी और आर्द्रस्थलो का मनोरंजन के लिये उपयोग करने के साथ-साथ उनका सुरक्षित और प्रदूषण रहित विकास भी हो सके।

अभ्यास 3

एक चार्ट की रचना कीजिए जिसमें प्रमुख जीवोमो के नाम और उनको विशिष्टता प्रदान करने वाले वनस्पति और वर्षा की मात्रा को सूचिबद्ध कीजिए और ये भी बताईए कि उनमें से कौन-से जीवोम भारत में हैं।

विश्व के प्रमुख जीवोम	वर्षा	चरमवनस्पति	भारतीय क्षेत्र

इकाई 4 प्रकृति में समुदाय

इकाई की रूपरेखा



4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 समुदाय की विशिष्टताएँ

- 4.2.1 उत्पादकता
- 4.2.2 विविधता
- 4.2.3 समुत्थान-शक्ति

4.3 समुदाय की जातियों में अन्योन्यक्रियाएँ

- 4.3.1 प्रमुख पौधे परिस्थितियाँ परिभाषित करते हैं
- 4.3.2 अन्योन्यक्रियाओं के प्रकार

4.4 समुदाय में संगठन

- 4.4.1 संसाधनों का बंटवारा
- 4.4.2 स्तरण

4.5 जैव-विविधता

- 4.5.1 जैव-विविधता क्या है?
- 4.5.2 जैव-विविधता का महत्व
- 4.5.3 जैव-विविधता और पारिस्थितिक संतुलन
- 4.5.4 जैव-विविधता लोप के कारण
- 4.5.5 जैव-विविधता संरक्षण

4.6 सारांश

4.7 शब्दावली

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य होने चाहिए की आप :

- समुदाय की मूल विशेषताओं को समझ सकें,
- किसी समुदाय की विभिन्न जातियों के मध्य अन्योन्यक्रियाओं की प्रकृति, एवं महत्व का मूल्यांकन कर सकें,
- सप्राण जीव उपलब्ध संसाधनों को आपस में कैसे बाँटते और उपयोग करते हैं के विषय में व्याख्या कर सकें,
- अंत:संबद्धता की धारणा के महत्व को समझ सकें तथा प्रकृति में सम्पूर्णता के परिदृश्य को विकसित करना सीख सकें, और
- जैवविविधता-मैत्री पर्यटन के लिए मानक और आचरण को सूत्रबद्ध कर सकें।

4.1 प्रस्तावना

आप यह पढ़ चुके हैं कि विविध प्रकार के जैविक और अजैविक कारक पारिस्थितिक तंत्र की रचना करते हैं। आप ये भी देख चुके हैं कि किसी पारिस्थितिक तंत्र के विभिन्न प्रकार के अजैविक कारक जैसे वायु, प्रकाश, जल, मृदा और शैल भी सप्राण जीवों के अस्तित्व को प्रभावित करते हैं। ऐसा जैविक कारक भी करते हैं अर्थात् परिवेशी पौधे, प्राणी और सूक्ष्मजीव सभी पारिस्थितिक तंत्र के जीवों को प्रभावित करते हैं।

पारिस्थितिक तंत्र मे प्रत्येक प्राणी या जीव का एक स्थान होता है, एक वास्तविक क्षेत्र जिसमें वह निवास करता है। इस क्षेत्र में पाए जाने वाले सारे कारकों सहित ये स्थान जीव का प्राकृतिक वास (habitat) है। कोई जीव अकेला नहीं रहता बल्कि अन्य जीवों के साथ और अजैविक पर्यावरण के साथ भी गतिक अन्योन्यक्रिया करता है। प्रत्येक जीव अपने पारिस्थितिक तंत्र में, जिसे उसका निच, निकेत या निलयभी (niche) कहा जाता है, विशेष भूमिका निभाता है। निच या निकेत में ऐसे प्राचल सम्मिलित होते हैं जैसे आहार, स्थान, तापक्रम, जल और संगम के लिए उचित परिस्थितियाँ आदि। इसके अलावा निच में जीवों के व्यवहार और वह अवस्थाएँ भी शामिल हैं जिनके कारण विभिन्न मौसमों में और दिन के विभिन्न प्रहरों में उनका आचरण बदलता है। इसे साधारण शब्दों में यूं कहा जा सकता है कि जीव जितने क्षेत्र में रहता है या जो उसका ठिकाना है उसे उसका निवास स्थान कहते हैं जबकि वह जो कुछ करता है अर्थात् उसके व्यवसाय का संबंध निच से है।

पारिस्थितिक तंत्र में जीवों की अंतर्क्रियाओं विविध प्रकार की होती हैं। ये दो स्तरों पर हो सकती हैं — जीवसंख्याओं (population) के स्तर पर और समुदाय के स्तर पर। इससे पहले कि हम इन अन्योन्यक्रियाओं की गहराई में जाएँ सर्वप्रथम हमें जीवसंख्या, समुदाय और पारिस्थितिक तंत्र के पारिस्थितिक अर्थ को समझ लेना चाहिए और ये देख लेना चाहिए कि वे किस प्रकार संबंधित हैं। एक ही जाति के सदस्य मिलकर जीव संख्या को आकार देते है। विभिन्न पौधों और प्राणियों के जीव समूह जो किसी क्षेत्र में रहते और संसाधनों का समूहिक रूप से उपयोग करते हैं एक जैविक समुदाय या सामान्य शब्दों में समुदाय बनाते हैं। अपने प्रतिवेशी अजैविक पर्यावरण को साथ मिलाकर समुदाय पारिस्थितिक तंत्र की रचना करते हैं।

मौलिक पारिस्थितिक धारणाओं, प्रकृति में संयोजनों और विश्व के सजीवमों का अध्ययन पिछली इकाइयों में कर लेने के पश्चात् अब आप प्रकृति और जीव समुदायों की गतिकी और उनकी अंतर्क्रियाओं के महत्व का जो इस इकाई का प्रमुख विषय है, आप अच्छी तरह मुल्यांकन कर सकेंगे।

4.2 समुदाय की विशिष्टताएं

समुदाय क्या है और ये कैसे संगठित होता है, इन बातों पर विचार करने के बाद आइए अब हम जीव-समुदाय पर निकट से दृष्टि डालें। किसी समुदाय की तीन मौलिक विशिष्टताएँ होती हैं: उत्पादकता (productivity), विविधता (diversity) और समुत्थान-शक्ति (resilience)। ये तीनों अंतर्संबंधित हैं। इन विशिष्टताओं से अतिपरिचय, समुदाय की प्रकृति एवं प्रकार्य को समझने के लिए आवश्यक है।

4.2.1 उत्पादकता

उत्पादकता शब्द उत्पादन से व्युत्पन्न हुआ है जो जीवभार (biomass) के उत्पादन से संबद्ध है। इकाई 2 में आपने पढ़ा कि जीवभार का उत्पादन, ऊर्जा संचयन-स्थानांतरण अभिक्रियाओं की अभिव्यक्ति है। प्रथम पोषण स्तर के बाद सारे जीव अपनी ऊर्जा और पोषण आवश्यकताएँ नीचे के पोषण स्तरों से पूरा करते हैं।

जीवभार-किस स्थान विशेष में पाए जाने वाले सभी प्राणीयों का कुल भार।

किसी समुदाय की उत्पादकता जीव भार के उत्पादन की दर से आंकी जाती है। उत्पादकता भौतिक कारकों जैसे जलवायु, वायु, जलधाराएँ, मृदा प्रकार, भू-आकार और ऊंचाई अथवा गहराई पर निर्भर होती है। विभिन्न समुदायों में उत्पादकता में विविधता, उपरोक्त कारकों में विवधता के कारण पाई जाती है। सामान्यत: देखा गया है कि स्थलीय पारिस्थितिक तंत्र में औसत उत्पादकता जलीय पारिस्थिति

तंत्र की अपेक्षा अधिक है। केवल उथले तटीय जल अपवाद है जो अत्यधिक उत्पादी हैं। महासागर पृथ्वी के लगभग 71 प्रतिशत सतह को घेरे हुए हैं फिर भी औसत जलीय उत्पादकता कुल स्थलीय औसत उत्पादकता से 25 प्रतिशत कम है।

4.2.2 विविधता

किसी समुदाय में पौधों और प्राणियों की विभिन्न जातियाँ पाई जाती हैं। ये शब्द विभिन्न विविधता के संदर्भ में प्रयोग किया गया है और इसे समुदायों की जाति विविधता भी कहते हैं। किसी समुदाय की जाति विविधता की जानकारी प्राप्त करने के लिए उस पारिस्थितिक तंत्र की बहुत सी विभिन्न जातियों के विषय में जानना पड़ेगा। जाति विविधता तीन परिवर्ती संख्याओं पर निर्भर है: समुदाय में विभिन्न जातियों की संख्या, प्रत्येक जाति के जीवों की संख्या, और उस समुदाय के समस्त जीवों की संख्या।

4.2.3 समुत्थान-शक्ति

आपने देखा होगा कि यदि कोई प्राकृतिक विक्षोभ उत्पन्न होता है तो कुछ समय बाद समुदाय उससे उभर कर यथास्थिति पर पहुँच जाता है समुदाय की किसी विक्षोभ से उभर आने की ये क्षमता समुत्थान-शक्ति कहलाती है। प्रकृति में भौतिक पर्यावरण विक्षोभों के विभिन्न प्रकारों से जीव के सामने निरंतर चुनौतियाँ प्रस्तुत करता रहता है। उदाहरणार्थ मौसम की परिस्थितियों पर विचार कीजिए जो कुछ दिनों तक एक सा नहीं रहता या किसी एक दिन भी एक सा नहीं रहता। तापक्रम, वायु वेग और दिशा में प्रतिदिन परिवर्तन होता है। प्राकृतिक विक्षोभों के कारण समुदायों में हो रहे विघटन के अतिरिक्त मानवीय कारक भी विघ्न डालते हैं। ऐसा कैसे होता है? किसी ऐसी परिस्थिति का विचार कीजिए जब किसी क्षेत्र की प्राकृतिक वनस्पति किन्हीं निर्माण कार्यों के लिए नष्ट की जाती है। ये विनाश कार्य इतना कठोर होता है कि कई बार इस से समुदाय का उभर पाना लगभग असंभव होता है। अब एक दूसरी स्थित पर ध्यान दीजिए जहाँ कि जंगल में एक बड़ा वृक्ष गिर गया हो और उसका वह स्थान खाली हो गया हो। कुछ समय बीतने के बाद विभिन्न प्रकार के पौधे उग कर उस खाली स्थान को भर देते हैं। ये समुत्थान समुदाय की समुत्थान-शक्ति कहलाता है अर्थात् समुदाय के गतिक संतुलन को प्राप्त करने की निहित प्रवृत्ति। पारिस्थितिक शब्दों में इसे होमियोस्टेसिस (homeostasis) कहते हैं जो समुदायों की स्वभाविक समुत्थान-शक्ति होती है। होमियोस्टेसिस किसी तंत्र के अस्त-व्यस्तता के बाद अपनी प्राकृतिक अवस्था पर वापस लौटने की अंतर्निहित क्षमता को कहते हैं।

बोध प्रश्न 2

1) पारिस्थितिक तंत्र, जीवमण्डल, जीवसंख्या में अन्तर बताइए। इनमें से हर एक का एक- एक उदाहरण दीजिए। संरचनात्मक संगठन में जटिलता के आरोही क्रम के अनुसार श्रेणीबद्ध कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) किसी छोटे गांव और बड़े नगर के निवासियों के पारिस्थितिक निच की तुलना कीज़िए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) नीचे बने वर्णानुक्रमिक में उन दिये गए पारिस्थितिक शब्दों को पहचान कर अंकित कीजिए जो इस इकाई से संबद्ध हैं इनका वर्णन 1 से 8 तक दिया गया है।(**संकेत** : वर्ग में ऊपर से नीचे और दाएँ से बाएँ दोनो ओर शब्दों को खोजिए।)

प्र	आ	ह	ट	से	मी	द	मा
वा	वा	स	जी	व	सं	ख्या	हो
सि	स	मु	त्था	न	श	क्ति	ल
सु	ध	दा	ष	उ	ध	र	ती
म	र	य	नि	त्पा	न	न्द	न्ध
य	प्र	.ड	च	द	उ	ड़	सा
पा	ग्रि	स्थि	ति	क	त	न्त्र	ग
ठ	वि	वि	ध	ता	जी	वा	र

दो शब्द आपके मार्गदर्शन के लिये अंकित किए गए हैं जोकि इस अभ्यास का हिस्सा नहीं हैं।

वर्णन : 1) पारिस्थितिक तंत्र का वह क्षेत्र जहां जीव रहते हैं।

2) किसी क्षेत्र में रहने वाली जाति के सदस्यों का एक ग्रुप।

3) समुदाय और उसके आसपास के भौतिक पर्यावरणीय घटक।

4) किसी समुदाय में जीवभार के संचयन की दर।

5) किसी पारिस्थितिक तंत्र में रहने वाले जीव की क्रियात्मक भूमिका।

6) किसी पारिस्थितिक तंत्र के सारे जीवित सदस्य।

7) किसी प्राकृतिक समुदाय में उपस्थित विभिन्न जातियां।

8) किसी विक्षोभ से उभर आने की प्राकृतिक समुदायों की निहित क्षमता।

4.3 समुदाय की जातियों में अन्योन्यक्रियाएं

किसी समुदाय में पौधों और प्राणियों दोनों के जीव समूह एक साथ रहते हैं, सर्वनिष्ट संसाधनों में साझेदारी करते हैं, और दैनिक आवश्यकताओं की प्राप्ति के लिए परस्पर सहयोग और अंतर्क्रियाओं द्वारा जुड़े रहते हैं।

4.3.1 प्रमुख पौधे परिस्थितियों परिभाषित करते हैं

जैसा कि आपने इकाई 2 में देखा कि किसी समुदाय के जीव आहार प्राप्ति प्रक्रिया के अनुसार या तो उत्पादक होते हैं या फिर उपभोक्ता। उत्पादक समुदाय पर प्रभावी असर डालते हैं। किसी ऐसे स्थलीय समुदाय के बारे में सोचिए जिस के बारे में आप अभिज्ञ हों जैसे कोई जंगल। जंगल समुदाय में वृक्षों की प्रधानता होती है। कुछ वन तो प्रधान जातियों के नामों से ही जाने जाते हैं जैसे साल का वन, पाईन का वन आदि। प्रधान पौधे की जाति आमतौर से दूसरी पादप जातियों की अपेक्षा आकार में बड़ी या संख्या में सबसे अधिक होती है। आपको स्मरण होगा कि पौधे सौर ऊर्जा संचय करके समुदाय में सर्वाधिक अनुपात में जीवभार की आपूर्ति करते हैं वे समुदाय के लिए आहार का आधार मात्र ही तैयार नहीं करते बल्कि पर्यावरण को रूपांतरित भी करते हैं और उनकी उपस्थिति से ये पता भी लगता है कि उस क्षेत्र में किस प्रकार के जीव रह सकते हैं। उदाहरणार्थ वनों में विभिन्न प्रकार के वृक्ष अपनी छत्रछाया में स्थानीय पर्यावरणीय परिस्थितियों को परिवर्तित करते हैं। सूक्ष्म जलवायु-संबंधी परिवर्तन उन विभिन्न प्रकार के पौधों और प्राणियों के अस्तित्व के लिए ऐसी नई परिस्थितियाँ पैदा कर देते हैं जिनके बिना उनका जीवित रहना संभव नहीं होता। प्रधान पौधे अपने क्षेत्र में नियंत्रक प्रभाव रखते हैं और समुदायिक संरचना का निर्धारण करते हैं।

4.3.2 अन्योन्यक्रियाओं के प्रकार

विभिन्न प्रकार के पौधों और प्राणियों के किसी क्षेत्र में बसने के बाद परिस्थितियाँ शांत और स्थिर नहीं रहतीं। प्रत्येक जीव उस निवास स्थान के जैविक और अजैविक घटकों से सक्रिय रूप से अन्योन्यक्रिया करते हैं। इकाई 1 और 3 में आपने देखा कि ये जीव अपने भौतिक पर्यावरण के साथ किस प्रकार अन्योन्यक्रिया करते हैं। इस इकाई में हम केवल समुदायों के जीवित सदस्यों की अन्योन्यक्रियाओं पर ही ध्यान केंद्रित करेंगे।

मौलिक रूप से किसी सक्रिय समुदाय में तीन प्रकार की अन्योन्यक्रियाएँ पाई जाती हैं, **परभक्षण** (predation), **प्रतिस्पर्द्धा** (competition) और **सहजीवन** (symbiosis)।

क) परभक्षण

किसी पारिस्थितिक तंत्र में केवल उत्पादक ही अपना भोजन तैयार करने में सक्षम हैं जबकि सारे उपभोक्ता चाहे वह **शाकाहारी** (herbivore) हों, **मांसाहारी** (carnivore) या **परभक्षी** हों या **सर्वाहारी** (omnivore) हों या फिर **उपमार्जक** या **अपघटक** (decomposer) हों अपने आहार के लिए अन्य साधनों पर निर्भर रहते हैं। कुछ उपभोक्ता **परभक्षी** (predator) के रूप में भी जाने जाते हैं। परभक्षी ऐसे प्राणी होते हैं जो प्रत्यक्ष रूप से दूसरे प्राणी का भक्षण करते हैं (चित्र-1) और इस प्रक्रिया में शिकार मारे ही जाएं कोई आवश्यक नहीं है। ये परिभाषा जीवभक्षियों को मृतभक्षियों से अलग करने के साथ ही अन्य बहुत से जीवों के विस्तृत रूप भी प्रस्तुत करती है। शाकभक्षी, मांसभक्षी और सर्वभक्षी परभक्षी हैं और विभिन्न प्रकार के **परजीवियों** (parasites) को भी इसी श्रेणी में रखा गया है। परजीवी ऐसे जीव हैं जो अपने पोषण के लिए दूसरे जीवों पर आश्रित रहते हैं किन्तु उस दूसरे जीव को मारते नहीं। **रोगजनकों** (pathogens) को भी परजीवियों में ही सम्मिलित किया जाता है किंतु ये परजीवियों के विपरीत अपने पोषण कर्त्ता को नष्ट कर देते हैं।



चित्र-1: शिकार-शिकारी संबंध का साधारण उदाहरण।

परभक्षण एक महत्वपूर्ण कारक है जो समुदायों संतुलन में निर्धारित करता है। शिकार होने वाले प्रौढ़ प्राणी (चित्र-1), उनके अण्डे और बच्चे परभक्षियों के भोजन के रूप में काम आते हैं। परभक्षी अपने शिकार का जिस विकासीय चरण पर उपभोग करते हैं वही चरण उनकी जीव संख्या के पुनरूज्जीवन और विकास के लिए निर्णायक होता है। परभक्षियों के दबाव के होते हुए भी शिकार होने वाली जातियां अपने अस्तित्व को बनाए रखने में सफल हो गई हैं क्योंकि वह परभक्षियों का मुकाबला करने, उनसे बच निकलने के लिए कठोर और चिपचिपा दाढ़ी स्वरूप और विषाक्त आवरक विकसित कर चुकी हैं और क्षतिपूर्ति कर लेने की योग्यता के कारण अपनी जनसंख्या बढ़ाने में सक्षम हो चुकी हैं।

ख) प्रतिस्पर्द्धा

किसी समुदाय की जातियों में ये भी एक प्रकार की अन्योन्यक्रिया है। ये अन्योन्यक्रिया मुख्यत: विरोधात्मक प्रकार की है क्योंकि प्राणी अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक मौलिक पर्यावरणीय संसाधनों की प्राप्ति के लिए एक दूसरे का सामना करते हैं। ये संसाधन मुख्यरूप से प्रयोज्य अवस्था में ऊर्जा और द्रव्य के अतिरिक्त जीवन के विभिन्न कार्यकलापों के लिए स्थान और कोई विशिष्ट क्षेत्र हैं। पौधे जड़े फैलाने के लिए स्थान, बढ़ने के लिए क्षेत्र और सूर्य के प्रकाश, जल और पोषकों के अधिकतम अवशोषण के लिए एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्द्धा करते हैं। इसी प्रकार, पशु भी रहने, प्रजनन, और भरण पोषण के लिए एक दूसरे से जूझते हैं। कोई जीव चाहे वह पौधा हो या प्राणी मौलिक रूप से दो प्रकार से संघर्ष करता है। एक तो अपनी ही जाति के सदस्यों से प्रतिस्पर्द्धा **अंत:जातीय प्रतिस्पर्द्धा** (intraspecific competition) और दूसरी अन्य जातियों के सदस्यों से प्रतिस्पर्द्धा - **अंतरजातीय प्रतिस्पर्द्धा** (interspecific competition)। अंत:जातीय प्रतिस्पर्द्धा बहुत उत्तेजनापूर्ण होती है क्योंकि एक जाति के सदस्यों की स्थान और पोषण संबंधी आवश्यकताएं समान होती हैं अत: वे इन पर्यावरणीय संसाधनों के लिए प्रत्यक्ष रूप से मुकाबला करते हैं पौधे सीमित रह कर **अंत:जातीय प्रतिस्पर्द्धा** का निम्नलिखित रूप से सामना कर पाते हैं। पौधों में विविध बीज परिक्षेपण प्रक्रिया के विकास की योजना भी है जो दूर-दूर तक बीजों के विस्तृत प्रकीर्णन को सुनिश्चित कर देती है (चित्र-2)। आपने शुष्क ऋतु में कुछ रोएंदार या परदार, वायु में स्वतंत्र रूप से प्लावी संरचनाएं देखी होंगी। ये बीज हैं जो सक्रिय परिक्षेपण योजना को प्रदर्शित करते हैं। प्रतिस्पर्द्धा को सीमित करने की तीसरी योजना पौधों की पत्तियों और जड़ों द्वारा पदार्थों के स्रवण की है। इन पदार्थों का निरोधी प्रभाव उसी जाति या आस पास दूसरी जातियों की पैदावार पर पड़ता है।

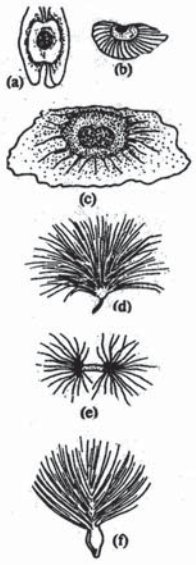

चित्र-2: परों सहित (a-c) और रोएंदार बीज (d-f) प्रकीर्णन के लिए।

प्राणियों ने भी अंत:जातीय प्रतिस्पर्द्धा को कम करने या पूरी तरह समाप्त करने की योजना अपनाई है। कुछ जंतुओं द्वारा प्रदेशिकता (teritoriality) का प्रदर्शन करना ऐसी ही एक योजना है जिसमें उनके निवास स्थान का प्रतिवेशी क्षेत्र या बसेरा करने के स्थल निश्चित और घुसपैठियों से रक्षित होते हैं। इस प्रकार चिड़ियों (birds) और बहुत सी अकशेरूकी जातियां (invertebrate species) अपने जनसमूह के सदस्यों के साथ प्रतिस्पर्द्धा से बचने के लिए उनके और अपने मध्य कुछ स्थान का अंतर रखते हैं। आपने गौरैयों (sparrows) में इस तथ्य पर ध्यान दिया होगा। वह बड़े आक्रमणकारी ढंग से अपने "क्षेत्रों" की रक्षा करती हैं विशेष रूप से अपने प्रजनन ऋतु में।

ये "क्षेत्र" या तो संगमी जोड़े द्वारा अधिकृत होता है या ये एक परिवार आधारित इकाई का भी हो सकता है जैसा कि सामाजिक प्राणियों जैसे भेड़ियों और हाथियों का होता है। आक्रमण व्यवहार द्वारा अपने क्षेत्रों की रक्षा के अतिरिक्त कुछ प्राणी विशिष्ट शारीरिक स्रवण द्वारा अपने क्षेत्रों की सीमाओं को सीमांकित और अंकित करते हैं।

ग) सहजीवन

समुदायों के सदस्यों के मध्य सारी अन्योन्यक्रियाएं सदैव विरोधात्मक नहीं होतीं। जीवों द्वारा प्रदर्शित अनुकूल अन्योन्यक्रियाओं को सहजीवी अन्योन्यक्रियाएं (symbiotic interactions) कहते हैं। सहजीवी संबंध वह होते हैं जिनमें जीवों की दो जातियां घनिष्ट सहवास में रहती हैं। ये सहवासिता भूवैज्ञानिक समय-मापक्रम (geological time scale) के दौरान सहजीवी जातियों के सहविकास (coevolution) का परिणाम है। सहजीवी संबंधों के तीन प्रमुख प्रकार जीवों में देखने में आते हैं: **सहभोजिता** (commensalism), **सहोपकारिता** (mutualism), और **परजीविता** (parasitism)

i) सहभोजिता—इस संबंध में एक जाति तो स्पष्ट रूप से लाभान्वित होती है जबकि दूसरी जाति को न तो लाभ ही पहुंचता है और न ही उसे हानि पहुंचती है अर्थात् यह एक पक्षीय संबंध है। लाभ प्राप्त करने वाले विशेष जीव अक्सर भौतिक रूप से दूसरी जातियों से जुड़े होते हैं। क्या आपने किसी अधिपादप (epiphyte) पर ध्यान दिया है? अधिपादप ऐसे पौधे हैं जो दूसरे पौधों की शाखाओं पर उगते और बढ़ते हैं (चित्र-3)। वे हवा और वर्षा जल से अपना आहार प्राप्त करते हैं और अपने विकास के लिए परपोषी पौधे (host plant) का सहारा लेते हैं। इसी प्रकार समुद्री जीव जैसे नाकचिमटी (barnacles), फुरतीले गतिशील जीवों पर पलते हैं। इस प्रकार वे परभक्षण से केवल सुरक्षित ही नहीं रहते बल्कि आहार के नये-नये साधन भी प्राप्त कर लेते हैं। अधिपादपों के समान, वे



चित्र-3: अधिपादप: वृक्षों के तनों पर आर्किड (a), ब्रोमेलिपाड (b), ये अपनी आवश्यकता की जल आपूर्ति वर्षा से और आहार वायु में उपलब्ध कणों से करते हैं। तने जो उन्हें संभाले रहते हैं वह भी पोषकों की आपूर्ति करते हैं।

भी जिन जीवों पर पलते हैं, उन्हें क्षति नहीं पहुंचाते। सहभोजिता का एक और सुप्रसिद्ध उदाहरण एक छोटे से उष्णकटिबंधीय (tropical) मछली क्लाउनफिश (clown fish) और समुद्री आनेमोनि (sea anemone) का है। समुद्री आनेमोनि ऐसे समुद्री जन्तु हैं जिनके दंशन स्पर्शक (stinging tentacles) होते हैं। क्लाउनफिश ने ऐसा अनुकूलन कर लिया है जिसके कारण वह आनेमोनियों घातक दंशन स्पर्शकों के मध्य रहकर भी जीवित रह पाती है। ये स्पर्शक क्लाउन फिश जाति के निकट आने वाली परभक्षी मछलियों को तुरंत अशक्त कर देते हैं।

ii) **सहोपकारिता**—जैसा कि शब्द सहोपकारी से स्पष्ट है, दो जातियों के मध्य सहकारिता की भावना दोनों के लिए हितकर होती है। ऐसा ही एक जाना पहचाना उदाहरण दंशक चींटियों (stinging ants) के वर्ग और *आकेशा* (*Acacia*) (चित्र-4) वर्ग से सम्बद्ध पौधों के मध्य सहकारी संबंधों का है। इस पौधे की रूपांतरित पत्तियों में खोखले कांटों का एक जोड़ा होता है जिसमें दंशक चीटियाँ रहती हैं। ये खोखले कांटे चींटे के डिंभक (larval) के लिए एक सुरक्षित स्थान है। इसके अतिरिक्त ये चींटियां पर्णवृंतों की तह में उपस्थित मकरंद कोशों (nectaries) द्वारा उत्पादित मकरंद (nectar) भी खाती हैं चित्र-4 में तीर चिह्न देखिए)। कांटों में रहने और मकरंद खाने वाली चींटियां शाकाहारियों से क्रूरता पूर्वक और उन पर आक्रमण करके परपोषी पौधों को सुरक्षित रखती हैं। इस प्रकार पौधे सुरक्षित रहते हैं और चींटियों को आहार और सुरक्षा निरंतर मिलती रहती है।



चित्र 4: एक *आकेशा* वृक्ष भाग जिसमें कांटे और उनके छिद्र दर्शाये गये हैं। चींटियां पर्णवृंतों की तह में उपस्थित मकरंद कोषों में उत्पादित पोषक तरल आहार का सेवन करती हैं (तीरों को देखिए)।

सहोपकारिता का एक और उदाहरण कुछ पक्षियों और पशुओं के मध्य संबंध का है। सुरखिय जैसी चिड़ियां चरते हुए पशुओं पर बैठे-बैठे उनकी खाल में से कीट चुनते रहने में अधिकतर समय व्यतीत कर देती हैं। इस प्रकार चिड़ियों को पशुओं से भोजन प्राप्त होता है और पशुओं को अपने शरीर के परजीवियों से मुक्ति मिलने का लाभ प्राप्त होता है।

iii) **परजीविता**—इस संबंध में एक ही जाति अपनी सहचारी जाति से सारे लाभ प्राप्त करती हैं। मानव जाति अक्सर विभिन्न प्रकार के परजीवियों जैसे रोगजनक जीवाणु (pathogenic bacteria), वाइरस (virus) और विभिन्न प्रकार के अकशेरूकी जीवों का शिकार बनते हैं। आपने आंत्रीय अंकुश कृमियों (intestinal hookworms), एन्टअमीबा (entamoeba) और मलेरिया परजीवी जो समय-समय पर असंख्य मनुष्यों को संदूषित करते रहते हैं के बारे में सुना होगा। बालों के पिस्सू (hair flea) मानव परजीवियों का एक और उदाहरण हैं। पिस्सू का शरीर चिपटा और उसका रंग मनुष्य के बालों के रंग से मेल खाता है जिसके कारण उसके लिए बालों में घुसना और छुपना सरल होता है।

पौधों में सबसे उत्तम परजीवी पौधे का उदाहरण अमरबेल (dodder) के पौधे का है। ये पर्ण रहित, पतला लम्बा पौधा होता है (चित्र 5a)। परजीवी पौधा जो खुंटे के जैसी संरचना द्वारा परपोषी पौधे से

जुड़ा रहता है उसे चूषक (haustoria) कहते हैं। चित्र-5 b में चूषकांग (haustorium) दर्शाया गया है। यह परजीवी, परपोषी पौधे से चूषक के माध्यम से पोषण प्राप्त करते हैं। इसके परिणामस्वरूप परजीवी तो फलता फूलता है किंतु परपोषी पौधे की वृद्धि कम हो जाती है।

बोध प्रश्न 2

1) विभिन्न जातियों में प्रतिस्पर्द्धा अक्सर उन जीवों के मध्य अधिक होती है जो अलग-अलग प्रकार से अपना भोजन प्राप्त करते हैं। सत्य अथवा असत्य? यदि ये असत्य हो तो कथन को इस प्रकार बदलिए कि सत्य हो जाय।

.....

.....

.....

.....

.....

2) सहभोजिता, सहोपकारिता और परजीविता की विशेषताओं के भेद बताइए। उनके मध्य समानताएं क्या-क्या हैं? प्रत्येक का एक-एक उदाहरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

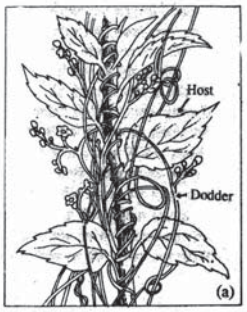

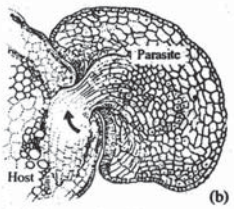

चित्र 5: a) परपोषी पौधे का एक भाग जिसे परजीवी-अमरबेल घेरे हुए है। ये एक पीली, पतली संरचना है जो खूंटे जैसी आकृति बनाती है (देखिए चित्र b में तीर) और इस प्रकार परपोषी ऊतकों से पोषकों को छीन लेती है।

4.4 समुदाय में संगठन

किसी समुदाय के जीवों के मध्य विभिन्न अन्योन्यक्रियाएं अलग-अलग जातियों द्वारा अस्तित्व और सम्पोषण के लिए अनिवार्य मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपनाई नीतियों को प्रदर्शित करती हैं। सारी अन्योन्यक्रियाएं समुदायिक संगठन का आधार बनती हैं। समुदाय का संगठनात्मक प्रारूप जीवों के अलग-अलग प्रकार से अंत:क्रियाएं करने के लिए एक ढाँचा प्रस्तुत करता है। आप सोच रहे होंगे कि सामुदायिक संगठन का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है समुदाय योजनाबद्ध जैव संरचना। इसी बात को दूसरी तरह से यूँ कहा जा सकता है कि ये समुदाय के विभिन्न जीवन स्तरों में व्यवस्था और कार्यात्मक संबंध हैं। आमतौर से ये व्यवस्था किसी पारिभाषिक तंत्र की विशिष्टता होती है जिसके कारण एक पारिस्थितिक तंत्र को दूसरे से अलग पहचाना जा सकता है, अर्थात् किसी वन को घास स्थल से अलग या घास स्थल को टुण्ड्रा से अलग इत्यादि। समुदायिक संगठन के सम्पूर्ण ज्ञान के लिए समुदाय के दो पक्षों – संसाधनों का बंटवारा और स्तरण को समझना जरूरी है।

4.4.1 संसाधनों का बंटवारा

जैसा कि हम जानते हैं कोई समुदाय पादपों और प्राणियों की विभिन्न जातियों का जीव समूह होता है। वह उपलब्ध संसाधनों का आपस में बंटवारा (resource partitioning) करके ही किसी प्राकृतिक वास में एक समुदाय के रूप में मिलजुल कर रह पाते हैं। किसी समुदाय में संसाधन सीमित होते हैं अत: प्रश्न ये उठता है कि वह इन सीमित संसाधनों का आपस में उचित बंटवारा कैसे सुनिश्चित करते हैं। प्रत्येक जाति ने भूवैज्ञानिक समय मापक्रम में इस कार्य के लिए स्पष्ट कार्य योजना बनाई है। हर

संसाधन : एक पदार्थ या वस्तु जिसकी भरण पोषण विकास और प्रजनन के लिए जीव को आवश्यकता होती है। इसके विभिन्न अर्थ हैं। जब ये मांग की दृष्टि से अपर्याप्त हो तो उसे सीमाकारी संसाधन कहते हैं। संसाधन जैसे कोयला जो अपूर्ण है क्योंकि यह निश्चित मात्रा में पाया जाता है और जब पूर्ण रूप से उपयोग किया जा चुका हो तो पुनः उत्पन्न नहीं किया जा सकता। नवीनीकृत की जा सकने वाले संसाधन जैसे भोजन, जल आदि निरंतर पुनः उत्पन्न किये जा सकते हैं।

जाति ने किसी न किसी प्रकार का अलिखित संहिता अपनाई है और वह अभिज्ञ हैं कि कौन-सा संसाधन का कब और कहां उपयोग होना है। ये सारी सूचना उनकी आनुवंशिक अंत:कार्यविधि में निहित है। कुछ ऐसे उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं जो संसाधनों के बंटवारे के विभिन्न पक्षों को स्पष्ट करते हैं।

किस संसाधन का उपयोग करना है? जीवों को उनके द्वारा उपभोग किए जाने वाले भोजन की प्रकृति के आधार पर शाकाहारियों और मांसाहारियों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है अर्थात् वह पौधा है या प्राणी। इस प्रकार किसी समुदाय में प्राणी या तो हरे पौधों का उपभोग करते हैं या दूसरी जातियों के प्राणियों को खाते हैं। शाकाहारी प्रत्येक हरे पौधे नहीं खाते बल्कि अपनी विशेष रुचि की घास, झाड़ियां और वृक्षों की जातियों को ही पसंद करते हैं। इस प्रकार वह चराई करने वाले वर्णात्मक प्राणी (selective grazers) हैं। कीट और पक्षी भी वर्णात्मक आहार उपभोक्ता हैं क्योंकि वह विशेष पौधों के भागों जैसे पर्ण, फल या छाल को खाते हैं। काम में लाए जाने वाले भोजन के साधन के अनुकूल जीव अपने शरीर या उसके भागों में विशेष प्रकार की युक्तियां विकसित कर लेते हैं। एक जंगल में रहने वाली बहुत सी चिड़ियों की जातियों का निम्नलिखित उदाहरण इस दृष्टिकोण को आपको स्पष्ट कर देगा। किसी जंगल में दाने या बीज़ चुगने वाली चिड़ियां रहती हैं और कुछ ऐसी भी चिड़ियां हैं जो सड़े गले मांस (carrion) पर आश्रित रहते हैं। इनकी चोंचें उनके आहार के अनुकूल होती हैं (चित्र-6 देखिए)। दाना चुगने वाली चिड़ियों की चोंचें लम्बी तथा पतली होती हैं जबकि सड़े मांस को खाने के लिए सशक्त और टेढ़ी चोंच होती है ताकि वह मांस को नोच सकें। उनके पंजे भी इसी उद्देश्य के अनुकूल विकसित होते हैं (पुन: चित्र-6 देखिए) जैसे बीज के अनुकूल, कीड़ों के अनुकूल या फिर वह जो कुछ खाने के लिए चुनते हो उसके अनुकूल। सड़ा गला मांस खाने वालों के पंजे सशक्त और तीव्र होते हैं जिससे वह अपना शिकार पकड़कर नोच सकें। संरचनात्मक विशिष्टीकरण के अतिरिक्त कुछ चुगने वाली चिड़ियां अपने बीजों के चयन में भी विशिष्टता रखती हैं। इस प्रकार बीज चुगने वाले पक्षियों के दो समूह विभिन्न बीजों के संसाधनों का चयन करके समुदाय में प्रतिस्पर्द्धा को टालते हैं।

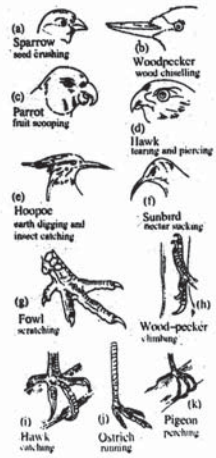

चित्र-6: (a से f) विशिष्ट भोज्य पदार्थों के लिए अनुकूलित चोंचें। (g से k) मुख पक्षियों के पंजों में अनुकूलित रूपांतरण।

कहां से उपयोग करना है? संरचनात्मक विशिष्टताओं का विकास कर लेने के अतिरिक्त जीवों के अपने प्राकृतिक वास में अपने संसाधनों की प्राप्ति के निश्चित स्थल भी होते हैं अर्थात् उन्होंने अपने आवासीय क्षेत्र को इस कार्य के लिए प्रविभाजित किया हुआ है। जैसे किसी वन में विभिन्न पक्षी विभिन्न ऊंचाईयों पर रहते हैं। उनमें से कुछ पक्षी अधिक ऊंचाई पर बसेरा करते और भोजन खोजते है, कुछ मध्यवर्ती ऊंचाई पर और कुछ कम ऊंचाई पर ही संतुष्ट हो जाते हैं। कुछ तो जंगल के धरातल से ही अपना आहर प्राप्त कर लेते हैं। संसाधनों के बंटवारे का बहुत अच्छा उदाहरण उत्तरी अमेरिका में पाई जाने वाली छोटी चिड़िया, वारब्लर या फुदकी (warbler) है। ये छोटी रंग बिरंगी चिड़ियां हैं जिनकी कई जातियां उस जंगल में एक साथ रहती हैं। ये सारी जातियां स्प्रूस (spruce) के वृक्षों में रहने वाले कीड़ों को खाती हैं। जोकि ये एक ही वृक्ष के विभिन्न भागों में प्राप्त करती हैं। (देखिए चित्र-7)। यद्यपि उनके भरण क्षेत्र का कुछ अंश एक दूसरे में सम्मिलित है फिर भी प्रत्येक जाति का अपना निश्चित क्षेत्र होता है जो वृक्षों में ऊंचाई के अनुसार और धरातल पर मध्य से दूरी के अनुसार निश्चित होता है।

संसाधनों का इसी प्रकार का बंटवारा पौधों में भी पाया जाता है (देखिए चित्र-8) किसी खेत में पैदा होने वाली एक वर्षीय पौधों की तीन जातियों की अवधि जीवन चक्र पूरा करने के लिए कम होती है। सौर ऊर्जा की प्रचुरता है किंतु वे पोषक और नमी अधिकांश उसी मिट्टी से ही प्राप्त करते हैं। आइए देखें कि ये पास-पास पाई जाने वाली जातियां एक ही प्राकृतिक वास में रहते हुए भी अपने उगने और प्रजनन के लिए अनिवार्य संसाधनों की प्राप्ति का क्या प्रबंध करती हैं (देखिए चित्र-8)। तीनों जातियों की जड़ों की संरचना में बड़ी भिन्नता है और वह मिट्टी की अलग-अलग गहराइयों में प्रविष्ट होती हैं। ये विशेषता उन्हें प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्द्धा से बचाये रखने में सहयोग देती है और विभिन्न मृदा स्तरों से आवश्यक पोषकों के अवशोषण में भी सहयोगी होती हैं। उपरोक्त उदाहरण स्पष्ट करता है कि संसाधनों के निर्धारण की ये विभिन्न प्रतिकृतियां ही इन्हें कार्य के समय अंतरजातीय प्रतिस्पर्द्धा से बचाती हैं। विभिन्न जातियां संसाधनों का बंटवारा करके किसी न किसी प्रकार दूसरी जातियों से प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्द्धा टालती हैं।

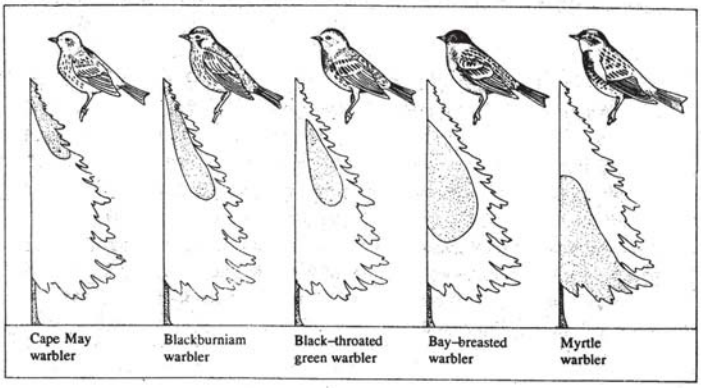

चित्र-7: वार्बलर (फुदकी) की पांच जातियां आहार प्राप्ति और बसेरे के लिए स्प्रूस वृक्ष का उपयोग करती हैं परंतु प्रत्येक का अपना एक क्षेत्र है। छायांकित क्षेत्र वह है जहां प्रत्येक जाति अपने भोजन करने का अधिकतर समय व्यतीत करती है। वृक्ष के विभिन्न भागों से भोजन प्राप्त करके जातियां प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्द्धा से बचती हैं और इस प्रकार वह वही आवास बनाए रख सकती हैं।

बॉक्स 4.1 : हावड़ा ब्रिज में निवास करने वाले पक्षियों में संसाधन का बंटवारा।

लगभग 58 वर्ष पुराना शानदार प्रास हावड़ा ब्रिज जो कलकत्ता में हुगली नदी पर बना है विश्व प्रसिद्ध है। ये पुल न केवल इंजीनियरी आश्चर्य है बल्कि अनगिनत पक्षियों का निवास स्थान भी है। विभिन्न प्रकार की चिड़ियों ने इसे अपने रैन बसेरे के रूप में पसंद करके उस पर घोंसले बना रखे हैं। उसके संगमी जोड़ घोंसले के निर्माण के लिए आदर्श स्थान हैं। पक्षी निकटवर्ती 'बड़ा बाजार' के 'पोस्ता' क्षेत्र से, वहां खाद्यान्न भण्डार किए जाते हैं, खाद्यान्न प्राप्त करते हैं और पुल के फुटपाथ पर सैकड़ों ठैले वालों और फेरी लगाकर बेचने वालों के फेंके हुए बेकार खाद्य पदार्थों में से भी उन्हें आहार सामग्री प्राप्त होती है। इस बात पर ध्यान देना रोचक होगा कि विभिन्न पक्षियों की जातियों ने विभिन्न ऊंचाइयों को अपना घोंसला बनाने के लिए चुना है। कबूतर नीचे की सतह से लगभग 10 मीटर की ऊंचाई पर रहते हैं, कौए मध्य ऊंचाई पर और चीलें जो सबसे ऊंची उड़ती हैं तथा लगभग 90 मीटर ऊंचाई पर अपना अड्डा बनाती हैं।

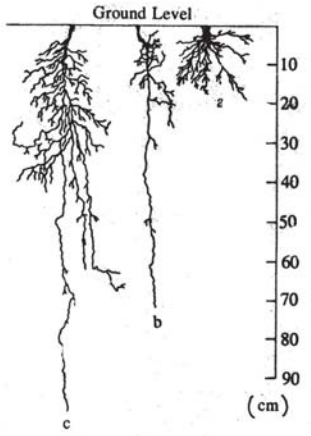

चित्र-8: खुले खेत में उगने वाली तीन एक वर्षीय पौधों की जातियों द्वारा विभिन्न स्तरों पर मृदा संसाधनों का बंटवारा। a) *सीटेरिया* जाति में रेशेदार सतही जड़ों का संत्र पाया जाता है। b) *एविमूटिलॉन* जाति की जड़े मूसला जड़े होती हैं जो विरलरूप में शाखाओं में विभाजित मध्य गहराई तक पहुंचती हैं, और c) *पॉलीगोनियम* जाति की मूसला जड़ें जाती हैं जो औसत रूप से ऊपरी मृदा सतह में शाखाओं में विभाजित होती हैं और दूसरी जातियों की जड़ों की गहराइयों से अधिक गहराई तक विकसित होती हैं।

कब उपयोग करना है? संसाधनों के बंटवारे के औज़ार के रूप में विभिन्न संरचनात्मक युक्तियों और विभिन्न स्थलों का उपयोग करने के लिए अतिरिक्त, 'समय' एक और महत्वपूर्ण कारक है जिसे जीव संसाधन के बंटवारे के लिए इस्तेमाल करते हैं। उदाहरणार्थ विभिन्न फूलों की जातियां विशेष परागणकारियों को आकर्षित करने के लिए दिन और रात के विभिन्न समयों में खिलते हैं। इसी प्रकार विभिन्न प्रकार के कीड़े, पक्षियों और चमगादड़ों का भोजन बनते हैं। कुछ कीड़ों की जातियां दिन में और कुछ रात में कार्यशील होते हैं। ये नीति दिन में कार्यशील पक्षियों और रात में कार्यशील चमगादड़ों के लिए अप्रतिस्पर्द्धा आहार के अवसर प्रदान करती हैं। इसी प्रकार प्रवासी और मौसमी पक्षियों ने भी चक्रावर्तन का नियम बना रखा है जिसका वे पालन करते हैं। मौसम के अनुसार वे पूर्ववर्तियों का स्थान ले लेते हैं और इस प्रकार प्रतिस्पर्द्धा से बचे रहते हैं।

अंतरी समयानुपात पर आधारित संसाधनों में साझेदारी के सर्वोच्च उदाहरणों में से एक अफ्रीका के सेरंगेटी राष्ट्रीय उद्यान (Serengeti National Park) का उदाहरण है। सेरंगेटी पारिस्थितिक तंत्र में रहने वाले जंगली जानवरों में उपलब्ध संसाधनों के लिए असाधारण सामंजस्य है। जेब्रा की बहुत सी जातियां और दो दर्जन से अधिक हिरणों की जातियां चराई करने वाले जीवों में प्रमुख हैं जो सेरंगेटी पारिस्थितिक तंत्र में रहती हैं। इस प्रकार चराई करने वाली बहुत सी जातियां एक साथ रहती हैं और विभिन्न प्रकार की घासों, जड़ी बूटियों और झाड़ियों से भोजन प्राप्त करती हैं (चित्र-9 देखिए)। इस सीमा तक तो ठीक है क्योंकि उनके संसाधनों में कोई अंश परस्पर व्याप्त नहीं है। किंतु हिरणों की कुछ ऐसी जातियां हैं जिनकी पसंद घास की कुछ जातियों के संबंध में एक ही है। एक महत्वपूर्ण ध्यान देने योग्य बात ये है ये जातियां समान प्रकार के पादप ससाधनों की चराई पादपों के विकास के अलग-अलग समय में करती हैं। आहार संसाधनों के बंटवारे की ये नीति जिसमें चराई/कोपल की चराई करने वाले जंतुओं द्वारा अलग-अलग समय पर ही पौधे का उपयोग किया जाता है, समुदाय पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालता। यही कारण है कि सेरंगेटी पारिस्थितिक तंत्र में रहने वाले बहुजातीय समुदाय इतने स्थायी और सम्पोषित हैं।

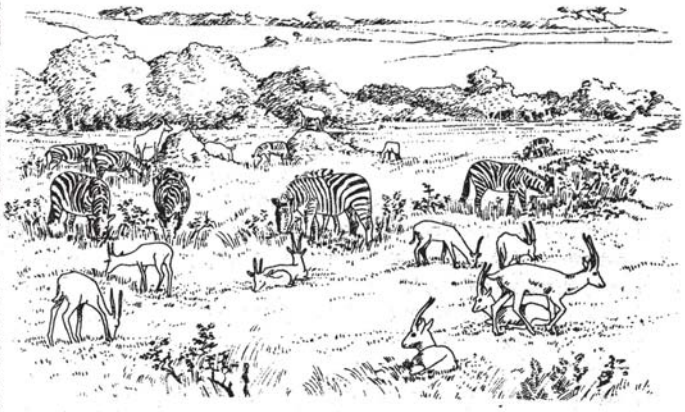

चित्र-9: सेरंगेटी राष्ट्रीय उद्यान भूदृष्य जिसमें जेब्रा और थाम्पसन के चिकारे (हिरणों की जाति) एक साथ विभिन्न पादपजातियों की चराई करते हुए दर्शाए गए हैं (रिकलेफस 1993 से)।

4.4.2 स्तरण (Stratification)

स्तरण किसी समुदाय की विशेषता है। इस शब्द का कोषीय अर्थ स्तरों या परतों की व्यवस्था है। समुदाय के संदर्भ में इसका अर्थ है कि " जीव ऊंचाई के अनुसार अपने को किस प्रकार व्यवस्थित करते हैं।'' समुदाय का स्तरण अधिकतर पौधों की जीव आकृति, उनका आकार, शाखन प्रारूप और पत्तियों के अनुसार निर्धारित होता है। प्रकाश पादप समुदाय की ऊर्ध्वाधर संरचना को निर्धारित करने वाला निर्णायक कारक है जो वास्तव में भौतिक संरचना या विभिन्न जंतुओं की जातियों को समायोजित करने का ढाँचा प्रस्तुत करता है।



चित्र-10: वन का एक भाग जिसमें विभिन्न स्तर दर्शाए गए हैं। ऊंचे वृक्ष (कैनॉपी) निचली मंजिल के वृक्ष, झाड़ियां ऊपरी सतह के निकटवर्ती छोटे पौधे - वन के तल पर। इसके अतिरिक्त लताएं भी होती हैं जो वृक्षों के तनों से लिपटी रहती हैं।

समुदायों का अपना विशिष्ट स्तरण प्रारूप होता है जैसे एक पूर्ण रूप से विकसित वन पारिस्थितिक तंत्र में 7 या 8 स्तर हो सकते है (चित्र-10) जिन्हें वितान (canopy), वितान के नीचे (understory), झाड़ियां (shrub), जड़ी बूटी (herb) या धरातल (ground layer), जड़ों की परत (root layer), और मृदा स्तर (soil strata) आदि के रूप में पहचाना जाता है। बेलें (vines), अधिपादप (epiphytes) और परजीवी (parasites) अलग स्तरों पर पाये जाते हैं। पत्तियों से ढका हुआ छत्रीनुमा वृक्षों का शीर्ष जो सौर ऊर्जा को ग्रहण करने वाला प्राथमिक स्थान है, का प्रभाव वन के शेष भागों की संरचना और जीवन शैली पर पड़ता है। किसी खुले वितान (open canopy forest) में

सूर्य प्रकाश की काफी मात्रा निचले भाग और वन के फर्श पर पहुंचती है। परिणामस्वरूप निचले भागों के वृक्षों, झाड़ियों और जड़ी बूटियों की परत बहुत अच्छी तरह विकसित होती है। किसी ढके सघन छत्रीनुमा जंगल (closed canopy forest) में निचली सतह के आधार तक सूर्य का प्रकाश पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं हो पाता। अत: इस परत के वृक्ष, झाड़ियां और शाक आदि का विकास अल्प रूप से ही हो पाता है। प्रकाश के अतिरिक्त मृदा की आर्द्रता (soil moisture) एक और महत्वपूर्ण कारक है जो स्तरण को प्रभावित करती है। जड़ी बूटियों की परत विशेष कर मृदा की आर्द्रता पर ही निर्भर होती है। इनके अतिरिक्त किसी वन में स्थान-स्थान पर बदलने वाले कारक हैं जैसे ढाल ऊपरी भाग का घनत्व है जो जड़ी बूटियों की परतों की संरचना को प्रभावित करते हैं।

जंगल की सबसे नीचे की परत जहां हवा की पहुंच हो सकती है वह जंगल का तल है। यह वह स्थल है जहां जैव पदार्थों का अपघटन होता है और इस महत्वपूर्ण क्रिया के फलस्वरूप प्राप्त पोषकों को पोषक चक्र के लिए निर्मुक्त कर दिया जाता है। इस परत की स्थिति उपरोक्त सारे कारकों पर निर्भर करती है। एक जंगल जिस के सारे स्तर पूर्णतय: विकसित होते हैं अत्यधिक मात्रा में जंगली घास फूस और अन्य जैव पदार्थों का उत्पादन करते हैं और जंगल के तल को अत्याधिक सक्रिय स्तर बना देते हैं।

ऊर्ध्वाधर स्तरण (vertical stratification) की अवस्था का समुदाय के जंतु जीवन की विविधता पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है। पर्णसमूह की ऊंचाई विविधता और पक्षी जातियों की विविधता में बहुप्रबल सहसंबंध पाया जाता है। ऐसे स्थानों पर जहां ऊर्ध्वाधर स्तरण बहुत बढ़ा हुआ होता है वहां संसाधनों और आवासीय स्थान की उपलब्धता भी बड़ी हुई होती है: वह एक सीमा तक विशिष्टीकरण का पक्षधर होता है। वह उदाहरण जिसकी चर्चा अनुभाग 4.4.1 में की गई है — इस दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है। घास स्थल अपने दो स्तरों में पक्षियों की 6 या 7 जातियों को जो सब की सब धरातल पर ही घोंसला बनाती हैं, सुरक्षा प्रदान करता है जबकि अच्छी तरह स्तरित जंगल में 35 या उस से भी अधिक जातियां अपनी विशिष्टताओं के अनुसार विभिन्न स्तरों में रहती हैं। जैसा कि इस इकाई के प्रारंभ में चर्चा की जा चुकी है, हमने देखा कि स्तरण और संसाधनों का बंटवारा समुदाय के दो महत्वपूर्ण और परस्पर आश्रित पक्ष हैं।

जलीय पारिस्थितिक तंत्र जैसे झीलें और महासागर भी स्तरण प्रदर्शित करते हैं (चित्र-11)। उनका स्तरण प्रारूप प्रकाश, तापक्रम और ऑक्सीजन की उपलब्धता से निर्धारित होता है। एक पूर्णरूप से स्तरित झील में निम्नलिखित परतें होती हैं। सर्वप्रथम, मुक्त परिसंचारी पृष्ठीय जल की वह परत है जो "एपिलिम्नियॉन" (epilimnion) कहलाती है। चूंकि प्रकाश की प्रचुर मात्रा यहां उपलब्ध है इसलिए इस भाग में पादपों का बाहुल्य है। ये प्रकाश-संश्लेषण का प्रमुख क्षेत्र है। दूसरी परत "मेटानिम्नियॉन" (metalimnion) है जो "थरमोक्लाइन" (thermocline) द्वारा परिलक्षित है अर्थात् "तापक्रम में अतिप्रवण और द्रुतगामी गिरावट"। कुछ पादप जातियों को छोड़कर जिन्होंने स्वयं में कम प्रकाश के अनुसार अनुकूलन कर लिया है, यहां अपघटन क्रिया अत्यंत सक्रिय है। तीसरी परत "हाईपोलिम्नियॉन (hypolimnion) है जो गहरी, ठंडी और जल की सघन परत है तथा जिसमें आमतौर पर घुली हुए ऑक्सीजन कम मात्रा में होती है। इसके बाद की परत तल के पंक (bottom mud) की होती है।

स्थलीय और जलीय पारिस्थितिक तंत्रों के समुदायिक स्तरण में क्या उभयनिष्ट है? ये दोनों स्वपोषित (autotrophic) स्तरों से युक्त हैं जो ऐसे क्षेत्रों में एकत्र है जहां प्रकाश प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। आप को याद होगा कि स्वपोषित स्तर और ऊर्जा ग्रहण करके साधारण पदार्थों से कार्बोहाड्रेट के रूप में भोजन तैयार करता है। वनों में यह परत मुख्यत: वितानों (कैनापी) में, घास स्थलों में, जड़ी बूटियों में या धरातलीय परतों तक सीमित हैं, और झीलों एवं सागरों में, जल की ऊपरी परतों तक ही सीमित होती है। स्वपोषित परत के साथ ही परपोषित (heterotrophic) परत भी होती है। इस परत को संघटित करने वाला स्तर स्वपोषितों से अपना भोजन प्राप्त करता है। ऊर्जा का अंतरण और पदार्थों का परिचारण शाकभक्षण, परभक्षण और अपसंघटन के माध्यम से होता है।

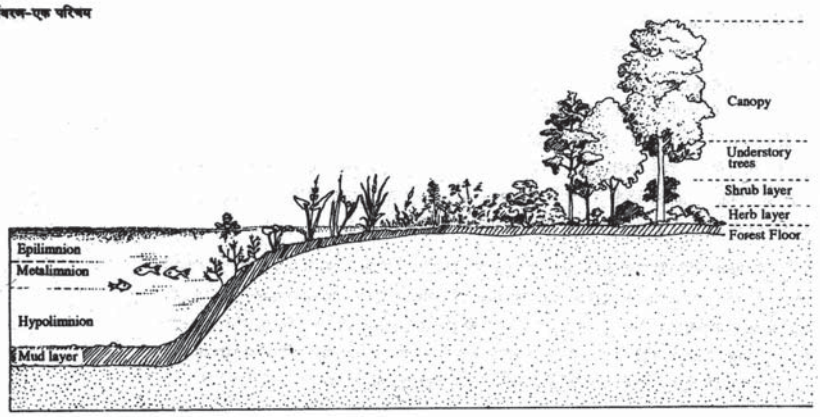

चित्र-11: जलीय पारिस्थितिक तंत्र के एक खण्ड की ऊर्ध्वाधर काट। "एपिलिम्नियॉन", जहां प्रकाश की प्रचुरता है ऐसे पादप जीवों को आश्रय देता है जो स्थिर है, मुक्तरूप से प्लवमान हैं या सम्पूर्ण रूप अथवा आंशिक रूप से जलमग्न हैं। "मिटालिम्नियॉन" में प्रमुख क्रिया अपघटन है। "हाइपोलिम्नियॉन" और पंक की परत तल की परत का निर्माण करते है। खुले जल की स्वपोषित परत पादप प्लवकों द्वारा संगठित हैं।

बोध प्रश्न 3

1) संसाधन के बंटवारे का क्या अर्थ है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) संसाधन के बंटवारे का पारिस्थितिक महत्व क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) निम्नलिखित को वर्धमान स्तरण क्रम में व्यवस्थित कीजिए: मरुस्थल(desert),उष्णकटिबंधीय वर्षा वन(tropical rain forest),टुन्ड्रा(tundra),घासस्थल(grassland)।

.....

.....

.....

.....

.....

4) स्थलीय पारिस्थितिक तंत्र जैसे वन और जलीय पारिस्थितिक तंत्र जैसे झील में क्या कोई ऐसा उभयनिष्ठ कारक है जो स्तरण के प्रारूप को प्रभावित करता हो? यदि हां तो इस कारक को पहचानिए।

.....

.....

.....

.....

5) स्तरण किस प्रकार जैव विविधता से संबन्धित है?

.....

.....

.....

.....

.....

4.5 जैव विविधता

शब्द जैव विविधता (biodiversity) बहुत जाना पहचाना लगता है। क्या यह सत्य नहीं है? किंतु ठहरिए ! शायद कुछ कमी है। अक्सर देखा गया है कि ये एक दूसरे शब्द संरक्षण से जुड़ा हुआ होता है। अर्थात् "जैव विविधता संरक्षण", अब ये परिचित सा लगता है। आप आश्चर्य करेंगे कि इन दोनों शब्दों की इतनी चर्चा का क्या कारण है? जैव विविधता संरक्षण वास्तव में वर्तमान समय का प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दा है। इस इकाई के अंतिम भाग में हम "जैव विविधता" के अर्थ की विवेचना करने के अतिरिक्त, जैव विविधता के तीन महत्वपूर्ण पक्षों का अध्ययन भी करेंगे – इसका महत्व, इसके लोप का कारण और इसका संरक्षण। किंतु सबसे पहले आइए देखें कि ये शब्द "जैव विविधता" किस से संबंधित है?

4.5.1 जैव विविधता क्या है?

इस शब्द का सामान्य अर्थ स्वत: स्पष्ट है। संक्षेप में तथा वैज्ञानिक शब्दों में जैव विविधता जीन्स (genes), जातियों (species), और पारिस्थितिक तंत्रों (ecosystems) की समग्रता है। जैव विविधता के तीन तत्व निम्नलिखित तीन अनुच्छेदों में सविस्तार प्रस्तुत किये गये हैं। सम्पूर्ण जीन्स (total genes) जिन्हें अनुवांशिक विविधता (genetic diversity) भी कहते हैं जाति के अंदर ही हुए जीन्स के परिवर्तनों को व्यक्त करती हैं जिनमें सम्मिलित हैं (i) एक ही जाति की विभिन्न समष्टियां जैसे भारत में परम्परागत चावलों की हज़ारों किस्में, और (ii) समष्टियों के अंदर ही अनुवांशिक परिवर्तन जैसे कि भारतीय गेंडों में बहुत अधिक है और चीते में बहुत कम।

सम्पूर्ण जातियां (total species) या जातीय विविधता (species diversity) किसी क्षेत्र में जातियों की किस्मों को व्यक्त करता है। उदाहरणार्थ किसी द्वीप 'अ' में 115 जातियां हैं जिसमें पक्षियों की 10 जातियां, मृगों की 100 जातियां, छिपकली की 5 जातियां आदि। संख्यात्मक अभिव्यक्ति के अतिरिक्त इन्हें गुणवत्ता के आधार पर भी प्रदर्शित किया जाता है जिनके कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं। द्वीप 'अ' में द्वीप 'ब' की अपेक्षा अधिक वर्गीकृत विविधता (greater taxonomic diversity) पाई जाती है समुद्र की अपेक्षा धरती पर अधिक जातियां निवास करती हैं। जलीय जातियों की तुलना में स्थलीय जातियां आपस में अधिक घनिष्ट संबंध रखती हैं।

पारिस्थितिक तंत्र विविधता (ecosystem diversity) से तात्पर्य है जातियों या समुदायों की जननिक विविधता (genetic diversity)। कुछ मापदण्डों के आधार पर राष्ट्रीय तथा उप-राष्ट्रीय स्तर पर महापारिस्थितिक तंत्रों (megaecosystems) की समुदायिक विविधता का अनुमान लगाया जाता है। भारत के वन्य जीव प्रतिष्ठानों के द्वारा किए गए अभी हाल ही के वर्गीकरण के अनुसार भारत को निम्नलिखित 10 जैव भौगोलिक क्षेत्रों (biogeographic regions) में विभक्त किया गया है:

1) ट्रांस हिमालय (Trans-Himalaya)
2) हिमालय (Himalaya)
3) भारतीय मरुस्थल (Indian Desert)
4) अर्धशुष्क (Semi-arid)
5) पश्चिमी घाट (Western Ghats)
6) दक्षिण प्रायद्वीप (Deccan Peninsula)
7) गंगा का मैदान (Gangetic Plain)
8) उत्तर-पूर्वी भारत (North-east India)
9) द्वीप (Islands)
10) समुद्र तट (Coasts)

बॉक्स 4.2: भारत के जैव भौगोलिक प्रदेशों की पारिस्थितिक तंत्र विविधता।

पार हिमालय क्षेत्र में वनस्पति विरल है किंतु इसमें विश्व की सबसे बहुमूल्य भेड़ों और बकरियों के समुदाय पाए जाते हैं। तेंदुआ (*पेन्थेरा अंकिया Panthera uncia*) और प्रवासी काली गर्दन सारस (*ग्रस निग्रीकॉलिस (Grus nigricollis*) भी वहां पाए जाते हैं। हिमालय क्षेत्र जो विश्व का सर्वाधिक ऊंचे पर्वतों का क्षेत्र है और बहुत से जैव भौगोलिक प्रदेशों की सीमा पर स्थित है। ये क्षेत्र जातिय विविधता के दृष्टिकोण से अत्यंत सम्पन्न है। उत्तर-पश्चिम में मरुस्थल क्षेत्र है जिसमें घास स्थल विस्तृत हैं। भारत की सुप्रसिद्ध किंतु लुप्त होती हुई सोहन चिड़िया (*आरडियोटस निगरीसेप्स Ardeotis nigriceps*) इसी क्षेत्र में पाई जाती हैं। मरुस्थल से लगा हुआ अर्धशुष्क क्षेत्र है। ये मरुस्थल और पश्चिमी घाट के मध्य एक परिवर्ती क्षेत्र है। पश्चिमी घाट अपने सघन वनों के लिए विख्यात हैं। घाट के पार दक्कन का पठार है। ये क्षेत्र मुख्य रूप से अर्धशुष्क है। इसके उत्तर में गंगा के मैदान हैं जो हिमालय गिरिपाद (शिवलाक पर्वत) तक विस्तृत हैं। उत्तर-पूर्व क्षेत्र जैव विविधता की दृष्टि से देश का सबसे सम्पन्न केन्द्र है। आर्किड की बहुत-सी जातियां (orchids), बांस (bamboos), पर्णांग (ferns) और कई दूसरे पौधे यहां पाए जाते हैं। यही क्षेत्र उगाए गए पौधों जैसे केला, आम, निम्बू वंशी और जूट को घरेलू बनाने का प्रमुख केंद्र समझा जाता है। हमारे देश में द्वीपों के दो मुख्य ग्रुप हैं–लक्षद्वीप समूह अरब सागर में स्थित है और अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी में। अण्डमान और निकोबार में हरे-भरे सदाबहार वन पाए जाते हैं जो अनगिनत स्थानीय पौधों और प्राणियों की जातियों को आश्रय देते हैं। तटवर्ती भाग भारत के अन्य जैव भौगोलिक क्षेत्र हैं। भारत की तटरेखा 5,500 कि.मी. से अधिक है जिसके ज्वारनदमुखी भूभाग में पाई जाने वाली विशिष्ट मैनग्रोव वनस्पति इस क्षेत्र की विशेषता है।

4.5.2 जैव विविधता का महत्व

ये कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि जीवन को बनाए रखने के लिये जैव विविधता उतनी ही आवश्यक है जितनी ऑक्सीजन और जल। जीवन के किसी भी क्षेत्र के बारे में सोचिए चाहे वह स्वास्थ्य हो, आहार हो, वस्त्र हो, सौंदर्य हो, उद्योग हो या फिर क्रिड़ा या मनोरंजन हो इनमें से प्रत्येक जैव विविधता के जंगली अथवा घरेलू घटक से जुड़ा हुआ है।

यहां तक कि आज के उच्च तकनीकी समाज में जहां अधिकांश वस्तुएं प्रयोगशालाओं में संश्लेषित की जा सकती हैं, आधुनिक औषधियों का अधिकतर प्रतिशत जो आजकल रोगियों को दी जा रही हैं जैविक उत्पत्ति हैं। असंख्य जीवन रक्षक औषधियां, पुष्पित पौधों से वियुक्त की जाती हैं। कुनैन सिनकोना वृक्ष (चित्र-12 a) से वियुक्त करके मलेरिया की चिकित्सा के लिए उपयोग की जाती है, फॉक्सग्लव पौधे (चित्र-12 b) से डिजिटेलिस प्राप्त करके पुराने हृदय रोग की चिकित्सा के उपयोग में लाया जाता है, मॉरफ़ीन और कोकीन क्रमश:



चित्र-12: (a) सिनकोना पौधे की एक शाखा। कुनैन इसकी छाल से अर्क निकाल कर तैयार की जाती है।
(b) फाक्सग्लव पौधे का एक भाग डिजीटेलिस का स्रोत।

पोस्ते और कोको की झाड़ियों से प्राप्त की जाती हैं और पीड़ा कम करने के लिए उपयोग की जाती हैं। औषधियों की और बहुत-सी किस्में जो पौधे से प्राप्त की जाती हैं–श्वेतरक्तता, कई प्रकार के अर्बुदीय ट्यूमरस (कैन्सरों) और अनेकों प्रकार के हृदय रोगों की चिकित्सा के लिए उपयोग में लाई जाती हैं। टेक्सॉल (taxol) अति आधुनिक खोज है। ये एक रसायन है जो इयू (yew) नामक वृक्ष (*टेकसस बक्काटा Taxus baccata* चित्र-13 देखिए) की छाल से प्राप्त किया जाता है। टेकसॉल अण्डाशी कैंसर की चिकित्सा में बहुत प्रभावी पाई गई है क्योंकि यह विशेष रूप से कैन्सरीय ऊतकों को लक्ष्य बनाकर नष्ट करती है और सामान्य ऊतक को कोई हानि भी नहीं पहुंचाती।

पौधों के अतिरिक्त सूक्ष्म जीवन भी औषधियों के उत्पादन में काफी उपयोग में लाए गए हैं। तीन हज़ार से अधिक प्रतिजैविकी (antibiotics) सूक्ष्मजीवों से प्राप्त की गई हैं। हम सब महत्वपूर्ण प्रति जैविकायों - पैनीसलीलीन (Penicillin) और टेट्रासाइक्लीन (Tetracycline) से हम अच्छी तरह परिचित हैं। सूक्ष्म जीवों का ही एक उत्पाद साइक्लोस्पोरिन (Cyclosporin) मृदा कवक से निकाला गया है जिसने हृदय और गुरदा प्रतिरोपण शल्य चिकित्सा में असंक्राम्य प्रतिक्रिया (immune reaction) की रोकथाम के गुणों द्वारा क्रांति पैदा कर दी है। एस्परीन (aspirin) और बहुत-सी अन्य दवाएं जो आज संश्लेषित की जाती हैं उनका पता सबसे पहले जंगल में पाई जाने वाली जातियों से ही लगा था।

आज पाई जाने वाली जंगली पौधों और जंतुओं की जातियों में से अधिकांश भविष्य के संभावित भोज्य संसाधन हो सकते हैं। अधिकतर पादप जातियों को अभी तक अन्वेषित नहीं किया गया है और उनकी उपयोगिता काम में लाना शेष है। जंगलों या दूर दराज़ में रहने वाले असंख्य मानव जनजातियां अपनी प्रोटीन की आपूर्ति के लिए वन्य जीवों का ही सहारा लेती हैं। यह अनुमान लगाया जाता है कि 30,000 पौधों की जातियों में खाए जाने योग्य भाग होते हैं किंतु आज विश्व का 90% आहार केवल पौधों की 20 जातियों से ही प्राप्त होता है। अभी हाल ही में एक उष्णकटिबंधीय जाति–सपक्ष सेम (winged beans) की खोज हुई है जो आहार का संभावित स्रोत है। इस पौधे का प्रत्येक भाग खाद्य है। इसकी पत्तियों का स्वाद पालक जैसा है, इसकी तरुण फली हरी मटर के सदृश है, नए बीज मटर के दाने जैसे होते हैं, परिपक्व बीज सोयाबीन के समान और इसकी भूमिगत जड़ें आलू जैसी और प्रोटीन से परिपूर्ण होती हैं। एक और रचनात्मक लक्षण है कि ये तेज़ उगने वाली ग्रंथिका-वहन पौधा है जो नाइट्रोजन का यौगिकीकरण कर, मृदा को समृद्ध करता है। जंगल के ऐसे ही अनेकों पौधे, करोड़ों वर्धमान जनों के भोजन का उज्ज्वल भविष्य प्रदर्शित करते हैं।



चित्र-13: टेकसस बक्काटा की एक शाखा जो टेक्सॉल प्राप्त का साधन है।

जैव विविधता का महत्व विशेष रूप से कृषि के क्षेत्र में स्पष्ट होता है। शताब्दियों से मानवों ने उत्पादन को स्थायित्व प्रदान करने और उसे बढ़ाने के लिए विविध प्रकार की फसलें और पशुधन कृत्रिम रूप से पैदा करने के प्रयास किए हैं। इन परम्परागत प्रक्रियाओं के कारण विभिन्न प्रकार की अनुवांशिक रूप से विकृत पौधों की फसलें पैदा की गई हैं जो अब परित्यक्त की जा रही हैं। और उनके स्थान पर नई उच्च उत्पादी फसलें पैदा की जा रही हैं। दुर्भाग्यवश यह नई उच्च उत्पादी फसलें अनुवांशिक रूप से सजातीय है और उनका अनुवांशिक आधार सीमित है। कीटनाशकों और



चित्र-14: (a-b) रेशों के महत्वपूर्ण साधन : a) कपास बीजों के आवरण से प्राप्त होता है। (b-d) क्रमशः अलसी, भांग, जूट इनके तनों से रेशे प्राप्त किए जाते हैं।

विभिन्न रोगों के विरुद्ध अत्यंत असुरक्षित हैं। उदाहरणार्थ जो विकृत चावल मुख्य रूप से एशिया में पैदा होता है वाइरस के कारण तबाह हो गया किंतु एक भारतीय जंगली विकृत किस्म ऐसी भी है जिसमें प्रतिरोध की जीन है। गहन प्रजनन के द्वारा एक प्रतिरोधक संकर उत्पन्न कर लिया गया जो अब बड़े पैमाने पर पैदा किया जाता है। ये उदाहरण उच्च कृषीय पैदावार के लिए अनुवांशिक विविधता या जीनपूल्स के महत्व को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है।

उद्योग भी विभिन्न प्रकार के पादप और प्राणी उत्पादों का उपयोग करके जातियों की मूल्यवान विविधता से लाभान्वित हो रहे हैं। सम्पूर्ण विश्व में लगभग 2000 पादप जातियां अपनी आर्थिक महत्व के लिए जानी पहचानी जाती हैं। भवन, उपस्कार, और काग़ज निर्माण उद्योग, सौ से अधिक वृक्षों की जातियों का उपयोग करते हैं। कपास, भांग, अलसी, जूट और एगेव वस्त्र निर्माण. रस्सी आदि बनाने के लिए रेशों के स्रोत हैं (चित्र-14)। अनेकों प्रकार की पादप जातियों से प्राप्त प्राकृतिक वस्तुओं का उपयोग रबर, रंगों, चर्म शोधन कारकों, सुगंध, रालों, गोंदों, तेलों, कीट नाश्कों और अन्य उत्पादों के तैयार करने में किया जाता है। इस प्रकार कोई ऐसा जीवन का क्षेत्र नहीं है जिसे जैव विविधता ने अछूता छोड़ा हो। यहां तक कि विभिन्न प्रकार की संस्कृतियां भी इस जैव विविधता से जुड़ी हुई हैं।

पर्यावरण मानव संस्कृति को बनाने और विकसित करने में एक महत्वपूर्ण कारक रहा है। हम जानते हैं कि मानव भी अपने पर्यावरण को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार सर्जित विविध पर्यावरणीय परिस्थितियां विविध संस्कृतियों के विकास में अर्थपूर्ण रूप से प्रभावशाली रहे हैं। यदि हम संस्कृति और जैव विविधता में संयोजनों के विषय पर एक बार फिर ध्यान दें तो पाएंगे कि संस्कृतियां विविध रूपों में भले ही एक-दूसरे से भिन्न हों किंतु वे सब ही जैव विविधता के चारों ओर ही घूमती हैं। मनुष्य को मानव अस्तित्व और संपोषण के लिए जैव विविधता के अत्यधिक महत्वपूर्ण होने का ज्ञान उस समय से था जब उसने पृथ्वी पर कदम रखे और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कृषी और पशुपालन प्रारंभ किया। इस प्रकार जैविक संसाधनों के उपयोग, साझेदारी और संरक्षण के साधन मानव संस्कृति की "आधारभूत मान्यता" बन गए। विभिन्न संस्कृतियों में जैव विविधता का ये महत्व विभिन्न रूपों में प्रतिबिम्बित होता है जैसे धार्मिक विश्वासों, भूमि-प्रबंध पद्धतियों में फसलों के चुनाव, और आहार में, कला, संगीत, सामाजिक ढ़ांचे और भाषाओं के रूप में। वास्तव में जीवन की विविधता ही वह पृष्ठभूमि जिसमें बहुत-सी संस्कृतियां पनपी अथवा नष्ट हो गईं।

4.5.3 जैव विविधता और पारिस्थितिक संतुलन

किसी पारिस्थितिक तंत्र में उच्चस्तरी विविधता स्थायित्व प्रदान करती है उदाहरणार्थ अत्यंत जटिल पारिस्थितिक तंत्र जैसे उष्णकटिबंधीय वर्षा वन में यदि न छेड़े जाएं तो वे लम्बें समय तक अपरिवर्तित बने रह सकते हैं। दूसरी ओर साधारण पारिस्थितिक तंत्र जैसे टुण्ड्रा अत्यंत भंगुर है इनमें आई गड़बड़ियों के कारण जीव संख्या परिमाण में अचानक और असीम परिवर्तन देखा जा सकता है। अन्य साधारण पारिस्थितिक तंत्र जैसे गेंहू का खेत परिवर्तन के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है, और यदि इसके जैविक और अजैविक कारक बहुत अधिक बदल जाएं तो ये पारिस्थितिक तंत्र अस्त-व्यस्त होकर समाप्त हो सकते हैं। ऊपर दिए गए उदाहरण में परिस्थिति, चित्र-15 में दर्शायी गई परिस्थिति से तुलना योग्य है। परिस्थितिक तंत्र संतुलन, एक अस्थिर तत्व है। पारिस्थितिक तंत्र पर किसी छोटी-मोटी भी गड़बड़ी का कोई परिणामी प्रभाव नहीं दिखता क्योंकि विस्तृत विविधता में पाये जाने वाले जीव बदली हुई परिस्थिति के अनुसार पुनःसंघटित होकर अनुकूलित हो जाते हैं। ज़रा सोचिए कि यदि पारिस्थितिक तंत्र में इतनी विविधता न हो तो क्या होगा? मामूली सी गड़बड़ी भी संतुलन को बिगाड़ देगी और बड़ी गड़बड़ियां तो पारिस्थितिक तंत्र को विध्वंस भी कर सकती हैं।

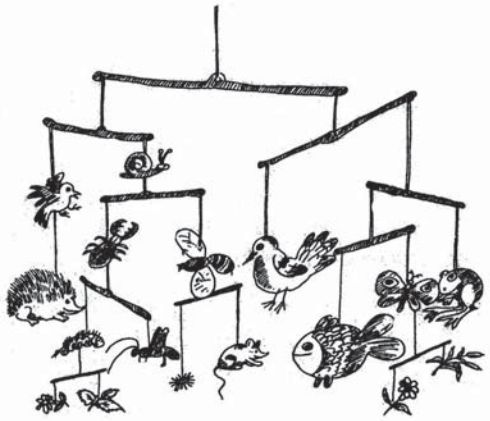

चित्र-15: किसी पारिस्थितिक तंत्र के जीवों की अनेकों किस्में एक दूसरे से संयोजित होते हैं। ये संवेदनशील संबंधों द्वारा संतुलित हैं और कई कारकों द्वारा नियंत्रित होती हैं।

आइए अब इस स्थिति को पारिस्थितिक तंत्र क्रियाओं की दृष्टि से विश्लेषित करें। किसी पारिस्थितिक तंत्र में विभिन्न प्रकार की जातियां असंख्य पारिस्थितिकीय प्रक्रियाओं में भाग लेती हैं। प्रत्येक जाति एक या एक से अधिक क्रियाओं, जैसे उत्पादन, जल और पोषक चक्र नियंत्रण, अपघटन और मृदा निर्माण तथा संरक्षण के अतिरिक्त जलवायु और अन्य परिवेशी पारिस्थितियों के साथ समंजन को सम्पन्न करती है। ये क्रियाएं सामूहिक रूप से ऐसी पारिस्थितियां बनाती हैं जो जीवन के आस्तित्व के लिए स्वास्थ्यवर्धक हैं। एक अधिक विविधता वाले पारिस्थितिक तंत्र में जातियों की बहुत अधिक संख्या होने के कारण, अन्योन्यक्रियाएं भी अधिक होती हैं जिनके कारण बड़ा आहार जाल बनता है (चित्र-16 a)। इस परिस्थिति में जाति के विलोपन से पारिस्थितिक तंत्र के संतुलन पर मामूली सा प्रभाव पड़ता है। इसके विपरीत यदि किसी पारिस्थितिक तंत्र के आहार जाल में जातियों की संख्या कम हो तो (चित्र-16 b) एक भी जाति के लोप होने से पारिस्थितिक तंत्र की अखण्डता पर गहरा प्रतिघात होता है।

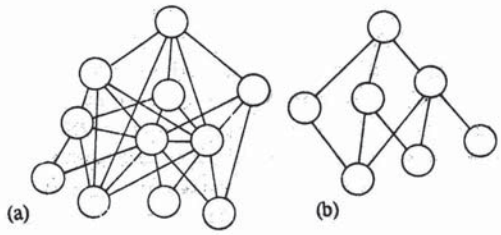

चित्र-16: उपरोक्त दोनों निदर्शन पारिस्थितिक तंत्र की उच्च (a) तथा निम्न (b) जातिय विविधता का तुलनात्मक चित्र प्रस्तुत करता है। वृत्त जीवों को प्रदर्शित करते हैं। (a) में दर्शाए गए जटिल संयोजनों पर ध्यान दीजिए और (b) में, जिसमें की कम संयोजन हैं, को देखिए। संयोजनों की वर्धमान संख्याएं पारिस्थितिक तंत्र में स्थायित्व प्रदान करती हैं।

4.5.4 जैव विविधता लोप के कारण

विभिन्न प्रकार के कारक जैव विविधता लोप के लिये जिम्मेवार हैं। इस उपभाग में हम उन प्रमुख कारकों की चर्चा करेंगे जो प्राय: विभिन्न प्रकार की जातियों के लोप का कारण बनते हैं।

i) आवास की क्षति और खण्डन

आधुनिक समय में अबाधित आवास दुर्लभ वस्तु बन चुकी है। गत कुछ दशकों में जैसे-जैसे मानव जनसंख्या और संसाधन उपभोग में वृद्धि हुई है आवासीय क्षेत्र अचानक बहुत सीमित हो गए हैं। बढ़ती हुई मानवीय आवश्यकताओं, जैसे विद्युत, आवास और आहार ने प्राकृतिक वास पर कई प्रकार से अतिक्रमण किया है। असंख्य बांधों के निर्माण से नदियों और सरिताओं के कई भागों के आवास नष्ट हो गए हैं। समुद्री पारिस्थितिक तंत्र में अत्यधिक तटीय विकास के कारण प्रवाल भित्तियों (coral reefs) और अन्य निकटवर्ती समुदायों पर भी बुरा प्रभाव पड़ा है। वनों को भी विनाश भोगना पड़ा है क्योंकि इनका एक बड़ा क्षेत्र सीमावर्ती कृषि और लकड़ी के लिए साफ़ किया जा चुका है। ये सारी गतिविधियां आवास के लिए क्षेत्रों के विखंडन का कारण बनती हैं (चित्र-17) जिसके कारण इनमें बसने वाली अनेकों जातियां धीरे-धीरे आवास के अभाव में लुप्त हो जाती हैं और इस प्रकार जाति विविधता के सर्वनाश का एक क्रम प्रारंभ हो जाता है।

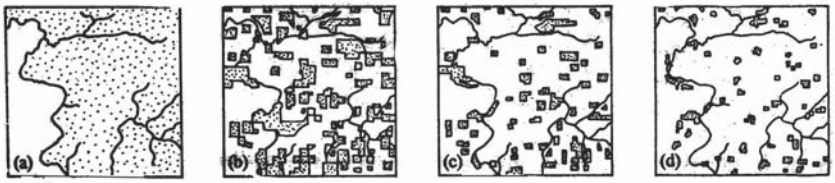

चित्र-17: चित्रों की शृंखला (a-b) आवास के क्रमिक विखंडन और कमी को प्रदर्शित करती है। (a) वर्ष विस्कॉनसन का शांत, वनस्पती आवास, (b) a के 50 वर्ष बाद की स्थिति दिखाता है, जिसमें टुकड़ों में आवासीय क्षेत्र का विनाश साफ देखा जा सकता है, (c) a के 70 वर्ष बाद की स्थिति जिसमें आवासीय क्षेत्र का और अधिक विनाश हुआ है, (d) a के 120 वर्ष बाद की परिस्थिति, आवासीय क्षेत्र के भारी विनाश पर ध्यान दीजिए। आवास की इस भयंकर कमी के साथ इस क्षेत्र में बहुत सी जातियों का विलोपन भी हुआ है (जे. कर्टिस के अनुसार-1955)।

ii) जातियों की प्रविष्टि



चित्र 18: डोडो, मारीशस का स्थानीय पक्षी। ये उड़ान रहित पक्षी धरातल पर ही अण्डे देता था। इस द्वीप पर सूअर की प्रविष्टि इस जाति के लिए हानिकर सिद्ध हुई और ये वर्ष 1681 में विलुप्त हो गयी।

जातियों की प्रविष्टि चाहे आकस्मिक हो या जानबूझ कर की गई हो या फिर दोनों ही प्रकार से हो, यह सब, किसी क्षेत्र की क्षेत्रीय जैव विविधता के लोप का प्रमुख कारक है। प्रविष्टित जाति (introduced species) श्रेष्ट प्रतिद्वंद्वी होने के कारण मौलिक जातियों (original species) को नुकसान पहुंचाते हुए, स्वयं तीव्र गति से स्थापित हो जाती हैं। इस अचानक बदलते हुए दबाव के कारण मूल जातियां उस क्षेत्र से धीरे-धीरे समाप्त होने लगती हैं। इसके बहुत से उदाहरण हैं। हम डोडो नामक पक्षी जाति (चित्र-18) का उदाहरण लेते हैं। डोडो हिंद महासागर के एक छोटे से द्वीप, मारीशस (Mauritius) में रहता था। डोडो में दो विशिष्टताएं थीं जो अन्ततः उसके सर्वनाश का कारण बनीं, उसे मनुष्यों का कोई भय नहीं था और इसलिए वह आसानी से मारा जाता था, दूसरा वह उड़ भी नहीं सकता था अतः धरातल पर अण्डे देता था। हिंद महासागर के इस द्वीप पर सुअरों की प्रविष्टि के बाद, जिन्होंने उनके अण्डों का भक्षण करना शुरू कर दिया, वर्ष 1681 तक डोडो जाति के पक्षी विलुप्त हो गए। डोडो के विलोपन की कहानी को इस द्वीप पर एक नई जाति सुअर प्रविष्टि और आवासीय परिस्थिति के परिवर्तन के आधार पर, विश्लेषित किया जा सकता है। किसी पारिस्थितिक तंत्र, जैसे द्वीप में, आवास के प्रकार और प्रत्येक आवास का क्षेत्रफल दोनों ही भौतिक रूप से सीमित होते हैं। इस प्रकार के दबाव के परिणामस्वरूप स्थानीय प्राणी, इस उदाहरण में डोडो की परभक्षियों और प्रतिद्वंद्वियों के प्रति अनुकूलन की क्षमता अक्सर कम ही रहती है। उदाहरण स्वरूप हो सकता है कि आवास इतना बड़ा या विविधतापूर्ण न रहा हो कि विपत्ति की शिकार जाति (डोडों) नए परभक्षियों (सुअर) से बच सकी हो और संसाधनों की विविधता भी इतनी न रही हो कि एक पहले से मौजूद जाति नई प्रतिद्वंद्वी जाति के साथ मिलकर रह सके। अतः श्रेष्ठ जाति जावित रही और स्थानीय जाति लुप्त हो गई।

iii) पादप और पशु जातियों का अतिशोषण

वन्य सम्पदा, मत्स्य सम्पदा और वन्यप्राणी संसाधनों का अत्यधिक शोषण किन्ही-किन्ही विलोपन की सीमा तक हुआ है। पैसिंजर पिजियन इसका सबसे अच्छा उदाहरण है (चित्र-19)। किसी समय ये उत्तरी अमेरिका में पाए जाने वाले सर्वाधिक पक्षी थे। वह इतनी संख्या में थे कि उनके झुण्ड प्रवसन के समय आकाश को धुंधला कर देते थे। उनका एक ही झुण्ड लगभग 400 कि.मी. लम्बा होता था और उसमें दो अरब (2,000,000,000) पक्षी से कम नहीं होते थे। लगभग पांच कि.मी. चौड़े और 67 कि.मी. लम्बे वन में प्रत्येक वृक्ष पर इस पक्षी जाति के कम से कम 90 घोंसले हुआ करते। जिस वन में पैसिंजर पिजियन का बसेरा होता था वहां का जंगल उनके असीम टनभार बीट द्वारा संसेचित होता था। ये पक्षी विशेष रूप से उनके चूजे स्वादिष्ट खाद्य थे। बहुत अधिक संख्या में होने के कारण वह सस्ते भी थे। परिवहन के दौरान क्षतिपूर्ति के लिए उन्हें जरूरत से अधिक संख्या में मारा जाता था। चूजों और वयस्क पक्षियों दोनों को अंधाधुंध मारा जाता था। इस सबके अलावा उनके प्रजनन की दर उनके मारे जाने की ऊंची दर की अपेक्षा बहुत कम थी क्योंकि पैसिंजर पिजियन एक समय में केवल एक अण्डा ही देता था। इस तरह उनके मारे जाने की दर और प्रजनन दर में लगातार अंतर बढ़ता गया और यह जाति अन्ततः लुप्त हो गई। अंतिम कपोत "मारथा" (Martha) सिनसिनाटी चिड़ियाघर (Cincinnati Zoo) में 1914 में मर गया और उसका मृत शरीर वाशिंगटन के संयुक्त राज्य राष्ट्रीय संग्रहालय में रखा गया है। पैसिंजर पिजियन की कहानी के समान ही प्रत्येक विलुप्त जाति की अपनी विनाश की कथा है। मनुष्य की आहार की आवश्यकता, बहुमूल्य वस्तुओं (जैसे हाथी दांत) की मांग और पालतू पशु; जिज्ञासा, और संग्राही वस्तुओं की बढ़ती मांग भी कुछ जातियों के अतिक्रमण का कारण बनीं हैं।

iv) प्रदूषण

अनेकों प्रकार की प्रदूषक (pollutant) पारिस्थितिक तंत्र को क्षति पहुंचाते हैं जिसके कारण संवेदनशील जातियां प्रभावित होती हैं। फलस्वरूप इन जातियों की संख्या कम होती चली जाती है। प्रदूषक किसी एक जाति विशेष को ही प्रभावित नहीं करते बल्कि आहार जाल की विभिन्न कड़ीयों में धीरे-धीरे जमा होते रहते हैं। ब्रिटेन के रूस्तकों (barn owl) को इसी प्रकार हानि पहुंची है। न केवल बड़े प्राणी बल्कि मृदा जीवाणु भी मिट्टी में जमा हुए प्रदूषकों के कारण क्षतिग्रस्त होते हैं। उद्योगिक अपशिष्टों से भारी धातु (heavy matals) और सिंचित कृषि के कारण लवणीकरण (salinisation) उनके जीवन और विकास के लिए प्रतिकूल परिस्थितियां पैदा करते हैं। अम्ल वर्षा (acid rain) ने यूरोप में वनों को नष्ट किया है। समुद्री प्रदूषण से मत्स्य संसाधनों पर पड़ने वाले विनाशकारी प्रभावों के बारे में भी अक्सर सुनने को मिलता है।

v) सर्वभौम जलवायु में परिवर्तन

बहुत से उपलब्ध उन्वेषणों से प्राप्त आंकड़े प्रत्यायनीय रूप से बताते हैं कि आने वाले कुछ दशकों में सम्पूर्ण विश्व की जलवायु में परिवर्तन आएगा। वायुमण्डलीय 'ग्रीनहाउस गैसों' में मानवीय करणों से अगली शताब्दी में, 1°C से 3°C तक सर्वभौमिक तापक्रम में वृद्धि होने की संभावना है। ऐसा समझा जाता है कि प्रत्येक 1°C तापक्रम की वृद्धि स्थलीय जातियों की सह्य सीमा लगभग 125 कि.मी. ध्रुवों की ओर विस्थापित हो जाएगी या पर्वतों पर 150 मीटर ऊर्ध्वाधर विस्थापन होगा। इस प्रकार का अचानक परिवर्तन बहुत सी जातियों की सह्य सीमा के बाहर होगा और ये संभव है कि हम उन्हें सदा के लिए खो दें। इसके अतिरिक्त प्रक्षेप से ये भी निर्दिष्ट होता है कि समुद्र तल भी ऊंचा होगा फलस्वरूप बहुत से स्थल जलमग्न हो जाएंगे और उन पर पाए जाने वाले पादप एवं प्राणी समूहों को खतरा पैदा हो जाएगा।

4.5.5 जैव विविधता संरक्षण

पिछले उपभाग में हमने जैव विविधता लोप के प्रमुख कारणों का अध्ययन किया। जैव विविधता संरक्षण में न केवल उपरोक्त पक्षों को सुधारना होगा बल्कि समाज के सम्पूर्ण वर्गों को शिक्षित और सम्मिलित करने के लिए एक प्रभावशाली योजना बनानी होगी। इस योजना में तीन आधारभूत तत्व सम्मिलित होने चाहिए और वह है भावी पीढ़ियों के लिए जैवविविधता का बचाव, जैवविविधता की भावी

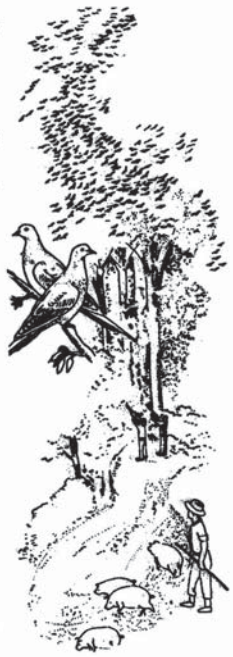

चित्र-19: पैसिंजर पिजियन–तापरवाही से हुए विनाश का शिकार, सील आई सिंधु बहुत देर से ! BTS-05/77

संभावनाओं की खोज के लिए गहन अध्ययन और इनको संभाल कर उचित रूप से उपयोग करना (चित्र-20)।

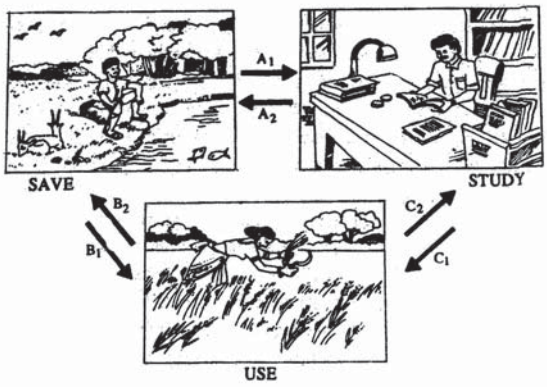

चित्र 20: जैव विविधता संरक्षण के तीन तत्व, बचाव, अध्ययन, और इनका संभाल कर उचित रूप से उपयोग। इन तीनों तत्वों के अन्योन्य संबंधों पर जो विपरीत दिशाओं में बनाए गए तीरों द्वारा निर्दिष्ट है ध्यान दीजिए।

A 1: जैव विविधता लोप की गति को धीमा करने के लिए आवश्यक है कि लोगों को किसी पारिस्थितिक तंत्र के प्रति उनकी भूमिका और मानवीय हित के लिए इसका महत्व समझाया जाए।

A 2: जैव विविधता के विषय में जानकारी बढ़ाने के लिए पारिस्थितिक तंत्र के प्रतिनिधि और जीवनक्षम जातियों और जीव संख्याओं के प्रतिदर्शों को सुरक्षित रखना चाहिए।

B 1: यदि मानव के लिए जैव विविधता का प्रत्यक्ष अथवा संभावित मूल्यों का पता लगे तो यह जैव विविधता लोप को धीमा करने के लिए अधिक प्रेरणादायक होगा।

B 2: मानवों के लिए जैव विविधता के वर्तमान और संभावित लाभ को उस समय तक नहीं समझा जा सकता जब तक जैविक संसाधन आधार को बचाया और संभाला नहीं जाता।

C 1: निर्वाह के लिए जैव विविधता के उपयोग हेतु उसके परम्परागत और आधुनिक ज्ञान के नव परिवर्ती संश्लेषण की आवश्यकता है।

C 2: जैव विविधता अनुसंधान में प्रयोक्ताओं की आवश्यकताओं को प्राथमिकता देनी चाहिए।

ये सब किसी पारिस्थितिक तंत्र में जैव विविधता द्वारा निभाई गई भूमिका और मानव जीवन हेतु इसके महत्व की स्पष्ट समझ की अपेक्षा करता है। जैव विविधता संरक्षण की सफलता के लिए जीवन के हर क्षेत्र के लोगों का सुग्राहीकरण और भागीदारी अत्यावश्यक है।

उपरोक्त तीनों तत्वों के वर्णन में, अपने योगदान के संदर्भ में आप स्वयं को कहां रखेंगे? पहली श्रेणी में? या दूसरी श्रेणी में ? सारी श्रेणियों में क्यों नहीं !!!

बोध प्रश्न 4

1) जैव विविधता का क्या अर्थ है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) पाँच ऐसे उपायों की सूची बनाइये जिनके अनुसार पौधे या प्राणी जाति मानव जाति के कल्याण में सहयोग दे सकें।

.....

.....

.....

.....

.....

3) जीनपूल(gene pool),किसे कहते हैं? अधिक से अधिक जीनपूलों का संरक्षण करना क्यों महत्वपूर्ण है?

.....

.....

.....

.....

.....

4) जैव विविधता किसी पारिस्थितिक तंत्र के संतुलन से किस प्रकार संबन्धित है?

.....

.....

.....

.....

5) वर्तमान समय में जैव विविधता के लिये संकट बनते जा रह पाँच कारकों की सूची बनाइए और उनकी व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

6) उपरोक्त कारकों में से कौन से कारक वर्तमान समय में जैव विविधता लोप के मौलिक कारण हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7) स्पष्ट कीजिए कि कोई प्रविष्टि जाति स्थानीय जाति के पारिस्थितिक विघटन का कारण किस प्रकार बन सकती है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

8) स्पष्ट कीजिए कि पर्यटन उद्योग का प्रत्येक स्तर किस प्रकार जैव विविधता संरक्षण में सहयोग दे सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

4.6 सारांश

इस इकाई में आपने अध्ययन किया कि:

- किसी क्षेत्र के सारे जैविक और अजैविक कारक एक पारिस्थितिक तंत्र की रचना करते हैं। प्रत्येक जीव का पारिस्थितिक तंत्र में एक अपना आवास होता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक जीव का एक विशिष्ट निकेत होता है अर्थात् पारिस्थितिक तंत्र में वे एक विशिष्ट क्रिया करते हैं।
- एक पारिस्थितिक तंत्र में एक जाति के जीवों का समूह सजीव संख्या संघटित करता है। जीवों की विभिन्न जीव संख्याएं मिलकर एक समुदाय बनाती हैं। समुदाय तथा उनके आस-पास के अजैविक कारक मिलकर पारिस्थितिक तंत्र संघटित करते हैं।
- समुदाय की तीन आधारभूत विशिष्टताएं होती हैं, उत्पादकता, विविधता और समुत्थान-शक्ति। उत्पादन को जीवभार के रूप में व्यक्त किया जाता है। उपस्थित जातियों की संख्या और प्रचुरता, जातियों की विविधता को निर्धारित करते हैं। समुत्थान-शक्ति किसी भी प्रकार की गड़बड़ी से अपने को उभारने की पारिस्थितिक तंत्र की योग्यता है।
- प्रधान पादप जातियां, विभिन्न प्रकार के जीवों के अस्तित्व की परिस्थितियों को परिभाषित करती हैं।
- सप्राण जीवों के समुदायों के मध्य अन्योन्य क्रियाओं को तीन वर्गों में विभक्त किया जाता है: प्रतिस्पर्द्धा, परभक्षण और सहजीवन। सहजीवन को तीन उपवर्गों में विभाजित किया जाता है अर्थात् सहभोजिता, सहोपकारिता और परजीविता। प्रतिस्पर्द्धा विभिन्न प्रकार के उन जीवों के

मध्य होती है जो समान प्रकार के संसाधनों की प्राप्ति को लिए संघर्ष करते हैं। परभक्षण क्रिया में एक जाति (शिकार) एक संसाधन बन जाती है, इसे मार दिए जाने के बाद दूसरी जाति (परभक्षी) उसका उपयोग भोजन के रूप में करती है। सहजीवी संबंधों के दौरान दो या अधिक जातियों के जीव एक लम्बे समय तक मिल जुल कर एक साथ रहते हैं और परस्पर लाभ प्राप्त करते हैं। सहभोजिता एक-पक्षीय संबंध है। एक जाति लाभ प्राप्त करती है जब कि दूसरी जाति को न तो लाभ प्राप्त होता है और न ही हानि पहुंचती है। सहोपकारिता में दोनों जातियां लाभान्वित होती है परजीविता संबंधों में एक जाति (परजीवी) को लाभ होता है, किंतु दूसरी (परपोषी) को हानि पहुंचती है।

संसाधन बंटवारा और स्तरण वह प्रक्रिया है जिससे सारे जीव प्रतिस्पर्द्धा और पारस्परिक संघर्ष से बचते हुए आवश्यक संसाधन प्राप्त करते हैं।

जैव विविधता जीन्स, जातियों और पारिस्थितिक तंत्रों की सम्पूर्णता से सम्बद्ध है। जैव विविधता कई तरह से मानवों की भलाई में सहयोग देती है। लगभग जीवन के सारे ही क्षेत्र चाहे वह आहार हो, परिधान हों, औषधियां हों, उद्योग हो, अंगराग हो, क्रीड़ा या मनोरंजन हो सब ही जैव विविधता से सम्बद्ध हैं। इन सबसे महत्पूर्ण ये है कि जैव विविधता पारिस्थितिक तंत्र में संतुलन बनाए रखती है। बहुत से कारक जैव विविधता लोप का कारण बने हैं। आवास का समाप्त होना, नवीन जातियों की प्रविष्टि, अतिशोषण, हर प्रकार का प्रदूषण और सर्वभौम जलवायु में परिवर्तन. जैव विविधता लोप के कुछ महत्वपूर्ण कारक हैं। एक दीर्घ कालिक प्रभावी और नियोजित जैव विविधता संरक्षण अभियान ही जैवविविधता को और अधिक क्षति से रोक सकता है इस अभियान में से तीन तत्व सम्मिलित करने चाहिए: भावी पीढ़ियों के लिए जैव विविधता का बचाव. जैव विविधताओं की संभावनाओं की खोज की दृष्टि से इसका गहन अध्ययन, तथा इसका संभाल कर उचित उपयोग। जैव विविधता अभियान के सफलतापूर्वक चलाने हेतु हर क्षेत्र के लोगों का इसके प्रति सुग्राहीकरण मूलमंत्र है।

4.7 शब्दावली

आवास (Habitat)	:	एक विशिष्ट स्थान जहां कोई पौधा या प्राणी प्राकृतिक या सामान्य रूप से रहता और फलता-फूलता है।
अंत:जातीय (Intraspecific)	:	एक ही जाति में।
अंतरजातीय (Interspecific)	:	विभिन्न जातियों में।
जन्तु समूह, वनस्पति समूह (Fauna, Flora)	:	किसी क्षेत्र में पाए जाने वाले जन्तुओं या वनस्पतियों के लिए क्रमश: उपयोग में आने वाले सामूहिक शब्द।
जाति/स्पीशीज़ (Species)		जीव समूह जो परस्पर लैंगिक संबंधों द्वारा आपस में प्रजनन कर सकता है। किंतु दूसरे जीवों के साथ लैंगिक संबंधों द्वारा जननक्षम बच्चे पैदा नहीं कर सकते।
जीनपूल (Genepool)		किसी निश्चित जीव समूह के समस्त व्यक्तियों के जीन्स।
जीवभार (Biomass)		किसी निश्चित क्षेत्र के जीवों का कुल भार।
जीवसंख्या (Population)		एक ही जाति के सदस्यों की संख्या का योग।
विविधता (Diversity)		एक समुदाय की विभिन्न स्पीशीज की संख्या का प्रदर्शन।

होमियोस्टेसिस (Homeostasis) : किसी विक्षोभ के बाद पुनः संतुलन की क्षमता।

निकेत (Niche) : किसी समुदाय में जातियों की समस्त प्रक्रियाओं और संबंधों सहित सारी कार्यात्मक भूमिकाएं।

प्रदूषण (Pollution) : हवा, धरातल और जल में अंवाछनीय भौतिक, रसायनिक तथा जैविक विशिष्टताओं में परिवर्तन, जिनके कारण जीवन प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता है।

परजीविता (Parasitism) : एक ऐसा संबंध जिसमें समुदाय की एक जाति लाभ प्राप्त करती और दूसरों को हानि पहुंचती है।

पारिस्थितिक तंत्र (Ecosystem) : पर्यावरण की एक इकाई जिसमें जैविक और अजैविक घटक ऊर्जा और पोषकों के आदान प्रदान द्वारा अन्योन्यक्रिया करते हैं।

समुदाय (Community) : ये जैविक समुदाय भी कहलाता है। पौधों और प्राणियों और सूक्ष्मजीवों की कुल संख्या जो किसी क्षेत्र में रहते और परस्पर क्रिया करते हैं।

समुत्थान-शक्ति (Resilience) : परिवर्तनों का सहन करने और अपनी असली स्थिति पर लौट आने की तंत्र की क्षमता।

सहभोजिता (Commensalism) : एक ऐसा संबंध जिसमें समुदाय की एक जाति लाभ प्राप्त करती है जबकि दूसरी जातियों को न लाभ मिलता है और न ही हानि होती है।

सहोपकारिता (Mutualism) : समुदाय की जातियों में ऐसा संबंध जिसमें दोनों साझेदार जातियों को लाभ होता है और हानि किसी को नहीं पहुंचती।

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) इकाई 2 के भाग 2.2 का संदर्भ लीजिए और इस इकाई का 4.1 भाग भी देखिए। जीवसंख्या, समुदाय, पारिस्थितिक तंत्र और जीवमण्डल।

2) संकेत: निर्वाह स्थान और उनका प्रतिवेश, प्रकृति से निकटता, पारिवारिक संघटन, समान्य जीवन शैली आदि।

3)

प्र	आ	ह	ट	स	मी	द	मा
वा	वा	स	जी	व	सं	ख्या	हो
सि	स	मु	त्था	न	श	क्ति	ल
सु	ध	दा	ष	उ	ध	र	ती
म	र	य	नि	त्पा	न	न्द	न्ध्र
य	प्र	ड	च	द	उ	ड़	सा
पा	रि	स्थि	ति	क	त	न्त्र	गे
ठ	वि	वि	ध	ता	जी	वा	र

i) आवास, ii) जीवसंख्या, iii) पारिस्थितिक तंत्र, iv) उत्पादकता,
v) निच, vi) समुदाय, vii) विविधता, viii) समुत्थान शक्ति

बोध प्रश्न 2

1) गलत। प्रतिस्पर्द्धा, उन जीवों के मध्य होती है जो समान प्रकार एवं स्रोतों से अपना भोजन प्राप्त करते हैं।

2) ये सब सहजीवी संबंधों के उदाहरण है। सहभोजिता में एक जाति लाभांवित होती है और दूसरी जाति को न हानि पहुंचती है और न लाभ (जैसे अधिपादप)। सहोपकारिता में दोनों साझेदार जातियों को लाभ प्राप्त होता है (जैसे *आकेशा* और चींटियां)। परजीविता में एक जाति को फ़ायदा पहुंचता है और दूसरी जाति को नुकसान होता है (जैसे अमरबेल)।

बोध प्रश्न 3

1) उपभाग 4.4.1 देखिए।

2) संकेत: पारिस्थितिक तंत्र के जीवों के बीच सीमित संसाधनों का बंटवारा। विस्तृत वर्णन के लिए उपभाग 4.4.1 का संदर्भ लीजिए।

3) टुण्ड्रा, घासस्थल, मरुस्थल और ऊष्णकटिबंधीय वर्षा वन।

4) हां, प्रकाश। स्थलीय समुद्री दोनों ही प्रकार के पारिस्थितिक तंत्रों में प्रकाश की उपलब्धि ही वह प्रमुख कारक है जो अनुकूल पौधों की किस्मों को निर्धारित करता है और इसी के अनुसार अंततोगत्वा प्राणी जीवन भी नियंत्रित होता है।

5) स्तरण और विविधता के मध्य एक प्रबल परस्पर संबंध भी पाया जाता है। वर्धमान ऊर्ध्वाधर स्तरण, संसाधन और निवास स्थान की उपलब्धता बढ़ा देता है जो उच्चतर विविधता जिसमें विशिष्टताओं की विभिन्न श्रेणियां हों, के लिए लाभप्रद है।

बोध प्रश्न 4

1) उपभाग 4.5.1 देखिए।

2) संकेत: औषध और स्वास्थय संबंधी उद्योगों में, आहार संसाधन के रूप में, कृषि और फसल सुधार में, औद्योगिक उपयोग के बहुत से प्रकार, सौंदर्य और आनंद के लिए। विस्तार के लिए उपभाग 4.5.2 का संदर्भ लीजिए।

3) उपभाग 4.5.2 का संदर्भ लीजिए।

4) उच्च विविधता और पारिस्थितिकीय संतुलन में प्रत्यक्ष सह-संबंध पाया जाता है। उच्च विविधता वाले पारिस्थितिक तंत्रों में निम्न विविधता वाले पारिस्थितिक तंत्रों की अपेक्षा अधिक स्थायित्व की प्रवृत्ति पाई जाति है। आप इस संबंध में उपभाग 4.5.3 का संदर्भ भी ले सकते हैं।

5) संकेत: आवास की क्षति और खण्डन, जातियों की प्रविष्टि, पौधों और जंतु जातियों का अत्यधिक शोषण, प्रदूषण और सवभौम जलवायु में परिवर्तन। उपभाग 4.5.4 भी देखिए।

6) निवास स्थानों की क्षति और खण्डन वर्तमान समय में जैव विविधता विलोपन का प्राथमिक कारण है।

7) उपभाग 4.5.4 (ii) देखिए।

8) आप अपना दृष्टिकोण लिखिए।

इस इकाई के लिये अभ्यास

अभ्यास 1

1) विभिन्न पर्यटन संचालनों में जैव विविधता मैत्री की विधियों का समावेश करते हुए एक नीति तैयार कीजिए। अपनी योजना में पर्यटन उद्योग के प्रत्येक स्तर के कार्मिकों तथा पर्यटकों को भी अवश्य सम्मिलित कीजिए।

अभ्यास 2

इस गतिविधि में आप अपनी पसंद के किसी क्षेत्र के पादप एवं प्राणी जातियों में से लुप्त* होती हुई अथवा संकटापन्न** जातियों की एक सूची तैयार कीजिए। इस कार्य के लिए आवश्यक आंकड़े उस प्रदेश के संबंधित विभागों*** से जिसमें आपका क्षेत्र स्थित हो, प्राप्त कर सकते हैं। इस सूची के तैयार करने के साथ ही यह जानकारी भी प्राप्त कीजिए कि संबंधित विभाग इन संकटापन्न पादप या जंतु जातियों के संरक्षण के लिए क्या कोई उपाय कर रहा है? यदि हां तो प्रत्येक जाति के लिए किए जा रहे उपायों का वर्णन भी कीजिए। आप इस दिशा में किस प्रकार सहयोग दे सकते हैं? इसका विशेष रूप से उल्लेख कीजिए।

---

* लुप्त जातियां—ऐसी जंगली जातियां जिनके इतने कम उत्तरजीवी सदस्य हैं कि यदि उनके बचाने की उचित कार्यवाही न की गई तो वे सब शीघ्र ही लुप्त हो जाएंगी या इनका अधिकांश प्राकृतिक परिसर समाप्त हो जाएगा।

** संकटापन्न जाति वह जाति जो अपने प्राकृतिक वास में अब भी प्रचुर संख्या में है किंतु निकट भविष्य में जिसके लुप्त हो जाने का भय है क्योंकि उसकी संख्या में निरंतर ह्रास हो रहा है।

*** पर्यावरण एवं वन्य मंत्रालय, वन विभाग, भारत का क्षेत्रीय वानस्पतिक एवं प्राणि सर्वेक्षण विभाग; मत्स्य विभाग; और विश्वविद्यालयों के वनस्पति एवं प्राणि विज्ञान विभाग।

अभ्यास 3

इस गतिविधि में ऐसे दस लोगों के निवेशों की आवश्यकता है जो विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के हों। उनके जीवन शैली और पर्यावरण संबंधी सांस्कृतिक मूल्यों के बारे में उनसे सविस्तार बातचीत कीजिए। पता कीजिए कि इनमें से कितने मानकों पर वह स्वयं कार्यान्वित हैं। अपने निष्कर्षों को सविस्तार सारणी के रूप में प्रस्तुत कीजिए।

अभ्यास 4

अपने क्षेत्र के दो भूमि उपयोग मानचित्र (land-use map) बनाएं, एक वर्तमान भूमि उपयोग मानचित्र और दूसरे में गत 40-50 वर्ष पहले के भूमि उपयोग को प्रदर्शित कीजिए। आप अपने परिवार के ज्येष्ठों से अथवा व्योवृद्ध नागरिकों से जो 50 वर्ष पूर्व आपके क्षेत्र के निवासी रहे हों, सहायता ले सकते हैं। दोनों मानचित्रों की तुलना कीजिए और पता लगाइए कि: (अ) कितनी प्राकृतिक वनस्पति विभिन्न कार्यकलापों के कारण बदल या नष्ट हो चुकी है? (ब) क्या आज भी कुछ क्षेत्र पहले जैसा या अविकृत बचा है? (स) क्या ये क्षेत्र इतने बड़े हैं कि यहां के मूल पौधों और प्राणियों का भरण पोषण कर सकते हैं? (द) क्या वहां प्रान्तीय स्तर पर ऐसी नीतियां चल रही हैं जो इस क्षेत्र के और अधिक विनाश को रोक सकें?

खंड
2

पर्यावरण और संरक्षण कर्तव्य बोध

इकाई 5
संरक्षण का इतिहास 5

इकाई 6
पर्यावरणीय मापदंड और पर्यटन 13

इकाई 7
भारतीय दर्शन और पर्यावरण 20

इस खण्ड के लिये कुछ उपयोगी पुस्तकें 25

इस खण्ड के लिये कुछ अभ्यास 26

विशेषज्ञ समिति

श्री अजय माहुरकर
इतिहास संकाय
इग्नो

श्री अशोक चंदोला
टूरिज्म कंसलटेंट
नई दिल्ली

श्री आशिष कु. सिंह
मैनेजिंग डायरेक्टर
केरल टूरिज्म डेवलेपमेंट
कारपोरेशन
त्रिवेंद्रम

डॉ. गीता केकर
विज्ञान विद्यापीठ
इग्नो

डॉ. इकबाल मलिक
निदेशक, वातावरण
नई दिल्ली

श्री जहांगीर घड़ियाली
जनरल मैनेजर
वेलकम ग्रुप होटल
औरंगाबाद

डॉ. जसवंत सोखी
विज्ञान संकाय
इग्नो

प्रो. कपिल कुमार
निदेशक
सेंटर फॉर एक्सटेंशन
एजुकेशन, इग्नो

श्री के.टी. सुरेश
कोआर्डिनेटर, इन्वेशन
बैंगलोर

सुश्री लतिका नाथ
वर्ल्ड लाइफ फाउंडेशन
देहरादून

डा. नीना राव
हेड डिपार्टमेंट ऑफ
टूरिज्म, कॉलेज ऑफ
वोकेशनल स्टडीज नई दिल्ली

श्री प्रदीप सांखला
मैनेजिंग डायरेक्टर
डायनेमिक्स टूर एंड
ट्रैवेल्स प्राइवेट लिमिटेड
नई दिल्ली

श्री पी. राज
डायरेक्टर
क्लाइंट सरविसेज बीबीडीडी
वर्ल्ड वाइड नेटवर्क
मुम्बई

डॉ. रवीन्द्र कुमार (संयोजक)
इतिहास संकाय
इग्नो

कार्यक्रम संयोजक : प्रो. कपिल कुमार

पाठ्यक्रम दल:

डॉ रवीन्द्र कुमार } पाठ्यक्रम संयोजक
श्री अजय माहुरकर }
डॉ. गीता केकर
डॉ. जसवंत सोखी
श्री सलिल मिश्र
प्रो. कपिल कुमार

खंड निर्माण दल

इकाई संख्या	इकाई लेखक	संकाय सदस्य
5 व 7	श्री मयंक कुमार सत्यवती कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय	डा० रवीन्द्र कुमार
		प्रो० कपिल कुमार
6	सुश्री मोना सेदवाल रिसर्च स्कालर जे०एन०यू० नई दिल्ली	

खंड संयोजक
डा० रवीन्द्र कुमार

नई दिल्ली

सामग्री निर्माण

प्रो. कपिल कुमार
निदेशक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

मई, 1998
© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 1998
ISBN-81-7605-341-4
सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुन: प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

NMDC-210
BTS-05/86

खंड-2 पर्यावरण और संरक्षण कर्तव्य बोध

पिछले खंड-1 में आपने पर्यावरण के घटकों का परिचय प्राप्त किया। इस खंड में संरक्षण कर्तव्य बोध के मुख्य मुद्दों पर विचार विमर्श किया गया है। किसी भी पर्यटन गतिविधि के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि वह प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक आधारों को मजबूत बनाकर उसे सुरक्षित रखने के लिए क्रियाशील रहे न कि इस अमूल्य धरोहर को नष्ट होने दे। इस खंड में संरक्षण के इतिहास और भारतीय दर्शन के संदर्भ में संरक्षण के प्रश्न पर विचार किया गया है।

इस खंड में तीन इकाइयाँ हैं। पहली इकाई अर्थात **इकाई-5 पर्यावरणात्मक संरक्षणात्मक प्रथाओं के इतिहास** से संबंधित है। इस इकाई संरक्षण की उन तमाम समस्याओं पर विचार करती है जो प्रगति के फलस्वरूप या विकास की प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप खतरनाक हद तक गंभीर रूप ले चुकी है। यह विश्व के विभिन्न क्षेत्रों की अलग अलग सोच से भी परिचय कराती हैं और वर्तमान समय में संरक्षण के महत्व को भी उजागर करती है।

इकाई-6 में पर्यटन के प्रोत्साहन के लिए संरक्षण के महत्व की व्याख्या की गई है। इसमें पर्यावरणीय संरक्षण और पर्यटन की अर्थव्यवस्था के मध्य दिखाई देने वाले समस्यामूलक सम्बन्धों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है।

इकाई-7 में भारतीय दर्शन और पर्यावरण के अतर्संबंधों का अध्ययन किया गया है। भारतीय जीवन शैली सदैव प्रकृति के प्रति संवेदशील और सचेत रही है। भारतवासियों के लिए प्रकृति एक ऐसी सजीव वस्तु रही है जिसे शोषण की नहीं सुरक्षा की आवश्यकता रहती है। पर्यावरण के विषय में यह दृष्टिकोण यूरोपीय दृष्टिकोण से बिलकुल भिन्न है जहाँ इसे एक उपयोगी चीज समझा जाता है।

आभार : फोटोग्राफस उपलब्ध कराने के लिए हम **पर्यटन विभाग**, भारत सरकार के कृतज्ञ हैं।

इकाई 5 संरक्षण का इतिहास

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 संरक्षण : परिभाषा

5.3 आधुनिक समय में संरक्षण का इतिहास

5.4 भारतीय दार्शनिक विचार

5.5 वर्तमान समय में संरक्षण का महत्व

5.6 सारांश

5.7 शब्दावली

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

पर्यावरण संबंधी पाठ्य-पुस्तकों पर प्रकृति के संरक्षण पर अपेक्षित बल नहीं दिया गया है और उनका अच्छी तरह उल्लेख भी नहीं हुआ है। इसलिए इस इकाई मे हमारा उद्देश्य है :

- संरक्षण को परिभाषित करना,
- संरक्षण के इतिहास का संक्षिप्त पुनर्सृजन; और
- वर्तमान में संरक्षण के महत्व से आपको अवगत कराना।

5.1 प्रस्तावना

हाल के वर्षों में पर्यावरणीय समस्याओं की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट हुआ है और सरकार भी इसके प्रति जागरूक हुई है। परिणामस्वरूप लगभग हर देश में पर्यावरणीय विषय राजनैतिक कार्यक्रम का आवश्यक तथा महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए हैं।

स्वाभाविक रूप से पृथ्वी का पर्यावरणीय भविष्य आम चिंता का विषय बनता जा रहा है। दुनिया भर में पर्यावरण की बिगड़ती स्थिति के प्रति बढ़ती हुई चिंता तो नई हो सकती है किन्तु पर्यावरण की देखरेख और संरक्षण का पुराना इतिहास रहा है। इस इकाई में हमने संरक्षण के प्रयासों के इतिहास का पता लगाने की कोशिश की है। हमें आशा है कि इससे संरक्षण की समस्या को सही संदर्भ में समझने में मदद मिलेगी। वस्तुत: इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य भी यही है। इस लंबे ऐतिहासिक परिदृश्य में मौजूदा पर्यावरण संबंधी चिंताओं को समझना आसान होगा।

5.2 संरक्षण : परिभाषा

प्रकृति के संरक्षण की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है। वास्तव में प्रकृति के विषय में जैसे जैसे मानव की चिंता बढ़ी वैसे वैसे परिभाषाएँ भी विकसित हुईं। हमारे लिए और विशेष रूप से पर्यटन और पर्यावरण के मध्य उपस्थित विशिष्ट अंतर्संबंधों के दृष्टिकोण से संरक्षण का तात्पर्य जैव विविधता का इस हद तक संरक्षण है जो पारिस्थिकी और मानव जाति के अस्तित्व के लिए अनिवार्य है। एक सीमा तक यह भी स्वीकार कर लेना चाहिए कि प्रकृति में जीवों की कुछ जातियों का लुप्त होना और परिणामस्वरूप जैव विविधता की क्षति, समस्या का मुख्य केंद्र बिंदु नहीं है।

जैव विविधता संरक्षण की तुलना सम्पूर्ण जातियों की सुरक्षा से नहीं की जा सकती है और न ही पर्यावरण को पूर्व स्थिति में बनाए रखने का यह एक प्रयास भर है। यहाँ हमारी चिंता का मुख्य विषय तीव्र गति से हो रहा संसाधन दोहन और प्राकृतिक वास में होने वाला परिवर्तन है जो जैव विविधता के तेजी से लोप का कारण बन सकता है।

पर्यावरणवादी पर्यावरणीय व्यवस्थाओं और जातियों की विविधता को सुरक्षित रखना चाहते हैं। उन्हें विकास की प्रक्रिया से मोहभंग हुए लोगों का भी समर्थन प्राप्त होता है। जीवन के लिए अनिवार्य प्राकृतिक संसाधनों के नष्ट होते जाने से आशंकित हैं। ऐतिहासिक कारणों से औद्योगिक देशों में पर्यावरणीय संरक्षण के महत्व को उस प्रकार नहीं समझा गया जैसे विकासशील देशों के लोगों ने समझा है। अपने सांस्कृतिक इतिहास के कारण उत्तरी अमेरीकियों ने प्रकृति को दूषण से बचाने के लिए उसकी स्तुति की है और प्रकृति को वापस'' जैसा समाधान प्रस्तुत किया है। उपनिवेशी इतिहास के कारण तीसरी दुनिया के लोग पर्यावरणात्मक ह्रास के लिए सामाजिक और मानवीय कारणों और पक्षों के प्रति अधिक चिंतित और जागरूक रहे हैं। 1972 में स्टाक होम के संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सम्मेलन में (उत्तर विकसित देश के) पर्यावरणवादी दक्षिण (विकासशील देश) के अपनाए गए रूख से स्तब्ध रह गए। इस वैचारिक टकराव के बाद उत्तर और दक्षिण के पर्यावरणीय चिंतकों और वैज्ञानिकों ने पर्यावरण क्षेत्र में हुई कई परिचर्चाओं ओर परस्पर सहयोग द्वारा एक दूसरे से बहुत कुछ सीखा। पर्यावरण और विकास के विश्व आयोग की 1987 की रिपोर्ट में दोनों दृष्टिकोणें का उल्लेख हुआ है। विश्व के राजनैतिक नेताओं में भी नई चेतना जागृत हो रही है। जनसाधारण में भी उत्तर और दक्षिण के मतभेद कम होते जा रहे हैं। उत्तर के कार्यकर्ता अपने कार्यों से पर्यावरण के लिए उत्पन्न खतरों के बारे में राजनैतिक रूप से सक्रिय होते जा रहे हैं जबकि दक्षिण के लोग पारिस्थितिकी व्यवस्था के महत्व और आर्थिक विकास की अपनी समझ के बारे में विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। इसलिए उत्तर तथा दक्षिण के सांस्कृतिक अंतर के कारण अभी भी उनके द्वारा अपनाए गए पर्यावरणीय संरक्षण कार्य के प्रयासों में अंतर अब भी मौजूद है।

बोध प्रश्न 1

1) पर्यावरणीय संरक्षण से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

.....

2) पर्यावरण संरक्षण के विषय उत्तर-दक्षिण के प्रमुख मतभेदों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

5.3 आधुनिक समय में संरक्षण का इतिहास

प्राकृतिक पारिस्थतिकी तंत्रों और जीवों के आवास के संरक्षण का लंबा और पेचीदा इतिहास है। आधुनिक संरक्षण का रवैया और व्यवहार अधिकतर पश्चिमी से प्रभावित है। वह निश्चित रूप से उन राजनैतिक आर्थिक और बौद्धिक क्रातया के अनुरूप गढ़े गए हैं जिन्हें पश्चिमी समाज ने अनुभव किया था। यह शक्तियाँ विश्व भर में संरक्षण कार्य को आकार देने का निरंतर प्रयास कर रही हैं।

संरक्षण का यह पश्चिमी दृष्टिकोण मानव और प्रकृति के उस यहूदी-इसाई दर्शन के अनुसार है जो काफी पुराना है। यह दो विचारों पर आधारित है अर्थात :

- दोहन का अधिकार, और
- प्रबंध का दायित्व।

यह एक मौलिक यहूदी-इसाई विश्वास है कि प्रकृति का सृजन मानव जाति के उपकार के लिए हुआ है। अत: प्राकृति का दोहन एक वैध और स्वाभाविक व्यवसाय है। यह दृष्टिकोण पर्यावरण और उसके निवासियों की सुरक्षा की वह भावना नहीं देता जो शोषण को रोकती हो।

अठारहवीं शताब्दी के प्रारंभ तक प्रकृति के अधिकार और प्रतिफल अधिकतर सर्वोत्कृष्ट अभिजात वर्ग के हाथों में था। सत्रहवीं शताब्दी के अंत में हुई लोक-तांत्रिक क्रांति, जिसमें 1775-1783 को अमेरीकी क्रांति और 1789 की फ्रांसीसी क्रांति भी शामिल है, ने अधिकतर पश्चिमी समाज के ढांचे का पुनर्गठन किया। इस परिवर्तन के साथ जनसाधारण की उत्पादक संसाधनों तक पहुँच बढ़ गई और आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति सुधारने के लिए उनके उपयोग की योग्यता भी बढ़ गई। इस प्रकार समाज में आम लोगों को प्रकृति के दोहन का कानूनी अधिकार मिल गया।

लगभग उसी समय (मध्य 17वीं शताब्दी) औद्योगिक तथा वैज्ञानिक क्रांति प्रारंभ हुई औद्योगिक क्षेत्र में संसाधनों को नए पैमाने पर बढ़े हुए कौशल के साथ तैयार करने के लिए मशीनों और ऊर्जा के संसाधनों का उपयोग शुरू हुआ। भाप के इंजन के साथ रेल मार्ग और भाप से चलने वाले पानी के जहाजों का आगमन हुआ जिन्होंने दोहन के लिए नए क्षेत्र खोल दिए।

वैज्ञानिक क्षेत्र में हुए अविष्कारों ने प्रकृति संबंधी मौलिक धारणा में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया। ईश्वर की इस सृष्टि को रसायनशास्त्र और भौतिकी के प्रचलित नियमों द्वारा कार्यरत संसार से प्रतिस्थापित कर दिया गया। औद्योगिक और वैज्ञानिक क्रांतियों ने लोगों को संसाधनों के दोहन और भरपूर धन अर्जित करने की अधिक विस्तृत योग्यता और क्षमता प्रदान की। 19वीं शताब्दी के मध्य दशकों में जीव विज्ञान के प्राकृतिक विश्व के दृष्टिकोण में क्रांतिकारी परिवर्तन आ रहा था अर्थात जीवन की स्थाई सृष्टिवादी विचारधारा का एक विकासशील यंत्रवादी विचारधारा द्वारा प्रतिस्थापन हो रहा था। यह परिवर्तन चार्ल्स डार्विन और एल्फ्रेड वैलेस के प्राकृतिकरण द्वारा विकास के मत से बहुत अच्छी तरह प्रतिपादित होता है। प्राकृतिकरण द्वारा विकास की इस धारणा के कारण प्रारंभ की जीवित जातियों से सम्बद्ध सृष्टि की धारणा का स्थान प्रकृति में अन्योन्य क्रिया की यंत्रवादी प्रक्रिया ने लिया। **विकासवादी विचारधारा ने यह सत्य व्यक्त करके सब की आँखें खोल दीं कि पर्यावरण में होनेवाले परिवर्तन, मानवों द्वारा किए गए परिवर्तनों सहित, कई प्रकार के जीवों के विलोपन का कारण बन सकते हैं जैसा कि जीवाश्मों के अभिलेखों से प्रमाणित होता है।**

द्वितीय विश्व युद्ध ने अकस्मात संरक्षण की समस्याओं की ओर से ध्यान हटा दिया। इसके फलस्वरूप अद्वितीय आर्थिक विस्तारण और प्रौद्योगिक व जनसंख्या विस्फोटक के युग का आरंभ हुआ। प्रौद्योगिकी ने कृत्रिम रेशे, प्लास्टिक, अकार्बनिक कीटनाशक, सीसायुक्त इंधन और बहुत से ऐसे उत्पाद उपलब्ध कराए जिनके कारण कुछ समय बाद विषाक्त और जैविक रूप से सक्रिय पदार्थ पर्यावरण में समाविष्ट होने लगे। इस औद्योगिक प्रौद्योगिकी के विस्फोट में मानव जनसंख्या का कारक भी जुड़ गया। परिणामस्वरूप रसायन और रसायनिक अपशिष्टों के कारण वायु, जल और धरातल के प्रदूषण में खतरनाक रूप से वृद्धि हुई। शीघ्र ही प्रदूषकों की विषाक्तता के उन्मूलन की प्राकृतिक प्रकियाओं और उनके साथ चलने वाले स्थाई समंजन को प्रभावित करनेवाली प्रकियाओं को इन विशैले अपशिष्टों ने नष्ट करना शुरू किया। ये रसायनिक उत्पाद पारिस्थितिकी के प्रभाव को संकुचित करने लगे और लोगों को इसकी चिंता होने लगी। यह चिंता पर्यावरण की समस्या पर उपलब्ध विपुल साहित्य से प्रतिबिंबित होती है।

इस संदर्भ में निम्नलिखित पुस्तकों का उल्लेख किया जा सकता है। फेयरफील्ड ऑसबर्न की **अवरप्लनडर्ड प्लैनेट**, और विलियम वॉयड की **रोड टू सरवाईवल**, दोनों 1948 में प्रकाशित हुई। **प्रिंसटन अधिवेशन की रिपोर्ट मैन्स रोल इन चेंजिंग द फेस ऑफ द अर्थ** (1958), रेडिल कारसन की **साईलेन्ट स्प्रिंग** (1962), जीन डोर्स की **अव्वान्त विथ नेच्यूर मिथोरे** (1965), पॉलएहरिच की **द पॉपुलेशन बॉम** (1968), डेनिस और डोनिला मीडोज की **द लिमिट्स ऑफ ग्रोथ** (1972), राबर्ट हेसब्रोनर की **ऐन इक्वाएरी इंटू ह्यूमन प्रॉस्पेक्ट** (1974), संरक्षण के महत्व पर ये रचनाएँ विभिन्न क्षेत्रों जैसे विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति आदि के पुरुष तथा महिला विशेषज्ञों की हैं इसकी दृष्टि और शैली सही अर्थों में सार्वभौमिक है।

5.4 भारतीय दार्शनिक विचार

- हम पूरी दुनिया के पारिस्थितिकी संकट के विभिन्न पहलुओं – वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी और भौगोलिक पर विचार करते रहे हैं। अब हम आपके सामने एक अन्य पक्ष प्रस्तुत करते हैं : दार्शनिक पक्ष जो कि भारतीय संस्कृति में समाविष्ट है। हालाँकि उपनिवेशी शासन में भारतीयों ने इसका परित्याग किया था फिर भी पारिस्थितिकी के भारतीय दर्शन को फिर से व्यवस्थित करने की आवश्यकता है। प्रकृति और पारिस्थितिकी का भारतीय सिद्धांत-सृष्टि के सिद्धांत से बहुत अधिक प्रभावित है जिसकी मान्यता है कि विश्व के प्रत्येक तत्व, वस्तु और जीव की सृष्टि एक ही परमात्मा द्वारा हुई है; और मनुष्य का प्रकृति पर कोई विशेष अधिकार नहीं है। हिंदू धर्म ने प्रकृति के प्रति आदर भावना को अपने तीन मूल तत्वों में श्रद्धापूर्ण स्थान दिया है :
- ईश्वर में आस्था,
- पुरुष के विषय में अद्वैतवादी विचार,
- प्रकृति, और
- कर्तव्यों और उपासना के लिए नियमावली।

वेदों, पुराणों, उपनिषदों और अन्य धर्म ग्रंथों में वृक्षों, पौधों और वन्यप्राणियों का और सम्प्रदायों के लिए उनके महत्व का विस्तृत वर्णन मिलता है। भारतीय घरों में वृक्षों को विशेष स्थान प्राप्त है। मानव जीवन में वृक्षों और पौधों के महत्व का उदाहरण स्पष्ट रूप से वराहा पुराण में मिलता है जो स्वर्ग की प्राप्ति के लिए नियमित वृक्षारोपण की वकालत करता है। मत्स्य पुराण और पद्मपुराण में भी महान व क्षारोपण उत्सव-वृक्ष महोत्सव का वर्णन मिलता है। मत्स्यपुराण में एक वृक्ष रोपण को दस पुत्रों के संतान के बराबर माना गया है।

भारतवासी प्रकृति के दैनिक रूप में विश्वास रखते रहे हैं और इसी कारण विभिन्न वृक्षों और पौधों को धार्मिक अनुष्ठानों में उपयोग में लाया जाता रहा है। कुछ वृक्षों और पौधों को इतना पावन माना जाता है कि उनकी कल्पना यह है कि विभिन्न देवी और देवताओं ने उनमें अपना निवास स्थान बना लिया है। नरसिंह पुराण में वृक्ष की तुलना स्वयं भगवान (ब्रह्म) से की गई है। अथर्ववेद पीपल वृक्ष को कई देवताओं का आवास मानता है। विभिन्न वृक्षों और उनसे सम्बद्ध देवताओं और देवियों के नाम इस प्रकार हैं :

वृक्षों के नाम		सम्बद्ध देवता/देवी
1)	अशोक	बुद्ध, इंद्र, विष्णु अदितसा आदि
2)	पीपल	विष्णु, लक्ष्मी वनदुर्गा आदि
3)	तुलसी	राम, नारायण, विष्णु कृष्णा, जगन्नाथ, लक्ष्मी, आदि
4)	कदम्ब	कृष्ण
5)	बे	शिव, दुर्गा, सूर्य, लक्ष्मी
6)	वट	ब्रह्मा, विष्णु, शिव काल, कुबेरा कृष्णा, आदि

विभिन्न प्रकार के वृक्षों और पौधों की न केवल पूजा की जाती थी बल्कि हरे वृक्षों को काटना निषिद्ध किया गया है और इस नियम की अवहेलना करने वालों के लिए दण्ड भी निर्धारित किए गए हैं। भारतीय समाज इस सत्य से पूर्णतः अवगत था कि पौधों और वनों का अंधाधुंध विनाश बीमारियों और वायुमंडल के प्रदूषण का कारण बनेगा।

भारतवासियों के लिए प्रकृति और पशुओं से इनका संबंध प्रभुत्व और दमन का संबंध नहीं है बल्कि परस्पर आदर और दया का संबंध है। जैसा कि यजुर्वेद में सभी के लिए प्रार्थना की गई है। ऋषियों के आश्रमों में पशुओं और अन्य प्राणधारियों के शांतिमय-सहभाव की बहुत सी कथाएँ प्रचलित हैं। समस्त पशुओं में गऊ की पूजा हिंदू परिवार में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

प्राचीन और मध्यकाल में भारतीय संस्कृति ने पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण के विषय में नैतिक निर्देशों की रूपरेखा प्रस्तुत की। ऋषि मुनियों ने जिन पर्यावरणीय नीतियों का प्रतिपादन किया था उनका अनुसरण न केवल साधारण व्यक्ति अपितु शासक वर्ग भी करता था। ये सिद्धांत भारतीय जीवन शैली के अनुरूप थे। यहां तक की छोटी से छोटी पर्यावरणीय समस्या उत्पन्न करने वाले मामले का उचित हल निकाला जाता था।

भारतीय दर्शन और पर्यावरण के मध्य संबंधों पर इस खंड की इकाई 7 में और अधिक विचार किया गया है।

5.5 वर्तमान समय में संरक्षण का महत्व

विभिन्न विकासात्मक गतिविधियों तेजी से प्रकृति, उसके सुव्यवस्थित संतुलन और लाखों वर्षों से स्थापित अन्योन्याश्रय संबंध नष्ट करती जा रही है। ऐसा करके समाज आत्म विनाश की ओर बढ़ रहा है। प्रकृति हनन ने पिछले दशकों में गति पकड़ ली है और हम सब तेजी से पारिस्थितिकीय विनाश और सम्पूर्ण सर्वनाश की ओर बढ़ रहे हैं। हम लोग तबाही के किनारे नहीं खड़े हैं बल्कि पूर्णरूप से उसके घेरे में आ चुके हैं। मनुष्य अपने विचारहीन कार्यों द्वारा तेजी से विश्व को कूड़े के ढेर में बदलता जा रहा है।

वर्तमान औद्योगीकरण तथा कृषि संबंधी कार्य अधिकतर गलत सोच का नतीजा है और यह अब भी जारी है। मनुष्य और समाज ने प्रकृति को निष्ठुरता से लूटा है और पृथ्वी को उजाड़ बना दिया है लेकिन मनुष्य और उसका समाज जो सबसे बुरा अपराध आज भी कर रहा है वह है पृथ्वी को दूर तक फैले हुए हरे भरे सघन वनों के आवरण से वंचित करना। ये ही वन मनुष्य और सारे जीवों का भरण पोषण करते हैं और उन्हें जीवन देनेवाला ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। लगभग हर प्रांत और देश इस अपराधिक और मानव के विरुद्ध कार्य में शामिल है। कुछ लोग तो लाभ कमाने के लिए ऐसा करते हैं और कुछ लोग जीवन की मूलभूत आवश्यकता की प्राप्ति के लिए प्राकृति को नष्ट कर रहे हैं। यही नहीं कुछ लोग मात्र मनोरंजन के लिए प्रकृति का विनाश करते हैं।

इस अपराध कार्य को तत्काल रोकना चाहिए। हमें पहले ही देर हो चुकी है। प्रकृति पहले से ही बोझ तले दबी है। अब मनुष्य के विकास के भारी बोझ को उठाना उसके लिए असंभव है। दानशील प्रकृति अब लगभग खाली हो चुकी। कम से कम अब तो जागना चाहिए।

बोध प्रश्न 2

1) प्रकृति संबंधी दो प्रमुख यूरोपीय अवधारणाएं बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यावरण के विषय में तीन प्रमुख भारतीय दार्शनिक विचार स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) संरक्षण के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5.6 सारांश

पारिस्थितिकीय स्थिति आज बहुत नाजुक हो चुकी है, इतनी नाजुक कि शीघ्र ही हमने कोई कदम नहीं उठाया तो स्थिति वश से बाहर हो जाएगी और यह क्षतिपूर्ति असंभव होगी। मनुष्य हर क्षेत्र में विशेषत: औद्योगिक और कृषी में दैनिक जीवन की गतिविधियाँ तीव्रता से प्रकृति को नष्ट कर रही हैं। मनुष्य पारिस्थितिकी का सर्वनाश करके आत्म विनाश की परिस्थितियां पैदा कर रहा है।

हमें क्या करना चाहिए ? नि:सन्देह पारिस्थितिकी की सुरक्षा और पुनर्जीवन का प्रश्न विश्व समाज के सामने सबसे ज्वलंत मुद्दा है। सभ्यता के सभी क्षेत्रों के भावी विकास संबंधी सारी योजनाओं में क्रांतिकारी परिवर्तन होना चाहिए अन्यथा हमारा जीवित रहना संभव नहीं होगा।

मनुष्य, समाज और उसकी संस्थाओं, जैसे सरकार, को चाहिए की वह वनों और प्रकृति के विनाश पर तत्काल रोक लगा दे और सामाजिक विकास को पूर्णरूप से प्रकृति के अनुकूल बना दे। मनुष्य को भविष्य में केवल संरक्षण की परिस्थितियों और पारिस्थितिकी के पुनर्जीवन पर ही जीवित रहना है। पर्यावरण के विनाश पर प्रतिबंध और उसकी पूर्ण सुरक्षा की जमानत को सामाजिक विकास का मूल आधार होना चाहिए। किसी बाह्य निकाय के बजाए "प्रकृति के अंग" के रूप में विकास के लिए मनुष्य को औद्योगिक, कृषी, सामाजिक-आर्थिक तथा राजनैतिक नीतियों में मौलिक परिवर्तन करना पड़ेगा। वास्तव में यदि हमें जीवित रहना है तो मनुष्य और सृष्टिकर्ता के संबंधों पर फिर से विचार करना होगा और उनके प्रति हमारी सोच, दृष्टिकोण और दर्शन को पूर्णरूप से बदलना होगा।

5.7 शब्दावली

उत्तर	:	विकसित देश
दक्षिण	:	विकासशील देश
भरण पोषण	:	बिना किसी दुष्प्रभाव के दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति
विकास	:	विज्ञान की सहायता से समाज की उन्नति की धारणा
जीवाश्म अभिलेख	:	पत्थर या मिट्टी पर आदिकाल के जीवों और उनकी हड्डियों, वनस्पतियों, उनकी पत्तियों आदि की छाप।

5.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) हमारी प्रकृति में विभिन्न प्रकार के प्राणी और वनस्पतियां हैं जो हमारी पारिस्थितिकी व्यवस्था के अंग हैं। ये सब और दूसरे कारक अन्योन्याश्रित हैं। इनमें से किसी एक की या सब की क्षति इस व्यवस्था के विनाश का कारण बन जाएगी। इनकी सुरक्षा पर ही मानव की उत्तरजीविता टिकी हुई है। अतः इन सबकी सुरक्षा अति आवश्यक है। प्रकृति की सही सुरक्षा पर्यावरणीय संरक्षण कहलाती है।

2) उत्तर दक्षिण के मध्य यह महत्वपूर्ण संवाद सामाजिक उत्पति और मानवीय कार्यों के कारण होने वाले पर्यावरणीय ह्रास की चिंता और "प्रकृति की ओर वापसी" जैसे समाधान से संबंधित है।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 5.2 देखिए

2) भाग 5.3 देखिए

3) भाग 5.4 देखिए

चित्र

पर्यावरण और संरक्षण कर्त्तव्य बोध

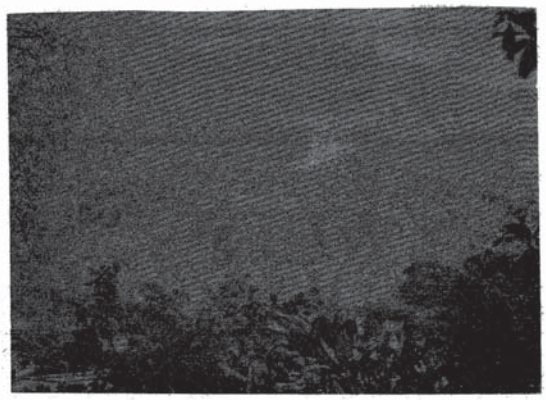



Whither Environment?

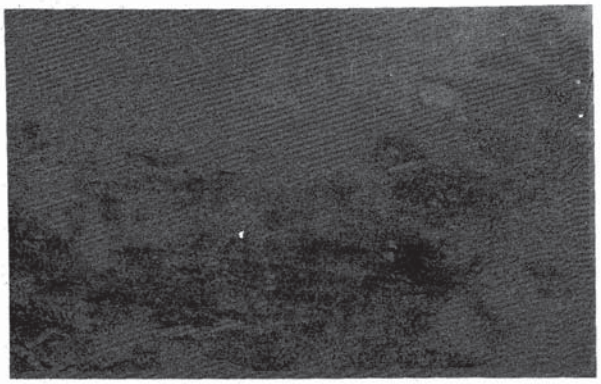

इकाई 6 पर्यावरणीय मापदंड और पर्यटन

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 पारिस्थितिकी पर्यटन

6.3 पर्यावरण पर पर्यटन का प्रभाव

6.4 समाधान

6.5 सारांश

6.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

बढ़ते हुए पर्यटन के कारण, जो आर्थिक और सामाजिक विकास का साधन है, पर्यावरण को बड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप यह विश्लेषण कर सकेंगे कि:

- पर्यटन और संबंधित कार्यों के कारण पर्यावरण का ह्रास होता है,
- पर्यावरण पर पारिस्थितिक पर्यटन का प्रभाव, पड़ता है, और
- स्थिति से प्रभावी रूप से किस प्रकार निपटा जा सकता है।

6.1 प्रस्तावना

पर्यटन की विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ पर्यावरण को प्रभावित करती हैं। पर्यावरण और पर्यटन एक दूसरे से बहुत जटिल रूप से अंतर्संबंधित हैं। भारत जैसे देश में निर्धनता और आर्थिक वृद्धि दोनों ही पर्यावरणीय चुनौती प्रस्तुत करते हैं। पर्यावरण के लिए शायद भूख, गरीबी और आकाल से बुरी बात और क्या हो सकती है ? आज जीवित रहने के प्रयास में मनुष्य अपने आने वाले कल के परित्याग और अपने पर्यावरण के अति उपभोग के लिए विवश हो गए हैं।

हम जैसे विकासशील देशों के लिए पर्यावरण बहुत अधिक चिंता का विषय है क्योंकि जनसंख्या का अधिकतर भाग मजबूरन प्राकृतिक संसाधनों पर ही निर्भर है। उनमें से बहुत से लोगों को सोते, तालाब, कुँए या संभवत: किसी सार्वजनिक हैंडपम्प तक, जिनसे सैकड़ों लोगों का काम चलता है, पीने का पानी लेने और नहाने धोने के लिए जाना पड़ता है।

इस इकाई में हम कई ऐसी विधियों की चर्चा करेंगे जो पर्यावरण को बचाने में सहायता कर सकता है। हम उन विधियों का भी विश्लेष्ण करेंगे जिनसे पर्यटन पर्यावरण को प्रभावित करता है और उन जटिलताओं का भी जिक्र करेंगे जो पर्यटन के अधिक फैलाव के कारण पैदा होते हैं।

6.2 पारिस्थितिकी पर्यटन

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और सांस्कृतिक और विरासत संसाधनों की सुरक्षा सार्वभौमिक चिंता का विषय बन चुकी हैं और इस चिंता के प्रति वचनबद्ध लोगों, संगठनों व देशों की संख्या बढ़ती जा रही

है। पर्यटन के उत्तरदायी होने के लिए, पर्यटन के परिमाण और पर्यटन गतिविधियों तथा उपभोग में लाए जा रहे हैं और विकसित किए जा रहे संसाधनों की संवेदनशीलता और वहन क्षमता के बीच संतुलन अवश्य स्थापित करना चाहिए। इसमें भौतिक पर्यावरण दोनों के संसाधन सम्मिलित होते हैं। पर्यावरणीय सुरक्षा में वहन क्षमता सबसे महत्वपूर्ण धारणा है। संसाधनों पर हानि रहित प्रभाव, पर्यटक संतोष को कम किए बिना या उस क्षेत्र के समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना किसी स्थान का अधिकतम उपयोग में लाया जाना उस स्थान की क्षमता कहलाती है। विश्वस्त पर्यटन विकसित करते समय पर्यावरण की उत्कर्षता बनाए रखना न केवल वांछनीय है अपितु पर्यटक का संतोष कायम रखने के लिए भी जरूरी है। यदि पर्यटन उत्पाद के स्तर में गिरावट आती है तो वह अन्ततोगत्वा पर्यटन अर्थव्यवस्था में ही गिरावट लाएगा।

पर्यावरणीय पर्यटन प्रकृति पर आधारित पर्यटन है जो प्रकृति के अपेक्षाकृत अछूते इलाकों के प्रत्यक्ष आनन्द से संबंधित है। इस प्रकार के पर्यटन के पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के लिए स्थान विशेष की उपयुक्तता आवश्यक है। साथ ही साथ इसे प्राकृतिक पर्यावरण में स्थाई ह्रास का साधन नहीं बनना चाहिए।

पर्यावरणीय पर्यटन बड़ा व्यवसाय है। इससे विदेशी मुद्रा भी अर्जित की जा सकती है और प्रकृति तथा वनप्राणियों की सुरक्षा के लिए आर्थिक अर्जन भी हो सकता है। किन्तु पर्यावरणीय पर्यटन, उन संसाधनों को, जिस पर वह निर्भर है, तबाह कर देने की आशंका भी उत्पन्न करते हैं। पर्यटन नौकाएं एन्टार्कटिका के जल में कूड़ा-कचरा फैलाती हैं, राष्ट्रीय उद्यानों में वहाँ के कर्मचारी वन्यप्राणियों को उत्पीड़ित करते हैं या पर्यटकों के झुण्ड संवेदशील क्षेत्रों को रौंदते हैं। इस प्रकार की गतिविधियाँ प्रकृति की जीवन क्षमता को संकट में डालती हैं।

पर्यावरण मित्र : वे लोग जिनके कार्य पर्यावरण के विशेष संतुलन को नष्ट नहीं करते

वस्तुतः प्रत्येक पर्यावरण में प्रकृति आधारित पर्यटन को सहारा देने की क्षमता है और लगभग प्रत्येक देश में इस दिशा में विशेष संभावनाओं के मूल्यांकन के प्रति रुचि बढती जा रही है। प्रकृति आधारित पर्यटन के विषय में होने वाली परिचर्चाओं में अक्सर प्रमाण के बिना ही यह मान लिया जाता है कि ऐसा पर्यटन पर्यावरण-मित्र होता है। यह तथ्य सत्य से परे है और यदि कुछ अन्य प्रकारों के पर्यटन की अपेक्षा यह आदर्श प्रतीत को हो तो भी बहुत सी महत्वपूर्ण समस्याएं हैं। इनमें से बहुत सी समस्याओं को एक साथ उच्च स्तरीय प्रबंध की आवश्यकता के रूप में पहचाना जा सकता है। इस पर हम अगले भाग में सविस्तार विचार करेंगे।



बोध प्रश्न 1

1) पर्यावरण के संरक्षण में वहन क्षमता किस प्रकार सहायता करती है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) पारिस्थितिकी पर्यटन किस प्रकार पर्यावरण पर सकारात्मक अथवा नकारात्मक प्रभाव डालता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6.3 पर्यावरण पर पर्यटन का प्रभाव

पर्यटक कई उद्देश्यों से यात्रा करते हैं और विभिन्न प्रकार के पर्यटन स्थल इन उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होते हैं। प्रत्येक पर्यटन स्थल की पर्यावरण संबंधी अलग-अलग विशेषताएं होती हैं, मसलन:

- समुद्र का तटीय क्षेत्र और बीच
- नौका विहार क्षेत्र और आर्द भूमि
- पर्वत और बीहड़ क्षेत्र
- अन्तर्देशीय ग्रामीण क्षेत्र, शहरी क्षेत्र, और
- छोटे छोटे द्वीप

पारिस्थितिक पर्यटक (जिनकी मुख्य रुचि प्राकृतिक पर्यावरण में होती है) अक्सर विश्व के मोहक और दूरवर्ती शांत क्षेत्रों की ओर आकृष्ट होते जाते हैं। दूसरे देशों के अधिक विविधता वाले लोग सहयात्री बनकर पूर्व नियोजित पारिस्थितिक पर्यटन में शामिल होकर यात्रा करते हैं, हालाँकि संयुक्त राज्य से प्रारंभ होने वाले पारिस्थितिक पर्यटन में अवकाश प्राप्त एकांत प्रिय और कई अकेली महिलाएं भी इसमें शामिल होती हैं। 30 और 40 वर्ष की आयु के जोड़े ज्यादातर स्वतंत्र पारिस्थितिक पर्यटन के लिए निकलते हैं। विद्यालयों में विद्यार्थियों का समूह और वैज्ञानिकों का दल भी विकासशील देशों के भ्रमण के लिए निकलते हैं और ये उल्लेखनीय विपणन क्षेत्र हैं। यहाँ विपणन क्षेत्र से तात्पर्य उन संभावित पर्यटकों की किस्मों से है जिन्हें जनसांख्यिकीय (जैसे आयु, आय, जन्म स्थान), विशेष रुचि या पर्यटन प्राथमिकताओं के अनुसार विभक्त किया जाता है। भारत में भी पारिस्थितिक पर्यटन के प्रति धीरे धीरे जागरूकता बढ़ रही है। पर्यटन उद्योग रोजगार उपलब्ध कराता है, विदेशी पूंजी अर्जित करता है, पूंजी निवेश को प्रेरित करता है, छोटे व्यापार के अवसर पैदा करता है और सार्वभौमिक आर्थिक व राजनैतिक संयोजन को प्रोत्साहन देता है। पर्यटन तेल और मोटर गाड़ियों सहित तीन प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के वर्गों में से एक है। इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। यदि प्रति वर्ष अधिकाधिक राष्ट्र और समुदाय पर्यटन को विकसित करने के लिए उत्सुक हैं और इस उद्योग द्वारा प्रदत्त संभावित सम्पन्नता से लाभान्वित होना चाहते हैं।

जैसा कि हमारी संवैधानिक धाराओं, पर्यावरणीय कानूनों और योजना उद्देश्यों से स्पष्ट है कि विकास और प्रगति के साथ-साथ पर्यावरणीय सुरक्षा बनाए रखने के सचेत प्रयास किए गए हैं। फिर भी वर्षों से पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ते हुए दबाव और उसे चौंका देनेवाले नतीजे बढ़ते हुए अनुपात में स्पष्ट रूप से सामने आते जा रहे हैं। यह नतीजे, विकास के लाभ को कम करके, उन गरीबों के जीवन स्तर को, जो परोक्ष रूप से संसाधनों पर निर्भर हैं, बदतर बना रहे हैं। निम्नलिखित सारणी द्वारा पर्यटन पर पर्यावरणीय प्रभाव स्पष्ट हो रहा है।

	पर्यटन प्रचलन	प्रभाव
जल	कूड़े कचरें और मलजल की निकासी झीलों, नदियों और समुद्री तटों में, पर्यटन पोत या नौकाओं से तेल की निकासी आदि	संदूषण, स्वास्थ्य के लिए संकट, समुद्री पौधे और जीव जंतु का विनाश जलाशयों में विशाक्तता की वृद्धि, समुद्री खाद्य में संदूषण आदि
वायुमंडल	पर्यटन स्थल की ओर यात्रा में वृद्धि। मोटर, कार, जहाज, ट्रेन, (वायुयान)	वायु और ध्वनि प्रदूषण, पौधों के जीवन पर हानिकारक प्रभाव, मनोरंजन के मूल्यों की क्षति।
वनस्पति	मनोरंजन स्थल के निर्माण हेतु वृक्षों की कटाई, उद्यानों और वनों में आग का विचारहीन इस्तेमाल, उद्यानों और वनों में बढ़ता यातायात, फूलों और पौधों और कवक का संग्रहण।	वन्य सम्पदा की क्षति, पौधों का निरंतर विनाश, वन्य क्षेत्रों में अग्निकाण्ड, पौधों के जीवन पर प्रभाव।
मानव बस्तियाँ	होटलों, दुकानों आदि का निर्माण और विस्तार	जनविस्थापन, यातायात का संकुलन, बढ़ा हुआ प्रदूषण आदि
स्मारक	मनोरंजन के उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल, पर्यटकों को देखने महत्वपूर्ण स्थानों का अत्यधिक उपयोग	अतिसंकुलता, विरूपण सुरक्षा के लिए बाधा आदि।

पर्यावरण ह्रास में बहुत से कारक सहायक होते हैं। कई कारक पर्यटन के विकास के साथ-साथ जमा होते चले जाते हैं और प्रत्येक कारक द्वारा पहुँचाई गई हानि को अलग-अलग पहचानना और मापना हर बार संभव नहीं होता। समग्रता में देखें तो मनुष्य पृथ्वी की वहन क्षमता की सीमा पार कर गया है, अतः इस वहन क्षमता को बढ़ाने के लिए आवश्यक कार्यवाई करनी होगी और ज्यादा से ज्यादा समर्थन प्राप्त करने के लिए।

6.4 समाधान

प्राकृतिक पर्यावरण को क्षति पहुंचाए बिना उत्तरदायित्वपूर्ण पर्यटन के विकास के लिए पर्यटन से सम्बद्ध निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए :

- वहनक्षमता के मूल्यांकन और आवश्यक सुविधाओं जैसे परिवहन, जल, इंधन और स्वास्थ्य रक्षा के आधार पर पर्यटन को प्रोत्साहन देना,
- पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुकूल और स्थानीय लोगों का जीवन शैली को प्रभावित किए बिना पर्यटन को विकसित करना,
- पर्यटन के अविवेकपूर्ण विकास पर प्रतिबंध और संवेदन शील क्षेत्रों जैसे पहाड़ी ढालों, द्वीपों, तटीय क्षेत्रों, राष्ट्रीय उद्यानों और अभयारण्यों में पर्यटन गतिविधियों के सख्त नियम ।

पर्यटकों का अनुभव क्षेत्र और प्रभाव विस्तृत होता है। अतः निम्नलिखित कार्यों के लिए उन्हें लक्ष्य बनना चाहिए :

- जागरुकता बढाना,
- पर्यावरणीय उपायों के लिए समर्थन जुटाना,
- व्यक्तिगत व्यवहार में परिवर्तन, और
- उत्तरदायित्वपूर्ण विकास की वकालत।

उत्तरदायित्वपूर्ण विकास के सिद्धांत और आचरण के लिए उनका समर्थन पर्यटन व्यवसाय और सरकार के प्रत्येक स्तर के लिए उत्प्रेरक का काम दे सकता है। पर्यावरणीय सुरक्षा के समर्थक, पर्यटन के उत्तरदायित्वपूर्ण विकास के लिए आवश्यक परिवर्तनों के संदर्भ में भी सार्थक भूमिका निभा सकते हैं क्योंकि विभिन्न समूह किसी भी समय समझदारी के विभिन्न स्तरों पर हो सकते हैं। परिवर्तन की प्रक्रिया रेखीय होने की अपेक्षा कुंडली की तरह अधिक वृत्तीय होती है। इस प्रक्रिया में कई अवयव हैं और उनमें से हर एक को उस समय तक दोहराना चाहिए जब तक उन्हें समझ न लिया जाए, मान न लिया जाए और अलग-अलग क्षेत्रों में मिला न लिया जाए। जैसे :

- सारी दुनिया में विशिष्ट स्थानों पर पर्यावरणीय गुणवत्ता की स्थिति निश्चित कर लेनी चाहिए। योग्य विशेषज्ञों द्वारा खतरों, आपदाओं और वायु तथा जल की गुणवत्ता, ध्वनि के स्तर, पर्यावरणीय संकट और भवनों उसके आसपास के इलाके के आकर्षणों के संभावित नतीजों का मूल्यांकन कर लिया जाना आवश्यक है। मौजूदा कठिनाइयों में से यह एक है कि पर्यावरणीय समस्याओं के आर्थिक एवं सामाजिक मूल्यों का सही निर्धारण नहीं हो पाता और मूल्य-लाभ विश्लेषण में इन का पर्याप्त रूप से ध्यान नहीं रखा जाता। उदाहरणार्थ किसी संकटापन्न प्रजाति, किसी सांस्कृतिक परम्परा या किसी अछूते वर्षा वाले वन का मूल्य निर्धारण करना कठिन है।

- जन जागरण अवश्य पैदा करना चाहिए। गैर सरकारी संगठन अन्तर्राष्ट्रीय आधार पर स्वतंत्र रूप से लोगों की जागरूकता बढ़ाते हैं। वे जनमानस के आकर्षण का केंद्र होते हैं और उन्हें प्रेरित करते हैं। वह जनसाधारण के मध्य वाद विवाद के द्वारा पर्यावरणीय उद्देश्यों और संबंधित विकास की वकालत करते हुए पर्यावरणीय सुरक्षा के लिए कुछ चुने हुए क्षेत्र ऐसा दबाव बना सकते हैं कि नीति निर्धारित करने वाले अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करें। कई देशों में सरकारी संगठन जन जागरण के काम में जुटे हुए हैं और इस कार्यक्रम में वे निजी संस्थाओं और अन्य समूहों की साझेदारी आमंत्रित करते हैं।

- सार्वजनिक नीति को पुन: सूत्रबद्ध करना चाहिए। विश्वस्त विकास के लिए संगठित योजना आवश्यक है किन्तु इसमें कई रूकावटें हैं, एक रूकावट विखण्डन है जो स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तरों की सरकारों और विभिन्न राष्ट्रों के सामने आती हैं। दूसरी रूकावट पर्यटन उद्योग का बहुआयामी स्वभाव है जो निजी और सार्वजनिक क्षेत्र के निवेशकों और प्रबंधकों पर आधारित है। कई निवेशक और प्रबंधक वचन बद्धता, प्रबुद्ध स्वार्थ या अच्छे जन सम्पर्क के आधार पर नेतृत्व का प्रयास करते हैं। अन्ततः यह उद्योग जरूरत पड़ने पर लाभ कमाने के साथ-साथ पर्यावरण का भी ख्याल रखेगा।

- मेजबानों और मेहमानों दोनों के व्यवहार में परिवर्तन आना चाहिए। जागरूकता अभियान, पर्यावरणीय शिक्षा, मेजबान प्रशिक्षण और व्यावसायिक शिक्षा द्वारा उत्तरदायित्वपूर्ण पर्यटकों, कार्यकर्ताओं व विकासकों को तथा साथ ही जिम्मेवार मेजबानों को पर्यटन उद्योग के हर स्तर पर विकसित किया जा सकता है।

- पर्यटकों को पर्यटन स्थल के संरक्षण के प्रयासों में सम्मिलित करना।

प्राकृतिक पर्यटकों में उन लोगों को शामिल किया जा सकता है जो अकस्मात वन में घूमने निकल पड़ते, या इनमें प्रवाल रचनाओं की प्रशंसा करने वाले स्क्यूबा गोताखों या पक्षियों का अवलोकन करने और उन्हें सूचीबद्ध करने वाले पर्यटन भी शामिल हो सकते हैं।

किन्तु यह बाजार का एक ऐसा भाग है जो पर्यावरणीय समस्याओं पर विचार कर सकता है। प्राकृतिक पर्यटन की सफलता प्राकृतिक संरक्षण पर आश्रित है। बहुत से उद्यानों को खतरा है और यह उन सभी के लिए संकटपूर्ण है जो प्राकृतिक पर्यटन में रुचि रखते हैं और यह जानते हैं कि प्राकृतिक संसाधन उनके अस्तित्व का आधार हैं।

प्रकृति पर्यटन स्थानों की सुरक्षा और रखरखाव के लिए आय की आवश्यकता होती है जिसका अधिकतर भाग प्रत्यक्ष रूप से प्रवेश शुल्क और उत्पादों की बिक्री से प्राप्त किया जा सकता है। पर्यटक पर्यावरण शिक्षा के लिए बहुत उपयोगी होते हैं अत: उन्हें पर्यावरण संबंधी शिक्षा देनी चाहिए कि उन्हें क्या करना है और क्या नहीं। पर्यटन को प्रकृति संरक्षण और ग्रामीण विकास का साधन बनाने के लिए स्थानीय जन समूह को पर्यटन उद्योग के विकास में सम्मिलित करने का संगठित प्रयास करना चाहिए। जैसे ही अधिकाधिक पर्यटकों का उद्यानों और आरक्षित क्षेत्रों में आगमन होने लगेगा। टूर ऑपरेटरों को अपने ग्राहकों की शिक्षा और उद्यान प्रबंध के लिए दान प्राप्ति के द्वारा इन क्षेत्रों के संरक्षणों में सक्रियता के साथ जुट जाने का अवसर मिलेगा।

पर्यावरणीय गतिविधियों के प्रति जन जागरुकता और जुड़ाव पैदा करने में स्थानीय लोक कलाओं से लेकर आधुनिक इलेक्ट्रानिक मीडिया की एक निर्णायक भूमिका होनी चाहिए। पर्यावरण के संबंध में जन जागरुकता पैदा करने और पर्यावरणीय गतिविधियों और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में लोगों का भागीदार बढ़ाने के लिए, पर्यावरण से जुड़ी शिक्षा की सामग्रों जुटानी होगी और आधुनिक जनसंचार माध्यमों को मजबूत बनना होगा ताकि पर्यावरणीय शिक्षा के लिए एक ऐसा संरचना तंत्र निर्मित किया जा सके जिसमें लोगों को शिक्षित किया जा सके और पर्वतीय स्थलों, समुद्री तटों, राष्ट्रीय उद्यानों, अभयारण्यों और बाघ अभयारण्यों आदि में आनेवाले पर्यटकों के लिए शिक्षा सामग्री भी उपलब्ध कराई जा सके।

बोध प्रश्न 2

1) उन महत्वपूर्ण पर्यटन कारकों का पता लगाइए जो पर्यावरण पर प्रतिकुल प्रभाव डालते हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यावरणीय ह्रास कोकम करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण उपाय बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6.5 सारांश

प्रकृति पर आधारित पर्यटन के कारण पर्यावरणीय मापदंड पर अक्सर खतरा मंडराने लगता है क्योंकि इस प्रकार का पर्यटन पर्यावरण के बहुत निकट होता है। सरकार लाभ कमाने के लिए पर्यटन का विकास करती है। जिससे पर्यटन उद्योग का विस्तार होता है। पर्यावरण और पर्यटन के बीच एक अन्तरांबंध पाया जाता है जो एक दूसरे के मापदंडों को प्रभावित करते हैं किन्तु यदि पर्यटन का विकास

अनियोजित और अनियंत्रित ढंग से हुआ तो कोई भी पर्यावरण पर उसके गंभीर कुप्रभाव को इंकार नहीं कर सकता। पर्यावरण पर पर्यटन के विकास के अनेक प्रभाव पड़ते हैं। अक्सर पर्यटक और पर्यटन को विकसित करने वाले स्थानीय, सामाजिक एवं प्राकृतिक जानकारी के अभाव में स्थानीय पर्यावरण के लिए विनाष्कारी सिद्ध होते हैं। समय और पैसा जैसे संसाधनों की कमी के कारण भी पर्यावरण पर बुरा असर पड़ता है। अतः पर्यावरण संरक्षण के लिए तत्काल आवश्यक उपाय करना अति आवश्यक है जैसे जन जागरुकता पैदा करना और संचार या ज्ञानप्रद प्रकाशनों जैसे पेम्पलेट, विवरणिका आदि के द्वारा पर्यटकों को पर्यावरणीय शिक्षा देना ।

6.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 6.2 के प्रथम दो पैराग्राफ के आधार पर अपना उत्तर लिखिए।

2) भाग 6.1 के अंतिम पैराग्राफ में उल्लिखित कारकों को प्रस्तुत कीजिए।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 6.3 का अंतिम पैराग्राफ देखिए।

2) अपना उत्तर भाग 6.4 के आधार पर लिखिए।

चित्र





इकाई 7 भारतीय दर्शन और पर्यावरण

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 प्रकृति की संकल्पना

7.3 मौखिक परम्पराओं में पर्यावरण

7.4 दार्शनिक ग्रथों में पर्यावरण

7.5 पर्यावरण और शास्त्रीय कला

7.6 दर्शन और संस्कृति : पर्यावरणीय अनुकूलन

7.7 सारांश

7.8 शब्दावली

7.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.0 उद्देश्य

पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा पश्चिम से उधार नहीं ली गई है बल्कि यह युगों से भारतीय जीवन शैली का अग रहा है। इस इकाई को पढ़ कर आप :

- भारतीय दर्शन में विश्लेषित पर्यावरण की अवधारणा से परिचित हो सकेंगे,
- भारतीय जीवन शैली में प्रकृति के साहचर्य को जान सकेंगे,
- पर्यावरणोन्मुख दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने में शास्त्रीय कलाओं का महत्व रेखांकित कर सकेंगे, और
- अपने दैनिक जीवन में पर्यावरण के साथ साहचर्य स्थापित कर सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हमारा उद्देश्य भारतीय दर्शन में व्यक्त पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता और समृद्धि से आपको परिचित कराना है। प्राचीन अतीत से भारतीय दर्शन ने पर्यावरण उन्मुख जीवन का समर्थन किया है। वह पर्यावरण के साथ मानव के सहभागी जीवन को महत्व देता है। पर्यावरण के तत्वों द्वारा ही उनकी समष्टि होती है और अंततः वे पर्यावरण में ही विलीन हो जाते हैं।

7.2 प्रकृति की संकल्पना

भारतीय चिंतन में पर्यावरण की कल्पना किसी भौतिक निर्जीव तत्व के रूप में नहीं की गई है–यह एक जीवित संसार है और मानव बहुत से जीवित प्राणियों में से एक है। यहां प्रकृति की बृहत समष्टि को समझने के लिए निरंतर प्रयास किया गया है। यहां मानव और गैर-मानव संसार के मध्य आपसी आदान-प्रदान और सामंजस्य को विशेष महत्व दिया गया है और इसे जीवन का महत्वपूर्ण निर्देशक सिद्धांत माना गया है।

भारतीय दार्शनिकों के अनुसार बुद्धि सम्पन्न होने के कारण पर्यावरण की सुरक्षा मनुष्य का मूल कर्तव्य है। इस प्रयास में पर्यावरण की कोमलता का भी ध्यान रखना चाहिए।

ये आदिकालिक ब्रह्माण्डीय दृष्टिकोण दो विभिन्न किंतु सम्बद्ध परम्पराओं में पूर्णत: समाविष्ट हैं– मौखिक एवं शाब्दिक। मौखिक परम्परा अधिकतर व्यवहार पर आधारित है जबकि शाब्दिक परम्परा विश्व का सम्पूर्ण और व्यवस्थित विश्लेषण प्रस्तुत करती है।

भारतीय शाब्दिक परम्परा कल्पना करती है कि मनुष्य शेष भौतिक विश्व के समान ऐसे तत्वों का बना हुआ है जो मृत्यु के पश्चात विघटित होकर प्रकृति में विलीन हो जाते हैं। सामान्यत: नौ तत्व होते हैं; पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, गगन, समय, दिशा, मस्तिष्क और मृदा। भारतीय पुराणों के अनुसार तत्वों की उत्पति कई चरणों में होती है। जल, पृथ्वी और आकाश पहले आते हैं ; समुद्री जीव और पक्षी दूसरी पंक्ति में आते हैं, पर भूमि का स्थान तीसरा होता है , वायु का स्थान इसके बाद आता है और अग्नि का आगमन अंत में होता है।

कुरान प्रकृति को अक्सर एक ऐसी भारतीय पुस्तक कहता है जो स्वयं कुरान का सूक्ष्म ब्रह्माण्डीय प्रतिरूप है। 18वीं शताब्दी के सूफी विद्वान अजीज अल नसफी प्रकृति की कुरान से तुलना करते हुए कहते है कि प्रकृति का प्रत्येक वर्ग कुरान की प्रत्येक सुराह, प्रत्येक जाति उसकी आयत और प्रत्येक प्राणी उसके एक अक्षर के समान है (एस. एच. नस्व, ऐन इन्ट्रोडक्शन टू इस्लामिक कॉस्मोलॉजिकल डॉक्ट्रीन, बेम्स एण्ड ह्डसन 1798)

भारतीय चिंतन स्पष्ट करता है कि पर्यावरण एक प्रदत्त अस्तित्व है, प्रकृति में उत्कष्ट है। वह अनुभव करता है कि समस्त प्रकार के जैविक या अ-जैविक पदार्थों में प्राण है। परस्पर सहयोग और निर्भरता पर विशेष बल दिया गया है और माना गया है कि मनुष्य का अकेले रहना संभव नहीं है। यह माना गया है कि पर्यावरण से मित्रतापूर्ण व्यवहार रखने से वह सबकी जरूरतें पूरी कर सकता है। वन में निवास करना बहुत अच्छा समझा जाता था जहाँ कोई भी पर्यावरण को उसके अति शुद्ध रूप में अनुभव कर सकता है। नगरीय केंद्रों में जो अप्राकृतिक और मानव निर्मित में रहने को दूसरा स्थान प्राप्त था। यह कल्पना की गई है कि पर्यावरण के साथ सामंजस्य बनाए रखने पर प्रकृति हर एक की आश्यकताओं को पूरा कर सकती है।

उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट है कि भारतीय दार्शनिक विचार के अनुसार प्रकृति बहुत से सजीव और निर्जीव तत्वों की जटिल अन्त: क्रिया का एक समूह है।

7.3 मौखिक परम्पराओं में पर्यावरण



मौखिक परम्पराओं से ज्ञान के अशास्त्रीय रूप का पता चलता है। उनसे हमें उन समाजों को समझने का अवसर भी मिलता है जिनके बारे में पर्याप्त लिखित सामग्री प्राप्त नहीं है। दिन प्रतिदिन के मानव वार्तालाप में आदिकाल के समाज की झांकियां मिलती हैं।

भारत की मौखिक परम्परा में पर्यावरण को एक ऐसे जीव के रूप में कल्पना की गई है जो सांस लेता है, अनुभव करता है और सुरक्षा प्रदान करता है, आदि। पर्यावरण हमारा मित्र है। पर्यावरण के विभिन्न घटकों को विशेष स्थान दिया गया है इसका अर्थ है कि पर्यावरणीय शक्तियों के प्रति नम्र रवैया अपनाया गया है। अक्सर इस रवैये को धार्मिक अनुष्ठान का रूप दे दिया जाता था।

भारत की मौखिक परम्परा में कथा का विशेष महत्व है और इसमें ज्यादातर कथाएं पशु-पक्षियों से जुड़ी हैं। पशुओं की बहुत सी विशेषताओं की पहचान की गई है और उन्हें इस प्रकार उपयोग में लाया गया है जैसे वे प्राकृतिक विशेषताएं हों। कई कहानियों में वनस्पतियों का भी उल्लेख किया हुआ है। यह बात सदैव ध्यान रखी गई है कि मानव अस्तित्व केवल वनस्पति समूह के द्वारा ही संभव है। धार्मिक ग्रथों द्वारा यह भी पता चलता है कि विभिन्न अवसरों पर अलग-अलग पशुओं और वनस्पतियों की पूजा उनके अस्तित्व की रक्षा की लिए के जाती थी।

यदि वह स्वर्ग होगा, तू जानेगा की प्रकृति, हर वस्तु के समान, हर स्थान पर सादृश है। (ए फ्रेन्दे डी आलूइवेट, द गोल्डेन वर्सेस ऑफ पाइथा गोरस न्यूयार्क 1917)

मौखिक परम्परा में पारिस्थितिकी मानव प्रकृति को एक ऐसे सत्य के रूप में देखता है जिसका वह प्रत्येक स्तर पर अविभाज्य अंश है। मौखिक देव कथाओं में, मनुष्य की उत्पति का विशेष स्थान नहीं दिया गया है। उसे अपने आप ज्ञान भी नहीं मिला। सामान्यत: मौखिक परम्परा के अनुसार ज्ञान पशुओं और पक्षियों से मिला। प्रकृति प्रेमी मानव ने पूरी सृष्टि के बाद जन्म लिया। वह ज्ञान का सृष्टा नहीं है। ब्रह्माण्डीय बुद्धिमता ज्ञान का स्वत: विद्यमान स्रोत है।

प्राचीन भारतवासियों की मौखिक परम्परा और ज्ञान के अनुसार पृथ्वी दो आधे भागों में विभाजित थी। आकाश और पृथ्वी। आकाश से परे एक दुनिया और भी थी और एक दूसरी पृथ्वी के नीचे। पाँचो तत्व दोनों एक दूसरे को रचना की दृष्टि से ढके हुए हैं। इसी प्रकार की रचनाएं दूसरे विश्व में भी हैं इससे स्पष्ट होता है कि मानव जीवन के जैविक और सामाजिक पक्ष प्राचीन भारतीय मौखिक परम्परा में किस प्रकार पर्यावरण के समग्र दर्शन में शामिल किए गए थे।

7.4 दार्शनिक ग्रन्थों में पर्यावरण

पश्चिमी धर्मो और नैतिक है परम्पराओं की पर्यावरण के विषय में केंद्रीय स्थिति अधिकतर निरंकुश एवं मानव केंद्रित रही है। अत: हर चीज की सृष्टि जो प्रकृति में मौजूद है मानव जाति के लिए की गई है। मानव जाति के व्यवहार पर कोई नैतिक प्रतिबंध नहीं है।

भारतीय लिखित परम्परा पर्यावरण की कल्पना एक व्यवस्था के रूप में करती जिसने अनेक जैविक और अजैविक तत्वों के जटिल अन्त: संबंधों में तालमेल स्थापित कर लिया है। अजैविक संसार की कल्पना भी ऐसे प्राणी से की गई है जिसमें आत्मा का निवास है। यह एक बहुत महत्वपूर्ण धारणा थी क्योंकि इसमें मानव के दूसरे तत्वों के समान रखा गया है। भारतवासियों के इस दृष्टिकोण से यह स्पष्ट होता है कि विश्व समस्त तत्वों के मध्य स्नेहपूर्ण संबंध है। अपने पर्यावरण के विभिन्न घटकों के महत्व को स्पष्ट करने के लिए बहुत से अनुष्ठान बनाए गए। इन अनुष्ठानों ने यह सुनिश्चित कर दिया कि हम अजैविक विश्व का भी ध्यान रखते हैं और उनसे समन्वय बनाए रखते हैं। उदाहरणार्थ अग्नि को ईश्वर का दूत माना जाता है।

पृथ्वी को मातृ देवी समझा जाता है। आकाश की पूजा पिता के रूप में की गई है। पृथ्वी पूजन शीला पूजन के रूप में भी प्रचलित है। भारतीय दार्शनिक विचारों में गैर-मानव जीवित संसार को भी महत्व दिया गया है। मानवीकरण की एक सम्पूर्ण परम्परा है जिसमें विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों और पशु जीवों को विशिष्ट स्थान दिया गया है। पशुपति महादेव के पूजन की प्राचीन कथा ऐसा ही एक उदाहरण है।

मानवीकरण ईश्वर, पशु, वनस्पति आदि को मानव रूप में प्रकट करना।

पंचतंत्र की कथाओं में भी जीव जगत को विशेष स्थान प्राप्त है। पशुओं का मानवीकरण किया गया है। पशु-पक्षियों को केवल भाषा ही नहीं वरन मानव की संवेदनशीलता और बुद्धिमता से भी मुक्त किया गया है। इसमें पशु जगत की विशिष्टताओं के माध्यम से समस्याओं को उजागर करके मानव जाति को शिक्षा देने का प्रयास किया गया है। पशुओं की बहुत विशेषताओं की पहचान कर बड़ी सुंदरता के साथ उन्हें इन कथाओं में इस्तेमाल किया गया। गऊ की पूजा की जाती है। वृक्षों को पूजा जाता है। विभिन्न पशु-पक्षियों को अलग-अलग देवी और देवताओं का वाहन बनाया गया ताकि इनकी उपयोगिता और उनकी स्थिति उजागर की जा सके और उनकी रक्षा की जा सके।

एक क्षीण पश्चिमी परम्परा है जो टियूबर्ड शिप ट्रेडीशन कहलाती है। इसके अनुसार पृथ्वी की देख रेख की जिम्मेवारी मानवता पर है और वह ईश्वर के प्रति उत्तरदायी है।

भारतीय दर्शन में अनेक वनस्पतियों और जीवों की प्रजातियां और पर्यावरण में मानव के साथ उनके विशेष स्थान को भी उजागर किया गया है। सम्पूर्णता का वह विचार भारतीय दर्शन की एक महान उपलब्धि है।

बोध प्रश्न 1

1) मौखिक परम्परा में मानव और प्रकृति के मध्य संबंधों को कैसे समझा गया है ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्रकृति की दार्शनिक व्याख्या से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

7.5 पर्यावरण और शास्त्रीय कला



भारतीय परम्परा के अनुसार 'कला' तीन सामसिक पक्षों से मिलकर बनी है। ये सब एक दूसरे के अनुपूरक हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। प्राथमिकता के अनुसार क्रम निम्नवत है :

- प्रथम स्थान प्रतिभा या उत्प्रेरित दृष्टि का है,
- दूसरे स्थान पर व्युत्पन्न, या कवि के अध्ययन के साधन, और
- अंतिम, अभ्यास या प्राविधि का परिश्रमपूर्ण अभ्यास, या कला विशेष से सम्बद्ध किसी गुरू के मार्गदर्शन में हस्तकारी या तकनीक का अभ्यास।

आचार्यों ने व्युत्पन्न की व्याख्या करते समय पर्यावरण पर विचार किया है। उन्होंने इसके लिए लोक शब्द का प्रयोग किया है जिसका अर्थ है जैविक और अजैविक अस्तित्व का वैविध्यपूर्ण असीम संसार।

भारतीय दर्शन में सामान्य रूप से विश्वास किया जाता है कि प्रत्येक रचनात्मक कार्य प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रकृति के सम्पर्क में आने से सम्पन्न होता है। प्रकृतिक सौंदर्य को देखकर कलात्मक अभिव्यकि की भाषा निर्मित होती है। यहां तक कि प्रकृति में छोटे से छोटा अंकुर कलाकार के उल्लास का प्रेरण स्रोत बन जाता है। प्रकृति में किसी वस्तु को व्यर्थ नहीं समझा जाता। कला, व्यक्ति, परिवार, गाँव और इस प्रकार सम्पूर्ण पर्यावरण का जीवित अंश बन जाता है।

शिव का नृत्य पारिस्थितिकी की सम्पूर्ण व्याख्या है। अग्नि और मृग उनके प्रतीक हैं। वन उनकी लटें हैं, स्वयं गंगा (जल) उनमें समाहित हैं। सूर्य और चंद्र उनकी जटाओं की शोभा बढ़ाते हैं। साँप उनकी मालाएँ हैं। बाघ की खाल उनका परिधान है। वे अपने डमरू की बह्माणीय लय से सृष्टि की अविराम चक्रीय प्रक्रिया, अध:पतन; पुनरूद्धार और अंतत: इस संसार में ज्ञानोदय लाते हैं। शक्ति उनकी ऊर्जा है जिनके बिना वे अपूर्ण हैं। वे स्वयं जो हिमालय की पुत्री हैं जो तप और संयम की प्रतिमूर्ति हैं। यहां पर्यावरण से एकात्मकता के साथ अनुशासन और तंयम पर भी बल दिया गया है।

7.6 दर्शन और संस्कृति : पर्यावरणीय अनुकूलन

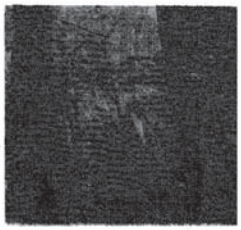

किसी ऐतिहासिक या दार्शनिक विवाद में न पड़ते हुए यह कहा जा सकता है कि एक सिद्धांत ऐसा है जो भारतीय दर्शन में एकता, दृष्टि में निरंतरता और प्रत्यक्ष ज्ञान को सुनिश्चित करता है और वह सिद्धांत है कि मनुष्य पूरी सृष्टि का एक अंश मात्र ही है। मनुष्य का जीवन उन सारी चीजों पर निर्भर है जो उसे चारों तरफ से घेरे हुए हैं जैसे निर्जीव खनिज और सजीव जलीय, वनस्पतिक और गैसीय जीवन। ये सारी चीजें उसका पोषण करती हैं अत: मनुष्य का यह कर्तव्य है कि वह स्वयं को निरंतर पर्यावरण और पारिस्थितिकी की याद दिलाता रहे।

भारतीय दर्शन या विश्व की अन्य प्राचीन सभ्यताओं एवं संस्कृतियों के अनुसार पृथ्वी पर जीवन का आरंभ उस शाश्वत जलीय जीवन से प्रकट होता है जो अग्नि की शक्ति पर नियंत्रण रखता है। कदाचित हमने इस पुराण कथा पर विचार नहीं किया है, ऊपर से तो यह स्वप्न जैसा कल्पित लगता है किंतु इसका अर्थ और महत्व उसके द्वारा बताए गए प्रकृति संबंधी तथ्य में निहित है। भारतीय विज्ञान और दर्शन और इसी प्रकार संस्कृति भी सृजन की निरंतर गति ब्रह्माण्ड अद्य:पतन एवं पुनर्जीवन की अभिधारणा के विकास पर आधारित है

समस्त परम्परागत समाजों की रचना चार स्तरीय नियंत्रण व्यवस्था पर आधारित है जो मानव जीवन, उसके अस्तित्व और आकांक्षाओं को अनुशासित करती है। जीवन चार क्रमिक चरणों (आश्रमों) ब्रह्मचर्य, गृहस्थ्य, संन्यासी और वानप्रस्थ में विभाजित है। हालांकि ऊपरी तौर पर अपनी प्रकृति में वे एक दूसरे से अलग हैं फिर भीं इनमें आपसी आदान-प्रदान चलता रहता है और ये एक दूसरे को शक्ति प्रदान करती हैं। जीवन का चार स्तरीय अनुशासन पुरुशार्थ कहलाता है, अर्थात एक सांस्कृतिक व्यक्ति पुरुष का निर्माण। चेतना के उच्चतर स्तर पर यह सांस्कृतिक व्यक्ति ब्रह्माण्डीय व्यक्ति (पूर्ण) में रूपांतरित हो जाता है।

बोध प्रश्न 2

1) पर्यावरण और सृष्टि सर्जनात्मक के मध्य अंतर को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) परम्परागत भारतीय जीवन शैली को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

7.7 सारांश

इस इकाई को पढ़ने के बाद हम जान गए है कि भारतीय दार्शनिक परम्पराओं में पर्यावरणीय समस्याओं के विस्तारण हेतू उचित व्यवस्था उपलब्ध है।

के रूप में हम यह कह सकते हैं कि मानव प्रकृति पदार्थों, प्राणियों एवं वनस्पति जगत से जुड़ा हुआ है। जिस पर्यावरण में वह रहता है, वह कोई पराया पर्यावरण नहीं होता। वह सदैव उसे अपना समझता है, जहां वह औरों की तरह सांस लेता है किंतु उन्हें औरों से भिन्न अभिव्यक्ति और वाणी की विशिष्ट क्षमता प्राप्त है। वास्तव में मानव को हमेशा से पदार्थों, प्रकृति की शक्तियों का मूर्तरूप माना गया है और पशु तथा वनस्पति जीवन से उसका संबंध स्थापित किया जाता रहा है। इससे निरंतर विकासमान आधुनिक दुनिया को देखने का एक नया दृष्टिकोण प्राप्त होता है।

7.8 शब्दावली

ब्रह्माण्ड : विश्व (ब्रह्माण्ड) एक अनुशासित समष्टि

ब्रह्माण्डीय केंद्रक : विश्व के केंद्रीय सत्य के रूप में

संकेंद्रीय : मानव और पारिस्थितिकी जीवन के केंद्रीय सत्य के रूप में

7.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) मौखिक परम्परा स्पष्ट करती है कि मानव प्रकृति का एक भाग है। वह अपने पर्यावरण के साथ भागीदारी करता है। वह अपने पर्यावरण का सृष्टिकर्ता है और मृत्यु के बाद पर्यावरण में विलीन हो जाएगा।

2) दार्शनिक स्पष्टीकरण के अनुसार प्रकृति की रचना पाँच मूल तत्वों से हुई है। उसके अनुसार मनुष्य और प्रकृति सकेंद्रीय हैं अर्थात उनकी सृष्टि एक ही पदार्थ से हुई है। वह यह भी उजागर करता है कि प्रकृति मूलरूप से इंद्रियातीत है।

बोध प्रश्न 2

) पर्यावरण और सृष्टि के मध्य बहुत गहरा संबंध है। सृष्टि का अर्थ है किसी चीज की रचना को पुन: परिभाषित करना। भाग 7.5 देखिए।

) परम्परागत भारतीय जीवन शैली मानव और प्रकृति के सह अस्तित्व को महत्व देती है। यह सम्पूर्ण अस्तित्व का एक अंश मात्र है जिसमें चिंतन क्षमता भी है।

ए खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

र. कर्सन : द सी एराउण्ड अस, ओ यू पी न्यूयार्क ,1951

र. कर्सन : साईलेंट स्प्रिंग, हाउटन मिफलिन, न्यूयार्क 1962

र. मैश : द राईट्स ऑफ नेचर, यूनिवर्सिटी ऑफ विस्कान्सिन प्रेस मेडिसन, 1989

ध्रुव गाडगिल और रामचंद्र गुहा : द फीशर्स लैण्ड, ऐन इकॉलॉजिकल हिस्ट्री, ऑफ इंडिया, ओ यू दिल्ली.1992

ानिवास मिश्र (संपादित) : क्रीएटिविटी एण्ड इन्वायरॅनमेंट, साहित्य अकादमी नई दिल्ली.1992

ेस वुल्फगैंग(संपादित) ऑस्पेक्टस ऑफ इकॉलॉजिकल प्राब्लेम्स एण्ड इन्वायरमेंट अवेयरनेस इन साउथ एशिया नई दिल्ली. 1993

इस खंड के लिए अभ्यास

अभ्यास-1

स्थानीय पुस्तकालय जाइए या अपने क्षेत्र के वयोवृद्ध व्यक्तियों से भेंट कीजिए जो प्रकृति का गुणगान करते हैं, प्रत्येक के विषय में उनका अर्थ समझाते हुए एक एक पैराग्राफ लिखिए।

अभ्यास-2

अभ्यास 1 की तरह प्रकृति का पर्यावरण से सम्बद्ध लोक कथाओं को संग्रहित कीजिए और इनमें से किन्हीं दो का हिंदी/अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए।

अभ्यास-3

प्रकृति और पशुओं की पूजा पर आधारित स्थानीय रीति रिवाजों/अनुष्ठानों की सूची बनाइए।



NOTES

NOTES

खंड

3

पर्यावरणीय समस्याएँ एवं पर्यटन विकास

इकाई 8

पर्यावरण और विकास 5

इकाई 9

विकास की धारणाएँ 11

इकाई 10

उत्तरदायी पर्यटन-लाभ 18

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें 26

इस खंड के लिए अभ्यास 27

विशेषज्ञ समिति

श्री अजय माहुरकर
इतिहास संकाय
इ.गां.रा.मु.वि.

श्री अलोक चंद्रोला
टूरिज्म कंसलटेंट
नई दिल्ली

श्री आशीष कुमार सिंह
मैनेजिंग डायरेक्टर
केरल टूरिज्म डेवलेपमेंट
कारपोरेशन

डॉ. गीता केकर
विज्ञान विद्यापीठ
इ.गां.रा.मु.वि.

डॉ. इकबाल मलिक
निदेशक, वातावरण
नई दिल्ली

श्री जहांगीर भंडियाली
जेनेरल मैनेजर
वेलकम ग्रुप होटल्स
औरंगाबाद

डॉ. जसवंत सोखी
विज्ञान संकाय
इ.गां.रा.मु.वि.

प्रो. कपिल कुमार
निदेशक
सेंटर फॉर एक्सटेंशन
एडुकेशन
इ.गां.रा.मु.वि.

श्री के.टी. सुरेश
कोआर्डिनेटर, इक्वेशन
बंगलूर

सुश्री लतिका नाथ
वर्ल्ड लाइफ फाउंडेशन, देहरादून

श्री मीना राव
हेड डिपार्टमेंट ऑफ
टूरिज्म, कॉलेज ऑफ
वोकेशनल स्टडीज
नई दिल्ली

श्री प्रदीप सांखला
मैनेजिंग डायरेक्टर
डायनेमिक्स टूर एंड
ट्रैवेल्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

श्री पी. राज
डायरेक्टर
क्लाइंट सर्विसेज बीबीडीओ
वर्ल्ड वाइड नेटवर्क त्रिवेंद्रम
मुम्बई

डॉ. रवीन्द कुमार (संयोजक)
इतिहास संकाय
इ.गां.रा.मु.वि.

कार्यक्रम संयोजक : प्रो. कपिल कुमार

पाठ्यक्रम दल :

डॉ. रवीन्द्र कुमार
श्री अजय माहुरकर
डॉ. गीता केकर
} पाठ्यक्रम संयोजक

डॉ. जसवंत सोखी
श्री सलिल मिश्र
प्रो. कपिल कुमार

खंड निर्माण दल

इकाई सं.	लेखक	संकाय सदस्य
8	सुश्री आर. राज सेंटर फॉर साइंस एंड इन्वायरनमेंट नई दिल्ली	इ.गां.रा.मु.वि. डॉ. रवीन्द्र कुमार
9	श्री मयंक कुमार सत्यवती कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	डॉ. रवीन्द्र कुमार
10	सुश्री मोना सेंधवाल रिसर्च स्कालर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली	प्रो. कपिल कुमार

खंड संयोजक
डॉ. रवीन्द्र कुमार

अनुवाद

श्री मोहम्मद अमीर
के.के. कालेज, इटावा

संकाय संदस्य
डॉ. अहमद रज़ा खाँ
इ.गां.रा.मु.वि.

सामग्री निर्माण

प्रो. कपिल कुमार
निदेशक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

जुलाई 1998
© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 1998

ISBN-81-7605-362-7
सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुन: प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

NMDC-210
BTS-05/114

खंड-3 पर्यावरणीय समस्याएँ एवं पर्यटन विकास

पर्यटन के विकास के कारण पिछले कुछ दशकों में पर्यावरणीय सुरक्षा ने एक केंद्रीय मुद्दे के रूप में विशेष कर अब तक अनन्वेषित क्षेत्रों में इस प्रकार के विकास के कारण सार्वभौम चिंता में वृद्धि की है। खंड-3 में इस मुद्दे पर विचार किया गया है और अन्य विकासीय कार्यों के साथ पर्यटन की सीमाओं को भी वर्णित किया गया है। इस खंड में तीन इकाइयाँ हैं।

इकाई 8 में पर्यावरण और विकास के सामान्य मुद्दे पर चर्चा की गई है। यहाँ पर्यावरण और विकास के तथ्यों का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया गया है ताकि इस इकाई के परवर्ती भाग में इन दोनों के समस्यात्मक संबंधों पर विचार किया जा सके।

अगली इकाई अर्थात् **इकाई 9** विकास की धारणाओं और पर्यटन को विकास के मध्य अंतरसंबंधों के विशिष्ट प्रश्न की तह तक पहुंचने का प्रयास है। ये इकाई विभिन्न विकासीय धारणाओं की पर्यटन विकास के तथ्य के संदर्भ में, तुलनात्मक उपयोगिता पर भी विचार करती है।

अंत में हमारी **इकाई 10** है जिसमें उत्तरदायी पर्यटन और उसके लाभों पर विचार किया गया है। इस इकाई में निर्वाह योग्य पर्यटन की कई दृष्टिकोणों से समीक्षा की गई है।

हम आशा करते हैं कि इस खंड के अध्ययन के बाद आप पर्यटन विकास और संबद्ध पर्यावरणीय चिंताओं के मध्य वाद-विवाद से संबंधित मुद्दों की तह तक पहुंचने में समर्थ हो सकेंगे।



इकाई 8 पर्यावरण और विकास

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य
8.1 प्रस्तावना
8.2 पर्यावरण
8.2.1 जीवमण्डल में मानव का स्थान
8.2.2 संसाधनों का शोषण
8.3 विकास
8.4 समस्यात्मक संबंध
8.4.1 जनसंख्या
8.4.2 सामाजिक कठिनाइयाँ
8.4.3 पारिस्थितिक समस्याएँ
8.5 सारांश
8.6 बोध प्रश्नों के उत्तर



8.0 उद्देश्य

इस इकाई में पर्यावरण और विकास के मध्य संबंधों पर विचार किया गया है। इस इकाई का ध्यानपूर्वक अध्ययन आपको निम्न मुद्दों को समझने में सहायता करेगा:

- हमारी विकासीय आवश्यकताएँ और संबद्ध पर्यावरणीय चिंताएँ, और
- विकास को पर्यावरण से जोड़ने में किन-किन सामाजिक एवं पारिस्थितिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

8.1 प्रस्तावना

लोगों को अपने पर्यावरण के साथ पारस्परिक क्रियाओं के समय समस्याओं का सामना करना पड़ा जिन्होंने अतीत में विशिष्ट लोगों को विशिष्ट प्रकार से प्रभावित किया है। इसके विपरीत वर्तमान में विकासीय कार्यों की अत्यधिक वृद्धि को पर्यावरणीय क्षय के लिए उत्तरदायी माना जा रहा है।

पर्यावरणीय समस्याओं का चित्रण प्राय: ऐसी समस्या के रूप में किया जाता है कि हम एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था को बनाने में असमर्थ रहे हैं जो नई तकनीकी को नियंत्रित कर सके। ये चुनौती आमतौर से उन लोगों के लिए समस्या मानी जाती है जो अधिक उपयुक्त प्रौद्योगिकी का अविष्कार करना और अपनाना चाहते हैं। संघटनात्मक संरचना के ऐसे समन्वयन पर अधिक ध्यान नहीं किया गया कि लोग पर्यावरणीय दृष्टि से लाभप्रद कार्यों में भागीदारी करें। इससे यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि विकास से संबंधित समस्याएँ केवल प्रौद्योगिकी की समस्याएँ नहीं हैं बल्कि इसका और विस्तृत अर्थ है। इसलिए यह उचित होगा कि इस इकाई के आने वाले अनुभागों में कुछ विस्तार से पर्यावरण और विकास के मध्य अंतरसंबंधों पर विचार विमर्श किया जाए।

8.2 पर्यावरण

खंड-1 में हमने आपको अपने पर्यावरण की विशिष्ट रूपरेखा से विस्तार के साथ अवगत करा दिया है। यहाँ पर मानवीय कार्यकलापों और जीवमंडल के मध्य अंतरसंबंधों पर बल दिया गया है।

कुछ पर्यावरणीय संसाधन हैं: खनिज और इंधन, वन और पशुचारण, मत्स्यन आदि।

जीव मंडल एक ऐसा तंत्र है जिसमें द्रव्य का निरंतर पुन: प्रयोग और साथ ही सौर ऊर्जा का प्रवाह होता है। इससे कुछ बड़े अणु और कोशिकाएँ स्वयं जन्म लेती हों और परिवर्तित होती रहती हैं। जल पहले से ही व्यवसित एक महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि सम्पूर्ण जीवन इसी पर आश्रित है। ऊर्जा प्रवाह जीवों की संरचना को फ़ॉस्फ़ेट बंध के बनने और टूटने के द्वारा बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

इसे दूसरे रूप में व्यक्त किया जाए तो जैविक अथवा सप्राण अंगों में ऊर्जा प्राप्ति की विधियों के आधार पर जीवों के तीन सामान्य वर्ग हैं। ये हैं:

- प्राथमिक उत्पादक जैसे अधिकांश हरे पौधे,
- उपभोक्ता जिसमें सारे प्राणी सम्मिलित हैं, और
- अपघटक जिसमें सूक्ष्म जीव जो पौधों और प्राणियों के अवशेषों को जीवमंडल में पुन: चक्रित किये जाने के लिए सरल घटकों में विखंडित कर देते हैं।

8.2.1 जीवमंडल में मानव का स्थान

लगभग 3,000,000 वर्ष या इससे अधिक समय से मनुष्य अपने चारों ओर के जीवों के साथ उचित संतुलन के साथ रह रहा है। यद्यपि उन्होंने अपने आस-पास के पौधों और पशुओं का उपयोग किया फिर भी अवमूल्यन का विस्तार सीमित और प्रतिवर्ती था क्योंकि उनकी संख्या सीमित थी। 10,000 वर्ष से अधिक बीते जब मनुष्य ने पौधों को उगाना सीखा। इसे एक बड़ी सफलता समझा गया जिसने उन्हें साधारण जीवन निर्वाह के परिश्रम से स्वतंत्र कराया। यहीं से मानवीय कार्यकलापों के परिणाम इन सीमित कार्यक्षेत्रों की सीमाओं के पार निकलने लगे। अपनी प्रवीणता और प्रतिभा के कारण उन्होंने:

- कोयला और तेल जलाकर ऊर्जा का उपयोग करना सीखा
- ऐसी मशीनों का निर्माण किया जो उनके हाथों के श्रम को बहुत बढ़ा दे,
- धातुओं का प्रयोग और नए मिश्रधातुओं को बनाना प्रारंभ किया।

उसी समम उन्होंने चयन करके अच्छी और विकसित फ़सलों और विकसित पालतू पशुधन की पैदावार शुरू की। इन विभिन्न प्रवीणताओं और व्यवहारिकताओं के कारण मनुष्य के सार्वभौमिक प्रसार को प्रोत्साहन मिला।

8.2.2 संसाधनों का शोषण

20वीं शताब्दी के प्रारंभ तक प्राकृतिक संसाधनों को उपयोगी वस्तुओं के रूप में देखा जाता था। वे 'पर्यावरण' में ऐसे कच्चे पदार्थ थे जो मानव द्वारा आधार के रूप में, वन्य जीवों के लिए या किसी न किसी कार्य हेतु उपयोग में लाए गए या उपयोग में लाए जाने योग्य थे। इस शब्द का उपयोग आज भी हो रहा है चाहे सीमित संदर्भ में ही हो। निकट अतीत में प्राकृतिक संसाधनों की धारणा को इतना व्यापक रूप दिया गया कि उसने सम्पूर्ण पर्यावरण-भूधरा की सम्पूर्ण सतह को सम्मिलित कर लिया क्योंकि पृथ्वी की सम्पूर्ण सतह के सारे भाग उपयोग किए जाने योग्य और मानवों के लिए कीमती हैं। इस संदर्भ में देखा जाए तो वायुमंडल, महासागर, मरुस्थल और ध्रुवीय क्षेत्रों के सभी संसाधन मूल्यवान दिखाई देते हैं और मानव जाति द्वारा उनका शोषण पहले भी किया जाता रहा है और अब भी किया जा रहा है।

बोध प्रश्न 1

1) पर्यावरण से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) मानव किस प्रकार पर्यावरण से संबद्ध है ?

.....

.....

.....

.....

8.3 विकास

आपने पढ़ा कि मानव जाति के विकास ने किस प्रकार अपने चारों ओर प्राकृतिक पर्यावरण से आदान-प्रदान किया। ये ध्यान देने योग्य बात है कि इसकी मौलिक धारणा अर्थात् विकास का विचार, नैतिक उन्नति के साथ संबद्ध था। फिर भी प्रगति ने धीरे-धीरे आने वाली शताब्दियों में नैतिक दृष्टिकोण को खो दिया।

मानव आवश्यकताओं के लिए प्राकृतिक संसाधनों की अत्यधिक बढ़ी हुई मांग 18वीं शताब्दी के अंतिम अर्धभाग में और 19वीं शताब्दी के प्रथम आधे भाग में औद्योगिक क्रांति के रूप में सामने आई। मनुष्य अब कोयले की अत्यधिक मात्रा का उपयोग करने लगा। यही नहीं यूरोप की कृषि नीति में 17वीं और 18वीं शताब्दी में क्रांतिकारी परिवर्तन आए। ये प्रगति कृषि क्रांति कहलाई। एक ओर तो इसने धरातल की उत्पादकता को बढ़ा दिया और दूसरी ओर कृषि कार्य में लगी जनसंख्या के बड़े भाग को मुक्त कर दिया। ये लोग जो खेतों से उठाए गए रोज़ी की खोज में नगरों की ओर आ गए। इस निर्गमन के कारण अतिरिक्त आहार की आवश्यकता हुई और फलस्वरूप कृषि अर्थव्यवस्था पर भार अधिक बढ़ गया। रासायनिक पदार्थों और परिष्कृत कृषि यंत्रों तथा ईंधन ऊर्जा का अधिक निवेश इस प्रक्रिया के कुछ प्रमुख परिणाम हैं। इसके अतिरिक्त चूंकि विलास की वस्तुओं का उत्पादन और बर्बादी दोनों ही बहुत अधिक थी अत: संसाधनों का सारा उपयोग केवल आवश्यकताओं के लिए ही नहीं था। इस व्यवहार में परिवर्तन के साथ एक प्रकार का 'लोकतंत्रीकरण' प्रारंभ हुआ। ये 'लोकतंत्रीकरण' राजनैतिक क्षेत्र में, सामाजिक क्षेत्र में और विशेषकर प्राकृतिक के संसाधनों के शोषण के अधिकार के रूप में व्यक्त हुआ। इससे अब साधारण व्यक्ति को भी प्राकृतिक संसाधनों तक पहुंचने और उपयोग का अधिकार प्राप्त हो गया है। ये विकास की उनकी उस धारणा से संबंधित था जिससे उन्हें विलासप्रिय जीवन की आशा थी।

19वीं शताब्दी के अंत तक जनमानस की उन्नति की धारणा संस्थापित हो चुकी थी और आर्थिक विकास का शब्द इस्तेमाल में लाया जाने लगा था। ये शब्द उन्नति की संभावनाओं में विश्वास के लिए और विकास के कार्यान्वयन की अभिन्न प्रक्रिया के संदर्भ में उपयोग किया गया।

हर पग जो विकास के क्षेत्र में आगे बढ़ाया गया पर्यावरणीय निम्नीकरण में योगदान का कारण बना। गत शताब्दी में विकास पर्यावरण के लिए इतना विनाशकारी क्यों सिद्ध हुआ है इसके कई विचारपूर्ण स्पष्टीकरण प्रस्तुत किए गए हैं:

1) कुछ प्रकृति विज्ञानियों ने तर्क दिया है कि जब मानव जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही हो तो पर्यावरणीय विनाश अवश्यंभावी है।

2) कुछ दूसरे इस बात पर बल देते हैं कि बहुत सी नई वस्तुएं ये समझे बिना पर्यावरण में प्रविष्ट करा दी गई कि उनका मानवों के अतिरिक्त दूसरी जातियों पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

3) अर्थशास्त्री तर्क करते हैं कि उत्पादक और उपभोक्ता इस प्रकार व्यवहार करते हैं जिसे सही स्थापित नहीं किया जा सकता क्योंकि बाजार के मूल्यों में पर्यावरणीय मूल्य सम्मलित नहीं होते, आदि

इन अनुशासनिक स्पष्टीकरणों के अतिरिक्त इस बात की अधिक व्यापक दार्शनिक व्याख्या भी है कि विकास और उसकी परिणामी आधुनिकता पर्यावरण के ह्रास का कारण क्यों बनी। हालांकि हम यहाँ उसकी विस्तृत व्याख्या नहीं करेंगे। हमारे द्वारा प्राप्त किए गए विकास ने न केवल हमारे पर्यावरण को जो एक जटिल तंत्र है अशांत किया है बल्कि सामाजिक प्रारूप/मानवीय संबंधों को भी अस्तव्यस्त किया है जो स्वयं बहुत जटिल तंत्र है।

8.4 समस्यात्मक संबंध

अब इस विषय पर विश्वव्यापी सहमति है कि पृथ्वी पर्यावरणीय संकट का सामना कर रही है। निसंदेह इस संकट का कारण वह विधि है जिसके अनुसार विश्व में औद्योगिक और प्रौद्योगिक विकास हुआ है। मूल प्रश्न यह है कि मानवीय उर्वरता असीम है जबकि मानवीय जीवन का भरण पोषण करने वाली पृथ्वी के संसाधन सीमित हैं। संबद्ध समस्या यहां मनोवृत्ति की है जहां 'आवश्यकताएँ' जीवन शैली की अपेक्षा बहुत अधिक है। इन दोनों ही बातों की हम सविस्तार चर्चा कर चुके हैं। अब हम पर्यावरण और विकास के मध्य समस्यात्मक संबंधों प्रकृति और परिमाण को समझने का प्रयास करेंगे।

> संसाधनों में अधिक हिस्सेदारी की इच्छा पर्यावरण के लिए समस्या पैदा कर सकती है यदि मनुष्यों की जनसंख्या अधिक हो और अपने पूर्वजों की अपेक्षा अधिक उच्चतर स्तर पर जीवन निर्वाह करने की अभिलाषा रखते हों।

इस स्थिति में प्रौद्योगिकी आधारित विकास को आधुनिक सभ्यता की इस चुनौती का सामना करना पड़ेगा कि समाज के लिए उपलब्ध अपार शक्ति का उपयोग कैसे किया जाए इसके लिए एक या कई निर्णय करने पड़ेंगे। प्रौद्योगिक विकास को रचनात्मक सामाजिक लक्ष्यों की दृष्टि से उपयोग करने के लिए व्यवसित करना आज अतीत की अपेक्षा अधिक जरूरी है ताकि लक्ष्यों को परिभाषित किया जा सके और प्रौद्योगिकी पर आधारित पर्यावरण तथा विकास के मध्य वर्तमान संबंधों को संशोधित किया जा सके।

इन समस्याओं और इनसे संबद्ध सामाजिक लक्ष्यों का तीन स्पष्ट शीर्षकों के अंतर्गत अध्ययन किया जा सकता है।

- इसमें सर्वप्रथम जनसंख्या है
- दूसरे स्थान पर वह सामाजिक कठिनाईयाँ हैं जो जीवन पर परम्परागत सामाजिक तंत्र में परिवर्तन लाई है और जिनका जन्म प्रौद्योगिकी के कारण हुआ है।
- अंततः उन्नत प्रौद्योगिकी पर आधारित विकास के कारण पैदा होने वाली पारिस्थितिक समस्या है जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरण में प्रदूषण होता है और प्राकृतिक शक्तियों के पुनरुत्पादन के कोमल संतुलन को बिगाड़ देता है।

8.4.1 जनसंख्या

यदि आने वाली शताब्दी में इस पृथ्वी पर जीवन को संतोषजनक बनाना है तो विश्व को इस शताब्दि के अंत तक जनसंख्या की समस्या पर अपनी पकड़ कर लेनी चाहिए। इस समस्या से दो प्रकार से निपटा जा सकता है। दोनों ही विधियां आधुनिक प्रौद्योगिक संसाधनों पर ही आधारित हैं। एक ओर तो जनसंख्या वृद्धि दर को सीमित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। यहाँ भी प्रौद्योगिकी एक ऐसा साधन है जो अपने ही उपयोग के संदर्भ में नैतिक मुद्दों के प्रति निष्पक्ष है। जनसंख्या समस्या से संबंधित दूसरी विधि ये है कि विश्व के खाद्यान उत्पादन को बढ़ाने का व्यापक रूप से प्रयास करना चाहिए। प्रौद्योगिकी को दोनों ही विधियों में सक्रिय भूमिका निभानी पड़ेगी। चाहे उपलब्ध खाद्यानों के संसाधनों की आपूर्ति को बड़े पैमाने पर बढ़ाना हो या विश्व की जनन क्षमता को नियंत्रित करना या घटाना हो। हमारी प्रौद्योगिकी दोनों के लिए समर्थ है।

8.4.2 सामाजिक कठिनाइयां

जनसंख्या समस्या के लिए प्रस्तावित उपरोक्त समाधान बड़े पैमाने की प्रौद्योगिकी पर आधारित जीवन शैली से संबंधित दूसरी प्रकार की सामाजिक समस्याएँ प्रस्तुत करेगा। विकसित औद्योगिक देशों में ये समस्याएँ/स्पष्ट रूप से दिखाई देती है किंतु ये दूसरे समाजों में भी फैल सकती हैं। बहुत से औद्योगिक राष्ट्रों के कई नगर शहरी विनाश से पीड़ित हो चुके हैं। परंपरागत शहरी केंद्रों में मध्य वर्गीय जनसंख्या है जबकि शेष भाग में सामाजिक दृष्टि से उपेक्षित और दरिद्र वर्ग पाया जाता है। एक दूसरे स्तर पर शिक्षा के दबाव के कारण प्रौद्योगिकी सामाजिक अव्यवस्था में वृद्धि कर रही है। एक दूसरा परिणाम ये हुआ कि शहरों के आस-पास नगरी फैलाव बढ़ा जिसने आस-पास के ग्रामीण समाजों को हड़प करके नष्ट करना शुरू कर दिया।

8.4.3 पारिस्थितिक समस्याएँ

समाज में आधुनिक प्रौद्योगिकी आधारित विकास का तीसरा सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र स्वस्थ पर्यावरणीय संतुलन को सुरक्षित रखने की पारिस्थितिक समस्या है। हालांकि मनुष्य ने शताब्दियों से प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किया है। किंतु औद्योगिक युग के प्रारंभ में पहले पर्यावरण को कोई खतरा नहीं था।

साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, आधिपत्य के लिए संघर्ष, बाजारी अर्थव्यवस्था, लाभ के लिए पागलपन की दौड़, विश्व युद्ध आदि ने अपने अपने ढंग से पर्यावरण को संकट में डाला है। आज फिर आधुनिक प्रौद्योगिकी की सहायता से बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन के लिए प्रकृति के शोषण ने संपूर्ण विश्व में पर्यावरणीय संकट पैदा कर दिया है। हालांकि कई दशकों से ऐसे सुरक्षात्मक उपाय किए जा रहे हैं जैसे प्राकृतिक वनों और वन्य प्राणियों के लिए सुरक्षित वनों की स्थापना की जा रही है किंतु जनसंख्या की अत्यधिक वृद्धि और औद्योगिकरण के स्तर में विकास ने सार्वजनिक संकट उत्पन्न कर दिया है। विकसित राष्ट्रों में प्रदूषण के प्रति सार्वजनिक चिंता देर से सही किंतु अभिनन्दनीय है। एक बार फिर से कहना होगा कि इस विकास के कारण होने वाली क्षति के दुष्प्रभाव का उत्तरदायी स्वयं मनुष्य है न कि उसके द्वारा उपयोग की गई प्रौद्योगिकी। मनुष्य अपनी समझदारी के

बावजूद अपने-अपने समुदायों में पर्यावरण के विषय में बिना सोचे समझे आचरण करता है जो अत्यंत घातक सिद्ध हो सकता है। अतः ये विवादास्पद है कि विकास आधारित प्रौद्योगिकी वरदान है या विनाश का कारण।

बोध प्रश्न 2

1) आप विकास से क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

2) विकास किस प्रकार पर्यावरण का विनाश करता हैं ?

.....

.....

.....

8.5 सारांश

इस इकाई का सारांश शिकागो संगोष्ठी: 'पृथ्वी की प्रगति में मनुष्य की भूमिका' नामक 'कैनेथ ई बेल्डिंग' को दो कविताओं के स्वतंत्र हिंदी रूपातंरण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है जिसमें पर्यावरण के प्रति परस्पर विरोधी विचार प्रस्तुत किए गए हैं।

एक संरक्षक की समीक्षा:

जनसंख्या तो बहुत है लेकिन संसाधन हैं कम,
बिगड़ रहा माहौल निरंतर बच पाएंगे कैसे हम?
कोयला हर भट्टी में फुंकता, गैस भी घर-घर जलती है,
जंगल के कट जाने से कृषिहर मिट्टी कटती है,
कुंए बावड़ी सूख रहे हैं हवा भी दूषित हो जाएगी,
धूल के अंधड़ में फंस कर सब वनस्पति मर जाएगी,
तेल खत्म, आयस्क खत्म अब नहीं बचेगा कुछ भी कल,
नालों में बहती बीमारी शहरी कचरा दूषित जल,
डूब रही है धरती अपनी उभर रहा है सागर जल,
विश्व का ये उत्साही स्वामी आज रूकेगा और न कल,
अग्नि और अभी भड़केगी मनुष्य ही इसे हवा देगा,
अपने सुंदर प्यारे ग्रह को मानव स्वयं मिटायेगा,
खरगोशों की तरह हमारी बच्चे जनना आदत है,
हम सारे इंसानों की ही-पशुओं जैसी हालत है।

शिक्षा: विकासवादी योजना विकासशील मानव के रास्ते से भटक गई।

शिल्प वैज्ञानिक का उत्तर :

आज का मानव बढ़ा है आगे नहीं वह किसी से कम,
अपने आदिम काल को अब तक पीछे छोड़ आए है हम,
लहर-लहर है ज्ञान का सागर डूबो और निकलो तुम,
सीप के गर्भ से मोती लाओ और दुनिया को सजा लो तुम,
जितने मुंह हैं हाथ हैं उतने जो चाहो मिल जाएगा,
जो धरती से मांगेगा वह निश्चित भोजन पाएगा,
मज़दूरों को काम सिखाकर शोषण की योजना बना लो,

शैलों-शैलों खनिज निहित है देखों ढूढ़ों और निकालो,
ईस्ट और एलगी, कूकूरमुत्ता मिलकर भोजन बन जाएंगे,
खेतों-खेतों उर्वर मिट्टी जो उपजाएँ हम पाएंगे,
खेतों के हर चप्पे पर किसान तब तक हरियाली उपजाएगा,
जब तक पृथ्वी के हर मानव को आहार नहीं मिल जाएगा,

शिक्षा : मानव उपद्रवी है, मानव ही नाशक है किंतु वही विनाश को रोकेगा वही यहां का शासक है।

8.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) पर्यावरण का तात्पर्य है प्रतिवेश। केवल हमारा प्रतिवेशी समाज ही नहीं वह सारी विलास-वस्तुएं भी उनके साथ मिलकर ऐसी परिस्थितियाँ पैदा करती हैं कि मनुष्य का अस्तित्व बना रह सके। वह पृथ्वी की भौतिक विशिष्टताएँ ही हैं जो मानव जीवन को संपोषित करती हैं।

2) मनुष्य सम्पूर्ण रूप से पर्यावरण पर निर्भर है वह परोक्ष हैं जो जीवन की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। एक प्राणी के रूप में कार्य करने के लिए मनुष्य को आहार के रूप में ऊर्जा की आवश्यकता होती है जिसका उत्पादन पर्यावरण से होता है। पर्यावरण मानव जीवन के भौतिक पक्ष को सम्पूर्ण रूप से संपोषित करता है।

बोध प्रश्न 2

1) विकास वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा वृद्धि प्राप्त की जा सकती है, ये ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य ऐसी विधियाँ विकसित करता है जो ऊर्जा को सुरक्षित रखकर समाज को अधिक लाभ दे सकें। विकास का अर्थ ऐसी चीजों का उत्पादन भी है जो मनुष्य को आराम दे सके।

2) भाग 8.3 में प्रस्तुत विचारों को देखिए।



इकाई 9 विकास की धारणाएं

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य
9.1 प्रस्तावना
9.2 विकास में पर्यटन के स्थान का निर्धारण
9.3 परिरक्षण और विकास
9.4 संरक्षण और विकास
9.5 सहभागिता और विकास
9.6 टिकाऊ विकास
9.7 सारांश
9.8 शब्दावली
9.9 बोध प्रश्नों के उत्तर



9.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- विकास प्रक्रिया में पर्यटन की भूमिका को समझ पाएँगे और इसका विश्लेषण कर सकेंगे,
- विकास के विभिन्न प्रतिरूपों के बारे में जान सकेंगे,
- पर्यटन विकास के विभिन्न प्रतिरूपों से संबन्धित समस्याओं को समझ पाएंगे, और
- टिकाऊ विकास की संकल्पना समझ सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

पर्यटन का विकास बहुत से कारकों का परिणाम है। इसका प्रमुख उद्देश्य है आर्थिक लाभ प्राप्त करना जैसे विदेशी मुद्रा की प्राप्ति (अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन के लिए), आय, रोजगार और सरकारी राजस्व में वृद्धि करना। ये अन्य आर्थिक क्षेत्रों जैसे शिल्प उत्पादन, कृषि, मत्सय-उद्योग, वन उद्योग और निर्माण उद्योग के लिए उत्प्रेरक का कार्य भी करता है और संरचनात्मक सुविधाओं का मूल्य चुकाने तथा उसे उचित ठहराने का कार्य भी करता है। ये संरचनात्मक सुविधाएं समाज के अन्य घटकों के काम भी आती हैं और आर्थिक आवश्यकताओं की आपूर्ति भी करती है जिसके बिना शायद संसाधन किसी और तरह प्राप्त न हो पाएं। सामाजिक रूप से पर्यटन सब से अच्छी तरह पर्यटकों और स्थानीय लोगों के लिए मनोरंजन, सांस्कृतिक और व्यापारिक हर प्रकार की सेवाएं और सुविधाएं प्रदान करता है। पर्यटन के बिना ये सेवाएं और सुविधाएं विकसित नहीं होती। ये दूसरी संस्कृतियों और पर्यावरणों के अतिरिक्त स्वयं अपनी राष्ट्रीय धरोहर के विषय में लोगों के लिए शिक्षा के ऐसे अवसर प्रदान करता है जो अकसर सैद्धान्तिक और राजनैतिक मतभेदों का निवारण करते हैं और पारस्परिक सहभागिता द्वारा प्रतिकूल व्यवहार और पारस्परिक विरोधों को भी कम करते हैं।

पर्यटन विकास कई समस्याओं को भी उत्पन्न करता है जैसे संभावित लाभ का अभाव और स्थानीय आर्थिक विकृति, पर्यावरणीय ह्रास, सांस्कृतिक पहचान तथा सम्पूर्णता का अभाव और ह्रासमान प्रतिकूल सांस्कृतिक भ्रम को और सबल करना। इस इकाई में पर्यटन के द्वारा हम विकास के इन दोनों पक्षों का विश्लेषण करेंगे।

9.2 विकास में पर्यटन के स्थान का निर्धारण

अगर हम सामान्य विकास में पर्यटन की भूमिका समझना चाहते हैं तो उन समस्त नियमों के सामान्य स्पष्टीकरण की आवश्यकता होगी जिनके अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन उद्योग व्यवहारिक रूप में कार्य करता है। यहाँ हम विशेषकर तीसरी दुनिया के संदर्भ में इसका विश्लेषण करेंगे। विकास में पर्यटन की भूमिका के विश्लेषण के लिए दो प्रमुख दृष्टिकोण विकसित किए गए हैं। एक दृष्टिकोण राजनैतिक आर्थिक उपागम कहलाता है। वह इस सोच पर आधारित है कि पर्यटन का विकास उपनिवेशवाद के ऐतिहासिक प्रारूप और आर्थिक निर्भरता के

समरूप है। इस विचारधारा के अनुसार उद्योग का रूप विश्व व्यापार के राजनैतिक एवं आर्थिक निर्धारक के अनुकूल होता है। राजनैतिक आर्थिक दृष्टिकोण पर्यटन के प्रभावों की प्रवृत्ति के प्रति नकारात्मक रवैया अपनाता है जिसके कारण यह इसे एक ऐसे माध्यम के रूप में देखता है जिसके द्वारा कम विकसित राज्यों की कीमत पर अधिक धनी राष्ट्र और अधिक विकसित होते जाते हैं।

दूसरा दृष्टिकोण पर्यटन को उसके अपने विभिन्न व्यवहारिक उपखण्डों में देखता है और राजनैतिक व्यंजना रहित विश्लेषण करता है। ये परिप्रेक्ष्य तीसरी दुनिया के समाजों में होने वाले परिवर्तनों और वर्तमान असमानताओं में उद्योग के योगदान के प्रति कोई ध्यान आकर्षित नहीं कराता है। दूसरे शब्दों में यह विश्लेषण की विधि ही है जो तटस्थ दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास करती है। यहां सबसे अधिक बल उद्योग के विशेष आर्थिक महत्व पर है जिसमें सारे भागीदार सम्मिलित हैं इसमें उन उपायों पर भी जोर दिया जाता है जो उसकी कार्यक्षमता को बढ़ा सकें और दुष्प्रभावों से बचा सकें। यह व्यवहारिक दृष्टिकोण सामान्य रूप से आशावादी है जो यह मानती है कि बहुत सी समस्यों को अच्छे प्रबंधन और उचित नीति परक कदमों के द्वारा सुलझाया जा सकता है।

फिर भी सिद्धान्तिकरण की इन दोनों विधियों को एक दूसरे के विरोधी दृष्टिकोणों के रूप में देखना बहुत उचित नहीं होगा ये दोनों ही हमारे लिए विषय की विषमता को पूर्णरूप से समझने में सहायक हैं और विश्व पर्यटन में विशेष रूप से तीसरी दुनिया के पर्यटन में प्रमुख भागीदारों की विरोधात्मक अभिरुचि का प्रतिनिधित्व भी करते हैं, अति सरलीकरण के कुछ खतरों के बावजूद हम यह कह सकते हैं कि व्यवहारिक विधि महानगरों वाले प्रमुख राष्ट्रों के आर्थिक उद्देश्यों के अनुकूल तैयार की गई है जबकि राजनैतिक आर्थिक दृष्टिकोण इस उद्योग को तीसरी दुनिया के परिप्रेक्ष्य में एक छोर से देखता है।

बोध प्रश्न 1

1) राजनैतिक अर्थव्यवस्था दृष्टिकोण से आप क्या समझते हैं।

.....

.....

.....

2) व्यवहारिक दृष्टिकोण के महत्व का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

9.3 परिरक्षण और विकास

विकास का अर्थ केवल आगे बढ़ना नहीं है। इसमें अभी तक प्राप्त की गई उपलब्धियों को बचाये रखने की आवश्यकता भी सम्मिलित होनी चाहिए। चूंकि भविष्य की कल्पना अतीत के अनुभवों पर आधारित होती है, इसलिए कला, संस्कृति आदि की सुरक्षा आवश्यक है। सांस्कृतिक विरासत और कला ने पर्यटन गन्तव्यों के आकर्षण में सदैव योगदान दिया है।

पर्यटन किसी क्षेत्र की सांस्कृति विरासत के महत्वपूर्ण तत्वों के संरक्षण के लिए विशेष प्रेरणा हो सकता है। उनका संरक्षण पर्यटकों के आकर्षण में वृद्धि के लिए उचित बताया जा सकता है और इस में निम्नलिखित सम्मिलित हैं:

- पुरातत्वीय एवं ऐतिहासिक स्थान और रोचक वास्तुशिल्पीय शैलियों का संरक्षण,
- पारंपरिक कलाओं की विरासत, नृत्य, संगीत, नाटक, रीति-रिवाज और समारोह, पहनावे और पारंपरिक जीवन शैलियों के कुछ पहलुओं का संरक्षण और कभी पुनः जीवित करना।
- पारंपरिक कला और कौशल को पुनः जीवित करना जिसमें स्थानीय कौशल और सामग्री का उपभोग करके नए रूपों को विकसित करना
- संग्रहालयों रंगशालाओं और दूसरी सांस्कृतिक सुविधाओं और गतिविधियों के अनुरक्षण के लिए आर्थिक सहायता और सांस्कृतिक उत्सवों के लिए भी आर्थिक सहयोग क्योंकि वह पर्यटकों के लिए महत्वपूर्ण

आकर्षण हैं और स्थानीय निवासियों द्वारा भी इसका उपयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ रंगशालाओं के पर्यटकों द्वारा क्रय किए गए टिकटों से इन महत्वपूर्ण शहरी केन्द्रों की इन सुविधाओं को आर्थिक लाभ होता है और उन्हें बनाए रखने में सहयोग मिलता है। विश्व के कुछ प्रमुख संग्रहालयों पर पर्यटकों द्वारा दिए गए प्रवेश शुल्क उन संस्थाओं के अनुरक्षण के लिए महत्वपूर्ण आय का प्रबन्ध करते हैं।

जब स्थानीय निवासी यह देखेंगे कि पर्यटक उनकी सांस्कृतिक धरोहर को पंसद कर रहे हैं तो उनमें अपनी संस्कृति से सम्बन्धित एक गौरवपूर्ण विवेक को सुदृढ़ किया जा सकता है बल्कि पुनरूजीवित किया जा सकता है। ये विशेष रूप से कुछ पारंपरिक संस्कृतियों के लिए सत्य है जिनमें सामान्य आर्थिक विकास के कारण परिवर्तन आ रहा है औरवह अपने सांस्कृतिक आत्म-विश्वास की समझ खो रहे हैं।

इसके साथ ही इस प्रकारके पर्यटन में विकास से जुड़ी कुछ समस्याएं भी हैं। यदि पर्यटकों की मांगों को संतुष्ट करने के लिए पारंपरिक कलाओं, शिल्पों, रीत रिवाजों और उत्सवों को आवश्यकता से अधिक रूपान्तरित किया गया तो उनका अतिव्यवसायिकरण हो जाएगा और उनमें मौलिकता का ह्रास भी होने लगेगा। उदाहरणार्थ महत्वपूर्ण परम्परागत नृत्यों और संगीत के प्रदर्शनों को, जिनमें से कुछ धार्मिक महत्व के भी हो सकते है, पर्यटकों की रुचि और कार्यक्रमों के अनुकूल घटा दिया जाता है या परिवर्तित कर दिया जाता है। इसी प्रकार उत्कृष्ट पारंपरिक शिल्पों कोपर्यटकों द्वारा यादगार स्वरूप ले जाने के लिए बड़े पैमाने पर उत्पादित किया जाता है। ये स्थिति अकसर पर्यटनसे अधिकतम लाभान्वित होने की आकांक्षा के कारण उत्पन्न होती है।

इसके अतिरिक्त पर्यावरणीय रूप से कमजोर पुरातत्वीय एवं ऐतिहासिक स्थानों का अति उपयोग या दुरुपयोग इन आकृतियों को अत्याधिक प्रर्दन, अधिक आर्द्रता, कलाकृतिध्वंसन, दीवारों की कारीगरी को खुरच कर लिखने आदि से क्षति पहुंचती है। उदाहरणार्थ अजन्ता और एलोरा की गुफाओ के चित्रों को पर्यटकों की भीड़ के कारण गंभीर क्षति पहुंच रही है।

9.4 संरक्षण और विकास

एक और बात जिसका व्यापक रूप से उपयोग पर्यटन के संदर्भ में किया जा रहा है वह संरक्षण है। ये सामान्यतः विशिष्ट स्थलों, सीमें और प्राकृतिक संसाधनों के नियोजित प्रबन्धन के संदर्भ मे है न कि अनिवार्य रूप से सुस्पष्ट संरक्षण है जिका अर्थ स्थल, स्थान या संसाधन में परिवर्तन न होना है। कभी कभी इसमें पुरानी परिस्थितियों की बहालभी सम्मिलित होती है। यदि स्थल, स्थान या संसाधन की मौलिक सम्पूर्णता को बनाए रखा जाए तो संरक्षण केलिए कुछ उपयोगी और सीमित परिवर्तन हो सकता है।

मानव पर्यावरण के विभिन्न पक्षों की सुरक्षा, वृद्धि और सुधार पर्यटन के सुव्यवस्थित विकास के लिए मौलिक प्रतिबन्धों में से कुछ हैं। इसीप्रकार सुव्यवस्थित पर्यटन प्रबन्धन काफी हद तक भौतिक पर्यावरण की सुरक्षा और विकास तथा जीवन गुणा में योगदान दे सकता है। पर्यटन के लिए प्राकृतिक पर्यावरणीय आकर्षणों की प्रमुख श्रेणियां निम्न हैं।

i) जलवायु

ठण्डे शीत ऋतु वाले क्षेत्रों के अधिकांश पर्यटक हलके गरम, सुनहरी धूप और शुष्क मौसम वाले प्रदेशों को विशिष्ट रूप से वांछ समझते हैं। इस में कुछ और आकर्षण जैसे मौसम पर आधारित उत्सव या अतिरिक्त भौतिक आकर्षभी जोड़े जाते हैं जो मनोरंजन के अवसर प्रदान करते हैं। वायु प्रदुषण के नियन्त्रण के द्वारा वांछनीयजलवायु संरक्षण या जलवायु के अनुकूल वास्तुशिल्पीय शैलियां बनाए रखना पर्यटन के लिए अनिवार्य। जलवायु के आकर्षण को बढ़ावा देने या मुल्यांकन करने में जलवायु की ऋतुनिष्टता को विचाराधखना चाहिए। एक दीर्घकालिक जलवायु संबंन्धी वांछनीय मौसम निश्चित ही पर्यटन के विकास के लिएभप्रद होगा क्योंकि इस प्रकार सुविधाओं, सेवाओं और ढांचागत सुविधा में किया गया निवेश उच्चतीमा तक बढ़ जाएगा। उदाहरणार्थ ऐसे गन्तव्य जैसे गोआ में पर्यटकों का मौसम सामान्य रूप से मिर-मार्च में हुआ करता था किन्तु अब इसे जून-अगस्त के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है जो ''र तटों पर मानसून'' के रूप में पेश किया जा रहा है।

ii) प्राकृतिक सौन्दर्य

किसी क्षेत्र की प्राकृतिक सुन्दरता क्षेत्र में सैर की दृष्टि से जाने के लिए एक प्रमुख प्रेरणा का कारण हो सकती है, विशेष रूप से यहके पर्यावरण के स्वच्छ और प्राकृतिक चरित्र को बनाए रखने के लिए संरक्षण कार्य किया गा। दूरस्थ मनोरम क्षेत्र प्राकृतिक या साहसिक क्रीड़ा के शौकीन पर्यटकों

के लिए अवसर प्रदान कर सकते हैं जैसे नदी रेफटिंग शिलारोहन (rock climbing) और लम्बी पद यात्रा (treckking)।

iii) समुद्रीय बालू तट और समुद्री क्षेत्र

विश्व के बहुत से स्थानों पर समुद्री बालू-तट और सम्बद्ध समुद्री क्षेत्रों में सूर्यस्नान, तैराकी, नौकायन, विण्ड और बोर्ड सर्फिंग, जल स्कीइंग, पैरासेलिंग, स्नोर्केलिंग और स्कब डाइविंग के अतिरिक्त क्रीड़ा मत्स्यन और अन्य जल सम्बन्धी मनोरंजन की गतिविधियां प्रमुख आकर्षण हैं। इसलिए समुद्री बालू-तट और समुद्री क्षेत्रों में भी तटों के संरक्षण और विकास नियन्त्रण के रूप में संरक्षण के उपाए अपनाने चाहिए।

iv) वनस्पति एवं प्राणी

असाधारण और रोचक वनस्पति एवं प्राणी समूह भी बहुत महत्वपूर्ण आकर्षण हो सकते विशेष रूप से जबकि यह प्राकृतिक सौन्दय वाली पृष्ठभूमि में हों। पूर्वी अफ्रीका की शिकारगाहें और केलीफोरनिया के रेडवुड पार्क श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं। जहाँ तक वनस्पति और प्राणियों का प्रश्न है प्राणी विहार, जलजीव शालाएं और वनस्पतिक उद्यान भी विशेष आकर्षण के केन्द्र है। यदि पर्यटन उद्योग को प्रोत्साहन देना है तो ऐसे क्षेत्रों में उचित संरक्षण उपायों की भी नितान्त आवश्यकता है।

ये स्पष्ट है कि किसी देश या क्षेत्र की आकर्षक विशेषतायें पर्यटन के विकास के लिए आधार प्रदान करते हैं। ये पर्यटन उत्पाद के अत्यन्त महत्वपूर्ण तत्व का निर्माण करते हैं। इसके विपरीत पर्यटन व विकास पर्यावरणीय एवं सांस्कृतिक संरक्षण की तकनीकों में से एक हो सकता है और किसी क्षेत्र या स्थान को विशिष्ट समझ भी बनाए रख सकते हैं। फिर भी ऐसी परिस्थितियां हैं जहां विशेष प्रकार के आकर्षणों का विकास संभव है जैसे विषय उद्यान या जुआ घर जो उस क्षेत्र के लक्षणों से सम्बन्धित तो नहीं है पर लाभदायिकता की दृष्टि से न्यायोचित हो सकता है। दीर्घकाल में जुए घर (कैसीनो) पर आधारित पर्यटन समाज और पर्यावरण की दृष्टि से विघटनकारी सिद्ध हुआ है। इस प्रकार के पर्यटन से लाभ प्राप्ति कभी प्रमुख उद्देश्य नहीं होना चाहिए क्योंकि प्राकृतिक आकर्षणों का अत्याधिक शोषण प्राकृतिक सौन्दर्य को नष्ट कर देगा और परिणामस्वरूप दीर्घकाल में लाभ को कम कर देगा।

जन्तु एवं वनस्पति जीवन संरक्षण विश्व के बहुत से भागों में कई कारणों से एक प्रमुख मुद्दा बना हुआ है विशेषकर कृषि एवं शहरी उपयोग के लिए वन्य-जीवों के आवास पर अतिक्रमण और संरक्षित प्राणियों का अनाधिकृत शिकार। चूंकि वन्य जीवन एक आकर्षण का विषय है, पर्यटन का प्रायः वन्य जीवन संरक्षण के लिए मूलाधार रूप से उपयोग किया जा सकता है (इकाई 16, TS-2 देखिए)। जैसा कि पूर्व अफ्रीका के देशों में प्राणियों की बहुत सी घटती हुई जातियों के प्रति बहुत चिन्ता पाई जा रही है और संरक्षा के विशेष प्रयास चल रहे हैं। उदाहरणार्थ दक्षिण पूर्व एशिया में "प्रोजेक्ट टाइगर" जो वर्ल्ड वाइल्ड फण्ड (विश्व वन्य जीव कोष) द्वारा प्रायोजित है, उस क्षेत्र में बाघों की संख्या को बढ़ाने में बहुत सफल रहा है। सुमात्रन, जो

> **इस पर ध्यान देना चाहिए कि पारिस्थितिकी रूप से भंगुर कमजोर गन्तव्यों में पर्यटन उद्योग केवल इसलिए ही नहीं पनपता है वहां पर्यटन उद्योग पर्यटन संबंधी गतिविधियां या ढांचा सुविधा विकसित करने में सक्षम है बल्कि इसलिए पनपते है कि वह अपने प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखने में सक्षम हैं।**

पर्यटकों के लिए प्रमुख आकर्षण का केन्द्र है। बंगाल टाइगर की जनसंख्या संरक्षण कार्य सफलता पूर्वक कर रहा है।

बोध प्रश्न 2

1) पर्यटन विकास में परिरक्षण का क्या महत्व है?

.....

.....

.....

2) पर्यटन विकास में संरक्षण के महत्व का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

9.5 सहभागिता और विकास

अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन को एक ऐसे कारक के रूप में विकसित किया जाता है जो लोगों को एक दूसरे के निकट लाए और शान्ति एवं समझदारी में सहायक हो। पर्यटक केवल अतिथि और स्थानीय लोग केवल अतिथेय न हों। दोनों ही पक्षों की इस उद्योग में सहभागिता होनी चाहिए। हम जानते हैं कि वर्तमान पर्यटन असमानताओं पर आधारित है और वास्तविकता ये है कि ये पूर्ण रूप से आतिथेय और पर्यटकों के मध्य संवेदनशील संबन्धों में बाधा डालता है।

पर्यटन एक "स्थान" विशिष्ट एवं गहन श्रम गतिविधि है। इसका अर्थ है कि प्रत्येक पर्यटक स्थल का अपना एक स्वभाव होता है जो प्राय: या तो प्राकृति आकर्षण, ऐतिहासिक महत्व या स्थानीय संस्कृति द्वारा प्रभावित होता है। वे सभी आकर्षण पर्यटन को बढ़ावा दे सकते हैं जो अपनी प्रकृति के अनुसार मानव सम्बन्धों को नियमित कर सकते हैं क्योंकि पर्यटक सशुल्क अतिथि और स्थानीय लोग आतिथेय है।

पर्यटन के प्रति स्थानीय लोगों के व्यवहार के बारे में जानकारी प्राप्त करने में बड़ी कठिनाई सामने आती है पर्यटन से अपेक्षाओं को पर्यटन से आशा लेकर विभिन्न व्यवसायिक समूहों और अन्य वर्गों के विचारों में अत्यधिक भिन्नता है इसलिए एक सामान्य सर्वे में इसे प्रस्तुत करना कठिन होता जाता है।

प्रथम श्रेणी में वह लोग सम्मिलित है जो निरन्तर और प्रत्यक्ष रूप से पर्यटन से जुड़े लोगों के सम्पर्क में हैं और पर्यटन परिवहन, खान पान, व्यापार, दुकानों या भ्रमण एजेन्सियों आदि से जुड़े हुए हैं। चूंकि वह पर्यटन पर निर्भर हैं और शायद उसके बिना बेरोजगार हो जाएंगे अत: वह पर्यटकों का स्वागत करते हैं। उनका व्यवहार स्वभाविक आतिथ्य-सत्कार द्वारा निर्धारित नहीं होता बल्कि केवल मुद्रा कमाने की साधारण इच्छा द्वारा निर्धारित होता है।

स्थानीय लोगों के दूसरे समूह में व्यापार के ऐसे मालिक है जिनका पर्यटकों के साथ कोई निरंतर सम्पर्क नहीं होता जैसे कि निर्माण उद्योग। उनके लिए पर्यटन एक वाणिज्य का विषय है क्योंकि ये अधिकाधिक निर्माण के ठेके लाता है। इसे जितना संभव हो अधिक से अधिक व्यवसाय और लाभ मिलना चाहिए। ये किस प्रकार मिलता है इसका महत्व उनके लिए बहुत कम है अन्त में होने वाली आय ही महत्वपूर्ण है।

तीसरी श्रेणी ऐसे जनसंख्या वर्ग की है (जैसे कृषक और वह लोग जो यात्रा के प्रमुख मार्गों पर निवास करते हैं) जो पर्यटकों के प्रत्यक्ष और निरंतर सम्पर्क में रहते हैं किन्तु वह उनसे अपनी आय के आंशिक भाग की अपेक्षा ही करते हैं। इस समूह के सदस्य पर्यटन में लाभ देखते हैं किन्तु इसे अधिक आलोचना का पात्र समझते हैं और इसके कारण होने वाली हानियों को इंगित भी करते हैं जैसे उनके निजी जीवन में हस्तक्षेप और पर्यावरणीय क्षति आदि।

चौथा बड़ा समूह उन स्थानीय लोगों का है जिनका पर्यटकों से कोई सम्पर्क नहीं होता। यहां विभिन्न स्वभाव भी संभव हैं जैसे समर्थन, अस्वीकरण, रुचि या उदासीनता। इनमें उदासीनता सर्वाधिक रूप से आम है (देखिए खण्ड-1, टी. एस-2).

राजनीतिज्ञ और राजनीतिक गुट पांचवें समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह अपने देशवासियों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास करना चाहते हैं। शायद ही कोई ऐसा राजनीतिज्ञ हो जो या तो खुले आम या शान्तिपूर्ण ढंग से पर्यटन की वकालत आर्थिक एवं विकास दोनों ही कारणों से न करता हो। फिर भी इस सत्य का कोई भी खण्डन नहीं कर सकता कि आर्थिक कमाई और रोजगार प्रदान करने में पर्यटन का स्थानीय विकास पर बहुत गहरा प्रभाव है। सारे विश्व में कम से कम एक करोड़ लोग पर्यटन के कार्यों में लगे हुए हैं और बहुत से और भी लोग अप्रत्यक्ष रूप से पर्यटन पर ही निर्भर हैं। किन्तु बहुत से ऐसे क्षेत्रों में सामाजिक मूल्य बहुत अधिक चुकाना पड़ रहा है जहां बड़ा विकासीय अन्तर और परस्पर सहभागिता की कमी है। अधिकतर स्थानों पर विकास स्थानीय लोगों की राय पर थोड़ा सा विचार करके या बिना विचार किए ही बाहर से थोपा जाता है। बाहरी लोग आम तौर से स्थानीय प्रथाओं, पारिस्थितिकी या पर्यावरण के प्रति प्राय: संवेदनशील नहीं होते। इसके अतिरिक्त स्थानीय निवासियों के लिए स्थानीय संसाधनों का उपयोग भी सीमित हो जाता है।

9.6 टिकाऊ विकास

टिकाऊ समाज वह है जो भावी पीढ़ियों की संभावनाओं को घटाए बिना उसकी आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करता है। इसी प्रकार पर्यटन से ये आशा की जाती है कि संरक्षण और उपयोग के मध्य संतुलन बनाए रखेगा। सरल शब्दों में टिकाऊ पर्यटन का अर्थ है: पर्यटन उद्योग को इस प्रकार स्थापित किया जाए कि वह नकारात्मक

सामाजिक एवं पर्यावरण संघातों को कम करते हुए आर्थिक लाभों को उच्चतम सीमा तक बढ़ा सके। पर्यटन विकास को लम्बे समय तक टिकाऊ बनाने के लिए गन्तव्य स्थानों, प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण को एक निश्चित सुरक्षा प्रदान करनी होगी।

पर्यटन और पर्यावरण तथा पर्यावरणीय नियोजन एवं टिकाऊ पर्यटन विकास के मध्य घनिष्ट सम्बन्धों के महत्व को दिन प्रतिदिन अधिक मान्यता प्राप्त होती जा रही है। विश्व पर्यटन संघटन और संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की संयुक्त घोषणा, जिसने पर्यटन के विषय में अन्तर-एजेन्सी समन्वयन और पर्यावरण को औपचारिक रूप दिया, घोषित करता है:

मानव के पर्यावरण के विभिन्न घटकों की सुरक्षा, वृद्धि और सुधार पर्यटन के सुव्यवस्थित विकास की मौलिक शर्तों में से हैं। इसी प्रकार, पर्यटन का राष्ट्रीय प्रबन्धन काफी हद तक मौलिक पर्यावरण, एवं सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा और विकास में योगदान दे सकता है और साथ ही जीवन की गुणवत्ता को भी सुधार सकता है।

पर्यटन वर्तमान विश्व में अत्याधिक महत्वपूर्ण सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियों में से एक है। फिर भी पर्यटन के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों ने हाल के कुछ वर्षों में इस क्षेत्र को किसी हद तक विवादस्पद बना दिया है। ऐसा विशेष रूप से उन क्षेत्रों में हुआ है जहां पर्यटन का विकास बहुत तीव्र गति से और अधिकतर अनियोजित तथा अनियन्त्रित हुआ है। इसका परिणाम प्रतिकूल सामाजिक-आर्थिक प्रभाव के रूप में सामने आया। पर्यटन और सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरणों के मध्य उचित सम्बन्ध बनाना पर्यटक अभिग्राही-देशों (जहाँ पर्यटक आते हैं) और स्वयं पर्यटकों दोनों की जिम्मेदारी है WTO की 1985 की आम सभा की बैठक में पारित किए गए अधिकारों के पर्यटन विधेयक और पर्यटक संहिता में इसे और अधिक स्पष्ट किया गया है। इस वक्तव्य में निम्नलिखित धाराएं है:

- वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों के हित में राज्य द्वारा पर्यटन के पर्यावरण की सुरक्षा नितान्त आवश्यक है यह एक साथ मानवीय, प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक और आर्थिक होने के कारण समस्त मानव-जाति की धरोहर है।
- मार्गों और आवासीय स्थानों पर आतिथेय प्रदान करने वाले स्थानीय समुदायों को अपने पर्यटन के संसाधनों का स्वतन्त्र रूप से उपभोग का अधिकार है।

वह पर्यटन से अपनी प्रथाओं और अपने उन समग्र, धार्मिक और अन्य सांस्कृतिक तत्वों के प्रति जो मनुष्य की विरासत का एक भाग है विवेक और आदरभाव की अपेक्षा के भी अधिकारी हैं। लचीले और भंगुर पर्यावरण के लिए अत्याधिक कड़े सुरक्षा उपाए किए जा सकते हैं। इस प्रकार प्रकृति के संरक्षण के हितों को उचित वरियता प्रदान की जा सकती है विशेषकर अगर वह प्रमुख भूमि उपयोग का कार्य हो। ऐसी समझ और आदर भाव को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित विषयों पर उचित जानकारी के प्रचार और प्रसार को प्रोत्साहित करना चाहिए:

1) आतिथेय समुदायों के रीती-रिवाज, उनकी परम्परागत एवं धार्मिक प्रथाओं, स्थानीय स्तर पर वर्जित समझे जाने वाले कार्यों और पावन स्थलों और तीर्थों का आदर आवश्यक है।
2) कलात्मक, पुरातत्तवीय और सांस्कृतिक निधि की जानकारी जिन्हें सुरक्षित रखना आवश्यक है, और
3) वन्य जीव, और अन्य प्राकृतिक संसाधनों को भी निश्चित रूप से सुरक्षित रखना चाहिए। पर्यटकों को अपने व्यवहार द्वारा लोगों में सदाशयता पैदा करनी चाहिए और सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए, आदि।

टिकाऊ विकास के लिए योजना की धारणा और उसके साथ ही हर प्रकार की मानवीय गतिविधियों के लिए सामान्य रूप से टिकाऊ विकास को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अधिक से अधिक महत्व दिया जा रहा है। फिर भी ये ध्यान देने योग्य है कि टिकाऊ विकास के सम्बन्ध में विचार करना या बात करना एक बात है और कार्यान्वित करना दूसरी बात। क्योंकि पहली बात सरल है और दूसरी कठिन। आज हर राजनीतिक और पर्यटन प्रोत्साहक पर्यावरण विशेषज्ञ होने का दावा करता है और हर एक को असली और नकली पर्यावरण विशेषण की पहचान करने में सतर्कता बरतनी चाहिए। कुछ अन्य पक्ष इकाई-10 में वर्णित हैं।

बोध प्रश्न 3

1) विकास में भागीदारी वाले पर्यटन के महत्व को समझाइए।

.....

.....

.....

2) टिकाऊ विकास क्या है ?

.....

.....

.....

9.7 सारांश

- पर्यटन को नियन्त्रित विकास के रूप में नियोजित करना चाहिए ताकि वह कोई गंभीर पर्यावरणीय अथवा सामाजिक-सांस्कृतिक समस्या उत्पन्न न करे और उसे पर्यावरणीय और सांस्कृतिक संरक्षण के लिए उपयोग किया जाता रहे,
- पर्यटन विकास को देश के किसी क्षेत्र विशेष के विशिष्ट अभिलक्षणों के अनुकूल होना चाहिए। इस विकास प्रक्रिया में समुदाय के निवासियों की सबसे अधिक भागीदारी होनी चाहिए और पर्यटन से प्राप्त अधिक से अधिक संभव लाभ स्थानीय समुदायों को प्राप्त होना चाहिए।
- पर्यटन विकास को देश की समग्र विकास योजना में जोड़ देना चाहिए तथा इसे अन्य आर्थिक क्षेत्रों से संयोजित कर देना चाहिए। इस स्थिति में अधिक से अधिक संभव सन्तुलित अर्थव्यवस्था की स्थापना हो सकेगी।
- मनोरंजन और सैर सपाटे के लक्ष्यों की प्राप्ति के अतिरिक्त देशीय पर्यटन को राष्ट्रीय आय के विशेषत: शहरी ओर समृद्ध क्षेत्रों से ग्रामीय व अल्प विकसित इलाकों में पुनर्वितरण के लिए उपभोग करना चाहिए। पर्यटन को देश के विभिन्न और समाजों के नागरिकों में प्रकृति और एक दूसरे के बारे में समझ को बढ़ाने के लिए उपयोग करना चाहिए।

9.8 शब्दावली

परिरक्षण : बचाव या रख रखाव

संरक्षण : क्षीण हो जाने या लुप्त हो जाने से बचाना

टिकाऊ : जो लम्बे समय तक जारी रह सकता हो

9.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) राजनैतिक आर्थिक दृष्टिकोण पर्यटन उद्योग की समस्याओं की खोज के दौरान उसके निहित लक्षणों का पता लगाता है। ये पर्यटन उद्योग के असंतुलन को स्पष्ट करने का प्रयास करता है।

2) व्यवहारिक दृष्टिकोण स्वयं अपने शब्दों में पर्यटन विकास के गुणों और अवगुणों को स्पष्ट करने का प्रयास करता है। वह उन प्रभावों पर विचार नहीं करता जो एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में और एक देश से दूसरे देश में बदलता रहता है।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 9.3 देखिए।

2) भाग 9.4 देखिए।

बोध प्रश्न 3

1) भाग 9.5 देखिए।

2) भाग 9.6 देखिए।

इकाई 10 उत्तरदायी पर्यटन लाभ

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य
10.1 प्रस्तावना
10.2 उत्तरदायी/वैकल्पिक पर्यटन
  10.2.1 प्रति सांस्कृतिक वैकल्पिक पर्यटन
  10.2.2 सम्बद्ध वैकल्पिक पर्यटन
10.3 लाभ
10.4 समस्याएं
10.5 क्या प्रयत्न किए जा रहे हैं?
  10.5.1 सरकार की भूमिका
  10.5.2 उद्योग की भूमिका
  10.5.3 स्थानीय निवासियों की भूमिका
10.6 सारांश
10.7 बोध प्रश्नों के उत्तर



10.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप यह समझ सकेंगे कि:

- उत्तरदायी पर्यटन किस प्रकार पर्यावरण सुरक्षा में सहयोग देता है?
- उत्तरदायी पर्यटन से सम्बन्धित समस्याएं क्या हैं और उनके क्या समाधान उपलब्ध है?
- सरकार, उद्योग और स्थानीय निवासी पर्यटन उद्योग को विकसित करते समय पर्यावरण को सुरक्षित रखने में क्या भूमिका निभाते है।

10.1 प्रस्तावना

एक ओर तो पर्यटन बहुत से सामाजिक एवं आर्थिक लाभ देने वाला कार्यक्रम है और दूसरी तरफ उसके दुष्प्रभाव भी है (इकाई 8 और 9 देखिए)। पर्यटन के क्षेत्र में जिम्मेदारी का बोध पैदा करके दुष्प्रभावों को समाप्त किया जा सकता है। हम ऐसे पर्यटन को विश्वस्त अथवा वैकल्पिक पर्यटन का नाम देंगे। जैसा कि इस खण्ड की दो पिछली इकाइयों में चर्चा की गई कि पर्यावरण को सामाजिक एवं आर्थिक विकास के साधन के रूप में भी उपयोग किया जा रहा है। किन्तु ये बढ़ता हुआ पर्यटन एक मौलिक समस्या प्रस्तुत करता है। अन्य देशीय औद्योगिक राष्ट्रों से आने वाले पर्यटकों की अनियन्त्रित बाढ़ विकासशील देशों में पर्यावरणीय विनाश, सांस्कृतिक मतभेदों और सामाजिक तनाव की समस्याएं खड़ी कर देती है। पर्यटन के इन दुष्प्रभावों को समाप्त करने के लिए अधिक प्रभावी नीतियां नहीं सोची गईं, और जो सोची भी गईं उनका समग्र रूप से कार्यान्वन नहीं हो सका है। फिर भी ये नीतियां पूर्णरूप से असफल नहीं हुई हैं क्योंकि उन्होंने जागरूकता का स्तर बढ़ाया है और पर्यावरण विशेषज्ञों के मध्य विचार विमर्श का मुद्दा प्रस्तुत किया है। किन्तु समस्या के हल अब भी मूलरूप से सैद्धान्तिक ही हैं और वह भविष्य के लिए कोई उपयोगी व्यवहारिक उत्तर प्रस्तुत नहीं करते। इस समस्या से निपटने के लिए ही उत्तरदायी पर्यटन की धारणा पर बल दिया जाने लगा है। इस इकाई में हम उत्तरदायी पर्यटन की धारणा को लाभ, संबंधित कठिनाइयों और उत्तरदायी पर्यटन से पैदा होने वाली समस्याओं के दृष्टिकोण से सविस्तार वर्णित करेंगे। इस इकाई में हम उत्तरदायी पर्यटन के क्षेत्र में सम्बद्ध नियम और नीतियाँ बनाकर प्रोत्साहित किए जाने में सरकार की भूमिका की चर्चा भी करेंगे। इसके अतिरिक्त उत्तरदायी पर्यटन के सकारात्मक प्रभावों के साथ ही इस इकाई में हम नकारात्मक या दुष्प्रभावों को भी चर्चा का विषय बनाएंगे। इसमें उद्योग और स्थानीय निवासियों द्वारा उत्तरदायी पर्यटन को बढ़ावा देने में निभाई गई भूमिकाओं पर भी विचार किया गया है।

10.2 उत्तरदायी/ वैकल्पिक पर्यटन

वैकल्पिक पर्यटन एक ऐसा पर्यटन है जो यात्रा के अनुभवों की रक्षा करने के अतिरिक्त लोगों के मध्य आपसी समझ को भी बढ़ाता है, पर्यावरणीय एवं सांस्कृतिक ह्रास और इन से भी अधिक स्थानीय जनसंख्या के शोषण और मानवीय मूल्यों के ह्रास को रोकता है। इन्हीं विशेषताओं के कारण इसे उत्तरदायी पर्यटन भी कहते हैं। वैकल्पिक पर्यटन पर्यटकों को "विश्वसनीय" अनुभव का बोध भी करा सकता है किन्तु ये उसका मुख्य कार्य नहीं है। वास्तव में ये "रोमानी अनुभव" चाहने वाले और रोमांचक सांस्कृति पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाले पर्यटकों का आलोचक है जो आतिथेय (स्थानीय) परिवेश पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं।

इस प्रकार वैकल्पिक पर्यटन उत्तरदायी पर्यटन का पर्याय है। ये तर्क प्रस्तुत किया जाता है कि वैकल्पिक पर्यटन की सहायता से हम पर्यटन उद्योग द्वारा प्रस्तुत समस्याओं को नियन्त्रित कर सकते हैं। उत्तरदायी पर्यटन की व्याख्या एक ऐसे व्यापक शब्द के रूप में की जा सकती है जो सब पक्षों का अधिक ध्यान रखने वाले और जागरूक प्रकार के पर्यटन को अपने अन्दर सम्मिलित रखता है। इसके उपसर्गों में वैकल्पिक, उपयुक्त, टिकाउ, कोमल, हरत आदि आते हैं। उत्तरदायी पर्यटन में स्थानीय समुदाय पर्यावरण के विषय में निर्णय लेने में और पर्यटन विकास में निर्णायक भूमिका निभाता है। स्थानीय समुदाय विकास की गति को भी नियन्त्रित करते हैं जो अनिवार्य है। अपनी मन्जिल तक पहुंचने से पहले ही पर्यटक की जागरूकता बढ़ाना और उन्हें स्थानीय पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अत: इस प्रकार के पर्यटन में शिक्षा प्रमुख भूमिका निभाती है। वैकल्पिक पर्यटन के विचार का श्रोत दो समकालीन वैचारिक चिन्तनों में है।

- एक तो आधुनिक उपभोक्तावाद के सांस्कृतिक अस्वीकरण में है, और दूसरा
- तीसरी दुनिया के समाजों पर आधुनिक औद्योगिक विकास के प्रभाव के प्रति चिन्ता है।

यह दोनों चिन्तन अलग अलग दृष्टिकोण से परम्परागत पर्यटन की सस्याएं उठाते हैं और उसकी आलोचना करते हैं। अत: ये वैकल्पिक पर्यटन की विविध धारणाओं पर विचार करते हैं। इसका वर्णन इस इकाई के भाग 10.4 में किया गया है।

10.2.1 प्रतिसांस्कृतिक वैकल्पिक पर्यटन

प्रतिसांस्कृतिक वैकल्पिक पर्यटन मूल्यों, उद्देश्यों, और व्यवहार में परम्परागत सामूहिक पर्यटन पद्धति को उलट देता है। प्रतिसांस्कृतिक वैकल्पिक पर्यटक की कल्पना एक ऐसे यात्री की है जो केवल मनोरंजन, मन बहलाव अथवा विश्रांति के लिए ही नहीं निकलता। वह केवल एक साहसी है या जो अपने, घर, समाज और संस्कृति को त्याग कर दूसरों की दुनिया के अनोखे पन को खोजता/खोजती है और असली जीवन को अनुभव करना चाहता/चाहती है। ये यात्री अकेले होते हैं या छोटे-छोटे समूहों में यात्रा करते हैं। उन्हें कोई जल्दी नहीं होती और वह अपनी रुचि, परिस्थितियों और अवसर के अनुरूप अचानक योजना बदल देते हैं। एक 'आदर्श पर्यटक' आत्मनिर्भर और उत्साही होता है जो विनम्र कृषकों और जन जातिय लोगों के आतिथेय को स्वीकार करता है। उनका भोजन और जल, अपने स्वास्थ्य तथा सुख की परवाह किए बिना, ग्रहण करते हैं। वह संरक्षण के प्रयासों में भी भागीदारी करते हैं और पर्यावरणीय सुरक्षा में योगदान भी देते हैं।

10.2.2 सम्बद्ध वैकल्पिक पर्यटन

सम्बद्ध वैकल्पिक पर्यटन को विभिन्न समुदायों के सदस्यों के मध्य एक उचित प्रकार की यात्रा के रूप में परिभाषित किया गया है। ये सहभागियों के मध्य, पारस्परिक, पूर्ण एकता और समानता की प्राप्ति की खोज है। ये सामूहिक और रक सैक (अपनी पीठ पर अपना बैग लेकर चलने वाले पर्यटक) पर्यटन दोनों के लिए एक विकल्प है। इसके समर्थक पर्यटकों की मनोवृत्ति और स्थानीय लोगों के साथ सम्बन्धों तथा उसके नतीजे में उत्पन्न सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों पर बल देते हैं। इस उचित पर्यटन का उद्देश्य ये है कि दोनों पक्षों को आपस में व्यक्तिगत एवं आर्थिक रूप से समान लाभ प्राप्त हो। इस प्रकार के पर्यटन को प्रोत्साहित करने के प्रमुख साधन उन्नतशील देशों में स्थापित छोटे स्तर की योजनाएं हैं जिन्हें स्थानीय लोगों के परामर्श और भागीदारी के अनुसार स्थापित किया गया है। वे विशिष्ट रूप से पर्यटकों के छोटे समूहों को ऐसे क्षेत्रों में आकर्षित करते हैं जहां उन्हें स्थानीय लोगों से समानता के आधार पर प्रत्यक्ष रूप से आपस में क्रियाशील होने और अपने वास्तविक जीवन तथा समस्याओं के परिष्कार का अवसर मिलता है। पर्यटकों को अपने ठहरने के लिए भुगतान करना पड़ता है और इसके अतिरिक्त और कोई शोषण नहीं होता।

10.3 लाभ

वैकल्पिक पर्यटन के वास्तविक लाभों को ठीक से समझने के लिये हमें निम्नांकित बातों पर विचार करना चाहिए। सामूहिक पर्यटन अथवा बने बनाए पर्यटन पैकेज की तुलना में वैकल्पिक पर्यटन कई प्रकार से भिन्न है जैसे कि:

- भ्रमण की अवधि,
- समूह का आकार.
- निर्धारित धन राशि जो उनके पास खर्च करने के लिए है,
- भ्रमण के उद्देश्यों में सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य।

इन पर्यटनों को निम्नलिखित आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है :

- अध्ययन-भ्रमण,
- सांस्कृतिक महत्व का पर्यटन,
- विकास योजना यात्रा, और
- ग्रामीण यात्रा एवं ठहरने का कार्यक्रम।

किन्तु ये सारे भ्रमण घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं और उनके मध्य भेद करना सरल नहीं है। कभी कभी ये इनमें से कुछ के सम्मिश्रण होते हैं या संभवत: ये सारे विषय सामूहिक रूप से उपस्थित होते हैं। इन पर्यटकों के मनुष्य से मनुष्य के सम्पर्क को एक ऐसे वातावरण में प्रोत्साहित करने का प्रयास या सहायता होती है जहां यात्री और आतिथेय एक ही छत के नीचे बैठ सकें और एक दूसरे के साथ सांस्कृतिक या विचारों का आदान प्रदान कर सकें।

पर्यटन की व्यवस्था एक सकारात्मक उद्देश्य के अनुसार की जाती है और इसमें अनुकूलन व्याख्यान सम्मिलित होता है जिसमें पर्यटक बैठते हैं और आतिथेय (स्थानीय लोगों) से उनके क्षेत्र की विशिष्ट संस्कृति, पर्यावरण एवं सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं के विषय में सुनते हैं ताकि वह वहां की परिस्थितियों के अनुसार अपने आप को अनुकूलित कर सकें। स्लाइड प्रोजेक्टर, आडियो-वीडियो, बुद्ध जीवियों, अनुभवी विकास कार्यकर्ताओं और सम्बद्ध लोगों या विशिष्ट मुद्दों में विशेषता रखने वालों की भूमिका अनुकूलन व्याख्यान को अधिक शिक्षाप्रद और रुचिकर बनाने में निर्णायक होती है।

आवास स्थानीय परिवहन, भोजन, ग्रामीण गतिविधियां और वित्तीय प्रबंध सहित सारे सम्पर्क और व्यवस्थाएं स्थानीय सहभागियों द्वारा की जाती हैं यह स्थानीय लोग पेशेवर संस्थाओं की अपेक्षा स्थानीय परिस्थितियों को अधिक अच्छी तरह समझने की स्थति में होते हैं। इन स्थानीय व्यक्तियों के माध्यम से ही हम ग्रामीण आतिथेयों से पर्यटकों के व्यवहार और विचारों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि वह मूल निवासियों से जुड़े हुए हैं। ऐसी व्यवस्था की जाती है कि स्थानीय निवासी एक ही छत के नीचे पर्यटकों से समान अधिकारों के साथ बैठ कर बात कर सकें। इस प्रकार के समग्र पर्यटक को एक रूपता के साथ व्यस्थित कर के पर्यटन पैकेज बनाए जाते हैं।

इस प्रकार के पर्यटन में उन लोगों के अतिरिक्त जो केवल पर्यटन सेवाएं उपलब्ध करवाने में लगे हैं अन्य व्यक्तियों से भी मिलने और आदान-प्रदान करने का अवसर बिलकुल वैसे ही मिलेगा जैसे परम्परागत पर्यटन में होता है। ऐसे पर्यटन में विकास कार्यकर्ता, विश्वविद्यालीय बुद्ध जीवी, पर्यावरण विशेषज्ञों और प्रकृति प्रेमी आदि सम्मिलित होते हैं। स्थानीय लोगों को भी बाहर से आए मित्रों से मिलने का अवसर मिलता है जो सांस्कृतिक बाधाओं को फलांगने की इच्छा व्यक्त करते हैं और पर्यटन के परम्परागत ढांचे से भी आगे निकल जाना चाहते हैं। पर्यटन में अन्तरभेदों को पाटने को पाटने की सर्वोच्च संभावनाएँ हैं भिन्न-भिन्न लोगों के बीच जानकारियों का आदान प्रदान करने का भी यह एक अच्छा माध्यम है।

इस प्रकार वैकल्पिक पर्यटन पर्यावरण के निकट होने का काफी अवसर प्रदान करता है। ये विभिन्न समुदायों की मूलभुत सांस्कृति म्रान्यताओं को भी सुरक्षित रखने में सहयोग करते हैं। जहां इस प्रकार की यात्राएं होती हैं वहीं ये सहयोग संभव है। इसके साथ ही इस प्रकार का पर्यटन अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय भ्रातृभाव, शान्ति और सद्भावपूर्ण सह अस्तित्व के वास्तविक साधन के रूप में कार्य करता है।

बोध प्रश्न 1

1) "वैकल्पिक पर्यटन की समस्या का एक वैकल्पिक उत्तर प्रस्तुत करता है"। समीक्षा कीजिए।

.....

.....

.....

2) दो वैकल्पिक पर्यटकों का नाम बताइए और उनकी विशेषताओं का इस प्रकार उल्लेख कीजिए कि उनके मध्य के प्रमुख स्पष्ट हो सकें।

.....

.....

.....

10.4 समस्याएं

बहुत से लोगों के द्वारा एक समाधान के रूप में देखे जाने के बावजूद वैकल्पिक पर्यटन पर संदेह व्यक्त किया जाता है। बी. व्हीलर ने अपने लेख 'पारिस्थितिक पर्यटन, टिकाऊ पर्यटन और पर्यावरण एक-सहजीवी, प्रतीकी अथवा बनावटी-संबंध' (1994) (B. Wheeler, ego tourism, sustainable tourism and the environment–a symbiotic, symbolic or a shambolic relationship) में लिखा है:

आजकल पारिस्थितिक पर्यटन साफतौर से और सरलतापूर्वक परिमाण और समूह के संभावी मुद्दों की उपेक्षा करता प्रतीत होता है। पर्यटन में बढ़ती हुई भागीदारी के प्रक्षेप के रूप में, पारिस्थितिक पर्यटन संहित पारिस्थितिक/टिकाऊ पर्यटन की व्यर्थता, जहां तक मैं समझता हूं, दुखदायी रूप से स्पष्ट होकर समझ में आ जाती है।

पर्यटकों की संख्या अधिक से अधिक होती जाएगी और व्हीलर दावा करते है कि "पारिस्थितिक पर्यटन इस विस्फोट से उन्मुक्त नहीं है" इसका अर्थ है कि जैसे-जैसे पारिस्थितिक पर्यटकों का समूह बढ़ेगा वैसे ही वैसे समस्त सम्बद्ध समस्याएं इस क्षेत्र को भी प्रभावित करेंगी। पर्यटन उद्योग के बहुत से लोग अब इसका बाजार के एक धन्धे के रूप में उपयोग करने लगे हैं।

एक और प्रश्न जो व्हीलर ने प्रस्तुत किया है वह पर्यटकों के व्यवहार के संबंध में है। इस बात की कोई जमानत नहीं है कि पारिस्थितिक पर्यटक अथवा वैकल्पिक पर्यटक सामूहिक पर्यटक की अपेक्षा अलग ढंग से व्यवहार करेगा अर्थात वह भी कम से कम खर्च कर के अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करना चाहेगा। वह मानता है कि पर्यटन सदैव शोषण के तत्व को सम्मिलित करेगा क्योंकि ये "एक मानवीय क्रिया" है।

- व्यापारिक प्रबन्धक लाभ से प्रेरित होता है,
- पर्यटक अपने स्वार्थ से अर्थात् 'इसमें मेरे लिए क्या है' जैसी मनोवृति से प्रेरित होता है, और
- आतिथेय (स्थानीय) समुदाय पर्यटक से कुछ न कुछ ऐंठना चाहता है।

ये विशेषताएं वैकल्पिक पर्यटन या किसी भी अन्य प्रकार के पर्यटन में हो सकती है।

इसी प्रकार पर्यटकों और अतिथियों के मध्य आदान प्रदान और प्रत्यक्ष अनुभव नकारात्मक सांस्कृतिक प्रभावों की संभावनाओं को कम नहीं करता। स्थानीय समुदायों के देशी लोग पर्यटकों को अतिथिय-सत्कार की भावना के साथ स्वागत करते हैं और इस प्रक्रिया के दौरान मूल बातों में पश्चिमी तौर तरीकों को अपनाते हैं। इस प्रकार वह पर्यटन के तीव्रता से बढ़ते अत्याधिक प्रतिकूल प्रभावों और अन्तर्वेधी लक्षणों से भी बड़े पैमाने पर प्रभावित होते हैं।

एक चिन्तामय पर्यटन के लिए आदर्श वाक्य है "छोटे पैमाने पर मन्द और संतुलित विकास"। किन्तु इस आदर्श को वास्तविक रूप देन में अनेकों कठिनाइयां एवं मौलिक आर्थिक दुविधाएं हैं। यदि पर्यटन को क्षेत्र की अर्थव्यवस्था के परिपेक्ष में आय और नौकरियों की सार्थक संख्या पैदा करनी हो तो विकास के आकार को सीमित कैसे किया जा सकता है? इसका परिणाम ये है कि पर्यटन विकास ने प्रायः क्षेत्र की संरचनात्मक

सुविधाएं और ठोस प्रबंधन प्रस्तुत करने की क्षमता से भी आगे बढ़ कर कार्य किया है (डी.डब्ल्यू. रॉबिन्सन, वैकल्पिक पर्यटन हेतु नीतियां, strategies for alternative tourism. (1994)। खुम्बु (सागरेमठ राष्ट्रीय उद्यान, नेपाल) का उदाहरण देते हुए रॉबिन्सन ने उल्लेख किया कि पर्यटन से सम्बद्ध क्षेत्र ऐसी पर्यावरणीय समस्याएं प्रस्तुत करते हैं जिनमें वनों का विनाश, भंगुर धरातल पर भूमि उपयोग को लेकर प्रतिस्पर्धा और मलबे का निपटारा सम्मिलित हैं। आर्थिक प्रवर्धक प्रभाव ने स्थानीय लोगों को धनी बनाया है वे स्वयं ही संसाधनों का शोषण कर रहे हैं जैसे जंगल में नई कुटीरों या धनी परिवारों के लिए बड़े घरों के निर्माण हेतु जंगल काटना। पैदल यात्रा के मार्गों पर कूड़ा-कचरा फेंकना, इधर उधर मल मूत्र का विसर्जन आदि गन्तव्य के लिए खतरा प्रस्तुत करते हैं। और ये समस्त पर्यावरणीय विनाश एक ऐसे गन्तव्य में हो रहा है जिसे वैकल्पिक पर्यटन के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और जो ऐसे ही पर्यटन के लिए जाना पहचाना जाता है।

विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था कमजोर है और उन्हें अधिक विदेशी मुद्रा विनिमय की आवश्यकता होती है। अत: वह कभी कभी पर्यटन विकास के नियन्त्रण के सन्दर्भ में असहाय सिद्ध हैं। ऐसे देश जहां पर्यटन विकास पर नियन्त्रण के प्रति समुदाय-आधारित धारणा पाई जाती है उन समुदायों की अपेक्षा ज्यादा अच्छे प्रतीत होते हैं जहां आर्थिक व्यवहार्यता पर आधारित स्थापित शक्तिशाली तंत्र है। वह चयनात्मक होने का सामर्थ रखते हैं। किंतु सूक्ष्म-स्तर पर यह "अनुचित" विकास को रोक नहीं सकते वह केवल इसे किसी ऐसे विशेष क्षेत्र या समुदाय को स्थानान्तरित कर देंगे जो अपने भाग्य और नीतियों के निर्धारण की पूर्ण क्षमता नहीं रखते। "समुदाय उपागम" (दृष्टिकोण) से ऐसा प्रतीत होता है कि अत्यन्त शक्तिमान सदैव शक्तिमान ही रहता है।

उत्तरदायी पर्यटन को संवेदनशील आयोजन प्रणाली की अपेक्षा व्यवसायिक साधन के रूप में अधिक अपनाया जा रहा है। सूक्ष्म स्तर पर पर्यटन को संभवत: समझदारी के साथ आयोजित किया जा सकता है किन्तु बड़े स्तर पर इस कार्य की बृहतता और जटिलता के कारण से कठिन, और अनियन्त्रित हो जाता है जिसे नियोजित नहीं किया जा सकता।

वैकल्पिक पर्यटन का सिद्धांत परम्परागत पर्यटन को सम्पूर्ण रूप से अस्वीकार करता है वह इसके स्थान पर सम्पूर्ण रूप से विकसित विकल्प के लिए संघर्ष करता है। इस कारण यह पर्यटक संस्थाओं और सामूहिक पर्यटन के लिए इसके अन्दर के सुधार के किसी प्रयत्न में पर्यटन उद्योग के अंग के रूप में शामिल नहीं हो पाता। वर्षों से पर्यटन उद्योग और पर्यटन लॉबी के समर्थकों ने योजना की नीतियों का स्वागत किया है। किन्तु विडम्बना ये है कि स्वयं उत्तरदायी पर्यटन की निष्फलता एक ऐसे उद्योग द्वारा सार्वभौम पर्यटन नीति की प्रत्यक्ष स्वीकृति देखने की संभावना है जो एक बेहतर प्रतिरूप और अभिनव स्वरूप में देखे जाने के लिए उत्सुक है। अन्य उद्योगों की अपेक्षा पर्यटन उद्योग प्रकट रूप से हरित हो जाने में अधिकलाभ देख सकता है। उत्तरदायी पर्यटन विचारशील पर्यटकों को अवकाश का अनुभव करा के संतुष्ट करता है। उद्योग प्रसन्न है क्योंकि वैध रूप से पर्यटन के नए क्षेत्र प्रारंभ करके और किसी सहायता के बिना सार्वभौम आधार पर पर्यटन के विकास की मांग को बिना रोक टोक के पूरा किया जा सकता है। ये उत्तरदायी पर्यटन की धारणा को व्यवहार में सतही बना देता है। इन जटिल मुद्दों के होते हुए ऐसे विचार व्यक्त किए गए हैं जैसे हर कदम, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो समग्र उत्तरदायी प्रभाव के कुल योग में से कुछ में वृद्धि करता है" (के.वुड. और एस. हाउस, दि गुड टूरिस्ट, 1991) यहां इस बात का सार ये है कि कुछ करना कुछ न करने से बेहतर है।

10.5 क्या प्रयत्न किए जा रहे हैं ?

बहुत से देशों में गैर सरकारी संस्थाएं, सरकारी पर्यटन की संस्थाएं आदि ने टिकाऊ पर्यटन के विकास के लिए प्रयास प्रारंभ किए और उत्तरदायी/वैकल्पिक पर्यटन के विकास की ओर भी प्रयत्नशील रहे। इन पर बहुत से सम्मेलनों, कार्य शिविरों या परिसंवादों में विचार विमर्श और वाद विवाद किया जा चुका है और इस संदर्भ में उत्पन्न मुद्दों ने भी अनुसन्धान और प्रभाव एवं सूक्ष्म और वृहत् स्तरों पर इसके औचित्य के अध्ययनों को प्रोत्साहित किया है। उदाहरणार्थ, जेम्स आर मेक ग्रेगर ने अपने लेख "टिकाऊ विकास (sustainable development) (1994)" में इन मुद्दों का सविस्तार वर्णन किया है। उसने उन सात सिद्धान्तों का उल्लेख भी किया जिन्होंने कनाडा में पर्यटन क्षेत्र के अध्ययन का मार्गदर्शन किया है।

1) सम्पूर्ण विश्व में और विशिष्ट क्षेत्र (स्थानीय स्तर) पर मानव प्रभाव को एक ऐसे स्तर तक सीमित रखा जाए कि वह निर्वहन क्षमता में ही सीमित रहे।

2) क्षेत्र के कुल जैव धन को कायम रखना। इसमें निम्न शामिल होना चाहिए:

- जीवन निर्वाह सेवाओं को सुरक्षित रखना,

- प्रकृति की विविधता को सुरक्षित रखना, और
- सुनिश्चित करना कि सारे संसाधन प्रभाव टिकाऊ हैं।

> मेक ग्रेगर के अनुसार जीवन निर्वाह सेवाएं वह पारिस्थितिकीय प्रक्रियाएं हैं जो धरातल, वायु, जल और जैविक जीवन को उत्पादी होने पर्यटन समूह के अनुकूल होने और स्वयं के पुनर्विवेचन की अनुमति देता है।

3) पुन: उपयोग में न ला सकने वाले संसाधनों के रिक्तीकरण को कम से कम करना जैसे, प्लास्टिकों, धातुओं, जीवाश्म ईन्धन आदि।

4) लम्बी अवधि के आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करना चाहिए जो किसी आरक्षित भंडार से होने वाले लाभ को बढ़ाता है। इसमें सौर्य उर्जा के उपयोग, अपशिष्ट के पुन: प्रयोग आदि को भी सम्मिलित किया जा सकता है।

5) संसाधन उपयोग और पर्यावरणीय प्रबन्धन के लाभों और खर्चों के समान वितरण का प्रबन्ध होना चाहिए।

6) ऐसे नियमों में, जो उन्हें सर्वाधिक प्रभावित करते हैं, समुदायों और सम्बद्ध वर्गों की प्रभावी भागीदारी का प्रबन्ध।

7) ऐसी मान्यताओं को प्रोत्साहन जो दूसरों को सम्पोषण की योग्यता प्राप्त करने में सहयोग देती है। वास्तव में इस की सिफारिशों की प्रतिध्वनि विश्व के प्रत्येक भाग में सुनाई देती है।

10.5.1 सरकारों की भूमिका

उत्तरदायी पर्यटन के विचार को सफल बनाने के सम्बन्ध में सरकार पर भी भारी उत्तरदायित्व है। ये ध्यान देने योग्य है कि पर्यावरणीय मुद्दे केवल कानून पारित करके नहीं निपटाए जा सकते। प्राय: सरकार के विभिन्न विभागों के मध्य समन्वय नहीं होता। ये न केवल संभ्रानित पैदा करता है बल्कि कानून और नियमों की अवज्ञा के लिए बहाना प्रस्तुत करता है।

बहुत अच्छी तरह लिखे गए कानून बच निकलने के बहुत कम अवसर देते हैं। विशेषकर जानबूझ कर पर्यावरण को अधिकृत अथवा अनाधिकृत रूप से नष्ट करने वालों की रोकथाम में बहुत अच्छी तरह तैयार किए गए कानून से बहुत अन्तर पड़ता है। ऐसे कानून जन समूह-उत्साही नागरिकों और पर्यावरणीय वर्गों को अपने कार्यान्वयन के लिए संघर्ष करने का अवसर प्रदान करते हैं। फिर भी खराब कानून विशेषकर वह जिनकी रचना लापरवाही से की गई हो लाभ पहुंचाने के स्थान पर हानि अधिक पहुंचा सकते हैं क्योंकि वह पर्यावरणी आदर्शों की आज्ञा करने का कानूनी आधार देते हैं। वह कानूनी उपाय प्रस्तुत करने का आभास भी उत्पन्न करते हैं जबकि वास्तव में वह शायद ही किसी काम के हों। कभी-कभी किसी विधेयक के मसौदे पर सार्वजनिक विचार विमर्श से उसकी विशेष कमियों को दूर किया जा सकता है (विस्तृत विवेचन हेतु इकाई-21 खण्ड-6 देखिए।)।

कानून पर्याप्त है या नहीं यह महत्वपूर्ण है परन्तु इसके अतिरिक्त उसकी सफलता उन अधिकारियों की राजनैतिक इच्छा पर भी निर्भर है जो इसे कार्यान्वित करते हैं। बहुत से अच्छे कानून बेकार हो गए क्योंकि उसके पीछे राजनैतिक इच्छा शक्ति नहीं थी। केन्द्र में पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय का जो अनेकों पर्यावरणीय कानून लागू करवाने में सहायक सिद्ध हुआ, की सफलता असफलता मिली जुली रही है। उस ने कुछ मामलों में जनता से परामर्श के लिए समय दिया जबकि कुछ दूसरे मामलात में ये नहीं किया। वह इन कानूनों के कार्यान्वयन के अपने संकल्प के संपादन में भी सम्पूर्ण निरंतरता नहीं रख पाया।

इस प्रकार पर्यटन उद्योग की समस्याओं को घटाने में सरकारी नीतियों को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इसके अतिरिक्त पर्यावरणीय निम्नकर की समस्या का हल भी इन्हीं सरकारी नीतियों से निकलेगा। सरकारी चिन्ता के बिना कोई पर्यावरण को बचा नहीं सकता क्योंकि सरकार के पास ही विस्तृत अधिकार और नियमों को लागू करने का तंत्र होता है। सरकार की ओर सकारात्मक वैकल्पिक पर्यटन के सकारात्मक विकास का कारण बनेगी।

सरकार की ओर से कुछ निश्चित उपाय करने पड़ेंगे और उन्हें कार्यान्वित करना पड़ेगा, उदाहरणार्थ:

- प्रत्येक गन्तव्य की निर्वहन क्षमता को पारिभाषित करना चाहिए और इस संदर्भ में विशिष्ट दिशा निर्देशन होना चाहिए।
- ये सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि गन्तव्य पर पर्यटन को भूमि उपयोग योजना का अभिन्न भाग समझा जाए और वहां पर्यावरण निर्माण कार्यों के लिए दिशा निर्देश पर्यावरण के हितों को देखते हुए बनाए जाएं।

- अपराधियों को निश्चित सजा मिलनी चाहिए और कानून तथा नियमों की आवज्ञा के लिए कोई राजनैतिक दबाव नहीं होना चाहिए। बल्कि कानूनों को लागू करने वाले व्यक्ति और संस्थाओं को इस प्रकार के अधिकार होना चाहिए कि वह अपना कर्तव्य अर्थ पूर्ण ढंग से निभा सकें।
- पर्यावरण जागरूकता उत्पन्न करने के लिए हर प्रकार के प्रचार माध्यमों का उपयोग करना चाहिए। पर्यटन में विश्व बहुत तीव्रगति से अग्रसर होता है। ये संदेश एक बार जैसे ही उद्योगों और पर्यटकों को स्पष्ट रूप समझ में आ जाएगा कि सरकार या स्थानीय अधिकारी जहां तक पर्यावरणीय सुरक्षा का सम्बन्ध है गंभीर है और नियम या कानून औपचारिकता मात्र नहीं हैं इन्हें कठोरता से लागू किया जाता है तो परिणाम अवश्य ही सामने आएंगे।

10.5.2 उद्योग की भूमिका

- इससे पूर्व ये बताया जा चुका है पर्यटन उद्योग पारिस्थितिक पर्यटन या वैकल्पिक पर्यटन को एक नारे के रूप में या बाजार के धन्धे के रूप में केवल लाभ को बढ़ाने के लिए उपयोग कर रहे हैं। ऐसा नहीं है कि उद्योग में पारिस्थितिकीय विनाश या पर्यावरणीय निम्नीकरण पर चिन्ता करने वाले नहीं है अवश्य है पर उनकी संख्या कम हो सकती है। यदि वह जो पर्यटन उद्योग चला रहे हैं अपनी भावी पीढ़ियों को भी इस व्यापार में देखना चाहते हैं तो सरकार के साथ साथ उद्योग वालों को भी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ेगी। सरकार कानून बनाती है और उनका कार्यान्वयन उद्योग करता है। वह भूमिकाएं जिन्हें उद्योग निभाता है वह हैं:
- अपने ग्राहकों (पर्यटकों) को पर्यावरणीय मुद्दों के सम्बन्ध में संवेदनशील बनाना चाहिए और नियमों आदि के विषय में उन्हें हर प्रकार की जानकारी अपने व्यवसाय के एक कार्य के रूप में समय से दे देनी चाहिए।
- अपने कर्मचारियों और अधिकारियों को उत्तरदायी पर्यटन के सम्बन्ध में शिक्षित एवं प्रशिक्षित करना। पर्यटन क्षेत्र सबसे बड़ा नियोक्ता (सम्पूर्ण विश्व में 1200 लाख से अधिक कर्मचारी) होने के कारण कल्पना करता है कि उत्तरदायी पर्यटन के पक्ष में एक सशक्त आन्दोलन अपने आप प्रारंभ होगा।
- ये सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि स्वयं उनका अपना निर्माण कार्य या अधि संरचनात्मक सुविधाओं का विकास कार्य पर्यावरण के साथ मित्रता पूर्ण व्यवहार द्वारा नियन्त्रित होगा। उदाहरणार्थ पारिस्थितिक अनुकूल वास्तुशिल्प, अपशिष्ट का पुनः प्रयोग, नवीनीकरण योग्य ऊर्जा के उपयोग आदि को किसी सैर गाह के विकास में या किसी परियोजना की रूपरेखा बनाने में सम्मिलित किया जा सकता है।
- पर्यावरणीय लेखा परीक्षण किया जाना चाहिए ताकि वह उसे क्षेत्र में अपने व्यवसाय में किए गए कार्यों का मूल्यांकन कर सकें।
- जो पर्यावरण आदि के प्रति समान दृष्टिकोण अपनाते हैं उनके साथ व्यावसायिक सम्बन्ध रखना।

मेक ग्रेग ने सुझाव दिया कि "पर्यावरणीय उत्तरदायित्व एक सामूहिक लक्ष्य बन सकता है जो पर्यटन उद्योग में शामिल सब लोगों (ग्राहकों, प्रबन्धकों, निवेशकों, हिस्सेदारों कर्मचारियों, नीति निर्धारकों) के विचार प्रतिबिम्बित करेगा।" परिणामस्वरूप एक टिकाऊ आधार मिलेगा जो पर्यटकों और पर्यटन उद्योग के संचालकों की भावी पीढ़ियों के लिए बना रहेगा और छोटे व्यक्तिगत व्यवसायों के लिए उपयोगी भी होगा"।

10.5.3 स्थानीय निवासियों की भूमिका

सरकार और उद्योग के अतिरिक्त किसी गन्तव्य के स्थानीय निवासियों को भी उत्तरदायी/वैकल्पिक पर्यटन की उन्नति के दायित्व में भागीदारी करनी पड़ेगी। ऐसा इसलिए और भी है कि नकारात्मक प्रभावों या गलत नीतियों के कारण सबसे अधिक हानि स्थानीय निवासियों को ही होगी। सामान्य रूप से ये देखा गया है कि पर्यटन के लाभों में साझेदारी-करने के लिए स्थानीय लोगों में अपने ही पर्यावरण की उपेक्षा करने या क्षतिग्रस्त करने की प्रवृत्ति होती है। बहुत से गन्तव्यों पर जहां स्थानीय लोगों की आर्थिक स्थिति सुधर चुकी है वहां उन स्थानीय लोगों ने नकारात्मक प्रभावों का मूल्यांकन किए बिना अपने धन को विकास के लिए लगा दिया है। उदाहरणार्थ एक व्यक्ति के पास एक छोटा सा 10 कमरों का वास स्थान था। आमदनी बढ़ने के साथ ही उस व्यक्ति ने स्थानीय भवन निर्माण के प्रतिवेश पर ध्यान दिए बिना अपने घर में मन्जिलों पर मन्जिलें बनवानी शुरू कर दीं ताकि उसके व्यवसाय में उन्नति हो। इसी प्रकार स्थानीय लोग कूड़े कचरे के निपटाने की चिन्ता भी नहीं करते। इस प्रकार का विकास तत्कालिक लाभ तो देता है किन्तु ऐसे गन्तव्यों का जीवनकाल छोटा हो जाता है और

दीर्घकालिक क्षति पहुंचती है। अतः ये आवश्यक है कि स्थानीय लोग टिकाऊ/वैकल्पिक पर्यटन विकास में निर्णायक भूमिका निभाएं। इस दिशा में जो कदम उठाने हैं उनमें से कुछ निम्नवत् हैं:

- अपने साथी स्थानीय लोगों में पर्यावरण के बारे में जागरूकता पैदा करना,
- हर प्रकार के निर्माण कार्यों और भूमि उपयोग आदि पर कड़ी नजर रखना,
- गैर परम्परागत ऊर्जा संसाधनों को अपनाना,
- गन्तव्य की निर्वहन क्षमता के निर्धारण के सम्बन्ध में अपने विचारों को सामने रखने का अधिकार,
- यदि आवश्यकता हो तो पर्यटन विकास आदि में प्राकृतिक संसाधनों के दुरूपयोग के विरूद्ध विरोध प्रकट करना।

सरकार, पर्यटन उद्योग और स्थानीय लोगों के मध्य विचारों के आदान प्रदान और क्रियाओं के द्वारा किए गए प्रयासों से ही उत्तरदायी पर्यटन को सफलता मिल सकती है।

बोध प्रश्न 2

1) उत्तरदायी पर्यटन की समस्याओं का उल्लेख कीजिए। विकसित देशों की अपेक्षा विकासशील देशों को पर्यटन में अधिक समस्याओं का सामना क्यों करना पड़ता है ?

.....

.....

.....

2) "पर्यावरण के बचाव के संदर्भ में जैव विविधता का संरक्षण एक निर्णायक कारक है जिस पर विचार किया जाना चाहिए" मूल्यांकन कीजिए।

.....

.....

.....

3) "वैकल्पिक पर्यटन के विकास में सरकार एक सकारात्मक भूमिका निभा सकती है"। विश्लेषण कीजिए।

.....

.....

.....

10.6 सारांश

पर्यटन एक ऐसा विषय है जिसने सारे पर्यावरणीय विशेषज्ञों को दुनिया भर में चिन्तित कर रखा है। पर्यटक विभिन्न स्थानों का अवकाश और मनोरंजन के लिए भ्रमण करते है और बुनियादी तौर पर वह अच्छा समय व्यतित करने आते हैं। उनका ये व्यवहार अनुचित नहीं है। ये उस समय अप्रिय हो जाता है जब वे ऐसे स्तर की सुविधाएं लेने के लिए आग्रह करते हैं जो स्थानीय संसाधनों को क्षतिग्रस्त करती हैं और वह ये आग्रह इस प्रकार करते हैं कि या तो स्थानीय लोग उदासीन होकर दूर हो जाते हैं या इस हद तक पूरा करते हैं कि परिणाम स्वरूप स्थानीय सांस्कृतिक प्रारूप रूपान्तरित या विकृत हो जाता है। ये बात विशेषरूप से जनजातीय क्षेत्रों में या ऐसे क्षेत्रों में जहाँ के स्थानीय समुदाय भाषाई या सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत अल्प संख्या में हैं सुस्पष्ट हो जाती है। इस इकाई में हम ने सामूहिक पर्यटन द्वारा प्रस्तुत उपरोक्त समस्याओं के उत्तर के रूप में वैकल्पिक पर्यटन को परखने का प्रयास किया है। वैकल्पिक पर्यटन अपने आप में पर्यटन का एक बहुत जटिल स्वरूप है किन्तु इसके साथ ही ये अपनी कार्य योजना के प्रतिपादन के विषय में बहुत से प्रश्न उठाता है जो सैद्धान्तिक और व्यवहारिक स्तरों पर अलग अलग नतीजे प्रदर्शित करते हैं। हम ने सरकार की नीतियों की सहायता से इन समस्याओं पर काबू पाने के उपायों पर भी विचार किया है। इस इकाई ने आपको वैकल्पिक पर्यटन के लाभों से परिचित कराया और वैकल्पिक पर्यटन को पर्यावरण संरक्षण के लिए एक उचित पर्यटन के रूप में वर्णित किया गया है तथा इसी संदर्भ में स्थानीय निवासियों के दायित्व को भी स्पष्ट किया गया है।

10.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) वैकल्पिक पर्यटन निसंदेह पर्यटन की समस्याओं का हल प्रस्तुत करता है। अपने उत्तर को भाग 10.2 के आधार पर लिखिए।

2) अपने उत्तर के लिए उपभाग 10.2.1 और 10.2.2 देखिए।

बोध प्रश्न 2

1) विश्वस्त पर्यटन की विभिन्न समस्याओं पर भाग 10.4 में विचार किया गया है। प्रश्न के दूसरे भाग के लिए हम हवाई के अनुभव का उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं जिसने उत्तरदायी पर्यटन के प्रति सरकार के रवैये के कारण कुछ समस्याओं का सामना किया है।

2) बढ़ते हुए पर्यटन उद्योग ने पर्यावरणीय निम्नीकरण की समस्या को घटाने के लिए एक प्रकार के वैकल्पिक पर्यटन का प्रस्ताव रखा। किन्तु वैकल्पिक पर्यटन भी क्रमशः नए गन्तव्यों की खोज करते हुए पर्यावरण के लिए संकट उत्पन्न करता है।

3) पर्यटन की नीतियों में सरकार ने महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका निभाई है। आपका उत्तर उपभाग 10.5.1 पर आधारित होना चाहिए। उत्तर में यह उजागर होना चाहिए कि किस प्रकार सरकार पर्यटन उद्योग को आय पैदा करने वाला क्षेत्र घोषित करने में द्विविधा अनुभव कर रही है और उसके विस्तार को इस उद्योग द्वारा खड़े किए गए संकटों को कम करने के लिए सीमित कर रही है।

इस खण्ड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

आर. कारसन	:	*द सी एराउण्ड अस*, ओ यू पी, न्यूयार्क 1951
आर. कारसन	:	*साइलेन्टस्प्रिंग*, हॉटन मिफ़लिन न्यूयार्क 1962
आर. मेश	:	*द राइट्स ऑफ नेचर*, यूनिवर्सिटी ऑफ विस्कॉन्सिन प्रेस, मैडीसन, 1989
माधव गेडगिल एण्ड राम चन्द्र गुहा	:	*दिस फिशर्ड लैण्ड एन इकालॉजिकल हिस्ट्री आफ इण्डिया*, ओ यू पी, दिल्ली, 1992
ए.वी. सिएटन (एड)	:	*टूरिज्म, द स्टेट आफ द आर्ट*, जॉन विली न्यूयार्क, 1994
विद्या निवास मिश्रा (एड)	:	*क्रीएटिविटी एण्ड एन्वाएरॉनमेन्ट*, साहित्य एकेडेमी, नई दिल्ली, 1992
खान, ऑलसेन वार (एड)	:	*वी एन आर के एनसाइक्लोपीडिया आफ हॉस्पीटेलिटी एण्ड टूरिज्म*, न्यूयार्क 1993
वरनेस वुल्फगैंग (एड)	:	*आस्पेक्ट्स आफ इकॉलॉजिकल प्राब्लम्स एण्ड एनवाएरॉनमेन्टल अवेएरनेस इन साउथ एशिया*, मनोहर, नई दिल्ली 1993

इस खण्ड के लिए कुछ अभ्यास

अभ्यास 1

हमें प्रसन्नता है कि आप ने इस खण्ड का अध्ययन किया। अब इकाई 8 से प्राप्त सूचनाओं को उपयोग में लाकर अपने नगर/क्षेत्र/प्रदेश के लिए एक पर्यटन विकास की ऐसी योजना बनाइए जो पर्यावरण के हितों को मित्रवत देखें।

अभ्यास 2

वैकल्पिक पर्यटन के सम्बन्ध में अपने ज्ञान के आधार पर अपने नगर/क्षेत्र/प्रदेश में चल रही पर्यटन विकास योजना के जैसी ही एक योजना बनाकर लिखिए।

अभ्यास 3

अपने क्षेत्र के होटलों, रेस्तराओं और दुकानों द्वारा कूड़े करकट के निपटाने के लिए काम में लाए जाने वाले उपायों की तुलना और विश्लेषण कीजिए।

अभ्यास 4

क्या आप अपशिष्ट के पुन: प्रयोग की योजनाओं के विषय में जानते हैं यदि नहीं तो ऐसे लोगों से पूछिये जो इस बारे में जानते हों।

अभ्यास 5

अपने क्षेत्र में प्रकृति क्लब या संस्था स्थापित कीजिए और पर्यावरण संबन्धी शिक्षा दीजिए।





क्या हम सही दिशा में जा रहे हैं

पर्वतीय स्थलों पर भीड़



NMDC-210

खंड

4

पर्यावरण, समुदाय और पर्यटन

इकाई 11

पहुंच, अधिसंरचनात्मक सुविधा एवं भूमि उपयोग : मूल मुद्दे 5

इकाई 12

समुदाय और आंचलिक संपदा 18

इकाई 13

गुणक प्रभाव : लाभ और परिणाम 30

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें 39

इस खंड के लिए अभ्यास 39

विशेषज्ञ समिति

श्री अजय माहुरकर
इतिहास संकाय
इग्नो

श्री आलोक चंदोला
टूरिज्म कंसलटेंट
नई दिल्ली

श्री आशिष कुमार सिंह
मैनेजिंग डायरेक्टर
केरल टूरिज्म डेवलेपमेंट
त्रिवेंद्रम

डॉ. गीता केकर
विज्ञान विद्यापीठ
इग्नो

डॉ. इकबाल मलिक
डायरेक्टर, वातावरण
नई दिल्ली

श्री जहांगीर घड़ियाली
जनरल मैनेजर
वेलकम ग्रुप होटल, औरंगाबाद

डॉ. जसवंत सोखी
विज्ञान संकाय
इग्नो

प्रो. कपिल कुमार
डायरेक्टर
सेंटर फॉर एक्सटेंशन
एजुकेशन, इग्नो

श्री के. टी. सुरेश
कोआर्डिनेटर, इक्वेशन
बैंगलोर

श्रीपती लतिका नाथ
वर्ल्ड लाइफ फाउंडेशन
देहरादून

डॉ. नीना राव
हेड, डिपार्टमेंट ऑफ
टूरिज्म, कॉलेज ऑफ
वोकेशनल स्टडीज

श्री प्रदीप सांखला
मैनेजिंग डायरेक्टर
डायनेमिक्स टूर एंड
ट्रैवेल्स प्राइवेट लिमिटेड
नई दिल्ली

श्री पी. राज
डायरेक्टर
रिलएंट सर्विसेज चौबीढोडी
वर्ल्ड वाइड नेटवर्क
मुम्बई

डॉ. रविन्द कुमार (संयोजक)
फेकेल्टी ऑफ हिस्ट्री
इग्नो

कार्यक्रम संयोजक : प्रो. कपिल कुमार

पाठ्यक्रम दल :

डॉ. रवीन्द्र कुमार
श्री अजय माहुरकर
डॉ. गीता केकर
} **पाठ्यक्रम संयोजक**

डॉ. जसवंत सोखी
श्री सलिल मिश्र
प्रो. कपिल कुमार

खंड निर्माण दल

इकाई सं.	लेखक	संकाय सदस्य
11	प्रो. आर सी गुप्ता स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आरकिटेक्चर, नई दिल्ली	श्री सलिल मिश्र
12	डॉ. क्वीनी प्रधान् सेंटर ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज जे.एन.यू., नई दिल्ली	श्री सलिल मिश्र
13	श्री मयंक कुमार सत्यवती कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली	श्री सलिल मिश्र

खंड संयोजक
श्री सलिल मिश्र

सहयोग
श्रीमती विद्या आनन्द
श्री एल.डी. नाबर्ट

अनुवाद

श्रीमती सीमा कुमारी

संकाय सदस्य
इं.गा.रा.मु.वि.
सलिल मिश्र

सामग्री निर्माण

प्रो. शोभिता जैन्
निदेशक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

सितम्बर, 1998

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 1998

ISBN-81-7605-394-5

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुन: प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

NMDC-210

BTS-05/142

खंड-4 पर्यावरण, समुदाय और पर्यटन

जैसा कि शीर्षक से विदित है इस खंड में महत्वपूर्ण विषयों, पर्यावरण समुदाय और पर्यटन पर विचार किया गया है। इन तीनों विषयों पर अलग-अलग या एक दूसरे से स्वतंत्र रूप से विचार नहीं किया गया है। सम्पूर्ण एकाग्रता उनकी अन्योन्य क्रियाओं पर रही है और यह देखने का प्रयास किया गया है कि वे किस प्रकार एक दूसरे से संबंधित हैं। पर्यटन और पर्यावरण के मध्य संबंध इस पाठ्यक्रम का मुख्य विषय है। यह खंड समुदायों और उनके पर्यटन तथा पर्यावरण दोनों के अन्तर्संबंधों की प्रक्रियाओं में भूमिका को स्पष्ट करने का प्रयास करता है। इस खंड की तीन इकाइयों में तीन अलग अलग विषयों पर विचार किया गया है परंतु उनके मुख्य सरोकार और चिन्ताएं एक ही हैं।

इकाई 11 पहुंच, अधिसंरचनात्मक सुविधा और भूमि उपयोग: मूल मुद्दे, नियोजित पर्यटन के महत्व को स्पष्ट करती है। यह इस सदर्भ में अधिसंरचनात्मक सुविधाओं के अर्थ और सम्बद्धता को स्पष्ट करती है। यह इकाई अधिसंरचनात्मक सुविधाओं के विकास के विभिन्न घटकों की सूचना भी देती है। इसी संदर्भ में मास्टर प्लान के महत्व पर बल इसलिए दिया गया है कि वह पर्यटन विकास के योजना बद्ध उपागम का एक भाग है। अन्ततः यह पर्वतीय एवं तटीय पर्यटन की पृष्ठभूमि में योजना बद्ध विकास की प्रासंगिकता को रेखांकित करती है। इकाई 12 इस इकाई को पर्वतीय पर्यटन के बारे में और अधिक सूचना देकर सुदृढ़ करती है। इसी प्रकार इकाई 13 अनियोजित पर्यटन के नकारात्मक प्रभावों को स्पष्ट करती है।

इकाई 12 समुदाय और आंचलित संपदा, आपको समुदाय की धारणा से अवगत कराती और और ऐतिहासिक विकास के परिणामस्वरूप समुदाय के स्वरूप में आये बदलावों की खोज करती है। यह आंचलिक संपदाओं और पर्यटन में उनके महत्व का वर्णन करती है। यह बाहरी लोगों द्वारा स्थानीय अर्थव्यवस्था में घुसपैठ के कारण सामुदायिक संरचना पर पड़ने वाले प्रभाव के परिणामों की व्याख्या भी करती है। यह इकाई यह संकेत भी देती है कि इनमें से बहुत से सामाजिक रूप से अवांछनीय परिणामों से टिकाऊ पर्यटन के उपयोग द्वारा बचा जा सकता है जो मात्र ऐसा साधन है जो बाहरी लोगों और स्थानीय समुदायों के लिए पर्यटन से प्राप्त लाभों की साझेदारी को सुनिश्चित कर सकता है।

इकाई 13 गुणक प्रभाव: लाभ और परिणाम से संबंधित है। गुणक प्रभाव अर्थशास्त्र का शब्द है और इसे यहां स्थानीय अर्थव्यवस्था पर पर्यटन के प्रभाव को नापने के लिए उपयोग किया गया है। गुणक प्रभाव के साथ ही इस इकाई में पर्यावरण सहित और भी विविध प्रकार के पर्यटन के प्रभावों पर विचार किया गया है।



चित्र: नैनीताल में झील की सफाई

इकाई 11 पहुंच, अधिसंरचनात्मक सुविधा एवं भूमि उपयोग : मूल मुद्दे

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य
11.1 प्रस्तावना
11.2 पर्यटन के लिए योजना का महत्व
11.3 पर्यटन नियोजन : व्यापक संदर्भ
  11.3.1 वहन क्षमता
  11.3.2 पर्यटक संसाधनों का मूल्यांकन
  11.3.3 अधिसंरचनात्मक सुविधाओं का विकास
11.4 पर्यटन मास्टर प्लान
  11.4.1 भौतिक विकास के मुद्दे
  11.4.2 नगर में पर्यटक स्थल
  11.4.3 योजना द्वारा संरक्षण
  11.4.4 स्थानीय योजना पक्ष
11.5 भौतिक योजना: पहाड़ी पर्यटन
  11.5.1 योजना की अनिवार्यताएं
  11.5.2 पहुंचने की सुविधा
11.6 भौतिक विकास : तटीय रिसॉर्ट
11.7 सारांश
11.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- योजना बद्ध पर्यटन के महत्व और अर्थव्यवस्था पर उसके प्रभावों को समझ सकेंगे;
- पर्यटन विकास के लिए प्रमुख दबाव क्षेत्रों को समझ सकेंगे;
- मास्टर प्लान और उसके विभिन्न घटकों के महत्व को समझ सकेंगे; और
- पर्यटन योजना को पर्वतीय और तटीय क्षेत्रों की केस स्टडी के द्वारा समझ सकेंगे।

11.1 प्रस्तावना

टी.एस. 1 में हमने पर्यटन नीति और योजना सहित सन्दर्भ में अधिसंरचनात्मक सुविधा के विकास पर विचार विमर्श किया है। इस इकाई में हम विशिष्ट स्थितियों के लिए उस सामान्य बोध को प्रयोग में लाएंगे। यह इकाई पर्यावरणीय मुद्दों पर बल देते हुए विकासशील एवं टिकाऊ पर्यटन में संरचनात्मक सुविधाओं के महत्व को परिचित कराने का प्रयास करती है। यह राष्ट्रीय विकास में पर्यटन की भूमिका को परिभाषित किए जाने से प्रारंभ होती है और इसी संदर्भ में नियोजित पर्यटन के महत्व को उजागर करती है। फिर यह अधिसंरचनात्मक सुविधा के विकास के लिए अनिवार्य घटकों के अर्थ की व्याख्या करती है। यह इकाई पर्यटन विकास के सुव्यवस्थित उपागम को ध्यान में रखते हुए 'मास्टर प्लान' की भूमिका को भी समझाती है। अंत में यह इकाई पर्वतीय रिसॉर्ट और तटीय क्षेत्रों के संदर्भ में पहुंच, भूमि उपयोग और अधिसंरचनात्मक सुविधा के मुद्दों के अध्ययन की चर्चा भी करती है।

1970 और 1980 के दशकों में पर्यटन उद्योग की वृद्धि की वजह से पर्यटन केंद्रों और अधिसंरचनात्मक सुविधाओं के विकास के लिए कुछ नई चुनौतियां आ खड़ी हुई हैं। पर्यटन विकास के अधिकारियों को न केवल पर्यटकों की संख्या में होने वाली वृद्धि का ध्यान रखना पड़ेगा बल्कि ऐसे कारकों द्वारा जैसे गतिशीलता प्रारूप और यात्रा के ढंग में परिवर्तन, बदलती हुई पसन्द, स्तर आदि के कारण आने वाले परिवर्तनों को भी ध्यान में

रखना पड़ेगा। पर्यटन किसी भी अन्य उद्योग की तरह राष्ट्रीय, प्रादेशिक और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है। यह सामान और सेवाओं के उत्पादन को प्रभावित करता है जिसके कारण विशेष क्षेत्र द्वारा पर्यटकों की मांगों की आपूर्ति में वृद्धि हो जाती है। यह रोजगार भी मुहैया कराता है, कौशल और ठेकेदारी के विकास को प्रेरित करता है और आय वितरण प्रारूप को प्रभावित करता है।

11.2 पर्यटन के लिए योजना का महत्व

राष्ट्रीय सरकार तथा प्रादेशिक सरकार पर्यटन की प्रसारणशील दुनिया में उचित योजना पर अधिक से अधिक बल देती है। यह पर्यटन प्रोत्साहन (एकल राष्ट्रीय उत्पाद बढ़ाने वाले एक प्रमाणित माध्यम होने के कारण विशेषकर विकासशील देशों में) और गन्तव्य क्षेत्र के भौतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक पर्यावरण को सुरक्षित रखने में सरोकारों के मध्य संतुलन सुनिश्चित करने के लिए किया जाता हैं।

पर्यटन विकास से संबंधित क्रियाओं में योजना के महत्व का उद्देश्य पर्यटन संबंधी क्रियाओं और स्थानीय पर्यावरण के मध्य संतुलन बनाए रखना है। ऐसा विशेष रूप से विकासशील देशों में है। यहां यह प्रभाव सबसे सबल हैं क्योंकि उन्हें ऐसी संरचनात्मक सुविधाएं विकसित करनी चाहिएं जो किसी भी पर्यटन क्षेत्र की सांस्कृतिक विशेषताओं को सुरक्षित रख सकें और हर प्रकार के सामाजिक आर्थिक विकास को प्रोत्साहित भी करें। साथ ही साथ पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए अपने भौतिक पर्यावरण की सुरक्षा भी करनी चाहिए और उसे बढ़ाना चाहिए।

पर्यटन संबंधी गतिविधियों के लिए पर्यटन प्रोत्साहन और अधिसंरचनात्मक सुविधाओं का विकास किसी भी पर्यटन क्षेत्र पर सामाजिक-सांस्कृतिक, सामाजिक-आर्थिक, भौतिक और पर्यावरणीय प्रभाव डालेगा जिसके लिए विकासीय निर्णय लेने से पूर्व वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग करते हुए योजनाबद्ध मूल्यांकन एवं विश्लेषण करना चाहिए। ये पर्वतीय पर्यावरण के संवेदनशील प्रतिवेशों, वन्य जीवों एवं तटीय रिसॉर्ट और अन्य परम्परागत सांस्कृतिक दृष्टि से संवेदी गंतव्यों पर अधिक लागू होते हैं। इस प्रकार पर्यटन विकास के हर कार्यक्रम का मौलिक उद्देश्य सकारात्मक प्रभावों को बढ़ावा देना और गंतव्य क्षेत्रों के सामाजिक, आर्थिक और भौतिक पर्यावरण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों को घटाने वाला होना चाहिए।

11.3 पर्यटन नियोजन : व्यापक संदर्भ

राष्ट्रीय पंचवर्षीय योजनाओं में पर्यटन विकास हेतु महत्व दिए जाने वाले प्रमुख क्षेत्र निम्नवत हैं जो स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन नियोजन से संबंधित हैं: (टी.एस.-1 की इकाई 29 भी देखिए)

1) सीमित संसाधनों को बहुत अधिक क्षेत्रों/केंद्रों में फैलाने के बजाए कुछ ऐसे चुने हुए पर्यटक क्षेत्रों एवं केंद्रों को विकसित किया जाए जो पर्यटकों में लोकप्रिय हों।

2) देश के पारंपरिक सांस्कृतिक और भ्रमण संबंधी पर्यटन को सौंदर्य बोधी पर्यावरणात्मक और सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यटन की ओर ले जाना चाहिए।

3) अधिक से अधिक पर्यटकों को आकर्षित करने और उनके ठहरने की अवधि को बढ़ाने के लिए हिमालय, रेतीले तटों वाली सुनहरी धूप से विशाल समुद्र तटीय क्षेत्र और वन्य जीवन जैसे पर्यटन संसाधनों का इस्तेमाल करके क) ट्रैकिंग, ख) शीतलकालीन क्रीड़ा, ग) वन्य जीवन पर्यटन और घ) तटीय रिसॉर्ट जैसे परम्परागत क्षेत्रों को विकसित करना चाहिए।

4) सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व की राष्ट्रीय विरासत की परियोजनाओं का पुनरुद्धार और संतुलित विकास हो ताकि भारत एक सांस्कृतिक पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित हो सके। साथ ही पर्यटन का राष्ट्रीय विरासत के संरक्षण के प्रमुख माध्यम के रूप में उपयोग हो सके।

वृहत, मध्य और लघु आयामी पर्यटन काम्पलेक्स की योजना और विकास पर्यटन संसाधनों और पर्यटन गतिविधियों को संघटित कर सकेंगे। इससे एक ओर तो सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणात्मक उद्देश्यों की दृष्टि से और दूसरी ओर पर्यटकों की ढांचागत सुविधाओं की आवश्यकताओं की दृष्टि से अधिकतम लाभ प्राप्त हो सकेगा। पर्यावरणीय संरक्षण को ध्यान में रखते हुए विभिन्न गंतव्य क्षेत्रों के लिए प्रायोजित अनेक पर्यटन

गतिविधियों के लिए विविध प्रकार की ढांचागत सुविधाओं की मांग की आपूर्ति का प्रबंध पर्यटन विकास योजनाओं के द्वारा किया जाना चाहिए। पर्यटन गतिविधि क्षेत्र अपने अंदर विभिन्न प्रकार के उद्देश्यों को समेटे हुए है:

1) सहनशील मनोरंजन के लिए प्राकृतिक सौंदर्य के विस्तृत क्षेत्र

2) मनोरंजन और अवकाश व्यतीत करने के लिए क्षेत्र जैसे समुद्र तट के रिसॉर्ट

3) अनुकूल जलवायु वाले सुखदायी क्षेत्र जैसे पर्वतीय रिसॉर्ट

4) ऐतिहासिक स्थल स्मारकीय काम्पलेक्स मेले और उत्सवों वाले केंद्रों सहित सांस्कृतिक पर्यटन के क्षेत्र

5) धार्मिक पर्यटन क्षेत्र जैसे तीर्थ स्थल और मंदिरों के नगर

6) साहसिक पर्यटन क्षेत्र अर्थात ट्रैकिंग शिलारोहण, पर्वातोरहण, स्कीइंग आदि, और

7) विशेष दिलचस्पी के क्षेत्र अर्थात वन्य जीवन क्षेत्र, आकर्षक वनस्पति एवं प्राणी समूह के क्षेत्र, पक्षी विहार आदि।

11.3.1 वहन क्षमता

पर्यटन संसाधन पर आधारित उद्योग है और संसाधन का मूल्यांकन इसलिए महत्वपूर्ण है कि संसाधन संरक्षण के क्षेत्रों की पहचान की जा सके और पर्यटन को बेहतर प्रोत्साहन मिल सके। संसाधन की पहचान करना और उसे विभिन्न प्रतिस्पर्द्धी उपयोगों के लिए निर्दिष्ट करना भी अनिवार्य है और वह सामर्थ्य निधारित करना भी जो स्थान और गतिविधि दोनों के अनुसार उपयुक्त हो। वहन क्षमता की धारणा पर्यटन सुविधाओं और अधिसंरचनात्मक सुविधा की कुशल योजना की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से पर्वतीय क्षेत्रों जैसे संवेदनशील स्थानों के लिए। पर्यटन क्षेत्रों के आवश्यकता से अधिक और गलत इस्तेमाल से इन क्षेत्रों की संमस्त सुविधाएं संतृप्त हो जाती हैं (भौतिक क्षमताएं), पर्यावरण का ह्रास होता है (पर्यावरणीय या पारिस्थितिक क्षमता), या पर्यटक का आनन्द कम हो जाता है (मनोवैज्ञानिक क्षमता)। अब ये धारणाएं आम तौर से स्वीकृत की जा चुकी हैं किन्तु अवसीमाओं के मापन की कठिनाइयों ने (शायद भौतिक क्षमता को छोड़ कर) योजना यंत्र के रूप में वहन क्षमता के उपयोग को सीमित कर दिया है। मनोरंजनात्मक क्षेत्रों की भौतिक और पारिस्थितिक क्षमता सामाजिक क्षमता के साथ मिलकर आदर्श क्षमता दिशा निर्देशन के सिद्धांत को सुनिश्चित करते हैं। प्रकृति में सुरक्षित क्षेत्रों और पारिस्थितिक दृष्टि से नाजुक या संवेदनशील क्षेत्रों अर्थात पर्वतीय पर्यावरण को पारिस्थितिक क्षमता दिशा निर्देशों के प्रति और अधिक विश्वास दिलाना चाहिए और इन्हें उस पर्यावरण की दृष्टि से प्रतिपादित करना चाहिए जिसका आवास एक अभिन्न भाग है। प्राय: इसे विकसित करने वालों के तुरंत लाभ प्राप्ति के उद्देश्यों के कारण इसकी उपेक्षा की जाती है। यह स्वस्थ प्रवृत्ति नहीं है और इस पर रोक लगानी होगी।

11.3.2 पर्यटक संसाधनों का मूल्यांकन

प्राकृतिक और मानव निर्मित आकर्षण के आधार पर ही पर्यटन विकास का कोई कार्यक्रम विकसित किया जा सकता है। इस संसाधन आधार की प्राय: उपेक्षा की जाती है या उसकी जटिलताओं को समझे और सुलझाए बिना अथवा इसके विशेष गुणों, संभावनाओं और प्रतिबंधों के विश्लेषण के बिना इसे कार्यान्वित करने का प्रयत्न किया जाता है।

यहां दो मौलिक प्रश्न उठते हैं:

क) किसी क्षेत्र के संसाधन के आधार की पहचान कैसे की जाए? और

ख) ऐसे संसाधन का उनके बाजार के संदर्भ में मूलभूत महत्व का मूल्यांकन किस प्रकार किया जाए? इन प्रश्नों के जवाब के लिए पहले संसाधन आधारों की एक सूची बनानी होगी और फिर मूल्यांकन की उचित तकनीकों की ओर ध्यान देना होगा। संसाधन उपयोगिता न्यूनतम सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभावों के साथ मांग (पर्यटकों की अभिरुचि जिसे सर्वेक्षण द्वारा जाना जा सकता है) और आपूर्ति (मांग पूरी करने के लिए स्थानीय क्षमता) का परिणाम है। इस विषय में किसी पर्यटन विकास कार्यक्रम के प्रारंभ से पूर्व पर्यावरणीय प्रभावों का अध्ययन कराना चाहिए।

11.3.3 अधिसंरचनात्मक सुविधा का विकास

यदि पर्यटन को किसी क्षेत्र के विकास कार्यों के अभिन्न घटक के रूप में प्रभावी ढंग से कार्य करना है तो पर्यटन से संबंधित भौतिक अधिसंरचनात्मक सुविधाओं का विकास अनिवार्य है। अधिसंरचनात्मक सुविधाओं की कल्पना भी क्षेत्र और मेजबान जनसंख्या की सम्पूर्ण आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए। किसी रिसॉर्ट को पर्याप्त पैमाने पर आकर्षण प्रदान करना पर्यटक केंद्र के विकास के लिए एक अत्यावश्यक पहलू है। मोटे तोर पर कहा जाता है कि पर्यटन केंद्र को सामूहिक रूप से गुण प्रदान करने वाले तीन प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं:

i) पहुंचने की सुविधा

ii) आवासीय सुविधाएं और सेवाएं, और

iii) मनोरंजन

i) पहुंचने की सुविधा

पर्यटन स्थान या पर्यटक गंतव्य क्षेत्र के संदर्भ में पहुंचने की सुविधा में सम्मिलित हैं :

क) पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण नगर के विशिष्ट स्थानों के लिए निकटवर्ती हवाई अड्डे, रेलवे स्टेशन, सड़क मार्ग, टर्मिनल या फिर अन्य प्रवेश बिन्दुओं से नगर की ओर जाने की सुविधा।

ख) परिवहन के तीन परम्परागत साधनों अर्थात सड़क, रेल और वायु द्वारा देश के निकटवर्ती स्थल से पर्यटन केंद्र और पर्यटन गंतव्य क्षेत्र तक पहुंचने की सुविधा और क्षेत्र के अंदर पर्यटक की रुचि के अन्य महत्वपूर्ण केंद्रों के साथ संयोजन।

ii) आवासीय सुविधाएं और सेवाएं

पर्यटन केन्द्र और गंतव्य क्षेत्रों पर मात्रात्मक एवं गुणात्मक रूप से पर्यटकों की आवश्यताओं को संतुष्ट करने वाले पर्याप्त आवास की व्यवस्था एक महत्वपूर्ण कारक है। कभी कभी अच्छा आवास पर्यटकों को अधिक समय तक विश्राम करने की प्रेरणा देता है। भारत के मौजूदा संदर्भ में इस मौलिक सुख सुविधा का अभाव पहुंचने की अपेक्षा पर्यटक आगमन के लिए अधिक बड़ा बाधक है। विभिन्न केंद्रों पर दिए जाने वाले आवास की मात्रा एवं स्वरूप पर्यटकों की जरूरतों पर निर्भर करेगा किंतु कुल मिलाकर पर्यटन के लिए आवास आरामदेह समग्र सुविधाओं और सेवाओं सहित और आर्थिक तथा भौतिक दृष्टिकोण से स्थिति के अनुरूप होना चाहिए। साथ ही आवासीय विकास के लिए आवश्यक अन्तर्निमित ढांचागत सुविधा होनी चाहिए।

पर्यटक कॉम्प्लेक्स आकर्षिक बनाने के लिए निरंतर विद्युत एवं सुरक्षित जल आपूर्ति, मल निकास, अपवहन और स्वच्छता प्रबंध आदि मौलिक सुविधाएं और सेवाएं ऐसे अनिवार्य तत्व हैं जिन्हें सुनिश्चित कर लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त नागरिक सेवाएं जैसे चिकित्सा सुविधा, डाक तार और बैंकिंग को सुविधाओं का अनिवार्य भाग समझा जाता है। फिर भी इन सभी पक्षों में पर्यटन के प्रकार और गंतव्य की स्थिति के अनुसार परिवर्तन रहता है।

iii) मनोरंजन पक्ष

यदि आवास उपलब्धता प्रमुख रूप से पर्यटन के ठहरने की अवधि को बढ़ाने में प्रभावी है तो किसी पर्यटक केंद्र पर पर्याप्त मनोरंजन के तत्वों की व्यवस्था कुल मिलाकर पर्यटन स्थल के समय को बढ़ा सकती है। विकास का यह पक्ष विश्राम और मन बहलाव के लिए अनिवार्य रूप से महत्वपूर्ण है। पर्यटन के संदर्भ में मनोरंजन की बहुत सी अभिव्यक्तियां हैं जिसमें बाहरी सक्रिय और निष्क्रिय मनोरंजन के आयोजन के अतिरिक्त हर प्रकार के व्यावसायिक मनोरंजन भी सम्मिलित हैं। महानगरों और प्रमुख नगरों के संदर्भ में यह समस्या किसी हद तक हल हो चुकी है क्योंकि अब पर्यटक ऐसी आंतरिक और बाहरी दोनों प्रकार की मनोरंजनात्मक सुख सुविधा प्राप्त कर सकते हैं जो स्थानीय जनसंख्या की भी आवश्यकताओं में शामिल है। फिर भी छोटे स्थानों में, जो संभवत: अधिक पर्यटन रुचि और आकर्षण के हो सकते हैं, ऐसे मनोरंजनात्मक सुख साधन पर्यटकों के लिए दिए जाने चाहिए। किंतु ऐसा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश और गंतव्य के परिवेश को ध्यान में रखते हुए ही करना चाहिए।

पर्यटक अधिसंरचनात्मक सुविधा के प्राथमिक तत्वों के अतिरिक्त ''सहायक अधिसंरचनात्मक सुविधाओं और सेवाओं'' को पर्यटक केंद्र के व्यापक विकास के लिए अनिवार्य समझा जाता है। ये अधिकतर पारम्परिक और

देशी कला एवं कौशल पर्यटक रुचि के कुटीर उद्योगों के विकास के साथ-साथ सहायक सुविधाओं जैसे इसी प्रकार के कार्यों में लगे शिल्पियों और कारीगरों के लिए आश्रम और इसी प्रकार के उपयोग के लिए भूमि निर्धारण पर आधारित है। पर्यटन सेवाओं और सुख साधनों के प्रबंधन के लिए सेवा करने वाले लोगों की जरूरत होती है। उनके लिए भी घर और सहायक आवश्यकताएं जरूरी हैं। इस पक्ष की उपेक्षा के परिणाम स्वरूप जीवन की अमानुषिक परिस्थितियों सहित मलिन बस्तियों की उत्पत्ति भी होगी।

बोध प्रश्न 1

1) विभिन्न वहन क्षमताओं के विषय में पांच वाक्य लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) राष्ट्रीय पंचवर्षीय योजनाओं में पर्यटन विकास के कौन-कौन से प्रमुख महत्वपूर्ण पहलू हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

11.4 पर्यटन मास्टर प्लान

विश्व के सारे देशों में जहां पर्यटन विकास के प्रति सुव्यवस्थित दृष्टि राष्ट्रीय नीति का एक भाग है वहां पर्यटन अधिसंरचनात्मक सुविधा के विकास के लिए पर्यटन मास्टर प्लान के प्रतिपादन को महत्व दिया गया है। यह कई कारकों से प्रभावित होता है जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:

1) सकारात्मक एवं नकारात्मक कारक जिन्होंने विशेष पर्यटक संसाधन के उचित उपयोग प्रभावित किया है या प्रभावित कर सकते हैं।

2) पर्यटन विकास के लिए किसी विशेष संसाधन की वहन क्षमता से सम्बद्ध पर्यावरणीय और पारिस्थितिक प्रभाव तथा पर्यटन विकास कार्यक्रम के वृहत व सूक्ष्म स्तर पर सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव।

3) पहुंच और अधिसंरचनात्मक सुविधा की तैयारी से संबंधित वित्त प्रबंध की समस्याएं।

कॉरसिका (corsica) में पर्यटन अधिसंरचनात्मक सुविधा के लिए अनुकूल स्थान का निर्धारण, महत्वपूर्ण प्राकृतिक व मानव निर्मित संसाधन क्षेत्र की पहचान तथा उनकी सुरक्षा के लिए निर्देश, निर्धारित स्थान पर या उसके परिवेश में विकास के लिए पहुंच और भूमि नियोजन नीति की व्यवस्था समग्र पर्यटन मास्टर प्लान के महत्वपूर्ण घटक हैं। वृहत स्तर पर ऐसी नीति योजना सूक्ष्म स्तर पर कार्यक्रम योजना का मार्गदर्शन करेगी। फ्रांस में तटीय पर्यटन विकास का मास्टर प्लान निम्न बातों पर बल देता है:

1) पर्यटन विकास वर्तमान रिसॉर्ट के पृष्ठ प्रदेश में आम तौर से तट के साथ हो, और

2) पर्यावरणीय संरक्षण हेतु विस्तृत क्षेत्रों का सुरक्षित वन, प्राकृतिक आरक्षित क्षेत्र, कृषि एवं वन्य क्षेत्र, के रूप में निर्धारण।

इन सारे कार्यों के निष्पादन में पर्यावरणीय सुरक्षा एवं पर्यटन संसाधनों और स्थाई प्राकृतिक निधि का संरक्षण ही मूल कारक रहे हैं।

निश्चित रूप से वृहत एवं सूक्ष्म दोनों स्तरों पर सम्पूर्ण पर्यटन मास्टर प्लान का भौतिक विकास योजना के मूल घटक के रूप में विशेष महत्व है।

वृहत स्तर पर पर्यटन विकास के लिए व्यापक मास्टर प्लान निम्नलिखित बातें सम्मिलित होंगी:

क) पर्यटन और मनोरंजन के लिए नीतियां और प्राथमिकता,

ख) अधिसंरचनात्मक सुविधा विकास की योजना,

ग) विकसित, संरक्षित, सुरक्षित आदि किए जाने वाले क्षेत्रों का विस्तृत ब्योरा देने वाली भौतिक योजना,

घ) कार्यान्वयन, समन्वयन, और वित्त प्रबंधन के लिए नीति,

ङ) पारिस्थितिक और सामाजिक-आर्थिक कारकों और उनसे संबंधित समस्याओं का समाधान

च) कार्यवाई की योजना और परिवर्तनों तथा उनके प्रभावों के प्रबोधन की क्रियाविधि।

असंगत उपयोगों के जोखिम में डाले जाने वाले सीमित क्षमता के संसाधन जैसे कोई लोकप्रिय पर्यटन केंद्र, पर्वतीय रिसार्ट या तटीय कॅम्पलेक्स पर से दबाव कम करने, सीमित करने या नियंत्रित करने के लिए मौलिक विकास नीति में निम्नलिखित को सम्मिलित होना चाहिए:

क) प्रवेश पर प्रतिबंध लगाना,

ख) सुविधाओं को सीमित करना

ग) विभिन्न गतिविधियों का स्थानिक दृष्टि से विभाजन

घ) वैकल्पिक गंतव्यों का विकास करना।

मास्टर प्लान के प्रतिपादन की ओर पहले कदम के रूप में पर्यटन संसाधनों की विशेषताओं और संभावनाओं का सर्वेक्षण (गहन और व्यापक दोनों) कराना अत्यावश्यक होगा। इन्हें गंतव्य क्षेत्र के भौतिक, सामाजिक आर्थिक और पर्यावरणीय गुणों के संबंध में विश्लेषित करना चाहिए। पर्यटन गंतव्य क्षेत्रों की योजना, विकास और प्रबंधन के पर्यटन मास्टर प्लान के विकास की मूलभूत रूपरेखा निम्नलिखित द्वारा स्थापित होगी:

- संसाधनों का संश्लेषण और पर्यटन उद्देश्यों से उनका अनुकूलतम उपयोग, और
- प्रक्षेपित पर्यटक आगमन का विश्लेषण।

मास्टर प्लान के भौतिक घटक पर्यटक सुसाध्यता और ढांचागत सुविधा, पर्यटन गतिविधि क्षेत्र के विभिन्न भागों के आन्तरिक व बाहरी प्रवेशयता एवं संयोजन और प्रमुख मनोरंजनात्मक तथा खुले स्थानों का एक संगठित खुले स्थान के तंत्र के रूप में विभाजन की व्यवस्था की रूपरेखा स्थापित करेंगे।

पर्यावरणीय सुरक्षा, प्राकृतिक स्थलों का विकास, स्थल विकसित करना आदि से सम्बद्ध उपाय और कार्यक्रम ऐसे मास्टर प्लान के महत्वपूर्ण घटक हैं। इसके अतिरिक्त प्रतिवेश की पृष्ठभूमि से कॉम्पलेक्स का संयोजन और परिसर के विकास को नियंत्रण में रखने के उपाय को भी सुनिश्चित करना चाहिए।

पर्यटन परिसर के विकास को प्रतिवेश की ऐसी छोटी बस्तियों से जोड़ने की उचित कार्यवाई की योजना पर भी विचार करना अनिवार्य है जिनकी सामाजिक आर्थिक गतिविधि कॉम्पलेक्स में हो रही पर्यटन गतिविधियों से जुड़ी हुई है।

इन नीतियों और कार्यक्रमों का सविस्तार ब्योरा दिया जाना चाहिए और कॉम्पलेक्स तथा पर्यटन अधिसंरचनात्मक सुविधा को समय बद्ध विकास की संगठित भौतिक विकास योजना द्वारा ठोस आकार प्रदान करना चाहिए।

11.4.1 भौतिक विकास के मुद्दे

पर्यटन विकास केवल अर्थशास्त्र का ही विषय नहीं है बल्कि इसका संबंध उस स्थान और वहां के लोगों के भूगोल, समाजशास्त्र, मानव विज्ञान और पारिस्थितिकी से भी है। इन सबको पर्यटन गतिविधि तथा आतिथेय समुदाय के सर्वोत्तम लाभ की दृष्टि से पूर्णतया समझने और विश्लेषित करने की अवश्यकता है। यह पर्यटन योजना के व्यापक उपागम विशेष कर उन क्षेत्रों में जहां उत्पाद असुरक्षित संसाधनों के बने होते हैं पर बल देता है।

पर्यटन केंद्र और गंतव्य क्षेत्र बहुत अधिक लोगों के एकत्र होने के केंद्र है और उनके लिए सुरक्षित और सुविधाजनक प्रवेश, पार्किंग की सुविधा, पैदल यात्रियों के चलने और एकत्र होने के लिए स्थान, भोजन व्यवस्था

और आवास के लिए पर्यटक अधिसंरचनात्मक सुविधा, नागरिक सेवाएं, पर्यटक क्रय विक्रय, विश्राम और मनोरंजनात्मक गतिविधियां. स्थिति के अनुसार आकर्षण और ऐसी सुविधा की पर्यटकों द्वारा प्रक्षेपित मांग को उपलब्ध कराना चाहिए। स्पष्ट रूप से व्यक्तिगत सुख साधनों की उपलब्धता और पर्यटक अधिसंरचनात्मक सुविधा का माप स्थान-स्थान पर बदलेगा। फिर भी हर दशा में इन समस्त अधिसंरचनात्मक सुविधाओं को पर्यटक स्थल के संबंध में स्थानिक दृष्टि से आयोजित करना चाहिए और इनके मध्य उचित क्रियात्मक संबंध की उचित भौतिक योजना और रूपरेखा की आवश्यकता है।

पर्यटन से संबंधित क्रियाएं व्यवहारिक रूप से भू-विस्तीर्ण के अनुसार है। चाहे पर्यटक केन्द्र नगर विकास क्षेत्र का एक भाग हो या अलग कॉम्प्लेक्स के रूप में स्थित हो फिर पर्यटक रिसॉर्ट के रूप में स्वयं नगर क्षेत्र हो। पर्यटन क्षेत्र के सम्पूर्ण संघटित विकास पर बल दिया जाना चाहिए और विभिन्न पर्यटन केंद्रों के लिए प्रत्येक विकास योजना को वृहत नगर योजना या क्षेत्र नगर योजना के रूप में कल्पना करनी चाहिए। इस संदर्भ में इस बात पर भी बल दिया जाना चाहिए कि महानगर और प्रमुख नगरों के मामले में पर्यटकों की आवश्यकताओं विशेषकर अधिसंरचनात्मक सुविधा के क्षेत्र में इन नगरों की आवश्यकताएं उन नगरों में चल रही योजनाओं से ही पूरी हो सकती है। किंतु छोटे नगरों या अलग थलग स्थानों पर पर्यटकों के लिए दी जाने वाली अधिसंरचनात्मक सुविधाओं और सेवाओं को इस प्रकार से व्यवस्थित करना चाहिए कि स्थानीय जनता भी उसका उपयोग उचित विस्तार और आवर्धन के साथ कर सके। परिणामस्वरूप इन स्थितियों में पर्यटन पर निवेश से अधिकतर ऐसे छोटे नगरों और केंद्रों के विकास को हर प्रकार का लाभ पहुंचाना चाहिए जहां पर्यटक स्थल स्थित हो। इसके अतिरिक्त विकास योजना को उपयुक्त चरणों में कार्यान्वित किया जाना चाहिए। इसकी रूपरेखा इस प्रकार तैयार करनी चाहिए कि भविष्य में संवर्धन और विस्तार किया जा सके।

11.4.2 नगर में पर्यटक स्थल

किसी पर्यटन क्षेत्र की स्थापना पहला महत्वपूर्ण कदम है। यदि पर्यटक स्थल नगर में स्थित हो तो उनको इस प्रकार विभाजित करना चाहिए कि उनके चारों ओर पर्याप्त क्षेत्र पर्यटन गतिविधि क्षेत्र या विशेष क्षेत्र के रूप में बचा रहे। किसी नगर में जहां ऐसे अनेक पर्यटक स्थल हों (जैसे ऐतिहासिक नगरों और तीर्थ स्थानों में) वहां इस बात का प्रयास करना चाहिए कि ऐसे विस्तृत स्थानों की पहचान की जा सके जो बहुत से स्थलों को एक कॉम्प्लेक्स के रूप में घेरे हुए हों ताकि भौतिक विकास का एक संघठित उपागम संभव हो सके। ऐसे मामलों में प्रत्येक पर्यटक स्थल की अधिसंरचनात्मक सुविधा की योजना और भौतिक विकास की कल्पना सम्पूर्ण पर्यटन विकास योजना की सीमा के अन्दर होनी चाहिए।

पर्यटन विकास योजना में निम्नलिखित को सम्मिलित होना चाहिए:

क) नगरीय तंत्र के भाग के रूप में विभिन्न पर्यटक स्थलों तक पहुंच और उनमें संयोजन,

ख) वाहनों की सीमित प्रवेश्यता और पैदल यात्रा की सुगमता पर आधारित आंतरिक परिसंचालन,

ग) आवश्यक पर्यटक अधिसंरचनात्मक सुविधाओं की स्थापना के लिए प्रत्येक स्थल के चारों ओर स्थल निर्धारण और इसके साथ ही

घ) जहां तक संभव हो उचित नियमों द्वारा यह सुनिश्चित करना कि प्रतिवेश में अत्यधिक घना विकास न हो। एक महत्वपूर्ण मौलिक धारणा यह होनी चाहिए कि अपने निकटतम प्रतिवेश में सहनशील उपयोगों की स्थापना द्वारा पर्यटन स्थल की पहचान और पुनीतता को बनाए रखा जाए।

पर्यटन अधिसंरचनात्मक सुविधा के विकास के लिए निर्धारित स्थान के अन्दर ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण बात यह है कि वास्तविक पर्यटक स्थल अधिसंरचनात्मक सुविधा में निमग्न न हो बल्कि उसे सबसे प्रमुख होना चाहिए। ऐसा तभी संभव होगा जब निर्धारित स्थल के आन्तरिक स्थानिक संघटन की योजना ऐसी हो कि अधिसंरचनात्मक पर्यटन कॉम्प्लेक्स प्रमुख प्रवेश सड़क से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हो और वहां तक सुगमता से पहुंचा जा सके। अधिसंरचनात्मक सुविधा तथा पर्यटक स्थल के मध्य काफी बड़ा विस्तृत हरा भरा क्षेत्र होना आवश्य है।

इसके लिए अनिवार्य है कि धीरे-धीरे क्षेत्र को विकसित किया जाए। इसकी आवश्यकता नहीं है कि अधिसंरचनात्मक सुविधा को लम्बे चौड़े क्षेत्र में फैला कर विकसित किया जाए बल्कि इस सुविधा को सुनियोजित ढंग से विकसित किया जाना चाहिए ताकि निर्धारित स्थल का अधिक से अधिक भाग हरा भरा रह सके और कार्यशीलता की दृष्टि से अधिक बेहतर सेवाएं प्रस्तुत की जा सकें।

11.4.3 योजना द्वारा संरक्षण

पर्यटक केंद्रों के संदर्भ में संरक्षण में केंद्रों की "पर्यटन विशेषता" (tourist character) की सुरक्षा भी सम्मिलित होती है और छोटे नगरों के मामले में यह पक्ष विशेष रूप से आवश्यक होता है क्योंकि वह सब मिलकर विरासत और ऐतिहासिक महत्व के कारण पर्यटकों के लिए आकर्षण के केंद्र बनते हैं। ऐसे नगरों की आर्थिक विविधता के समान ही भौतिक विकास को इस प्रकार नियोजित करना चाहिए कि उसकी विरासत और ऐतिहासिक पवित्रता को भौतिक रूप से बनाया रखा जा सके ऐसा उनके प्रतिवेश में पर्याप्त हरा भरा मध्यवर्ती क्षेत्र रख कर और पर्यटन की उन्नति के वृहत हित में नया विकास करके किया जा सकता है।

पर्यटक स्थल में भौतिक संरक्षण को सामान्य सौन्दर्यीकरण और नवीकरण करके अभिव्यक्त किया जा सकता है ताकि अच्छे उद्यानों, फर्श और पर्यटक सामग्री जैसे पर्यटक साहित्य, गाइडें, कलाकृतियों की दुकानें, आदि सहित उसे अधिक सुंदर और आकर्षक बनाया जा सके। यद्यपि यह ऐसा मामला है जो आत्यंतिक नियंत्रण, उद्देश्य अभिज्ञता और अतिसंवेदनशीलता के योग्य है फिर भी बड़े पैमाने पर नवीकरण और सौंदर्यीकरण से भी अधिक सुरक्षा और संरक्षण पर बल देना चाहिए।

स्थल विकास में, विशेष कर पर्यटन गतिविधि क्षेत्रों में वर्तमान प्राकृतिक विशेषताओं का संरक्षण पर्यटकों के आकर्षण को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त उचित रूप से निर्धारित भूदृश्य योजना के अनुसार प्रचुर वृक्षारोपण को स्थल विकास कार्यक्रम का अनिवार्य भाग होना चाहिए। अधिसंरचनात्मक सुविधा के लिए निर्धारित स्थलों के भवनों की मौलिक योजना के साथ एक मंद गति का विकास जुड़ा होना चाहिए।

11.4.4 स्थानीय योजना पक्ष

किसी पर्यटक स्थल या पर्यटक केंद्र की भौतिक विकास योजना का प्राथमिक उद्देश्य पर्यटकों को आकर्षित करना है क्योंकि इस दृश्य योजना में आकृति और सौंदर्य उनके प्रतिपादन और कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। यह योजना एक प्रवेश मार्ग तैयार करने, भूदृश्य निर्माण, नवीकरण और सामान्य सौंदर्यीकरण या पर्यटकों के लिए आवासीय सुविधा उपलब्ध कराने में संबंधित है।

अतः पर्यटक स्थलों और परिसरों की भौतिक योजना को नगर की दशा और भूदृश्य योजना प्राचलों सहित भौतिक धरातल और अधिसंरचनात्मक सुविधाओं के संश्लेषण का प्रयास करना चाहिए ताकि उभर कर सामने आने वाला विकास कार्यात्मक और पर्यावरणीय रूप से अनुकूल हो और साथ ही सौंदर्य की दृष्टि से देखने में आकर्षक हो।

व्यक्तिगत या सामूहिक पर्यटकों की रुचि को ध्यान में रखते हुए पर्यटक स्थल के विकास की योजना बनाई जानी चाहिए। इसे पर्यटक स्थल और परिवेश की भौतिक विशिष्टताओं से संबंधित होना चाहिए। ऐसा प्रयास स्थल को विवेकपूर्ण विकास और पर्यटक संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग के योग्य बना देता है।

समस्त अधिसंरचनात्मक सुविधाओं का विकास स्मारक के आस पास करना चाहिए। बड़े कॉम्प्लेक्सों के विषय में भी ऐसे ही सिद्धांत अपनाए जा सकते हैं। एक सम्पूर्ण स्थानिक परिरूप की रचना पर विचार करके ऐसा किया जा सकता है। इसमें ही पर्यटक रुचि के व्यक्तिगत केंद्र होंगे जिन्हें समग्र परिरूप का एक भाग समझा जा सकता है। सुंदर प्राकृतिक स्थलों में भी इस प्रकार की योजना की जा सकती है।

बोध प्रश्न 2

1) पर्यटन के संबंध में किन कारकों ने मास्टर प्लान के प्रतिपादन को अनिवार्य बना दिया है ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) विभिन्न पर्यटन स्थनों को किसी नगर के अन्दर किस प्रकार स्थापित किया जा सकता है ? पांच वाक्यों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

11.5 भौतिक योजना : पहाड़ी पर्यटन

आजकल अधिकांश पर्वतीय रिसॉर्ट में भीड़ बहुत हो.ती है और हर प्रकार के संसाधनों का अभाव अनियोजित पर्यटन विकास के कारण उभर कर सामने आया है। अब यह स्पष्ट हो चुका है कि पर्यटन हिमालय और उप हिमालय प्रदेशों के पहाड़ी क्षेत्रों और पहाड़ी नगरों के सामाजिक-आर्थिक विकास में सकारात्मक भूमिका निभा सकता है। यह तभी संभव है जब संसाधनों का आयोजन और प्रबंधन वैज्ञानिक आधार पर किया जाए। पर्यटन के आयोजकों को यह समझ लेना चाहिए कि मैदानों के लिए उपयुक्त नमूना हिमालय क्षेत्र के लिए उचित नहीं होगा और न ही यूरोपीय और अमरीकी रिसॉर्ट के अनुभव भारत के संदर्भ में आदर्श सिद्ध होंगे।

यदि वैज्ञानिक आधार पर पहाड़ी पर्यावरण का उपयोग किया जाए तो यह खुले माहोल में मनोरंजन और पर्यटन के लिए आदर्श परिस्थितियां प्रस्तुत कर सकता है। यूरोप के बहुत से अलपाइन देशों में पर्यटन विकास प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कारक रहा है और बहुत से विकासशील समाजों और द्वीपीय अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक परिवर्तनों का कारण भी रहा है। यह भी देखने में आया है कि बहुत से पिछड़े क्षेत्र पर्यटन के विकास के लिए बहुत आकर्षक संसाधन का आधार प्रस्तुत करते हैं। यही बात बिना किसी अपवाद के हिमालय और उप हिमालय जनपदों और देश के क्षेत्रों के लिए भी सत्य है।

हिमालय क्षेत्र विस्तत पारिस्थितिक परिसर और जैव विविधता सहित प्रकृति की कुछ अति दुर्लभ रचनाएं प्रस्तुत करते हैं। बहुत से भव्य प्राकृतिक आकर्षणों और सुरम्य सौंदर्ब के अतिरिक्त पर्यटन संसाधन का धार्मिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक परिमाण निचले हिमालय क्षेत्र की गोद में पाए जाने वाले पहाड़ी जनपदों के संदर्भ में महत्वपूर्ण हो जाते हैं। जनजातीय जीवन जातीय संस्कृति, जलोक परम्पराएं, लोक साहित्य और असंख्य तीर्थ एवं पवित्र स्थल प्रकृति की भव्यता सहित एक व्यवस्थित समष्टि के रूप में विकसित हुए प्रतीत होते हैं।

1950 के विकास की त्वरित गति, क्रमिक समाजीकरण और पर्यटन के आधार का विस्तार, शैक्षिक अभिज्ञता और उन्नत परिवहन एवं अधिसंरचनात्मक सुविधाओं ने मिलकर लोकप्रिय पहाड़ी रिसॉर्ट जैसे शिमला, नैनीताल, मसूरी, दार्जलिंग आदि में पर्यटन से सम्बद्ध अधिसंरचनात्मक सुविधाओं के केंद्रीकरण में योगदान दिया है। क्रमबद्ध ढंग से उन्नत योजना के अभाव में ऐसे केंद्रों में पर्यटकों के लिए निरंतर आगमन ने मांग और आपूर्ति के संतुलन को अस्त व्यस्त कर दिया है। इनके कारण निम्नलिखित बातें उत्पन्न हुई हैं:

- भूमि उपयोग की घोर समस्या
- पर्यावरणीय प्रदूषण और गुणवत्ता में कमी
- अधिसंरचनात्मक सुविधाओं, परिवहन और सेवाओं पर दबाव, और
- परस्पर विरोधी परिस्थितियां

पहाड़ी क्षेत्र आकर्षक पर्यटन स्थल हैं। इनके विकास के लिए वहां के सामाजिक आर्थिक परिवेश और पर्यावरण का भी ध्यान रखना चाहिए। पर्यटन नियोजन और कार्यक्रम निर्माण का कार्य करते समय इनका ध्यान रखना होगा।

11.5.1 योजना की अनिवार्यताएं

पहाड़ी अंचलों में पर्यटन योजना और आवास के वैज्ञानिक विकास के लिए निम्नलिखित विश्लेषणात्मक अध्ययन की आवश्यकता होगी:

- स्थानीय पर्यावरण और पहाड़ी आवास पर विकास का प्रभाव,
- पर्यटक संसाधन और अधिसंरचनात्मक सुविधा की आवश्यकता का मूल्यांकन,
- क्षेत्र और अन्य पक्षों की वहन क्षमता के समनुरूप विकास की हद तय करना

सारे विकासीय कार्यक्रमों में विशेष रूप से पर्यटन संबंधी विकास में निम्न बातों पर मुख्य ध्यान रखना चाहिए।

- जीवन की गुणवत्ता का विकास
- उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान की सुरक्षा करना और उसे कायम रखना, और
- शहर की अर्थव्यवस्था में समग्र रूप से सुधार।

वास्तव में पर्यटन को उन लक्ष्यों की प्राप्ति का साधन समझना चाहिए अपने आप में साध्य नहीं। इसी संदर्भ में पूर्व उल्लिखित वहन क्षमता की अवधारणा का महत्व है।

यही समय है जब इस बात का प्रयास करना होगा कि हिमालय एक कूड़ेदान न बन जाए। सरकार के लिए आवश्यक है कि कानूनी रूप से हिमालय क्षेत्र में पॉलीथीन के उपयोग पर रोक लगा दे।

हिमालय में संसाधनों के उपयोग की नीति पर भी सर्वसम्मति पर पहुंचना अनिवार्य है। हिमालय की अधिक ऊंचाइयों पर संवेदनशील पारिस्थितिक तंत्रों की पहचान और उसका संरक्षण भी उतना ही महत्वपूर्ण है। मध्यवर्ती एवं केंद्रीय मंडलों सहित उन्हें जीव मंडलीय आरक्षित क्षेत्र घोषित करके ऐसा किया जा सकता है। अत: ऐसे क्षेत्रों में पर्यटन गतिविधियां सावधानी के साथ जारी रखना चाहिए।

बिखरे हुए आवासीय प्रारूप पहाड़ी क्षेत्रों की विशेषता हैं। यहां बस्ती और बस्तियों के समूह आडम्बरहीन होते हैं। पर्यटन कॉम्पलेक्स की योजना और सुविधाओं को समूह पर समझदारी के साथ विचार करना चाहिए जिससे ऐसा न लगे कि एक बाहरी अजनबी सुविधा व्यवस्था को एक पारंपरिक परिवेश पर थोप दिया गया है।

पर्यटन कॉम्पलेक्स के विकास में परम्परा के अनुरूप योजना को बनाए रखना ही चिंतन का मुख्य विषय होना चाहिए।

किसी पहाड़ी पर्यटन क्षेत्र में पर्यटन सुख साधन और सुविधाओं का बिखरा हुआ स्थानिक प्रारूप केंद्र बिंदु से जोड़ दिए जाने पर पर्यटक के ग्रामीण कॉम्प्लेक्स के श्रेणीबद्ध विकास के योग्य बना देगा। इसे गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत प्रदान करके परम्परागत ऊर्जा की खपत में किफायत की जा सकती है। इसके अतिरिक्त ऐसे पर्यटक कॉम्प्लेक्स के स्थानिक प्रारूप पर्यटन से संबंधित गतिविधियों और उसके सहवर्ती लाभों को पहाड़ी जनपदों के एक या दो केंद्रों में एकत्र कर देने के बजाए एक बड़े क्षेत्र में मिलाने में सहयोग देगा। यह संघर्ष पैदा करने वाली परिस्थितियों और पहाड़ी पर्यावरण के खतरों को भी दूर कर सकेगा।

किसी वर्तमान रिसॉर्ट में अतिरिक्त अधिसंरचनात्मक सुविधा की योजना बनाते समय न्यूनीकृत पैमाने पर पर्यटक ग्राम की धारणा को भी समाविष्ट कर लेना चाहिए। यह पर्यटक से संबंधित अधिसंरचनात्मक सुविधा को, जब भी आवश्यता होगी, योजनाबद्ध परिक्षेपण के योग्य बना देगा।

11.5.2 पहुंचने की सुविधा

हिल स्टेशन, रिसॉर्ट आदि के संबंध में वहां पहुंचने और घूमने की समस्या महत्वपूर्ण इसके निम्नलिखित कारण हैं:

- कठोर भूभाग,
- मोटर गाड़ियों के चलने पर अपरिहार्य प्रतिबंध,
- सड़कों कि निर्माण और सुधार में भारी लागत की आवश्यकता,
- पहाड़ी रिसॉर्ट को मैदान के निकटवर्ती रेलमार्ग के जोड़ने में रेलवे की सीमाएं, और
- पर्यटक आकर्षण के स्थानीय क्षेत्र में पर्याप्त अन्तस्थ और गाड़ी पार्क करने की सुविधा दे पाने में सामान्य कठिनाई।

बहुत से पहाड़ी रिसॉर्ट उचित प्रवेशता और घूमने फिरने की सुविधा के अभाव में प्रतिवर्ष पर्यटक खो रहे हैं। इसने स्थानीय अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है।

उत्तरी, उत्तर-पश्चिमी और उत्तर-पूर्वी भारत के उपहिमालय या शिवालिक में 60 से भी अधिक मुख्य एवं लघु पर्यटक केंद्र और पहाड़ी रिसॉर्ट हैं। इनमें से मुश्किल से नौ रिसॉर्ट रेलमार्ग पर स्थित हैं। इससे स्पष्ट है कि पहाड़ी रिसॉर्ट के संदर्भ में प्रवेश्यता कारक सड़क परिवहन पर बहुत अधिक निर्भर है। पहाड़ी भूभाग पर सड़क निर्माण और सुधार की अत्यधिक लागत के बावजूद क्षेत्र के अनुरूप एक संघटित योजना बनानी पड़ेगी और पर्यटन को उन्नत करने के लिए उचित चरणों में कार्यान्वित करना पड़ेगा। यहां बनने वाली सड़कों का घुमाव कम तीखा होना चाहिए और दो तरफा यातायात की व्यवस्था होनी चाहिए। सड़क पर

जहां आवश्यकता हो यातायात के उचित संकेत और सिगनल, और सडक के किनारे सुरक्षा बाड़ होनी चाहिए लेकिन सबका महत्व होते हुए भी ऐसा कोई कार्य प्रारंभ नहीं करना चाहिए जिनका परिस्थिति और पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हो। इसके साथ ही साथ राष्ट्रीय स्तर पर जहां तक संभव हो सभी प्रमुख रिसार्टों को हवाई मार्ग से जोड़ना चाहिए और हवाई अड्डे बनाए जाने चाहिए। परंतु यहां भी पर्यावरण का ध्यान रखना होगा।

गन्तव्य क्षेत्रों में पर्यटकों की कारों, गाड़ियों और टैक्सियों की पार्किंग के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध किया जाना चाहिए। ऐसी पार्किंग सुविधा की व्यवस्था में काफी धन खर्च होगा। अत: यह आवश्यक है कि ऐसी सारी पार्किंग परियोजनाओं को शहरी विकास कार्यक्रम का ही एक हिस्सा मानते हुए प्रवणता को बहुस्तरीय पार्किंग स्थान के साथ ही गोदाम, भंडार और सामान्य व्यापार के लिए जगहों के रूप में उपयोग द्वारा व्यवहार में स्वत: वित्त प्रबंधक सुविधा के रूप में विचार किया जाए।

फिर भी किसी पहाड़ी नगर में पर्यटकों के एक पर्यटन बिंदु से दूसरे तक आने जाने के लिए विस्तृत रज्जुमार्ग नेटवर्क का उस क्षेत्र में प्रवेश एक नया कदम होगा जो वर्तमान परिवहन मार्गों के नेटवर्क की सीमाबद्धता को कम करके विशिष्ट स्थानीय प्रवेशता की आवश्यकताओं को पूरा करने में सम्पूर्ण सहयोग देगा। पश्चिमी देशों के रिसॉर्ट में रज्जुमार्ग की उपलब्धता सामान्य बात है और भारत में भी अब इसका आरंभ हो चुका है किंतु यह कुछ ही नगरों तक सीमित है। अत: सड़क के साथ रज्जुमार्ग का परिवहन नेटवर्क पहाड़ी शहरों और रिसॉर्ट की प्रवेश्यता में सुधार कार्यक्रमों के भौतिक विकास का महत्वपूर्ण तत्व है।

11.6 भौतिक विकास : तटीय रिसॉर्ट

सारी दुनिया में तटीय क्षेत्रों का विकास और उपयोग निम्न प्रकार से हो रहा है:

- बड़े पैमाने पर नगरीकरण,
- प्रमुख तटीय नगरों में व्यापार और उद्योगों का केंद्रीकरण
- समुद्री संसाधनों का अधिकतम उपयोग, और
- बढ़ते अन्तरराष्ट्रीय पर्यटन के प्रबंध के साथ-साथ मनोरंजन और विश्राम की मांग की व्यवस्था।

लगातार सिकुड़ते हुए तटीय स्थलों में मनोरंजनात्मक गतिविधियों में वृद्धि के लिए औद्योगिक, आवासीय और मनोरंजनात्मक सुविधाएं देने के लिए काफी प्रतिस्पर्धा होती है। किंतु अभी हाल ही में तटीय संसाधनों और मानव आवासों को प्रभावित करने वाले बहुत से पर्यावरणीय मुद्दे भी उठाए गए हैं। यह विविध तटीय विकास के लिए उचित प्रबंधन और नियमन की आवश्यकता का बोध कराता है।

भारतीय तट संरचनात्मक और ऊपरी धरातल परत की दृष्टि से बहुत विविध हैं। इस विविधता का अपने अपने तटीय क्षेत्रों की संसाधन संभावना के तुलनात्मक स्तरों, अंचलिक विकासों, आवासीय प्रारूपों, रूपरेखा और संयोजन पर गहरा प्रभाव है। प्रायद्वीपीय भारत 55 तटीय जनपदों पर आधारित है। इनमें 104 बड़े शहर (मेट्रो वर्ग I और II) जिनमें 6 महानगर और 49 वर्ग I के नगर हैं। इनमें से सारे 6 महानगर मुम्बई, कलकत्ता, चेन्नई, कोची, विशाखापटनम और सूरत तथा 27 वर्ग I के नगर हैं।

हालांकि पूर्वी और पश्चिमी समुद्र तटों पर अनेक पर्यटक केंद्र हैं किंतु समुद्र तटीय रिसॉर्ट कुछ ही हैं जैसे पश्चिमी बंगाल में दीघा, उड़ीसा में पुरी-कोणार्क, चिलका गोपालपुर, तमिलनाडु में रामेश्वरम, कन्याकुमारी-कोवलम और केरल तथा गोवा के कई समुद्री बालू तट जो अधिकांश समुद्री यात्रा करने वाले राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकृष्ट करते हैं।

प्रमुख तटीय बस्तियां न केवल विशिष्ट रूप से स्थित समुद्री गतिविधियों को आकृष्ट करती हैं बल्कि सम्बद्ध गतिविधियों और उपयोगों को भी आकर्षित करती हैं। इनमें उद्योग, व्यापार और वाणिज्य के साथ-साथ संस्थागत उपयोग भी सम्मिलित हैं जिनमें तट से दूर की बस्तियों को कंगाल कर देने की प्रवृत्ति भी पाई जाती है। इसके परिणामस्वरूप तटीय पर्यटन संसाधन जैसे बालू तट आदि शहरी और औद्योगिक विस्तार के कारण या तो समाप्त हो जाते हैं या अधिक दूरस्थ स्थितियों की ओर ढकेल दिए जाते हैं। अत: तटीय बस्तियों में पर्यटन तथा गैर पर्यटन दोनों प्रकार के कार्यों के प्रभावशाली प्रबंध के समग्र विकास के लिए एक संघटित नीति उपागम की आवश्यकता बढ़ गई है;

पर्यटन रिसार्ट के तौर पर तटीय बस्तियों के विकास के लिए व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो योजना में हस्तक्षेप कर सके। योजना में हस्तक्षेप को निम्नवत रूप से पहचाना गया है:

1) समुद्री रिसॉर्ट और रेतीले तटीय पर्यटन परिसरों को अलग-अलग देखना चाहिये। इन्हें प्रमुख शहरी केंद्रों से अलग ही रखना चाहिए ताकि पर्यटक और गैर पर्यटक गतिविधियों के मध्य कार्यात्मक संघर्ष टाला जा सके।

2) पर्यटन अधिसंरचनात्मक सुविधा को पर्यटन गतिविधियों के अनुरूप तटरेखा के उत्कर्ष विन्यास के साथ साथ बिखरे हुए स्वरूप में योजना बनानी चाहिए। इसे केवल एक या दो स्थितियों पर ही अनावश्यक रूप से केंद्रित नहीं होना चाहिए। ऐसा करने से पर्यटन गतिविधि के लाभ विस्तृत क्षेत्र तक पहुंच सकेंगे विशेष रूप से तटीय पृष्ठ प्रदेश के छोटे ग्रामीण आवासों में।

3) विभिन्न मनोरंजनात्मक तत्वों को समाविष्ट करते हुए पर्यटक संसाधन के सुरक्षा के अनुकूल उपयोग को ध्यान में रखते हुए विस्तृत समुद्री नगर विकास की व्यापक योजना का निर्माण करना चाहिए।

4) पर्यटन अधिसंरचनात्मक सुविधा को जरूरत से ज्यादा हावी होने से रोकना भी अनिवार्य है। इसको रोकने के लिए इसके विकास को सामान्य रूप से वर्तमान रिसॉर्ट के पृष्ठ प्रदेश में तट के साथ-साथ आयोजित करना पड़ेगा। मुख्य नेटवर्क की योजना तट के सहारे-सहारे किंतु कुछ दूरी पर तैयार करनी पड़ेगी और ऐसा करने से पृष्ठ प्रदेश क्षेत्र के विभिन्न शहरी केंद्रों में परस्पर संयोजन संभव हो सकेगा और तट पर अधिसरचनात्मक सुविधा के चुने हुए बिंदुओं तक ले जाने वाली सड़कें भी उपलब्ध होंगी। यूरोप के बहुत से देशों जैसे फ्रांस, यूगोस्लाविया, साइप्रस, कॉरसिका, तुर्की, यूनान ओर कई अन्य देशों में रिसॉर्ट विकास की जिस धारणा का व्यापक रूप से समर्थन किया जा रहा है वह सीमित क्षमता के संसाधन जैसे तटीय क्षेत्रों में असंगत उपयोगों से सुरक्षित विकास के दबाव को सामंजित करने, घटाने और नियंत्रित करने की ओर निर्दिष्ट है। इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं प्रवेश को कम करना, सुविधाओं को सीमित करना, विभिन्न गतिविधियों का विभाजन, गतिविधियों को नियत करना और वैकल्पिक गंतव्यों का विकास करना।

बोध प्रश्न 3

1) पहाड़ी क्षेत्रों में गंतव्य तक पर्यटक को प्रवेश्यता प्रदान करने से संबंधित समस्याओं का वर्णन पांच पंक्तियों में कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) तटीय बस्ती को पर्यटक रिसॉर्ट में विकसित करने के विषय पर पांच पंक्तियां लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

11.7 सारांश

पिछले तीन दशकों में पर्यटन का महत्व काफी बढ़ गया है। यह महत्व केवल सरकार के लिए मनोरंजन के साधन के रूप में ही नहीं बल्कि रोजगार और सरकार के लिए विदेशी मुद्रा विनिमय के साधन के रूप में है। पर्यटन उद्योग के विकास ने पर्यटन में योजना की आवश्यकता को स्पष्ट किया है।

इस इकाई में आपने योजना बद्ध पर्यटन के लिए विभिन्न आवश्यक तत्वों के विषय में पढ़ा। इस इकाई ने यह भी व्यक्त किया कि किस प्रकार अधिसंरचनात्मक सुविधा पक्ष की उचित व्यवस्था पर्यटन के विकास के लिए और

अधिक प्रेरणा देती है। इस संदर्भ में इस इकाई ने पर्यटन विकास में प्रवेश और भूमि उपयोग के प्रश्नों को संगठित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर मास्टर प्लान के महत्व को रेखांकित किया है। इस बिंदु को स्पष्ट करने के लिए इस इकाई ने पहाड़ी और तटीय रिसॉर्ट के उदाहरण लिए और इन पर्यटक स्थलों के लिए प्रवेश्यता स्थापित करने के महत्व को और उपलब्ध क्षेत्र के अनुरूप भूमि उपयोग करने को रेखांकित किया है।

11.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) अपने उत्तर में आपको भौतिक, पर्यावरणीय और मनोवैज्ञानिक वहन क्षमताओं के विषय में विचार व्यक्त करना चाहिए और उन्हें समझना चाहिए। देखिए उपभाग 11.3.1

2) देखिए भाग 11.3

बोध प्रश्न 2

1) आपके उत्तर में सम्मिलित होना चाहिए:
   1) पर्यटक संसाधनों के दुरुपयोग का वर्णन,
   2) पर्यटक स्थल की वहन क्षमता पर दबाव, और
   3) अधिसंरचनात्मक सुविधा के लिए वित्त प्रबंध और प्रबंधन संबंधी समस्याएं। देखिए भाग 11.4

2) आपके उत्तर में सम्मिलि होना चाहिए :
   1) पर्यटक स्थलों का उचित विभाजन,
   2) विभिन्न स्थलों के मध्य संयोजन की स्थापना, और
   3) पर्यटक स्थलों के परिवेश में बड़े पैमाने के विकास को रोकना। देखिए उपभाग 11.4.2

इकाइ 12 समुदाय और आंचलिक सम्पदा

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य
12.1 प्रस्तावना
12.2 समुदाय का अर्थ
  12.2.1 पूर्व औपनिवेशिक समय में समुदाय
  12.2.2 औपनिवेशिक शासन के अधीन समुदाय
12.3 आंचलिक सम्पदा
  12.3.1 पर्वतीय सैरगाह
  12.3.2 सांस्कृतिक परिवेश
12.4 तनाव
  12.4.1 पारम्परिक सामुदायिक जीवन
  12.4.2 तनाव का आरंभ : उत्तराखंड का उदाहरण
12.5 समुदाय और टिकाऊ पर्यटन
12.6 सारांश
12.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- समुदाय और पूर्व औपनिवेशिक समय से आज तक इसके ऐतिहासिक विकास की धारणा को समझ सकेंगे,
- आंचलिक सम्पदा के अर्थ से परिचित हो सकेंगे,
- इस बात को समझ सकेंगे कि भारत में अंग्रेजों के आने से पहले स्थानीय समुदाय अपने समाज को कैसे व्यवस्थित करते थे, और अपनी-अपनी आंचलिक सम्पदा का इस्तेमाल कैसे करते थे।
- उन परिवर्तनों को समझ सकेंगे जो औपनिवेशिक शासन के बाद सामुदायिक जीवन में आए, आंचलिक सम्पदा के इस्तेमाल के तौर तरीकों में आए परिवर्तनों को समझ सकेंगे, और
- पर्यटन के संबंध में टिकाऊ विकास महत्वपूर्ण तत्वों को भी जान लेंगे।

12.1 प्रस्तावना

पर्यटन आधुनिक समाज में मनोरंजन के स्रोत के रूप में एक असीम संभावनाओं का क्षेत्र है। काम काज के बोझ से दबे लोगों के लिए हर स्थान की आंचलिक सम्पदा लोगों के आराम के लिए अच्छा साधन है। अधिकांश आराम और मनोरंजन पसंद लोग और पर्यटक इस संपदा को महज प्रयोजन का एक साधन मान कर चलते हैं। वे आम तौर पर उन परिस्थितियों से अवगत नहीं होते हैं जिनके अंतर्गत इन पर्यटन स्थलों का विकास होता है।

मानव जाति को समस्त जातियों में विशेष सुविधा प्राप्त है और उसे उनमें सौभाग्यशाली माना जाना चाहिए क्योंकि वह अपनी विचारशील क्षमता के विवेकपूर्ण प्रयोग द्वारा प्रकृति की उदारता को अपने अत्यधिक लाभ के लिए उपयोग कर सकता है।

यह इकाई प्राथमिक रूप से इन प्राकृतिक संसाधनों और मानव जाति के अपने प्राकृतिक पर्यावरण के साथ संयोजनों से समबद्ध है। इसकी शुरुआत अंग्रेजों के भारत में आने से पहले के ग्रामीण समुदायों की जीवन शैली के वर्णन से होती है। विशेष रूप से यह इकाई समुदाय में विभिन्न वर्गों के मध्य प्राकृतिक संसाधनों के बंटवारे पर प्रकाश डालती है। इसके पश्चात यह बताती है कि अंग्रेजों के आने के बाद किस प्रकार समुदाय के संगठन में परिवर्तन हुआ। इस परिवर्तन के तहत समुदाय की धारणा भी काफी बदल गई। फिर यह इकाई विभिन्न प्रकार की आंचलिक सम्पदाओं को परिभाषित और वर्णित करती है। आंचलिक सम्पदाओं के दो उदाहरणों के रूप में

पर्वतों और सांस्कृतिक पर्यावरण की चर्चा भी इस इकाई में की गई है। इसके बाद यह इकाई सामाजिक तनाव के कुछ क्षेत्रों का खुलासा करती है जो अंग्रेजी शासन के आगमन के साथ ही पारम्परिक समुदाय में आ गए थे। विशेष रूप से यह उत्तराखंड का उदाहरण देती है जहाँ पहाड़ी समुदायों के परम्परागत आर्थिक ढांचे में परिवर्तन का उनके जीवन और संस्कृति पर दूरगामी प्रभाव पड़ा। अंततः यह पर्यटन के संदर्भ में टिकाऊ विकास की धारणा को स्पष्ट करने का प्रयास करती है और स्थानीय समुदायों के हितों को क्षति पहुंचाए बिना उसे सम्पन्न किए जाने के उपायों को भी निर्धारित करती है।

12.2 समुदाय का अर्थ

विश्व पर्यटन रिपोर्ट के अनुसार समुदाय में शामिल होते हैं:

- लोग जो वहां रहते हैं,
- संपत्ति के मालिक जो स्थानीय निवासी हो भी सकते हैं और नहीं भी।
- स्थानीय सरकार के अधिकारी।

समुदाय का संघटन शताब्दियों से विकसित हुआ है। पूर्व आधुनिक समय में समुदाय जैसा आज है उससे बिलकुल भिन्न था। आइए, देखें कि विगत शताब्दियों में समुदाय की धारणा किस प्रकार परिवर्तित हुई।

12.2.1 पूर्व औपनिवेशिक समय में समुदाय

पूर्व औपनिवेशिक भारत में ग्रामीण समुदाय कई प्रकार से आत्मनिर्भर थे और राज्य के संगठन से एक समूह के रूप में व्यवहार करते थे। मैदानों में ग्रामीण समुदाय अनाज के अधिवेश उत्पादन का सरकार को कर के रूप में भुगतान करते थे। व्यक्तिगत गृहस्वामी को निजी तौर पर इस कर का भुगतान नहीं करना पड़ता था। ग्राम परिषदें स्वयं ही अधिकांश सामाजिक-आर्थिक मामलों को नियंत्रित करती थीं। किसी बाहरी अधिकारी का हस्तक्षेप असाधारण घटना होती थी। हालांकि प्रत्येक कृषक के पास कृषि करने के लिए भूमि का एक टुकड़ा होता था किंतु कृषक को उसे बेचने का अधिकार नहीं था। भूमि का स्वामित्व सामूहिक था विशेषकर सार्वजनिक भूमि के मामले में। जाति पर आधारित ग्रामीण समाज ने संसाधनों के उपयोग को नियंत्रित करने के लिए विभिन्न प्रकार की संस्थाएं विकसित कीं। पूर्व औपनिवेशिक शासकों ने उत्पादों पर ही कर वसूल किए, ग्रामीण समुदाय से स्वयं भूमि के अधिकार पर कर की वसूली का दावा नहीं किया।

परम्परागत समुदायों ने विभिन्न उपायों से स्वयं को परिस्थितियों के अनुकूल बनाया। उन्होंने अपने परिवेश के साथ सामंजस्य स्थापित करके रहने के लिए स्वयं को संगठित किया। उदाहरणार्थ पूर्व आधुनिक काल के महाराष्ट्र में ग्रामीण समाज द्वारा सामूहिक भूमि पर लकड़ी की अनाधिकृत कटाई को रोकने के लिए रक्षक नियुक्त किए जाते थे। इसके अतिरिक्त उन्हें फसल काटने और ग्रामीण गृहस्वामी को आवश्यकता की सारी लकड़ी देनी पड़ती थी। गांव की सामूहिक भूमि की पैदावार विविध प्रकार के नियमों द्वारा नियंत्रित होती थी विशेष रूप से विभिन्न परिवारों द्वारा और विभिन्न मौसमों में पैदा की गई फसलों के कोटा द्वारा।

यहां विभिन्न जातियों वर्गों के द्वारा अधिकृत आवास की दृष्टि पारिस्थितिक स्तरण के बारे में और उनके परस्पर क्रियात्मक संबंधों वाले दूसरे जाति वर्गों के विषय में चर्चा करना उचित है। हम कर्नाटक प्रदेश में कुम्टा नगर के निकट अगनाशाइस नदी के मुहाने के एक द्वीप में स्थित मसूई-लखेरी गांव का उदाहरण ले सकते हैं। पश्चिमी घाट की पहाड़ियों की श्रृंखला के पर्वतस्कंध इस क्षेत्र के किनारे किनारे समुद्र तक विस्तृत क्षेत्र भरपूर विविधता के प्रादेशिक और तटीय आवास प्रस्तुत करते हैं। इन आवासों में अनगिनत प्रकार के प्राकृतिक संसाधन प्रचुर संख्या में पाए जाते हैं। हमें कम से कम 13 विभिन्न अन्तर्जात वर्ग उसी क्षेत्र में एक साथ रहते मिलेंगे। विभिन्न जातियों में जैसे मछुआरों (अम्बीग) कृषक (मलक्की, पालगार और नायक) उद्यान कृषक (हाविक जाति) मन बहलाने वाले (भंडारी और देश भंडारी) सेवा करने वाले (कूलिया, नाई और मडीवाल-धोबी) कारीगर (स्लेट, आचारी और मुखरी) और व्यापारी (गौड़ सारस्वत) संसाधनों का उपयोग भी विविधतापूर्ण था। इन विभिन्न जाति वर्गों का अपना अपना विशिष्ट जीवन निर्वाह का तरीका था और अक्सर वह अपने निश्चित आवास में इस प्रकार रहते थे जैसे जातियां एक जैविक समुदाय के रूप में रहती हैं। जाति व्यवस्था के इस सांस्थानिक संगठन के विभिन्न सामाजिक वर्गों को एक दूसरे के साथ और उनके आवास के साथ मैत्रीपूर्ण ढंग से नियमित किया गया। ये विभिन्न जातियां प्राकृतिक संसाधनों के इस्तेमाल में एक दूसरे की विरोधी न होकर पूरक थीं।

12.2.2 औपनिवेशिक शासकों के अधीन समुदाय

अधिकांश द्वीपीय आवास में, पर्वतों में या और कहीं यूरोपीय लोगों के आगमन के पश्चात औपनिवेशिक लोगों और देशी आवास के मध्य नए संबंधों की शुरुआत हुई। एक ही स्थान पर रहने के बावजूद यूरोपीय लोगों की प्रवृत्ति एक अलग समुदाय के रूप में रहने की थी। विचारों, सांस्कृतिक मूल्यों, शहरी पसन्द और फुरसत की गतिविधियों ने इस अलगाव को और मजबूत कर दिया। इसके कारण समुदाय में पुनर्गठन हुआ। एक ओर तो यूरोपीय शासकों का विशिष्ट वर्ग और दूसरी ओर अधीनस्थ पद के भारतीय थे जो स्थानीय नगर अधिकारियों और राज्य नियंत्रण के नियमों द्वारा नियंत्रित होते थे। इस प्रकार विविध प्रकार के वर्ग, वनों के निवासी, कृषक और शहर के निवासी औपनिवेशिक समय में अन्योन्य क्रिया के कारण एक दूसरे के निकट आए। इनकी बहुत सी शाखाएं बनीं जिन पर भाग 12.4 में विचार किया जाएगा।

12.3 आंचलिक सम्पदा

भूदृश्य, पारिस्थितिक परिवेश, एतिहासिक स्मारक और महत्व के अन्य स्थानों के रूप में प्रत्येक स्थान की अपनी आंचलिक सम्पदा होती हैं। विश्व पर्यटन रिपोर्ट अलग अलग प्रकार के पारिस्थितिक तंत्रों की विभिन्न संपदाओं पर प्रकाश डालती है:

1) **रेतीले समुद्र तट (बीच), समुद्री क्षेत्र एवं नम भूमि सहित तटीय क्षेत्र:** पूर्ण विकसित रेतीले तटों में प्रचुर पर्यटन के लिए आकर्षण और वहन क्षमता है। समुद्री उद्यान और नम भूमि अपने भंगुर पारिस्थितिकी तंत्र सहित साहसिक कार्यों और विशेष अभिरुचि के पर्यटन के लिए बेहतर और उपयुक्त हैं।
2) **पर्वत और बीहड़ क्षेत्र:** ऊंचे पर्वतों, वनों, बंजर भूमि, मरुस्थलों, झीलों और नदियों तक वे पर्यटक जाते हैं जो पर्वतारोहण, लंबी पैदल यात्रा आदि में दिलचस्पी रखते हैं।
3) **अन्तः देशीय ग्रामीण क्षेत्र :** कृषि भूमि, वन, झीलों के तट और नदी तट विशेष रुचि के पर्यटन जैसे फॉर्म या ग्रामीण परिवेश, शरण स्थान आदि के लिए उचित माहौल प्रदान करते हैं।
4) **शहरी क्षेत्र :** संस्कृति, स्मारक, प्रायोजित उत्सव और सम्मेलन तथा प्रदर्शनियां बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित कर सकती हैं।
5) **छोटे द्वीप :** छोटे क्षेत्र के तटीय एवं बीहड़ पक्ष के साथ मूंगा-चट्टानों, गरानों, समुद्री घास की तहों और वनों जैसे प्राकृतिक संसाधन द्वीप को विशेष आकर्षण का गंतव्य क्षेत्र बना सकते हैं।

इस पाठ्यक्रम के खंड 8 में इनमें से कुछ सम्पदाओं जैसे रेतीले समुद्री तटों, मन भूमि और पर्वतों का सविस्तार वर्णन प्रस्तुत किया गया है। आइए, उदाहरणार्थ अध्ययन के रूप में पर्वतीय सैरगाह की क्षेत्रीय सम्पदाओं का पर्यटकीय एवं पर्यावरणीय महत्व की दृष्टि से संक्षिप्त अध्ययन करें।

12.3.1 पर्वतीय सैरगाह (रिसार्ट)

भारत में प्रकृति अपने पूर्ण सौंदर्य के साथ हिमालय और नीलगिरी पर्वतों में बिखरी हुई है। अधिकतर ये पहाड़ी सैरगाहें ग्रीष्म ऋतु की गरमी से अंग्रेजों के बचने के लिए उपनिवेशी समय में आश्रय के रूप में विकसित की गई थीं। उदाहरणार्थ दार्जिलिंग, ऊटी, माउंट आबू, शिमला, नैनीताल और मसूरी कुछ ऐसी ही सैरगाहें हैं। इसके बावजूद पर्यटकों के दृष्टिकोण से इन पहाड़ी सैरगाहों को विविध आकर्षणों के साथ विक्रय वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। उदाहरण के तौर पर दार्जिलिंग को लीजिए।

दार्जिलिंग का सूर्योदय दुनिया भर में मशहूर है। यहां से एवरेस्ट, महाकालू और किन्चेरिंग जो क्रमशः प्रथम तृतीय और चतुर्थ उच्चतम शिखर हैं यहां से दिखाई देते हैं। इनके अतिरिक्त विश्व की बारह उच्चतम चोटियां यहां से देखी जा सकती हैं। चाय उत्सव जैसे सांस्कृतिक उत्सव इन स्थलों के आकर्षण में चार चांद लगा देते हैं। खिलौना रेलगाड़ी पर यात्रा स्वयं में एक अलग आकर्षण है।

पर्वतारोहण, लम्बी पैदल यात्रा, शिलारोहण, स्कीइंग, रिवर रैफटिंग, गोल्फ, प्रकृति की यात्राएं आदि पर्यटन उत्पादों के रूप में प्रस्तुत किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक सुरम्य दृश्य एक महत्वपूर्ण आकर्षण हैं। विभिन्न सरकारी संघठनों और निजी निवेशकों द्वारा पर्वतीय क्षेत्रों की प्राकृतिक विशेषताओं को अनुकूलतम स्तर

पर उजागर करने और पर्यटक उद्योग के लिए उनके लाभों को उच्चतम सीमा तक बढ़ा देने का प्रयास किया जा रहा है। औपनिवेशिक काल में बहुत सी पहाड़ी सैरगाहें बड़े पर्यटक उद्यम रहे हैं। बहुत से पहाड़ी क्षेत्रों में पर्यटन सबसे बड़ा उद्यम है जिस पर स्थानीय अर्थव्यवस्था फलती फूलती है। भारत के अधिकांश पर्वतीय सैरगाहें निम्नलिखित तीन बातों से जानी जाती हैं।

- पर्यटन
- स्कूल, और
- चाय (खासकर दार्जिलिंग के संदर्भ में)

इन्हें अंग्रेजी के तीन टी टूरिज्म, टीचिंग और टी के रूप में समझा जा सकता है।

विविध प्रकार की जड़ी बूटियों, बनैले फूलों और पौधों से समृद्ध पर्वतों पर छाई हुई घनी हरियाली पर्वतों के प्राकृतिक सौंदर्य और मनोहरता में वृद्धि करते हैं। इस घने पर्ण समूह और पादप जीवन को सुरक्षित रखने के लिए बहुत पहाड़ी स्थलों पर वानस्पतिक उद्यान स्थापित किए गए हैं। दार्जिलिंग का लॉएड वानस्पतिक उद्यान विविधता और आकार में अन्य सार्वजनिक उद्यानों से बहुत आगे बढ़ा हुआ है। चीन और जापान से (ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासकों द्वारा) लाये गये आल्डर ब्रिचेज़, मैपिल, ओक, रोडोडेन्ड्रॉन चिकनी पत्ती वाले पेप्टे, सिन्दूरी, एरीथ्रिम, इलीलिया लिली, हाइडरेंगियर और प्रिमरोज प्रचुरता के साथ खिलते हैं। ऊटी में एक और महत्वपूर्ण वानस्पतिक उद्यान है। इसे उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में इंगलैंड के कीव नामक स्थान से एक विशेष माली को बुलाकर लगवाया गया था। 1830 के दौरान उस समय के वायसराय लार्ड ईर्डन की बहन एमिली ईडेन ने इन प्राकृतिक पक्षों और थके मांदे यात्रियों पर उनके प्रभावों का उल्लेख किया है। उन्होंने पर्वतीय वायु को "ठंडी तरोताजा करने वाली सुखदायी और स्पष्टतय फेफड़ों के लिए मनोहर" चीज के रूप में वर्णित किया है। उन्होंने हिमालय को इंगलैंड की उन पहाड़ियों जैसा अनुभव किया जिन पर हर दिशा में लाल मनमोहक रोडोन्ड्रॉन वृक्ष और पहाड़ी के हर तरफ कटी हुई इंगलिश झाड़ियों से घिरे विहार स्थल हैं। औपनिवेशिक शासक भारतीय पर्वतों की तुलना यूरोपीय पहाड़ों से करते थे। दक्षिण एशिया (विशेष रूप से) की पर्वत श्रेणियों के बहुत से सुरम्य भूदृश्यों से तुलना की गई। सर टॉमस मुनरो, मद्रास के गवर्नर ने उन्नीसवीं शताब्दी में ऊटी के हर शक्ल और विस्तार के असंख्य हरे भरे टीलों की आकृति की तुलना एक "इंगलिश पार्क के समतल लॉन" से की थी।

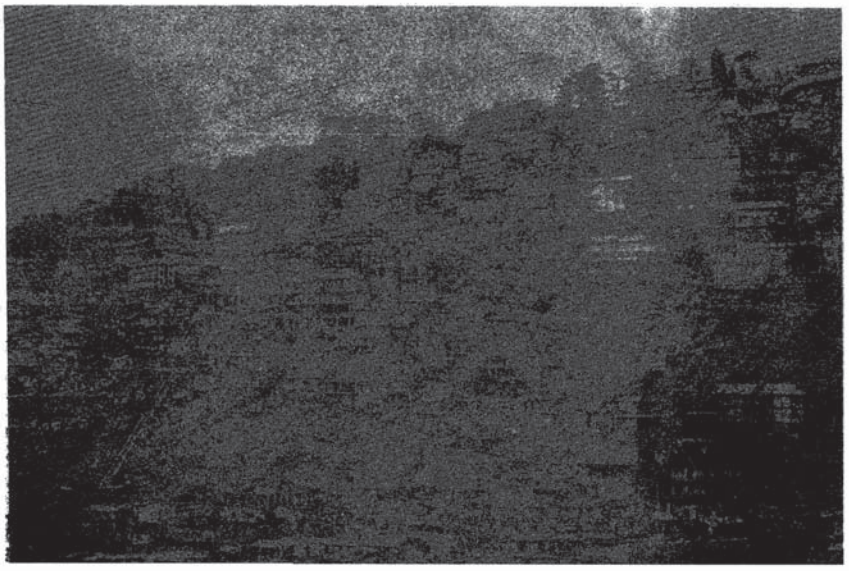

आज का शिमला

पर्वतों की तरोताजा कर देने वाली हवा भी पर्यटकों और रोगियों के लिए मनमोहक और स्वास्थ्यवर्धक होती हैं। अत: पर्वतों को प्राकृतिक आरोग्य आश्रम समझना गलत नहीं है। भारतीय पहाड़ी स्थलों ने पर्यटकों के लिए और उनके लिए भी जो बीमारियों की पीड़ा से उबरना चाहते हैं पुनरुद्धार की बहुत सी सुविधाएं प्रदान की हैं। इस प्रकार वृद्धों और रोगियों के पुनर्लाभ के लिए पहाड़ी स्थल आदर्श वातावरण हैं।

विदेशी पर्यटकों के लिए इन पहाड़ी सैरगाहों की जलवायु यूरोप की शीतोष्ण जलवायु के समान है। यदि भारतीय मैदानों की गरमी ठंडे वातावरण वालों के लिए असह्य हो जाएं तो पहाड़ियां ही प्राकृतिक विकल्प हैं। यह एक प्रमुख कारण था कि भारत के औपनिवेशिक शासकों ने शिमला, दार्जिलिंग, नैनीताल, ऊटी, रांची आदि की पहाड़ियों में ग्रीष्म कालीन राजधानियां स्थापित कीं। विभिन्न पहाड़ी सैरगाहों पर छात्रावास की सुविधा सहित बहुत सी शिक्षण संस्थाएं पर्यटक व्यापार के लिए अतिरिक्त आकर्षण हैं। स्थानीय समुदाय पर्यटन के लिए इन प्राकृतिक संसाधनों के इस्तेमाल के नए उपाय खोज रहे हैं। दूरवर्ती पहाड़ी आदिवासी क्षेत्रों को पर्यटकों के लिए खोलना इसी दिशा में एक नया कदम है।

12.3.2 सांस्कृतिक परिवेश

सांस्कृतिक पर्यावरण लोगों और उनकी संस्कृति से निर्मित होता है: लोक साहित्य, पहनावा, कला कौशल, कार्य और जीवन शैली। इसमें निर्मित पर्यावरण भी सम्मिलित होता है जिसके अन्तर्गत निजी भवनों से लेकर ऐतिहासिक स्मारक और पुरातत्वीय स्थल तक शामिल होते हैं।

देशज जनजातियां सांस्कृतिक पर्यावरण का महत्वपूर्ण भाग हैं। पहाड़ी जनजातियों के संदर्भ में उनकी जीवन शैली और प्रथाएं आवास का महत्वपूर्ण भाग हैं। पारम्परिक प्रथाओं, धार्मिक अनुष्ठानों और लोक साहित्य की अवस्थिति का विश्व में आकर्षण बढ़ रहा है। दार्जिलिंग की पहाड़ियों और अन्य पहाड़ी स्थलों में जाने वाले यात्रियों के अभिलेखों में पहाड़ी जनजातियों की प्रथाओं और रीतियों के अनेकों उल्लेख मिलत हैं। जनजातियों की प्रथाएं और जीवन शैली पहाड़ी सैरगाहों के सांस्कृतिक पर्यावरण का एक भाग है। वह विभिन्न संस्कृतियों के यात्रियों को आकर्षित करते हैं। इसे विकसित पश्चिम और परम्परागत पूरब के बीच सांस्कृतिक वार्तालाप के रूप में समझा जा सकता है। बहुत से यूरोपीय लेखकों ने जनजातीय आदिवासियों, उनकी प्रथाओं, दैनिक कार्यकलापों, अनुष्ठानों, उत्सवों और दुखों और सुखों को व्यक्त करने के अनूठे व्यक्तिगत तरीकों का सविस्तार उल्लेख किया है। विभिन्न पहाड़ी लोगों के स्वभाव और व्यवहार को उन्नीसवीं शताब्दी के अंग्रेज लेखकों ने



हिमाचली पहाड़ियों के निवासी

व्यापक दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया और यह परंपरा बीसवीं शताब्दी में भी जारी रही। उदाहरणार्थ बीसवीं शताब्दी के आरंभ के लेखक एडवर्ड जे. बुक ने अपनी पुस्तक 'शिमला' में तिब्बत वासियों को तिब्बत के "सामान्य चरवाहों के रूप में चित्रित किया। ये नीचे तक फैल, अपरिष्कृत, उलझे धूल से सने हुए लोग हैं।" इनकी छोटी दबी हुई नाकों, पीले चेहरों, उलटी आंखों की नकारात्मक तुलना "पंजाब के पहाड़ी निवासियों की आर्य नाक नक्शे से की है। इसके बावजूद बुक ने तिब्बत वासियों को उत्कृष्ट रूप से सच्चा, ईमानदार, संयत और आसानी से प्रसन्न तथा संतुष्ट हो जाने वाला मिलनसार पाया।"

भूटियाओं में सिक्कमी, शेरपा, ध्रुकपा और तिब्बती भूटिया सम्मिलित हैं। ये लोग सिक्किम में बसे हुए तिब्बतियों और उस क्षेत्र के आदिवासी लैप्चाओं के शंकर नस्ल के हैं।

लैप्चा दार्जिलिंग के पहाड़ी क्षेत्र के मूल निवासी हैं। दार्जिलिंग में ब्रिटिश साम्राज्य के आगमन के साथ ही उनकी संख्या, उनकी प्रथाएं और जीवन शैली धीरे धीरे ह्रासमान होने लगीं। 1891 के सिक्किम गजेटियर में उन्हें रौंगपो (तंगधारी के लोग) के रूप में वर्णित किया गया है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि ये लोग जंगल के लकड़हारे हैं जो पक्षियों और पशुओं के व्यवहार को अच्छी तरह जानते पहचानते हैं। जन्तु विज्ञान एवं वनस्पति विज्ञान का उनका अपना व्यापक नामकोश है। विद्वानों ने उन्हें ठीक ही जन्मजात प्रकृति वैज्ञानिक माना है। लैप्चाओं की एक महत्वपूर्ण विशिष्टता यह भी थी कि लगभग हर एक प्रकार के पक्षी, पौधे, आर्किड और तितली के लिए उनके पास अलग नाम थे। उन्नीसवीं शताब्दी के एक विख्यात प्रकृति वैज्ञानिक सर जोसेफ हुकर ने इन जन्मजात प्रकृति वैज्ञानिकों की बहुत प्रशंसा की। 1884 में उन्होंने लिखा:

"लैप्चाओं की अपेक्षा किसी और अधिक दिलचस्प और आकर्षण साथी के साथ मैं कभी नहीं रहा : अपने मालिक जिनके साथ वे आसक्त हैं वह प्रसन्न, स्नेही और सहनशील रहते हैं। वह असभ्य तो हैं किंतु वहशी नहीं हैं, वह अज्ञानी हैं किंतु फिर भी बुद्धिमान हैं। एक साधारण चाकू जैसे सामान्य संसाधन से ऐसी गति, तत्परता और प्रवीणता से वह अपना और व्यापक घर बनाता है, सुसज्जित करता है कि बस आप देखते ही रह जाएंगे"।

उन्नीसवीं शताब्दी के आठवें दशक में लेडी डफरिन ने तेंदुक लैप्चा नामक मुखिया और लैप्चा लोगों की वेशभूषा के बारे में लिखा है। लेडि डफरिन ने लिखा है कि वे "लहंगा, लाल जैकेट और किसी उल्टे फूलदान



नारकंडा में स्थानीय उत्सव

की शक्ल का हैट जिसमें सामने मोर का का पंख खुंसा हुआ होता है पहनते हैं। ये सब लोग बड़े ढोल बजाते हैं।" उसका किसी हद तक ये हास्यास्पद विवरण यह बताता है कि पर्यटक इन कबीलों के बारे में किस ढंग से सोचते हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के एक यात्रा विवरण में भी इन लैप्चाओं की निश्चित वेशभूषा का वर्णन मिलता है:

''उनकी वेशभूषा बहुत अनोखी और मनोहर है। ये मोटे नीले और सफेद या लाल और सफेद सूती कपड़े पहनते हैं। यह सीने और पीठ को ढकता हुआ बांह को नंगा ओर खुला छोड़ते हुए पैर की पिंडली तक पहुंचता है। फिर इसे कमर के चारों ओर लपेट कर चमड़े की बेल्ट या अलंकृत पेटी से बांध दिया जाता है.... महिलाओं की पोशाक पुरुषों के पहनावे का परिष्कृत रूप होती है किंतु उस पर डीला ढाला गाउन भी पहना जाता है। वे चांदी के भारी कर्णफूल और मूंगे और रंगीन मनकों की मालाएं पहनती हैं। वह अपने बालों को विविध प्रकार से संवारने में बहुत गर्व अनुभव करती हैं।''

शिमला के पहाड़ी पुरुषों में और विशेष प्रकार से पहाड़ी महिलाओं में आभूषणों के लिए एक विशेष आकर्षण है। एडवर्ड जे. बक ने पहाड़ी महिलाओं में भड़कीले पहनावे, चूड़ियों और नथुली के प्रति रुचि अनुभव की। उसने शिमला पहाड़ी के मुखिया का वर्णन इन शब्दों में किया: ''यह एक पहाड़ी मुखिया है जिसका आवास पहाड़ी पर स्थित एक सुनसान महल है जहां से घाटी नीचे दिखाई देती है जो उसकी अपनी संपत्ति है। कोई यह देखे बिना नहीं रह सकता है कि वह अनुरूप रंगों वाली साहसिक किंतु उच्चतम श्रेणी के भड़कीले कपड़ों से बनी सुंदर पोशाक पहने हुए है।'' इस प्रकार के विवरणों से यह स्पष्ट होता है कि देशी पहाड़ी जनजातियों के लिए यूरोपीय यात्रियों में कितनी जिज्ञासा थी। उनके पहनावे, भोजन, व्यवहार, मेले और उत्सवों के बारे में ऐसे रंगीन विवरणों ने पर्यटकों को जिज्ञासित और मोहित किया। पर्यटकों के लिए यह सम्मोहन पहाड़ों के सजीव उत्सवों के कारण और बढ़ जाता है। एडवर्ड बक ने शिमला की तारा पहाड़ियों में लगने वाले वार्षिक सीपी मेले का जीवन्त विवरण दिया है। वह पहाड़ी लोगों के पारम्परिक उल्लास की पूरी जानकारी देता है। उसने लिखा:

''दृश्य के एक ओर पहाड़ी लोग हर्ष और उल्लास से भरे झूलों और चर्खियों में खचाखच भरे हुए और दूसरी ओर कांच के मनकों, मालाओं और सस्ते प्रकार की हर तरह की सजावटी वस्तुओं की छोटी छोटी दुकानों की पंक्तियां, प्रसन्नचित, उत्तेजित बहस करती हुई खदीददारों की भीड़ से घिरी हुई थीं। दर्जनों मिठाइयों की दुकाने और अभिभूत कर देने वाली घी की महक और मिठाइयों की छनछनाहट के अतिरिक्त टमटम के धक्के, नृत्य करती जाम्यपानी का समूह गान .... आपको सीपी उत्सव के आमोद प्रमोद की हलचल और शोर का अन्दाज लग गया होगा।''

शिमला पहाड़ियों के सीपी मेले के समान ही दार्जिलिंग के पहाड़ी क्षेत्रों के तिब्बती नव वर्ष उत्सव मनाया जाता





पहाड़ी समुदायों के फुर्सत के क्षण

है जिसने लखकों और पर्यटकों को आकर्षित किया है। पशुओं के मुखौटे लगाकर किया जाने वाला 'राक्षस नृत्य' इस आनन्दोत्सव का एक महत्वपूर्ण भाग है। यह स्पष्ट है कि पारम्परिक पहाड़ी समुदाय का सांस्कृतिक पर्यावरण अत्यंत प्रफुल्ल, किसी भी दोष के प्रति उदार, चाहे कैसा ही उत्तेजनपूर्ण या उत्साही क्यों न हो हर प्रकार के सुख की चाहत करने वाला होता है।

शताब्दियों में विकसित हुई पहाड़ी जनजातियों की संस्कृति के अतिरिक्त अंग्रेजों के शासनकाल में हिल स्टेशन बनाए गए। पहाड़ पर रहने वाले कुछ लोग आज भी उस युग को याद करते हैं। बहुत से पर्यटक भी देशी क्लबों में अंग्रेजों की स्थापत्य शैली के छोटे-छोटे बंगलों में और अंग्रेजी साज समान और पसन्द सहित होटलों में राज संस्कृति की खोज करते हैं। साम्राज्यी शासकों द्वारा निर्मित भव्य सार्वनिक भवन लंबे समय तक टिकने वाले स्मारक हैं जो जनता के अवलोकनार्थ खोले जाते हैं। शिमला का वायसराय भवन (जो अब राष्ट्रपति निवास है), दार्जिलिंग में लेफटिनेंट का निवास स्थान, माल रोड के किनारे किनारे विभिन्न क्लब और अन्य सार्वजनिक इमारतें ब्रिटिश समुदाय की ओर से पहाड़ी पर्यावरण के लिए योगदान है। वास्तव में सांस्कृतिक पर्यावरण एक प्रमुख पर्यटन आकर्षण हैं।

बोध प्रश्न 1

1) पूर्व औपनिवेशिक भारत में समुदाय की स्थापना पर पांच पंक्तियां लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) आंचलिक संपदाओं से आप क्या समझते हैं ? कृपया उनको विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत कीजिए।

.....

.....

.....

.....

12.4 तनाव

पर्यटन विकास और अन्य आर्थिक गतिविधियों, विशेषकर चाय उद्योग, ने देशी समुदाय की जीवन शैली पर काफी असर डाला। अंग्रेजों के उत्साह तथा श्रेष्ठ तकनीकी प्रदर्शन ने स्थानीय पहाडी बस्तियों की पारंपरिक जीवन शैली को अस्त-व्यस्त कर दिया।

स्थानीय पहाड़ी पर्यावरण को यूरोपीय विशिष्ट वर्ग की आवश्यकताओं के अनुकूल संशोधित कर दिया गया। यूरोपीयवासियों के महानगरीय प्रकार के मनोरंजन के विकास के लिए स्थानों को परिवर्तित कर दिया गया। आरक्षित वनों ओर बागवानी को औपनिवेशिक राज्य के आदेशानुसार प्रोत्साहित किया गया।

इस प्रक्रिया में सामूहिक जोत क्षेत्र और चारागाह के सामान्य सम्पदा अधिकारों सहित पारम्परिक ग्रामीण समुदाय को पृष्ठभूमि में धकेल दिया गया। कुमायूं क्षेत्र के ग्रामीण समुदायों, सिक्किम ओर दार्जिलिंग क्षेत्र के लैप्चाओं या नीलगिरि के टोडा प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिए गए। बड़े पैमाने पर वनों की कटाई ने इन पहाड़ी समुदायों का सीमान्तीकरण कर दिया गया। औपनिवेशिक घुसपैठ ने पहाड़ी लोगों की उनके पवित्र उपवन और प्रकृति द्वारा की गयी जड़ी बूटियों में केंद्रित जीवन शैली को अस्त व्यस्त कर दिया। वनों में रहने वाले लैप्चा अपने हिमालय की जड़ी बूटियों, वनस्पति एवं जन्तु समूह का व्यापक ज्ञान रखने वाले जन्मजात औषधि विज्ञानी औपनिवेशिक राज्य के विकासीय दबाव के कारण अपने पारम्परिक जंगल आवास से सख्ती से विस्थापत कर दिए गए।

इन आर्थिक उद्यमों जैसे पर्यटन और बागान के लाभ, गुण और मात्रा दोनों में से किसी रूप में पहाड़ी लोगों तक नहीं पहुंचे। मैदानी लोगों से अलग करने के लिए अंग्रेज लोग इन्हें पहाड़ी कहते थे। नई अर्थव्यवस्था में इन्हें निचले दर्जे का काम मिला। वह अधिकांश बैरों, खिदमतगारों, चपरासियों, टट्टू सवारों, रिक्शा चालकों के तौर पर नौकर रख लिए गए जो इन्हें संतोषजनक जीविका के साधन उपलब्ध नहीं करा सके।

पर्यटन गंतव्य के रूप में उभरते ही इन पर्वतीय सैरगाहों से बाहरी लोगों ने और अधिक प्रत्यक्ष लाभ पाए। चाय बगानों से अंग्रेज मालिकों या यूरोपीय होटल वालों ने बहुत अधिक लाभ कमाए। उन्होंने यह सब क्लब संस्कृति के सम्पर्कों से प्राप्त किए। ये क्लब संस्कृति सम्पर्क यूरोपीय लोगों को प्रतिस्थापित करके मैदान के भारतवासियों के साथ कायम रहा।

12.4.1 पारम्परिक सामुदायिक जीवन

उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान जब अंग्रेज़ उपनिवेशियों ने पर्वतों में प्रवेश किया उस समय के पर्वतीय भूदृश्य का एक अपना स्वरूप था। जीविका के प्रमुख साधन से सम्बद्ध छोटी-छोटी बस्तियां होती थी जहां धरातल के ऊबड़ खाबड़ होने और परिष्कृत तकनीक की कमी के कारण बहुत कम खेती की जाती थी। टामस मुनरो ने उन्नीसवीं शताब्दी में ऊटी क्षेत्र के विषय में लिखा:

''पहाड़ों पर बरगारा नामक एक कृषीय जाति के लोगों की कुछ बस्तियां बिखरी हुई हैं। फसलों से भरे खेत पहाड़ी ढाल पर नीचे से ऊपर तक फैले हुए हैं जो रमणीय प्रभाव डालते हैं, किंतु ये खेत छितरे हुए हैं और शायद धरातल के दसवें भाग से अधिक भार पर भी फैले हुए नहीं हैं।''

औपनिवेशिक पूर्व भारत में अन्य पर्वतीय क्षेत्रों के समान ऊटी में भी कृषि समुदाय जंगल की जनजातियों की बगल में रहता था। खेत और वन के मध्य स्थानीक अलगाव के बावजूद इन विभिन्न व्यावसायिक वर्गों के मध्य अन्योन्याश्रय और सह जीवन के संबंध थे। औपनिवेशिक काल से पहले संसाधन के अनुसार विभिन्न जातियों और सामाजिक वर्गों में इतनी विविधता थी कि इन वर्गों में संघर्ष सदैव टल जाता था। उदाहरणार्थ महाराष्ट्र की पश्चिमी घाट की पहाड़ियों में जंगली जानवरों के शिकार का एकाधिकार कुनबियों को था जबकि गावली पशुधन की देख रेख और चारे के उपयोग तथा चराई के संसाधनों के जिम्मेवार थे।

इसी प्रकार नीलगिरि के टोडा जो क्षेत्र के मूल निवासी समझे जाते हैं पशुचारी और चलवासी थे। वह थोड़ी बहुत स्थानान्तरी खेती भी कर लेते थे। बड़गा उस क्षेत्र के कृषक थे जो प्राथमिक रूप से जुताई और खेती बाड़ी करते थे। कोटा, कुरुमबा और इरुला नौकर पेशा थे। दार्जिलिंग क्षेत्र में लैप्चा जंगल में रहने वाले थे, भूटिया अधिकांशत: व्यापारी थे और नेपाली कृषक थे। संसाधनों की इस पारस्परिक भागीदारी ने भी शांतिमय जीवन में अपना योगदान दिया।

12.4.2 तनाव का आरंभ: उत्तराखंड

जब हम औपनिवेशिक विकासों को विशेषत: हिमालय और सामान्यत: भारतीय उपमहाद्वीप के सांस्कृतिक पारिस्थितिकी तुलना में देखते हैं तो तनाव और संघर्ष के पहलू सामने आते हैं। इस पक्ष को बेहतर तौर से समझने के लिए उत्तराखंड (उत्तर प्रदेश का पहाड़ी क्षेत्र) का उदाहरण लेना पड़ेगा। गंगा नदी के इलाके के विपरीत उत्तराखंड के गांवों में वर्ग विभाजन नहीं था। ऐसा लगभग सभी पर्वतीय क्षेत्रों में था।

पहाड़ी ग्रामीण समाज में वर्ग विभाजन न होने कारण वह्रां की पारिस्थितिकीय विशिष्टता ही थी। कृषि योग्य भूमि के सीमित विस्तार ने विस्तृत कृषि संभावनाओं को कम कर दिया था। इसी प्रकार मृदा की भंगुरता और खराब संचार और परिवहन के कारण कृषि बाजार से नहीं जुड़ पाई। इस कारण से बड़े भू-स्वामियों का विकास नहीं हुआ। अधिकतर लोगों का आर्थिक स्तर एक जैसा ही था।

इन पारिस्थितिक दबाव के कारण उत्तराखंड की कृषीय अर्थव्यस्था ने अधिशेष भी उत्पादन नहीं किया। इसके अतिरिक्त उत्तराखंड में छोटा कृषक ही प्रमुख वर्ग था। बड़े जमींदार और कृषि श्रमिक बहुत कम थे। चूंकि कोई टिकाऊ उपज नहीं थी अत: वनों, चरागाहों और खेतों के मध्य सह संबंध था। स्थाई बस्तियों के बलूत के वन चारा और खाद दोनों देते थे। इसी कारण शिकारी, एकत्र करने वाले और पशुचारी अपने संसाधनों के उपयोग के तरीकों को जारी रखने के योग्य बने और इसने औपनिवेशिक पूर्व समुदायों को अन्त: रूपात्मक सहयोग और सहास्तित्व के स्पष्ट मार्ग पर चल सकने योग्य बना दिया।

ऐसे परिवेश में औपनिवेशिक हस्तक्षेप ने उत्तराखंड की सामाजिक पारिस्थितिकी और जनसांख्यिकी विशेषताओं को पूरी तरह से बदल डाला। पारम्परिक ढांचा तहस-नहस हो गया और नए परिवर्तनों का लाभ केवल यूरोपवासियों को मिला। औपनिवेशिक शोषण पूंजीवाद का एक महत्वपूर्ण भाग था। पूंजीवाद में समाज व्यक्ति केंद्रित होता है जो सामूहिक गतिविधियों और समस्त समुदाय द्वारा उपयोग पर आधारित पारम्परिक जीवन शैली से विपरीत होता है।

इसी प्रकार औपनिवेशिक राज्य नियंत्रण का उद्देश्य भी प्रकृति का समग्र समुदाय द्वारा सामूहिक रूप से इस्तेमाल का विरोध करना था। औपनिवेशिक जंगल कानून ने केवल उपयोग करने वालों के व्यक्तिगत अधिकारों को ही मान्यता दी और सामाजिक संयोजनों को विखंडित करना प्रारंभ कर दिया। इस प्रक्रिया में औद्योगीकरण और पूंजी के प्रवेश के कारण तेजी आई। जंगल उत्पाद इसके बाद पहाड़ी गांवों के इस्तेमाल की चीज नहीं रहे। बड़े पैमाने पर वन अरोपण करके चाय और काफी की खेती प्रारंभ हुई और विनियुक्त उत्पादों ने औपनिवेशिक उद्योगपतियों को ही लाभान्वित किया। इस प्रक्रिया में दार्जिलिंग के लेप्चाओं और ऊटी के टोडाओं के समापन का सामना करना पड़ा, क्योंकि जंगलों पर आधारित उनके जीवन निर्वाह के साधन को उनसे छीन लिया गया।

उत्तराखंड में सामुदायिक स्वामित्व के अस्वीकार कर दिए जाने के बाद वे अपने परिवेश से कटते चले गए। वे पहाड़ी लोग जिन्होंने पवित्र उपवनों आदि की रक्षा करके जंगल के विकास को प्रोत्साहित किया अब जंगल के प्रति उदासीन हो गए। औपनिवेशिक शासकों द्वारा लाए गए 'सुरक्षित' वनों और वैज्ञानिक प्रबंधन के कारण अपने आवास के नाश से प्रेरित होकर इन वनवासियों ने अपने पास बचे हुए संसाधनों को शीघ्र ही समाप्त कर दिया। उन्हें भय था कि संरक्षण के नाम पर राज्य उनकी सभी सामूहिक संपदाओं को उनसे न छीन ले।

हिमालय के क्षेत्रों में खेती मुख्य रूप से निर्वाह के उद्देश्य से ही होती रही, किन्तु जनांकिकीय, सामाजिक और पर्यावरणीय परिवर्तनों ने पहाड़ी समाज की स्वयं को भोजन उपलब्ध कराने की अक्षमता पर विपरीत असर डाला। इसके अतिरिक्त तीव्रगामी व्यापारिक एवं औद्योगिक समाज के विकास ने पहाड़ी पारिस्थितिक तंत्र को ह्रासमान किया जिसके फलस्वरूप उत्पादन और कम हो गया। यह स्थिति परिवार और समुदाय को विखंडन की ओर ले गई। सामुदायिक संरचना और जीवन निर्वाह के साधनों में कमी ने औपनिवेशिक युग में प्रतिस्पर्द्धा को तीव्र कर दिया। पहले विभिन्न जातियों के मध्य संसाधन के उपयोग की विविधता के कारण विभिन्न समूहों में कोई प्रतिस्पर्धा नहीं थी। लेकिन सामुदायिक ढांचे में टूट फूट और जीवन निर्वाह के साधनों के अभाव ने औपनिवेशिक समय में प्रतिस्पर्द्धा को बढ़ा दिया। एक बार जंगल और कृषि के मध्य संयोजन टूट गया तो जीवन निर्वाह के विभिन्न साधनों के मध्य अत्यधिक प्रतिस्पर्द्धा पैदा हो गई। इन सारी बातों का नतीजा पारम्परिक आर्थिक ढांचे के लिए घोर संकटपूर्ण था।

रामचन्द्र गुहा ने अपनी पुस्तक 'द अन क्वाइट वुड्स' (The Unquit Woods) में लिखा है:

"इसके अतिरिक्त जनता को औद्योगिक अर्थव्यवस्था और उपभोक्ता समाज के प्रलोभन के सामने अनावृत करके अंग्रेजों ने यह सुनिश्चित कर लिया कि उनके द्वारा शुरू किया जाने वाला पारिस्थितिक परिवर्तन जारी रहेगा जब वे भारत छोड़ कर जाएंगे तो उसकी गति अवश्य और तीव्र हो जाएगी।" इन आर्थिक परिवर्तनों के और परिणाम सामने आये। वन्य समुदायों ने प्राय: अपनी इच्छा के विरूद्ध अपने क्षेत्र में लाए जाने वाले इन परिवर्तनों का विरोध किया। उदाहरणार्थ उत्तराखंड के टेहरी क्षेत्र में 1904, 1906, 1930, 1944-48 में वनों और चारागाहों पर अपनी नियंत्रण प्राप्त करने के लिए व्यापारिक प्रबंधन के विरूद्ध स्थानीय स्तर पर आंदोलन छेड़े गये।

12.5 समुदाय और टिकाऊ पर्यटन

विश्व पर्यटन रिपोर्ट के अनुसार "टिकाऊ पर्यटन आर्थिक विकास का वह आदर्श रूप है जो समुदाय, सांस्कृतिक परिवेश और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता का उदाहरण प्रस्तुत करता है।" टिकाऊ पर्यटन के साथ एक नया आयाम जोड़ा गया है। यह किसी क्षेत्र के भौतिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण के संरक्षण और सुरक्षा दोनों का ध्यान रखता है। अत: टिकाऊ पर्यटन के अंतर्गत उस क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों का ऐसा इस्तेमाल होना चाहिये जिससे प्राकृतिक संपदाओं और लोगों की पारंपरिक जीवन शैली पर विपरीत असर न पड़े।

इस अनोखे उपागम के तत्वाधान में समुदायों के सदस्यों को अपनी जीवन शैली और परम्परा के अनुकूल पर्यटन विकास को गति और दिशा प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है ताकि प्रत्येक क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को सम्मान दिया जा सके। स्थानीय लोगों, स्थानीय सरकार और राष्ट्रीय स्तर की योजना बनाने वालों को संगठित सामुदायिक साझेदारी अपनानी पड़ेगी।

पारिस्थितिकी और अर्थव्यवस्था अब पहले से अधिक एक दूसरे के साथ जुड़ गये है। पर्यावरण और पर्यटन के विकास की सुरक्षा को अलग-अलग चुनौतियों के रूप में देखना चाहिए। आर्थिक दृष्टि से टिकाऊ होने के लिए पर्यटन का पर्यावरणीय दृष्टि से टिकाऊ होना आवश्यक है।

यह स्थानीय समुदायों का दायित्व है कि वह अपने विकास और बेहतर जीवन गुणवत्ता के लिए अपनी आंचलिक संपत्तियों का सूझबूझ के साथ प्रबंध करें। साफ सुथरे भौतिक परिवेश और संरक्षित पर्यावरण से

स्थानीय समुदाय और पर्यटक दोनों का जीवन बेहतर बनेगा। औपनिवेशिक शासन और व्यापार तथा उपभोक्ताओं का बढ़ता हुआ दबाव स्थानीय समुदायों के लिए तबाही लाए। इससे स्थानीय संपदाओं के सावधानी पूर्ण उपयोग का महत्व स्पष्ट होता है। यह महत्वपूर्ण बात है कि विश्व पर्यटन रिपोर्ट ने टिकाऊ पर्यटन की नीतियां बनाते समय स्थानीय समुदायों के अलगाव को ध्यान में रखा है। रिपोर्ट ने स्थानीय लोगों के मूल्य ह्रास और उपांतिकता को भी स्वीकारा है। रिपोर्ट अपने सिद्धांतों में टिकाऊ पर्यटन के विस्तृत दृष्टिकोणों पर प्रकाश डालती है जो मार्ग दर्शन के लिए निम्नलिखित निर्देशों को समाविष्ट करता है:

1) पर्यटन योजना और विकास टिकाऊ विकास की भावना के अनुसार होना चाहिए जिसमें विभिन्न सरकारी माध्यमों, निजी निगमों, नागरिकों के समूह और अन्य व्यक्ति सम्मिलित हों ताकि अधिक से अधिक लाभ दे सकें।

2) एजेंसियों, निगमों, ग्रुपों और व्यक्तियों को नैतिक सिद्धान्तों का पालन करना चाहिए और स्थानीय क्षेत्र की संस्कृति और पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और पारम्परिक जीवन शैली, समुदाय और पारम्परिक व्यवहार, नेतृत्व और राजनैतिक प्रतिरूप का आदर करना चाहिये।

3) स्थानीय क्षेत्र में सुरक्षा और प्राकृतिक तथा मानव पर्यावरण के उचित आर्थिक उपयोग को उचित सम्मान दिया जाना चाहिए।

4) मस्तिष्क में निष्पक्षता पर्यटक प्रोत्साहण और स्थानीय लोगों और उनके क्षेत्र तक लाभों और लागतों के उचित बंटवारे की पहुंच के विचार के साथ ही पर्यटन को प्रारंभ करना चाहिए।

5) पर्यटन की प्रकृति और मानव तथा प्राकृतिक पर्यावरण पर उसके प्रभाव के विषय में पर्याप्त जानकारी अनुसंधान और संचार के विकास के पूर्व और विकास के समय उपलब्ध होना चाहिए। यह सूचना स्थानीय लोगों सहित समस्त वर्गों को होनी चाहिए ताकि वह अपने अंचल के विकास में भागीदारी करने की स्थिति में हो सकें। यह सामुदायिक भावना को सशक्त करता है और स्थानीय समुदायों के अलगाव को दूर करता है।

6) स्थानीय लोगों को सरकारी वित्तीय व्यापारिक और अन्य माध्यमों की सहायता से अपनी आंचलिक संपत्तियों की योजना और विकास में नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

7) वर्तमान उपयोगों, जीवन शैलियों और पर्यावरणीय महत्व से जुड़ने के लिए संघटित पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक योजना होनी चाहए।

8) इसका सतर्क प्रबोधन होना चाहिए कि नए परिवर्तनों द्वारा प्रदत्त अवसरों का लाभ स्थानीय समुदायो तक पहुंच सके।

बोध प्रश्न 2

1) उत्तराखंड की पहाड़ियों में पारम्परिक समाज की प्रकृति पर पांच पंक्तियां लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) औपनिवेशिक शासकों के आगमन ने इस पारम्परिक अर्थव्यवस्था और समाज को किस प्रकार प्रभावित किया ?

.....

.....

.....

.....

.....

3) निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और सही (✓) या गलत (×) का चिन्ह लगाइए।

i) कृषीय एवं वन्य जनजातिया पर्वतों में औपनिवेशिक पूर्व समय में समन्वित रूप में रहते ( )

ii) उत्तराखंड के पारम्परिक ग्रामीण समाज ने पैना वर्ग संघर्ष देखा है। ( )

iii) समुदायों के द्वारा सामूहिक उपयोग पर आधारित पारम्परिक समाज को नष्ट कर पूजींवाद एक व्यक्ति केंद्रित समाज पैदा करता है। ( )

iv) बड़े पैमाने पर वनों की कटाई ने स्थानीय पहाड़ी समुदायों को अर्थव्यवस्था के नए अवसर दिए हैं। ( )

4) टिकाऊ पर्यटन पर पांच पंक्तियां लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

12.6 सारांश

इस इकाई का उद्देश्य आपको पर्यटन के संदर्भ में समुदाय और आंचलिक सम्पदाओं की धारणा का बोध कराना था। इकाई का आरंभ समुदाय की परिभाषा और पूर्व औपनिवेशिक समय से आज तक के उसके विकास के वर्णन से हुआ। इनमें भारत की उन विविध प्रकार की आंचलिक सम्पदाओं का ब्यौरा भी दिया गया है जिन्होंने पर्यटकों को आकर्षित किया है। पहाड़ी सैरगाहों और सांस्कृतिक पर्यावरण को आंचलिक सम्पत्तियों के उदाहरण के तौर पर वर्णित किया गया। औपनिवेशिक शक्तियों के सम्पर्क में आने के कारण पारम्परिक समुदायों में जो परिवर्तन आए उन्हें भी इस इकाई में उजागर किया गया। और अंत में यह इकाई स्थानीय समुदायों के जीवन और संस्कृति को छोड़े बिना पर्यटन को बनाए रखने के उपाय भी सूझाती है।

12.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आपके उत्तर में सम्मिलित होना चाहिए:

क) ग्रामीण समुदाय की आत्म निर्भर प्रकृति, ख) भूमि का सामूहिक स्वामित्व,

ग) विभिन्न व्यावसायिक वर्गों का मैत्रीपूर्ण अस्तित्व। देखिए उपभाग 13.2.1

2) देखिए भाग 13.3

बोध प्रश्न 2

1) औपनिवेशिक शासकों द्वारा लागू किए गए नए जंगल के नियमों के विषय में लिखिए, चाय और कॉफी बगानों के रूप में पहाड़ियों में पूंजीवाद की घुसपैठ, बड़े पैमाने पर वन आरोपण और पहाड़ी समुदायों पर उसका सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव। देखिए उपभाग 13.4.2

3) i) ✓ ii) × iii) ✓ iv) ×

4) देखिए भाग 13.5

इकाई 13 गुणक प्रभाव : लाभ और परिणाम

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य
13.1 प्रस्तावना
13.2 गुणक प्रभाव
  13.2.1 विक्रय और उत्पादन गुणक
  13.2.2 आय गुणक
  13.2.3 रोजगार गुणक
13.3 सकारात्मक सामाजिक-आर्थिक लाभ
  13.3.1 आर्थिक लाभ
  13.3.2 सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण
  13.3.3 सांस्कृतिक गौरव की पुनर्स्थापना
13.4 नकारात्मक प्रभाव
  13.4.1 संभावित आर्थिक लाभों का ह्रास
  13.4.2 आर्थिक और रोजगार संबंधी विकृतियां
  13.4.3 निवासियों के लिए सुख साधनों की मूल्यवृद्धि और लोप
  13.4.4 उत्पादकता सूचकांक में अस्थिरता
  13.4.5 सांस्कृतिक प्रभाव
13.5 पर्यावरण पर प्रभाव
  13.5.1 जल प्रदूषण
  13.5.2 वायु प्रदूषण
  13.5.3 ध्वनि प्रदूषण
  13.5.4 दृश्य प्रदूषण
  13.5.5 अपशिष्ट निपटारन की समस्या
13.6 निजी अर्थव्यवस्था पर प्रदर्शन प्रभाव
13.7 लागत मुनाफा विश्लेषण
13.8 सारांश
13.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

13.0. उद्देश्य

इस खंड की पिछली इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप निश्चत रूप से योजनाबद्ध पर्यटन के विषय में जान गए होंगे। यह इकाई पर्यटन पर गुणक प्रभाव की धारणा के उपयोग और समाज पर उसके प्रभाव के अध्ययन का प्रयास है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- गुणक प्रभाव की धारणा से परिचित हो सकेंगे,
- किसी क्षेत्र में पर्यटन के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का मूल्यांकन कर सकेंगे,
- अनियोजित पर्यटन के सामाजिक खतरों को स्पष्ट करने योग्य हो जाएंगे, और
- पर्यटन और पर्यावरण के मध्य संयोजन स्थापित कर लेंगे।

13.1 प्रस्तावना

पर्यटन के नकारात्मक प्रभावों के प्रति चिन्ता उचित है। इस क्षेत्र को योजनाबद्ध और नियंत्रित ढंग से विकसित करना चाहिए। किसी भी गंभीर समस्या से बचाव करते समय लाभों का अनुकूलन अनिवार्य है। नए विकसित होते हुए पर्यटन क्षेत्रों के अतिरिक्त वह क्षेत्र जहां पहले से ही काफी हद तक पर्यटन का विकास हो चुका है वहां भी नकारात्मक प्रभावों के प्रकाश में पर्यटन विकास का पुन: मूल्यांकन किया जा रहा है। बहुत से स्थानों पर पर्यावरणीय उद्देश्यों को आधुनिक स्तर पर सुधार कर विकसित करने के लिए सशक्त आंदोलन चलाया जा रहा है। पर्यटन और अन्य क्षेत्रों को संघटित करके विकसित करने के महत्व को मान्यता दी जा रही है क्योंकि वह

उन संसाधनों के निरंतर उपयोग को बनाए रखता है और नष्ट होने से सुरक्षित रखता है। यह इकाई पर्यटन के लाभों को ध्यान में रखते हुए गुणक प्रभाव पर एक परिचर्चा से प्रारंभ होती है। इसके साथ ही यह पर्यावरण के संबंध में पर्यटन के नकारात्मक प्रभावों पर भी प्रकाश डालती है।

13.2 गुणक प्रभाव

गुणक शब्द प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों ही प्रकार के बाह्य साधनों से प्राप्त आय की अर्थव्यवस्था पर सम्पूर्ण प्रभाव को व्यक्त करने के लिए उपयोग में लाया जाता है। पर्यटन के संदर्भ में गुणक प्रभाव यह विधि है जिसमें पर्यटक द्वारा किया गया कुल व्यय अर्थव्यवस्था से बाहर अन्य क्षेत्रों को भी प्रेरित करता है। पर्यटन में सामान्य रूप से गुणक प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पर्यटक व्यय के प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रभावों को सम्मिलित करता है हालांकि इसे रोजगार या अन्य परिवर्ती मामलों में भी प्रयुक्त किया जा सकता है। पर्यटन व्यय पर आधारित गुणक प्रभाव स्थानीय अर्थव्यवस्था के प्रारंभिक खर्च को ध्यान में रखते हुए यह संकेत देता है कि यह व्यय कितनी बार किया है। या वह उन विधियों को स्पष्ट करता है जिनके माध्यम से पर्यटन व्यय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है। इस प्रकार वह स्थानीय आय, रोजगार और अन्य आर्थिक क्षेत्रों पर प्रभाव के प्रसार का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है।

गुणक प्रभाव शब्द वास्तव में सामान्य अर्थशास्त्रीय तकनीक का विशिष्ट उपयोग है। इस तकनीक को 1930 में एक प्रसिद्ध ब्रिटिश अर्थशास्त्री कीन्स ने सबसे पहले विकसित किया। इसे तीन वर्गों में उपविभाजित किया जाता है।

13.2.1 विक्रय और उत्पादक गुणक

यह अनुपात के तौर पर प्रारंभिक व्यय से प्रेरित उत्पादन के कुल विक्रय को आंकता है। इस प्रकार कोई पर्यटन भोजन पर 100 रुपया खर्च करता है वह दूसरी बार किसी बैरे द्वारा पगार से 50 रुपया पोशाक पर खर्च किया जाता है और तीसरी बार में 25 रुपया पोशाक की दुकान के मालिक साप्ताहिक साग सब्जी खरीदने पर खर्च करते हैं। इस प्रकार आरंभ में खर्च किए गए रुपया 100 से 175 रुपए का गुणक प्रभाव पैदा होता है। अर्थात 1.75 का गुणक बनता है। गुणक जितना ही अधिक होगा स्थानीय लोगों को लाभ उतना ही होगा।

13.2.2 आय गुणक

पर्यटकों द्वारा किए गए व्यय और आय में होने वाले बाद के परिवर्तनों के मध्य संबंधों को निम्नलिखित रूप में मापा जा सकता है। यह थोड़ी जटिल प्रक्रिया जरूर है लेकिन इसे निम्न फारमुले से समझा जा सकता है।

$$K = A \times \frac{I}{1 - BC}$$

यहां A = पर्यटक के व्यय का प्रतिशत, वह भाग जो बाहर निकल जाने के बाद क्षेत्र में बचा रहता है,

B = स्थानीय वस्तुओं और सेवाओं पर खर्च की गई निवासियों की, आय का प्रतिशत,

C = निवासी द्वारा किए गए व्यय का प्रतिशत जो स्थानीय आय (बाहर निकल जाने के बाद शेष) के रूप में निर्धारित होता है।

इस प्रकार यदि पर्यटकों के व्यय का 50% प्रथम बार बाहर निकल जाने के बाद बचता है और आय का 60% स्थानीय रूप से खर्च किया जाता है, और 40% स्थानीय आय है तो आय गुणाक होगा:

$$0.5 \times \frac{1}{1 - 0.5 \times 0.4}$$

13.2.3 रोजगार गुणक

यह अतिरिक्त पर्यटन व्यय द्वारा उत्पन्न प्रत्यक्ष और परोक्ष रोजगार तथा केवल प्रत्यक्ष रोजगार का अनुपात है। अत: यदि पर्यटन उद्योग में 100 नई नौकरियां 20 अतिरिक्त नौकरियों के अवसर प्रदान करती है तो गुणक होगा:

$$\frac{120}{100} = 1.2$$

डोनाल्ड ई. लैंडबर्ग ने अपनी पुस्तक "द टूरिस्ट बिजनेस (1985) में गुणक प्रभाव की गणना करने के लिए एक व्यापक सूत्र दिया है जो निम्नवत है: "

$$Tim = \frac{1 - TPI}{MPS + MPI}$$

TIM = टूरिज्म इनकम मल्टिप्लायर (पर्यटन आय गुणक) या वह कारक जिससे इन खर्चों के द्वारा उत्पन्न पर्यटक आय के निर्धारण हेतु पर्यटक व्यय में गुणा करना पड़ेगा।

1 = पर्यटक व्यय

TPI = टूरिस्ट प्रोपेन्सिटी टू इम्पोर्ट (पर्यटक का आयात की ओर झुकाव) या आयातित वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने की प्रवृत्ति जिसके कारण क्षेत्र में आय के अवसर उत्पन्न नहीं होते।

MPS = मारजीनल प्रोपेन्सिटी टू सेव (बचत की न्यूनतम प्रवृत्ति) या निवासियों का पर्यटक आय में से कुछ खर्च न करने कर निर्णय।

MPI = मारजीनल प्रोपेन्सिटी टू इम्पोर्ट (आयात करने की ओर न्युनतम झुकाव) या निवासियों का आयातित वस्तुओं को खरीदने का निर्णय या विदेश में रुपया खर्च करने का निर्णय।

पर्यटन में गुणक का परिमाण अधिकांश इस पर निर्भर होता है आपूर्ति के क्षेत्र कितने अधिक विकसित हैं और वह पर्यटन में कितनी घनिष्टता के साथ जुड़े हुए हैं। जब पर्यटन की प्राथमिकता गतिविधियों में स्थानीय अर्थव्यवस्था से सामान और सेवाएं क्रय करना सम्मिलित होता है तब अधिकतर आयातित सामानों और सेवाओं के उपयोग की परिस्थितियों की अपेक्षा गुणक प्रभाव अधिक होता है। निर्माण उद्योग की अपेक्षा विशेष रूप से पर्यटन में गुणक प्रभाव ऊंचा होता है क्योंकि पर्यटन अधिक श्रम आधारित होता है जो स्थानीय होते हैं और स्थानीय तौर पर ही खर्च करते हैं। और पर्यटन में उत्पादित सामान और सेवाओं का स्थानीय रूप से पर्यटकों द्वारा ही उपयोग कर लिया जाता है। उसे निर्माण उद्योग की तरह निर्यात नहीं किया जाता। चूंकि पर्यटन बहुत से छोटे छोटे व्यापारों को आकर्षित करता है अत: पर्यटक व्यय तीव्रता के साथ और विस्तृत रूप से समाज में पहुंचता है। गुणक प्रभाव किसी छोटे द्वीप की अर्थव्यवस्था के लिए एक से भी कम और बड़ी और बहुत संघठित अर्थव्यवस्था के लिए दो से भी अधिक हो सकता है। गुणक की बहुत सावधानीपूर्वक गणना करनी चाहिए अन्यथा यह भ्रामक परिणाम दे सकता है।

बोध प्रश्न 1

1) गुणक प्रभाव क्या है ?

.....

.....

.....

.....

2) पर्यटन और रोजगार के मध्य संबंध स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

13.3 सकारात्मक सामाजिक-आर्थिक लाभ

पर्यटन सामाजिक आर्थिक परिवर्तन ला सकता है और निश्चित रूप से लाता है और प्राय: इसे जानबूझकर आर्थिक लाभ और उनके द्वारा सामाजिक सुधार उत्पन्न करने के लिए विकसित किया जाता है। अत: इसके विशिष्ट प्रकार के प्रभावों को समझना महत्वपूर्ण है चाहे वह सकारात्मक हो या नकारात्मक जिन्हें पर्यटन में पैदा करता है। सामाजिक -सांस्कृतिक एवं आर्थिक प्रभावों का उनके घनिष्ट संबंध के कारण एक साथ

मूल्यांकन किया जा रहा है।

हाल ही के कुछ वर्षों में पर्यटन के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों ने इस क्षेत्र को विवादास्पद बना दिया है विशेषकर पर्यटन का विकास जिन क्षेत्रों में बहुत तेजी से और अनियोजित और अनियंत्रित ढंग से हुआ है। इसका सामाजिक-सांस्कृतिक और पर्यावरणीय प्रभाव प्रतिकूल रूप में सामने आया है। आइए, प्रारंभ करते समय पर्यटन द्वारा समाज में लाए जा रहे कुछ सकारात्मक प्रभावों पर विचार करें।

13.3.1 आर्थिक लाभ

प्रत्यक्ष आर्थिक लाभों में रोजगार, आय और (अन्तरराष्ट्रीय पर्यटन के लिए) विदेशी मुद्रा की व्यवस्था सम्मिलित है जो स्थानीय समुदाय को बेहतर जीवन स्तर की ओर ले जाता है और सम्पूर्ण राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय आर्थिक विकास की ओर मार्ग दर्शन करता है। पिछड़े हुए क्षेत्रों में पर्यटन द्वारा दिए गए रोजगार विशेष रूप से नवयुवकों को प्रदत्त रोजगार इन क्षेत्रों से होने वाले प्रवसन को रोकने में मदद कर सकता है। पर्यटन पर लगाए गए विभिन्न प्रकार के करों से प्राप्त बढ़े हुए राजस्व का समुदाय को विकसित करने और सामान्य आर्थिक विकास में सहायता देने के लिए ढांचागत सुविधाओं और सेवाओं को उपलब्ध कराने में उपयोग भी प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ है। ये प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष आर्थिक लाभ पर्यटन के गुणक प्रभाव का प्राय: प्राथमिक सकारात्मक प्रभाव है।

पर्यटन का अप्रत्यक्ष आर्थिक लाभ यह होता है कि अन्य आर्थिक क्षेत्रों जैसे कृषि, मत्स्यन, निर्माण और कुछ प्रकार के विनिर्माण तथा हस्तशिल्प के सामानों और सेवाओं की पर्यटन के लिए की गई आपूर्ति आर्थिक क्षेत्र के विकास एवं विस्तार के लिए वह उत्प्रेरक का कार्य करती है। एक और अन्य अप्रत्यक्ष सामाजिक-आर्थिक लाभ परिवहन और ढांचागत सुविधा और पर्यटन की सेवाओं में होने वाला सुधार है जो सामान्य राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और सामुदायिक आवश्यकताओं को भी पूरा करता है। हालांकि यह स्थानीय आर्थिक और सांस्कृतिक विकास नीति पर बहुत अधिक आश्रित है फिर भी मेजबान देश या क्षेत्र को चाहिए कि वह पर्यटन को तकनीकी एवं प्रबंधकीय कौशल के व्यापार में अपनी जनसंख्या के एक बड़े भाग के लिए लाभकर समझें जिसमें से कुछ को ऐसे अन्य क्षेत्रों में स्थानांतरित किया जा सकता है जो लोगों को नियमित नौकरी करने और मनचाहे काम करने की आदत डालने को प्रोत्साहित करते हैं। वृहत पारम्परिक समाज में पर्यटन प्रशिक्षण और रोजगार द्वारा महिलाओं के लिए रोजगार का अवसर भी प्रदान करता है।

13.3.2 सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण

पर्यटन किसी क्षेत्र के सांस्कृतिक विरासत के महत्वपूर्ण तत्वों के संरक्षण के लिए एक प्रमुख प्रेरणा हो सकता है क्योंकि पर्यटन उनके संरक्षण को आंशिक अथवा सम्पूर्ण रूप से पर्यटन आकर्षण के तौर पर न्याय संगत बना सकता है। दूसरे शब्दों में पर्यटन की सहायता से सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण कई प्रकार से आर्थिक प्रेरणा प्राप्त कर सकता है जो निम्नवत हैं:

1) पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक स्थलों और पर्यटकों के आकर्षण के तौर पर जिसे टूट फूट या लुप्त हो जाने के लिए छोड़ दिया गया हो और परिणामस्वरूप क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत के नष्ट हो जाने का भय हो उसके संरक्षण के लिए पर्यटन प्रेरणा का स्रोत है और धन उपलब्ध कराता है। दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया में अधिकतर जो पुरातात्विक और ऐतिहासिक संरक्षण कार्य किया जा रहा है उसे ऐसे कम आय वाले देशों में भी आर्थिक दृष्टि से उचित ठहराया जा सकता है क्योंकि ये ऐतिहासिक स्थल पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र होते हैं। कुछ मामलों में जैसे श्रीलंका में पर्यटकों द्वारा अदा किया गया प्रवेश शुल्क प्रत्यक्ष रूप से पुरातात्विक अनुसंधान और संरक्षण पर व्यय किया जाता है।

2) पारम्परिक कला, दस्तकारी, नृत्य, संगीत, नाटक प्रथाओं और समारोहों और पारम्परिक जीवन शैली के कई पहलुओं का संरक्षण और पुनर्जीवन प्रत्यक्ष रूप से पर्यटन में योगदान होता है।

3) महत्वपूर्ण प्राकृतिक क्षेत्रों के संरक्षण को भी बल मिलता है। पर्यटन के बिना वह प्राकृतिक क्षेत्र या तो अन्य उपयोगों के लिए विकसित किया जा सकता है या पारिस्थितिकीय दृष्टि से बरबाद हो सकता है और परिणामस्वरूप पर्यावरणीय विरासत नष्ट हो सकती है। यह कारक विशेष कर सीमित साधनों वाले देशों के प्राकृतिक संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण लाभ दे सकता है। उदाहरणार्थ समुद्री संरक्षण पर विशेष रूप से कुछ जगहों पर प्रवाल भित्तियों के क्षेत्र में वहां के पर्यटन आकर्षण के कारण बहुत ध्यान दिया जा रहा है।

4) अजायबघरों, रंगशालाओं और विशेष सांस्कृतिक उत्सवों तथा कार्यक्रमों के पर्यटकों और निवासियों के लिए महत्वपूर्ण आकर्षण के कारण उनके आयोजन के लिए वित्तीय सहायता की व्यवस्था। विश्व के कुछ

प्रमुख संग्रहालयों में पर्यटकों द्वारा दिया गया प्रवेश शुल्क उन संस्थाओं के रखरखाव के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध कराता है इसी प्रकार महत्वपूर्ण शहरी रंगशालाओं में खरीदे गए टिकट उनके रख रखाव और अन्य सुविधाओं की प्राप्ति और संभालने में सहयोग देते हैं।

13.3.3 सांस्कृतिक गौरव की पुनर्स्थापना

क्षेत्र के निवासियों में अपनी संस्कृति के प्रति गौरव के अनुभव को सुदृढ़ किया जा सकता है या जब वह देखें कि वह पर्यटकों द्वारा पसन्द किया जा रहा है तो उसे नवीकृत किया जा सकता है। इस प्रकार एक सांस्कृतिक जागरूकता पैदा होती है। बहु-सांस्कृतिक देशों में क्षेत्रीय पर्यटन अल्पसंख्यक सांस्कृतिक वर्ग की सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने में सहयोग दे सकता है अन्यथा वह राष्ट्र की मुख्य संस्कृति में विलय हो सकती है। क्षेत्रीय या स्थानीय सस्कृति आधुनिक समाज में बहुत महत्व रखती है जहां आर्थिक दबाव ने स्थानीय संस्कृतियों के विकास को नापसंद किया है और रोका है।

बोध प्रश्न 2

1) पर्यटन के गुणक प्रभाव के प्रमुख सकारात्मक परिणामों में उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) इसके सकारात्मक आर्थिक लाभ की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

13.4 नकारात्मक प्रभाव

यदि ठीक से नियोजित और नियंत्रित न किया जाए तो पर्यटन नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न कर सकता है या स्थानीय अर्थव्यवस्था पर गुणक प्रभाव की व्यवहार्यता को कम कर सकता है। आइए, इनमें से कुछ को संक्षिप्त रूप में देखें।

13.4.1 संभावित आर्थिक लाभों का ह्रास

पर्यटन पूंजी पर आधारित एक उद्योग है और उस स्तर पर किसी प्रकार की स्थानीय भागीदारी संभव नहीं है। अत: तात्कालिक पर्यटक सुविधाओं जैसे हवाई अड्डे, विभागीय सड़कें, सेतु, गंदे जल की निकासी और विद्युत के लिए आवश्यक अधिकांश संसाधन या तो सरकार द्वारा उपलब्ध कराए जाते हैं या निजी उद्यमों द्वारा। बाहर की दुनिया से अनजान स्थानीय निवासियों ने अचानक स्वयं को बड़े पैमाने पर विदेशी आगंतुकों के मध्य और ऐसे परिवर्तनों में घिरा हुआ पाया जिसमें उनका कोई हस्तक्षेप नहीं है।

यदि अधिकांश पर्यटन सुविधाओं का स्वामित्व और प्रबंधन बाहरी लोगों का हो तो स्थानीय क्षेत्रों को आर्थिक हानि पहुंच सकती है और स्थानीय लोगों में रोष पैदा हो सकता है। यदि अधिकांश पर्यटन सुविधाएं और सेवाएं केवल कुछ ही स्थानीय लोगों या परिवारों की मिल्कियत हों और परिणामस्वरूप अधिकतर समुदाय अल्पतम लाभ ही प्राप्त करें या फिर लाभ से बिलकुल ही वंचित रह जाएं तो स्थानीय विशिष्ट वर्ग भी पैदा हो सकता है। यदि स्थानीय पूंजी बहुत सीमित हो तो विकास के प्रारंभिक चरणों में बाहरी स्वामित्व के ज्यादा विकल्प नहीं होते। यदि पर्यटन में आयातित सामान और सेवाएं उपयोग की गई तो संभावित विदेशी मुद्रा की आय में कमी आ सकती है।

13.4.2 आर्थिक और रोजगार संबंधी विकृतियां

यदि क्षेत्र, देश अथवा देश के कुछ भागों में पर्यटन विकसित किया जाए और अन्य स्थानों को छोड़ दिया जाए तो भौगोलिक दृष्टि से आर्थिक विकृतियां पैदा हो सकती हैं। इस स्थिति के कारण अल्पविकसित क्षेत्रों के लोगों में रोष फैल सकता है। यहां तक कि पर्यटन उद्योग वाले क्षेत्रों में बेरोजगारों या कम आय वाले नौकरी पेशा लोगों में अपेक्षाकृत अधिक पैसा कमाने वालों के प्रति रोष हो सकता है। यदि पर्यटन अपने अधिक वेतन और शायद अधिक वांछनीय कार्य की शर्तों के कारण अन्य आर्थिक क्षेत्रों में कर्मचारियों को आकर्षित करता है तो रोजगार में विकृति पैदा हो सकती है। यदि पर्यटन में प्रवाही कर्मचारी कार्य के लिए नियुक्त किए जाएं और उनकी आवश्यकता समाप्त हो जाने पर भी वे वहीं ठहरे रहें तो निवासियों में रोष पैदा हो सकता है। यह संभावित आर्थिक लाभों को घाटे की ओर ले जा सकता है। यदि पर्यटन में स्थानीय वेतनमान की अपेक्षा अधिक वेतन पर प्रवासियों को प्रबंधकों और तकनीकी कर्मचारियों के पद पर नियुक्त किया गया तो संभावित आर्थिक लाभ के घाटे के अतिरिक्त स्थानीय कम कुशल कार्यकर्ताओं में भी रोष उत्पन्न होगा।

यह देखते हुए कि पर्यटन उद्योग मौसमी है यह अनिवार्य रूप से कम रोजगार या बेरोजगारी तथा सामाजिक अशांति के रूप में प्रकट होगा। होटल उद्योग में रोजगार का अपना अलग प्रतिरूप है। होटल उद्योग की स्वयं अपनी गणना के अनुसार होटल का प्रत्येक कमरा, जो लगभग 3.5 लाख रुपए औसत अनुमानित लागत से बनता है, तीन व्यक्तियों को प्रत्यक्ष और छः अतिरिक्त लोगों को अप्रत्यक्ष रोजगार उपलब्ध कराता है। यदि हम दोनों वर्गों को साथ-साथ रखकर गणना करें तो प्रत्येक नौकरी पर 30,000 रुपए का खर्च आएगा जबकि छोटे पैमाने के औद्योगिक क्षेत्र में इसकी तुलना में अनुमानित 12,000 रुपए की ही लागत आती है। इसलिए वर्तमान पर्यटन विकास देश के संसाधनों को कमजोर आर्थिक क्षेत्रों से पर्यटन क्षेत्र की ओर स्थानांतरित करता है और लोगों को उनके पारम्परिक पेशों से विस्थापित भी करता है।

जैसा कि गोवा और उड़ीसा के प्रारूप से विदित है कि पर्यटन में हो रहे विकास के कारण रोजगार में वृद्धि के स्थान पर उसके अवसरों में बहुत कमी आई है। हाल ही में किए गए कुछ अनुसंधानों से यह पता चला है कि गोवा में लगभग मत्स्यन उद्योग ने मत्स्यन जीविका पर निर्भर 75% लोगों को नई जीविका की तलाश में शहर जाने पर मजबूर कर दिया है।

पर्यटन उद्योग जो सुख साधनों पर आधारित है सारी दुनिया में बाहरी लोगों द्वारा नियंत्रित है और इसमें स्थानीय लोगों की उपेक्षा हुई है। चूंकि सैरगाहों पर आधारित पर्यटन को खेलों, गोल्फ कोर्स, कार पार्किंग और बागों के लिए बड़े इलाकों की आवश्यकता होती है और ये इलाके बाहरी लोगों द्वारा ऊंचे दामों पर खरीद लिये जाते हैं। गोवा में जब स्थानीय लोग अपनी जमीने बेचने पर तैयार नहीं थे तो सरकार ने उसे पर्यटन के विकास के लिए प्राप्त कर लिया। यहां एक और समस्या यह है कि अक्सर बाहरी लोग स्थानीय पारिस्थितिकी, पर्यावरण और समुदाय की भावनाओं के प्रति संवेदनशील नहीं होते हैं।

13.4.3 निवासियों के लिए सुख साधनों की मूल्यवृद्धि और लोप

किसी भी क्षेत्र में पर्यटन की शुरुआत का एक और प्रत्यक्ष परिणाम महंगाई है। विदेशी पर्यटक बहुत खुशी से वस्तुओं का ज्यादा मूल्य चुकाते हैं क्योंकि ये चीजें उनके अपने देश की अपेक्षा सस्ती होती है। इस कारण से गोवा में अल्फान्सो आम, काजू और कई प्रकार की मछलियां आम गोवा वासियों के पहुंच से बाहर हो गई है। ऊंची कीमतें शहर भर में पाई जाती है और स्थिर हो जाती है। इसी प्रकार यदि सुख साधन के लक्षणों, दुकानों और समुदायों की भरमार हो और पर्यटकों की परिवहन तंत्र में भीड़ हो तो स्थानीय लोग उन्हें आसानी से उपयोग में नहीं ला पाते और पर्यटन के प्रति रोष पूर्ण हो सकते है। शिमला और नैनीताल इसी प्रकार के सैरगाहों के उदाहरण हैं। पर्यटकों के मौसम में कीमतें आसमान को छूने लगती हैं, पार्किंग के स्थान में भीड़ हो जाती है और जल की भी बहुत कमी हो जाती है।

यदि स्थानीय विशेषताएं जैसे समुद्र के रेतीले तट स्थानीय लोगों के लिए बन्द कर दिए जाएं और केवल पर्यटकों के उपयोग के लिए ही उन्हें सुरक्षित रखा जाए तो वह अपने सुख साधन गंवा देंगे और पर्यटन के विरुद्धी हो सकते हैं। यह स्थिति और बिगड़ सकती है अगर निवासियों और पर्यटकों के बीच भौतिक रूकावटें जैसे बाड़ लगा दी जाए। इसी तरह बिजली, सड़क और जल की आपूर्ति के समान ही अधिसंरचनात्मक सुविधाएं भी विदेशियों और स्थानीय विशिष्ट लोगों की आवश्यकताओं के अनुसार ही बनाई जाएं और सामान्य स्थानीय लोगों को उनसे कोई लाभ न मिले तो भी नतीजा वही निकलेगा। उदाहरणार्थ वायु सेवा पर्यटकों को खजुराहो प्रतिदिन लाती है जबकि ग्रामीणों को लकड़ी या जल लाने के लिए लम्बी दूरी पैदल तय करनी पड़ती है। पर्यटकों को

सुख साधन वाले होटलों में सारी सुविधाएं उपलब्ध हैं जबकि गांव के लोगों को जल की आपूर्ति और विद्युत भी उपलब्ध नहीं है।

गोवा में चूंकि होटलों के गहरे कुंओं से तरणताल और हरे भरे घास के सुंदर मैदानों के लिए पम्प द्वारा जल निरंतर निकाला जाता है अत: पानी की सतह इतनी नीची हो गई है कि वह गांव वालों की पहुंच से बाहर हो गया है। इसके साथ ही होटलों को जल की आपूर्ति और टंकियों में पानी सुनिश्चित कर दिया जाता है। होटलों के जल और विद्युत के भुगवान पर 50% की छूट दी जाती है। पानी के अभाव में सारे पर्यटक शहरों चाहे वह पंणजी हो या ऊटी के लिए पानी के वितरण पर नियंत्रण है किंतु इन होटलों के लिए कोई प्रतिबंध नहीं है। इसके अतिरिक्त बड़े होटल स्थानीय लोगों के छोटे-छोटे प्रतिष्ठानों को अपनी परियोजनाओं के निकट पनपने नहीं देते। कम से कम एक मामले में एक होटल ने अपने क्षेत्र में प्रतिस्पर्द्धा से बचने के लिए विद्युतीकरण नहीं होने दिया। इस तरह पर्यटन सुविधाएं और सुख साधन उपलब्ध कराने के बजाए कभी कभी ऐसी सुविधाओं के विकास का विरोध भी कर सकता है।

13.4.4 उत्पादकता सूचकांक में अस्थिरता

पर्यटन मौसमी है और जलवायु के परिवर्तन, अन्तर्राष्ट्रीय और स्वदेशी स्थितियों और विश्व की अर्थव्यवस्था पर निर्भर है। अत: उद्योग का उत्पादकता सूचकांक कुल मिलाकर विशेषतय: निवेशकों के लिए सामान्य रूप से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए असमय में कम हो जाता है।

पर्यटन के उत्पाद 'नाशवान' सेवाएं हैं जिन्हें भविष्य में विक्रय के लिए बचाया नहीं जा सकता है। यदि किसी कमरे के लिए कोई पर्यटक नहीं है तो वह उस दिन की हानि होती है। बहुत से सहायक उद्योगों की गतिविधियां, जो पर्यटन की आवश्यकताओं की आपूर्ति जैसे मछली की आपूर्ति करते हैं कम करा देनी पड़ेंगी। सूरत में महामारी या कुछ क्षेत्रों में आतंकवाद में वृद्धि के बाद के प्रभाव सम्पूर्ण भारत में पर्यटन उद्योग पर देखे जा सकते हैं। सहायक सेवाएं देने वालों या जिनकी आय पर्यटन से जुड़ी हुई है उनकी दुदर्शा का समझा जा सकता है। इन परिस्थितियों में गरीब आदमी ही सबसे दुखी रहता है।

13.4.5 सांस्कृतिक प्रभाव

यदि पर्यटकों की आवश्यकताओं के अनुरूप पारम्परिक कला एवं कौशल तथा प्रथाओं और उत्सवों को संशोधित किया गया तो अत्यधिक व्यापारीकरण और इन पारम्परिक कलाओं आदि का ह्रास हो सकता है। उदाहरणार्थ महत्वपूर्ण पारम्परिक नृत्य और कलाकृति प्रदर्शन जिनमें से कुछ धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण थे पर्यटकों की पसंद और उनके कार्यक्रम के अनुसार बहुत छोटे कर दिए गए। इसी प्रकार उच्च कोटि की पारम्परिक दस्तकारी को पर्यटकों को निशानी के तौर पर भेंट करने के लिए बड़े पैमाने पर उत्पादित किया गया। ऐसी परिस्थिति प्राय: सांस्कृतिक दलालों या पर्यटन संचालकों अथवा हस्तशिल्प संस्थापकों, जिन्हें सांस्कृतिक शुद्धता या प्रामाणिकता की कोई चिन्ता नहीं होती, की असंवेदनशीलता के कारण हो सकती है। कई मामलों में समृद्ध पर्यटक के सांस्कृतिक प्रारूप द्वारा हड़प लिए जाने के कारण सांस्कृतिक चरित्र, आत्म सम्मान और सम्पूर्ण सामाजिक पहचान का ह्रास हो सकता है। सांस्कृतिक प्रतीकों और पुरातात्विक वस्तुओं का विनाश अक्सर पर्यटकों के द्वारा अनियंत्रित उपयोगों और दुरूपयोगों के कारण होता है।

13.5 पर्यावरण पर प्रभाव

पर्यटन से लाभ प्राप्त करने वाल जब संरक्षण में निवेश किये बिना प्रकृति को शोषित करने का प्रयास करते हैं तो पर्यटन के कारण विभिन्न प्रकार के नकारात्मक और अवांछनीय पर्यावरणीय परिणाम पैदा होते हैं। इनमें सारे नकारात्क प्रभाव एक ही क्षेत्र में पैदा नहीं होंगे क्योंकि प्रभाव की किस्म विकसित पर्यटन क्षेत्र के विशेष अभिलक्षणों पर निर्भर करती है। पर्यावरण की वहन क्षमता पर्यटन विकास के पैमाने की अपेक्षा पर्यावरण के प्रभाव के विस्तार को बहुत अधिक प्रभावित करती है।

13.5.1 जल प्रदूषण

यदि होटलों, सैरगाहों और अन्य पर्यटक सुविधाओं के लिए उचित मल जल निपटारे की व्यवस्था नहीं की गई

तो मल जल से भूमि जल का प्रदूषण हो सकता है, या यदि मल जल की निकासी निकटवर्ती नदी, झील या तटीय समुद्री जल में कर दी गई तो प्रवाहित गंदगी उस जल क्षेत्र को दूषित कर देगी। यह हालत समुद्री तट की सैरगाहों में सामान्य है जहां होटलों ने निकटवर्ती जल क्षेत्र में जिसे पर्यटक तैराकी या निवासी मछली के शिकार के लिए उपयोग कर सकते हैं दूषित जल की निकासी कर दी है। मनोरंजनात्मक और पर्यटक परिवहन, मोटर नौकाएं, नदियों, झीलों और समुद्री जल में तेल और गैस छलकाकार और जल में गंदा पानी निकाल कर प्रदूषण का कारण बनते हैं। घिरे हुए बन्दरगाह में और ऐसे क्षेत्रों में जहां प्राकृतिक जल बहुत ठहरा हुआ या धीमा है यह समस्या बहुत विकट है।

13.5.2 वायु प्रदूषण

पर्यटन को आम तौर से धुआं रहित उद्योग समझा जाता है किंतु यह भी निश्चित क्षेत्र में पर्यटकों की गाड़ियों द्वारा वायु प्रदूषण का कारण बन सकता है, विशेष रूप से उन प्रमुख आकर्षण स्थलों पर जो केवल सड़क मार्ग पर स्थित है। यह गाड़ियों से निकलते धुंए के कारण है। यदि पर्यटन विकास की योजना ठीक से बनाकर विकसित न की गई हो, भूदृश्य का ध्यान न रखा गया हो और अन्तरिक निर्माण की अवस्था पर विचार न किया गया हो तो खुले उजाड़ क्षेत्रों में धूल और मिट्टी के रूप में भी प्रदूषण पैदा हो सकता है।

13.5.3 ध्वनि प्रदूषण

पर्यटक गाड़ियों से होने वाला शोर और कुछ अन्य पर्यटक आकर्षण जैसे मनोरंजन या कार/मोटर साइकिल दौड़ मार्ग का शोर निकटवर्ती लोगों और पर्यटकों के लिए कष्टकर और उत्तेजना के स्तर तक पहुंच सकता है। ऐसी ऊंची ध्वनि कभी-कभी वनों के क्षतिग्रस्त होने ओर मनोवैज्ञानिक तनाव का कारण भी बन सकती है।

13.5.4 दृश्य प्रदूषण

यह बहुत से कारणों से हो सकता है। यह ऐसे अस्वस्थ अभिकल्पिक होटलों और अन्य भवन सुविधाओं के कारण होता है जो स्थानीय स्थापत्य शैली के अनुरूप या प्राकृतिक पर्यावरण में अच्छी तरह संघटित न हो। भवनों की खराब देख रेख, भूदृश्य का खराब निमार्ण और विकासीय उपयोग के बड़े और भद्दे सूचनापट्ट द्वारा मनोरम दृश्यों के अवलोकन में बाधा अन्य कारण हो सकते हैं। भू दृश्यों में कूड़ा कचरा डालना भी दृश्य प्रदूषण का कारण बनता है।

13.5.5 अपशिष्ट निपटारन की समस्या

पर्यटन की सबसे सामान्य समस्या भूदृश्य पर मलबे और कूड़े कचरे का डाला जाना है। लोगों की अधिक संख्या द्वारा इस क्षेत्र का उपयोग पिकनिक के लिए किए जाने के लिए कारण ऐसा होता है। होटल, रेस्तरां और सैरगाहों से उत्पन्न ठोस अपशिष्ट के अनुचित निपटारन से गंदगी और स्वास्थ्य समस्याओं के अतिरिक्त रोग और प्रदूषण पैदा होते हैं।

13.6 निजी अर्थव्यवस्था पर प्रदर्शन प्रभाव

जब विकासशील देशों के लोग उत्कृष्ट सामान और अधिक मनमाने विक्रय प्रारूप के सम्पर्क में आते हैं तो वे प्रतियोगिता में पड़ जाते हैं। यह तनाव, अशान्ति और बढ़े हुए व्यय की ओर ले जाता है। इसे प्रदर्शन प्रभाव कहते है। अमरीकी व्यय प्रारूप की बड़े पैमाने पर फैली हुई नकल बचत और निवेश के स्थान पर प्रत्यक्ष रूप से बढ़े हुए या स्पष्ट व्यय की ओर भी ले जाती है। तीसरी दुनिया के अन्य देशों समान भारत में प्रारूप निर्धारित है और सुख साधन वाले होटलों द्वारा निश्चित किया जाता है जो अधिक व्यय के क्षेत्र हैं। सीमित पूंजी का दुरुपयोग उत्कृष्ट या आयातित सामानों को क्रय करने में किया जाता है।

13.7 लागत मुनाफा विश्लेषण

पर्यटन के गुणक प्रभाव का लागत मुनाफा विश्लेषण सामान्यत: वृहत राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर संचालित

किया जा सकता है। लागत मुनाफा विश्लेषण वह तकनीक है जिसे विदेशी मुद्रा, रोजगार, आय ओर विकास पर हुए व्यय से संबंधित राजस्व की भाषा में आर्थिक क्षेत्र द्वारा दिए गए लाभ की सीमा ज्ञात करने के लिए उपयोग किया जाता है। सापेक्ष लागतों और लाभों एवं विभिन्न क्षेत्रों में निवेश संसाधनों के अत्यंत उत्पादी फायदों में तुलना आवश्य है। परिणाम निर्धारित योग्यता कम होने पर भी पर्यटन के आर्थिक लाभों में अन्य आर्थिक क्षेत्रों पर उत्प्रेरक प्रभाव और समग्र प्रेरणा जो पर्यटन आर्थिक एवं मानयवी संसाधन विकास के लिए प्रस्तुत करता है सम्मिलित होना चाहिए। उस व्यय में जिसकी गणना की जानी है पर्यटन के लिए आवश्यक मूलभूत अधिसंरचनात्मक सुविधाएं, परिवहन तंत्र एवं उपकरण, हर प्रकार के आवास, रेस्तरां, सांस्कृतिक संस्थाओं (संग्रहालयों) को विकसित करने और उनके रख रखाव में एक संतुलित साझेदारी, प्रदर्शनी और सम्मेलन केंद्र, आकर्षणों का विकास, पर्यटकों के अनुकूल फुटकर उद्यम और अन्य प्रकार की पर्यटकों के लिए सुविधाएं सम्मिलित होनी चाहिए। सार्वजनिक सेवाओं पर पर्यटन द्वारा लगाए गए अतिरिक्त व्यय जैसे स्वास्थ्य सुविधाएं और सेवाएं और किसी प्रवाही रोजगार पर हुए सार्वजनिक सेवा व्यय पर ही ध्यान देना चाहिए।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है किसी क्षेत्र के पर्यटन के व्यय और लाभ का कुल मिलाकर मूल्यांकन करने के लिए आर्थिक व्यय और लाभों को सामाजिक-सांस्कृतिक और पर्यावरणीय व्यय और लाभ के साथ जोड़ देना चाहिए। ऐसा भी हो सकता है कि जो पर्यटन सर्वाधिक लाभ देता है वही गंभीर पर्यावरणीय या सामाजिक व्यय के रूप में सामने आता है और इसीलिए उसे उचित नहीं ठहराया जा सकता। दूसरी ओर पर्यटन योजना (और उसका गुणक प्रभाव) जो आर्थिक पर्यावरणीय और सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों को संतुलित करती है वह नकारात्मक प्रभाव को कम करने में पूर्णतया सक्षम है।

बोध प्रश्न 3

1) प्रदर्शन प्रभाव से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

.....

2) पर्यावरण और पर्यटन के मध्य संबंधों को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

13.8 सारांश

पर्यटन उद्योग केवल आर्थिक लाभों से ही सम्बद्ध नहीं है। यह मेजबान देश या क्षेत्र के सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष को भी प्रभावित करता है और हमेशा फायदा पहुंचाने वाला ही नहीं होता है। जैसा कि हम विश्लेषण कर चुके है कि पर्यटन का सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव एक जटिल मामला है और उसमें सकारात्मक और नकारात्मक तत्व दोनों सम्मिलित हैं। जहां पर्यटन विकास की गति तीव्र रही हो और विकास अनियोजित एवं अनियंत्रित रहा हो विशेष रूप से वहां हानिकारक सामाजिक-सांस्कृतिक तथा पर्यावरणीय प्रभाव पड़ता है। अत: संरक्षण के लिए पर्याप्त निवेश सहित बेहतर योजना को मात्र आर्थिक लाभ पर वरीयता देनी चाहिए।

13.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आपके उत्तर में वह साधन भी वर्णित होने चाहिएं जिनसे पर्यटकों के द्वारा किए गए खर्चे अर्थव्यवस्था

में से होकर निकलते हैं और ऐसा करने में अन्य क्षेत्रों को भी प्रेरित कर देते हैं। देखिए उपभाग 13.2.1

2) पर्यटन सेवा पर आधारित उद्योग है। उसे अपने आप को बनाए रखने के लिए बड़े पैमाने पर मानव शक्ति की आवश्यकता होती है। यह मानव शक्ति पर्यटन संचालकों, बैरों, मोटर चालकों आदि के रूप में पर्यटन उद्योग का कार्य करती है जिनके कारण रोजगार उत्पन्न होता है। देखिए उपभाग 13.2.3।

बोध प्रश्न 2

1) आपके उत्तर में आर्थिक लाभों सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण और सांस्कृतिक गौरव के नवीकरण का उल्लेख होना चाहिए। देखिए भाग 13.3

2) प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ में रोजगार की व्यवस्था, आय और (अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन के लिए) विदेशी मुद्रा विनिमय जिन्होंने स्थानीय समुदायों और समस्त राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय आर्थिक विकास का सुधारे हुए जीवन स्तर की ओर मार्ग दर्शन किया उन्हें भी सम्मिलित होना चाहिए।

बोध प्रश्न 3

1) जब विकासशील देशों में लोग उत्कृष्ट सामानों और अधिक फिजुलखर्ची के प्रारूप के सम्पर्क में आते हैं तो वे होड़ में पड़ने के लिए प्रेरित हो जाते हैं। यह प्रदर्शन प्रभाव है। देखिए उपभाग 13.6.1

2) देखिए भाग 13.5

कुछ उपयोगी पुस्तकें

आर. कारसन : **'द सी अराउंड अस'**, न्यूयार्क, 1951

आर. कारसन : **साइलेंट स्प्रिंग,** न्यूयार्क, 1962

आर. मैश : **द राइट्स ऑफ नेचर,** मैडिसन, 1989

माधव गाडगिल एवं राम चंद्र गुहा : **दिस फिशर्ड लैंड, ऐन इकोलॉजिकल हिस्ट्र ऑफ इंडिया**, दिल्ली, 1992

विद्यानिवास मिश्र (सम्पादन) : **क्रीएटिवटी एंड एन्वायरमेंट**. साहित्य अकादमी नई दिल्ली. 1992

वर्नेस वलफेंस (सम्पादन) : **ऐसपेक्ट्स ऑफ इकोलॉजिकल प्रॉब्लम्स एंड एन्वायरमेंटल अवेयरनेस इन साउथ एशिया**, नई दिल्ली, 1993

इस खंड के लिए अभ्यास

अभ्यास 1

समुदाय की रचना के विषय में आपका जो ज्ञान है उसके अधार पर अपने क्षेत्र के कुछ स्थानीय समुदायों की पहचान कीजिए।

अभ्यास 2

इन समुदायों के सामाजिक जीवन और सांस्कृतिक कार्यों पर ध्यान दीजिए और उनके प्रमुख उत्सवों और आर्थिक क्रियाओं पर टिप्पणी लिखिए।

अभ्यास 3

कुछ पर्यटन योजना बनाने वाले आपके शहर में आए हुए हैं। वे योजना बनाने में आपका सहयोग चाहते हैं। वह आपसे यह जानना चाहेंगे कि किस विशिष्ट प्रकार का पर्यटन आपके क्षेत्र के अनुकूल होगा। अपने विचार और सलाह देते हुए उनके लिए एक प्रारूप तैयार कीजिए।

अभ्यास 4

आप अपने नगर में भौतिक अधिसंरचनात्मक सुविधा के उपयुक्त विकास के लिए योजना बनाइए ताकि उसे टिकाऊ पर्यटन के लिए व्यवहार्यतापूर्ण बनाया जा सके।

अभ्यास 5

आपका एक यूरोपीय मित्र आपके नगर में पर्यटक के रूप में आना चाहता है। उसने आपको निम्न जानकारी और सलाह के लिए लिखा है:

- वर्ष का कौन सा समय उनके लिए आपके नगर की यात्रा करने के लिए सबसे उपयुक्त होगा?
- अपने घर लंदन से वह किस प्रकार आपके नगर तक पहुंच सकता है? खर्च, आराम और समय को ध्यान में रखते हुए परिवहन के विभिन्न साधनों के विषय में बताइए।
- वह कौन-कौन सी वस्तुएं अपने साथ लाएं?
- आपका मित्र पारिस्थितिक पर्यटन में रुचि रखता है किंतु उसके विषय में कुछ अधिक जानकारी नहीं है। इस बात पर ध्यान देते हुए आप किस प्रकार मार्ग वितरण और कार्यक्रम तैयार करना चाहेंगे?

अपने मित्र को उसकी मांगी हुई जानकारी देते हुए और उसे अपने शहर में आमंत्रित करते हुए एक पत्र लिखिए।

अभ्यास 6

आपका एक मित्र आपके नगर में आया है। वह अपने साथ रु. 10,000 लाया है, जिसे वह विभिन्न गतिविधियों जैसे आवास, आहार, यात्रा, और क्रय विक्रय में खर्च करना चाहता है। उसके खर्च का एक अनुमानित लेखा जोखा तैयार कीजिए जिसमें उसके द्वारा आपके नगर में विक्रय और उत्पादन गुणक प्रभाव का अपने नगर की अर्थव्यस्था पर प्रभाव का मूल्यांकन कीजिए।



खंड

5

पर्यटन : संरक्षण के साधन के रूप में

इकाई 14
व्यवहार और संभावना

इकाई 15
पर्यटन स्थल और स्थलीय योजना

इकाई 16
असमान क्षेत्रीय/राष्ट्रीय योजना

इकाई 17
विकल्प

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

इस खंड के लिए अभ्यास

परिशिष्ट

विशेषज्ञ समिति

श्री अजय माहुरकर
इतिहास संकाय
इग्नो

श्री अशोक चंदोला
टूरिज्म कंसलटेंट
नई दिल्ली

श्री आशिष कु. सिंह
मैनेजिंग डायरेक्टर
केरल टूरिज्म डेवलेपमेंट
कारपोरेशन
त्रिवेंद्रम

डॉ. गीता केकर
विज्ञान विद्यापीठ
इग्नो

डॉ. इकबाल मलिक
निदेशक, वातावरण
नई दिल्ली

श्री जहांगीर घड़ियाली
जनरल मैनेजर
वेलकम ग्रुप होटल
औरंगाबाद

डॉ. जसवंत सोखी
विज्ञान संकाय
इग्नो

प्रो. कपिल कुमार
निदेशक
सेंटर फॉर एक्सटेंशन
एजुकेशन, इग्नो

श्री के.टी. सुरेश
कोआर्डिनेटर, इक्वेशन
बैंगलोर

सुश्री लतिका नाथ
वर्ल्ड लाइफ फाउंडेशन
देहरादून

डा. नीना राव
हेड डिपार्टमेंट ऑफ
टूरिज्म, कॉलेज ऑफ
वोकेशनल स्टडीज नई दिल्ली

श्री प्रदीप सांखला
मैनेजिंग डायरेक्टर
डायनेमिक्स टूर एंड
ट्रैवेल्स प्राइवेट लिमिटेड
नई दिल्ली

श्री पी. राज
डायरेक्टर
क्लाइंट सरविसेज बीबीडीडी
वर्ल्ड वाइड नेटवर्क
मुम्बई

डॉ. रवीन्द्र कुमार (*संयोजक*)
इतिहास संकाय
इग्नो

कार्यक्रम संयोजक : प्रो. कपिल कुमार

पाठ्यक्रम दल:

डॉ रवीन्द्र कुमार
श्री अजय माहुरकर } पाठ्यक्रम संयोजक
डॉ. गीता केकर
डॉ. जसवंत सोखी
श्री सलिल मिश्र
प्रो. कपिल कुमार

खंड निर्माण दल

इकाई संख्या	इकाई लेखक	संकाय सदस्य
14	श्री रवीन्द्र कुमार शोध छात्र दिल्ली विश्वविद्यालय	श्री सलिल मिश्र
15	सुश्री रूचिका देवा हिन्दू कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय	श्री सलिल मिश्र
16 व 17	श्री अमिताभ वर्मा असिस्टेंट रिसर्च आफिसर डिपार्टमेंन्ट आफ कल्चर नई दिल्ली	डा. रवीन्द्र कुमार

खंड संयोजक
डा. रवीन्द्र कुमार

अनुवाद	अनुवाद परिष्कार	संकाय सदस्य
प्रो. मोहम्मद अमीर अध्यक्ष, भूगोल विभाग इटावा महाविद्यालय इटावा	सुश्री सीमा कुमारी नई दिल्ली	डा. रवीन्द्र कुमार

सामग्री निर्माण

प्रोफेसर कपिल कुमार
निदेशक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

मई, 1998

© इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 1998
ISBN-81-7605-342-2
सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से/द्वारा: प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

NMDC-210
BTS-05/182

खंड-5 पर्यटन संरक्षण के साधन के रूप में

पर्यटन एक पेचीदा शब्द है : यह विदेशी मुद्रा अर्जित करता है, रोजगार के अवसर जुटाता है और लोगों में रोटी कमाने की क्षमता पैदा करता है जैसा और कोई संगठित या असंगठित क्षेत्र नहीं कर पाता है। इसके साथ ही साथ इसे पर्यावरणीय भंगुरता को भंग करने के लिए जिम्मेवार भी ठहराया जाता है। कभी कभी तो इसे जाने अनजाने सांस्कृतिक ढांचे में आपत्तिजनक रूप से हस्तक्षेप करने का दोषी माना जाता है। इसलिए पर्यटन में यदि कुछ मूलभूत रूप से अनुचित है या उसे गलत ढंग से दोषी ठहराया जा रहा है तो इस पक्ष को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। इस खंड में पर्यटन का पक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। इस तथ्य को उजागर करने का प्रयास किया गया है कि एक गतिविधि के रूप में पर्यटन को प्रयत्नपूर्वक संरक्षण कार्य करने के लिए तैयार किया जा सकता है। अत: जोर इस तर्क पर है कि पर्यटन और संरक्षण अनिवार्यत: असंगत नहीं है। इस केंद्रीय तर्क को पुष्ट करने के लिए चार उपविषयों की सहायता ली गई है जिनमें से प्रथम तीन एक साथ मिलकर चौथे सोपान पर एक विकल्प प्रस्तुत करते हैं।

इकाई 14, व्यवहार और संभावना पर्यटन की मुख्य रूप से पर्यावरण के ध्वंसक के रूप में व्याख्या के विरोध से प्रारंभ होती है। इसके विपरीत यदि इसे ठीक तरह से समझ बूझकर एक निश्चित रूप में योजनाबद्ध करके कार्यान्वित किया जाए तो यह पर्यावरण के रक्षक और संरक्षक के तौर पर कार्य कर सकता है। कई देशों के उदाहरण देकर इकाई में आपको इस तथ्य से अवगत कराया गया है कि किस प्रकार पर्यटन पर्यावरण के विभिन्न घटकों (भौतिक विशेषताएँ, ऐतिहासिक स्थल, वन्य जीवन, एवं संस्कृति) के लिए अभिशाप नहीं बल्कि वरदान सिद्ध हो सकता है।

इकाई 15, पर्यटन स्थल और स्थलीय योजना, में पिछली इकाई की विवेचना को ही आगे बढ़ाया गया है। इसमें बताया गया है कि पर्यटन को संरक्षण का साधन बनाने के लिए योजना बनानी पड़ती है। ये 'पर्यटन स्थल एवं स्थलीय योजना' के उचित ढंग से कार्यान्वन के विभिन्न विकल्प भी सुझाती है ताकि अनियोजित पर्यटन विकास के दुष्प्रभावों को न्यूनतम किया जा सके।

इकाई 16, असमान क्षेत्रीय/राष्ट्रीय योजना में, पर्यटन की वृद्धि के लिए अधिसंरचनात्मक सुविधा के असंतुलित विकास की समस्याओं से आपको अवगत कराती है। इसमें पुनर्निर्मित नीति के आधार पर पर्यटन विकास के संदर्भ में अधिक समानतामूलक क्षेत्रीय विकास की संभावनाओं का भी पता लगाया गया है।

इकाई 17, विकल्प में, पर्यटन और संरक्षण के मध्य संबंधों की छानबीन की गई है। इसमें कुछ ऐसे वैकल्पिक सिद्धांतों से परिचित कराया गया है जिन्हें पर्यटन को संरक्षण का प्रभावकारी साधन बनाने के लिए पर्यटन नीति के रूप में संयोजित और संगठित किया जा सकता है।

इकाई 14 व्यवहार और संभावना

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 व्यवहार और संभावना

- 14.2.1 भौतिक विशेषताएं
- 14.2.2 ऐतिहासिक स्थल
- 14.2.3 वन्य जीवन
- 14.2.4 संस्कृति

14.3 भंगुरता

14.4 बचाव के मार्ग

14.5 सारांश

14.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

14.0 उद्देश्य

इस इकाई में पर्यावरण के संरक्षक के रूप में पर्यटन की संभावना पर विचार किया गया है। इस इकाई में उस इकाई के बिलकुल विपरीत नजरिया अपनाया गया है जो पर्यटन को केवल पर्यावरण के विनाशक के रूप में देखती है। इस इकाई में यह सत्य भी स्वीकार किया गया है कि वास्तव में व्यवहार और संभावना के बीच एक निश्चित दूरी हो सकती है। अत: हमारा उद्देश्य आपको निम्नलिखित पक्षों से परिचित कराना है:

- संरक्षण के लिए पर्यटन में संभावनाएं,
- इसके वास्तविक उदाहरण,
- ऐसे प्रकरणों में पर्यटन आयोजकों के सामने आई समस्याएं, और
- पर्यटन के संरक्षण के लिए उपयोग करते समय सतर्कता की आवश्यकता।

14.1 प्रस्तावना

परम्परागत रूप से पर्यटन को ऐसी मानवीय गतिविधि समझा जाता रहा है जो अपरिहार्य रूप से पर्यावरण के विनाश का कारण बनता है। इसे उस स्थल के लिए संरक्षक के स्थान पर अनिवार्य रूप से विध्वंसक समझा जाता है जिस पर वह विकसित हो सकता है अर्थात उसे आत्म-विनाशक समझा जाता है। किंतु इसे ऐसा नहीं होना चाहिए। आजकल पर्यावरण संबंधी चिंता और पर्यटन पर एक साथ विचार किया जा रहा है और दोनों को एक दूसरे का पूरक बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है जिससे दोनों का हित होगा। पर्यटन को और अधिक 'उत्तरदायी' बनाकर और संरक्षण की "मानव जाति को अच्छा जीवन देने के लिए पर्यावरण का विवेकपूर्ण उपयोग" के रूप में नई परिभाषा देकर इनके बीच के विरोधों को समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। पर्यटन और संरक्षण की सम्पूर्णता और अस्तित्व को महत्व दिया जा रहा है। अब यह अधिक ध्यान दिया जाने लगा है कि पर्यटक स्थल बहुमूल्य सम्पति है जिसे उसके वृहत वातावरण में प्रबंधन की सुविचारित नीतियों को अपना कर सुरक्षित रखना चाहिए। इस इकाई में इन तरीकों के ठोस उदाहरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

14.2 व्यवहार और संभावना

जैसा कि प्रस्तावना में व्यक्त किया जा चुका है नई 'अनुभूतियों और रणनीतियों में परिवर्तन, पर्यटन को संरक्षण के एक जबरदस्त प्रभावी साधन के रूप में देखा जा रहा है।

वास्तव में इसे अधिक से अधिक इसी प्रकार पर्यावरण के विभिन्न तत्वों के संरक्षण और सुरक्षा के लिए उपयोग में लाया जा रहा है जैसे :

- भौतिक विशेषताएं
- ऐतिहासिक स्थल
- वन्य जीवन, और
- स्थान विशेष की संस्कृति

सार्वभौमिक दृष्टि से इस प्रकार के प्रयासों की असंख्य मिसालें हैं और हमने उनमें से कुछ को निम्नवत उपभागों में वर्णित करते हुए विचार विमर्श भी किया गया है ताकि आप ऐसे प्रयासों की संभावना और क्षमता के बारे में जान सकें।

14.2.1 भौतिक विशेषताएँ

किसी देश की भौतिक विशेषताएँ–भू-आकृतियाँ (पर्वत, खड़ी चट्टान आदि) मैदानी क्षेत्र, जल स्रोत (झील, नदी, जल प्रपात, समुद्र) समुद्र तट और अन्य प्राकृतिक स्थल और छटाएँ सदियों से मनुष्य को मोहित करती रही हैं और लुभाती रही हैं। वे हमेशा से आकर्षण का केंद्र रही हैं और सर्वाधिक 'प्रत्यक्ष' पर्यटक आकर्षण होने के कारण 'गैर जिम्मेवार पर्यटन' का सबसे ज्यादा कुप्रभाव इसी पर पड़ता है। हालाँकि भू-आकृतियों को पर्यटकों के द्वारा सबसे अधिक क्षति पहुँची है फिर भी पर्यटन द्वारा सुरक्षित रखे जाने की अधिकतम संभावना भी इन्हीं में है क्योंकि भौतिक दृष्टि से क्षतिग्रस्त धरातल को सुधारना वस्तुतः असंभव होता है और वह पर्यटन के लिए सदा के लिए नष्ट हो जाता है।

पर्यटन के लिए भौतिक आकृतियों के संरक्षण की भूमिका उनकी आर्थिक उपयोगिता की अपेक्षा गौण है। सामान्य रूप से भौतिक आकृतियों की सुरक्षा उनके बचाव की दृष्टि से नहीं होती बल्कि उनकी पर्यटन के लिए संभावना अर्थात लाभ की दृष्टि से की जाती है। अधिकारी वर्ग टूर आपरेटर के साथ मिलकर केवल आर्थिक लाभ की दृष्टि से पर्यटन के लिए महत्वपूर्ण भू-आकृतियों के संरक्षण का कार्य कर रहे हैं। सम्पूर्ण विश्व में ऐसे बहुत से उदाहरण है। जिसमें पर्यटन पृथ्वी की भौतिक आकृतियों के संरक्षण के साधन के रूप में कार्य कर रहा है।

पर्यटन की संभावना के कारण ही दक्षिणी यूरोप के सुंदर समुद्र तट की सुरक्षा हो पाई ; आल्प पर्वत (विशेषकर स्वीटज़रलैंड और ऑस्ट्रिया में) विनाश से बच गए; आइसलैंड के ऊष्णोत्स (गाइजर) और उत्तरी आयरलैंड का विशाल सेतुक (काज़वे) संरक्षित रहे। संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के मध्य स्थित जल प्रपात और पाँच विशाल झीलों के परिसर की प्राकृतिक सुंदरता पर्यटकों के लिए अपना आकर्षण बनाए रखने के कारण ही सुरक्षित बची है।

बरमूडा द्वीप पर्यटन के लिए संरक्षण का एक बहुत शानदार उदाहरण है जहाँ कुल राष्ट्रीय उत्पादन में पर्यटन का योगदान 50 % है, कोई परिवार एक कार से अधिक नहीं रख सकता है और गति सीमा 20 मील प्रति घंटा है जिससे पर्यावरण और पर्यटकों का बहुत हित होता है।

भारत में भू-आकृतियों के संरक्षण में पर्यटन की भूमिका को हालाँकि पूरी तरह समझा जा चुका है किंतु अभी यहाँ इसकी भूमिका नगण्य है। इसका एकमात्र उदाहरण हिमालय और समुद्री तट हैं जहाँ उनके प्राकृतिक वैभव को पर्यटन की संभावना को ध्यान में रखते हुए सुरक्षित रखने का प्रयास किया गया है।

दस्तकारियों का पुर्नजन्म और प्रोत्साहन इस बात के अच्छे उदाहरण हैं कि किस प्रकार पर्यटन ने इन देशों में सांस्कृतिक विरासत को लाभान्वित किया है और उनकी परम्परागत वास्तविकता को बनाए रखने में सहयोग दिया है।

अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और अत्यधिक विविधता के कारण भारत सांस्कृतिक पर्यटन तथा संरक्षण के साधन के रूप में इसकी भूमिका का अच्छा उदाहरण है। भारत में सरकार और निजी एजेंसियों द्वारा प्रत्येक वर्ष पर्यटकों को आकर्षित करने और उनका मन बहलाने के लिए बहुत से सांस्कृतिक उत्सव आयोजित किए जाते हैं। लद्दाख का उत्सव, मरुस्थल उत्सव, और खजुराहो नृत्य उत्सव इनमें से कुछ ऐसे ही उल्लेखनीय उत्सवों के उदाहरण हैं। इन 'पर्यटक उत्सवों' के माध्यम से विदेशी आगंतुकों के सम्मुख भारतीय संस्कृति को अपनी रंगारंग उत्कर्षता के साथ प्रस्तुत किया जाता है और इनमें मुख्य रूप से भारतीय संगीत एवं नृत्य की शास्त्रीय एवं लोक दोनों ही शैलियाँ, कला तथा हस्तशिल्प, वस्त्र एवं भोजन आदि सम्मिलित होते हैं। भारत की विशाल, अनुपम और मोहित करने वाली सांस्कृतिक विषमता का अनुभव करने के लिए इन उत्सवों में आनेवाले पर्यटकों की संख्या ने अधिकारियों और लोगों दोनों को आधुनिकीकरण और पश्चिमीकरण दबावों के बावजूद अपनी सांस्कृतिक सम्पदा की सुरक्षा के लिए प्रेरित किया है।

बोध प्रश्न 1

1) पर्यटन को पृथ्वी की आकर्षक भौतिक विशेषताओं के 'संरक्षण' की आवश्यकता क्यों है ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यटन ऐतिहासिक स्थलों को सुरक्षित करने का साधन कैसे बना ?

.....

.....

.....

.....

.....

3) संक्षेप में बताइए कि वन्य जीवन के संरक्षण में पर्यटन कैसे सहायक है ?

.....

.....

.....

.....

.....

4) सास्कृतिक विरासत भी एक महत्वपूर्ण पर्यटक सम्पत्ति हो सकती है। टिप्पणी कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

14.3 भंगुरता

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि पर्यटन के संरक्षण में पर्यावरण के संरक्षण की अपार संभावनाएं हैं। ऊपर दिए गए विभिन्न उदाहरणों से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि सम्पूर्ण विश्व पर्यटन की इस क्षमता का उपयोग कर रहा है। फिर भी इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए कि पर्यटन और पर्यावरण का संतुलन अत्यन्त नाजुक है। इस संतुलन में कोई साधारण सी गड़बड़ी भी पर्यावरण के लिए विनाश का कारण बन सकती है और पर्यटन की परम्परागत पर्यावरण विनाशक की छवि फिर से ताजा हो सकती है। इस संतुलन के लिए मौलिक खतरा बड़े पैमाने पर अनियोजित पर्यटन से है। हमें सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि पर्यटन अधिकांशत: निजी हाथों में है जो केवल पैसा बटोरने के लिए ही इस व्यापार में हैं न कि पर्यावरण संरक्षण के लिए। इन टूर ऑपरेटरों में पर्यटन सम्पत्ति को आवश्यकता से अधिक शोषित करने की प्रवृत्ति पाई जाती है क्योंकि वह लम्बे समय के प्रभाव की परवाह किए बिना कम समय में ही उन से अधिक से अधिक लाभ प्राप्त कर लेना चाहते हैं।

परिणामस्वरूप पर्यटन पर्यावरण को बुरी तरह प्रभावित करने का कारण बनता है न कि उसे लाभ पहुँचाने का। और 'संरक्षण' की बात तो दूर, पर्यटन वस्तुत: भौतिक विशेषताओं को नष्ट कर रहा होता है, ऐतिहासिक स्थलों को क्षति पहुँचाता है, वन्य प्राणियों को आहत करता है और संस्कृति को प्रदूषित करता है।

उदाहरणार्थ हजारों, लाखों मैट्रिकटन अपशिष्ट जो मुख्य रूप से जैवीय तौर पर निम्नीकृत न होने वाला है निचले और मध्य नेपाल हिमालय में हर ओर तेजी से बढ़ा है क्योंकि कई पीढ़ियों से इसे यहाँ फेंका जा रहा है। कम जानेवाले हजारों स्मारक भारत में स्थानीय पर्यटकों एवं इन्हें देखने आनेवालों के हाथों से क्षतिग्रस्त हो रहे हैं। 'प्रत्येक पर्यटन स्थल' पर संस्कृतियों का प्रदूषण ऐसा संकट है जिसने वस्तुत: लगभग समस्त विश्व को चिंतित किया है।

14.4 बचाव के मार्ग

पर्यटन नियंत्रण संतुलन बनाए रखने कि कुंजी है क्योंकि अनियंत्रित जन पर्यटन पर्यावरण के लिए कभी लाभदायक नहीं हो सकता। नियंत्रण के प्रयासों के लिए सबसे उत्तम नेतृत्व सरकार का होगा जो अपने देश की आवश्यकताओं, हितों और साधनों के मूल्यांकन के लिए सबसे अच्छी स्थिति में है और पर्यटन का उनके साथ सामंजस्य सुनिश्चित भी कर सकती है। गैर सरकारी हाथों में पर्यटन नियंत्रत नहीं हो सकता क्योंकि गैर सरकारी ऑपरेटर का प्रमुख उद्देश्य लाभ होगा न कि पर्यावरणीय संरक्षण की चिंता करना।

प्रत्येक देश को अपने लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए, अपने संसाधनों का मूल्यांकन करना चाहिए और उन संसाधनों का उपयोग करने के विकल्प भी तय कर लेना चाहिए और तब अपने उद्देश्यों की

14.2.2 ऐतिहासिक स्थल

भौतिक विशेषताओं के साथ ही ऐतिहासिक स्थल देश की पर्यटन सम्पति के महत्वपूर्ण भाग हैं। पर्यटन में उनकी सुरक्षा की संभावना भी मौजूद है। वास्तव में पर्यटन ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण में कई प्रकार से प्रेरणा और सहयोग प्राप्त करने का कारण रहा है।

भौतिक विशेषताओं के समान ही पर्यटन ने व्यापक आर्थिक लाभों की दृष्टि से ऐतिहासिक स्थानों के संरक्षण में सहयोग दिया है। पर्यटन के लिए अपने आकर्षणों के कारण प्रसिद्ध स्मारक स्थानीय अर्थव्यवस्था का आधार बनाते हैं। यही कारण है कि अधिकारी वर्ग राजस्व एवं रोजगार के इस महत्वपूर्ण साधन के नष्ट हो जाने के भय के कारण इसे सुरक्षित रखने पर बाध्य है। इसके अतिरिक्त स्थानीय लोग, जो पर्यटन से अधिक लाभ उठाते हैं, भी इन ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण कार्यों में साझेदारी के लिए प्रेरित होते हैं।

इसके अतिरिक्त सामान्य रूप से सरकार भी इन खराब होते स्थलों के संरक्षण की प्रवृति को प्राथमिकता देती है क्योंकि ऐसे ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण में महंगी तकनीक की आवश्यकता होती है। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं है कि पर्यटकों से प्राप्त धन ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण वित्तीय साधन है।

वास्तविक उदाहरण के रूप में मिस्र के महान पिरामिडों को लिया समझा जाता है जिन्हें उनके अवलोकनार्थ आनेवाले पर्यटकों के आगमन को बनाए रखने के लिए पर्यटन द्वारा प्राप्त धन से अत्यंत आधुनिक सर्वश्रेष्ठ रखरखाव तकनीकों से दीर्घकाल के लिए सुरक्षित कर लिया गया है। लगभग ऐसी ही स्थिति ग्रीको-रोमन पुरातत्वीय विशाल परिसर और अमेरिका के प्राचीन स्थलों की है जो पर्यटकों के लिए अपने आकर्षण के कारण अच्छी तरह और पूर्ण रूप से सुरक्षित कर लिए गए हैं।

भारत में भी देश भर में फैले हुए बहुत अधिक संख्या में ऐतिहासिक स्थानों को उनकी पर्यटन संभावना के कारण सुरक्षित रखा जा रहा है। ये कार्य पर्यटकों के धन से किया जा रहा है। विशेष रूप से ताजमहल, जो विश्व के बहुत अच्छी तरह सुरक्षित किए गए स्मारकों में से एक है, को इतनी अच्छी तरह सुरक्षित नहीं रखा जा सकता था यदि उसमें विश्व स्तरीय पर्यटकों के लिए इतना आकर्षण न होता और उनसे उतना धन अर्जित न किया गया होता। खजुराहो, जो अत्यंत उपेक्षित स्थिति में प्राचीन स्मारकों सहित पड़ा हुआ एक और गाँव था, अब एक विख्यात भारतीय ऐतिहासिक स्थान है–एक 'विश्व विरासत' जिसके लिए हमें पर्यटन का आभारी होना चाहिए, जिसने इस स्थान को अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए प्रोत्साहित किया।

भारत में संरक्षण के साधन के रूप में एक और उदाहरण अत्यधिक लोकप्रिय और तीव्र गति से विकासशील 'विरासत स्थल' की धारणा है जिसमें पुरानी जर्जर हवेलियों और महलों का पारम्परिक शैली में पुनरुद्धार करके पर्यटकों के आवास की व्यवस्था की जा रही है।

14.2.3 वन्य जीवन

पर्यटन राष्ट्रीय उद्यानों, प्राकृतिक अभयारण्यों एवं पशु-पक्षी अभयारण्यों के निर्माण, विकास और संरचना द्वारा वन्य जीवन संरक्षण में बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। इन उद्यानों में नियमों का कड़ाई से पालन होता है और इसमें न केवल पक्षियों और पशुओं के लिए ही पर्यावरण का प्राकृतिक दशा में रखरखाव किया जाता है बल्कि पर्यटकों के आनन्द और खुशी का भी ध्यान रखा जाता है। शिकारी या सफारी में विशेषज्ञता रखनेवाले टूर ऑपरेटर अब जानवरों के जीवन की सुरक्षा और संरक्षण पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं और फोटोग्राफिक सफारी, राष्ट्रीय उद्यानों में घूमने, गेम रिज़र्व और पारिस्थितिक यात्राओं में रुचि बढ़ती जा रही है। इस प्रकार पर्यटन के लिए 'संरक्षण अभ्यास' को बढ़ावा देने से दोनों को लाभ होता है।

इसके अतिरिक्त पर्यटन ने स्थानीय लोगों को जो अपनी जीविका के लिए जंगल पर ही निर्भर थे, को वैकल्पिक रोजगार देकर पर्यावरण की सहायता ही की है। यही नहीं टूर ऑपरेटर से प्राप्त धन का उपयोग पर्यावरण को बनाए रखने में अत्यधिक सहयोगी सिद्ध हुआ।

राष्ट्रीय उद्यानों की बहुत तेजी से बढ़ती हुई लोकप्रियता संरक्षण के साधन के रूप में पर्यटन की क्षमता का ही प्रमाण है। वास्तव में हमारे सामने कई विशिष्ट उदाहरण हैं जहाँ पर्यटन ने व्यापक रूप से संरक्षण में सहयोग दिया है।

पूर्वी अफ्रिका में कीनिया और तन्जानिया के सेरेंगेटी घास के मैदानों को बड़े पैमाने पर होनेवाले अवैध शिकार और पुराने ढंग की कृषि ने उजाड़ कर रख दिया था। 1970 के अंत में कीनिया और तन्जानिया की सरकारों ने एक संयुक्त संरक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत सम्पूर्ण सेरेंगेटी क्षेत्र को जबरदस्त पर्यटक आकर्षण केंद्र के रूप में एक विशाल वन प्राणी रिजर्व में परिवर्तित कर दिया। यह एक ऐसा सफल संरक्षण कार्यक्रम उदाहरण है जिसमें सफलतापूर्वक एक भौगोलिक क्षेत्र को पारिस्थितिकी और आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न बनाया गया। निश्चित रूप से इसमें पर्यटन और संरक्षण को एक दूसरे का अनुपूरक और एक दूसरे के लिए लाभदायक बना दिया।

मध्य अफ्रिका में पर्यटकों के लिए सेंट लोरिस प्रकृति उद्यान के खोले जाने से वन्य प्राणियों के प्रभावी संरक्षण में मदद मिली। पर्यटकों की हुई आय से जंगल के मार्गों और वनपालों के कैम्पों का बनाए रखना संभव हुआ और पर्यटकों के आने जाने ने अनाधिकृत शिकारियों के लिए खुले तौर पर शिकार करना मुश्किल हो गया। बेनिन में यह पाया गया कि पेण्डजारी उद्यान के पर्यटकों के लिए न खोले जाने के कारण इसके विकास की भावी संभावना भी खतरे में पड़ गई है।

भारत में भी राष्ट्रीय उद्यान और प्रकृति अभयारण्यों की स्थापना की धारणा और पर्यटकों के लिए उन्हें खोले जाने का अधिकारियों और पर्यावरणवादियों ने बहुत अधिक समर्थन किया है। इस प्रकार के रिजर्व की बड़ी संख्या की देखरेख काफी हद तक पर्यटकों और टूर ऑपरेटर से प्राप्त धन से ही की जा रही है। उदाहरणार्थ राजस्थान में भरतपुर पक्षी विहार एवं प्रोजेक्ट टाइगर रिज़र्व को पर्यटन से प्राप्त धन से ही पूरी या आंशिक तौर पर वित्तीय सहायता दी जाती है।

14.2.4 संस्कृति

संस्कृति को आजकल देश के पर्यावरण का अविभाज्य अंग माना जाता है और इसे कभी रिक्त न होनेवाले धन का स्रोत समझा जाता है अत: इसे "सुरक्षित रखने" की चिंता भी होने लगी है। यहाँ भी पर्यटन ने अधिकारियों और लोगों को प्रेरित किया कि सांस्कृतिक पर्यटन की धारणा के अंतर्गत अपनी 'सांस्कृतिक विरासत' के अनोखेपन को विदेशी पर्यटकों के लिए सुरक्षित रखना चाहिए। पर्यटकों के लिए नृत्य और अन्य प्रदर्शन दस्तकारी एवं स्मृति चिह्नों का व्यापार आयोजित कर ऐसा किया जा सकता है। एक बार आर्थिक क्षेत्र से जुड़ जाने के बाद किसी देश की संस्कृति अपने संरक्षण के लिए अधिकारियों पर निर्भर रहने के बजाए आत्म निर्भर हो जाती है।

बहुत देशों में पर्यटन ने न केवल स्थानीय सांस्कृतिक परम्परा से आर्थिक मुनाफा कमाया जा सकता है बल्कि सांस्कृतिक परम्परा, कला और कौशल के संरक्षण और पुनरूद्धार के लिए बहुत जबरदस्त प्रेरणा दी है। इसके योगदान के बिना बहुत सी कला और कौशल की परम्पराएं लुप्त हो चुकी होतीं और अन्य बहुत सी सर्वनाश की कगार पर खड़ी होतीं। सांस्कृतिक संरक्षण में पर्यटन के सहायक होने के इतने ढेर सारे उदाहरण हैं जिनका यहाँ उल्लेख करना संभव नहीं हैं। हालाँकि इनमें से कुछ उदाहरणों को इस बात के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

थाईलैण्ड के कुछ नृत्यों और पारम्परिक रेशम उद्योग का पुनरुत्थान पूर्वी यूरोप की लोक संस्कृति, स्वीडेन में डिजाइनरों एवं कलाकारों की प्रतियोगिताओं के माध्यम से प्राचीन कलाओं और कौशलों का पुनर्निर्माण, जमायका की 'पोर्ट रायॅल' श्रृखंला और समस्त कैरीबियन क्षेत्र की समृद्ध संगीत परम्परा, अपनी अनेक रूपों में अफ्रिका की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, दक्षिण पूर्व एशिया के नृत्यों और

दृष्टि से पर्यटन विकास की रणनीति बनानी चाहिए। ऐसी योजनाओं के अनिवार्य कार्यान्वयन के लिए वैधानिक, प्रशासनिक एवं वित्तीय व्यवस्थाओं के साथ-साथ उचित संचालन कार्य शैली, निवेश, आपसी तालमेल और संगठित ढंग से कार्य करने की संभावना होती है।

पर्यटन और पर्यावरण के मध्य संतुलन चाहने वालों के अनुसार पर्यटन विकास की किस्म और आकार तथा गतिविधियों पर्यटक संसाधनों की वहन क्षमता से संबंधित होना चाहिए। इसमें केवल सुविधाएं और अधिसंरचनात्मक सुविधाएं ही नहीं बल्कि क्षेत्र की जैव-भौतिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक क्षमता भी शामिल होना चाहिए। (वहन क्षमता के लिए देखिए खंड 4, इकाई-11)

पर्यटकों के अधिक आवागमन से सुविधाओं और अधिसंरचना का ह्रास होता है और सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्था में तनाव के कारण सम्पूर्ण पर्यावरण को हानि पहुँचती है।

इस प्रकार पर्यटन के दीर्घावधि और निरंतर विकास, संसाधन संरक्षण और पर्यावरण को बरबाद होने से बचाने के लिए वहन क्षमता का मूल्याकन, पर्यटन विकास के स्तर में संतुलन और वहन क्षमता पर आधारित कार्यकलाप आवश्यक है।

अपने विवेचन को प्रासंगिक बनाने के लिए हम 1980 के विश्व पर्यटन की मनीला उद्घोषणा में से कुछ अंश उद्धृत कर रहे हैं। कई देशों में एक साथ स्थान, सुविधाओं और मान्यताओं का इस्तेमाल पर्यटन संसाधन के रूप में किया जाता है। इन संसाधनों को अनियोजित छोड़ देने पर उनकी विकृति और यहाँ तक कि उनके विनाश का खतरा उत्पन्न हो सकता है। पर्यटन को पर्यटन क्षेत्रों के लोगों के सामाजिक-आर्थिक हितों, पर्यावरण और सबसे अधिक प्राकृतिक ससाधनों के लिए हानिकारक नहीं होना चाहिए क्योंकि यही पर्यटन और ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थलों के मूल आकर्षण हैं। सारे पर्यटन संसाधन मानव जाति की विरासत का एक हिस्सा है। राष्ट्रीय समुदायों और समस्त अन्तर्राष्ट्रीय सम्प्रदाय को उनके संरक्षण के लिए आवश्यक कार्यवाई करनी चाहिए। हर सगय और विशेषकर संघर्ष के समय ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं क्षेत्रीय स्थलों का संरक्षण प्रदेशों की मूलभूत जिम्मेवारी है।

बोध प्रश्न 2

1) पर्यटन एवं पर्यावरण संतुलन काफी नाजुक है। टिप्पणी कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यटन को नियंत्रण में रखने में अधिकारी किस प्रकार सहायता करते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

3) देश में पर्यटन के आवागमन को नियंत्रित करते समय किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए ?

.....

.....

.....

.....

.....

14.5 सारांश

पर्यटन को पर्यावरण का शत्रु समझना सही नहीं है। पर्यटन स्वभावतः पर्यावरण का विनाशक नहीं है। अतीत में पर्यटन का अदूरदर्शितापूर्ण उपयोग अनियोजित एवं अनियंत्रित विस्तार के कारण पर्यटन के लिए उलझनें पैदा हो गईं। किन्तु अब दिन ब दिन पर्यटन को पर्यावरण के संरक्षण के साधन के रूप में देखा जाने लगा है। फिर भी यह सतुलन बहुत अस्थिर किस्म का है क्योंकि पर्यटन अधिकांशतः गैर सरकारी हाथों में है और अधिक लाभ प्राप्ति के लिए इनके अनियंत्रित हो जाने की संभावना बनी रहती है। अनियंत्रित पर्यटन विनाशकारी ही हो सकता है। केवल पर्यावरणोन्मुख पर्यटन ही सुरक्षा और संरक्षण के साधन के रूप में सफल हो सकता है। इस दिशा में पर्यटन उद्योग में लगे लोग और सरकारी माध्यम दोनों को ही पहल करनी चाहिए। उनको चाहिए कि किसी पर्यटन स्थल की "वहन क्षमता" को ध्यान में रखते हुए विभिन्न साधनों द्वारा पर्यटन को नियंत्रित करें अन्यथा पर्यटन पर्यावरण को बहुत अधिक और अनिवार्य रूप से हानि पहुँचा सकता है।

14.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) किसी भू-भाग की भौतिक विशेषताएं पर्यटन की महत्वपूर्ण सम्पत्ति है। इस सम्पत्ति के क्षतिग्रस्त होने की स्थिति में राजस्व की हानि और स्थानीय अर्थव्यवस्था की बरबादी होगी क्योंकि पर्यटक इन्हें ही देखने आते हैं और उनकी आय उन पर ही निर्भर होती है। अतः स्वयं को टिकाऊ बनाने के लिए पर्यटन को पर्यटकों को आकर्षित करने वाली भौतिक विशेषताओं के संरक्षण के लिए कार्य करना चाहिए। देखिए उपभाग 14.2.1

2) पर्यटन न केवल अपने स्वार्थों के लिए ऐतिहासिक स्थलों को सुरक्षित करने में सहयोग देता है (अर्थात् अपने पर्यटकों के लिए आकर्षण बनाए रखना), बल्कि स्मारकों के संरक्षण के लिए, जिसमें बहुमूल्य तकनीकों का उपयोग होता है, आवश्यक धन भी उपलब्ध कराया है। ऐसे प्रयासों के उदाहरण मिस्र एवं ग्रीको-रोमन क्षेत्रों में देखे जा सकते हैं । देखिए उपभोग 14.2.1

3) वन्य जीवन संरक्षण में पर्यटन पर्यटकों में 'संरक्षण अभ्यास' को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण सहयोगी सिद्ध हुआ है। स्थानीय लोगों को वैकल्पिक रोजगार देकर बी सहयोग किया है अन्यथा वह अपनी जीविका के लिए जंगल की धरती पर ही निर्भर रहते। उसने रिजर्वों के रखरखाव एवं पर्यावरण हेतु धन उपलब्ध कराया और लोगों में चेतना और जागरूकता पैदा की है। देखिए उपभाग 14.2.3

4) किसी देश की संस्कृति इसकी एक महत्वपूर्ण सम्पत्ति होती है क्योंकि इसे विदेशी पर्यटकों के लिए बाजार में बेचकर लाभ कमाया जा सकता है। इस प्रकार लोगों की जीवन शैली को सुरक्षित रखने के साथ-साथ अर्थिक रूप से उपयोगी भी बनाया जा सकता है। देखिए उपभाग 14.2.4

बोध प्रश्न 2

1) हालाँकि अभी हाल ही में पर्यटक और पर्यावरण चिंता को एक साथ प्रस्तुत किया गया है किंतु दोनों के मध्य संतुलन अस्थिर है। टूर ऑपरेटर इसके प्रमुख कारण है क्योंकि उनका मुख्य उद्देश्य लाभ कामाना है। अत्यधिक लाभ कमाने का प्रयत्न अनियंत्रित और अबाधित रूप से चलता रहता है और दीर्घवधि के लाभों के साथ समझौता करना पड़ता है। देखिए भाग 14.4

2) देश में पर्यटकों के आवागमन को नियंत्रित करने के लिए, देश या क्षेत्र की वहन क्षमता को ध्यान में रखना चाहिए। क्षमता में केवल सुविधाएं या अधिसंरचना ही सम्मिलित नहीं है बल्कि उस क्षेत्र विशेष की सामाजिक व्यवस्था भी सम्मिलित है क्योंकि एक क्षेत्र अपनी क्षमता के अनुसार ही विदेशियों का आवभगत कर सकता है. इसके आगे तनाव और उलझनें ही पैदा होंगी। यह क्षेत्र विशेष के पर्यावरण और पर्यटन और दोनों के लिए लाभदायक होगा। देखिए भाग 14.4

इकाई 15 पर्यटन स्थल और स्थलीय योजना

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 पर्यटन योजना का महत्व

15.3 पर्यटन योजना

15.4 पर्यटक स्थल एवं संरक्षण

15.5 सारांश

15.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

15.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- पर्यटन में योजना के महत्व का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे,
- एक ऐसे पर्यटन स्थल के विकास के संबंध में सूचना प्राप्त का सकेंगे जिसमें पर्यटकों के साथ-साथ पर्यावरण का भी ख्याल रखा गया हो,
- यह जान पाएंगे कि पर्यटक गतिविधियों द्वारा किस प्रकार संरक्षण का लक्ष्य प्राप्त किया जाता है,
- पर्यटन और पर्यावरण सुरक्षा के लिए एक साथ कायम रहने की संभावना पर विचार कर सकेंगे।

15.1 प्रस्तावना

कोई स्थान तभी पर्यटन स्थल बन सकता है जब उसमें कुछ आकर्षण हो जिसकी प्रत्याशित पर्यटकों के मस्तिक में एक छवि हो और इस आकर्षण के साथ ही वहाँ आवश्यक सुविधाएं भी हों। पर्यटक आकर्षण विभिन्न आकार प्रकार के हो सकते हैं। वह "प्राकृतिक" पर्यटक स्थल जैसे द्वीप, समुद्रतट, झीलें आदि हो सकते हैं, ऐतिहासिक--जिसमें अतीत का कोई स्मृति चिह्न हो सकता है या मानव द्वारा निर्मित जिन्हें विशेष रूप से पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए विकसित किया गया है, जैसे उपवन आदि। एक पर्यटक स्थल में बहुविध और अतिव्यापि आकर्षण केन्द्र भी हो सकते हैं।

फिर भी आधुनिक पर्यटन पर यह आक्षेप लगाया जाता है कि वह सभी उपर्युक्त वर्गीकृत केंद्रों को क्षति पहुँचा रहा है। स्थानीय प्राकृतिक दृश्यों, देशज सांस्कृतिक एवं सामाजिक परम्पराओं को क्षति पहुँचाने का आरोप भी इस पर लगाया जाता है जिससे प्रदूषण और पर्यावरणीय क्षति पहुँचती है। ऐसा सहज रूप से नहीं होना चाहिए यह बात इस खंड की इकाई 14 में बताई गई है। इस समस्या का निदान पर्यटकों के आवागमन को रोकने में नहीं बल्कि पर्यटन को संरक्षण का साधन बनाने में है। इसी संदर्भ में यह आवश्यक हो जाता है कि पर्यटन का विकास पर्यटन स्थल और स्थलीय योजना पर आधारित होना चाहिए। इसके अलावा पर्यटन अब हाशिए का मुद्दा नहीं रहा बल्कि यह विश्व के आर्थिक, सामाजिक और भौतिक विकास का एक प्रमुख और अभिन्न हिस्सा बन गया है। भौतिक और सामाजिक सांस्कृतिक पर्यावरण पर इसका प्रभाव महत्वपूर्ण और व्यापक है और आशा की जाती है कि जहाँ पर्यावरणीय क्षति हो चुकी है वहाँ यह प्रभाव और भी महत्वपूर्ण और कारगर होगा। अक्सर निजी

पर्यटन कार्यक्रमों की घटिया योजना और उद्योग की समग्र वृद्धि के कारण ऐसा होता है। पर्यटन के कारण विनाश का सबसे ज्वलंत और उपयुक्त उदाहरण डलझील है जो पाँच दशक पूर्व पच्चीस वर्ग किलोमीटर में फैली हुई थी और अब केवल दस वर्ग किलोमीटर में ही सिमट कर रह गई है।

15.2 पर्यटन योजना का महत्व

संरक्षण का आदर्श अनिवार्यत: पर्यटन का विरोधी नहीं है। संरक्षण को सामाजिक मान्यता प्राप्त है और पर्यटन के माध्यम से प्राकृतिक स्थलों की लोकप्रियता से इसे समर्थन प्राप्त हो रहा है। अत: पर्यटन के विकास में समुचित योजना पर अधिक से अधिक बल दिया जा रहा है। देशों और क्षेत्रों ने अपनी मान्यताओं और पर्यावरण की सुरक्षा का प्रयास प्रारंभ कर दिया है, हालाँकि इसके साथ ही वह और अधिक धन और पर्यटकों को आकर्षण करने की इच्छा रखते हैं। इस प्रकार पर्यटन क्षेत्र के विकास में योजना का महत्व पर्यटक, पर्यावरण और स्थानीय पर्यावरण के मध्य संतुलन उत्पन्न करने के प्रयास के कारण पैदा हुआ। भारत जैसे विकासशील देशों में स्थिति संकटपूर्ण है जहाँ मौजूदा पर्यावरण की सुरक्षा के लिए आवश्यक ढाँचागत सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं। फिर भी यह याद रखना चाहिए कि पर्यटन और पर्यावरण एक दूसरे के पूरक और संपूरक हैं। स्वयं पर्यटन में सम्पन्नता के बीज भी हैं और विनाश के भी। निश्चित रूप से सांस्कृतिक और पर्यावरणीय सुरक्षा रूप में संरक्षण से लोगों का हित जुड़ा हुआ है अत: इसी कारण से वे पर्यटन का भी समर्थन करते हैं।

राष्ट्रीय और क्षेत्रीय पर्यटन योजना प्रारंभ करने के अनेक महत्वपूर्ण और विशिष्ट लाभ हैं। इन लाभों का उल्लेख नीचे किया जा रहा है :

- समग्र पर्यटन विकास के उद्देश्यों और नीतियों को स्थापित करना पर्यटन का लक्ष्य रहा है और ये लक्ष्य किस प्रकार प्राप्त किए जा सकते हैं
- पर्यटन इसलिए विकसित किया जा रहा है ताकि इसके प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संसाधनों को हमेशा के लिए बनाए रखा जाए और भविष्य तथा वर्तमान में उपयोग के लिए संरक्षित किया जाए
- पर्यटन के समग्र विकास नीतियों और देश या क्षेत्र के स्वरूप के साथ जोड़ना और पर्यटन तथा अन्य आर्थिक क्षेत्रों के मध्य निकट का संपर्क स्थापित करना
- पर्यटन विकास के सरकारी एवं गैर सरकारी क्षेत्रों के निर्माण के लिए विवेकपूर्ण आधार प्रदान करना
- पर्यटन क्षेत्र के सारे विभिन्न तत्वों के समन्वित विकास को संभव बनाना। इसमें पर्यटन आकर्षणों, गतिविधियों सुविधाओं और सेवाओं एवं विभिन्न तथा विखंडित पर्यटक बाजार के बीच परस्पर संबंध स्थापित करना
- पर्यटन के आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक लाभों को उत्कर्ष पर पहुँचाना और उन्हें संतुलित करना तथा समाज के लिए इन लाभों का न्यायसंगत वितरण करना और पर्यटन की समस्याओं को कम करना
- एक ऐसा भौतिक ढाँचा प्रदान करना जो पर्यटन के आकर्षणों, सुविधाओं और सेवाओं तथा अधिसंरचनात्मक सुविधाओं के साथ-साथ पर्यटन स्थल, प्रकार और विस्तार को दिशा दिखा सके
- विशिष्ट पर्यटन विकास क्षेत्र के लिए, जो एक दूसरे के साथ सामंजस्य रखते हैं, एक दूसरे को सुदृढ़ करते हैं, दिशा निर्देशन एवं मानक निर्धारित करना ताकि सविस्तार योजना तैयार की जा सके।
- आवश्यक संगठनात्मक और अन्य संस्थानिक ढाँचा उपलब्ध कराकर पर्यटन विकास नीति एवं योजना और पर्यटन क्षेत्र के प्रबंधन के लिए ठोस आधार प्रस्तुत करना।
- पर्यटन विकास की प्रगति पर निरंतर निगाह रखने और इसे सही दिशा में विकसित करने के लिए आधार प्रदान करना।

(राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय पर्यटन योजना)

15.3 पर्यटन योजना

सारी दुनिया में पर्यटन से लाभ कमाने की होड़ लगी हुई है। इस होड़ में पर्यटन का अनियंत्रित और अनियोजित विकास हो रहा है। इसे एक ओर चुने हुए पर्यटन स्थलों और क्षेत्रों का वैभव बढ़ा है तो दूसरी ओर झुग्गी झोंपड़ी और गंदी बस्तियों में भी अपार वृद्धि हुई है। प्रकृति एवं पर्यावरण की सुरक्षा को प्राथमिकता देने की अपेक्षा व्यापार की दृष्टि से संसाधनों का निर्दयता के साथ उपयोग अपर्याप्त ढाँचागत सुविधा और अनुचित अधिसंरचना का कारण बना है। यह विडंबना ही है कि पर्यटन से अधिक से अधिक लाभ कमाने के लिए क्षेत्र विशेष की 'वहन क्षमता' से ज्यादा पर्यटकों को स्वीकार कर विश्व के कई सुंदर पर्यटन स्थलों को भीड़ भाड़ वाला इलाका बना दिया है। पर्यटन के नाम पर इस विकास ने इन्हीं आकर्षणों का सर्वनाश करना प्रारंभ कर दिया है जो पर्यटक को वहाँ आने के लिए प्रेरित करते थे।

ढीले ढाले और अव्यवस्थित विकास के कारण विनाश ने समाजों को पर्यटन स्थलों की वहन क्षमताओं तथा पर्यटन बाजार की आवश्यकताओं के वैज्ञानिक अनुसंधान पर आधारित पर्यटन विकास की योजना के प्रति जागरूक कर दिया है। योजना की प्रक्रिया अनिवार्य रूप से लम्बे समय के पर्यटन के संभावनाओं वाले कुछ क्षेत्रों या स्थानों की पहचान करती है। जब पर्यटन बड़े पैमाने पर पर्यावरणीय संसाधनों की माँग करता है और जब पर्यटन के साथ पारिस्थितिक व्यवस्था को जिसे सुरक्षा और संरक्षण की समस्या पैदा होती है। पर्यटक अनजाने में क्षति पहुँचाते हैं। नए होटलों, भवनों, सड़कों आदि के निर्माण की योजना बनाते समय कोमलता, सौन्दर्य और अद्वितीय प्राकृतिक परिवेश पर विशेष धन दिया जाना चाहिए। इस क्षेत्र में प्रत्येक नए निर्माण को पर्यावरण के अनुकूल होना चाहिए। कूड़े कचरे और मलबे के निपटारे का भी प्रबंध होना चाहिए। छोटे से छोटे पर्यटन स्थल की पारिस्थितिकी पर्यावरण का अभिन्न अंग होती है। प्राकृतिक स्थलों में साधारण सा समायोजन कर, जैसे फूलों के पौधे लगाकर और वृक्ष लगाकर पारिस्थितिक सम्पूर्णता को पुनः स्थापित किया जा सकता है। इसलिए नए पर्यटन स्थलों को विकसित करने में आयोजकों, पारिस्थितिकीविज्ञों और तकनीक विशेषज्ञों के मध्य नजदीकी समन्वय होना चाहिए।

पर्यटन स्थल के निर्धारण से पहले स्थल विशेष का ध्यानपूर्वक अवलोकन और अध्ययन करना चाहिए प्रारंभ में पर्यटकों के साथ आनेवाले प्रदूषण की पहचान करनी चाहिए और उनके प्रभावी निपटारे के लिए प्रभावी प्रबंधन करना चाहिए। दूसरे यह की पर्यटन उद्योग से सम्बद्ध उद्योगों को, जो पर्यावरण में घुटन पैदा करते हैं पहचान कर दूरदराज के इलाकों में स्थापित कर देना चाहिए। ऐसे स्थलों पर, जहाँ मोटर गाड़ियाँ, बाधा उत्पन्न कर सकती हों, वहाँ मोटर वाहनों के आने जाने पर प्रतिबंध कर लगाना चाहिए। एक दूसरे स्तर पर होटल अनुज्ञापत्र प्रदान करते समय कुछ हरियाली का क्षेत्र का प्रावधान अनिवार्यतः सम्मिलित होना चाहिए। इसके अतिरिक्त स्वयं स्थल पर व्यापक सहभागिता होनी चाहिए। एक बार जब सबको स्वस्थ्य पारिस्थितिकी के लाभों की जानकारी हो जाएगी तब पर्यटकों के व्यवहार में भी परिवर्तन आएगा। इस तथ्य को उजागर करने की आवश्यकता है कि पर्यटन को पारिस्थितिकीय संरक्षण का मित्र समझना चाहिए न कि उसका शत्रु। अन्ततः पर्यावरण में सुचारू नियंत्रण, प्रबंधन और योजना कार्य प्रणाली का समावेश होना चाहिए। जैसे ही एक बार कोई स्थान पर्यटक स्थल हो जाएगा तो उसके आकर्षणों की लोकप्रियता प्रबंधन नियंत्रण की माँग करेगी जिसकी आवश्यकता शायद पर्यटन के बिना न होती।

बोध प्रश्न 1

1) पर्यटन योजना का क्या महत्व है ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) विशेष पर्यटन स्थल पर पर्यटन योजना को किस पर आधारित होना चाहिए ?

.....

.....

.....

.....

.....

15.4 पर्यटक स्थल एवं संरक्षण

घोर जन सांख्यिकीय एवं आर्थिक आवश्यकताओं के बावजूद अब भी विश्व के कुछ घने वन क्षेत्र भारत में मौजूद हैं और इनमें से कुछ ज्यादा अच्छी तरह संरक्षित क्षेत्र उत्तर प्रदेश में स्थित हैं। ऐसा दो कारणों से है। पहला यह कि उत्तर प्रदेश ने भारत में आधुनिक संरक्षण आन्दोलन में पहल की। उत्तर प्रदेश हिमालय के उप पर्वतीय क्षेत्र को 1879 में ही आरक्षित वन क्षेत्र घोषित कर दिया गया था। इसके अतिरिक्त 1935 में भारत के प्रथम राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना ने वन्य प्राणियों को हिमालय के इस भाग में विनाश और विलोपन से बचा लिया।

राष्ट्रीय उद्यान की अवधारणा संरक्षण और पर्यटन दोनों के लिए ही महत्वपूर्ण है। इससे दोनों को लाभ पहुँचता है। वास्तव में राष्ट्रीय उद्यान बड़े पैमाने के पर्यटन और संरक्षण व्यवस्था का भाग है और अन्योन्याश्रित है। बाघों, चीतलों, तेंदुओं और नागों के निवास स्थान के रूप में भारत की छवि निस्संदेह विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने का सबसे बड़ा साधन है।

भारत में ऐसे अनेक साहसी पर्यटन विकल्प मौजूद हैं जो पर्वतों, नदियों, वनों या समुद्री तटों के अनुभवों के लिए पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। किन्तु अपने प्राकृतिक कारणों से ऐसे स्थल पर्यावरणीय दृष्टि से नाजुक हैं और जरूरत से ज्यादा पर्यटकों के आगमन से इनका अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। इसके अलावा किसी क्षेत्र को केवल जनसंख्या से दूर रखकर ही प्राकृतिक क्षेत्रों का संरक्षण नहीं किया जा सकता है। यहीं संरक्षण विशेषज्ञ पर्यटन को संरक्षण का साधन बनाने का प्रयास करते हैं।

संरक्षण विशेषज्ञ मानते हैं कि सौंदर्य और अक्षत भव्यता में प्राकृति के उदारता के प्रभाव और सान्निध्य से ही हर आयु और पृष्ठभूमि के पर्यटक और भ्रमणकर्ता प्रकृति के निकट आ सकते हैं और इन्हें पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने और पर्यावरण का दोस्त बने रहने के लिए शिक्षित और प्रेरित किया जा सकता है। पर्यटन पर्यावरण के रखवाले के रूप में कार्य कर सकता है। उदाहरणार्थ फूलों की घाटी पर्यटकों की धूमधाम के कारण ही फूलों की घाटी के रूप में प्रसिद्ध है। यदि वहाँ पर्यटन पर प्रतिबंध लगा दिया जाए तो वह बरबाद हो जाएगा और चारागाह मात्र बन कर रह जाएगी।

पर्यटन के विकास के लिए संस्थागत योजना मुख्यत: स्थल नियोजन पर विशेष बल देती है। पर्यटन प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों की पहचान और सुरक्षा पर आधारित होता है और यह सुविधाओं की उपलब्धता पर भी निर्भर होता है। इसका एक असाधारण उदाहरण साऊथ कैरोलीना प्योरटोश्री को और लोरिडा में रिजॉर्ट कॉम्पलेक्स व्यापार संस्थान है। यह पर्यटन का अभिन्न अंग होने के साथ-साथ संरक्षण का ख्याल भी रखता है। इसका एक विशेष प्रभाग 'पर्यावरणीय व्यवस्था के विकास' की ही देखरेख करता है।

यदि पर्यटन अच्छी तरह से आयोजित, विकसित एवं प्रतिबंधित हो तो वह महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न कर सकता है। मसलन,

- महत्वपूर्ण प्राकृतिक क्षेत्रों, समुद्री पर्यावरण सहित वन्य प्राणियों और राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय उद्यानों और अभयारण्यों के संरक्षण और विकास के लिए धन उपलब्ध कराने में सहयोग देता है क्योंकि यही पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षण है। ऐसे देशों में जहाँ संसाधन सीमित है यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं।
- पर्यटकों के लिए आकर्षणों के रूप में पुरातत्वीय एवं ऐतिहासिक स्थानों के संरक्षण को न्यायसंगत ठहराने और उसके लिए धन उपलब्ध कराने में सहयोग देता है। अन्यथा इसमें से बहुत से स्थान क्षतिग्रस्त हो जाते या लुप्त हो जाते। यहाँ तक कि कस्बे या नगर के सारे ऐतिहासिक इलाकों को पर्यटन के लिए संरक्षित और विकसित किया जा रहा है।
- क्षेत्र के पर्यावरणीय गुण को सुधारने में सहयोग देता है क्योंकि पर्यटक ऐसे स्थानों पर जाना चाहते हैं जो आकर्षक, स्वच्छ और प्रदूषण रहित हो। पर्यटन वायु, जल, ध्वनि और दृष्टि प्रदूषण को नियंत्रित करने, संकुलन कम करने और आकर्षक प्राकृतिक क्षेत्रों और सुंदर भवनों का निर्माण करने की प्रेरणा देता है। अच्छी जगह एवं अच्छी तरह परिकल्पित पर्यटक सुविधाएं स्वयं ही शहरी एवं ग्रामीण दोनों जगहों के पर्यावरण को आकर्षक बना सकते हैं। अधिसंरचनात्मक सुविधाओं, विशेष रूप से जल आपूर्ति, मल जल निकास और ठोस अपशिष्ट निपटारे में सुधार, पर्यावरणीय गुणों को उनन्त करने में मदद करता है।
- जब स्थानीय निवासी, विशेषकर नवयुवक, संरक्षण में पर्यटकों की अभिरुचि देखते हैं तो स्थानीय पर्यावरणीय जानकारी में वृद्धि होती है। तब वह अपने क्षेत्र में संरक्षण के महत्व को पूर्णरूप से समझाना प्रारंभ करते हैं।

(राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय पर्यटन योजना)

बोध प्रश्न 2

1) वन्य प्राणी उद्यान किस प्रकार प्रभावी संरक्षण और पर्यटन में योगदान देते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यावरणीय भंगुरता वाले क्षेत्रों में पर्यटन पर प्रतिबंध नहीं लगाना चाहिए। टिप्पणी कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

15.5 सारांश

स्थल एवं स्थलीय योजना पर्यटन की महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं। योजना बनाना लगभग वैज्ञानिक प्रक्रिया हो चुकी है। नियंत्रित पर्यटन आज की आवश्यकता है। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए पर्यटकों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना समय की माँग के प्रतिकूल है। वास्तव में पर्यटन संरक्षण का दोस्त है उसका दुश्मन नहीं, वन्य प्राणियों के राष्ट्रीय उद्यानों से यह सिद्ध हो चुका है। यह भी देखने में आया है कि यदि पर्यटक न होते तो कुछ स्थानों पर संरक्षण कार्य नहीं होता। इन क्षेत्रों में पर्यटन पर्यावरण के रखवाले के रूप में कार्य करता है। अतः पर्यावरण के संरक्षण के साधन के तौर पर पर्यटन को प्रभावशाली बनाने के लिए किसी विशेष पर्यटन स्थल को स्थल की प्रकृति और स्थिति के अनुसार योजनाबद्ध करना उपयोगी सिद्ध होता है।

15.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) पर्यटन नियोजन पर्यावरण एवं संस्कृति की सुरक्षा में सहायक हो सकता है और पर्यटन तथा पर्यावरण के मध्य संतुलन स्थापित करता है। देखिए भाग 15.2

2) किसी विशेष पर्यटन स्थल की योजना बनाते समय वहाँ की प्रकृति, भंगुरता और पर्यावरणीय माँगों में विषय में जानकारी होना महत्वपूर्ण है। देखिए भाग 15.3

बोध प्रश्न 2

1) राष्ट्रीय उद्यान और वन्य प्राणियों के अभयारण्य बड़े पैमाने के संरक्षण कार्यक्रम का हिस्सा हैं। वह संरक्षण और पर्यटन दोनों के प्रेरणा स्रोत हैं। इसके साथ ही वह अपने नैरन्तर्य और उत्तरजीविता के लिए पर्यटन द्वारा प्रदत्त आय पर निर्भर रहते हैं। देखिए भाग 15.3

2) देखिए भाग 15.1 एवं 15.4

इकाई 16 असमान क्षेत्रीय/राष्ट्रीय योजना

इकाई की रूपरेखा

16.0 उद्देश्य

16.1 प्रस्तावना

16.2 क्षेत्रीय असंतुलन के कारण

16.2.1 प्राकृतिक असंतुलन

16.2.2 कृत्रिम असंतुलन

16.2.3 ऐतिहासिक कारक

16.3 संतुलित पर्यटन योजना

16.3.1 नीति की आवश्यकता

16.4 संतुलित विकास के लिए दिशा निर्देश

16.5 सारांश

16.6 शब्दावली

16.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

16.0 उद्देश्य

पर्यटन विकास और क्षेत्रीय योजना के साथ उसका संबंध नाटकीय परिवर्तन के दौर में हैं। हम जानते हैं कि विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्राकृतिक संसाधन होते हैं। ये विविधताएं ऐतिहासिक एवं सामाजिक मतभेदों के साथ मिलकर असंतुलित क्षेत्रीय आर्थिक विकास का कारण बनती हैं। स्वतंत्रता के पश्चात पर्यटन विकास के लिए अनुकूल वातावरण के विकास पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। नदियों का जल और समुद्री तटीय क्षेत्र प्रदूषित हो चुके हैं और वनों को अनियोजित ढंग से काटा गया है। शहरी पर्यावरण घुटन में परिवर्तित हो चुका है और ग्रामीण समूह बीमारी गरीबी और लूटमार से त्रस्त हैं। यह स्पष्ट है कि क्षेत्रीय असंतुलन से या तो प्राकृतिक एवं मानव संसाधनों का कम उपयोग होता है या बिलकुल उपयोग नहीं होता। इसका परिणाम यह है कि विकास में पिछड़े हुए क्षेत्रों और विकसित क्षेत्र के मध्य अंतर बढ़ता जा रहा है। संतुलित क्षेत्रीय विकास प्राय: क्षेत्र के संसाधनों का अनुकूलतम एवं उचित उपयोग बनाए रखता है। यह निवासियों को आर्थिक विकास का पूरा लाभ भी देता है। अत: इस इकाई में हमारा उद्देश्य आपको :

- असंतुलन की समस्याओं से अवगत कराना है,
- इन असमानताओं को न्यूनतम कर देने की विधियों को समझाना है,
- उचित नीति और दिशा निर्देश के महत्व को पूरी तरह समझाना है;
- संतुलित आर्थिक विकास के क्षेत्रों में पर्यटन की संभावनाओं की जानकारी देना है, और
- क्षेत्रीय/राष्ट्रीय पैमाने पर नकारात्मक प्रभाव रहित पर्यटन को व्यावसायिक रूप में बढ़ावा देने के लिए तैयार करना है।

16.1 प्रस्तावना

क्षेत्रीय विकास की अवधारणा को निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है : विभिन्न भौगोलिक खंडों के मध्य इस प्रकार समानता लाने का व्यवस्थित एवं आयोजित प्रयास करना चाहिए कि निम्नलिखित क्षेत्रों में अधिक अन्तर न हो।

- प्रतिव्यक्ति आय,
- मजदूरी और माल की उपलब्धता,
- कृषीय और औद्योगिक उत्पादन,
- रोजगार के अवसर, एवं
- सामान्य जीवन स्तर (अधिसंरचनात्मक सुविधाओं सहित)

इस प्रकार के समानता के प्रयासों की अन्तर्निहित ऐतिहासिक एवं स्थलीय कारकों के कारण कुछ क्षेत्र अन्य क्षेत्रों की तुलना में सदैव लाभ की स्थिति में रहेंगे। हमें केवल यह करना है कि हम आवश्यक बाह्य सहायता दें ताकि अन्य क्षेत्रों का भी विकास किया जा सके। पर्यटक केन्द्रों के रूप में पिछड़े हुए क्षेत्रों के विकसित होने के मार्ग में अधिसंरचनात्मक सुविधाओं जैसे सड़कों, रेल, एवं वायुमार्गों, टेलीफोन र टेलेक्स आदि की सुविधाओं का अभाव सबसे बड़ी बाधा है।

अब यह समझा जा रहा है कि अल्प विकसित प्रदेश को आयोजित कार्यक्रमों और नीतियों के द्वारा अत्यधिक उन्नत किया जा सकता है। खजुराहो इसका ज्वलंत उदाहरण है। लगभग चालीस वर्ष पूर्व खजुराहो एक अलग-थलग और अज्ञात गाँव था। आज वह विश्व के पर्यटन मानचित्र पर स्थान निर्धारित कर चुका है और प्रतिवर्ष हजारों पर्यटकों को आकर्षित करता है। पर्यटक सारे वर्ष वायु, रेल और सड़क परिवहन से नवीं से तेरहवीं शताब्दी ई. के मध्य निर्मित चन्देल राजाओं के वास्तुशिल्पीय अद्भुत मंदिर और श्रृंगारिक मूर्तियों को देखने के लिए आते हैं। परिणामस्वरूप इस स्थान ने स्थानीय लोगों को रोजगार दिलाया है और इस प्रकार क्षेत्रीय असंतुलन को किसी हद तक सुधारने का प्रयास किया है।

इस तरह ऐसे ही बहुत से विभिन्न महत्ववाले क्षेत्र जहाँ कच्चे माल या अन्य संसाधनों के अभाव में औद्योगिक विकास संभव नहीं हो पाया है उन्हें उचित योजनाओं द्वारा विकसित किया जा सकता है। इस प्रकार के विकास से अप्रशिक्षित श्रमिकों को नौकरियाँ मिलेंगी और इस प्रकार क्षेत्र समृद्ध होगा।

आनेवाले भागों में हमने इसी संदर्भ में विशेष रूप से राष्ट्रीय परिदृश्य में क्षेत्रीय असमानताओं का लेखा जोखा लिया है। हमने कुछ के लिए पर्यटन योजना की दृष्टि से विकास संभावनाओं के सुझाव भी दिए हैं।

16.2 क्षेत्रीय असंतुलन के कारण

आमतौर से यह समझा जाता है कि पर्यटन विकास क्षेत्रीय असंतुलन उत्पन्न करता है। हालाँकि स्थिति इससे थोड़ी भिन्न है। पर्यटन का उपयोग क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखने में किया जा सकता है। अगले भाग में हम इस पर विचार विमर्श करेंगे। यहाँ हम केवल ऐसी असमानताओं के कारणों के विषय में सविस्तार बात करेंगे। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से हमने कार्यरत कारकों को तीन सामान्य वर्गों में विभक्त कर दिया है।

16.2.1 प्राकृतिक असंतुलन

विभिन्न प्रदेशों के संभावित पर्यटन क्षेत्रों में प्राकृतिक, मानवीय और अन्य स्थलीय लाभों जैसे संसाधनों का वितरण असमान है। यहाँ तक कि समान संसाधनों वाले क्षेत्र प्राकृतिक दृश्य, स्थलाकृति जलवायु परिस्थितियों आदि की दृष्टि से भिन्न हो सकते हैं। बेहतर स्थिति वाले क्षेत्रों में विकास या प्रगति ज्यादा होती है। इस प्रकार विकास की प्रक्रिया सर्वप्रथम ऐसे क्षेत्रों में प्रारंभ होती है जो प्राकृतिक आकर्षणों या लाभों से सम्पन्न हैं। जैसे-जैसे विकास की प्रक्रिया आगे बढ़ती है वैसे वैसे अधिसंरचनात्मक सुविधाओं, बाजार, कुशल कारीगरों आदि के उपलब्धता के कारण निवेश के अवसर और पर्यटकों की गतिशीलता बढ़ती है। इस प्रकार के विकास के कारण कम विकसित या अविकसित

क्षेत्रों के संसाधनों का स्थानान्तरण विकसित हो रहे क्षेत्रों की ओर होने लगता है। इस प्रकार पिछड़े हुए क्षेत्रों का संसाधन धीरे-धीरे निष्कासित होते रहता है और विकसित क्षेत्र इन पिछड़े क्षेत्रों की कीमत पर सम्पन्न होते रहते हैं। सुविधा सम्पन्न देशों और प्रतिकुल परिस्थितियों वाले देशों के मध्य विकास के प्रत्येक चरण के साथ अन्तर बढ़ता जाता है। परंतु एक संभावना यह भी है कि विकसित क्षेत्र अपने अविकसित प्रदेशों के विकास के लिए अवसर पैदा करें। किंतु जिस अन्तर की हम बात कर रहे हैं वह फिर भी बना रहेगा।

16.2.2 कृत्रिम असंतुलन

कृत्रिम असंतुलन उन नीति बनाने वालों के कारण होता है जो जाने अनजाने विकासीय योजना बनाते समय या उसके कार्यान्वयन में क्षेत्रीय संसाधनों पर अधिक ध्यान नहीं देते। आमतौर से असंतुलित नीतियाँ बनाने वालों के पक्ष में लोग यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि सीमित संसाधनों और क्षेत्र में उनके असमान वितरण के कारण एक ही समय में उसी प्रकार या उसी पैमाने पर प्रत्येक क्षेत्र को विकसित करना संभव नहीं है। इसके अलावा वे यह भी कहते हैं कि किसी विकासशील अर्थव्यवस्था में सीमित संसाधनों का ऐसे विकासशील केंद्रों की सीमित संख्या में निवेश उचित है जिनमें विकास की बेहतर सुविधाएं हैं। ऐसा निवेश आस पास पिछड़े हुए क्षेत्रों को विकसित करने के लिए पर्याप्त अधिशेष एकत्र करेगा। यह एक ओर तो आर्थिक क्षमता को बनाए रखने में सहयोग देगा और दूसरी ओर संसाधनों के अधिकतम उपयोग को सुनिश्चित करेगा। इस प्रकार की विकास नीति में कुछ क्षेत्रों की सहायता की जाती है और अन्य कुछ क्षेत्रों के विकास को लंबे समय तक के लिए स्थगित कर दिया जाता है। यहाँ तक कि पहले चुने गए क्षेत्र का विकास पूरा हो जाने के बाद भी आस पास के पिछड़े हुए क्षेत्रों को विकसित करने का कोई गंभीर प्रयास नहीं किया जाता। इसका परिणाम यह निकलता है कि क्षेत्रों के मध्य अंतर बढ़ता जा रहा है और इसके कारण क्षेत्रीय असंतुलन को बढ़ावा मिलता है।

16.2.3 ऐतिहासिक कारक

क्षेत्रीय असंतुलन ऐतिहासिक कारकों से भी पैदा होता है जिसका कारण कुछ क्षेत्रों की आरंभ में प्राप्त सुविधाओं और लाभों या औपनिवेशिक शासन काल में चलाए गए अनियोजित सार्वजनिक कार्यक्रमों को बताया जाता है। जिन क्षेत्रों की ओर विभिन्न शासकों या प्रशासकों का ध्यान गया वे तीव्र गति से विकसित हुए और इस प्रकार विकसित क्षेत्र बन गए। महानगरों जैसे बम्बई (मुम्बई) कलकत्ता, दिल्ली और मद्रास (चेन्नई) के विकास का अधिक श्रेय ऐतिहासिक कारकों को दिया जा सकता है। इस वास्तविकता का हमें ज्ञान है कि 1912 से पूर्व बंगाल, बिहार और उड़ीसा सामुहिक रूप से बंगाल प्रदेश कहे जाते थे। कुछ ऐतिहासिक कारणों से बंगाल ने ब्रिटिश सरकार का साधन आकर्षित किया किंतु प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों से समृद्ध बिहार उपयुक्त ध्यान अपनी ओर नहीं खींच सका। परिणामस्वरूप बिहार और उड़ीसा की तुलना में बंगाल में विकास की गति बहुत तीव्र थी। यह एक महत्वपूर्ण कारक है जिसने बिहार को आज भी भारत का पिछड़ा हुआ प्रदेश बनाए रखा। अत: अत्यधिक समृद्ध प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत से सम्पन्न होने के बावजूद बिहार में पर्यटन का न्यूनतम विकास हुआ।

बोध प्रश्न 1

1) क्षेत्रीय असंतुलन से आप क्या समझते हैं ? इनपर चार पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) असमान विकास के लिए मानव को कहाँ तक उत्तरदायी माना जा सकता है ? बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

16.3 संतुलित पर्यटन योजना

किसी क्षेत्र के संतुलित सामाजिक विकास के लिए उचित योजना की आवश्यकता होती है। इसे विवेकपूर्ण रूप से संसाधनों के अधिकतम उपयोग पर आधारित होना चाहिए। ताकि अधिक से अधिक पर्यटक आकर्षित हो सकें किंतु इसमें आस पास के क्षेत्रों को नुकसान नहीं पहुँचना चाहिए। हम जानते हैं कि पर्यटन उद्योग में पिछड़े हुए क्षेत्रों तक में रोजगार और आर्थिक विकास उत्पन्न करने की पर्याप्त संभावना है। यदि हम इस संभावना को सही दिशा दे सकें तो इससे क्षेत्रीय असंतुलन को कम करने में मदद मिलेगी। होटलों, रेस्तरॉं, पर्यटक दुकानों ट्रैवेल एजेंसियों और परिवहन में प्रत्यक्ष रोजगार उत्पन्न करने के अतिरिक्त यह उद्योग सहायक क्षेत्रों, जैसे हथकरघा, हस्तशिल्प, कला एवं कौशल, चीनी के बर्तन का उपयोग, साज समान उद्योग और अन्य कई उद्योगों में रोजगार के अवसर उपलब्ध करकर गुणक रोजगार प्रभाव उत्पन्न करता है।

एक बार जब पर्यटक केंद्र पूरी तरह स्थापित हो जाता है तो यहाँ जन समूह, समान और धन का निरंतर प्रभाव होते रहता है। आंतरिक प्रभाव बढ़ने से क्षेत्र का विस्तार और फैलाव होता है और अनिवार्य रूप से पर्यटक अभिरुचि के नए उप-क्षेत्रों का विकास करता है। इन आकर्षण केंद्रों के चारों ओर विभिन्न रिहाइशी और समानों की आपूर्ति के क्षेत्र बन जाते हैं। स्थानीय जनता इससे नई और सुधरी हुई अधिसंरचनात्मक सुविधा के कारण अधिक लाभान्वित होंगे। इस प्रकार पर्यटन विकास के लिए एक सुव्यवस्थित एवं समग्र पर्यटन योजना की जरूरत होती है। निर्माण कर्ताओं को चाहिए कि वे अपने वर्तमान स्थानीय पर्यावरण की प्रकृति का मूल्यांकन करें क्योंकि उन्हें ऐसे परिवर्तन करने होंगे जिन्हें वह सामाजिक, संस्कृति और आर्थिक दृष्टि से लाभदायक समझते हैं। इसका कुल मिलाकर परिणाम अन्ततः अच्छे पर्यावरण और सशक्त पर्यावरण उद्योग के रूप में सामने आएगा।

16.3.1 नीति की आवश्यकता

उपर्युक्त परिचर्चा में हमने देखा कि पर्यटन किस प्रकार क्षेत्रीय असंतुलन को सुधारने में प्रभावी रूप से सहयोग दे सकता है। इसके साथ ही साथ इस बात की अत्यधिक आवश्यकता महसूस की गई थी कि वांछित परिणाम के लिए नीति संबंधी एक समुचित दृष्टिकोण अवश्य होना चाहिए। ऐसी नीति का बुनियादी जोर वृद्धि की दर को बढ़ाने की ओर होना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि अधिकतम और न्यूनतम विकास के क्षेत्रों के मध्य अन्तर बढ़ जाने की अपेक्षा वे एक दूसरे के निकट आ जाएँ। योजना यह होनी चाहिए कि क्षेत्र विकास की ऐसी स्थिति में पहुँच जाएँ जहाँ वह आत्म निर्भर हो सकें, बचत उत्पन्न कर सकें, बाहर से पूँजी आकर्षित कर सकें और इस प्रकार अपने आप बढ़ना प्रारंभ कर सकें।

चूंकि पिछड़े हुए क्षेत्रों की संख्या बहुत अधिक होगी इसलिए सीमित संसाधनों को सारे क्षेत्रों में वितरित करना लाभप्रद नहीं होगा। संसाधनों का काम वितरण इन क्षेत्रों के विकास पर कोई विशेष प्रभाव नहीं डालेगा। बड़े पैमाने पर विकास के लिए सीमित संख्या में क्षेत्रों का चुनाव करना होगा। ऐसा विशेषज्ञों

के दल द्वारा क्षेत्र सर्वेक्षण कर के ही किया जा सकता है। इस दल में पर्यावरण संरक्षक जीव वैज्ञानिक, पर्यावरणीय भूगर्भशास्त्री, मानवशास्त्री और पर्यटन नियोजक आदि सम्मिलित होने चाहिए ताकि वे प्राकृतिक क्षेत्रों की प्रथम सूची तैयार कर सकें। अनेक प्रकार के प्राकृतिक क्षेत्रों को चुनना जाना चाहिए जिनमें वह भी शामिल हों जिन्हें बिना अस्त व्यस्त किए बनाए रखना है, जो सदैव से वन प्रांत हैं और जहाँ जनता की पहुँच सीमित हो और वह क्षेत्र भी जिन्हें बड़े पैमाने पर मनोरंजन और अन्य विविध सुविधाओं के लिए संरक्षित करना है। यदि ऐसी नीतियाँ कार्यरत हों तो तीव्रगामी पर्यटन विकास और संतुलित क्षेत्रीय विकास के उद्देश्यों को समझने में कम ही समस्याएं सामने आएंगी। चूंकि तीव्रगामी विकास से बड़े पैमाने पर अधिशेष उत्पन्न होगा इसलिए संसाधनों को पिछड़े हुए की ओर भेजने की क्षमता और बढ़ जाएगी। विभिन्न क्षेत्रों के रहन सहन के स्तरों में बढ़ते हुए अन्तर को कम करने के लिए विकास के क्रमिक कार्यक्रम को सूत्रबद्ध करना पड़ेगा।

16.4 संतुलित विकास के लिए दिशा निर्देश

पिछले भाग की विवेचना के आधार पर स्पष्ट रूप से यह समझ लिया गया है कि देश के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक पर्यटन के समरूप विकास होना चाहिए। यहाँ इस संदर्भ में हम कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दे रहे हैं। हमारा यह सुझाव आदेशात्मक नहीं है किंतु हम सामान्य रूप से पर्यटन विकास के कार्यक्रम में निम्नलिखित उपाय सम्मिलित कर सकते हैं :

- कृषि और उद्योग के संसाधनों से रहित किंतु पर्यटन की संभावनाओं की दृष्टि से समृद्ध क्षेत्रों को पहले चुना जाना चाहिए और तब इनमें पर्यटन विकास के आर्थिक लाभों को मूल्यांकित करना चाहिए। इस मूल्यांकन के आधार पर इन पिछड़े हुए क्षेत्रों के लिए पर्यटन मास्टर प्लान बनाना चाहिए और इसके लिए प्राथमिकताएं और जरूरी साधनों का निर्धारण करना चाहिए।
- सबसे पहले अत्यंत पिछड़े हुए क्षेत्र को विकास के लिए चुनना आवश्यक नहीं है। चुनाव उनके विकासीय संभावना पर आधारित होना चाहिए। जल की आपूर्ति, ऊर्जा, परिवहन और संचार तथा पर्यटक आकर्षणों जैसे ऐतिहासिक स्थल और प्राकृतिक आकर्षण आदि के अनुसार प्राथमिकता निर्धारित की जानी चाहिए।
- जहाँ तक संभव हो योजना बनाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि स्थानीय जनता के जीवन स्तर और पर्यटकों के रहन सहन में बहुत फर्क न आ जाए।
- केवल लाभ कमाने के लिए पर्यटन योजना को पूर्ण रूप से निजी उद्यमों को नहीं सौंप देना चाहिए। सरकार को इसमें सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।
- स्थानीय लोगों के सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन के आधार को बनाए रखने और बढ़ावा देने पर बल दिया जाना चाहिए जिसमें क्षेत्रीय संसाधनों की सुरक्षा और उपयुक्त रूप से उपयोग सम्मिलित होने चाहिए।
- क्षेत्रीय पर्यटक परिषदों या अन्य संस्थाओं को इन्हीं सिद्धांतों पर संगठित किया जाना चाहिए ताकि क्षेत्र के पर्यटक की स्वभावगत गतिविधियों को समन्वित किया जा सके और उन क्षेत्रों के साथ जो इसी प्रकार के कार्य में लगे हुए हैं संबंध बनाकर रखा जा सके।

बोध प्रश्न 2

1) क्षेत्रीय असमानताओं को कम से कम करने में पर्यटन कहाँ तक सहयोग दे सकता है ? संक्षिप्त में टिप्पणी कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) किसी पिछड़े हुए क्षेत्र में पर्यटन के विकास के लिए नीति की क्यों आवश्यकता होती है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) संतुलित विकास के लिए कुछ सुझाव दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

16.5 सारांश

पर्यटन योजना के तहत मात्रा में उपलब्ध संसाधनों को बाँटने का प्रयास किया जाता है ताकि उत्पादन, आय और रोजगार को अधिकतम सीमा तक बढ़ाया जा सके और उसके साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में संतुलित विकास सुनिश्चित करने का प्रयास किया जा सके। हमारे देश में वर्तमान स्थिति यह स्पष्ट करती है कि प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संसाधनों में समृद्ध होते हुए भी ये क्षेत्र पिछड़ते जा रहे हैं और विकास के किसी गंभीर सचेत प्रयास, उद्यम शीलता तथा प्रेरणा के अभाव में यह पिछड़ापन बढ़ता जा रहा है। अब विकास नीति निर्माताओं को चाहिए कि पिछड़े क्षेत्रों के लिए संतुलित विकास और निरंतर बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था के आधार पर उचित विकासीय कार्यों की योजना बनाएं और कार्यान्वयन का सच्चा और वास्तविक प्रयास करें। पर्यटन उद्योग में स्थानीय लोगों के लिए नए-नए अवसर उपलब्ध कराने की अपार क्षमता है जिसका उपयोग करके वे अपना जीवन स्तर ऊपर उठा सकते हैं।

16.6 शब्दावली

स्थगन : उपयोग में न रहने की स्थिति

सहायक : अतिरिक्त सहायता देने वाला

गुण : उद्देश्य से किए गए किसी कार्य का फल

चालन : किसी अच्छे परिणाम के लिए उचित परिस्थिति प्रदान करना

लूटमार : क्षति पहुँचाने का कार्य

विकास क्षेत्र	:	अत्यधिक बेरोजगारी का क्षेत्र जहाँ सरकार कई नौकरी के अवसर पैदा करने के लिए नए उद्योगों को प्रोत्साहित करती हैं।
पिछड़े प्रदेश	:	किसी प्रदेश का क्षेत्र जो शहर से दूर है और आर्थिक रूप से विकसित नहीं है।
जोखिम	:	खतरे में डालना
दुखी	:	कोई वस्तु अप्रिय अथवा अनचाही स्थिति में रहती हो
अनुकूलतम	:	अत्यंत लाभदायक
संभावना	:	विकसित होने और टिके रहने की क्षमता
निष्क्रिय	:	तदनुसार विकसित न होना
प्रेरणा	:	कोई ऐसी बात जो विकास में सहायक हो
घुटन	:	व्याकुल करने वाली गर्मी और ताजी हवा का अभाव

16.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 16.1

2) देखिए भाग 16.2

बोध प्रश्न 2

1) देखिए भाग 16.3

2) देखिए उपभाग 16.3.1

3) देखिए भाग 16.4

इकाई 17 विकल्प

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य

17.1 प्रस्तावना

17.2 पर्यटन में संरक्षण

- 17.2.1 अपनापन
- 17.2.2 नियंत्रण के उपाय
- 17.2.3 आत्म प्रबंधन
- 17.2.4 मनिला उद्घोषणा

17.3 विकल्प : कुछ उपाय

17.4 सारांश

17.5 शब्दावली

17.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

17.0 उद्देश्य

पर्यटन और विकास के साथ उसके संबंध आजकल गहन विचार विमर्श के विषय बने हुए हैं। पिछले दिनों पर्यटन राजस्व उत्पन्न करने वाले उद्योग के रूप में उभरा है। किंतु इसका प्रभाव विशेषकर हमारे संसाधनों पर जबरदस्त रहा है और परिणामस्वरूप इसने प्रकृति के संरक्षण के सम्मुख गंभीर रूप से विचार विमर्श प्रारंभ कर दिया है। फिर भी इस बात पर बड़ी उलझन है कि यह क्या है और इसे कैसे प्राप्त किया जाए। इस विचार विमर्श में जो मौलिक दोष हैं वह है मानवीय आर्थिक विकास के विषय में जानकारी का अभाव जो सम्पूर्ण रूप से प्रकृति के भौतिक एवं जैविक संसाधनों के सुव्यवस्थित विकास पर निर्भर हैं। इन विषयों को ध्यान में रखकर इस इकाई में हमारा उद्देश्य आपको :

- संरक्षण का अर्थ समझाना है,
- संरक्षण के प्रयासों में आनेवाली बाधाओं से आपको अवगत कराना है,
- यह अनुभव कराना है कि किस प्रकार पर्यटन को संरक्षण के साधन के रूप में उपयोग में लाया जा सकता है,
- नीतिपरक निर्णयों के कार्यक्रम बनाने में विशिष्ट प्रशिक्षण की आवश्यकता के विषय में जानकारी देना है,
- इस इकाई से प्राप्त आवश्यक जानकारी का उपयोग करना सिखाना है।

17.1 प्रस्तावना

समस्त मानवीय क्रियाएं समाज और जैव भौतिक विश्व के कुछ विशेष प्रकार के संबंधों के बीच सम्पन्न होती हैं। जब ऐसी क्रियाएं प्रकृति की अपनी क्रियाओं की अपेक्षा छोटे पैमाने पर होती हैं तो जैव भौतिक विश्व पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता किंतु जब प्रकृति के टिकाऊपन की क्षमता की सीमा को उपेक्षा करते हुए बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप हो तो परिस्थिति अत्यंत गंभीर हो जाती है। यही कारण है कि पर्यटन को प्राकृतिक संसाधनों के विकास का दोषी ठहराया जाता है और उस पर स्थानीय लोगों

के सामाजिक सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित करने का अभियोग भी लगाया जाता है। पर्यटन इस क्षति के लिए केवल एक सीमा तक ही उत्तरदायी है। इस रूप में इस नुकसान की जिम्मेवारी पर्यटन पर न होकर अनियोजित विकास या विकास की खराब योजना बनाने वाले नीति निर्माताओं पर होती है।

पर्यटन संबंधी अधिसंरचनात्मक सुविधाओं जैसे होटल, रेस्तरां दुकाने, ट्रैवेल एजेंसियां आदि का अव्यवस्थित केन्द्रीकरण स्थानीय लोगों के अधिकांश निवास स्थानों के विस्थापन के अतिरिक्त परिवहन संकुलन, नागरिक सुविधाओं में कमी और नवीकृत हो जाने वाले और नवीकृत न हो सकने वाले संसाधनों के अभाव का कारण बना। इन सारी बातों का संभावित दुष्प्रभाव विशेषत: उन्हीं बातों पर पड़ेगा जिन्होंने प्रारंभ में मनोरंजन के लिए पर्यटकों को आकर्षित किया था। इसीलिए आज यह प्रश्न पूछा जाता है कि क्या पर्यटक पर्यटन को नष्ट कर देंगे ?

अब जरूरत इस बात की है कि समय निकलने से पहले इस विषय पर गंभीरतापूर्वक विचार किया जाए। सुव्यवस्थित योजना बनाकर और उसके सावधानीपूर्वक कार्यान्वन के द्वारा मौजूदा परिदृश्य को बदला जा सकता है। हम जानते हैं कि पर्यटन उद्योग में अपार संभावनाएं हैं जिन्हें संरक्षण के साधन के रूप में उपयोग में लाया जा सकता है और प्राकृतिक सम्पदा के बिना बाधा को सुनिश्चित किया जा सकता है। इसकी भूमिका की यहाँ विगत अनुभवों, प्रमाणों और कार्य योजना की बुद्धिमता के आधार पर जाँच करेंगे।

17.2 पर्यटन में संरक्षण

इस भाग में हम विवेचनात्मक दृष्टि से विश्लेषण करेंगे कि पर्यटन हमारे संसाधनों का संरक्षण किस प्रकार कर सकता है। किंतु इस पर विचार करने से पहले सर्वप्रथम हमें संरक्षण का अर्थ समझ लेना चाहिए। मोटे रूप से और हमारे इस विचार विमर्श के अनुरूप संरक्षण का अर्थ निम्नलिखित दो तत्वों पर आधारित होगा:

1) संरक्षण हमारे प्राकृतिक संसाधनों को चाहे वह नवीकरण योग्य हों या नवीकृत नहीं किए जा सकें नष्ट या क्षतिग्रस्त होने से बचाने की एक विधि है। चूंकि प्राकृतिक संसाधन सीमित है उनका अविवेकपूर्ण उपयोग तीव्र अभाव और समाप्ति का कारण बन सकता है। इसी कारण पारिस्थितिक वैज्ञानिक एक पर्यावरण के तहत समस्त जीवों की परस्पर निर्भरता के महत्व पर बल देते हैं।

2) यहीं जीवन की सम्पूर्णता की अवधारणा का महत्व हैं। इसके अनुसार जीवित और अजीवित घटकों को एक साथ मिलाकर सम्पूर्ण का निर्माण होता है जो भौतिक एवं जैविक नियमों के अनुसार नियंत्रित होते हैं। यह प्राकृतिक संसाधनों के साथ मानवीय आदान-प्रदान का अध्ययन भी करता है और समन्वित व्यवस्था के एक अंग के रूप में इसके उपयोग में प्रौद्योगिकी का प्रयोग भी किया जाता है। पर्यावरण का संरक्षण और उसका मानव निर्मित वस्तुओं के साथ एकीकरण पर्यटकों को लगातार आकर्षित करते रहने और उस स्थल की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए अनिवार्य है। इसके लिए सुरक्षित रखे गए क्षेत्र में कम से कम घुसपैठ को अनुमति दी जानी चाहिए और भविष्य में उपयोग के लिए प्रकृति के अधिकतम संरक्षण पर बल देना चाहिए।

आजकल क्षेत्र विशेष की आर्थिक समस्याओं को दूर करने के लिए जन पर्यटन को एक सम्पन्न साधन के रूप में देखा जा रहा है। इससे संसाधनों का संरक्षण भी हो सकेगा। विकसित देशों में पर्यटन की बढ़ी हुई माँग से विदेशी मुद्रा अर्जन भी हो सकता है। अधिसंरचनात्मक सुविधाओं जैसे होटलों, रेस्तरां, शापिंग कॉम्प्लेक्सों और परिवहन सुविधाओं में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में वृद्धि की आशा भी है। इस प्रकार पर्यटन में श्रम की माँग बढ़ेगी और इससे कुशल एवं अकुशल दोनों प्रकार की श्रेणियों में रोजगार उत्पन्न किया जा सकेगा। यहाँ तक कि कम विकसित क्षेत्रों में भी पर्यटन को आकर्षित करने वाली गतिविधियों के द्वारा रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जा सकते हैं। किंतु उचित प्रबंधन और स्थानीय लोगों की भागीदारी से ही ऐसा हो पाना संभव है। हम इन पक्षों की विवेचना आगामी उपभागों में करेंगे।

17.2.1 अपनापन

पर्यटन से संबंधित नीतियाँ निर्धारित करते समय या योजना बनाते समय आम तौर से स्थानीय लोगों को सम्मिलित नहीं किया जाता। इससे पर्यटन स्थानीय परिवेश से अलग-थलग पड़ जाता है। यदि स्थानीय लोगों को प्रबंधन प्रक्रिया में सम्मिलित किया जाए तो उनमें निश्चित रूप से लगाव की भावना पैदा करेगा और परिणाम अच्छा निकलेगा। हम जानते हैं कि वन्य जीवन आरक्षित क्षेत्र से पर्यटन की आय में बढ़ोत्तरी हो सकती है। किंतु अभी तक इससे पर्याप्त लाभ स्थानीय लोगों तक नहीं पहुँच पाया है। यदि पर्यटन से प्राप्त आय का उचित अंश स्थानीय प्रबंध समितियों द्वारा रख लिया जाए तो लोगों में क्षेत्र और वन्य प्राणियों के आवास के महत्व के प्रति अधिक प्रेरित किया जा सकता है और फिर वह उनकी बरबादी में भागीदार नहीं बनेंगे जैसे अधिक घास चराने, लकड़ी काटने या गैर कानूनी शिकार करने में सम्मिलित नहीं होंगे। ऐसी योजनाएं जाम्बिया की लुआंग घाटी में प्रारंभ की गई है। स्थानीय लोग केवल वन्य प्राणियों के प्रबंधन में ही भाग नहीं लेते बल्कि वन्य प्राणी पर्यटन से काफी धन भी प्राप्त होता है जो स्थानीय समुदायों के पास रहता है। अनधिकृत शिकार में अचानक कमी इसका गंभीर और व्यापक परिणाम है। वन्य प्राणियों के संरक्षण के प्रति गाँववासियों का व्यवहार अधिक सकारात्मक हो गया है।

17.2.2 नियंत्रण के उपाय

पर्यटन विकास के लिए नियंत्रण के उपाय करने होंगे तभी संसाधनों का संरक्षण हो सकेगा। संसाधनों का उल्टा सीधा और अन्धाधुन्ध उपयोग का परिणाम सदैव नकारात्मक रहा है। अतः नियोजकों के लिए यह आवश्यक है कि संसाधनों के उपयोग में कुछ नियमितता के उपाय खोज लें। इस संदर्भ में उत्तरी अमेरिका का देश बर्मूडा सम्पूर्ण पर्यावरणीय नियंत्रण के मामले में एक असाधारण उदाहरण है। इसमें न केवल पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखा है बल्कि काफी हद तक पर्यटन उद्योग को बढ़ावा दिया है जिसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि जो उद्योग 1960 में लघु उद्योग के रूप में विकसित हुआ था आज उस देश का प्रमुख उद्योग है। यह बर्मूडा के सकल राष्ट्रीय उत्पादन का 45% प्रदान करता है। अधिकारी वर्ग केवल पर्यटक आकर्षण के विकास, अनुरक्षण और संचालन को ही बहुत महत्व नहीं देते हैं बल्कि वे पर्यावरण के सुरक्षा का उपाय भी करते हैं और स्थानीय विशेषताओं को पर्यटकों के अभिरुचि के रूप में बचाकर रखने का प्रयास भी करते हैं। योजना के सख्त नियमों के कारण नई द्वीप की वास्तुशिल्पीय शैली के अनुसार ही नई इमारतों का निर्माण किया जाता है। कोई परिवार एक से अधिक कार नहीं रख सकता और गति सीमा 20 मील प्रति घंटा ही रहती है। सुनियोजित नियोजन के कारण इसने प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण को क्षति पहुँचाए बिना समस्त समाज में आर्थिक लाभ वितरित किया है।

17.2.3 आत्म प्रबंधन

पर्यटन उद्योग एक विशिष्ट सेवा उद्योग है जो कार्यकर्ताओं और मालिकों के पुनर्गठन के द्वारा उच्चतर उत्पादकता और कार्यशीलता प्रदान कर सकता है जिसे सहकार्यकर्ताओं के आत्म प्रबंधन के रूप में जाना जाता है। सरकार आत्म प्रबंधन करने वाले संगठन या संयुक्त रूप से प्रबंधन करने वाले संगठन स्थापित कर सकती है। इन संगठनों में बोनस की व्यवस्था होती है और बोनस काम पर निर्भर करता है और दूसरी ओर पर्यटक बेहतर सेवाओं की आशा कर सकते हैं। एक बार जब उनके साथ अपने परिवारों के सदस्यों जैसा प्रेमपूर्ण और अपनेपन का व्यवहार किया जाता है तो वह फिर आना चाहते हैं या अन्य पर्यटकों को यहाँ की सुविधाओं से अवगत कराते हैं। इस प्रकार आय काफी बढ़ सकती है।

ऐसी सुविधाओं के लिए विशाल अधिसंरचनात्मक सुविधाओं की आवश्यकता नहीं है और इस प्रकार की सुविधाएं संरक्षण के प्रति मैत्रीपूर्ण भी होती हैं। इस नई व्यवस्था में बेरोजगारी या कम वेतन की समस्या नहीं होती। कार्यकर्ताओं में मानव और प्रकृति के मध्य संबंध को संतुलित करने के लिए एक

समझ और प्रेरणा पैदा होगी। इस तरह लोग अपने परिवेश को नष्ट नहीं होने देंगे। वे यह अनुभव करेंगे संसाधनों की सुरक्षा सर्वोच्च महत्व की बात है क्योंकि अपने स्थान की सुरक्षा जहाँ वह निवास करते हैं और अपने बच्चों का पालन पोषण करते हैं स्वयं उनके हित में है। स्वामित्व की प्रणाली के अधीन सुरक्षा के लिए वह अपने स्वामित्व के अधिकार का उपयोग कर सकते हैं। स्वास्थ्यवर्धक पेय एवं स्नान जल, स्वच्छ वायु और शांत आवास सहित समुद्र तट इस प्रकार की सुरक्षा प्रदान करती है जो पर्यटकों के लिए बुनियादी आकर्षण है। इस संदर्भ में हम जापानी मिन-शूकू व्यवस्था का हवाला दे सकते हैं।

जापान के मिन-शूकू लोगों के रहने का स्थान है। ये परिवार द्वारा प्रतिबंधित छोटे पैमाने की पर्यटन सुविधा है। इनमें कई कमरे होते हैं और यहाँ दो परिवार या पर्यटक ठहर सकते हैं। मेज़बान परिवार के सदस्य और प्रबंधक पर्यटकों का स्नेहपूर्ण स्वागत करते हैं और सरलता के साथ आपसी बातचीत से उनके साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित कर लेते हैं। आपसी बातचीत के दौरान यहाँ स्थानीय सूचनाएं आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं जो बड़े होटलों में अक्सर संभव नहीं होता। यदि वह मेज़बान परिवार को पसन्द करते हैं तो वह पुराने मित्रों की तरह दोबारा आ सकते हैं। पर्यटकों को दी गई ऐसी सुविधाएं कई कारणों से आदर्श सिद्ध हुई हैं। सर्वप्रथम तो यह कि इन्हें चलाने के लिए बहुत अधिक धन की आवश्यकता नहीं होती ओर दूसरे कि ये पारिस्थितिक दृष्टि से भी उपयुक्त होते हैं क्योंकि उनके लिए अधिसंरचनात्मक सुविधाओं की आवश्यकता नहीं होती। तीसरी बात कि स्थानीय लोगों एवं पर्यटकों के मध्य व्यक्तिगत सम्पर्क और आपसी तालमेल के द्वारा यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि संसाधनों की बरबादी या अन्धाधुन्ध उपयोग न हो।

पारम्परिक ग्रामीण समाजों में सामाजिक आर्थिक निर्णय सामाजिक आर्थिक एवं जनसंख्यकी कारकों की परस्पर जटिल आदान-प्रदान प्रक्रिया पर आधारित होते थे। परम्परा से प्राप्त अनुभव के आधार पर लोग संसाधनों का प्रबंधन कुशलता और विवेकपूर्ण ढंग से करते रहे थे। और इसके लिए एक दूसरे के साथ सहयोग करते रहे थे। किसी प्रकार की पर्यटन संबंधी गतिविधि की योजना बनाते समय स्थानीय लोगों को सम्मिलित करने का समय फिर से आ गया है। इसलिए पर्यटन और प्राकृतिक संसाधन विकास के क्षेत्रों में सहयोग और संगति को विस्तृत करने की आवश्यकता है। विवेकपूर्ण आधार पर नई वैज्ञानिक तकनीक का उपयोग लोगों के अविवेकपूर्ण व्यवहार को बदल सकता है और हमें अपने संसाधनों के अधिकतम उपयोग करने में मदद मिल सकती है। हमारे लिए यहाँ यह याद रखना चाहिए कि पर्यटन के लिए जो वृहद योजना या मास्टर प्लान बने वह जैव विविधता की मौलिक विशेषता को सदैव बनाए रखने में सहयोगी सिद्ध हो।

17.2.4 मनीला उद्घोषणा

सारे विश्व में अपने सामूहिक भविष्य को बचाने या संसाधन संरक्षण के प्रति चेतना जागृत हो चुकी है। पर्यटन उद्योग द्वारा अपनाए जाने वाले कार्यक्रम और नीति निर्धारण के विषय पर विश्व स्तरीय वाद विवाद चल रहा है ताकि संरक्षण को कायम रखते हुए लाभ उपलब्ध कराया जा सके। इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए विश्व पर्यटन संगठन (W.T.O) ने अक्टूबर 1980 में मनीला में अपना सम्मेलन आयोजित किया और उपस्थित सदस्यों में निम्नलिखित समझौते पर हस्ताक्षर किए :

मनुष्य के पर्यावरण के विभिन्न संघटकों की सुरक्षा, विकास और सुधार पर्यटन के सामंजस्यपूर्ण विकास का एक मूलभूतशर्त है। इसी प्रकार समझदार पर्यटन प्रबंधन मानवीय भौतिक पर्यावरण एवं संस्कृति विरासत की सुरक्षा और विकास में बड़े पैमाने पर योगदान दे सकता है और इसके साथ ही साथ मानव जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार आ सकता है। अत: यह उचित है कि पर्यटन विकास और स्वस्थ पर्यावरणीय प्रबंधन राष्ट्रीय विकास नीतियों का अभिन्न अंग होना चाहिए।

बोध प्रश्न 2

1) संसाधनों के संरक्षण से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यटन किस प्रकार संरक्षण से संबंधित है ?

.....

.....

.....

.....

.....

17.3 विकल्प : कुछ उपाय

संरक्षण का कार्य और वांछनीय वातावरण पैदा करना एक कठिन उद्देश्य बन गया है। अधिक ऊँची होती इमारतों, प्रदूषण, संसाधनों की बरबादी, घुटन आदि ने पर्यटन को बदनाम किया है। अत: यह आवश्यक है कि किसी पर्यटन विकास कार्यक्रम की योजना और नीति बनाते अपनाते समय ध्यान में रखने योग्य बातों पर सविस्तार विचार किया जाए। निम्नलिखित दिशा निर्देश सोच विचार के लिए प्रस्तुत हैं :

i) क्षमता के अनुरूप भूमि उपयोग का निर्धारण आवश्यक है। ऐसे क्षेत्र जिनमें पर्यटन संभावना है किंतु कृषीय एवं औद्योगिक संसाधनों का अभाव है उनकी पहचान कर के उन क्षेत्रों के आर्थिक लाभों का समय-समय पर मूल्यांकन करना चाहिए।

ii) पर्यटन विकास को संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग पर आधारित होना चाहिए। अत्यधिक उपयोग, जो संसाधनों के नष्ट या क्षय होने के कारण बन सकता है, की अनुमति किसी भी स्थिति में नहीं दी जानी चाहिए। पर्यटन विकास और समस्त पारिस्थितिकी के मध्य परस्पर संबंधों को महत्व देना चाहिए। वन्य प्राणियों, वनों, पर्वतों और समुद्री तटों के संरक्षण को वरीयता दी जानी चाहिए। नवीकृत हो सकने वाली ऊर्जा के साधन को महत्व दिया जाना चाहिए। दुर्लभ या नवीकृत न हो सकनेवाली ऊर्जा का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। वैज्ञानिक किंतु पर्यावरण के अनुकूल तकनीकों का संसाधनों के उपयोग के लिए इस्तेमाल करना चाहिए।

iii) पर्यटन विकास के व्यवस्थित प्रबंधन के लिए पर्यटन की उचित योजन और अन्य सम्बद्ध शाखाओं से उसका समन्वय आवश्यक है। स्थिति की लगातार देखभाल और समय-समय पर उसका मूल्यांकन किया जाना चाहिए जो कि हमें आनेवाले खतरे की सूचना दे सके। संरक्षण के स्वीकार्य नीतियों को सम्बद्ध क्षेत्र की संतृप्ति क्षमता को बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। मानवकृत और प्राकृतिक सम्पदा को सावधानी के साथ योजनाबद्ध करके एकत्र किया जा सकता है। और सख्त से सख्त माँग पूरी की जा सकती है।

iv) मनुष्य की मौलिक आवश्यकताओं को पूरा करने को सर्वोच्च वरीयता दी जानी चाहिए। ऐसा करते समय स्थानीय लोगों को निश्चित रूप से सम्मिलित करना चाहिए क्योंकि वह अपने संसाधनों का अधिक दक्षता के साथ प्रबंधन कर सकते हैं। इस प्रकार की भागीदारी से संसाधनों पर कम से कम दबाव पड़ता है और पर्यावरण की टिकाऊ उत्पादकता बनी रहती है।

v) पर्यटन को और अधिक क्षमतावान बनाने के लिए यह आवश्यक है कि व्यावसायिकता और प्रबंधन कौशल को इस उद्योग में बढ़ावा दिया जाए। विभिन्न स्तरों पर प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना की जा सकती है। ऐसा करने से संसाधनों के संरक्षण और पर्यटन के विकास के लक्ष्य को बेहतर ढंग से प्राप्त किया जा सकता है।

vi) क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों को उस क्षेत्र की संभावना और संपोषण क्षमता के अनुसार निर्धारित और वर्गीकृत करना चाहिए। हम निम्नलिखित पद्धति के अनुसार कार्य कर सकते हैं

प्रथम श्रेणी – ऐसे क्षेत्रों को सदैव के लिए अछूता छोड़ देना चाहिए। उनका किसी भी स्थिति में उपयोग नहीं करना चाहिए।

द्वितीय श्रेणी – ऐसे क्षेत्रों में सार्वजनिक प्रवेश सीमित होना चाहिए। उन्हें अर्द्ध-आरक्षित क्षेत्र घोषित करना चाहिए।

तृतीय श्रेणी – ऐसे क्षेत्रों का उपयोग मनोरंजन के लिए किया जा सकता है किंतु उल्टे सीधे ढंग से या अविवेकपूर्ण ढंग से उनका उपयोग नहीं करना चाहिए।

इस प्रकार के वर्गीकरण से न केवल संसाधनों की सुरक्षा में सहयोग मिलता है बल्कि उनकी पोषण क्षमता के साथ साथ उनके सौन्दर्य में भी वृद्धि होती है।

vii) संरक्षण के लिए निम्नलिखित क्षेत्रों में बढ़ावा देना आवश्यक है ·

- जैविक एवं सांस्कृतिक विविधता
- विकेंद्रीत योजना
- बहुल मूल्य व्यवस्थाओं का उपयोग
- सरल प्रौद्योगिकी, और
- देशी प्रबंधन का उपयोग

ऐसी नीतियों के प्रयोग से जीवन के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय पक्षों में मौलिक परिवर्तन होगा।

viii) संसाधनों के उपयोग के संदर्भ में हमारे दृष्टिकोण और नजरिया में परिवर्तन लाने की नितांत आवश्यकता है। मनोरंजनात्मक संसाधनों को प्रकृति की बहुमूल्य विरासत समझना चाहिए और उसका रूढ़िवादी तरीके से उपयोग नहीं करना चाहिए। अपने सामूहिक भविष्य के लिए अत्यंत बहुमूल्य सम्पदा के रूप में देखना चाहिए।

बोध प्रश्न 2

1) पर्यटन के विकास में आत्म प्रबधन की क्या भूमिका है ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) मनीला उद्घोषणा क्या है ?

.....

.....

.....

.....

.....

3) संरक्षण के किन्हीं दो वैकल्पिक उपायों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

17.4 सारांश

पर्यटन अत्यधिक राजस्व उपार्जन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बताया जा रहा है। इसमें अन्य सम्बद्ध क्षेत्रों को आयोजित करने और बनाए रखने की जबरदस्त क्षमता है। सौभाग्यवश हमारे पास बहुत अधिक प्राकृतिक संसाधन हैं जिन्हें सामंजस्यपूर्ण और व्यवस्थित ढंग से काम में लाने की आवश्यकता है ताकि पर्यटन उद्योग को सही अर्थों में अच्छी तरह व्यवस्थित और विकसित किया जा सके। इसके साथ ही पर्यटन के कारण होनेवाले लाभ को अपने संसाधनों के संरक्षण के प्रोत्साहन पर व्यय किया जा सकता है। हम अपनी पिछली इकाई (संख्या 16) में विचार कर चुके हैं कि पर्यटन विकास और संरक्षण के मध्य संबंध किस प्रकार वांछित परिणाम प्राप्त करने में सहयोगी हो सकते हैं। अब यह आप पर निर्भर करता है कि आप अपने संसाधनों के संरक्षण के लिए पर्यटन की आंतरिक भावना और निहित संभावनाओं को समझें। आप पर्यटन स्थलों की एक सूची तैयार करें और सुझाव दें कि आपके क्षेत्र के इन स्थलों के उचित उपयोग की किस प्रकार व्यवस्था की जाए कि उनका मौलिक चरित्र नष्ट न हो।

17.5 शब्दावली

अलगाव	:	लोगों की समस्याओं या नीतियों से भावनात्मक दूरी
सुसंगत	:	खुशी-खुशी एक साथ रहने की क्षमता
उपभोक्तावाद	:	वस्तुओं के उनके सम्पूर्ण मूल्य पर विचार किए बिना उपभोग की जीवन शैली का दर्शन
क्षीणता	:	वस्तुओं का इस प्रकार उपयोग कि वह बहुत कम शेष रहे या बिल्कुल न बचे
पारिस्थितिकी	:	जीव विज्ञान की एक शाखा जिसमें जीवित वस्तुओं के निवास स्थान का अध्ययन किया जाता है
उल्टा सीधा	:	किसी क्रम या योजना के बिना
सुव्यवस्थित		इच्छा के साथ या संतोषजनक रूप से व्यवस्थित

देशी	:	मूल निवासी, प्राकृतिक रूप से किसी क्षेत्र के वास्तविक निवासी
घुसपैठ	:	सुरक्षित क्षेत्र में बिना अनुमति के प्रवेश
मिन-शूकून	:	जापान में लोगों के निवास स्थान
विरासत	:	पूर्वजों की स्थाई निधि में से प्राप्त उत्तराधिकार
अक्षुब्ध	:	बिना किसी समस्या के
वन्य-प्राणी	:	प्राणी जीवन से संबंधित, उनका व्यवहार एवं निवास स्थान

17.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) अपने नवीकृत और गैर नवीकृत प्राकृतिक संसाधनों को बरबाद होने या क्षतिग्रस्त होने से बचाने की विधि संरक्षण कहलाती है

2) देखिए उपभाग 17.2.1

बोध प्रश्न 2

1) देखिए भाग 17.3

2) देखिए उपभाग 17.2.4

3) देखिए भाग 17.3

इस खण्ड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

जॉनली	टूरिज्म एण्ड डेवलपमेण्ट इन द थर्ड वर्ल्ड, राउटलेज, लन्दन, 1988
ए वर्ल्ड टूरिजम आर्गेनाइजेशन पब्लिकेशन	नेशनल एण्ड रीजनल टूरिज्म प्लैनिंग, डब्ल्यू. टी. ओ. राउटलेज लन्दन. 1994

इस खण्ड के लिए अभ्यास

अभ्यास-1

अपने क्षेत्र/नगर में पर्यटन की उपलब्ध अधिसंरचनात्मक सुविधाओं के आधार पर स्थिति दस्तावेज (स्टेट्स पेपर) तैयार कीजिए और मूल्यांकन कीजिए कि इस सुविधा का क्षेत्र/नगर की पारिस्थितिकी पर क्या प्रभाव पड़ा।

अभ्यास-2

अभ्यास-1 में तैयार किए गए स्थिति दस्तावेज पर आधारित एक रिर्पोट लिखिए और पर्यटन की दृष्टि से किसी अधिक उन्नत क्षेत्र/नगर की ऐसी ही सुविधाओं से उनकी तुलना कीजिए।

अभ्यास-3

अभ्यास-2 में जो रिपोर्ट तैयार की गई है उसकी इकाई 17 में सुझाए गए विकल्पों के आलोक में आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए और अपने क्षेत्र में उचित पर्यटन विकास के लिए संक्षेप में एक नीति दस्तावेज तैयार कीजिए।

परिशिष्ट

एक विश्व की खोज के लिए
एक पृथ्वी की सुरक्षा के लिए

एक पारिस्थितिक स्नेही पर्यटक बनिए

अपनी प्राकृतिक विरासत के सुख एवं सुरक्षा में
पर्यटन के समस्त घटक समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।
इसमें आपके शामिल हैं, आपके ट्रैवेल एजेन्ट/टूर आपरेटर
आपका परिवहन, आपका आवास
और सबसे महत्वपूर्ण आप स्वयं आप
और भावी पीढ़ी के लिए पर्यावरण सुरक्षित रखने के लिए
एक भागीदार और संरक्षक के रूप में आपके लिए
कुछ आसान नियम

सही टूर ऑपरेटर का चयन

पारिस्थितिकी पर्यटन के लिए आपके उत्कृष्ट सलाहकार ऐसे टूर ऑपरेटर हैं जो:

- जो स्वतंत्र एवं निर्देशित पर्यटन को मानते हैं।
- जो पर्यटकों को विस्तृत और गहन जानकारी देते हैं।
- जो पर्यटकों को संवेदनशील पारिस्थितिक व्यवस्था को प्रभावित करने से बचने की सलाह देते हैं।
- यात्रियों को देशी पशुओं और पौधों के बारे में जानकारी देते हैं और बताते हैं कि उनके साथ कैसा बरताव करना है।
- पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम में सक्रियता के साथ भागीदारी करते हैं।
- साहित्य और संक्षिप्त विवरण देते हैं और उदाहरण प्रस्तुत करते हैं तथा भूल सुधार करते हैं।
- पर्यटन के एकत्र होते हुए प्रभावों से बचाव का प्रयत्न करते हैं और ऐसे क्षेत्रों से बचते हैं जहाँ प्रबंधन का अभाव हो और अधिक पर्यटन आते हों।
- समुचित नेतृत्व का उपयोग करते हों और ऐसे छोटे समूह बनाते हैं जो पर्यटक स्थलों पर कम से कम प्रभाव डालें।

पारिस्थितिक स्नेही यात्रा

सुरक्षित एवं पर्यावरणीय दृष्टि से स्वस्थ रूप में वहाँ पहुँचिए :

- यदि आपकी टैक्सी या बस अधिक धुआँ छोड़ती है तो विरोध कीजिए। यदि आपके पास विकल्प है तो ऐसी गाड़ी पर सवारी करने से मना कर दीजिए।
- जहाँ संभव हो वहाँ कई लोग मिलकर कार का उपयोग कर सकते हैं। इससे प्रदूषण में आपका योगदान कम हो जाता है और इस प्रकार यात्रा में व्यय भी कम हो जाता है।
- जहाँ तक आवश्यक हो वहीं तक मोटरगाडी का उपयोग कीजिए। साइकिल इस्तेमाल कीजिए या पैदल चलिए। जहाँ संभव हो वहाँ दृश्य का आनन्द उठाने और स्वस्थ्य रहने का यही तरीका है।
- अपने चालक को अनावश्यक हॉर्न बजाने से रोकिए। यह असभ्य तरीका भी है और हर एक शांति भी भंग करता है।

- अपनी यात्रा से उत्पन्न गंदगी को इधर उधर मत फेंकिए और उचित स्थान मिलने पर कूड़ेदान में डालिए। याद रखिए कि सड़क के किनारे गंदगी हर एक की आँख में चुभती है और पर्यावरण के लिए हानिकारक भी होती है।

अपने गन्तव्य पर क्या करना है और क्या नहीं

एक बार जब आप वहाँ पहुँच जाएं तो आप :

- वन अवरोपण सीमित कीजिए–खुले क्षेत्र में न स्वयं आग जलाइए न औरों को ऐसा करने दीजिए। एक मामूली सी असावधानी पूर्वक जलाई गई आग सम्पूर्ण वन के विनाश का कारण बन सकती है।
- जहाँ पानी दुर्लभ जलाऊ लकड़ी पर गरमाया जाता हो वहाँ इसका कम से कम उपयोग कीजिए।
- कागज, प्राकृतिक कचरे और अन्य कूड़े कचरे को जला दें या जमीन में गाड़ दें और न नष्ट हो सकने वाले कूड़ों जैसे प्लास्टिक के थैलों, रद्दी पैकेटों, कांच की बोतलों और टीन के डिब्बों के पुनः उपयोग की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- पेड़ों पर अपना नाम खोदना बन्द कर दीजिए क्योंकि उनको पीड़ा होतीं है। चट्टानों के फलक पर आपकी चित्रकारी प्रदूषणात्मक प्रवृतियों के निशान हैं जिन्हें सब घृणा से देखते हैं।
- स्थानीय जल को स्वच्छ रखिए और सरिताओं और स्रोतों में रासायनिक डिटर्जेंट का उपयोग न कीजिए। यदि शौचघर की सुविधा उपलब्ध न हो तो यह सुनिश्चित कर लीजिए कि आप जल स्रोत से कम से कम 30 मीटर दूर हैं और मल को जमीन में गाड़ दें।
- पौधों को पनपने के लिए उनको उनके देशी माहौल में छोड़ दें–प्राकृतिक आरक्षित क्षेत्र में पौधों और उनकी जड़ों की कटाई अवैध है।
- वन्य प्राणियों के क्षेत्र में जोर की ध्वनि निकालने, रेडियो या टेपरिकॉर्डर बजाने से बचिए। याद रखिए कि अप्राकृतिक ध्वनि प्राकृतिक माहौल में खप नहीं पाते।
- पशुओं और पक्षियों को खाना न खिलाएं आप इस प्रकार उनके चारा खोजने या शिकार करने के कौशल को शायद क्षति पहुँचाएंगे और आपका भोजन उन्हें अस्वस्थ भी कर सकता है।
- यदि आप किसी को पशुओं या पक्षियों को चोट पहुँचाते या शिकार करते देखें और यदि आप स्वयं उन्हें न रोक सकें तो तुरंत अधिकारियों को सूचित कीजिए।
- लोगों को फूल या पत्ती तोड़ने से रोकिए। वह जिस स्थिति में है उन्हें वैसे ही छोड़ देना चाहिए ताकि सब लोग उनसे आनन्द ले सकें।
- फोटो खींचने या वीडियो कैमरे से चित्रांकन को सदैव प्रोत्साहित किया गया है किंतु पर्यावरण को कभी न भूलिए। याद रखिए कि फ्लैश, खासकर क्लोजअप के उपयोग से जंगली जानवरों और अण्डों पर बैठे पक्षियों के शांतिपूर्ण जीवन में बाधा उत्पन्न हो सकती है और वे बेचैन और अशांत हो सकते हैं।

स्थान के विषय में जानकारी प्राप्त करना अपनी जानकारी बाँटिए

स्थान के विषय में आप जितना जानते हैं वहाँ उससे कहीं अधिक मौजूद है

- यात्रा के लिए निकलने से पहले गंतव्य स्थल से संबंधित ज्यादा से ज्यादा साहित्य पढ़िए। क्षेत्र के बारे में आपको जितनी अधिक जानकारी होगी आप उतना ही ज्यादा आनन्द उठा पाएंगे।
- स्थानीय प्राकृतिक आरक्षित क्षेत्र उद्यान के अधिकारी सूचना के अच्छे स्रोत हैं–उनसे प्रश्न करने में संकोच मत कीजिए।

- स्थानीय लाइसेंस प्राप्त गाइड की सेवाएं प्राप्त करना यदि संभव हो तो प्राप्त कर लें। वह आपकी रूचि के अनुसार ही अपनी व्यक्तिगत सेवाएं अर्पित करेगा।
- जहाँ तक संभव हो अधिक से अधिक फोटो खींचिए या वीडियो कैमरे का उपयोग कीजिए। याद रखिए कि अपने अनुभवों को वापस आकर परिवारजन या मित्रों के साथ बाँटने का यह सबसे अच्छा साधन है।
- अपने अनुभव, यात्रा, स्थल और जो कुछ भी आपने देखा, सुना–के बारे में लिखिए। अज्ञान जितना कम होगा, पर्यावरण का उतना ही भला होगा।

ठहरने की उपयुक्त जगह की खोज

आपको ऐसे होटलों/अतिथि गृहों/ शिविरों में ठहरना चाहिए जो :

- स्थल के अनुकूल हो, जिसमें स्थानीय संसाधनों का दुरुपयोग न हुआ हो या जिसके लिए पर्यावरण को नुकसान न पहुँचाया गया हो और जो नाजुक क्षेत्रों, प्रजातियों और सौंदर्य को बचाने में सहायक हो।
- ऊर्जा संरक्षण की आदत डालिए।
- ऐसा उपभोग कम कीजिए जिससे मलबा हो और बचे हुए मलबे को संसाधित कीजिए।
- ताजे जल का उपयोग कीजिए और मल जल के निपटारे को नियंत्रित कीजिए।
- दूषित वायु और प्रदूषण को नियंत्रित कीजिए या घटाइए।
- शोर के स्तर का निरीक्षण, नियंत्रण कीजिए और उन्हें कम करने का प्रयास कीजिए।
- पर्यावरण विरोधी उत्पादों जैसे एस्बेस्टस, सी फ सी अर्थात कार्बन बनने वाले रसायन और विषैले कीटनाषकों से बचना या नियंत्रित करना चाहिए।
- यदि बिजली न हो तो कम ऊर्जा खपत करने वाले मिट्टी के तेल के चूल्हे का उपयोग कीजिए।

खंड

6

नीति एवं ढाँचागत सुविधाएं

इकाई 18
पर्यटन नीति एवं उसके प्रभाव 5

इकाई 19
ढाँचागत सुविध 22

इकाई 20
पर्यावरण अपकर्ष एवं पर्यटन 33

इकाई 21
अधिनियम एवं कानून 45

इकाई 22
पर्यावरण की राज़नीति 58

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें 68

इस खंड के लिए अभ्यास 68

विशेषज्ञ समिति

श्री अजय माहुरकर
इतिहास संकाय
इं.गां.रा.मु.वि.

श्री अलोक चंदोला
टूरिज्म कंसलटेंट, नई दिल्ली

श्री अशीष कुमार सिंह
मैनेजिंग डायरेक्टर
केरल टूरिज्म डेवलेपमेंट
कारपोरेशन, त्रिवेन्द्रम

डॉ. गीता केकर
विज्ञान विद्यापीठ, इं.गां.रा.मु.वि.

डॉ. इकबाल मलिक
निदेशक, वातावरण
नई दिल्ली

श्री जहांगीर घड़ियाली
जनरल मैनेजर
वेलकम ग्रुप होटल, औरंगाबाद

डॉ. जसवंत सोसी
विज्ञान संकाय, इं.गां.रा.मु.वि.

प्रो. कपिल कुमार
निदेशक
सेंटर फॉर एक्सटेंशन
एजुकेशन, इं.गां.रा.मु.वि.

श्री के.टी. सुरेश
कोआर्डिनेटर, इक्वेशन, बंगलूर

सुश्री लतिका नाथ
वर्ल्ड लाइफ फाउंडेशन
देहरादून

डॉ. नीना राव
हेड डिपार्टमेंट आफ टूरिज्म
कालेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज
नई दिल्ली

श्री प्रदीप सांखला
मेनेजिंग डायरेक्टर
डायनेमिक टूर एंड ट्रेवेल्स
प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

श्री पी. राज
डायरेक्टर, क्लाइंट सर्विसेज बीबीडीडी
वर्ल्ड वाइड नेटवर्क, बम्बई

डॉ. रवीन्द्र कुमार (संयोजक)
इतिहास संकाय, इं.गां.रा.मु.वि.

कार्यक्रम संयोजक : प्रो. कपिल कुमार

पाठ्यक्रम दल :

डॉ रवीन्द्र कुमार
श्री अजय माहुरकर } पाठयक्रम संयोजक

डॉ. गीता केकर
डॉ. जसवंत सोसी
श्री सलिल मिश्र
प्रो. कपिल कुमार

खंड निर्माण दल

इकाई सं.	लेखक	संकाय सदस्य, इं. गां. रा. मु. वि.
18	श्री आर० बालाकृष्णन आई० ए० एस०	अजय माहुरकर
19 एवं 20	डा० नीना राव कालेज आफ वोकेशनल स्टडीज (दिल्ली विश्वविद्यालय)	अजय माहुरकर
21	श्री अजय माहुरकर इ.गां.रा.मु० वि०	श्री सलिल मिश्र
22	श्री सलिल मिश्र (इं.गां.रा.मु.वि.)	श्री सलिल मिश्र सहयोग सुश्री विद्या आनन्द श्री एल.डी. नॉबर्ट

खंड संयोजक
अजय माहुरकर

अनुवाद	पुनरीक्षण	संकाय संदस्य
प्रो. मोहम्मद अमीर इटावा	सुधांशु चन्द्र इं.गां.रा.मु.वि.	डॉ. रविन्द्र कुमार इं.गां.रा.मु.वि.

सामग्री निर्माण

प्रो. शोभिता जैन
निदेशक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

नवम्बर, 1998

© *इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 1998*

ISBN-81-7605-456-9

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुन: प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

NMDC-210

BTS-05/222

खंड-6 नीति एवं संरचनात्मक सुविधा

इस खण्ड में हम वह क्षेत्र लेंगे जिनका आम तौर पर पर्यटन नीति के क्षेत्र में दखल रहता है। सर्वप्रथम हम पर्यटन नीति की रूपरेखा को परिभाषित करेंगे। उसके पश्चात उसके प्रभाव की चर्चा करते हुए आगामी इकाइयों में पर्यटन की संरचनात्मक सुविधाओं, पर्यावरण अपकर्ष और पर्यटन के अधिनियमों और कानूनों का उल्लेख करेंगे। अंत में हम पर्यावरणीय राजनीति की चर्चा करेंगे। इस खण्ड में यह भी विचार विमर्श होगा कि उपरोक्त मुद्दे पर्यटन नीति को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। यहां नीति को एक व्यापक अर्थ में लिया गया है। यहां नीति से प्रयोजन सरकार द्वारा एक ऐसी रूपरेखा तैयार करने से है जिसके अन्तर्गत पर्यटन उद्योग को काम करना है और जिसके द्वारा ऐसे कार्य की वरीयता का भी निर्धारण हो सकता है। किसी लोकतांत्रिक देश की वरीयताएं सामान्य रूप से विकास एवं सामाजिक न्याय की चिन्ता से निर्धारित होती है। इसीलिए हम संरचनात्मक सुविधाओं और पर्यावरण अपकर्ष के मुद्दों पर विचार विमर्श करेंगे। पर्यावरण की राजनीति के अन्तर्गत बहुत से स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों को सम्मिलित किया गया है। इस पर हमने इकाई 22 में प्रकाश डाला है। इकाई 21 में हमने चर्चा की है कि किस प्रकार विभिन्न स्रोतों से पर्यटन के नियम और कानून लिए गए हैं। इनमें से कुछ नियमों और कानूनों को हमने परिशिष्ट में प्रस्तुत किया है।

आभार : हम छाया चित्रों को पुनः प्रस्तुत करने के लिए अनुमतिं दिए जाने पर पर्यटन मन्त्रालय का आभार व्यक्त करते हैं।

इकाई 18 पर्यटन नीति एवं उसके प्रभाव

इकाई की रूपरेखा

18.0 उद्देश्य
18.1 प्रस्तावना
18.2 एक नीति की ओर
  18.2.1 भारतीय पर्यटन नीति-1982
  18.2.2 एक कार्य योजना
18.3 योजना परिप्रेक्ष्य-1988
  18.3.1 संस्तुतियां
  18.3.2 छवि निर्माण
18.4 राष्ट्रीय कार्य योजना-1992
18.5 वित्तीय एवं आर्थिक प्रभाव
  18.5.1 विदेशी मुद्रा उपार्जन
  18.5.2 रोजगार
  18.5.3 विदेशी निवेश
  18.5.4 शुल्क अनियमन
  18.5.5 वित्तीय एवं आर्थिक प्रोत्साहन
  18.5.6 आयात
  18.5.7 पूंजीगत माल की निर्यात संवर्धन योजना
  18.5.8 रियायती सीमा शुल्क
18.6 आवास एवं परिवहन पर प्रभाव
  18.6.1 आवास
  18.6.2 परिवहन : अनियमन एवं निजीकरण
18.7 पर्यटकों और पर्यटन पर प्रभाव
  18.7.1 पर्यटकों का आगमन
  18.7.2 स्वदेशी पर्यटन
  18.7.3 युवा एवं साहसी पर्यटन
18.8 प्रबन्धन एवं विपणन पर प्रभाव
  18.8.1 मानव संसाधन विकास
  18.8.2 विपणन
  18.8.3 उदार विनिमय दर संबंधी प्रबन्ध प्रणाली
18.9 विदेशी सहयोग
18.10 सारांश
18.11 शब्दावली
18.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

18.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- पर्यटन की नीति के महत्व को समझ सकेंगे,
- भारत सरकार की पर्यटन नीति रचना से अवगत हो सकेंगे,
- 1992 की पर्यटन नीति का विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे,

- वित्त, आवास और परिवहन, प्रबन्धन और विदेशी सहयोग पर भारत की पर्यटन नीति के प्रभाव का मूल्यांकन कर सकेंगे, और
- पर्यटन नीति में पर्यावरण की आवश्यकता के अभाव से सतर्क हो सकेंगे।

18.1 प्रस्तावना

पर्यटन एक ऐसी गतिविधि है जो अतिथि (gust) एवं आतिथेय (host) दोनों ही समुदायों को प्रभावित करती है। यह अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करती है और सामान्य रूप से समाज और पर्यावरण को भी प्रभावित करती है। जब विभिन्न एजेन्सियों के मध्य परस्पर विरोधी स्वार्थ एवं उद्देश्य होते हैं तो कई समस्याएं उठती हैं। अनियमित पर्यटन की वृद्धि कभी-कभी उन संसाधनों को नष्ट कर देती है जिन पर पर्यटन विकास को अकेले बाजार की शक्तियों पर नहीं छोड़ दिया जाना चाहिए। इसके लिए एक सावधानीपूर्वक तैयार की गई नीति अनिवार्य है जिसकी रचना समाज और आर्थिक कारकों में सम्पूर्ण रूप से अनुकूल सम्बन्धों को ध्यान में रख कर की जानी चाहिए। इस संदर्भ में हमारी पर्यटन नीति में पर्यावरण की आवश्यकता का अभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

18.2 एक नीति की ओर

पर्यटन विश्व अर्थव्यवस्था के बहुत महत्वपूर्ण अंश के रूप में उभरा है। यह न केवल विकासशील देशों के लिए ही एक प्रमुख आर्थिक गतिविधि है बल्कि बहुत से विकसित देशों के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है। आज पर्यटन विश्व का सबसे बड़ा उद्योग है। 1994 में पर्यटन से आमदनी 321 अरब अमरीकी डॉलर थी। इसमें 12 करोड़ 70 लाख लोगों को सम्पूर्ण विश्व में रोजगार मिला। 330 खरब डॉलर के निवेश पर आधारित यह विश्व का सबसे बड़ा उद्योग है और इसने तेल की खोज और मोटर गाड़ियों के उत्पादन आदि को भी पीछे छोड़ दिया है।

हालांकि कुछ देशों के पास लगभग एक जैसे संसाधन हैं फिर भी हम देखते हैं कि उनमें से कुछ देश पर्यटन की दृष्टि से अन्य देशों में पर्यटकों की अधिक संख्या आती है और ऐसे देश दूसरे देशों की तुलना में अधिक विदेशी मुद्रा विनिमय अर्जित करते हैं। सम्बद्ध देशों की सरकारों की पर्यटन नीति में इसके कारण विद्यमान हैं।

18.2.1 भारतीय पर्यटन नीति 1982

भारत में एक विषय के रूप में पर्यटन हमारे संविधान में सम्मिलित नहीं है। 1950 में परिवहन मंत्रालय के एक अंग के रूप में इसे मान्यता प्राप्त हुई थी। पर्यटन विभाग की स्थापना 1965 में हुई। उसी समय पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारतीय पर्यटन विकास निगम गठित हुआ। उसी समय राज्य सरकारों ने भी अपने पर्यटन विभागों और पर्यटन विकास निगमों की स्थापना की।

1982 में प्रथम पर्यटन् नीति की घोषणा की गई। इसमें पर्यटन के महत्व को स्वीकारा गया। चूंकि पर्यटन विचारों और दृष्टिकोणों के आदान प्रदान को बढ़ावा देता है, तथा लोगों और उनकी संस्कृतियों को परस्पर संपर्क का अवसर प्रदान करता है इसलिए यह राष्ट्रीय एकता, बेहतर अन्तर्राष्ट्रीय समझदारी और अन्ततः विश्व की जनता में शान्तिपूर्ण सहभाव की उपलब्धि के लिए कारगर साधन हो सकता है।

इसे ऐसी शक्ति समझा गया है जो प्रतिकूल व्यापार के संतुलन और क्षेत्रीय असंतुलन को ठीक कर सकती है, रोजगार के अवसर उत्पन्न कर सकती है और किसी देश के पिछडे क्षेत्रों के सामाजिक-आर्थिक विकास को प्रेरणा दे सकती है।

इसके दोषों जैसे असंतुलित संसाधन परिवर्तन और आर्थिक विकास, सामाजिक तनाव और पर्यावरणीय प्रदूषण, जीवन शैली की विकृति और सांस्कृतिक अपकर्ष का ज्ञान पहले से था।

पर्यटन नीति पर एक दस्तावेज जो 1982 में तैयार किया गया था उसमें पर्यटन के महत्व को निम्नलिखित रूप से रेखांकित किया गया है :

- एकीकरण बल,
- सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का माध्यम,
- स्थानीय समुदायों और सरकार के लिए सामाजिक-आर्थिक लाभ प्राप्ति का साधन, और
- युवाओं को विभिन्न अवसर उपलब्ध कराने वाला साधन

1982 के नीति दस्तावेज ने घरेलू पर्यटन की संभावनाओं को स्वीकार किया है और उल्लेख किया गया है कि नीति का प्रयत्न यह होगा कि घरेलू पर्यटकों के लिए पूरी तरह
सुविधाओं का सुधार और विस्तार किया जाए।

इसने अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन को विदेशी मुद्रा कमाने, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में प्रमुख योगदान देने, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना और समझ पैदा करने के महत्वपूर्ण साधन के रूप में स्वीकार किया है। ये सहमति हुई कि स्मारकों एवं पुरातत्वीय स्थलों पर समुचित पर्यटक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।



चित्र-1 पर्यटन वरीयता : संस्कृति

यह मान्यता दी गई कि केन्द्रीय सरकार/राज्य सरकार/सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग, निजी क्षेत्र, हवाई सेवाएं, रेल सेवाएं, संचार तन्त्र, नागर एवं स्थानीय समितियां, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक संस्थाएं सब मिलकर एक व्यापक गंभीर और संगठित विकास की उपलब्धि का प्रयास करेंगे ताकि पर्यटन देश के आर्थिक विकास में सकारात्मक और प्रभावी योगदान दे सके।

ये स्वीकार किया गया है कि अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन के विकास की जिम्मेदारी मुख्य रूप से केन्द्रीय क्षेत्र की होगी और घरेलू पर्यटन प्रधानतया राज्य क्षेत्र की जिम्मेदारी होगी और जहां कहीं आवश्यक होगा केन्द्र राज्य की कमी को पूरा करने के लिए समन्वयक की भूमिका निभाएगा। पर्यटन के आर्थिक प्रभाव और गुणक प्रभाव आदि को भी मान्यता दी गई।

दक्षिण एशिया के क्षेत्र में जिसका विस्तार अफगानिस्तान, ईरान और मालदीव तक है क्षेत्रीय पर्यटन को बढ़ावा देने का प्रयास किया जाना था। 1982 के दस्तावेज के बारें में अधिक जानकारी के लिए आपको टी एस-01 के खण्ड 8 को देखना चाहिए।

18.2.2 एक कार्य योजना

देश में पर्यटन के विकास के लिए एक कार्य योजना का सुझाव दिया गया। पर्यटक क्षेत्र की अवधारणा आरंभ की गई और इस बात पर सहमति हुई कि ढांचागत सुविधा के विकास के लिए यात्रा क्षेत्रों को

वरीयता प्रदान की जाएगी। इसमें निम्नलिखित सम्मिलित बिन्दु सम्मिलित थे :

- युवा पर्यटन और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए युवा वास स्थानों (youth hostels) के उपलब्ध कराए जाने पर विचार किया जाएगा। तीर्थस्थानों के पर्यटन को प्रोत्साहन देने के लिए कम खर्च वाले आवास जैसे धर्मशाला, सराय आदि उपलब्ध कराने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया,
- उत्तरी क्षेत्र में एक बौद्ध क्षेत्र विकसित करने का निश्चय किया गया।
- समाजिक पर्यटन विकसित करने की ओर विशेष ध्यान दिया जाना था ताकि समाज के कमजोर वर्गों को लाभ पहुंच सके।
- मानव शक्ति विकास एव प्रशिक्षण पर नए सिरे से बल दिए जाने का सुझाव दिया गया।
- निजी क्षेत्र से निवेश को आकर्षित करने की दृष्टि से पर्यटन उद्योग के विभिन्न क्षेत्रों को वित्तीय और अन्य प्रोत्साहनों को विस्तार देने का निर्णय भी लिया गया।
- यह भी निर्णय लिया गया कि संरक्षण और विकास के मध्य एक विवेकपूर्ण संतुलन को बनाए रखा जाएगा। इस बात पर भी सहमति हुई कि पर्यटन नीति हमारे जीवन को समृद्ध करेगी और भविष्य में हमारी जनता के लिए अधिक सम्पन्नता लाएगी।

यहां यह कहा जा सकता है कि 1982 का पर्यटन नीति और कार्य योजना में या तो संवेदनशीलता की कमी थी या पर्यावरण की ओर ध्यान प्रतिबिम्बित करने का अभाव था। इस बात की संभावना कि पर्यटन पर्यावरणीय असंतुलन पैदा कर सकता है यह बात इस दृष्टिकोण में शामिल नहीं थी। हम देखेंगे कि यह कमजोरी 1982 की पर्यटन नीति से पहले भी निरन्तर दिखाई देती थी।

18.3 परिप्रेक्ष्य योजना-1988

सरकार (योजना आयोग) ने भारत में पर्यटन के विकास के लिए परिप्रेक्ष्य योजना तैयार करने की दृष्टि से ट्रेडफेयर ऑथरिटी ऑफ इण्डिया (भारतीय व्यापार मेला प्राधिकरण) के अध्यक्ष श्री मोहम्मद युनूस की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय समिति का गठन किया। इस समिति ने 1988 में एक विस्तृत विश्लेषण के पश्चात् अपनी संस्तुतियां प्रस्तुत की जिसमें निम्नलिखित का वर्णन किया गया:

- सामाजिक-आर्थिक विकास में पर्यटन की भूमिका, पर्यटन उद्योग की गतिशीलता और कार्य संबंधी मार्ग,
- भारत में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन की रूपरेखा,
- अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन और उसकी संभावनाए,
- पर्यटक आवास और उसकी व्यवस्था,
- यात्रा व्यापार, विपणन और निर्यात सेवाएं, पर्यटन परिवहन संपर्क,
- पर्यटन क्षेत्र के लिए मानव संसाधन के विकास की उन्नति, और
- पर्यटन के पारिस्थितिकीय पक्ष।

18.3.1 संस्तुतियां (Recommendations)

1) पर्यटन विकास में राज्य की भावी भूमिका और उसकी भागीदारी की सीमा के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता महसूस की गई। पर्यटन के क्षेत्र में राज्य के लिए बड़े पैमाने पर निवेश न तो आवश्यक है और न सम्भव है। इस उद्योग के विकास को निजी क्षेत्र के नेतृत्व पर छोड़ देना चाहिए।

2) राज्य को पर्यटन विकास की विकास कार्यनीतियां बनाने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए, निजी क्षेत्र के निवेश को दिशा देने के लिए वित्तीय एवं निगरानी प्रोत्साहन का प्रबन्ध और उद्योग तथा

उपभोक्ता के हितों की रक्षा के लिए एक प्रभावी नियन्त्रण और पर्यवेक्षी तंत्र तैयार करना।

3) पर्यटन क्षेत्र के लिए विकास कार्यनीति को कम लागत की अर्थव्यवस्था के सिद्धान्त पर उत्पादकता के उच्चतर स्तर की कार्यशीलता और प्रतिस्पर्द्धा पर आधारित होना चाहिए।

4) इस शताब्दी के अन्त तक अनुमानित एक लाख होटल के कमरों की आवश्यकता होगी।

5) सौ करोड़ रुपए की प्रारंभिक सममूल्य की राशि से पर्यटन वित्त निगम की स्थापना की जानी चाहिए।

6) होटल क्षेत्र में शुल्क का नियम हटा देना चाहिए।

7) राष्ट्रीय धरोहर जैसे पुरानी हवेलियों, महलों आदि को पुनर्जीवित करने और उनको बनाए रखने के लिए उचित प्रेरणा देनी चाहिए।

परिणामस्वरूप यह अनुमान लगाया गया कि पर्यटक आगमन सन 2000 तक बढ़ कर 27 लाख 50 हजार से 30 लाख तब बढ जाएगा। 1986-87 की कीमतों के अनुसार सन् 2000 तक 4 हजार करोड़ से 5 हजार करोड़ तक विदेशी मुद्रा विनिमय कमाया जा सकता है।

18.3.2 छवि निर्माण

इस योजना में राष्ट्रीय छवि निर्माण और विपणन पर भी बल दिया गया है। यह सार्वजनिक एवं निजी एजेंसियों के एकत्र संसाधनों से किया जाना था। छवि निर्माण के सम्बन्ध में निम्नलिखित संस्तुतियां प्रस्तुत की गई:

- विदेशी कार्यालयों को व्यावसायिक बनाना चाहिए और चयनित कार्यालयों को विपणन योजना के आधार पर सशक्त करना चाहिए। इन विदेशी कार्यालयों में उन अधिकारियों को तैनात करना चाहिए जिनका विपणन में गहरा रूझान हो।
- पर्यटन उत्पादन में मौसमीकरण से पार पाने के लिए मानसून महीनों में विशेष रूप से प्रायद्वीपीय भारत में वैकल्पिक पर्यटन मौसम विकसित करना चाहिए।
- संचार एवं कम्प्यूटर के क्षेत्र में तकनीकी विकास को पर्यटक सूचना नेटवर्क के लिए लाभदायक ढंग से उपयोग में लाना चाहिए।
- भारतीय भोजन और भारतीय रेस्तराओं को विदेशों में प्रोत्साहित करना चाहिए।
- सभाओं और सम्मेलनों की क्षमता का उपयोग किया जाना चाहिए।
- एयर इण्डिया के कार्यों और छवि को सुधारा जाना चाहिए।
- भारत आने और यहां से वापसी के लिए विदेशी हवाई कम्पनियों के प्रति एक उदार नीति अपनानी चाहिए ताकि पर्यटकों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।
- पर्यटन सुविधाओं को बढ़ावा देने के लिए हवाई अवक्रय की अनुमति उदारपूर्वक दी जानी चाहिए।
- 'पैलेस ऑन व्हील्स' को वातानुकूलित एवं सुसज्जित कर देना चाहिए। 'द ग्रेट इण्डियन रोवर्स' नामक पर्यटक ट्रेन को फिर से चलाना चाहिए और मन्दिरों के पर्यटन के लिए दक्षिणी भारत में भी एक विशेष रेलगाड़ी चलानी चाहिए।
- इण्डियन एयरलाइन्स/वायुदूत और रेल विभाग को पर्यटन के लिए अलग निदेशालय स्थापित करना चाहिए।
- चार-लेन वाले राजमार्गो एवं मोटर मार्गों को पर्यटक मार्गों में विकसित करना चाहिए जिसमें उचित मध्यपथ भी हो।

- केरल के पश्च जल और पश्चिमी बंगाल के सुन्दरबन की क्षमता का उपयोग करना चाहिए।
- पर्यटन मन्त्रालय की परिचालन शाखा को रेलवे बोर्ड के ढांचे का पुनर्गठन करना चाहिए। नए ढांचे के अनुसार मन्त्रालय एवं महानिदेशालय की वर्तमान पृथक पहचान की आवश्यकता नहीं है।
- अन्य बातों के अतिरिक्त पर्यटन नीति तैयार करने, परिप्रेक्ष्य योजना बनाने और पर्यटन परियोजनाओं और स्कीमों की देख रेख और उन्हें समन्वित करने का उत्तरदायित्व राष्ट्रीय पर्यटन बोर्ड का होगा।
- पर्यटन के लिए एक विशेष प्रबन्ध संवर्ग भारतीय पर्यटन सेवा के नाम से बनाना चाहिए।
- कर्मचारियों का पार्श्विक प्रवेश (lateral entry) उचित स्तरों पर किया जाना चाहिए ताकि इस प्रणाली को गति दी जा सके।
- भारत पर्यटन विकास निगम को पुनः परिभाषित करना चाहिए। उसे ऐसे क्षेत्रों में जहां निजी क्षेत्र निवेश करने में सावधानी बरत रहे हों वहां पर्यटन के लिए मार्ग प्रशस्त करते रहना चाहिए।
- भारतीय होटल निगम और भारतीय पर्यटन विकास निगम को राष्ट्रीय पर्यटन विकास निगम में मिला देना चाहिए।
- पर्यटन मंत्रियों की एक स्थायी समिति स्थापित करनी चाहिए जो पर्यटन विकास के संगठित दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती रहे और राज्य सरकारों को भी इस प्रक्रिया में प्रभावी ढंग से शामिल किया जाए।
- मानव संसाधन विकास को बेहतर महत्व दिया जाना चाहिए।
- कौशल एवं डिप्लोमा दोनों ही स्तरों पर संस्थाओं की संख्या और क्षमता बढा देनी चाहिए और महाविद्यालयों को सुधारना चाहिए।
- विश्वविद्यालयों को पर्यटन सम्बन्धी पाठयक्रम प्रारंभ करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- 1988 की योजना ने और भी बहुत सी संस्तुतियां की है जैसे पर्यावरण के विषय में और पर्यटन विकास के कारण पर्यावरण को होने वाली क्षति से बचाव के उपाए सुझाए गए हैं।
- पर्यटन विकास का स्थानीय पारिस्थितिकीय परिस्थितियों में सामंजस्य होना चाहिए। किसी क्षेत्र में पर्यटन गतिविधियों को प्रत्याशित पर्यावरणीय प्रभाव का मूल्यांकन आवश्यक है। किसी क्षेत्र की पर्यटन योजना उस क्षेत्र की पर्यटन गतिविधियों और वहन क्षमता के पर्यावरणीय प्रभावों को ध्यान में रखकर ही विकसित की जानी चाहिए।

1988 की योजना पर्यटन विकास के पर्यावरणीय प्रभावों के विषय में भी विवरण प्रस्तुत करती है। फिर भी कई प्रश्न उठते हैं। उदाहरणार्थ, भारतीय संसदीय अधिनियम में प्राणि समूह एवं वनस्पति समूह की सुरक्षा करने या पर्यटन उद्योग से संबंधित निर्माण कार्य को सीमित करने के सुस्पष्ट कानून मार्ग निर्देशन के लिए उपलब्ध हैं किन्तु यदि इस शताब्दी के अन्त तक एक लाख होटल के कमरों के निर्माण की आवश्यकता पड़ती है तो उन के साथ किस प्रकार सामंजस्य स्थापित हो सकता है ? इस विस्तार का क्या मापदण्ड होगा ? क्या निजी क्षेत्र के पर्यटन संचालक और गाइडों को पर्यावरणीय नियमों से अवगत कराया जा सकता है ? कौन यह देखेगा कि उन आदेशों का पालन हुआ है या नहीं ?

18.4 राष्ट्रीय कार्य योजना-1992

पर्यटन के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना मई, 1992 में संसद के समक्ष रखी गई। इसमें सर्वभौम परिप्रेक्ष्य में इस उद्योग के महत्व, रोजगार उत्पन्न करने पर इसके प्रभाव, विदेशी मुद्रा विनिमय की प्राप्ति आदि

की रूपरेखा प्रस्तुत की गई। इसने देश में पर्यटन विकास और उसकी जबरदस्त त्वरित वृद्धि की संभावना को मान्यता दी है।

)92 की राष्ट्रीय कार्य योजना में से कुछ प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखत हैं :

- क्षेत्र का सामाजिक-आर्थिक विकास।
- रोजगार के अवसरों में वृद्धि।
- राष्ट्रीय विरासत और पर्यावरण का संरक्षण।
- अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन के द्वारा विदेशी मुद्रा विनियम के अर्जन के प्रति आशावाद
- विश्व पर्यटन में भारत की साझेदारी में वृद्धि।

टी एस- 01 (खण्ड 8) की इकाई 29 में इन उद्देश्यों

और उन उपायों को सविस्तार प्रस्तुत किया गया

। जिन्हें इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए लागू करना है।

ढांचागत सुविधाओं, अन्य संसाधनों और भावी विकास की संभावनाओं की समीक्षा करने के बाद इस कार्ययोजना में निम्नलिखित संस्तुतियों को प्रस्तुत किया गया है :

i) तीव्र निवेश और विकास के लिए विशेष पर्यटन क्षेत्रों को अधिसूचित क्षेत्र के रूप में सृजन।

ii) पर्यटन के अधिसूचित क्षेत्रों/मण्डल में पर्यटन और उससे सम्बन्धित उद्योग के लिए वित्तीय सहायता जुटाने के लिए विशेष पर्यटन क्षेत्र को सहायता देने की योजना तैयार करना।

iii) विरासत के रूप में उपलब्ध विशेष श्रेणी के होटलों/स्वास्थ्य स्थलों का निर्माण और निम्नलिखित बातों की व्यवस्था:

- तकनीकी/परामर्शी सहायता,
- वित्तीय संस्थाओं के लिए ऋण,
- ब्याज पर सहायता,
- विपणन एवं संचालन विशेषज्ञता

iv) पैलेस ऑन व्हील्स जैसी रेलगाड़ी की सफलता पर आधारित महत्वपूर्ण पर्यटक मार्गों पर पर्यटक गाड़िया चलाना।

v) विशेष क्षेत्रों में नदी पर्यटन का संचालन

vi) विदेशी कार्यालयों को पुन: नया करके उन्हें विशेष लक्ष्यों के शब्दों में और उत्तरदायी बनाना।

vii) सूचना आन्दोलन, सूचना तन्त्र को पुन: नया करना ताकि समस्त बड़े-बड़े बाजारों में भारत की छवि को सकारात्मक रूप से प्रस्तुत किया जा सके।

viii) चयनित पर्यटक गन्तव्यों के लिए विशेष हवाई सेवा/होटल आकर्षण की व्यवस्था।

ix) प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों पर हवाई सेवा, रेलवे स्टेशनों, होटलों और पर्यटन सूचना देने वाले सूचना पटल की व्यवस्था करना।



चित्र-2 विषयक पर्यटन

बोध प्रश्न 1

1) 1982 की राष्ट्रीय पर्यटन नीति के क्या उद्देश्य थे ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) क्या 1988 की परिप्रेक्ष्य योजना ने सम्पूर्ण रूप से पर्यटन उद्योग को राज्य द्वारा अपने अधिकार में ले लिए जाने की संस्तुति की थी।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) 1992 की राष्ट्रीय कार्य योजना में संस्तुत की कुछ प्रमुख गतिविधियां बतलाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

18.5 वित्तीय एवं आर्थिक प्रभाव

अब आप भारत सरकार द्वारा पर्यटन पर तैयार की गई व्यापक नीति के विकास एवं रूपरेखा से अच्छी तरह परिचित हो चुके हैं। इस नीति के परिणाम सुस्पष्ट है। उन्नीसवीं शताब्दी के पांचवे दशक में भारत में लगभग 17,000 पर्यटकों ने भ्रमण किया और परिणामस्वरूप रु० 7.75 करोड़ का विदेशी मुद्रा विनिमय प्राप्त हुआ। 1994-95 में संख्या, 19,09,601 पर्यटकों तक पहुंच गई और विदेशी मुद्रा विनिमय की आदमनी 7,367 करोड़ तक पहुंच गई। भारत ने ढांचागत सुविधा पर्यटकों के आगमन, और विदेशी मुद्रा की कमाई में महत्वपूर्ण उन्नति की है। हम आगामी भागों में विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय पर्यटन नीति के संघात का मूल्यांकन करेंगे। आंरभ में हम वित्तीय एवं आर्थिक प्रभाव का उल्लेख करेंगे।

18.5.1 विदेशी मुद्रा उपार्जन

पर्यटकों से 1994-95 में विदेशी मुद्रा उपार्जन का अनुमान रु० 7367 करोड़ है जो गतवर्ष की अपेक्षा 13% वृद्धि रुपये एवं डालर दोनों ही रूप में है।

वर्ष	विदेशी मुद्रा विनिमय	उपार्जन दस लाख (डॉलर में)	प्रतिशत (रुपए में)	विनिमय (डॉलर में)
1992-93	6060	2098.3	23.9	6.1
1993-94	6509	2079.9	7.1	-1.1
1994-95	7367	2248.5	13.2	13.2

18.5.2 रोजगार

1994-95 में पर्यटन के कारण प्रत्यक्ष रोजगार लगभग 78 लाख था। पर्यटन के मामले में गुणक प्रभाव लगभग 2.36 है और इस प्रकार पर्यटन के कारण कुल रोजगार 1994-95 में 184 लाख रहा।

वर्ष	अनुमानित रोजगार (दस लाख में)
1992-93	7.0
1993-94	7.4
1994-95	7.8

पर्यटन क्षेत्र में निजी निवेश को आकर्षित करने के लिए नए प्रोत्साहन जैसे 20% से 10% तक का व्यय कर में कमी, 1500 कारों और 250 गाड़ियों रियायती दर पर आयात और पर्यटन संबंधी सेवाओं के विस्तार से जुड़ी निर्यात संवर्धन पूंजीगत लागत (ई पी सी जी) योजना की घोषणा 1994-95 के दौरान की गई।

1994-95 में पर्यटन वित्त निगम द्वारा स्वीकृत किया गया ऋण गतवर्ष की अपेक्षा 43% बढ़ गया और भुगतान में 74% की वृद्धि हुई।

वर्ष	स्वीकृत धनराशि (करोड़ रुपयों में)	वृद्धि का प्रतिशत	दी गई धनराशि (करोड़ रुपयों में)	वृद्धि का प्रतिशत
1993-94	161.00	–	78.00	–
1994-95	230.00	43	161.00	74

18.5.3 विदेशी निवेश

पर्यटन क्षेत्र में विदेशी निवेश बहुत अधिक बढ़ा है और 99 परियोजनाएं जिनमें 1112 करोड़ रु० के विदेशी निवेश/अनिवासी भारतीय सम्मिलित हैं, 1994-95 तक पारित की जा चुकी है। इन में जानी पहचानी कम्पनियां जैसे ग्राण्ड हयात इन्टरनेशनल, शेराटन इण्टरनेशनल, रेडिसन, फोर सीजन्स आदि शामिल हैं।

पर्यटन क्षेत्र में विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए सिंगापुर एवं दक्षिण पूर्वी एशियाई राष्ट्र संगठन के उद्योगों और निवेशकों के मध्य परस्पर वार्ता हुई जिसके परिणामस्वरूप कर्नाटक और सिंगापुर

आधारित कम्पनियों के मध्य 3 समझौतों के स्मरण पत्रों पर हस्ताक्षर किए गए।

18.5.4 शुल्क अनियमन (deregulation of tariffs)

तत्पश्चात् होटल शुल्क को अनियमित कर दिया गया और होटल व्यापारिक एवं बाजार दृष्टि से शुल्क लेने के लिए स्वतन्त्र हो गया। प्रमुख विकास विकल्प की दृष्टि से इसके महत्व को होटलों और पर्यटन सम्बन्धी उद्योगों को राष्ट्रीय विकास नीति में अधिक वरीयता दी गई है।

शब्द "होटल" में रेस्तरां समुद्री तटीय सैरगाहें और अन्य पर्यटन परिसर जो पर्यटकों को आवास एवं/अथवा आवश्यकताओं की आपूर्ति खानपान सुविधा जुटाते हैं। शब्द "पर्यटन सम्बन्धी उद्योग" में अन्य बातों के अतिरिक्त निम्नलिखित बातें भी शामिल हैं :

1) ट्रेवेल एजेन्सियां, पर्यटन संचालन एजेन्सियां और पर्यटक परिवहन संचालन एजेन्सियां।

2) सांस्कृतिक, साहसिक और वन्य जीवों के अनुभवों से सम्बन्धित सुविधा प्रदान करने वाली इकाइयां।

3) पर्यटकों के लिए धरातलीय, वायु एवं जलीय परिवहन सुविधा।

4) पर्यटकों के लिए अवकाश, मनोरंजन, मनबहलाव, क्रीड़ा एवं स्वास्थ्य की इकाइयां।

5) सम्मेलन/सेमिनार की इकाइयां एवं संस्थाएं।

होटल एवं पर्यटन सम्बन्धी उद्योग को विदेशी निवेश के लिए अब उच्च प्राथमिकताओं वाला उद्योग घोषित कर दिया गया है। ये उद्योग 51% साझेदारी तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए उपयुक्त है और अधिक निष्पक्ष साझेदारी को प्रस्ताव के व्यक्तिगत गुणों के आधार पर स्वीकार किया जा सकता है। अनिवासी भारतीयों द्वारा निवेश की शत प्रतिशत साझेदारी की अनुमति है। निवेश एवं लाभ पर लाभांश प्रतिदेय है।

18.5.5 वित्तीय एवं आर्थिक प्रोत्साहन

भारतीय पर्यटन वित्त निगम की स्थापना विशेष रूप से उद्यमियों को ऋण दिलाने की सहायता की दृष्टि से की गई है।

तीन सितारा श्रेणी तक मान्यताप्राप्त होटलों को जो चार महानगरों के अतिरिक्त अन्य नगरों में स्थापित हैं वे ऋण पर 3% ब्याज की आर्थिक सहायता के अधिकारी हैं और ऐसे ही होटल यदि यात्रा सर्किट में बनाए गए हैं और उन गन्तव्यों पर स्थापित हैं जिन्हें पर्यटन और हेरिटेज वाले होटलों के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना के अन्तर्गत व्यापक विकास के लिए चुना गया है तो वह बढ़ी हुई 5% सहायता के अधिकारी है।

ब्याज की सहायता के अतिरिक्त अभी हाल में 'हेरिटेज होटल' के लिए एक नकद सहायता की स्कीम लागू की गई है जिसके अन्तर्गत 5 लाख रु० या मूल लागत का 10%, जो भी कम हो किसी ऐसे स्मारक/ढांचे के हेरिटेज होटल के रूप में विकास के लिए उपलब्ध है जो 75 वर्ष से अधिक पुराना है।

एक प्रमुख वित्तीय प्रोत्साहन जो पर्यटन उद्योग के लिए उपलब्ध है वह है विदेशी मुद्रा विनिमय उपार्जन पर लगे आयकर से छूट यदि पर्यटन पर पुन: निवेश किया जाए तो प्रथम 50% पर भी छूट लागू होगी।

18.5.6 आयात

पूंजीगत माल, कच्चा माल, कल पुर्जे आदि बिना किसी रूकावट के आयात किये जा सकते हैं यदि ये आयात की नकारात्मक सूची के अन्तर्गत नियमित नहीं हैं। होटलों, रेस्तराओं, ट्रेवेल एजेन्टों और

पर्यटन संचालकों द्वारा मांगे गए विशेष सामानों का आयात एक सम्बद्ध लाइसेन्स के आधार पर अनुमत है।

18.5.7 पूंजीगत माल की निर्यात संवर्धन योजना

होटलों, रेस्तराओं, ट्रेवल एजेंटों और पर्यटन संचालकों द्वारा पूंजीगत उपकरण (10% तक अतिरिक्त पुर्जों सहित) का आयात 15% के सीमा शुल्क की रियायती दर तक अनुमत है बशर्ते कि आयात के CIF मूल्य के चार गुना निर्यात की बाध्यता हो। यह बाध्यता पाँच वर्षों में पूरी की जानी है। यदि आयात का CIF मूल्य 20 करोड़ रु० या उससे अधिक हो तो कोई शुल्क देय नहीं होगा। फिर भी निर्यात अनुबन्ध CIF मूल्य का 6 गुना होगा और इस निर्यात अनुबन्ध को पूरा करने के लिए 8 वर्ष का समय होगा।

18.5.8 रियायती सीमा शुल्क

विशेष मदों पर सीमा शुल्क घटा दिया गया जो प्रोजेक्ट आयातों पर लागू है परंतु शर्त यह है कि आयातित सामान होटल की आरंभिक स्थापना अथवा होटल के पर्याप्त विस्तार के लिए होना चाहिए।

18.6 आवास एवं परिवहन पर प्रभाव

आवास एवं परिवहन के क्षेत्र में प्रभाव महत्वपूर्ण है। उपलब्ध कमरों की संख्या में बहुत वृद्धि हुई है। परिवहन का निजीकरण भी हुआ है।

18.6.1 आवास

देश में स्वीकृत होटलों और कमरों की संख्या निकट अतीत में काफी बढ़ी है। श्रेणीबद्ध स्वीकृत होटलों एवं कमरों की संख्या निम्नलिखत है :

श्रेणी	होटलों की संख्या	कमरों की संख्या
1 तारा	103	3608
2 तारा	240	9142
3 तारा	163	9104
4 तारा	58	4471
5 एवं 5 तारा डीलक्स	91	17440
हेरिटेज	22	682
वर्गीकृत की जानें वाली	235	11008
योग	**812**	**55455**

हेरिटेज होटलों का कार्य प्रारंभ किया गया और अब हेरिटेज होटलों की कुल संख्या 22 और उसमें कुल 682 कमरे हैं। अन्य 27 हेरिटेज होटलों की परियोजनाएं जिनमें 590 कमरों के निर्माण की संभावना है, विचाराधीन हैं। लाभकर अतिथि आवास की स्कीमों का महत्व विशेष रूप से बढ़ने लगा है और 1476 इकाइयों का पंजीकरण किया जा चुका है। लाभकर अतिथि आवासीय इकाइयों की एक निर्देशिका भी विभाग द्वारा प्रकाशित की जा चुकी है।

18.6.2 परिवहन : अनियमन एवं निजीकरण

इस बात को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि घरेलू वायुसेवा को वायु निगम कानून में परिवर्तन करके अनियमित किया जा चुका है। लगभग 17 निजी वायु सेवाएं अन्तर्देशीय भारती यात्रियों और विदेशी

पर्यटकों के लिए भारत में प्रतिस्पर्धा में लगी हुई हैं। फिर भी एयर इण्डिया के निजीकरण की प्रक्रिया में अधिक प्रगति नहीं हुई है।

जनता को 10% इक्विटी अ-विनियोग द्वारा भारतीय पर्यटन विकास निगम को निजीकृत किया जा चुका है। राज्य पर्यटन विकास निगम में से कुछ ने इसी नीति के अनुसार निजीकरण प्रारंभ कर दिया है। कुछ राज्य पर्यटन विकास निगमों के होटलों और सैरगाहें निजी क्षेत्र को पट्टे पर दे दी गई और कुछ राज्य पर्यटन विकास निगमों ने निजी क्षेत्र के साथ संयुक्त प्रस्ताव का अनुबन्ध कर लिया है।

'पैलेस ऑन व्हील्स' जैसी गाड़ियां निजी साझेदारी से भारतीय रेल विभाग द्वारा चलाई जा रही हैं। BOT के आधार पर राजमार्गों का निजीकरण किया जा रहा है। यहाँ तक कि कोचीन और बंगलौर जैसे स्थानों पर हवाई अड्डे भी निजी क्षेत्रों के सहयोग से बनाये जा रहे हैं।

18.7 पर्यटकों और पर्यटन पर प्रभाव

इस अनुभाग में यह तर्क दिया गया है कि पर्यटकों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि नीति की रूपरेखा तैयार किये जाने के कारण हुई है। घरेलू पर्यटन को प्रोत्साहन देने और उसमें विविधता लाने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयत्न किए गए हैं।

18.7.1 पर्यटकों का आगमन

व्यापार के जो अवसर भारत में पैदा हो रहे हैं वह व्यापारिक पर्यटकों के देश में आगमन को बढ़ा सकते हैं। इसके अतिरिक्त एक उद्योग के रूप में भविष्य के प्रति सम्पूर्ण जागरूकता है और पर्यटक सुविधाओं की उत्पत्ति के लिए बड़े पैमाने पर निवेश हो रहा है। इससे बेहतर पर्यटन ढाँचागत सुविधा सुज्जित होगी और पर्यटकों का बड़ी संख्या में आगमन हो सकेगा। विश्व पर्यटन संगठन के अनुमनों के अनुसार भारत में अन्तर्राष्ट्रीय टैरिफ के लगभग 30 लाख हो जाने की संभावना है हालांकि इस शताब्दी के अन्त तक भारत का लक्ष्य और अधिक 50 लाख पर्यटकों का है।

गत वर्षों से पर्यटकों के आगमन में निरंतर वृद्धि की प्रवृत्ति पाई जा रही है, हालांकि कई गतिरोध आए जैसे 1994 में प्लेग की घटना, 1992-93 में इण्डियन एअरलाइस और एअर इण्डिया में हड़ताल, दिसम्बर 1992 में बाबरी मस्जिद गिराए जाने के बाद फेली साम्प्रदायिक हिंसा और जनवरी 1993 में मुम्बई में हुए बम विस्फोट। कश्मीर में व्याप्त आतंकवाद का भी पर्यटकों के आगमन पर हानिकर प्रभाव पड़ा है। उससे पूर्व कुछ पूर्वी राज्यों में उग्रवाद और हिंसा की समस्याओं के कारण भी पर्यटन पर नकारात्मक प्रभाव हुआ है। इसके बावजूद पर्यटन में वृद्धि हुई है। गत तीन वर्षों में आगन्तुकों की संख्या निम्नलिखित है :

वर्ष	विदेशी पर्यटकों का आगमन	प्रतिशत वृद्धि
1992-93	18,20,239	2.2
1993-94	18,71,262	2.8
1994-95	19,09,601	2.0

18.7.2 स्वदेशी पर्यटन

स्वदेशी पर्यटन के विकास के लिए राज्य सरकार और केन्द्र सरकार दोनों ही योजना के अन्तर्गत सहयोग के रूप में विशेष प्रोत्साहन और रियायतें दे रहे हैं। सम्पूर्ण भारत में आवासीय सुविधाएं जैसे यात्री निवास, पर्यटक आवास आदि का निर्माण हुआ है। इसी प्रकार तीर्थ यात्राओं को प्रोत्साहित करने के लिए पर्यटक पत्रिकाओं, धर्मशालाओं का निर्माण विभिन्न तीर्थस्थलों पर किया गया है।

18.7.3 युवा एवं साहसिक पर्यटन

युवा एवं साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएं तैयार की गई हैं। बजट पर्यटक एवं युवा पर्यटक के लिए युवा होस्टल का निर्माण उपलब्ध आवास में वृद्धि की योजना का एक महत्वपूर्ण भाग है। विभिन्न साहसिक गतिविधियां जैसे जल क्रीड़ा, शीतकालीन क्रीड़ा, हवाई क्रीड़ा, लम्बी पदयात्रा पर्वतारोहण आदि राज्य पर्यटन निगमों, राज्य पर्यटन विभागों और केन्द्रीय पर्यटन विभागों में सक्रिय सहयोग से विभिन्न राज्यों में प्रारंभ कराए जा चुके हैं। कई उदाहरणों में निजी क्षेत्र भी इन गतिविधियों में सक्रिय रूप से सम्मिलित हैं।

पर्यावरणीय दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्रों में जहां स्थाई ढाँचा आवश्यक नहीं है वहां साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देने के प्रयास के रूप में शामियाने या अस्थायी आवास उपलब्ध कराना सारे प्रयासों का एक महत्वपूर्ण भाग है। राज्य सरकारों और पर्यटन विकास निगमों ने लम्बी पदयात्रा पर्वतारोहण, वन्य प्राणी गतिविधि, शिकार यात्रा, नदी रेफ्टिंग आदि के लिए केन्द्रीय सहायता के अन्तर्गत तंबू, स्विस कुटीर आदि खरीदे जाने हेतु वित्तीय सहायता दी गई।

18.8 प्रबन्धन एवं विपणन पर प्रभाव

पर्यटन नीति की कल्पना समझ-बूझ कर व्यापक रूप में की गई है। अत: मानव संसाधनों का प्रशिक्षण पर्यटन नीति का एक अनिवार्य अंग है। इसके साथ ही प्रभावी प्रबन्ध तन्त्र और विपणन तकनीकों को प्रोत्साहित करने के प्रयास भी किए गए हैं।

18.8.1 मानव संसाधन विकास

गुरदासपुर में एक नए होटल प्रबंध संस्थान की स्थापना की गई, गुवाहटी में फूड करापट संस्थान के उन्नयन और शिलाँग में एक नए संस्थान की स्थापना की अनुमति दी गई ताकि देश में प्रशिक्षण की सुविधाओं को बढ़ाया जा सके। श्रीनगर के होटल प्रबन्ध संस्थान ने, जो 1989-90 में बन्द हो गया था, 1994-95 में अपने प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को पुन: प्रारंभ कर दिया।

भारतीय स्कीइंग एवं पर्वतारोहण संस्थान औली, पटनीटॉप, गुलमर्ग और कुलू में पाँच पाठ्यक्रम चलाता हैं। इस संस्थान ने 1994-95 में 330 लोगों को प्रशिक्षित किया।

जल क्रीड़ा के राष्ट्रीय संस्थान ने 166 सहभागियों के लिए विभिन्न गतिविधियों जैसे विण्ड सर्फिंग, सेलिंग, सक्यूबा डाइविंग, वाटर स्काइंग के 1994-95 में पाठयक्रम चलाए।

18.8.2 विपणन

अब भारत विश्व की समस्त प्रमुख पर्यटन प्रदर्शनियों में भाग लेता है जैसे आई टी बी बर्लिन, वर्ल्ड टूरिज्म मार्ट, लन्दन फिटूर ' डरिड् आदि। हमारे विदेशी कार्यालय भी सारे स्थानीय, क्षेत्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन सम्मेलनों और प्रदर्शनियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। अपने देश की सकारात्मक छवि प्रस्तुत करने के लिए मुद्रित एवं इलेक्ट्रॉनिक दोनों ही प्रकार के माध्यमों का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है।

18.8.3 उदार विनियम दर संबंधी प्रणाली

पर्यटक व्यापार से सम्बद्ध होटलों, यात्रा एजेन्टों, पर्यटन संचालकों या पर्यटन व्यापार से सम्बद्ध संगठनों को उदार विनिमय दर की प्रबंध प्रणाली के अन्तर्गत रखा गया है और व्यापारिक यात्राओं सम्मेलनों,

सेमिनारों प्रशिक्षणों आदि में भाग लेने हेतु प्राधिकृत सम्बन्ध रखने वाला आवश्यक विदेशी मुद्रा दे सकता है।

विदेशी मुद्रा विनिमय उपार्जक खाता खोलने या संचालित करने की सुविधा होटलों, यात्रा एजेन्टों, यात्रा संचालकों आदि के लिए भी उपलब्ध है। इस योजना के अन्तर्गत विदेशी मुद्रा विनिमय का 15% आन्तरिक प्रेषण इस खाते में जमा किया जा सकता है और विशेष रूप से निर्धारित उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जा सकता है।

18.9 विदेशी सहयोग

होटलों और पर्यटन सम्बन्धी उद्योगों के लिए विदेशी विनियोग की प्रक्रिया को सरल बना दिया गया है। समस्त विदेशी विनियोग के 51% तक के लिए प्रार्थना पत्र रिजर्व बैंक आफ इण्डिया में दिया जा सकता है और वह स्वीकृत हो जाती है। विदेशी पूंजी को पूंजीगत वस्तुओं के आयात में उपयोग किया जा सकता है। ऐसे आयात के लिए लाइसेंस भी स्वीकृति के साथ ही भेज दिये जाते हैं। जो प्रस्ताव स्वीकृति के रूप में योग्य नहीं पाए जाते उन्हें नई दिल्ली स्थित उद्योग मन्त्रालय के औद्योगिक स्वीकृति सचिवालय को भेजने पड़ते हैं।

होटल और पर्यटन उद्योगों में विदेशी सहयोग के लिए शर्तों को उदार बना दिया गया है और ये निम्नलिखत हैं :

क) वास्तुशिल्प, योजना, देखरेख के लिए सहित तकनीकी एवं परामर्श सेवाओं की योजना के पूंजीगत मूल्य का 30% (भूमि एवं वित्त का मूल्य घटाने के बाद)

ख) विशेषाधिकार प्राप्ति और विपणन/विज्ञापन समर्थन शुल्क शुद्ध आमदनी का 3% (शुद्ध आमदनी का यहां अर्थ है क्रेडिट कार्ड प्रभार, ट्रेवेल एजेन्ट का कमीशन, आयकर, वैधानिक भुगतान आदि)

ग) प्रबन्ध शुल्क (जिसमें प्रोत्साहन शुल्क शामिल है) शुद्ध प्रचालन का 10% तक।

यदि प्रस्ताव ऐसे होटल चलाने/प्रबन्ध करने का है जिसमें 500 कमरे हैं तो उपरोक्त मानक लागू होंगे। विदेशी तकनीशियनों की सेवाएं प्राप्त करने के लिए अब अनुमति की आवश्यकता नहीं है।

विदेशी तकनीक सम्बन्धी अनुबन्धों और/या प्रबन्ध संविदाओं के अपने आप स्वीकृत हो जाने के लिए प्रार्थना पत्र रिजर्व बैक आफ इण्डिया को दिया जा सकता है, जो स्वत: अनुमोदन दे देगा और उद्यमी विदेशी मुद्रा विनिमय की प्राप्ति के लिए अधिकृत व्यापारी से सम्पर्क कर सकेंगे। यहां भी वही कमजोरियां सुस्पष्ट हैं जो पिछली पर्यटन नीति में मौजूद थीं। हालांकि विदेशी सहयोग की शर्तों और अन्य प्रकार के अनियमनों को पारिस्थितिक उपाय की स्पष्ट अनुपस्थिति में नई आर्थिक नीति के अनुरूप कर दिया गया है। उदाहरणार्थ इस बिन्दु को स्पष्ट करने के लिए होटल उद्योग से सम्बद्ध सारे नियमों को लिया जा सकता है। होटल उद्योग को विभिन्न प्रकार की रियायतें और विदेशी सहयोग के अधिक अवसर दिये गए हैं। फिर भी अपशिष्ट निपटान, सार्वजनिक भूमि पर अतिक्रमण, होटलों के पर्यावरण को बनाए रखने आदि जैसे पर्यावरणीय उपायों के पालन पर बल नहीं दिया गया है जिस की होटल उद्योग से अपेक्षा की जाती है। हाल ही में देश में बढ़ते हुए न्यायिक सक्रियतावाद के साथ ही किसी हद तक नियन्त्रण संभव हो सकता है। किन्तु यह बल दिया जाना चाहिए कि यह कानून वर्तमान वैधानिक कानून है जिन्हें पर्यटन नीति योजना में नहीं लाया गया है। अत: कलकत्ता के पश्चिमी बंगाल प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा पश्चिमी बंगाल के दीघा तटीय क्षेत्र के 60 से अधिक होटलों को चेतावनी दी जा चुकी है। ये कोई आश्चर्य नहीं है कि होटलों को कूड़ा कचरा और गंदा जल समुद्र में प्रवाहित करने के अपराध में दण्डित

किया गया है। इन उपायों को पर्यटन नीति योजना में सबसे पहले सम्मिलित किया जाना चाहिए था।

अतः राष्ट्रीय, क्षेत्रीय या स्थानीय योजना के हर स्तर पर पर्यटन नीति एवं योजना बनाते समय निम्नलिखित पक्षों पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

- प्रोत्साहन एवं सुविधाएं केवल उन लोगों को दी जानी चाहिए जो अपने व्यापार संचालन में पर्यावरणीय नियमों का पालन करते हैं। वन्य जीव पर्यटन में प्राकृतिक उद्यानों आदि में प्रवेश की अनुमति केवल उन ही लोगों को दी जानी चाहिए जो उद्यानों में पर्यटन व्यवहार, अपशिष्ट निपटान आदि में सावधान रहते हैं ताकि वन्य जीवों को अशान्ति अनुभव न हो।
- पर्यावरणीय कानून और सुरक्षा केवल न्यायपालिका का ही दायित्व नहीं होना चाहिए बल्कि स्वयं नीति दस्तावेज में उसे लागू कराने वाली युक्ति के रूप में सम्मिलित करना चाहिए। उदाहरणार्थ उन्हें तटीय सैरगाहों या वन्य प्राणी अभयारण्य के बाहर निर्माण कार्यों को शामिल करना चाहिए।
- विशेष व्यापार या उद्योग जैसे होटल यात्रा एजेन्सी या पर्यटन परिवहन संचालन को पर्यावरणीय पक्ष के मूल्यांकन के आधार पर ही मान्यता दी जानी चाहिए। इन एजेन्सियों के लिए अलग अलग संहिता बनाई जानी चाहिए और उनके कार्यान्वयन की विधि का उल्लेख किया जाना चाहिए। पर्यटन जैसे साहसिक कार्य, क्रीड़ा आदि के लिए पर्यावरणीय नियमों के अधीन प्रोत्साहन देने के बहुत अधिक अवसर हैं। विश्व भर में इन क्रियाओं को बढ़ती हुई पर्यावरणीय जानकारी से जोड़ा गया है। इन क्षेत्रों में पर्यटक पर्यावरण को बेहतर बनाने की दृष्टि से सहयोग करता है। ऐसी परिस्थितियों में पर्यावरणीय संहिता को स्वीकृति प्राप्त होगी। आवश्यकता इस बात की है इसे फिर से नीति के प्रारूप में सम्मिलित किया जाए ताकि पर्यटन संचालकों को पर्यटकों को अज्ञानी होने का फायदा उठाने से रोका जा सके।

बोध प्रश्न 2

1) परिवहन के अनियमन के स्वरूप पर टिप्पणी कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) 1992 की कार्य योजना के पश्चात् पर्यटन क्षेत्र में विदेशी सहयोग के स्वरूप में किस प्रकार परिवर्तन हुआ ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) पूंजीगत माल की निर्यात संवर्धन योजना (EPCG) क्या है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4) पर्यटन नीति में पर्यावरणीय बल के अभाव की समीक्षा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

18.10 सारांश

यह ध्यान देना प्रासंगिक है हालांकि भारत ने पर्यटन विकास में महत्वपूर्ण प्रगति की है किन्तु अभी बहुत कुछ करना शेष है। विश्व के 1% पर्यटक आगन्तुकों को भारत में आने के लिए आकर्षित करने का उद्देश्य एक दूर की संभावना प्रतीत होती है। ये भी असंभव है कि भारत इस शताब्दी से पहले 50 लाख पर्यटकों को आते हुए देखेगा। हालांकि उदारवाद पर्यटन विकास की प्रक्रिया में सहयोग दे रहा है किन्तु विकास की गति बहुत ही कम है।

18.11 शब्दावली

गुणक प्रभाव: एक तथ्य के विविध और बहुपक्षीय प्रभाव। पर्यटन के गुणक प्रभाव में रोगजार एवं विदेशी मुद्रा विनिमय संचय की उत्पत्ति, सांस्कृतिक एवं समाकलन आदि सम्मिलित हैं।

नदी पर्यटन: आनन्द एवं स्थानावलोकन के लिए नदी द्वारा की गई छोटी यात्रा।

अनियमन: निरोधात्मक नियमों और मानकों को किसी विशेष उद्यम के व्यवसाय से हटाना।

18.12 बोधप्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए उप-भाग 18.2.2। उसकी संघटनात्मक भूमिका और सांस्कृतिक तथा सामाजिक-आर्थिक विकास के अवसर देने पर बल दीजिए।

2) अपने उत्तर के लिए उप भाग 18.3.1 देखिए। पर्यटन नीति एवं उसके प्रभाव

3) उप-भाग 18.4.2 देखिए।

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उप-भाग 18.2.2 इस पर बल दीजिए कि यह वृद्धि को कैसे दिखाता है।

2) देखिए भाग 18.9 इस पर बल दीजिए कि उदारवादी निति के कारण कैसे अन्तर पड़ा।

3) देखिए उप-भाग 18.5.7।



Points of contact :

HARYANA TOURISM

सम्पर्क स्थान हरियाणा

यादवेन्द्र गार्डेन्स, पिन्जौर। जनपद अम्बाला
टेलीफोन 2959,2791 (काल्का एक्स) एस टी डी कोड 01733
हरियाणा सरकार, पर्यटन ब्यूरो
चन्द्रलोक बिल्डिंग-36, जनपथ, नई दिल्ली
टेलीफोन 3324911-10
मुख्य कार्यालय 17-18-19, सेक्टर 17-B.
चन्डीगढ़ टे : 542955-56-57
फैक्स संख्या 91-0172-543185

इकाई 19 ढाँचागत सुविधा

इकाई की रूपरेखा

1990 उद्देश्य

1991 प्रस्तावना

1992 पर्यटन ढाँचागत सुविधाएं

1921 आवास

1922 परिवहन

1993 विशेष पर्यटन उत्पादः पर्यटन ढाँचागत सुविधाओं के लिए नए आयाम

1931 सम्मेलन पर्यटन

1932 संकेन्द्रित विकास के लिए सर्केट्स/गन्तव्य/स्थान

1933 विशेष पर्यटन क्षेत्र

1994 कर्नाटक पर्यटन विकास का केस अध्ययन

1941 पर्यटन नीति 1992

1942 प्रभाव

1995 स्थानीय समुदाय का दृष्टिकोण उड़ीसा और केरल

1996 विकास से सीख

1997 विकास के वैकल्पिक मॉडल

1988 सारांश

1999 शब्दावली

1910 बोध प्रश्नों के उत्तर

19.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- 0 पर्यटन ढाँचागत सुविधा का अर्थ समझ सकेंगे,
- 0 कर्नाटक के विशेष संदर्भ में पर्यटन ढाँचागत सुविधा के विकास से सम्बन्धित सरकार द्वारा किए गए नेतृत्व की प्रकृति को सकेंगे,
- 0 विभिन्न विकसीय परियोजनाओं के सम्बन्ध में स्थानीय समुदायों की प्रतिक्रियाएं समझ सकेंगे, और
- 0 पर्यटक गतव्यों में एक विकास का माडल सृजित कर सकेंगे।

19.1 प्रस्तावना

पर्यटन राष्ट्रीय कार्ययोजना अभिव्यक्त करती है कि यदि अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन और मौजूद क्षमता को आयाम दिए जाएं तो भारत में पर्यटन उद्योग के त्वरित विकास के अत्यधिक अवसर हैं। यह भी अनुमान लगाया गया है कि भारत को 20वीं शताब्दी तक 50 लाख पर्यटकों का लक्ष्य प्राप्त कर लेना चाहिए। हलांकि इसके कारण भूमि और पर्यावरण पर इतना दबाव पड़ेगा जितना पहले कभी नहीं पड़ा। आरंभ में सामावयता सरकार की नीति और उन क्षेत्रों का उल्लेख किया गया है जैसे आवास और परिवहन जिनके लिए समुचित प्रयास और निवेश किए गए है।

आगामी भागों में कर्नाटक, उड़ीसा, और केरल के उदाहरण लिए गए हैं जहां पर्यटन से सम्बन्धित विकास योजनाओं ने वहां की जनता की तीखी प्रतिक्रियाओं को जन्म दिया है। विकासीय परियोजनाओं के सामान्य प्रत्यक्ष ज्ञान का सविस्तार वर्णन किया गया है। इकाई विकास पर भी विचार करती है और राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय स्तर पर उसके प्रत्यक्ष ज्ञान पर भी ध्यान आकर्षित कराती है। अन्ततः यह इकाई विकास के वैकल्पिक तरीके का सुझाव भी देती है जो स्थानीय समुदायों की प्राथमिकताओं और आकांक्षाओं के लिए संवेदनशील हैं।

19.2 पर्यटन ढाँचागत सुविधा

पर्यटन को आवास, परिवहन और आकर्षणों की आवश्यकता होती है ताकि वह अपनी पहुंच को विस्तार दे सके। इस मामले में सरकार का दृष्टिकोण यह है कि राज्य ने देश में सेवाओं के विकास के लिए पर्याप्त योगदान दिया है और अब समय आ चुका है कि निजी क्षेत्र और विदेशी निवेश को पर्यटन के त्वरित विकास के लिए प्रोत्साहन दिया जाए। ये एक आर्दश (माडल) विकसित कर रहा है जो विश्व पर्यटन में भारत की बढ़ती हुई साझेदारी में मुख्य बाधा के रूप में ढाँचागत सुविधा की कमजोरियों की पहचान करता है। अतः कार्यनीति क्षेत्रों के गहन विकास के लिए चयनात्मक आधार पर उन गन्तव्यों की पहचान करना चाहती है जहां पर्यटक आकर्षण पहले से मौजूद है ताकि दिल्ली-आगरा-जयपुर जैसे क्षेत्रों का सर्वोत्तम उपयोग किया जा सके।

19.2.1 आवास

होटल पर्यटन ढाँचागत सुविधा का सबसे महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य भाग है। वर्तमान अनुमोदित श्रेणी की उपलब्ध आवासीय क्षमता 55000 कमरों की है। यदि हमें अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक बाजार में अपनी भागीदारी को दुगुना करना है तो इस दशक के अन्त तक आवास की इस क्षमता को भी दुगुना करना पड़ेगा। सरकार ने इस क्षेत्र की ओर विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए वित्तीय रियायतों की योजना बनाई है जिसके अन्तर्गत करों की छूट और ऋण राशि को वापसी से मुक्त कर देना सम्मिलित है। वह क्षेत्र जिन्हें राज्य से अधिकतम सहायता प्राप्त होगी वह हैं ग्रामीण क्षेत्र, पर्वतीय स्थल तीर्थ केन्द्र और द्वीपीय एवं तटीय सैरगाहें। हेरिटेज होटल योजना पर्यटन विकास को प्रमुख पर्यटक सर्किट में परिणत कर देगी। ऐसा देशी पर्यटकों के आवास के शिविर स्थलों को स्थापित करके सुनिश्चित करना चाहिए। अपार्टमेन्ट होटलों पर भी विचार करना चाहिए।

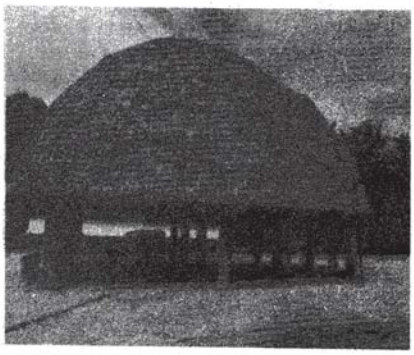

चित्र-1 निकोबार वासियों की झोपड़ी

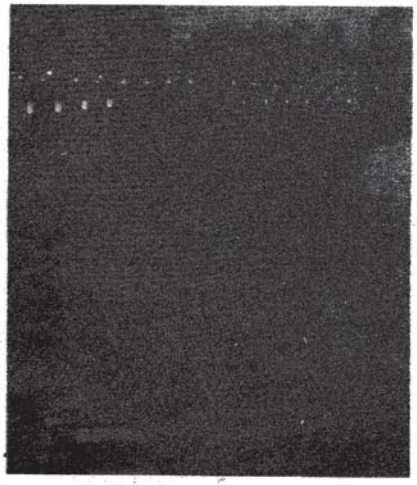

चित्र-2 ढाँचागत सुविधा के रूप में सड़कें मैरीन ड्राइव, मुम्बई

19.2.2 परिवहन

पर्यटक अपने गन्तव्य स्थलों तक पहुंचने के लिए हवाई एवं भूतल परिवहन का उपयोग करते हैं। इसलिए हमें अन्ततः रूपात्मक प्रकार का मिला-जुला परिवहन विकसित करनी चाहिए जिसमें पर्यटक वायु सेवा द्वारा भारत आएं, उन्हें कोई विशेष पर्यटक ट्रेन कोच यात्रा या हवाई पट्टी की सेवाएं मिल जाएं ताकि वह अपने गन्तव्य तक आसानी से और कम समय में पहुंच सकें। हमें रास्ते की सुविधाएं और परिवहन तन्त्र को बढ़ाना पड़ेगा। इसके लिए हमें कलात्मक कोच और कारें आयात करनी होगीं। राष्ट्रीय और राजकीय राजमार्ग की स्थिति को सुधारना पड़ेगा और प्रवेश की सुख सुविधाओं और आकर्षणों को बढ़ाना पड़ेगा। इस योंजना के कार्यान्वयन के लिए सहायता स्कीमों पर भी विचार किया जा रहा है ताकि पर्यटन व्यापार की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता पूरी की जा सके।

हवाई परिवहन के क्षेत्र में दो नई योजनाएं जिनका कार्यान्वयन हुआ है वह है खुले आकाश या उदारीकरण की नीति और छे निजी एयर लाइनों की व्यवस्था। शहरी विमानन महानिदेशालय किराये पर उड़ाने प्राप्त करने की अनुमति अपने आप स्वीकृत कर देता है और अपने उदारीकरण के पहले वर्ष में भारत में आने वाले पर्यटकों के 50% इसका का उपयोग करना प्रारंभ कर चुके हैं। निजी हवाई सेवाएं उन्हें विभिन्न पर्यटक गन्तव्यों से जोड़ने की भूमिका निभाती हैं।

रेल पर्यटन के लिए प्रमुख मार्गो पर वातानुकूलित कोचों के उपयोग के अतिरिक्त विशेष पर्यटक गाड़ियों "पैलेस आन व्हील्स" के समान ही विकसित की जा रही है जो राजस्थान के बाहर प्रमुख पर्यटक सर्केटों जैसे गुजरात-राजस्थान सर्केट और मैसूर गोवा सर्केट से जोड़ेंगी।

जैसा कि मुम्बई-गोआ को मिलाने वाला जलमार्ग विकसित किया जा रहा है उसी आधार पर ऐश व आराम भरा जल यात्रियों के लिए जलयान भारत में भी पर्यटक बाजार में प्रेरणा स्वरूप लाया जा रहा है। शिपिंग कार्पोरेशन आफ इण्डिया द्वारा चलाए जा रहे जलयान अभी भी लक्ष्यद्वीप और अण्डमान तथा निकोबार द्वीपीय मार्गों पर चल रहे हैं। भारत के पर्यटकों को भी विदेशी मुद्रा विनिमय नियम के उदार होने की सुविधा के कारण अन्तर्राष्ट्रीय जल यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

19.3 विशेष पर्यटन उत्पाद : पर्यटन ढाँचागत सुविधाओं के लिए नए आयाम

पर्यटन ढाँचागत सुविधा की महत्वपूर्ण प्रारंभिक आवश्यकताओं आवास और परिवहन को जान लेने के बाद अब हमें पर्यटन के कुछ अन्य उत्पादों के विषय में जान लेना चाहिए।

19.3.1 सम्मेलन पर्यटन

विश्व के अत्यन्त दूरदराज क्षेत्रों तक अपनी गतिविधियों के प्रसार के लिए बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा आयोजित अभिसमय (conventions) और सम्मेलन सारे देशों में महत्वपूर्ण हो गये हैं। भारत अभिसमय तथा सम्मेलन परिसरों की स्थापना पर ध्यान दे रहा है। ऐसा पहला लक्ष्य मुम्बई में विकसित किया जा रहा है और इसके पश्चात दिल्ली में विकसित किया जाएगा। दक्षिण में बंगलौर भी एक ऐसा गंतव्य स्थान है जहां सम्मेलन पर्यटन विकसित किया जाएगा। छोटे पैमाने पर कंट्री क्लब और होटलों को अपने सम्मेलन आयोजित करके और दूर संचार और अन्य संचार सुविधाएं देकर इस व्यवसाय को आकर्षित करना पड़ेगा।

19.3.2 संकेन्द्रित विकास के लिए सर्किटों/गन्तव्य स्थान

संकेन्द्रित विकास के लिए 15 सर्किटों/गन्तव्य स्थलों की पहचान की गई है जो कि निम्नलिखत है

- कुल्लू-मनाली-लेह
- ग्वालियर-शिवपुरी-ओरछा खजुराहो
- बगडोगरा-सिक्किम-दार्जिलिंग-कालिमपौंग
- भुवनेश्वर-पुरी-कोणार्क

- हैदराबाद-नागार्जुन-तिरूपति
- मद्रास-ममल्लापुरम-पांडिचेरी
- ऋषिकेष-गंगोत्री-बद्रीनाथ
- इन्दौर-उज्जैन-माण्डू
- जैसलमेर-जोधपुर-बीकानेर-बाड़मेर
- लक्षद्वीप
- अण्डमान द्वीप समूह
- मनाली
- बेकल तट
- मुत्तूकाडू तट
- कांगड़ा

इन सर्किटों/गंतव्य स्थानों में केन्द्रीय सहायता से या राज्य/निजी संसाधनों द्वारा निवेश से सुविधाएं एवं ढांचागत सुविधाओं का विकास किया जाना है।

19.3.3 विशेष पर्यटन क्षेत्र

केन्द्र सरकार ने राज्य सरकारों के सहयोग से विदेशी पर्यटकों के लिए राज्यों की कला सुविधाओं के गहन विकास हेतु कुछ क्षेत्रों की घोषणा की है। इन क्षेत्रों को निर्यात संसाधन मण्डल जैसी भूमिका निभानी है। राज्य परिवहन प्राधिकरणों को मास्टर प्लान के अनुसार रियायती दरों पर होटलों और पर्यटन सम्बन्धी उद्योगों के लिए निवेशकों को इन्हें आवांटित करना चाहिए। राज्य द्वारा स्थापित क्षेत्र विकास प्राधिकरण सम्पूर्ण अधिकारों के साथ इस क्षेत्र का प्रबन्ध करेगा ताकि मास्टर प्लान की तैयारी हो सके और निवेशकों को एक ही खिड़की पर सुविधा दी जा सके। राज्य सरकार मौलिक ढाँचागत सुविधाओं जैसे सड़कों, परिवहन टर्मिनल, और रास्ते की सुविधाओं, विद्युत, जल, न्याय और कांनून व्यवस्था और नागर सेवाओं में निवेश करेगी। केन्द्रीय सरकार सहयोगी ढाँचागत सुविधा जैसे हवाई अड्डा और हवाई सम्पर्क सेवा, संचार और डाक सम्पर्क, बैंकिग सेवाएं और रेलवे स्टेशन में मदद करेगी। कर और दर केन्द्र एवं राज्य दोनों ही के द्वारा दस वर्षों के लिए स्थिर कर दी जाएंगी ताकि निवेश को आकर्षित किया जा सके। उद्देश्य विदेशी निवेश को आकर्षित करना होगा।

द्वीपीय पर्यटन

यह भी निर्णय किया गया कि चयनात्मक रूप से द्वीपों को विशेष रूप से अण्डमान और लक्षद्वीप पर्यटन के लिए खोल दिया जाऐ। किन्तु निर्वहन क्षमता को ध्यान में रखना पड़ेगा। इन गंतव्य स्थानों को ऊंचे मूल्यों के निम्न परिमाण के पर्यटन के लिए विकसित किया जाएगा। निवेशकों और समन्वयक संस्थाओं को इक्विटी सहयोग दिए जाने के लिए एक पर्यटन विकास निधि स्थापित करने की आवश्यकता है जिसमें राज्य सरकारें यात्रा व्यापार और केन्द्र सम्मिलित हों ताकि पर्यटन विकास सम्बन्धी सारे मामलों का समन्वय हो सके।

गोल्फ पर्यटन

इस प्रकार का पर्यटन, पर्यटन आयोजकों के लिए एक और लोकप्रिय विकास है किन्तु पर्यावरणीय आधार पर सारे विश्व में गोल्फ के मैदान का विरोध किया जा रहा है। गोल्फ पर आनेवाला व्यय इतना अधिक होता है कि इसको पुनः स्थापित करना आवश्यक हो गया है और नए गंतव्य स्थानों पर बागान या कृषि भूमि को गोल्फ के मैदानों में परिवर्तित किया जा रहा है। पर्यटन उद्योग ने भी इसे उन्नत करने के लिए 50 करोड़ रुपए निर्धारित किए हैं जिसे मुम्बई, दिल्ली और जयपुर और अन्य केन्द्रों के मैदानों के सुधार पर व्यय किया जाएगा। अंग्रेजों के द्वारा विकसित किए गए ऐतिहासिक मैदान ऐसी जगहों पर थे जिससे स्थानीय लोगों के व्यवसायों में हस्तक्षेप नहीं होता था। आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के मैदान न

केवल जमीन घेरने वाले हैं बल्कि टर्फ और रूकावटें जिस क्षेत्र में बनाई जाती है वहां की प्राकृतिक वनस्पति और आहार श्रंखला को वे नष्ट कर देती है। ऐसे मैदान अन्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञता की सहायता से बनाए जाते हैं जिसके कारण ढांचागत सुविधा की लागत बढ़ जाती है।

पर्यटन के लिए ढांचगत सुविधाओं के उपर्युक्त संकेतक स्पष्टरूप से निजी बाजार प्रभावित माड़ल को स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं ज्योकि कम विकसित अर्थव्यवस्थाओं में प्रवेश कर रहा है।

बोध प्रश्न 2

1) उन विभिन्न क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए जहां जहां पर्यटन सम्बन्धी ढाँचागत सुविधा विकसित की जा रही है।

.....

.....

.....

.....

.....

2) आवासीय ढाँचागत सुविधा के विकास सम्बन्धी सरकारी योजना का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) विशेष पर्यटन क्षेत्र क्या है ?

.....

.....

.....

.....

.....

19.4 कर्नाटक पर्यटन विकास का केस अध्ययन

कर्नाटक की विस्तृत तटरेखा है, काफी बड़े क्षेत्र पर वन हैं और जलवायु भी अच्छी है। 1995 में आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या दो लाख थी और कुल 1.07 करोड़ देशी पर्यटकों का आगमन हुआ। कर्नाटक ने सन 2000 तक पांच लाख विदेशी पर्यटकों के आने का लक्ष्य रखा है किन्तु इतनी बड़ी संख्या में आने वाले पर्यटकों के लिए ढाँचागत सुविधा को बढ़ाना पड़ेगा।

19.4.1 पर्यटन नीति

1992 की पर्यटन नीति निम्नलिखित पर्यटक संबंधी गतिविधियों पर बल देती है।

- निजी क्षेत्र में पर्यटक गन्तव्यों पर आवास और पर्यटन सुविधाओं की स्थापना,

- ऐतिहासिक एवं पुरातत्वीय स्थलों की खुदाई,
- वन्य प्राणी पर्यटन को बढ़ावा देना, ऐसे गंतव्य स्थलों पर अनुमत्य ढाँचागत सुविधाओं की स्थापना,
- प्रकृति एवं स्वास्थ्य पर्यटन को प्रोत्साहन देना,
- क्रीड़ा एवं साहसी पर्यटन को प्रोत्साहित करना,
- उत्तरी कर्नाटक में दो विश्व विरासत स्थलों को विकसित करना और ढाँचागत सुविधा की सहायता उपलब्ध कराना,
- पर्याप्त पर्वतीय सैरगाहें विकसित करना जिनके लिए किम्मानागुन्डी, नाद, माले, महांदेश्वरा और बलीगिरिरंगना की पहचान की गई है,
- तीज त्यौहारों को प्रोत्साहन देना और राज्य की संचालित यात्राओं को प्रोत्साहन देना,
- होटल परियोजनाओं के लिए एक मार्गी निकासा, 31 परियोजनाओं को पारित किया जा चुका है जिनसे 3343 रोजगार अवसरों को सृजित करने की संभावना है और इसपर 289.53 करोड़ का खर्च आएगा,
- सरकार, व्यापार अकादमी और विशेषज्ञों के सदस्यों द्वारा पर्यटन सलाहकार समिति का गठन किया गया ताकि राज्यों में पर्यटन विकास पर नजर रखी जा सके। पर्यटन विकास पर 847.36 करोड़ के निवेश के लिए मास्टर प्लान 257 क्षेत्रों के लिए होगा।
- 1996 में रेलवे के प्रारंभ हो जाने की दृष्टि से तटीय सर्किट को विकसित किया जाना है। आशा की जाती है कि सिंगापुर और मलेशिया ऐसे विकास के लिए वित्तीय सहायता देंगे।

तीन समझोतों के अंतर्गत बंगलौर में एक सम्मेलन केन्द्र, 5 स्थानों पर 5 चार तारा होटलों और एक अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा एजेन्सी के लिए हस्ताक्षर किए गए हैं।

ताज ग्रुप के साथ मिलकर काम करने वाली कम्पनी की 100 करोड़ रुपए की लागत से स्थापना की गई है ताकि होटलों का सुधार किया जाए या उन्हें आधुनिक बनाया जाए। मरकारा, मानुगुण्डी के चिक मंगलूर और जोग प्रपात पर तीन तारा होटलों के निर्माण की योजना बनाई गई। सरकार भूमि उपलब्ध कराएगी और ताज ग्रुप के द्वारा नकद निवेश होगा। ताज ग्रुप हेम्पी, पट्टाडकाल और बदामी के साथ साथ मंगलौर के तटीय सैरगाह पर होटल निर्माण की योजना बना रहा है। मरकल में वन्य प्राणी सैरगाह पर कार्य चल रहा है। ओबेरॉय ग्रुप ने 200 करोड़ के निवेश की योजना बनाई है। वह जेनसन्स के साथ मिलकर बैंगलोर के निकट गॉल्फ रिसार्ट पर कार्य कर रहे हैं। स्टर्लिंग रिसॉर्टस बैंगलोर के पास एक व्यापार होटल की योजना बना रहा है। भारतीय पर्यटन विकास निगम अशोका होटल को तीन करोड़ की लागत से उन्नत कर रहा है। क्रेडिट कार्ड व्यापार भी मुद्रा विनिमय और आरक्षण सुविधाओं जैसे वीजा और मास्टर कार्ड जैसी सुविधाओं से होटल एवं वायुसेवा से भी जुड़ गया है।

19.4.2 प्रभाव

कर्नाटक पर्यटन योजना पर्यटन पर दिये गए महत्व को व्यक्त करती है और विकास के माडल के कार्यान्वयन को दर्शाती है। दोनों ही मामलों में राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर अस्थाई आगन्तुकों के लिए ढाँचागत सुविधा की जो आवश्यकता होती है उसे वरीयता दी जा रही है। ये कल्याण क्षेत्र से सरकार के हटने की नीति को दर्शाता है और बाजार द्वारा परिचालित विश्व अर्थव्यवस्था में भारत को आगे बढ़ाने के लिए उद्योग और व्यापार का आधार उपलब्ध कराता है। ऐसी विकास नीतियों का प्रभाव परिणाम विरोध और प्रतिरोध के रूप में सामने आ चुका है।

इन में से एक फिशर-फॉल्क का मामला है जो मंगलौर नगर से आधे किलोमीटर दूरी पर थानीरू भावी में स्थित है और जहां 40% जनसंख्या मुंगेराओं की है। वे दक्षिणी कन्नड़ के दलितों में सबसे पिछड़े हुए है। उस क्षेत्र में 127 एकड़ भूमि औद्योगिक विकास के लिए उपार्जित की गई थी। जमींदारों ने मुआवजा

प्राप्त किया और कुछ मामलों में निम्नजाति के किराएदारों को विस्थापित किया गया और अन्य कुछ मामलों में भूमि उपयोग के प्रारूप में परिवर्तन के विषय में कुछ बताया भी नहीं गया। 1992 में राष्ट्रीय कार्य नीति की प्रस्तुति के पश्चात ताज ग्रुप और ऐम्बेसी इन्टरनेशनल ने अधिकृत भूमि को प्राप्त करने का प्रयास किया। किराएदारों को उनके घरों और कार्यस्थलों की नई योजनाओं के विषय में विश्वास में नहीं लिया गया। उद्योग बोर्ड द्वारा नारियल के वृक्षों की नीलामी पहला कदम था। ये पेड़ उनकी सम्पत्ति समझे जाते थे जिन्होंने उनका पोषण किया और उनकी रखवाली की। जब भी समुदाय ने वृक्षों पर अपने अधिकारों की रक्षा करने का प्रयास किया, उन्होंने निष्कासन का भय अनुभव किया।

होटलों के लिए उस क्षेत्र को साफ करने के कार्य को राज्य सरकार द्वारा विकासीय लाभ के रूप में देखा गया। राज्य सरकार कहती है कि वहां निवास करने वाले समुदाय के पास न तो झोंपड़े हैं और न राशन कार्ड ताकि वह अपना दावा सिद्ध कर सकें। उस क्षेत्र तक पहुंचाने वाली सड़क होटल कम्पनियों द्वारा पाँच वर्ष में बनवाई जा सकीं और वहीं सड़कें गरीब समुदाय के निकाले जाने का मार्ग सिद्ध हुई। इस समुदाय को वहां अपनी अर्थव्यवस्था को विकसित करने के लिए भूमि क्रय करने का अधिकार या घर बनाने के लिए राज्य सरकार की सहायता प्राप्त करने का अधिकार, करों पर छूट और ऋण लेने का अधिकार नहीं है। जब समुदाय ने जनपद के अधिकारियों से पुनः निवेदन किया तो उन्हें बताया गया कि मानवता के नाते प्रत्येक विस्थापित परिवार को तीन से पाँच प्रतिशत तक भूमि उपलब्ध हुई तो दी जा सकती है। मंगलौर शहर ने थानीरु भावी में भूमि के मूल्य को विकसित करने के साथ-साथ इसके मूल्य में वृद्धि की। यह स्थानीय लोगों के प्रवेश के लिए दुर्गम हो गया। सार्वजनिक उपयोग या सार्वजनिक उद्देश्य के लिए उपयोग में लाई जाने वाली भूमि के कानून के अन्तर्गत राज्य सरकार ने भूमि को अपने अधिकार में किया है।

बोध प्रश्न 2

1) कर्नाटक में पर्यटन ढाँचागत सुविधा विकसित करने के लिए उठाए गए विभिन्न कदमों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) कर्नाटक में थानीरू भावी के मछुआरों पर ढांचागत सुविधा के विकास का क्या प्रभाव पड़ा हुआ ?

.....

.....

.....

.....

.....

19.5 स्थानीय समुदाय का दृष्टिकोण : उड़ीसा और केरल

थानीरू भावी में समुदाय द्वारा पूछे गए प्रश्न निम्नलिखित हैं :

- लोग अपनी भूमि क्यों दें ?

- लोग अपने कार्य स्थलों से निष्कासित कर दिए जाने के रूप में विकास की कीमत क्यों चुकाएं ?
- यदि हरजाने के तौर (क्षतिपूर्ति) पर भूमि का एक छोटा सा टुकड़ा ही मिलना है तो वह घर और काम के बिना जीवित कैसे रहेंगे ?
- एक सैरगाह को उस क्षेत्र में रहने वाले लाखों लोगों के जीवन और जीविका की कीमत पर कुछ लोगों के आनंद की आवश्यकताओं की पूर्ति को सरकार और पर्यटन उद्योग कैसे उचित ठहरा सकते हैं।

बहुत से ऐसे तर्कसंगत प्रश्न हैं जिन्हें आज जनजातियां और निम्नजातीय समुदाय उठा रहे हैं, क्योंकि जनतान्त्रिक प्रबन्ध में उनकी आवाज है। इससे पहले अतीत में निम्न श्रेणी के लोगों को उनके अधिकारों और इच्छाओं की परवाह किए बिना पुनः बसाने योग्य बनाकर उनके विस्थापन को विकास दर्शन का रूप दे दिया जाता था। ढांचागत सुविधा और उद्योग ने लोगों और पर्यावरण का महसूल सुनिश्चित कर दिया किन्तु पूंजीवाद ने उसे उसके लाभों के आधार पर न्याय संगत सिद्ध कर दिया। आज लाभों के लिए मांग केवल कुछ चुने हुए लोगों तक ही सीमित नहीं रह गई है। इसी प्रकार उड़ीसा सरकार के पास पुरी-कोर्णाक समुद्र तट पर तटीय सैरगाह विकसित करने के लिए महत्वाकांक्षी योजना है। ये सैरगाह 2227 एकड़ क्षेत्र पर फैले आरक्षित वन को नष्ट कर देगी और 1935 में राज्य की स्थापना से पूर्व स्थापित पक्षी विहार को हटा देगी। राज्य में आन्दोलन और अन्तिम समय में कानून के हस्तक्षेप के कारण परियोजना टाल दी गई। पर्यावरणीय क्षति की दृष्टि के अतिरिक्त जिस पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम 1991 की सहायता से उन्हें सुरक्षित रखा जा सकता है, तो समीपवर्ती देहातों की समाजिक-आर्थिक दशा पर योजना का प्रभार गंभीर हो सकता है क्योंकि वनों पर ही उनकी जीविका निर्भर है। बालू के टीलों पर नियन्त्रण पा जाने के बाद और चक्रवात विरोधी उपायों के कार्यान्वयन के पश्चात उन्होंने हरित अर्थव्यवस्था विकसित कर ली है। पशुपालन भी एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है। ग्रामीण संमुदाय के प्रत्येक सदस्य ने परियोजना का विरोध किया क्योंकि पर्यटन ने कृषि अर्थव्यवस्था का स्थान ले लिया है और वेश्यावृति, तस्करी और नशीली दवाओं का व्यापार चलने लगा। यदि पश्चिमी तट इन क्रियाओं को नियन्त्रित करने का प्रयास करेगा ये गतिविधियां पूर्वी तट की ओर फैलेंगी।

केरल के बेकाल के समुदाय भी ऐसे विकास के विरुद्ध संघर्ष पर उतारू हैं। उन्होंने चित्तारी नौघाट से चन्द्रगिरि तक की 300 हेक्टेयर भूमि की रक्षा के लिए सुरक्षा समिति का गठन किया है। बेकाल दुर्ग जो एक देशी पर्यटन का आकर्षण है टीपू सुल्तान की पराजय के पश्चात ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथों से होता हुआ केन्द्रीय सरकार के हाथों में आ गया। दुर्ग के दक्षिण की ओर नौ किलोमीटर का क्षेत्र प्रमुख मत्स्य केन्द्र है जो मानसून के महीनों में भी सक्रिय रहता है और केरल की चारों दिशाओं से आने वाले मछुआरों को अपने शान्त समुद्र के कारण आश्रय देता है। 200 करोड़ विदेशी मुद्रा विनिमय की कमाई होती है और यह अर्थव्यवस्था उन मत्स्य व्यापारियों, वाहकों, कुलियों बर्फ उत्पादकों आदि का भरण-पोषण करती है जो मत्स्य केन्द्र को विभिन्न सेवाएं उपलब्ध कराते हैं।

कृषक भी तम्बाकू, नारियल और धान पैदा करते हैं। 25000 समर्थ समुदाय महत्वपूर्ण पर्यटन परियोजना द्वारा विस्थापित किए जाएंगे। इसे यह कहकर उचित ठहराया जाता है कि पर्यटन लोगों की तमाम बुराइयों का इलाज है। समुदाय भूमि, समुद्र तट अपरदन, जल संसाधनों और घाट के प्रति चिन्तित हैं। समुदाय की सामाजिक ज़िन्दगी भी जोखिम में पड़ जाएगी क्योंकि स्कूल मन्दिर और मस्जिद दुर्ग में ही है। स्थानीय लोग भी घृणा के साथ पर्यटन के यौन अर्थों को देखते हैं। वह प्रश्न करते हैं कि स्थानीय समुदाय अपनी पारम्परिक कार्यकलापों को त्याग कर इस प्रकार गतिविधि एवं रोजगार को क्यों पसन्द करें।

19.6 विकास से सीख

ये उदाहरण हमें अवगत कराते हैं कि ढाँचागत सुविधा का विकास ऐसा मुद्दा है जो केवल प्रशासन या सम्भ्रान्त जमींदारों और व्यवसायिक विकासकों को ही नहीं समुदाय के प्रत्यक्ष ज्ञान को रंग देता है। जब

एक बार समुदाय भूमि उपयोग में परिवर्तनों और विस्थापन के मुद्दों पर संगठित होना प्रारंभ करते हैं तो ऐसे संघर्ष का समाधान आयोजकों के चुनाव क्षेत्र पर निर्भर करता है।

केन्द्र का चुनाव क्षेत्र राष्ट्रीय है और जब वह पर्यटन और अर्थव्यवस्था के लिए उसके लाभ पर दृष्टि डालता है तो वह समस्त परियोजनाओं के वृहत उद्देश्यों से जुडा होता है। राज्य सरकार राज्य में वर्ग जातीय ढांचे के राजनीतिक लाभों को देखती है और सत्ता संभालने में कारक के रूप में निवेश और विकास के सूक्ष्म एवं व्यापक दोनों उद्देश्यों पर ध्यान देती है। ये दोनों दृष्टिकोण ऐसे क्षेत्रों में पूंजीगत विकास को केन्द्रित करने का कारण बने हैं जहां ढांचागत सुविधा सामर्थ्य भी केन्द्रित करने का कारण हुए। अनियमित विकास के कारण सीमान्त निवास की नीतियां उत्पन्न हुई जो सामान्य संसाधनों और लक्षणों पर निर्भर है। स्थानीय स्तर पर बहुत से स्वार्थी वर्ग हैं जिन्होंने इन क्षेत्रों में स्वैच्छिक चेष्टा से अपने लिये ऐसा स्थान चुन लिया है जहां उन्हें अपने संकटमय वर्गों के साथ मिलकर जीवन यापन करना है। ये सारी शक्तियां अब विकासीय विवादों में भूमिका निभाती हैं और ढाँचागत सुविधा द्वारा ऐसे विविध स्वार्थों का प्रभावित होना बहुत संभव है। इस विषय पर भी विचार किया गया है। ढाँचागत सुविधा की लागत भी इन विभिन्न क्षेत्रों द्वारा मिलजुलकर आपस में बांट कर ली जाती है किन्तु जो मुद्दा सामने आने वाला है वह कमजोर वर्गों के लोगों के स्वास्थ्य एवं जीविका की कीमत पर निवेश के सामाजिक क्षेत्र से ढांचागत सुविधा के क्षेत्र की ओर गया है। चाहे वह राज्य सहायता के रूप में, हों या करों के रूप में निवेश की वसूली देशी पर्यटकों के लिए पर्यटक उत्पादों की कीमत में वृद्धि करेगी और बाजार के कमजोर वर्ग को संभवतया क्षति पहुंचेगी क्योंकि वह अत्यन्त पिछड़े हुए और अल्प विकसित गंतव्य स्थानों और उत्पादों तक ही सीमित है।

19.7 विकास के वैकल्पिक माडल

जन केन्द्रित विकास कम लागत और कम तीव्र निवेश योजना पर आधारित है और कार्यान्वयन पंचायतों तथा नगरपालिकाओं के हाथ में है जो निर्वहन क्षमता और गतिविधि का निर्धारण करते हैं।

विनियोग को भी माल के रूप में निवेश सहित स्थानीय स्तर पर निर्धारित करना चाहिए। अत: पर्यटन का मूल्य स्थानीय लोगों को निर्धारित करना चाहिए न कि यात्रा व्यापार को क्योंकि यात्रा व्यापार इसकी लागत अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में निर्धारित करता है और नए गंतव्य स्थानों के अनोखे और विशेष गुण पर ध्यान नहीं देता।

गतिविधि और ढाँचागत सुविधा जिस पर इसे आधारित किया जाना चाहिए उसे भी स्थानीय स्तर पर ही निर्धारित होना चाहिए ताकि उसे टिकाऊ स्तर तक ले जाया जा सके। पर्यटन को जनसाधारण का विकासीय मुद्दा समझना चाहिए और जनता को ही उसके मूल्यों और लाभों का मूल्यांकन करना चाहिए ताकि आय और सांस्कृतिक आदान प्रदान का वास्तविक अन्तरण ढांचागत सुविधा के नकारात्मक परिणामों को विकसित हुए बिना और राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पूंजीवादी एजेन्सियों द्वारा नियंत्रण के बिना हो सके।

उपयुक्त एवं स्थायी प्रौद्योगिकी और कौशल विकसित किया जाना चाहिए ताकि उन समुदायों और क्षेत्रों का विस्थापन और परायापन कम से कम हो जिनका उन पर ऐतिहासिक एवं पारंपरिक अधिकार है।

इस सबसे बढ़कर निर्णय करना, योजना बनाना और उनका कार्यान्वयन पारदर्शी होना चाहिए और जहा तक संभव हो सारे लाभभोगियों को समान रूप से उसमें सम्मिलित करना चाहिए। यदि यह नहीं किया गया तो यह भावना पैदा होगी कि यह विकास उनके हित में किया जा रहा है जो स्थानीय लोगों को अनावश्यक समझते हैं। परिणामस्वरूप पर्यटन जो अंत:व्यक्ति निष्ठता पर निर्भर करता है उसे विद्वेष का सामना करना पड़ेगा।

बोध प्रश्न 3

1) बेकाल में समरक्षा समिति का क्या उद्देश्य है ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) विकास के लिए वैकल्पिक माडल कैसे तैयार हो सकता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

19.8 सारांश

यह स्पष्ट है कि पर्यटन ढाँचागत सुविधा निष्क्रिय गतिविधि नहीं है। जब तक यह नहीं समझा जाता कि पर्यटन न तो अनिवार्य रूप से पर्यावरण स्नेही है और न ही कम लागत वाला है तब तक वास्तव में ढांचागत सुविधा के विकास के कारण नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं। यह ग्रामीण क्षेत्रों में भी एक शहरी आवासीय ढांचा उत्पन्न कर सकता है जिस के कारण अनेक संसाधनों जैसे जल एवं विद्युत पर दबाव पड़ता है। ढाँचागत सुविधा पूंजीवाद के ऐसे क्षेत्रों में प्रवेश का एजेन्ट भी है जहां समुदाय पर्यावरण के अनुकूल रहते चले आ रहे हैं और प्राकृतिक संसाधनों को भावी पीढ़ी के लिए संभाल कर रखे हुए हैं। उन्होंने वहन क्षमता को बनाए रखा है और मानव तथा प्रकृति में प्राकृतिक सन्तुलन को कायम रखा है। यदि ढाँचागत सुविधा को विकसित करने वाले कार्य बल इन मुद्दों और उन सारे क्षेत्रों के प्रति संवेदनशील हों जो विकास के साझेदारों के प्रतिनिधित्व करते हैं तो परिणामस्वरूप पारंपरिक समुदायों और उनकी जीवन शैली का विस्थापन नहीं होगा।

19.9 शब्दावली

राजकोषीय सहायता : वित्तीय नीति में सरकार उत्पादनकारी कार्यों को प्रोत्साहन देने के लिए आय अथवा सम्पत्ति सम्बन्धी कर प्रदत्त सहायता।

निम्न तीव्रता निवेश योजना : स्थानीय सरकार अथवा पंचायतों के हाथों में जहां योजना के लिए वित्त या मानवशक्ति के अर्थ में निवेश कम होता है।

उपयुक्त और स्थायी प्रौद्योगिकी प्राय: उद्देश्यों के अनुसार उपयुक्त उपलब्ध प्रौद्योगिकी। किसी समाज में स्थाई प्रौद्योगिकी इस प्रकार विकसित की जाती है कि वह लम्बी अवधि तक ऐसे लाभ देती रहे जिससे समाज के संसाधन पर अकारण बोझ न पड़े।

19.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 19.2 एवं भाग 19.3 विशेष अभिरुचि के पर्यटन के नए विकसित होने वाले क्षेत्रों जैसे सम्मेलनों एवं सभाओं का उल्लेख कीजिए।

2) देखिए उप-भाग 19.2.1 करों पर छूट हेरिटेज होटलों जैसी योजनाओं का उल्लेख कीजिए।

3) देखिए उप-भाग 19.3.3 । वर्णन कीजिए कि प्रगाढ़ विकास के लिए इन क्षेत्रों का चयन किस प्रकार होता है। द्वीपीय एवं तटीय पर्यटन के विकास पर दिए जाने वाले महत्व का उल्लेख कीजिए।

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उप-भाग 19.4.1 विशेष रूप से परियोजनाओं, होटलों के आधुनिकीकरण, तटीय सर्किटों के विकास आदि का उल्लेख कीजिए।

2) देखिए उप-भाग 19.4.2 भूमि से विस्थापन, समुदायों द्वारा विकसित नारियल वृक्ष की कटाई का उल्लेख कीजिए।

बोध प्रश्न 3

1) देखिए भाग 19.5

2) देखिए भाग 19.7 । ऐसे जनाधारित विकास को स्पष्ट कीजिए जो निम्न तीव्रता निवेश, ढांचागत सुविधा सम्बन्धी निर्णयों में सहभागिता और उपयुक्त प्रौद्योगिकी को प्रारंभ कर सकें।

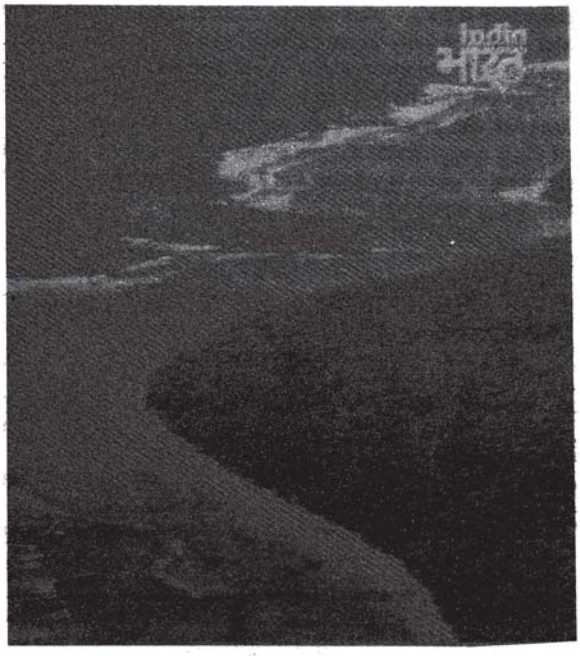

चित्र-3 : द्वीपीय पर्यटन : एक विवरणिका

इकाई 20 पर्यावरण अपकर्ष एवं पर्यटन

इकाई की रूपरेखा

20.0 उद्देश्य
20.1 प्रस्तावना
20.2 प्रतिरोध
20.3 पर्यटन के प्रभावों का विश्लेषण
20.4 पर्यटन क्यों ?
20.5 पारिस्थितिकीय पर्यटन क्या है
  20.5.1 ऐसे पर्यटन विकास का क्या प्रभाव पड़ा ?
  20.5.2 समस्याएं और समाधान
20.6 संरक्षण एवं विकास
  20.6.1 विकल्प
  20.6.2 वन्य प्राणी पर्यटन दिशानिर्देशन के उदाहरण
  20.6.3 बाघ का प्रदर्शन
  20.6.4 वन मुखिया
20.7 सारांश
20.8 शब्दावली
20.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

20.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- यह समझ जाएंगे कि पर्यटन किस प्रकार विषम विकास प्रक्रिया का साझेदार बन सकता है जो भूमि उपयोग ढांचे और लोगों के विस्थापन में सहयोग देता है।
- पारिस्थितिकीय पर्यटन के विशिष्ट उदाहरण से आप समझ जाएंगे कि किसी पारिस्थतिकीय तन्त्र की वहन क्षमता का उल्लंघन किस प्रकार किया जा सकता है और उसके द्वारा स्वयं पारिस्थितिकी तन्त्र नष्ट कर दिया जाता है।
- पारिस्थितिकीय पर्यटन की अविश्लेषित समस्याओं को समझ जाएंगे जो पर्यावरणीय अपकर्ष में सहयोग देते हैं।
- ये भी समझ जाएंगे कि इन समस्याओं पर कैसे काबू पाया जा सकता है।

20.1 प्रस्तावना

मुख्यधारा के आयोजकों ने विकास की धारणा को आलोचनात्मक रूप से नहीं परखा क्योंकि आय उत्पन्न करने की दृष्टि से संसाधनों के खोज की प्रक्रिया पीढ़ियों से विज्ञानियों और अर्थशास्त्रियों की रुचि का कारण रही है। वर्तमान विकास के सिद्धान्त में हमने उद्योगीकरण, आधुनिकीकरण एवं उपयुक्त प्रौद्योगिकी के युग को पार कर लिया है और इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि हमने ऐसी असावधानी से प्रकृति का उपयोग किया है कि आने वाली पीढ़ी के लिए हम कुछ छोड़ कर नहीं जाएंगे। आज हम सब स्थायी विकास की धारणा से परिचित हैं यह ऐसा हस्तक्षेप है जो भूमंडलीकरण की मनोवृति के साथ साथ चलता है। विकास की दृष्टि से प्राकृतिक संसाधन सम्पूर्ण विश्व समुदाय का माना जाता है न कि उन

देशों का जो नृजातीयता, स्थिति या संस्कृति द्वारा परिभाषित होते हैं। वर्तमान में विकास माडल ही मुक्त बाजार का माडल है जहां उपभोग उत्पादक तन्त्र को संचालित करता है। केवल पर्यावरण, मानव अधिकार बाल श्रम और ऐसी ही "अनुचित व्यापारिक प्रथाएं" जैसे मुद्दे ही मुक्त बाजार की सीमाएं हैं। भारत जैसे देश में 5 करोड़ लोग विकास की वरीयताओं का निर्धारण करते हैं। उनकी आवश्यकताएं निर्धारित करती हैं कि क्या पैदा करना चाहिए और क्या उपभोग करना चाहिए। परिणामस्वरूप प्रत्येक विकास क्रिया ने भूमि उपयोग के ढांचे को बदला है, लोगों को विस्थापित किया है। पर्यावरण को संकट में डाला है और सीमावर्ती लोगों के एक बड़े भाग के अदृश्यता में खदेड़ दिया है। विकास के ऐसे प्रभाव अब केवल वृहत् परियोजनाओं जैसे बांध, विद्युत एवं स्टील प्लान्ट और प्रतिरक्षा संस्थानों तक ही सीमित नहीं है। पर्यटन जिसे निर्धूम उद्योग कहा जाता था अब भूमि, वायु एवं जल के विवेकहीन उपयोग में साझेदार बनते जा रहे हैं और समुदायों, उनकी संस्कृति, उनकी जीवन शैली और प्रथाओं को दूषित कर रहे हैं।

20.2 प्रतिरोध

मुख्यधारा के दृष्टिकोण का प्रतिरोध और उसके परिणाम देश के प्रत्येक अंचल में बढ रहे हैं यहां तक कि वहां भी यह विकासात्मक हस्तक्षेप के प्रति प्रत्यक्ष रूप से विरोध की अभिव्यक्ति नहीं है। स्वयं सेवकों के समूहों और व्यक्तिगत लोगों ने मुख्यधारा के विकास के निहित खतरों से अवगत कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विकास पर हुए वाद विवाद के परिणामस्वरूप राष्ट्रीय, राजकीय एवं स्थानीय स्तर के विकास के प्रति जनता का ज्ञान समुदाय के हितों के विरूद्ध है। हम सब नर्मदा एवं चिपकों संघर्षों के आन्दोलनों से भली भांति परिचित हैं। इनके विषय में आप इस खण्ड की इकाई 22 में पढ़ेंगे। आधारभूत मुद्दे जिन्हें इन संघर्षों ने उजागर किया है वे हैं :

- आर्थिक विकास का परम्परागत कठोर मॉडल की कमजोरी, और
- समाजिक समस्याओं को सुलझाने के वृहत परियोजनाओं और गहन विकास की कार्य क्षमता।

अत: विकास का नवीन साहित्य और अनुसंधान विरोध प्रकट करते हुये लोगों से सम्बद्ध है। विकास के मौजूदा दृष्टिकोण के स्थान पर कोई अन्य वैकल्पिक माडल नहीं हो सकता है। विकास के अन्य बहुलवादी मॉडलों के एक जैसे विषयक सिद्धान्त होंगे जिनकी निम्नलिखित के प्रति प्रतिज्ञा होगी :

- लोगों को उनके अपने संसाधनों से सम्बन्ध निर्धारित करने की अनुमति देना।
- स्थानीय प्रज्ञा और परम्पराओं का आदर करना।
- किसी विशिष्ट स्थिति और समस्या के प्रति एक नियम को सार्वभौम करने के वजाए वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक कौशल अपनाना। वन एवं तट रेखाओं जैसे नए सामान्य संसाधनों के उपायों में विकास के गलत निर्देशन के उदाहरण देखे जा सकते हैं। जिन वनों ने पीढ़ी दर पीढी जन जातीय समुदायों का पोषण किया है अब उन्हें प्रकृति एवं वन्य जीव पर्यटन सहित औद्योगिक और व्यापारिक उपयोग में लाया जा रहा है। मछुआरे या मछुआ समुदायों की अब तटरेखा तक असीम पहुंच नहीं है। जल, कृषि, समुद्रतटीय, सैरगाहें, एवं गॉल्फ के मैदान पारिस्थितिकीय प्रेमी अथवा हरित पर्यटन के लिए अब नए मूल संसाधन, नए उत्पाद बन गए जिन्हें तीसरी दुनिया के अधिकतर देश आजकल विकसित कर रहे हैं।

20.3 पर्यटन के प्रभावों का विश्लेषण

अनियोजित या अकुशल रूप से आयोजित पर्यटन से उत्पन्न होने वाली कुछ समस्याएं संक्षिप्त में नीचे दी गई हैं :

- निर्वनीकरण
- कुछ स्पीशीज पर विशेष ध्यान और अनेक स्पीशीज का ह्रास

- ईंधन एवं जलाऊ लकड़ी के लिए प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास
- भूमि अपरदन (erosion) एवं तटीय अपरदन
- भूमि अपकर्ष, जल प्रदूषण एवं कूड़ा कचरा
- सड़क निर्माण एवं बस्तियों तथा भूमि उपयोग के परिवर्तनों का प्रभाव
- कम संख्या वाले निर्धन किसानों के जनसमूहों का स्थानान्तरण और बाहरी एजेन्सियों का आगमन
- नगरीकरण और पानी, बिजली, ढांचागत सुविधा उपलब्ध कराने की सहवर्ती समस्या
- झुग्गी झोपड़ियों का विकास
- देश के अत्यन्त निर्धन अथवा सदर क्षेत्रों में सामाजिक सम्बद्धता की समस्या।

20.4 पर्यटन क्यों ?

कोई भी पूछ सकता है किसी निर्धन देश या निर्धन क्षेत्र के लिए पर्यटन ही एकमात्र ऐसा विकल्प क्यों हैं जिसे राज्य की सहायता से निवेश सहायता एवं कर की छूट द्वारा विकसित किया जाना चाहिए। प्राय: उत्तर सरल होता है– राष्ट्र निर्माण हेतु आवश्यक विदेशी मुद्रा विनियम अर्जित करने के लिए हमारे पास निर्यातोन्मुखी अर्थव्यवस्था होनी चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF), विश्व बैंक सुधारों के संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रमों के प्रति दशाएं परोक्ष निर्यात जैसे पर्यटन को प्रोत्साहित करती हैं जिसे अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियों जैसे विश्व पर्यटन संगठन के द्वारा विकास के साधन के तौर पर बढ़ावा दिया गया। उनका तर्क अत्यन्त आकर्षक शब्दों में व्यस्त किया जाता है। पारिस्थितिकीय पर्यटन एवं सैरगाह के पर्यटन से भिन्न हैं : यह भिन्नता एवं विकास मिथक पर आधारित है जिसमें व्यक्त किया गया है पर्यटन के कार्यों में प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संसाधनों की उपयोगिता को जो स्थान दिया गया है वह पर्यावरणीय सुरक्षा एवं संरक्षण के प्रति चेतना जागृत करने और सहभागिता बढ़ाने का साधन बन सकती है।



चित्र-1 : पर्वतो पर सड़कों का निर्माण पर्यावरण को सुधार सकता है।

मिथक में और आगे कहा गया है : राष्ट्रीय जनसंख्या के लिए अनेकों विकल्पों सहित सुचारू रूप से आयोजित प्रकृति उनकी पर्यावरणीय शिक्षा में सहयोग दे सकती है।

20.5 पारिस्थितिकीय पर्यटन क्या है ?

पर्यटन की हर सभी रूप जो अन्वेषणात्मक है, अनुभव पर बल देते हैं और प्राकृतिक संसाधन को नष्ट किए बिना प्रकृति का सम्मान और संरक्षण जिनका उद्देश्य हो वह पारिस्थितिकीय पर्यटन समझा जाता है। बेलीज नामक मध्य अमरीकी प्रदेश के पर्यटन उद्योग ने इसे यह नाम दिया। यह प्रदेश प्राकृतिक संसाधनों में बहुत समृद्ध है। पारिस्थितिकीय पर्यटन की किस्मों में प्रकृति के वैज्ञानिक, विनोदी, साहसी एवं निष्क्रिय प्रयोग को सम्मिलित किया जा सकता है।

भारत में पारिस्थितिकीय पर्यटन की उन नई प्रवृत्तियों की एक शाखा थी जो भारत को अवकाश अभिमुख गन्तव्य स्थल के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास कर रही थी ताकि बड़ी संख्या में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक आकर्षित हो सकें। ये भारतीय उत्पाद को निष्क्रिय प्रकार (जैसे स्मारक आदि) से निकाल कर अधिक क्रियाशील प्रकारों जैसे साहसिक वन्यजीव और विरासती पर्यटन में परिवर्तित करने के लिए है।

20.5.1 ऐसे पर्यटन विकास का क्या प्रभाव था ?

ऐसे आरक्षित एवं अधिसूचित क्षेत्र जहां वन्य जीवों का बाहुल्य है और विशेष रूप से बाघ, हाथी और गैंडे पाए जाते हैं पर्यटकों के लिए विकसित किए गए। प्रारंभ में मृग-वनों या मध्यवर्ती क्षेत्रों में आवास, सड़कें, परिवहन और गाइड उपलब्ध कराए गए। मण्डलों के निर्धारण की प्रक्रिया में मूल समुदाय वहां से बेदखल कर के अधिसूचित क्षेत्र के बाहर पुन: स्थापित कर दिए गए जिसने बहुत कुछ उनकी पारम्परिक व्यवसायिक संरचना को बदल दिया। पर्यटकों को उन पारम्परिक निवासियों की अपेक्षा संरक्षण के प्रति अधिक ज्ञानी समझा गया जिन्होंने अपने पारम्परिक व्यवसाय एवं आवास के साथ साथ वनों के उत्पादों पर से अपना अधिकार खो दिया। यह माना जाता है कि इन मृग-वनों का शुभारंभ पारिस्थिति तन्त्र और उसके पारिस्थितिकीय कार्यों को सुरक्षित रखने में सहयोग देता है।

पारिस्थितिकीय तन्त्र अपनी वहन क्षमता पर निर्भर होता है। दूसरी ओर अधिकांश पर्यटक पथ एवं दृश्य निर्वहन क्षमता के मौलिक सिद्धान्त-एकत्र न होना-का उल्लंघन करते हैं। ढाँचागत सुविधा में प्रयोक्ता के एकत्र होने के प्रारूप का पालन करने की प्रवृत्ति है। ढाँचागत सुविधा का दबाब उपलब्ध कानूनों की अवहेलना को प्रोत्साहन देता है। उदाहरणार्थ तटीय क्षेत्र नियम ज्वारीय रेखा से 500 मीटर के अन्दर निर्माण एवं ढाँचागत सुविधा को प्रतिषेध करता है किन्तु होटल लॉबी द्वारा इसका अतिक्रमण करके अपनी इच्छनुसार इस नियम का उल्लंघन किया गया है।

पर्वतीय समुदाय दिन प्रतिदिन अपशिष्ट निपटान एवं जलाऊ लकड़ी तथा ईंधन की बढ़ती हुई आवश्यकता के प्रति चिन्तित होते जा रहे हैं। पदयात्री और पर्वतारोही टनों खान पान का सामान अपने साथ लाते हैं किन्तु खाली डिब्बे अपने साथ वापस नहीं ले जाते। कूड़ा कचरा संरक्षण की प्रमुख समस्या बनता जा रहा है।

20.5.2 समस्याएं और समाधान

जैसे जैसे पारिस्थितिक तन्त्र बड़े पैमाने पर पयटकों द्वारा स्वीकृति प्राप्त करता है, क्या जैव/तकनीकी विधियों द्वारा उत्पन्न संरक्षण सहित मौलिक संरक्षण विरोध करता है ? यह समस्या स्थानीय लोगों के हितों को ध्यान में रखते हुए सुलझानी चाहिए।

एक लोकप्रिय प्रस्ताव यह है कि सारे प्राकृतिक संसाधनों विशेष रूप से अद्वितीय क्षेत्रों की सुरक्षा की जानी चाहिए। किन्तु सुरक्षा पर धन व्यय होता है। पर्यटकों सहित औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रयोक्ताओं से शुल्क प्राप्ति के योग्य संसाधनों तक कालिक एवं स्थानिक दोनों प्रकार से पहुंच सीमित होनी चाहिए। यह क्षेत्र-विभाजन करके प्राप्त किया जा सकता है। अत: ढाँचागत सुविधा तथा सेवाओं को योजनाबद्ध किया जाना चाहिए। इस प्रक्रिया में सामान्यता पुन: निर्दिष्ट प्रमुख मण्डल से पारम्परिक समुदाय का विस्थापन



चित्र 2 : पदयात्रियों को खाली पैकेट ले जाना चाहिए

सम्मिलित है। तत्पश्चात विस्थापित लोग मध्यवर्ती मण्डल के बाहर पुन: स्थापित किए जाते हैं। पुन:स्थापना का परिणाम समुदायों के साथ ही वनों के लिए भी हानिकार सिद्ध हुआ है। गुजरात के गिर क्षेत्र में पशुओं के स्वामियों को कृषि भूमि पर पुन: स्थापित किया गया। किन्तु ये ऐसा व्यवसाय था जिसके विषय में उनको कोई ज्ञान नहीं था। एक दो वर्षों में वे कंगाल हो गए और नगरों की झोपड़पट्टियों में मेहनत मजदूरी के लिए चले गए। इसी प्रकार रणथम्बोर के रिजर्व में अपकर्ष हुआ क्योंकि वहां निवास करने वाले समुदाय वहां के निवासी पुनरूजीवन चक्र नियन्त्रित करना नहीं चाहते थे।

उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि सरकार ऐसी पारिस्थितिकीय पर्यटन की धारणा विकसित नहीं कर सकी जो आवासी समुदायों में संरक्षण के प्रयासों के ज्ञान को समन्वित करती है। विश्लेषणों से पता चला है कि विस्थापित समुदाय को पारिस्थितिक पर्यटन से बहुत साधारण लाभ हुआ। फिर भी संरक्षकों का विचार है कि यह प्रजातियों की सुरक्षा का अकेला व्यापार है और अनधिकृत शिकार और लकड़ी के कटान को नियन्त्रित करने का प्रभावी साधन भी है। वह वहन क्षमता के प्रति भी चिन्तित हैं। नगर के वैचारिक ढांचे के अन्दर वहन क्षमता शब्द के उपयोग से प्रारंभ होने वाला सैद्धान्तिक वाद विवाद कोई ऐसी प्रणाली विकसित नहीं कर सका जो भौतिक, पारिस्थितिकीय एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से वहन क्षमता को परिभाषित कर सके।

NMDC-210

जो मुद्दे अनसुलझे हैं वे निम्नलिखित हैं ·

- एक समय में कितने पर्यटकों को आने की अनुमति दी जाए ?
- नियन्त्रण की प्रक्रिया को किस प्रकार उपयोग में लाया जाए जैसे दिन की रोशनी का समय, खोले जाने का समय और समय सीमा; वर्षा ऋतु और बाढ़ का समय, अपरदन; परिवहन के शोर के कारण अशान्ति, भाषा एवं पहनावे के नियम आदि,
- नियन्त्रण प्रक्रिया को कार्यान्वित करने की योग्यता
- एकान्त, प्राकृतिक सौन्दर्य और सांस्कृतिक पहचान की सुरक्षा की आवश्यकता।

केन्या जहां वन्य प्राणी पर्यटन एक बहुत बहुमूल्य गतिविधि है वहां ऐसे द्वन्द्व के समाधान के लिये कार्य करने की इच्छा पाई जाती है। स्थानीय जनजाति मसाई लोग उन मृग उद्यानों का प्रबन्ध करते थे जहां काफी संख्या में सैलानी आते थे। उनसे प्राप्त धन का 19% उन जातियों को प्राप्त होता था और शेष धन आंचलिक परिषद ढाँचागत सुविधा के विकास पर व्यय करती थी। इस नीति का यह परिणाम निकला कि पर्यटन में विस्फोटक वृद्धि हुई और फलस्वरूप महत्वपूर्ण संरक्षण द्वन्द्व पैदा हो गया।

बोध प्रश्न 1

1) पर्यावरण पर पर्यटन के कुछ प्रभावों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यटन को विकास कार्यकलाप के रूप में बढावा देने के लिए विश्व पर्यटन संगठन ने कौन-कौन से तर्क दिए हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) पारिस्थितिकीय वहन क्षमता के कौन-कौन से मुद्दे निपटाए नहीं गए हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

20.6 संरक्षण एवं विकास

प्राकृतिक संसाधनों और प्राकृतिक आवासों के मनोरंजनपूर्ण उपयोगों के परिणामों की एक अनिश्चितता रही है। वाद विवाद से उस क्षेत्र के लोगों और सरकारी नियोजकों के मध्य विश्वास के टूटने का पता चलता है। लोग नीतियों को प्रभावित करने में असहाय अनुभव करते हैं और उन्हीं नीतियों का विरोध करने लगे हैं जिन्हें पहले वह समर्थन देते थे। यह कहना सही है कि बिना सार्वजनिक समर्थन के संरक्षणात्मक नीतियों का कार्यान्वयन असंभव है क्योंकि संरक्षण को प्राय: उत्तरजीविता के अन्तर्विरोध के रूप में देखा जाता है।

अत: ऐसी प्रणाली विकसित करना महत्वपूर्ण है जो इन विरोधों को समाप्त कर सके, सार्वजनिक समर्थन जुटा सके और विविध प्रकार से आवश्यकताओं को पूरा कर सके। सबसे अच्छा तरीका है कि नियमों को सख्ती से लागू किया जाए। फिर भी एक अधिक अंत:संपर्क तन्त्र ऐसा सामजंस्य विकसित करने का प्रयास करता है जो जनता को उसके व्यवहार के अनुकूल करने में सहायक हो ताकि किसी विकासात्मक मध्यस्थता के नकारात्मक प्रभाव को घटाया या कम किया जा सके।

चूँकि समाज पर्यावणीय मुद्दों की बढ़ती हुई जटिलताओं का सामना कर रहा है इसलिए उन विधियों का मूल्यांकन लाभप्रद हो सकता है जिनके माध्यम से मतभेदों को निपटाया जाता है :

- विवादियों के निहित स्वार्थों को हल करने के लिए बातचीत का उपयोग
- यह निर्णय करना कि कौन सही है और किस के अधिकारों का उल्लंघन हो रहा है
- यह निर्णय करना कि कौन से प्रभाव अधिक शक्तिशाली हैं और वे निर्णय लेने को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

विवादों को बातचीत द्वारा हल करने की विधि अधिक समय तो लेती है किन्तु अधिक समय तक चलने वाली है। ऐसा निम्नलिखित कारणों से होता है :

- यह एक स्वैच्छिक प्रत्यक्ष प्रक्रिया है
- इसकी कार्यविधियां अधिक औपचारिक हैं अत: बेहतर संप्रेषण प्रस्तुत करती है।
- ये लोगों और उनके संसाधनों के मध्य वर्तमान सम्बन्धों को बचाती हैं और इस प्रकार वर्गों और व्यक्तियों के हितों की रक्षा करती हैं।
- समाधान की रूपरेखा तैयार करने में अधिक लचीलापन मौजूद रहता है।
- निष्कर्ष अधिक भविष्यसूचक हैं।
- सहयोगी होने के कारण उन साधारण समझौतों से वार्ता बेहतर है जो प्राय: नकार दिए जाते हैं।

परिवर्तन	निर्णयकर्त्ता	अधिकारी द्वारा निर्णय	बल द्वारा निर्णय
निर्णय करने वाला मस्यस्थ	वार्ता		
मध्यस्था न करना	सहयोग	मुकदमा	एकपक्षीय बल प्रयोग

पारस्परिक हितवाले पक्षों का वार्ता द्वारा निर्णय के लिए सहमत होना, आपस में बैठकर वार्ता के परिणाम के निर्धारण के लिए एक दूसरे की सापेक्ष क्षमताओं और कमजोरियों का पता लगाना किसी भी विवाद समाधान तंत्र की समस्यां है।

20.6.1 विकल्प

एक अच्छा विकल्प दृष्टिकोण निम्नलिखित बिन्दुओं पर आधारित हो सकता है :

- स्थिति का मूल्याकन करना
- वार्ता का नीति विकसित करना
- मंच की रूपरेखा तैयार करना
- पक्षों को आमने सामने बैठाना
- उसकी स्वीकार्यता को आंकने के लिए परिवर्तन के प्रभाव को ध्यान में रखना
- क्षेत्र के इस्तेमाल के पश्चात सुरक्षित रखे जाने वाले गुणों को परिभाषित करना
- सुधारात्मक कार्यों को प्रारंभ करने की प्रक्रिया को नियंत्रित करना।

अत: विकास के प्रति जन केन्द्रित दृष्टिकोण में वास्तविकता को स्थान प्राप्त कराने के लिए हम निम्नलिखित उपाय कर सकते हैं :

- विकास के लिए चुने जाने वाले क्षेत्र की समस्याओं की मोटे तौर पर समीक्षा करना
- क्षेत्र में पाई जाने वाली वर्तमान परिस्थितियों और अभिरुचियों का वर्णन
- परिवर्तनों और परिवर्तन के संकेतकों को पहचानना
- परिवर्तन की प्रक्रिया के दौरान गुणों के जिन मानकों को बनाए रखना है उनका ब्यौरा देना
- मण्डलों का निर्धारण और प्रत्येक मण्डल में वांछित अवस्था का उल्लेख करना
- प्रत्येक मण्डल की विशेषताओं को बनाए रखना उन पर प्रबन्ध तन्त्र के कार्यों से सहमति
- सार्वजनिक विज्ञप्ति एवं बहस द्वारा समग्र क्षेत्रों के प्रस्तावों की एक साथ समीक्षा

योजना प्रक्रिया में वास्तविक जनता की भागीदारी के विषय में निवासियों को विश्वास दिलाने और कार्यान्वयन एजेन्सी की जिम्मेदारी लागू कराने की दृष्टि से सार्वजनिक संवादों में उठाई गई समस्याओं के प्रति सदैव पारदर्शिता, सूचनाओं तक पहुंच और उपचार उपलब्ध होना चाहिए।

अत: आयोजकों ने एक कार्य बल की धारणा को विकसित किया है जिसे सफलता के लिए प्रतिनिधिक संगठन होना चाहिए। फिर भी कार्य बल को व्यवहारिक रूप से परामर्शदाताओं, प्रबन्धकों एवं अन्वेषकों द्वारा संचालित किया जाता है और नागरिकों तथा प्रयोक्ताओं की उसमें कोई भूमिका नहीं होती। यदि कार्य बल प्रतिनिधिक नहीं है तो वह पारदर्शिता सुनिश्चित नहीं कर सकता।

इसलिए कार्य बल अपने हस्तक्षेप को समयबद्ध समझता है। प्राथमिक आंकड़े एकत्र किए जाते हैं अत: बहस का आधार नहीं हो सकते। परिवर्तन का मूल्यांकन अक्सर केवल आर्थिक अर्थों में वर्धमान गणितीय मॉडल का उपयोग करते हुए किया जाता है जिसके प्रभाव कम स्पष्ट होते हैं। जिनका आकलन कम हो पाता है और जो या तो महत्वपूर्ण नहीं समझे जाते या जिन पर बिल्कुल ही ध्यान नहीं दिया जाता। किसी लोकतंत्रीय ढांचे में निर्णय निर्धारण की परिणिति किसी प्रतिनिधिक समूह के निर्णय की अपेक्षा व्यावसायिकों की निरंकुश योजना में होता है।

20.6.2 वन्य प्राणी पर्यटन दिशा निर्देशन के उदाहरण

हमें वन्य प्राणी पर्यटन के दिशा निर्देशों की समीक्षा का उदाहरण लेना चाहिए। चूंकि विलासप्रिय पर्यटक साहसी मनोरंजन खोजते हैं और दूरस्थ क्षेत्रों में जाना पसन्द करते हैं इसलिए जिस प्रकार के शहरी आराम की उन्हें आवश्यकता होती है उसने समस्याएं प्रस्तुत करना प्रारंभ कर दी है जैसे जलाऊ लकड़ी की खपत, उपशिष्ट निपटान और ग्रामवासियों तथा पर्यटकों के मध्य स्वार्थों का टकराव। ऐसे पर्यटन से सम्बन्धित टकराव पर्यटकों की बढ़ती हुई संख्या और उनकी अनुपयुक्त अनियमित क्रियाओं का परिणाम है। अक्सर ये भुला दिया जाता है कि सैरगाह आन्दोलन मूल रूप से प्रकृति तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए हैं। पर्यटन एक गौण कार्यकलाप है। जबतक कि ऐसे संसाधनों का प्रबंध संरक्षण

आन्दोलन के उद्देश्यों और लक्ष्यों के अनुकूल तब तक नहीं होगा। जब तक पर्यटन विकास से झगड़ों को निपटाने के बजाए उनके बढ़ने की संभावना अधिक होगी।

- प्रत्येक क्षेत्र में अवलोकनार्थ आने वाले पर्यटकों के बढ़ते हुए दबाव को नियमित करने के लिए पर्यटन की योजनाओं में नए मार्ग निर्देशों की आवश्यकता है।
- केन्द्रीय क्षेत्र 300 वर्ग किलोमीटर में पर्यटन पर रोक लगाने की मांग करते हैं क्योंकि उसे सुरक्षित रखना है और स्पष्ट रूप से गैर पर्यटक क्षेत्र सीमांकित किया जाना है।
- प्रशासन द्वारा आगन्तुकों की अधिकतम संख्या निर्धारित करना है।
- दिन में आने वालों के लिए मार्गों का निर्धारण और खतरनाक कार्यों जैसे खाना पकाने के लिए आग जलाने, वाद्य यन्त्रों और ट्रांजिस्टरों के प्रयोग पर प्रतिबन्ध।
- प्रवेश द्वार पर केन्द्रों निर्वचन की आवश्यकता जो प्रकृति की शिक्षा और अभिविन्यास (orientation) प्रदान कर सके।
- समस्त आवास एवं ढाँचागत सुविधा उद्यान या मध्यवर्ती क्षेत्र के बाहर होनी चाहिए और उसमें वन्य उद्यान से 1 किलोमीटर के अन्दर होटल की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए और उद्यान की मूल्यांकित क्षमता के अनुसार ही कमरों की संख्या निर्धारित की जानी चाहिए।
- परिवहन बैटरी चालित होनी चाहिए और बड़ी बसों के स्थान पर छोटी बसों का उपयोग किया जाना चाहिए। विशेष रूप से उल्लिखित मार्गों पर साइकिल और पैदल यात्रा को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।
- गाड़ियां खड़ी करने, गाइडों के उपयोग, वस्त्र, भाषा, कूड़ा करकट और फोटोग्राफी से सम्बन्धित कठोर आचार संहिता के पालन को सुनिश्चित करना चाहिए। इसके अतिरिक्त पर्यटकों को चाहिए कि यदि कहीं आग लगती है या पशुओं को घायल होते देखें तो वन अधिकारियों को सूचित करें। उपभोगियों की संहिता व्यावसायिकों द्वारा बनाई जाती है। ये व्यवसायी किसी स्थान के पर्यावरण को सार्वभौमिक संसाधन के रूप में देखते हैं और प्रयोक्ताओं, यात्रा व्यापार और स्थानीय लोगों को लागू की जाने वाली संहिता के निर्धारण कार्य से अलग रखना कानूनी मानते हैं। यह स्पष्ट रूप प्रशासनिक दृष्टिकोण है जहां व्यवसायी संरक्षक को उन स्थानीय प्रयोक्ताओं से अधिक प्रातिनिधिक और संरक्षक मानते हैं जिनके पास पारंपरिक अधिकार है और जिन्हें आजकल प्राकृतिक एवं वन संसाधनों के अपकर्ष के लिए उत्तरदायी माना जा रहा है। मार्ग निर्देश पर्यटकों एवं प्रशासन दोनों को सुग्राही बनाने का प्रयास करता है। फिर भी संहिता के नियम सम्पूर्ण रूप से प्रशासकों के हाथ में है और स्थानीय नागरिकों को वन्य जीव आन्दोलन या संरक्षण को प्रोत्साहित करने में कोई भूमिका नहीं निभानी है। इस प्रकार की कोई सलाह नहीं है कि उन्हें नियामक एवं आर्थिक भूमिका दी जानी चाहिए। वह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण शैक्षिक भूमिका निभा सकते हैं क्योंकि वह क्षेत्र प्राणी व्यवहार और स्थानीय लोक कथाओं से परिचित हैं। इस दृष्टिकोण की कमजोरी भी पर्यटन उद्योग के आदेशों में झलकती है जो कि केवल परामर्श मात्र है। इस प्रकार वन्य प्राणी पर्यटन संचालक स्थानीय जानकर इस ज्ञान का उपयोग करता है कि पारिस्थितिकीय पर्यटन को किस प्रकार बढ़ावा दिया जा सकता है और जो यह मानता है कि व्यापार और संरक्षण के मध्य कोई टकराव नहीं है।

20.6.3 बाघ प्रदर्शन (Tiger show)

बाघ के प्रदर्शन पर प्रतिबन्ध लगाना एक अच्छा उदाहरण है। पर्यावरण विशेषज्ञ और व्यापार में बाघ प्रदर्शन को लेकर कान्हा एवं बाघवगढ़ में संघर्ष होने लगा जो अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए प्रमुख आकर्षण थे। हाथियों पर बैठकर महावत बाघों का पीछा करता था और उनके पता लगाने पर प्रवेश द्वार पर उनकी स्थिति की सूचना भेजता था ताकि पर्यटकों को उस स्थान की ओर भेजा जाता था और यदि बाघ घास में होता तो पर्यटकों को सड़क से हटाकर पहुंचाया जाता था। इस प्रकार पर्यटकों को बाघ की एक झलक के लिए आश्वस्त कर दिया जाता था जो अन्य समस्त स्पीशीज से विशेषकर प्राकृतिक पृष्ठ भूमि में अधिक प्रामाणिक है । पर्यटन संचालक और महावत इस तन्त्र में लाभभोगी थे क्योंकि वे अपनी सेवाओं को बढ़ावा दे सकते थे और ये सुनिश्चित कर सकते थे कि पर्यटक हताश होकर वापस न जाएं।

पर्यावरण विशेषज्ञ इस प्रकार के अवलोकन का यह उपाय पशु की एकान्तता में हस्तक्षेप मान कर उसका विरोध करते थे। अनधिकृत शिकारी को भी इस प्रकार से बाघ को खोजने में सहायता मिल जाती थी जो अब अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में व्यापार की महत्वपूर्ण वस्तु बन गया है। उस प्रतिबन्ध के पश्चात अब बाघ अवलोकन की कोई गारंटी नहीं है और यह इस मत को प्रोत्साहन देता है कि बाघ एक संकटापन्न स्पीशीज है। ये एक काफी जटिल बहस है और विभिन्न वर्गों की स्थितियों का निर्धारण उनके स्वार्थों से होता है। इस प्रकार बाघ की एक झलक देखना एक सौभाग्य बन गया। इस मुद्दे ने यह स्पष्ट कर दिया है कि बाघ के संरक्षण को पर्यटक व्यापार पर कितनी वरीयता दी गई है और जंगल प्रशासन को प्रेरित किया गया कि वह अपने प्राथमिक दायित्व अर्थात स्पीशीज के संरक्षण को वरीयता दे।

20.6.4 वन मुखिया

प्रशासन को और प्रातिनिधिक बनाने के लिए पर्यावरण मन्त्रालय ने वन मुखिया का विचार आरंभ किया। इस योजना के अन्तर्गत ग्रामीण स्तर पर संरक्षण कार्यों के संचालन हेतु पंचायत एक वन मुखिया को नामित करेगी। ये योजना किसी अधिसूचित क्षेत्र में चल रही संयुक्त वन प्रबन्ध योजना का स्थान लेगी। वन मुखिया मंडलीय वन अधिकारी द्वारा नामित किया जाएगा इसलिए वह प्रशासन के प्रति ही उत्तरदायी होगा। पर्यावरण विशेषज्ञों को भय है कि ऐसी योजना बिल्कुल निचले स्तर पर भ्रष्टाचार को जन्म देगी। वन मुखिया वन उत्पादों को बाजार में बेच कर उसकी 10% आय कमाएगा। ये धन संयुक्त प्रबन्ध-योजना के अपने हिस्से के अतिरिक्त होगा। अतः वह किसी अन्य ठेकेदार की भांति कार्य करेगा क्योंकि वह कुल उत्पादों की बिक्री पर लाभ कमाएगा। इस प्रकार वह ग्रामीण समुदाय और वन संसाधनों के मध्य आ जाएगा। वन मुखिया के चयन में मध्यस्थता का तत्व है और वह ग्राम वन संरक्षण समिति के स्थान पर किया जाना अफसरशाही आचरण का प्रदर्शन है। इसके बजाए ग्राम वन संरक्षण समिति को अधिक विस्तृत आधार वाला होना चाहिए न कि वन प्रशासन से संबंधित। नियन्त्रण की श्रेणीबद्ध प्रकृति और निर्णय लेने का अधिकार समुदाय के बाहर होना अधिकार के ढांचे को प्रदर्शित करता है। एक ऐसा ढाँचा जो आधार से अलग है। ऐसा ढाँचा निश्चित रूप को टकराव से रोकने के बजाए उसे और बढ़ाएगा।

बोध प्रश्न 2

1) विवादों को हल करने के लिए एक तन्त्र के रूप में बातचीत करने में क्या कठिनाई है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) वन्यजीव संबंधी निर्देशों को सम्पूर्ण रूप से प्रशासन पर छोड़ देने में क्या आपत्ति है ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) बाघ प्रदर्शन से सम्बन्धित विवाद पर क्या आप कुछ प्रकाश डाल सकते हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

20.7 सारांश

लोग जीवन की गुणवत्ता को स्थायी पर्यावरण के बराबर मानते हैं जो स्वच्छ वायु, पेयजल और जिन से हम प्यार करते हैं उनको सुरक्षा प्रदान करता है। हमारे नगरों में जीवित रहने योग्य परिस्थितियां प्रतिदिन झोपड़ पट्टी जैसी होती जा रही है। परिवहन और कूड़े कचरे का निपटान दो अत्यन्त महत्वपूर्ण संकट है जो तनाव और बीमारियों तक पहुंचाते हैं। हिमालय चिथड़े-चिथड़े हो चुका है और शिवालिक को सुधारा नहीं जा सकता। घाट (पश्चिमी घाट) कुछ ऐसी वृहत परियोजनाओं के कारण संकटमय हो चुके हैं जो पर्यटन के विनाशकारी रूप हैं। हरित पट्टियां बंजर होती जा रही है। ये सब गत पचास वर्षों के योजनाबद्ध विकास का परिणाम हैं। विकास पर बहस बढ़ते हुए विनाश को रोकने के प्रयास की ओर एक कदम है। इसमें निहित स्वार्थों पर आधारित होने के बजाय लोगों की बात सुनने का प्रयास किया गया है। इस बहस को समझने के कारण ही हम पर्यटन के कारण होने वाले पर्यावरण अपकर्ष और पर्यटन के उत्पादों को समझ सकते हैं।

20.8 शब्दावली

सार्वभौमिकरण : सम्पूर्ण विश्व में विशेषरूप से व्यापार द्वारा अर्थव्यवस्था के एकीकरण के प्रयासों की वर्तमान प्रक्रिया।

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष/विश्व बैंक की शर्तें : अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक द्वारा ऋण लेने की निर्धारित शर्तें। इस इकाई में यह तर्क वितर्क किया गया है कि इन शर्तों ने विकास प्रक्रिया में योगदान दिया है जिसने पर्यटन को भी प्रभावित किया है।

20.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 20.3 । भूमि उपयोग माडल में विस्थापन परिवर्तन और उसके निष्कर्षों पर बल दीजिए।

2) देखिए भाग 20.4 । इस बात पर बल दीजिए कि किस प्रकार विश्व पर्यटन संगठन पर्यटन को पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति चेतना में वृद्धि करने के साधन के रूप में देखता है।

3) देखिए उप-भाग 20.5.2 कार्यप्रणालियों पर नियन्त्रण और पर्यटक व्यवहार पर बल दीजिए।

बोध प्रश्न 2

1) देखिए भाग 20.6 । पक्षों की वार्ता के लिए सहमति की समस्या पर बल दीजिए।

2) देखिए उप-भाग 20.6.2 । स्थानीय एवं अशासकीय नागरिकों को इस संदर्भ में सम्मिलित करने पर बल दीजिए।

3) देखिए उप-भाग 20.6.3 । इस बात पर बल दीजिए कि किस प्रकार पर्यटन संचालक लाभार्थी के रूप में देखा जाता है और पर्यावरण विशेषज्ञों के प्राणियों की एकान्तता के प्रभावों से सम्बन्धित तर्कों पर भी बल दीजिए।

इकाई 21 अधिनियम एवं कानून

इकाई की रूपरेखा

21.0 उद्देश्य
21.1 प्रस्तावना
21.2 रीति रिवाज एवं परंपराएं
21.3 राज्य के कानूनी एवं न्यायिक अधिकार
  21.3.1 पर्यावरण एवं भारतीय राज्य
21.4 निजी क्षेत्र की कार्यप्रणाली की चिंताएं
  21.4.1 अंग्रेजी राज्य के कानून और उसके पश्चात् की स्थिति
  21.4.2 राज्य के अधीन पर्यटन उद्योग
21.5 सामाजिक एवं पर्यावरणीय न्याय के संघर्षरत समूहों द्वारा उठाई गई आवाज
21.6 अधिकार क्षेत्र
21.7 कमी
21.8 सारांश
21.9 शब्दावली
21.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

21.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- यह समझ जाएंगे कि किसी भी उद्योग के समान पर्यटन भी कानूनी ढाँचे में कार्य करता है,
- यह समझ जाएंगे कि कानूनी ढाँचा उस समाज में से ही उभरता है जिसमें उद्योग कार्यरत होता है
- यह जानकारी प्राप्त करेंगे कि कानूनी ढाँचा समाज के रीति रिवाजों, उद्योग की आवश्यकताओं, राज्य के न्यायिक अधिकारों और सामाजिक तथा पर्यावरणीय न्याय के लिए संघर्षरत वर्गों की चिन्ताओं के अनुकूल ही बनता है, और
- यह ज्ञान प्राप्त करेंगे कि कभी कभी समाज में बनाए गए कानूनों और उनके कार्यान्वयन में एक अन्तर रहता है।

21.1 प्रस्तावना

प्रत्येक समाज कुछ कानूनों पर आधारित होता है जिसके अनुसार उसके व्यवहार को नियमित किया जाता है। कानूनों की आवश्यकता एक ऐसे वातावरण की रचना के लिए होती है जहां व्यक्ति की इच्छा सम्पूर्ण कार्यों के लिए स्वतंत्रत होते हुए भी शेष समुदाय के लिए टकराव का कारण न बने। इसी प्रकार पर्यटन उद्योग यह स्पष्ट रूप से कहता है कि उद्योग के संघटक जैसे पर्यटन संचालक और पर्यटन उत्पादों के प्रबन्धक आदि कानून की परिधि में पर्यटन को विकसित करें किन्तु शेष सामाज की सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों को किसी प्रकार की हानि न हो।

आधुनिक समाज में कानून, क) रीति रिवाजों, ख) राज्य के कानूनी-न्यायिक अधिकारों, ग) उद्योग एवं व्यापार के निजी क्षेत्रों की कार्य शैलियों, घ) और सामाजिक एवं पर्यावरणीय न्याय के लिए संघर्षरत गुटों द्वारा आजकल व्यक्त की जाने वाली चिन्ताओं में से विकसित होता है।

किसी व्यक्ति के लिए जो पर्यटन के नियमों और कानूनों के महत्व को समझना चाहता है यह महत्वपूर्ण

है कि वह मूल कारण स्पष्ट हो जो इन नियमों और कानूनों के विकास का कारण बना है। तभी उनका कुछ अर्थ होगा। अत: आइए इनका एक एक करके निरीक्षण करें :

21.2 रीति रिवाज एवं परंपराएं

ये कानूनों के बनाए जाने के महत्वपूर्ण आधार हैं। किसी समाज की रीतियां और रिवाज प्रत्येक देश व स्थान में बदली हुई मिलती हैं। वे समाज के इतिहास और संस्कृति की जड़ से जुड़े होते हैं। अत: पर्यटक या पर्यटन के संचालकों के लिए इस बात का ज्ञान इतना आवश्यक नहीं है कि किसी क्षेत्र में किस प्रकार की संस्कृति है बल्कि यह जानना आवश्यक है कि उस समाज की प्रथाओं पर आधारित किस प्रकार के नियमों का जन्म हुआ है जिनके अनुसार उस पर शासन चलाया जाएगा। उदाहरणस्वरूप कोई पर्यटन संचालक महाराष्ट्र के तीर्थ स्थान पंढारपुर की तीर्थ यात्रा का आयोजन कर रहा है। यहां की प्रथाओं और रीतियों के माध्यम से ये नियम विकसित हुआ कि विशेष पूजा के समारोहों को स्थानीय समुदायों द्वारा सम्पन्न किया जाएगा जबकि राज्य प्रशासन शान्ति स्थापित रखने और स्वास्थ्य के प्रबन्ध करने का कार्य करेगा। किन्तु हूपरीकर की रिपोर्ट (1972) के आधार पर इसे अस्पष्ट कर दिया गया और सम्पूर्ण कार्यवाही सम्पन्न कराने का उत्तरदायित्व सरकार ने ले लिया। इसने काफी विवाद उत्पन्न कर दिए। इसलिए वर्तमान पर्यटन संचालक को पर्यटक समूहों को तीर्थ स्थलों तक ले जाने से पूर्व इन मुद्दों की जानकारी होनी चाहिए। कभी-कभी रीति रिवाजों और प्रथाओं पर आधारित नियमों में मतभेद होने लगता है। ऐसी स्थिति के लिए स्थानीय संदर्भों और उद्देश्यों के प्रति संवेदनशीलता जरूरी है।



चित्र 1. प्रथाएं एवं परम्पराएं उर्वर कानूनों का निर्माण कर सकती हैं। मध्यवर्गीय स्पेन।

21.3 राज्य के कानूनी एवं न्यायिक अधिकार

प्रत्येक राष्ट्र या राज्य आजकल स्वयं अपने द्वारा बनाए गए अधिनियमों की कठोर नींव पर आधारित है। ये नियम राज्य की प्रकृति अर्थात प्रजातान्त्रिक अथवा सत्तावादी प्रकृति के अनुसार परिवर्तनशील होते हैं। कार्यसूची बनाते समय पर्यटन उद्योग को इस मूलभूत सत्य को ध्यान में रखना चाहिए। प्रतिबंधात्मक नियम एवं कानून पूर्व नियोजित पर्यटन कार्यक्रम को बरबाद कर सकते हैं। उदाहरणार्थ सऊदी अरबिया जैसे देश जहां आवागमन (movement) की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध है, पर्यटन को पूरी तरह प्रतिबंधित कर सकते हैं। जबकि ऐसे देश जैसे भारत भारतीय नृजातीयता और संस्कृति में अधिक गहराई के साथ अन्त:क्रिया कर सकते हैं। फिर भी प्रजातान्त्रिक देश भी प्रतिबन्ध लगाते हैं। भारत में उत्तर पूर्वी भारत के भागों में पहुंचने के लिए इनर लाइन परमिट की आवश्यकता होती है। एक दूसरे देश का उदाहरण लिया जाए तो मारीशस सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए कि अधिक बजट वाले पर्यटक ही मारीशस का भ्रमण करे बहुत से प्रतिबन्ध लगाती है। मारीशस में ये नियम और कानून मारीशस के पुराने पर्यावरण की सुरक्षा की दृष्टि से स्पष्ट बनाए जाते हैं। मारीशस में पर्यावरण मन्त्रालय इस बात को सुनिश्चित करता है कि "इस विषय में पर्यटन मन्त्रालय एक ऐसे कानून का मसौदा तैयार कर रहा है जो पर्यटन उद्योग के विभिन्न क्षेत्रों से संबन्धित होगा और होटल संचालन, यात्रा एजेन्सीज और पर्यटन संचालकों, तटीय सैरगाहों के संचालकों और किराए के लिए नौकाओं के संचालकों आदि को नियन्त्रित करेगा। एक सम्पूर्ण कानून मन्त्रालय को सारी ऐसी गतिविधियों को नियमित करने में सहायता देगा जो पर्यटन की परिधि के अन्तर्गत आते हैं और साथ ही साथ पर्यावरण पर उसके दुष्प्रभावों के नियन्त्रण में भी सहयोग करेगा। अब ऐसे कानूनी ढांचे की आवश्यकता को और अधिक निर्णायक समझा जा रहा है ताकि आने वाली शताब्दी में यह उद्योग अधिक शक्तिशाली बने।

21.3.1 पर्यावरण और भारतीय राज्य

भारत में भी राज्य ने प्रभावी ढंग से पर्यटन को ध्यान में रखकर अपने पर्यावरण की सुरक्षा के लिए हस्तक्षेप किया है। बाघ प्रदर्शन के विषय में नियम या प्राणियों की सुरक्षा के नियम इसी संदर्भ में है। 1972 का भारतीय वन्यप्राणी सुरक्षा अधिनियम अधिकतर भारतीय वन्य प्राणियों को सुरक्षा प्रदान करर है। परिणामस्वरूप भारत में 66 राष्ट्रीय उद्यान, 333 मृग-वन और 55 चिड़ियाघर हैं। इस अधिनियम के अन्तर्गत उल्लंघन करने वालों को कठोर दण्ड दिए जाते हैं।

पर्यावरण एवं विरासत के संरक्षण और सुरक्षा से सम्बन्धित कुछ विशिष्ट अधिनियम भी हैं। ये विभिन्न पर्यावरणीय एवं विरासत वाले अंचलों का निर्धारण करते हैं, आगन्तुकों को विशेष सुविधाएं प्रदान करते हैं और आगन्तुकों के व्यवहार को भी नियमित करते हैं।

पर्यावरणीय प्रभाव को नियन्त्रित करने के उपायों को विकसित करने की आवश्यकताओं का अर्थ अन्य विकासीय उपायों का मूल्यांकन करना भी है। परिणामस्वरूप इनमें सम्मिलित हैं :

i) जल आपूर्ति की व्यवस्था, पर्यटन क्षेत्रों में गन्दे जल के शोधन तन्त्रों की व्यवस्था।

ii) होटलों तथा अन्य पर्यटक सुविधाओं से उत्पन्न ठोस अपशिष्ट की सफाई का उचित प्रबंध।

iii) आगन्तुकों के प्रवाह का सावधानीपूर्वक प्रबन्धन और जहां कहीं आवश्यकता हो वहां आगन्तुकों के प्रार्थना पत्रों को उपयोग में लाकर प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक गंतव्य स्थानों का भीड़ भाड़ से बचाव और इन स्थानों (राष्ट्रीय उद्यानों आदि) की सुरक्षा।

iv) खुले स्थानों और उद्यानों की व्यवस्था और सैरगाहों में तथा पर्यटक सुविधाओं के स्थान पर भूदृश्य निर्माण कार्यक्रम की उदारतापूर्वक व्यवस्था।

v) पर्यटन विकास क्षेत्रों में उचित भूमि अंचल नियमों और स्थल आयोजन मानकों का विकास एवं उपयोग जैसे तटीय सैरगाहों और सड़कों आदि से हटकर भवनों का निर्माण।

vi) निवासियों एवं पर्यटकों के स्वास्थ्य एवं सुरक्षा मानकों का अनुरक्षण, विशेष रूप से पर्यावरणीय रूप से

उत्पन्न रोगों और परिवहनों की भीड़ भाड़, मोटर गाड़ियों के खराब रखरखाव, असर्वेक्षित नौकाओं, अग्नि और अन्य खतरों को नियन्त्रत करने की व्यवस्था।

vii) पर्यटन सुविधाओं, जिनमें सौर ऊर्जा भी सम्मिलित है, की योजनाओं में ऊर्जा संरक्षण तकनीकों का समावेशन।

viii) प्रस्तावित विकास परियोजनाओं के प्रभाव का अनुमान लगाने के लिए एक पर्यावरणीय प्रभाव निर्धारण प्रक्रिया का निर्माण।

पर्यावरण एवं स्वास्थ्य के अतिरिक्त भारत में राज्य, नियमों की सहायता से पासपोर्ट और वीजा की आवश्यकताओं, प्रतिबन्धित क्षेत्रों में विशेष परमिटों और सीमा करों के नियमों में भी हस्तक्षेप करता है। इसी प्रकार कानून व्यवस्था की समस्याएं जो पर्यटकों और अतीथेय के संदर्भ में उत्पन्न होती हैं उन्हें भी राज्य ही निपटाता है। (देखिए इकाई 6 टी एस-1)

बोध प्रश्न 1

1) क्या पर्यटन संचालकों को प्रथाओं तथा रीति रिवाजों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए क्यों?

.....

.....

.....

.....

.....

2) पाँच ऐसे क्षेत्र बतालाइए जिनमें भारतीय राज्य ने पर्यावरणीय प्रभाव नियन्त्रण के प्रोत्साहन में हस्तक्षेप किया है।

.....

.....

.....

.....

.....

21.4 निजी क्षेत्र की कार्यप्रणाली की चिंताएं

हमारे देश में निजी क्षेत्र भी नियमों और कानूनों पर अपनी मांगें लागू करता है। ऐतिहासिक रूप से बाजार एवं उद्योग ने सदैव आधुनिक परिस्थितियों के लिए समस्याएं खड़ी की हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में इंग्लैण्ड में मुक्त व्यापार के समर्थक और उसके विरोधियों में, जो व्यापार को प्रतिबन्धित करना चाहते थे, भयंकर विवाद चला। मुक्त व्यापारियों ने व्यापार को साम्राज्य के गौरव के साथ जोड़ा और उसके विरोधियों ने आरोप लगाया कि व्यापार उपनिवेशों में लूटमार का कारण बनता है, अपने देश में नवाबों जैसी जीवनशैली को प्रोत्साहन देता है और गंभीर मानवीय तथा पर्यावरणीय-समस्याएं पैदा करता है। इस प्रकार उपनिवेशों में विभिन्न जंगल के कानूनों के लागू होने तथा दास प्रथा के उन्मूलन आदि के साथ ही पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति चिन्ता पैदा हुई। किन्तु उपनिवेशवाद के प्रति चिन्ता ने इनमें से बहुत से नियमों के विषय को सीमित कर दिया।

यह भी बताना उचित होगा कि यहां भी राज्य के नियमों के प्रति चिन्ताएं बढ़ती हुई औद्योगिक क्रान्ति की

आवश्यकताओं के कारण अपने मार्ग से हट गई क्योंकि उद्योग दास श्रम की अपेक्षा वेतन श्रम में अपना सामाजिक आधार बनाना चाहता था।

21.4.1 अंग्रेजी राज्य के कानून और उसके बाद की स्थिति

भारत में अंग्रेजी औपनिवेशिक सरकार के द्वारा लागू किए गए प्रतिबन्धों के अन्तर्गत विकसित हुआ। अत: सुरक्षात्मक विनियम इसकी आधारशिला था। इस संदर्भ में आज नई उदार और मुक्त व्यापार अर्थव्यवस्था को समझने की जरूरत है। मुक्त व्यापार निजी उद्यम को सृजित करने के दबाव हैं। इसके साथ-साथ संरक्षण के आधार के प्रति भी विपरीत दबाव हैं जिनके अंतर्गत भारतीय उद्योग अस्तित्व में आया।

स्पष्ट है कि निजी क्षेत्र के विषय में नियम और कानून इन दबावों को व्यक्त करते हैं। भारतीय राज्य द्वारा लाइसेंस कानून बनाए गए ताकि उद्योग को राज्य के उद्देश्यों की ओर ले जाया जा सके। इस तरह ये कानून उद्योग की उद्यमशीलता के समक्ष खड़े हो गए। अत: आज हम इन नियमों का विखंडन देखते हैं।

जगदीश भगवती जैसे अर्थशास्त्रियों ने हाल ही में यह तर्क दिया है कि मुक्त व्यापार और पर्यावरण की चिंताएं एक साथ चलती हैं। आज के उदार युग में उद्योग इस दिशा में बढ़ने का प्रयास कर रहा है। हमने पहले ही बताया है कि यह संभवत: व्यापार और मानव पर्यावरण पर 19 वीं शताब्दी में हुए बहसों के बिल्कुल उलट है।

21.4.2 राज्य के अधीन पर्यटन उद्योग

पर्यटन उद्योग स्वयं ऐसे परिवर्तनों की अस्थिरता से ही होकर गुजरा है। जिज्ञासु व्यापारियों और उपनिवेशवाद के अधीन दर्शकों की अवस्था से सांस्कृतिक विविधता, विरासत तथा पारिस्थितिकीय पर्यटकों के विदेश से अन्तर प्रवाह में वृद्धि हुई है। यह विविधता उदारीकरण के प्रति नियन्त्रण जिन से होकर शेष उद्योग गुजरा है विस्तृत बहस के बावजूद बची हुई है।

इसी प्रकार विदेशी मुद्रा विनिमय नियम सुनिश्चित मुद्रा कानून की सीमा में कार्य करता है। भारतीय मुद्रा का आयात निर्यात सख्त नियन्त्रण के अधीन होता है। इसी प्रकार लाइसेन्स तन्त्र ने यह सुनिश्चित कर दिया कि एकाधिकार पर्यावरण के छोटे संचालक एवं उद्यमी कार्य करने में कठिनाई अनुभव करते हैं।

सब मिलकर एकाधिकार पर्यटन उद्योग की मांग ने ऐसे कानून का मार्गदर्शन किया जिसने इसके घरेलू व्यापार को अन्तर्राष्ट्रीय कानून से सुरक्षित रखा। यह अधिकतर होटल एवं कैटरिंग के क्षेत्र में सफल हुआ। इसका परिणाम एक ओर तो महंगे आवास और दूसरी ओर बिना किसी सुविधा और गुणवत्ता के आवास के रूप में सामने आया। ऐसी ही समस्या आहार उद्योग में भी व्याप्त रही। अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के साथ ही स्थापित एकाधिकार को प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा किन्तु अभी तक छोटे उद्यमों की गुणवत्ता में वृद्धि दिखाई नहीं दी। उपलब्ध कानून जैसे गुणवत्ता नियन्त्रण का कानून, आवासीय अधिकार, अतिथियों की एकान्तता, अग्नि से सुरक्षा आदि आमतौर से केवल कागज पर ही रहते हैं।

21.5 सामाजिक एवं पर्यावरणीय न्याय के लिए संघर्षरत समूहों द्वारा उठाई गई आवाज

यह विधि निर्माण का एक महत्वपूर्ण एवं प्रमुख साधन है। वर्षों से सामाजिक एवं पर्यावरणीय मुद्दे परस्पर संबंधित हैं। सरकार और राजनीतिक संगठनों को बैठकर इस पर विचार विमर्श करना चाहिए। कभी-कभी ये मुद्दे विभिन्न राष्ट्रों द्वारा अपनाई गई विकासीय योजनाओं के परिणामस्वरूप सामने आते

हैं। उदाहरणार्थ भारत में नर्मदा पर बनाया गया बड़ा बांध उस क्षेत्र में निवास कर रहे निवासियों का विस्थापन विरोध और बांध की ऊंचाई कम किए जाने की मांग का कारण बना। इसी प्रकार भारत में चिपको आन्दोलन ने सुन्दरलाल बहुगुणा का पर्यावरण संवेदी कानून बनाने का मार्ग प्रशस्त किया।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आज कल हम गोमांस पर एक बहस चलती हुई देखते हैं। कुछ अस्वस्थ गायों की खपत ने यूरोपीय संघ को ब्रिटिश गोमांस के उपभोग पर प्रतिबन्ध लगाने पर मजबूर कर दिया। दूसरी ओर ब्रिटेन इस प्रतिबन्ध का विरोध कर रहा है और तर्क दे रहा है कि 'पागल गायों' रोग (मैड काऊ डिसीज़) नामक इस रोग की प्रकृति के निर्धारण के लिए वैज्ञानिक रूप से संवेदी प्रक्रिया होनी चाहिए। इस मामले में पशुओं के अधिकारों का मुद्दा भी सम्मिलित है। एक प्रमुख पर्यावरण विशेषज्ञ मेनका गांधी का कहना है कि रोगग्रस्त गायों की हत्या करने के स्थान पर उन्हें भारत भेज दिया जाना चाहिए।

ये मुद्दे त्वरित एवं दीर्घकालिक दोनों ही प्रकार के कानून चाहते हैं जो पर्यटन पर भी लागू हों। जैसे ब्रिटेन में पर्यटन संचालक को अपने पर्यटकों को ब्रिटिश गोमांस प्रस्तुत करने की समस्या का सामना करना पड़ेगा आदि। तथापि पर्यटन के लिए पर्यावरणीय कानूनों में काफी उलझाव है। लोगों के विस्थापन का प्रश्न या पर्यावरण अपकर्ष का आयोजकों को पर्यटन के विषय में नीति पर पुनः विचार करने की प्रेरणा देता है। अतः होटलों, आहार उद्योग या सैरगाहों के निर्माण आदि के विषय में कानून इस बात को व्यक्त करते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि गोआ में समुद्री तटों पर होटल निर्माण पर कानूनी सीमा निर्धारित की गई है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वन्य जीवों के संरक्षण के लिए या असुरक्षित पारिस्थितिकीय मण्डलों के लिए बनाए गए कानून जैसे 1972 का वन्य प्राणी कानून वास्तव में निर्णय करता है कि किसी देश में पर्यटन किस दिशा में जा सकता है। परिणामस्वरूप वन्य प्राणी सुरक्षा अधिनियम यह सुनिश्चित करता है कि शिकार अथवा मनोरंजन के लिए पशुओं का वध न हो। इस प्रकार पर्यटन के घृणित पक्ष को कम कर सकता है। इसी प्रकार विस्थापित लोगों से सम्बद्ध कानून जातीय संस्कृतियों के प्रति संवेदना उत्पन्न करता है और इसने एक नवीन प्रकार के पर्यटन को जन्म लिया है जिसे नृजातीय पर्यटन कहते हैं। जहां पर्यटक स्थानीय समुदाय के साथ स्थानीय संस्कृति एवं परम्पराओं के साथ ससम्मान परस्पर संपर्क करता है।

21.6 अधिकार क्षेत्र

हमने अभी तक पर्यटन में अधिनियमों और कानूनों के चार प्रमुख स्रोतों पर विचार किया। उदाहरणार्थ क) रीति रिवाज एवं प्रथाएं, ख) राज्यों के कानूनी और न्यायिक अधिकार, ग) व्यापार एवं उद्योग के निजी क्षेत्रों के कार्यों की चिन्ताएं, घ) सामाजिक एवं पर्यावरणीय न्याय के लिए संघर्षशील वर्गों द्वारा उठाई गई आवाज। ये स्रोत वह आधार प्रदान करते हैं जिनपर देश की विभिन्न विधि निर्माण करने वाले संगठन कानूनों की रचना करते हैं। भारत में विधि निर्माण क) राष्ट्रीय संसद, ख) राज्यों की विधान सभाएं, ग) स्थानीय या शहरी निकायों द्वारा किया जाता है। इन निकायों का क्षेत्राधिकार भारतीय संविधान द्वारा निर्धारित होता है। फिर भी पर्यटन जैसे क्षेत्र में अनेकों बातें छूट जाती है। उदाहरणार्थ पर्यटन शिक्षा राज्य के विधानमंडल द्वारा कानून का विषय होना चाहिए जबकि विदेशी और भारतीय मुद्रा नियमन को केन्द्रीय संसद के हाथों में होना चाहिए। इसी प्रकार प्रदूषण, अपशिष्ट निपटान आदि के कानूनों को स्थानीय निकायों जैसे नगर पालिकाओं और पंचायतों से भिन्न होना चाहिए। अतः भारत में पर्यटन संचालक को पर्यटन से संबंधित स्थानीय एवं राष्ट्रीय संदर्भ में प्रत्येक अधिनियम के प्रति संवेदनशील होना पड़ेगा। इसी प्रकार उसके लिए विभिन्न निकायों द्वारा पारित सारे कानूनों और अधिनियमों के ज्ञान की अपेक्षा कानून निर्माण की प्रक्रियाओं की गति के विषय में जानकारी अधिक महत्वपूर्ण होगी। किन्तु निश्चित ही अपने कार्यक्षेत्र में कार्य करने की दृष्टि से वहां प्रचलित कानूनों और अधिनियमों की जानकारी उसके लिए अनिवार्य होगी।

21.7 कमी

बहुत से कानूनों और विधि नियमावली के बावजूद किसी देश का कानूनी तन्त्र अन्ततोगत्वा उसके संस्थानिक संदर्भ में परिभाषित होता है। उसकी संस्थाओं का सामर्थ्य किसी कानून के नियम पर अटल रहने की राजनीतिक शिक्षा के संकल्प से प्राप्त होता है। भारत के मामले में हमने पिछले कई वर्षों में इस राजनीतिक संकल्प को कमजोर होते हुए देखा है। सामाजिक वैज्ञानिक जैसे सुदिप्ता कवीराज और रजनी कोठारी ने इस दुर्बलता को सविस्तार विश्लेषित किया है। उन्होंने संकेत दिया है कि अर्थव्यवस्था और समाज में प्रमुख सुधार करने के प्रति सरकार की अनिच्छा ने समुदाय और जाति के बन्धनों से किस प्रकार संस्थाओं की वैधानिक न्यायिक शक्ति को गुप्त रूप से दुर्बल कर दिया है। अत: अनेक लोकप्रिय कार्यक्रम जैसे 'गरीबी हटाओ' आदि प्रारंभ किए गए जिन्होंने भारतीय संस्थाओं को कमजोर करने के अतिरिक्त कुछ नहीं किया।

इन परिस्थितियों में अधिनियम और कानून जो बहुत अच्छी नीयत से बनाए गए थे, वे कुछ तो कार्यान्वित किए गए और कुछ कागजों में ही रह गए।

उदाहरणार्थ विस्थापित लोगों से सम्बन्धित कानून प्राय: कार्यान्वित नहीं किए जाते। जाति और साम्प्रदाय के झगड़े अकसर विस्थापित लोगों को पुन: बसाए जाने में बाधा डालते हैं। सामाजिक कार्यकर्ता जैसे मेधा पाटकर स्वयं सरकार द्वारा बनाए गए कानून को कार्यान्वित कराने के लिए प्रदर्शन करती हैं। इसी प्रकार अपशिष्ट, प्रदूषण और पर्यटकों के आगमन से सम्बद्ध कानून उपेक्षित रह जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उपलब्ध कानून के होते हुए भी पारिस्थितिक कार्य की वहन क्षमता पर भारी दबाव पड़ता है।

बोध प्रश्न 2

1) औपनिवेशिक राज्य ने पर्यावरण नियम क्यों पारित किए ?

.....

.....

.....

.....

2) पर्यटन कानून के प्रमुख प्रभाव क्या थे ?

.....

.....

.....

.....

.....

3) क्या पर्यटन विधि निर्माण में स्थानीय, क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय महत्व के मुद्दे प्रभावी होते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

21.8 सारांश

इस इकाई में हमने पर्यटन में कानून और अधिनियमों के प्रमुख स्रोतों पर विचार किया। हमने यह भी देखा कि भारत में कानूनों और उनके कार्यान्वयन में कितनी कमी रहती है और पर्यटन संचालक को अपने पर्यटन संचालन के कार्यक्रम के लिए उलझे हुए कानूनी तन्त्र से होकर गुजरना पड़ता है।

21.9 शब्दावली

स्थानीय : नगरपालिका या पंचायत अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत विशेष स्थान।

प्रथा: समुदाय या लोगों के समूह द्वारा स्थापित मानक।

अधिकारवादी: अलोकतंत्रीय ढंग से अधिकार थोपना।

विदेशी मुद्रा विनिमय : एक देश की मुद्रा के बराबर मूल्य की किसी दूसरे देश की मुद्रा। उदाहरणार्थ एक अमरीकी डालर 35 भारतीय रुपये के बराबर है।

21.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 21.2। आप लिख सकते हैं कि कैसे : क) ये रीति रिवाज स्थानीय इतिहास और संस्कृति की जड़ों तक गहरे चले गए हैं। ख) और इनके चारों ओर किस प्रकार विवाद पाए जाते हैं।

2) देखिए उप-भाग 21.3.1

बोध प्रश्न 2

1) देखिए भाग 21.4। आप मुक्त व्यापार के प्रभाव के विषय में लिख सकते हैं।

2) देखिए उप-भाग 21.4.2 एवं भाग 21.5। आप संरक्षक कानूनों एवं पर्यावरणीय कानूनों के प्रभावों के विषय में लिख सकते हैं।

3) देखिए भाग 21.6

संलग्नक

पर्यावरणीय कानून का प्रतिदर्श विश्लेषण

धारा 1

पर्यावरण के अधिकतर घटक जैसे भूमि, जल, वन आदि राज्यों की सीमा के अन्तर्गत होते है। विभिन्न कारणों से विशेषकर वित्तीय कारणों से राज्य प्रदूषण या पर्यावरणीय दृष्टि से इन संसाधनों के संरक्षण और विकास के लिए अच्छी प्रबन्ध नीति को प्रोत्साहन देने के मामलें में प्रभावी कदम उठाने की स्थिति में नहीं है। इसलिए केन्द्रीय सरकार के लिए यह आवश्यक हो गया है कि जब ये संसाधन वास्तविक कमी की कगार तक पहुंचे तो वह हस्तक्षेप करे। जल प्रदूषण, वन्य संसाधनों की कमी और भारत में वायु

प्रदूषण की स्थिति ऐसी है कि इन संसाधनों को विनाश से रोकने के उपाए करने के लिए भारत सरकार को कदम उठाना चाहिए। इस कार्य के लिए संविधान में उपलब्ध व्यवस्था केन्द्र सरकार के लिए सुविधाजनक होगी। प्रथम व्यवस्था अनुच्छेद 242 में संघ को राज्य सूची में उल्लिखित मामलों के सम्बन्ध में कानून पारित करने का अधिकार दिया गया है, यदि ऐसे दो या अधिक चरणों में अनुरोध किया गया है। केन्द्रीय सरकार ने इस व्यवस्था को वर्तमान एवं आनेवाली पीढ़ियों को सुरक्षित रखने और पर्यावरण के आत्म विनाश की ओर अटल दिखाई देने वाले कदम को रोकने के लिए विभिन्न अधिनियम पारित करने के लिए उपयोग किया। निम्नलिखित भाग में हम भारत सरकार द्वारा पारित किए गए विभिन्न अधिनियमों की विवेचना करेंगे।

1) कीटनाशक अधिनियम

आप जानते हैं कि कीटनाशी रसायन बुनियादी तौर पर विषैले रसायन होते हैं और उनका प्रयोग निहित रूप से खतरनाक और दुष्परिणामी होता है। नागरिकों के स्वास्थ्य एवं पर्यावरण की सुरक्षा को मुख्य उत्तरदायित्व समझते हुए भारत सरकार ने 1968 में कीटनाशक अधिनियम पारित किया। इसे 1971 से लागू किया गया ताकि आयात, विनिर्माण, विक्रय, परिवहन, वितरण तथा कीटनाशकों का प्रयोग मानव जाति एवं पशुओं को संकट में डाले बिना किया जा सके। अनेकों ऐजेन्सियां जैसे केन्द्रीय कीट नाशक बोर्ड, कीटनाशक पंजीकरण कमेटी, कीटनाशक पर्यावरण प्रदूषण परामर्श केमटी, केन्द्रीय कीटनाशक प्रयोगशाला, कीट नाशकों के प्रयोग निषेध/प्रतिबन्धित करने वाली समिति इस अधिनियम को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए बनाई गई।

2) वन्य जीव (सुरक्षा) अधिनियम

आवास के सर्वनाश के कारण ही वन्य प्राणियों को सर्वाधिक गंभीर संकट का सामना करना पड़ता है। कृषि उद्योग एवं नगरीकरण का विस्तारण आदि इस सर्वनाश का कारण हैं। वन्य प्राणी संसाधन का महत्व समझकर और प्रजाति के विलोपन को बचाने के लिए हमारे देश के वन्य प्राणी उद्यानों और मृग वनों से सम्बद्ध कानून अखिल भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम (1972), वनस्पति एवं प्राणी समूह की संकटापन्न जातियों के (साइट्स 1976 अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संबंधी सम्मेलन में पक्ष बनता जा रहा है, यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक संगठन) के मानव एवं जैव मण्डल कार्यक्रम (1972) के राष्ट्रीय घटक का शुभारंभ करने के व्यक्तिक संकटापन्न जातियां जैसे हंगल (1970), बाघ (1972), धारीदार शेर (1973), मगरमच्छ (1974) भूरा मृग शृंग संरक्षण परियोजना के माध्यम सुरक्षा कर रहा है।

वन्य जीव (सुरक्षा) अधिनियम वन्यजीव संरक्षण और संकटापन्न जीव प्रजातियों की सुरक्षा को नियन्त्रित करता है। ये अधिनियम संकटापन्न एवं दुर्लभ जातियों के व्यापार का निषेध करता है। वन्य जीव अधिनियम को सारे राज्यों ने अपनाया केवल जम्मू कश्मीर को छोड़कर जिनका अपना अधिनियम है। केन्द्र राज्यों को (i) प्रबन्धन को सशक्त करने और राष्ट्रीय उद्यानों तथा मृगवनों की ढाँचागत सुविधाओं की सुरक्षा करने के लिए। (ii) वन्यजीवों की सुरक्षा अनधिकृत शिकार के नियन्त्रण और वन्य प्राणी उत्पादनों के गैर कानूनी व्यापार को रोकने के लिए (iii) वन्यप्राणियों की संकटापन्न जातियों के बन्दी स्थिति में प्रजनन (iv) वन्यजीव शिक्षा और उसकी व्याख्या और (v) चुने हुए चिड़ियाघरों के विकास के लिए वित्तीय सहायता देता है।

3) जल (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम

जल अधिनियम जल प्रदूषण को प्रभावित करता है। उसके लिए दण्ड निर्धारित करता है और केन्द्र एवं राज्य स्तर पर जलप्रदूषण के नियन्त्रण और उसके बचाव के लिए एक प्रशासनिक तन्त्र की स्थापना करता है जिसे जल प्रदूषण बोर्ड कहते हैं। ये अधिनियम इस दृष्टि से बहुत विस्तृत है कि इसमें सरिताएं, जलप्रवाह मार्ग, अन्तर्देशीय जल, अन्तर्भूमिक जल, समुद्र, ज्वारीय जल को राज्य के अधिकारक्षेत्र के अन्तर्गत देता है। राज्य एवं केन्द्रीय बोर्ड में व्यापक प्रतिनिधित्व होता है और उन्हें परामर्श देने के पूरे पूरे अधिकार दिए गए हैं तथा जल प्रदूषण के निवारण एवं नियन्त्रण अथवा उसमें कमी के लिए तकनीकी

सहायता को समन्वित कर के प्रदान करने के लिए अधिकृत किया गया है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि इन बोर्डों को देश में जल प्रदूषण की दशा पर दृष्टि रखने और प्रदूषण के अनुज्ञेय एवं अनुमत्य और अननुमात्य स्तर के मानक के निर्धारण का कार्य भी सौंपा गया है।

जल अधिनियम विषैले, हानिकर अथवा प्रदूषित करने वाले पदार्थों को नदियों एवं कुंओं में फेंके जाने को निषिद्ध करता है और हर वह कार्य जो नदियों के जल के उचित प्रवाह में बाधित होता है रोकता है। जिसके कारण अन्य कारणों से हुए प्रदूषण में वृद्धि होती है। ये अधिनियम यह प्रतिबन्ध भी लगता है कि मल, जल या औद्योगिक प्रवाह को नदियों या कुंओं में गिराने के लिए पूर्व अनुमति की आवश्यकता होगी। बोर्डों को प्रदूषणकर्ताओं को ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न करके दण्डित करने का अधिकार प्राप्त हैं जो प्रदूषण को हतोत्साहित करता है और वह प्रदूषणकर्ता पर मुकदमा चला सकता है। किन्तु व्यवहार में बोर्ड उतना प्रभावी सिद्ध नहीं हुआ जितना उससे अपेक्षा थी। ऐसा बजट की बाधाओं, विशेषज्ञता के अभाव और बड़े औद्योगिक प्रदूषणकर्ताओं के विरूद्ध दण्डात्मक कार्यवाही करने में असमर्थता के कारण हुआ है। इसके अतिरिक्त प्रदूषणकर्ताओं और प्रदूषणों से निपटने में अधिक कार्य भार से ग्रस्त न्यायपालिका भी बोर्डों की अधिक सहायता नहीं कर सकी। आकलन समिति की इक्सठवीं रिपोर्ट (अप्रैल 1938) के अनुसार 21 राज्यों में इस अधिनियम के अन्तर्गत प्रारंभ किए गए 1602 अभियोजनों में से केवल 288 पर ही निर्णय हुआ और 1314 अभी भी अनिर्णीत हैं। वायु अधिनियम का मामला थोड़ा सा अलग है जिसके विषय में हम बाद में विचार करेंगे। वायु अधिनियम का उल्लंघन करने वाले 202 मामले दर्ज किए गए जिनमें से 97 का फैसला न्यायालयों द्वारा किया गया जबकि शेष अभी भी विचाराधीन हैं। संख्याओं में इस अन्तर का कारण नौकरशाही की अपेक्षा अधिनियमों (जल अधिनियम 1974, वायु अधिनियम 1981) के पुराने पन को बताया जाता है क्योंकि दोनों ही के लिए ये बातें सत्य हैं।

4) वायु (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम

वायु अधिनियम, 1981 में मुख्य रूप से मोटर गाड़ियों और औद्योगिक संयंत्रों से निकलने वाले धुंए को नियमित और नियन्त्रित करने के लिए पारित किया गया था। जल प्रदूषण के बचाव और नियन्त्रण के लिए बनाए गए बोर्ड को अधिनियमों को भी कार्यान्वित करने और लागू करने के लिए भी अधिकृत हैं। ये निकाय वायु की गुणवत्ता का मानक भी निर्धारित करते है। धारा 19 के अन्तर्गत केन्द्रीय बोर्ड को मुख्य रूप से राज्य के बोर्डों की गतिविधियों को समन्वित करने के लिए अधिकार दिए गए हैं। राज्य के बोर्ड से विचार विमर्श करके राज्य सरकार राज्य में स्थित किसी क्षेत्र को "वायु प्रदूषण नियन्त्रण क्षेत्र" के रूप में घोषित कर सकती है और स्वीकृत जलावन के स्थान पर किसी ऐसे जलावन को निषिद्ध करती है जिसके कारण वायु प्रदूषित होती है। इसके अतिरिक्त बोर्ड से अनुमति लिए बिना कोई ऐसा औद्योगिक संयन्त्र संचालित नहीं होगा जो उन उद्योगों से सम्बद्ध है जिनका वायु प्रदूषण नियन्त्रण क्षेत्र की सूची में विशेष रूप से उल्लेख किया गया है।

5) पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम

पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम 23 मई 1986 को संसद द्वारा पारित किया गया। यह अधिनियम 1972 के स्टाकहोम सम्मेलन से सम्बन्धित हैं और संविधान के अनुच्छेद 253 पर आधारित हैं। इस अधिनियम की विशेषता के कारण केन्द्र सरकार ने पर्यावरणीय प्रदूषण से बचाव, उस पर नियन्त्रण और उसमें कमी के लिए आवश्यक अधिकारों से स्वयं को लैस कर लिया है। इन अधिकारों में राज्यों द्वारा देशव्यापी कार्यक्रम के नियोजन और कार्यान्वयन का समन्वय, पर्यावरणीय गुणता मानकों का निर्धारण, विशेष रूप से पर्यावरणीय प्रदूषणों के उत्सर्जन अथवा विमुक्ति का नियमन और उद्योगों की स्थिति पर रोक लगाना आदि सम्मिलित है। ये मांगे गए अधिकार वास्तव में बहुत विस्तृत हैं, अधिकार में खतरनाक पदार्थों को संभालना, पर्यावरणीय दुर्घटनाओं से बचाव, शोध कार्य, प्रदूषित करने वाली इकाइयों का निरीक्षण, प्रयोगशालाओं की स्थापना, सूचनाओं का प्रचार व प्रसार, आदि इसमें सम्मिलित हैं। इस अधिनियम के अन्तर्गत विभिन्न प्रशासनिक कार्य प्रणालियों और संरचनाओं पर विचार किया जाता है।

यदि अधिनियम मूल रूप से कार्यान्वित कर दिया जाए तो यह पर्यावरण एवं वन मंत्रालय को श्रेष्ठ मन्त्रालय में बदल देगा जो औद्योगिक एवं अन्य विकासीय क्रियाओं के सम्पूर्ण प्रभाव क्षेत्र को नियन्त्रित करने में सफल होगा। इस अधिनेयम को लागू करने का भीरू रवैया सरकार द्वारा पारित पर्यावरणीय अधिनियमों का प्रदर्शन मात्र ही होगा।

आभार : डा० गीता कैकर, विज्ञान विद्यापीठ, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय।

धारा 11

जैन विविधता से सम्बद्ध केन्द्रीय अधिनियम के प्रमुख प्रासंगिक उपबंध :

1) कृषि एवं संसाधित खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण अधिनियम- 1985-86
   - i) उन कृषि उत्पादों के निर्यात को प्रोत्साहित करना एवं नियमित करना जो सूची में उल्लिखित हैं और जिनमें औषधीय पौधे शामिल है।
2) कृषि उपज (श्रेणीकरण एवं विपणन) अधिनियम, 1937
   - i) किसी विशिष्ट कृषि उपज का श्रेणीकरण करना ताकि गुणवत्ता का निर्धारण हो सके (3a,b)
   - ii) अन्याय पूर्वक चिन्हित/श्रेणीकृत उत्पाद के व्यापार निषेध या नियन्त्रण (3kg)
   - iii) किसी अन्य वस्तु (गैर कृषि वस्तुओं सहित) [6] ऐसे उपबंधों का विस्तार
3) इलायची अधिनियम, 1965

रबर अधिनियम में किए गए उपबंधों के अनुरूप (देखिए नीचे) :

बीज सम्मिलित हैं। इलायची के निर्यात/आयात को निषिद्ध/प्रतिबन्धित करने की व्यवस्था (21)

इलेट्टारिया कार्डोमोम मेटन के लिए प्रयोज्य, किन्तु इलायची बोर्ड द्वारा अधिसूचित अन्य पौधों पर भी विस्तार योग्य (3)

4) रबर, चाय, इलायची अधिनियम के समान ही नारियल विकास बोर्ड अधिनियम, 1979
5) सीमा शुल्क अधिनियम, 1962
   - i) अधिसूचित वस्तुओं के आयात निर्यात पर नियन्त्रण या निषेध, [21]
   - ii) निम्नलिखित के आयात निर्यात से सम्बद्ध नियमन:
     - क) मानव, पशु, अथवा पादप जीवन अथवा स्वास्थ्य की सुरक्षा [ii(t)]
     - ख) समाप्त हो जाने वाले प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण [11(m)]
   - ii) अधिसूचित वस्तुओं के परिवहन का नियमन [11(k.kl.m)]
6) नाशककीट एवं नाशीजीव अधिनियम, 1974
   - i) किसी ऐसी वस्तु के आयात पर रोक अथवा नियमन जो किसी पौधे को संक्रमित कर सकता है। [3(10)]
   - ii) किसी पौधे को संक्रमित कर सकने वाली वस्तुओं का भारत में एक राज्य से दूसरे राज्य में आने जाने पर रोक या नियमन [4(A)]

नोट : कीट एवं नाशीजीव इन "वस्तुओं" में सम्मिलित हैं।

7) पर्यावरण-सुरक्षा अधिनियम, 1986
   - i) पर्यावरण की सुरक्षा के सामान्य उपाय [3(i)]
   - ii) विशिष्ट क्षेत्रों में औद्योगिक एवं अन्य प्रक्रियाओं/गतिविधियों पर प्रतिबन्ध।
8) मत्स्यन अधिनियम, 1897
   - i) मत्स्यन के लिए विस्फोटकों के उपयोग पर प्रतिबन्ध [4(i)]

ii) मत्स्यन के लिए विषों के उपयोग पर प्रतिबन्ध [5]

iii) निजी जल में मालिक/अधिकृत लोगों की स्वीकृति से मत्स्य सम्बन्धी अधिनियम [6(2) एवं(3)]

iv) अधिकतम वर्ष तक अधिसूचित जल में मत्स्य पर रोक [6(4)]

9) वन अधिनियम, 1927

i) आरक्षित वनों को लगाना और उनका प्रबन्धन [अध्याय 11]

ii) ग्राम वनों को लगाना और उसका प्रबन्धन [अध्याय 11]

iii) संरक्षित वनों को लगाना और उनका प्रबन्धन [अध्याय 11]

iv) गैर सरकारी वनों और भूमि की सुरक्षा [अध्याय V]

v) वन्य उत्पादों के आने जाने पर नियन्त्रण [अध्याय vii]

vi) वन्य क्षेत्रों में पशुचारण अथवा उनमें उनके आवागमन पर नियन्त्रण [अध्याय X]

10) वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980

i) वन्य क्षेत्र का वन के अतिरिक्त उपयोग पर रोक या नियमन [2]

11) आयात एवं निर्यात (नियन्त्रण) अधिनियम, 1947

i) विशेष वस्तुओं के आयात एवं निर्यात पर निषेध या प्रतिबन्ध [3]

ii) विशेष वस्तुओं के परिवहन से सम्बद्ध नियम [4e]

12) समुद्री उत्पादों के निर्यात का प्राधिकरण, 1972

i) समुद्री उत्पादों को विकसित करने और नियंत्रित करने के लिए एक प्राधिकरण की स्थापना [4, 9 (1)]

ii) संरक्षण के उपायों, निर्यात के मानकों को सुनिश्चित करने और निर्यात के नियमन को ध्यान में रखते हुए तट से दूर एवं गहरे जल में मत्स्यन को विकसित करना और उसे नियमित करना। [9(2a,c,f)]

iii) समुद्री उत्पादों के आयात एवं निर्यात पर निषेध/प्रतिबन्ध [20(1)]

13) भारतीय समुद्री क्षेत्र (विदेशी पोतों द्वारा मत्स्यन नियन) अधिनियम, 1980

i) भारत के पूर्व, दक्षिण में ऐसे लोगों द्वारा जो विदेशी पोतों का उपयोग करते हैं [3]

ii) सार्वजनिक हित की परिभाषा के अन्तर्गत आने वाले व्यक्तियों को या वैज्ञानिक अनुसंधान, प्रयोग आदि के लिए ही अनुमति पत्र दिए जाएं [5(3),8]

14) राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड अधिनियम, 1987

i) एक ऐसे बोर्ड की स्थापना जो डेरी विकास और अन्य कृषि पर आधारित उद्योगों को प्रोत्साहन देता हो [4, 16 (1a)]

ii) पशुपालन, कृषि, उच्च उत्पादवाले मवेशियों (शुक्राणुओं के आयात सहित) दुधारु पशुओं, सांडों के आयात निर्यात और पशुधन की सामान्य वृद्धि हेतु वित्तीय सहायता देना एवं उसे सुकर बनाना [16(i)]

15) राष्ट्रीय तिलहन एवं वनस्पति तेल विकास बोर्ड, 1983

i) रबर अधिनियम आदि के समान, किसानों विशेषकर छोटे किसानों को तिलहन उद्योग के विकास से लाभ प्रदान करना [9(2)a]

ii) उच्च गुणवत्ता वाले प्रजनन के बीज, मूल बीज एवं प्रमाणित बीजों के उत्पादन एवं विकास के लिए तथा कृषि की उन्नत तकनीकों के विकास के लिए सहायता।

16) नवीन बीज विकास नीति- 1988

17) पशु क्रूरता निवारण अधिनियम-1960

i) पशुओं के साथ किए जाने वाले क्रूर व्यवहार की रोकथाम (जिसमें उनका वहन एवं व्यापार सम्मिलित है) पर प्रतिबन्ध [अध्याय III एवं अनुभाग 38 में निर्धारित नियम]

प्रयोगों एवं खेल तमाशे के लिए पशुओं के उपयोग पर प्रतिबन्ध [अध्याय IV एवं V]

18) रबर की उन्नत खेती, विपणन, परामर्श देना या आयात निर्यात को विकसित करने या प्रोत्साहित करने की दृष्टि से भारतीय रबर बोर्ड की स्थापना [B(1) एवं (2)]

ii) रबर रोपकों के अधिकारों पर प्रतिबन्ध-रोपण, पुन: रोपण या रोपण के स्थान के चुनाव के लिए लाइसेन्स आदि [17]

नोट : प्रारंभ में चार प्रजातियों पर लागू होता है और यदि बोर्ड सूचित करें (स्पष्टताएं) तो अन्य प्रजातियों पर भी लागू होगा।

19) बीज अधिनियम, 1966

i) कृषि उद्देश्यों से बेची जाने वाले अधिसूचित खाद्यान, कपास, एवं चारे के बीजों की गुणवत्ता सम्बन्धी नियम, [5,6]

ii) अधिसूचित बीजों के आयात निर्यात पर प्रतिबन्ध [12]

iii) स्वयं पैदा किए गए और अपने ही परिसर में स्वयं पैदा किए गए बीजों के बेचने और देने पर छूट, [24]

20) मसाला बोर्ड अधिनियम, 1986

जैसे कि रबर अधिनियम आदि में है इलायची के लिए और अन्य मसालों के आयात निर्यात पर प्रतिबन्ध, विकास के नियम।

21) चाय अधिनियम, 1953

जैसे कि रबर अधिनियम आदि के समान चाय के बीजों का निर्यात भी प्रतिबन्धित हैं [17] केवल एक प्रजाति कारमेलिया साइनेंसिस पर या सभी किस्मों पर लागू।

22) सीमान्तगर्त जल क्षेत्र, महाद्वीपीय शैल्फ, विशेष आर्थिक क्षेत्र एवं विशेष समुद्री क्षेत्र अधिनियम, 1976

i) जल और उसमें घिरे महाद्वीपीय शैल्फ तथा विशेष आर्थिक क्षेत्र (भारतीय क्षेत्र के उपयुक्त बिन्दु से 200 नाटीकल मील की दूरी) पर राजकीय अधिकार की व्यवस्था [3(1), 5(1), 6(2), 7(4)]

ii) संसाधनों की सुरक्षा और समुद्री पर्यावरण के संरक्षण के उद्देश्य से इस मण्डल में मौजूद किसी क्षेत्र से सम्बद्ध अधिसूचना [6(5), 7(6)]

24) वन्य जीव (सुरक्षा) अधिनियम, 1972
एवं वन्य जीव (सुरक्षा) संशोधन अधिनियम, 1991

i) पशुओं के शिकार पर प्रतिबन्ध अथवा निषेध [अध्याय 111]

ii) विशेष रूप से उल्लिखित पौधों की सुरक्षा [अध्याय III(A)]

iii) पक्षी विहारों एवं राष्ट्रीय उद्यानों की स्थापना और प्रबन्धन [अध्याय iv]

iv) चिड़ियाघर प्राधिकरण की स्थापना, चिड़ियाघरों का नियंत्रण एवं बद्ध प्रजनन अध्याय [ivA]

v) वन्य प्राणियों, जंगली जानवरों, जन्तुओं से बनी वस्तुओं और उनकी निशानियों के व्यापार एवं वाणिज्य पर नियन्त्रण [अध्याय v एवं v(A)]

भारत में जैविक विविधता का संरक्षण: एक उपागम, पर्यावरण तथा वन मन्त्रालय 1974 से साभार।

इकाइ 22 पर्यावरण की राजनीति

इकाई की रूपरेखा

22.0 उद्देश्य
22.1 प्रस्तावना
22.2 किसका पर्यावरण ?
22.3 पर्यावरण की राजनीति : विश्व के संदर्भ में
  22.3.1 पर्यावरण आन्दोलन के चरण
  22.3.2 पर्यावरण बहस
  22.3.3 व्याख्या
22.4 पर्यावरण की राजनीति : भारतीय संदर्भ
  22.4.1 पर्यावरण बनाम विकास
  22.4.2 विपको एवं अपिक्कों
  22.4.3 बांध बनाना या बांध न बनाना
22.5 पर्यावरण की राजनीति एवं पर्यटन
22.6 सारांश
22.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

22.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- जान सकेंगे कि पर्यावरण की राजनीति का क्या अर्थ है और उसका किन बातों से सम्बन्ध है,
- पर्यावरणीय आन्दोलन को सार्वभौम संदर्भ में देख सकेंगे,
- पर्यावरण से सम्बन्धित के विषय में जान सकेंगे,
- भारत में चल रहे कुछ प्रमुख पारिस्थितिकीय आन्दोलनों के उदाहरण दे सकेंगे,
- पर्यावरण की राजनीति में पर्यटन के तथ्य का स्थान निर्धारित कर सकेंगे, और
- कुछ समस्याओं के संभव समाधान के सूत्र प्राप्त कर सकेंगे।

22.1 प्रस्तावना

पर्यावरण की राजनीति की किसी भी परिचर्चा को उन तरीकों से सम्बद्ध होना चाहिए जिनमें पर्यावरण और उसके मनुष्य से सम्बन्ध और विकास को देखा जाता हो। यह बताने की आवश्यकता नहीं कि इस प्रश्न पर अनेक दृष्टिकोण है। किसी एक विचार की संरचना को यह नहीं कहा जा सकता कि इस दृष्टिकोण पर उसका एकाधिकार है। इसके अतिरिक्त पर्यावरण पर विभिन्न राजनीतिक दृष्टिकोण सामंजस्य व्यक्त हैं। मनुष्य और पर्यावरण के सम्बन्धों के विषय में मानव ज्ञान में वृद्धि भी काफी तेजी के साथ हुई है जैसे छठे दशक के उत्तरार्ध तक यह विचार प्रबल था कि पर्यावरण पर भरोसा किया जा सकता है। प्राकृतिक संसाधनों को समाप्त न हो सकने वाली चीज समझा जाता था। मनुष्य उन्हें अंधाधुंध उपयोग में लाने के लिए स्वतन्त्र था और वह भी वास्तव में नतीजे से बेपरवाह। यही नहीं प्राकृतिक संसाधन मानव जाति के भौतिक विकास के लिए अंधाधुंध शोषण हेतु समझे जाते थे। यह

दृष्टिकोण औद्योगिक विश्व में प्रचलित हर प्रकार के आर्थिक विकास के विचारों में व्याप्त हो गया। प्राकृतिक संसाधनों को इस दृष्टि से नहीं देखा गया कि इनकी उपलब्धता की अवधि सीमित होती है।

इस विचार पर अब सवालिया निशान लग गया है और इसे अस्वीकार कर दिया गया है। पर्यावरणीय भंगुरता (जिसका तात्पर्य ऐसे प्राकृतिक संसाधनों से है जिसके क्षीण हो जाने की वास्तविक संभावना हो) और उसको संरक्षित करने की आवश्यकता अब अविवादित सत्य के रूप में उभर कर सामने आई है। इसके अतिरिक्त मानव अस्तित्व के सत्य के रूप में ये सिद्ध हो चुका है कि पर्यावरणीय आवश्यकता केवल स्वयं के लिए नहीं है बल्कि मानव अस्तित्व के लिए भी अनिवार्य है। दूसरे शब्दों में पर्यावरण की सुरक्षा को मात्र कार्य नहीं समझना चाहिए बल्कि उसको एक आवश्यकता समझना चाहिए। इस इकाई में हमने पर्यावरण एवं विकास के सम्बन्ध को समझने का प्रयास किया है और पर्यावरण के प्रश्न के गिर्द विभिन्न प्रकार के राजनीति पक्षों पर ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास किया है।

22.2. किसका पर्यावरण

यह एक स्पष्ट उत्तर वाला सरल प्रश्न प्रतीत होता है किन्तु इसके बहुत से जटिल आयाम हैं। एक एकल पारिस्थितिकीय तन्त्र के रूप में पृथ्वी ने विविध प्रकार के प्राणियों की अनेकों किस्मों को उनके अपने पर्यावरण में सहस्तित्व की उचित परिस्थितियां प्रदान की हैं। मनुष्य ने अपनी अतुल्य सर्वोच्चता के कारण अन्य सभी जैव प्रकारों में श्रेष्ठ स्थान बना लिया है। तो क्या यह समझा जाए कि पर्यावरण औरों की अपेक्षा मानवों का अधिक है और दूसरों की अपेक्षा उनके लिए अधिक सुलभ है या होना चाहिए ?

मानव समाजों ने अपने आप को राष्ट्रों के रूप में संगठित कर लिया है। ये राष्ट्र औद्योगिक राष्ट्रों और विकसित अथवा विकासशील राष्ट्रों में विभाजित हो गए हैं। किन्तु पर्यावरण का ऐसा कोई औपचारिक विभाजन नहीं हुआ है। किन्तु विकसित राष्ट्रों ने अपनी आर्थिक एवं राजनीतिक श्रेष्ठता के कारण पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों का बड़ा अंश अपने कब्जे में कर लिया। उदाहरणार्थ, अनुमानित रूप से किए गए आकलन के अनुसार विकसित देशों में रहने वाली 27% जनसंख्या विश्व की 75% सम्पत्ति एवं संसाधनों का उपभोग करती है। इस प्रक्रिया के कारण ऐसी परिस्थितियां पैदा हो गई हैं जो कठोर पर्यावरणीय दबाब उत्पन्न करती है। और विकसित एवं विकासशील राष्ट्रों के मध्य चल रहा विवाद कि किस पर सर्वाधिक जिम्मेदारी है अभी भी निश्चित किया जाना है। अत: इस संदर्भ में भी यह प्रश्न प्रासंगिक हो जाता है कि 'पर्यावरण किसका' है।

इसके अतिरिक्त राष्ट्रों में विभिन्न समूह एवं वर्ग होते हैं। इन समूहों एवं वर्गों में प्राकृतिक संसाधनों तक पहुंच अर्थव्यवस्था, राजनीति एवं अनुकूल स्थिति पर आधारित होती हैं। इसके कारण कभी कभी टकराव की स्थिति पैदा हो जाती है। भूमि के किसी ऐसे भाग पर जो आरक्षित क्षेत्र है या स्थानीय जन जाति के लोगों का निवास स्थान है एक पर्यटक होटल बनाने की योजना भी ऐसी ही समस्या पैदा कर देगी। भारत में जल एवं विद्युत प्रदान करने, बाढ़ से बचाव करने और सिंचाई की सुविधाएं उपलब्ध कराने और नदियों पर बड़े बांधों के निर्माण का सरकार का निर्णय लोगों के बड़े समूहों और वन्य जीवों के विस्थापन का कारण बना और सरकार को आवश्यक रूप से उन लोगों के विरोध का सामना करना पड़ा जो इससे पूर्व उस स्थान पर बसे हुए थे। (इस पक्ष को उप भाग 22.4.3 में लिया जाएगा)। यहां भी यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है कि 'पर्यावरण किसका' है।

इसलिए यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि मानव के पर्यावरण के साथ सम्बन्ध, विभिन्न राष्ट्रों के मध्य संसाधनों के मामले में तुलनात्मक प्रतिस्पर्धा और पर्यावरण पर उसके परिणाम और विभिन्न सामाजिक वर्गों और स्तरों में प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता तथा उपयोग के सम्बन्ध में टकराव का प्रश्न दिनों दिन अधिक राजनीतिक होता जा रहा है। ये एक विशेष प्रकार की राजनीति (या राजनीतिक निर्णय) है जो टकराव की स्थिति पैदा कर सकती है जिसे केवल राजनीतिक तौर पर ही सुलझाया जा सकता है अर्थात राजनीतिक दबावों तथा हस्तक्षेपों द्वारा ही जिनका समाधान खोजा जा सकता है। अन्ततः पर्यावरण पर विवाद सबसे बढ़कर संसाधनों की साझेदारी और वितरण का विवाद है। इस संदर्भ में पर्यावरण का प्रश्न एक राजनीतिक प्रश्न है।

22.3 पर्यावरण की राजनीति : विश्व के संदर्भ में

किसी भी प्रकार की पर्यावरण सम्बन्धी राजनीति 1960 के दशक के इस अनुभव पर आधारित है कि मनुष्य का भौतिक एवं जैविक पर्यावरण तीव्र परिवर्तनों से गुजर रहा है। ये परिवर्तन यदि अनियन्त्रित रहे तो उनमें मानव को घोर कष्ट पहुंचाने और उन्हें नष्ट करने की क्षमता मौजूद है। इस परिप्रेक्ष्य में दो प्रकार के विकास निर्णायक हैं :

1) सम्पूर्ण विश्व विशेष रूप से विकसित देशों में त्वरित प्रौद्योगिक विकास विशेषकर पर्यावरणीय सुरक्षा के उपायों का विकास।

2) विशेष रूप से विकासशील देशों में जनसंख्या में अभूतपूर्व वृद्धि

यह समझा गया है कि उपरोक्त दोनों प्रवृत्तियां इतनी परस्पर सम्बन्धित हैं कि उन्होंने पृथ्वी के संसाधनों की समाप्ति में पूरा योगदान दिया है। यह अनुमान लगाया जा रहा है कि यह संसाधनों की समाप्ति इतनी तीव्र है कि प्रकृति के चक्र में उनके नवीनीकरण का अवसर ही नहीं मिलता और अभाव की स्थिति पैदा हो जाती है। इनमें से कुछ संसाधन असीम है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक सम्पदा के औद्योगिक रूप से उपयोग की प्रक्रिया संभवत: पर्यावरणीय संकट की ओर ले जा सकती है। इसी सोच ने वास्तव में विश्व के पर्यावरणीय आन्दोलन को शक्ति दी है। पर्यावरण की राजनीति इसी से पुष्टि पाती है।

22.3.1 पर्यावरण आन्दोलन के चरण

सार्वभौमिक शब्दों में पर्यावरणीय चिन्ता और राजनीति के दो चरण हैं। इस दिशा में विकसित देशों विशेषकर संयुक्त राज्य अमरीका ने पहल की है। प्रथम चरण जो 1970 के दशक में प्रारंभ हुआ वह प्राकृतिक रूप से अधिक सीमित था। केवल स्थानीय महत्व के पर्यावरणीय मुद्दों को उनके प्रभावों पर ध्यान दिए बिना उजागर किया गया था। अपने प्रथम व्यवस्थित चरण में पर्यावरणीय राजनीति कोई प्रभाव डालने में सफल नहीं हुई और केवल एक विचारधारा अस्थाई कह कर नकार दी गई।

पर्यावरण के लिए समन्वित चिन्ता का द्वितीय-चरण कहीं अधिक सफल रहा और उसमें स्थानीय मुद्दों को सार्वभौम संदर्भ में संगठित किया गया। पर्यावरणीय मुद्दों की सर्वव्यापकता पर बल दिया गया। नवम्बर 1988 में 30 पर्यावरणीय समूहों के नेता अमरीका के राष्ट्रपति से मिले और पर्यावरणीय मुद्दों से सम्बन्धित 700 से अधिक ऐसी सिफारिशों को उनके विचाराधीन प्रस्तुत किया, जैसे–

- भूमंडलीय तापन (global warming)
- ग्रह की ओजोन परत का नाश
- उष्ण कटिबन्धीय वर्षा प्रचुर वनों का विनाश
- अम्लीय वर्षा, और
- महासागरी धरातल एवं वायुमण्डलीय प्रदूषण

पर्यावरणीय जागरूकता के प्रथम चरण के विपरीत दूसरे चरण में पर्यावरणीय अपकर्ष की अधिक सार्वभौम धारणाओं को दर्शाया गया। अब इस बात पर बल दिया जाने लगा कि पारिस्थितिकीय बुराइयों के स्थानीय कारण हो सकते हैं किन्तु वह प्रभावों की ऐसी जटिल शृंखला उत्पन्न करते हैं जो विभिन्न पारिस्थितिकीय तन्त्रों और प्राकृतिक क्रमों को संयोजित कर देते हैं जैसे गैसें जो ब्राजील के वर्षा प्रचुर वनों में लगी आग के कारण धुंए के बादलों से पैदा होती हैं। यह एन्टार्कटिक क्षेत्र तक पहुंच कर क्षोभमण्डलीय ओजोन परत को समाप्त कर सकती है। संक्षेप में 1970 के दशक और 1980 के दशक के मध्य पर्यावरण संबन्धी चिंता अन्तर यह था कि पहले में स्थानीय चिन्ता की ओर झुकाव अधिक था जबकि दूसरे में वह अपने परिप्रेक्ष्य में अधिक व्यापक था और सर्वप्रथम पर्यावरणीय चिन्ता को विश्व एजेण्डा में सम्मिलित किया गया।

जैसे कि पहले बताया गया कि पर्यावरणीय राजनीति का प्रतिबिम्ब सामंजस्य और अन्तर के मेल को

प्रदर्शित करता है। पर्यावरणीय चिन्ता पर विश्व बहस में ये दोनों आयाम शामिल हैं।

22.3.2 पर्यावरण बहस

उपरोक्त प्रश्नों के विषय पर चिन्ताओं के बारे में आम सहमति तो होगी किन्तु उनके अतिरिक्त और भी कई ऐसे पक्ष हैं जो पर्यावरण के मुद्दे पर अत्यन्त भिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत करेंगे। व्यापक रूप से कह सकते हैं कि विश्व स्तर पर तीन विभिन्न स्थितियों को उनकी चिन्ता सहित पहचाना जा सकता है।

1) यह स्थिति तीसरी दुनिया अर्थात विकासशील देशों में पैदा हुई है। यह भी कहा जा सकता है कि ये कुछ ऐसे देशों का उल्लेख करता है जिन्होने पश्चिम की पर्यावरणीय पहल को समझा है करता है। सामान्य पर्यावरण की चिंता को विकसित देशों का षडयंत्र माना गया है क्योंकि ये देश पर्यावरण का हौवा खड़ा करके तीसरी दुनिया के देशों को अपनी अर्थव्यवस्था विकसित करने से रोकते हैं। संक्षेप में तर्क इस प्रकार हैं :

पश्चिमी देशों ने अपनी अर्थव्यवस्था तीव्रगामी औद्योगीकरण के द्वारा विकसित की है। उन्होंने बड़े पैमाने पर पर्यावरण में हस्तक्षेप करके और विकसित प्रौद्योगिकी की सहायता से पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों को प्रयोग करके ऐसा किया है। अपनी जनसंख्या के लिए सामान्य सम्पन्नता प्राप्त करने के पश्चात अब उनकी प्राथमिकता एक स्वच्छ पर्यावरण उत्पन्न करने की है जिससे वे आनन्दित हो सकें। अत: पर्यावरण का प्रश्न तभी उठेगा जब विकासशील देश भी उत्पादन और उपभोग का समान स्तर प्राप्त कर लेंगे।

2) दूसरी स्थिति प्रथम स्थिति के बिल्कुल निकट है क्योंकि उसकी जड़ें भी विकासशील देशों में ही है। इसमें पर्यावरण की सारी बातों को धनी लोगों के सुख का साधन कहकर समाप्त कर देने की प्रवृत्ति पाई जाती है चाहे वे जहां भी हो। इस स्थिति के अनुसार बाघ को सुरक्षित रखना और प्रकृति के सौन्दर्य को बनाए रखना धनवानों और ऐसे समाजों का परमाधिकार है जिनके लिए पर्यावरण में पर्यटन रुचि के अतिरिक्त कुछ नहीं है। पर्यावरण में व्यस्तता गरीबों की समस्याओं से ध्यान हटा देती है। जहां तक गरीबों के लिए अच्छा कार्य किए जाने की बात है यह उनकी समस्या केवल नौकरियां उत्पन्न करके ही हल की जा सकती है। पर्यावरणीय चिन्ता को समाजों के विरूद्ध नहीं आना चाहिए जो अपनी भूख और रोजगार की आधारभूत समस्या सुलझाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

इस चिन्ता को व्यक्त करने वाली आवाज स्टाकहोम में 1972 में सम्पन्न हुई मानव पर्यावरण पर कान्फ्रेंस में गूंजी। विकासशील देशों से कई प्रतिनिधिमण्डलों ने तर्क दिया कि पर्यावरण समस्या का हल आर्थिक विकास में निहित है। ब्राजील के प्रतिनिधिमण्डल में धुएं को विकास का चिह्न बताया न कि पर्यावरणीय अपकर्ष का। भारतीय प्रधानमंत्री ने एलान किया कि "गरीबी सबसे बड़ा प्रदूषण है।" तीसरी दुनिया के देशों ने सामान्य प्रभाव यह डाला कि पश्चिम गरीब देशों की कीमत पर पर्यावरण चिन्ता को विश्व के अन्य देशों के लिए अस्वीकार्य होने की सीमा तक फैला रहा है।



चित्र : मेधा पाटकर : एन०बी०ए० की महत्वपूर्ण कार्यकर्ता

3) तीसरी स्थिति मुख्य रूप से विकसित देशों में पनपी है और बुनियादी तौर पर गरीब देशों को पर्यावरण के अपकर्ष के लिए उत्तरदायी मानते हुए प्रथम एवं द्वितीय स्थितियों को उलट कर रख देती है। ये पक्ष सदैव जनसंख्या को पर्यावरणीय संकट के लिए बढ़ती उत्तरदायी मानता है। इस स्थिति के अनुसार गरीब देशों की निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या अपर्याप्त प्राकृतिक संसाधनों पर गहरा दबाव डालती है। औद्योगिक रूप से उन्नत पश्चिम ने पर्यावरणीय समस्याओं, विशेषकर वायु एवं जल प्रदूषण की समस्या को उन्नत प्रदूषण नियन्त्रण प्रौद्योगिकी के उपयोग से कम करने का उपाय किया है। किन्तु ये समस्याएं एशिया, अफ्रीका, लेटिन अमरीका के तीसरी दुनिया के देशों में बढ़ती जा रही हैं। विकसित देशों ने अपने लोगों को स्वच्छ वातावरण देने में सफलता प्राप्त कर ली है। संयुक्त राष्ट्र की 1982 की एक बैठक में ब्रिटिश सरकार के पर्यावरण मन्त्री ने यह सूचित किया कि पश्चिम में समस्त पर्यावरण समस्याएं सुलझा ली गई हैं और वे अब केवल तीसरी दुनिया में शेष रह गई हैं।

22.3.3 व्याख्या

सम्पूर्ण रूप से इन में से किसी एक परिप्रेक्ष्य से अनिवार्य रूप से सहमत या असहमत हुए बिना आइए हम विवेचनात्मक तौर पर उनका विश्लेषण करें। यह बताना अनावश्यक है कि ये चरम स्थितियां हैं अत: उन में से किसी को पर्यावरण सम्बन्धी सम्पूर्ण सत्य प्रदर्शित करने का श्रेय नहीं दिया जा सकता। फिर भी सारी स्थितियों में कुछ न कुछ अच्छाई है।

उदाहरणार्थ प्रथम स्थिति में किसी सीमा तक सच्चाई है क्योंकि वह वहां की कई समस्याओं के लिए पश्चिम के उत्तरदायी ठहराती है। यह एक सत्य है और इसका सबको ज्ञान है कि साम्राज्यवाद के दिनों में उपनिवेशों के प्राकृतिक संसाधनों को लूट कर पश्चिम को विकसित करने के लिए उनको उपयोग में लाया गया और ये प्रक्रिया अब भी जारी है। तीसरी दुनिया की प्रमुख पर्यावरणीय समस्या वहां के प्राकृतिक संसाधन आधार जैसे मृदा, वन और जल संसाधन दुरूपयोग से सम्बन्धित हैं। ये समस्याएं उद्योग के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराने के दबाव के कारण उत्पन्न होती है। ये कच्चे माल अक्सर पश्चिम के उद्योगों द्वारा काम में लाया जाता है। उदाहरणार्थ जापानी एवं यूरोपीय काष्ठ उद्योग मुख्य रूप से दक्षिण पूर्व एशिया के वनों के सर्वनाश के उत्तरदायी हैं, लेटिन अमरीका की अमेजन नदी की घाटी के घने वन भी जापान की काष्ठ कम्पनियों के हाथों विनाश के कगार पर खड़ी हैं।

इसी प्रकार पश्चिम की खाद्य पदार्थों की आवश्यकताएं और उपभोग के ढ़ांचे भी तीसरी दुनियों के देशों के संसाधनों की हानि का कारण बने। उदाहरण के रूप में मध्य अमरीकी देशों में उत्पादित 85% से 95% गौमांस मुहर बन्द डिब्बों में भरने एवं हेमबर्गर बनाने के लिए संयुक्त राज्य अमरीका को निर्यात कर दिया जाता है। ये बताना अनावश्यक है कि मध्य अमरीका में इसके परिणामस्वरूप गौमांस का घरेलू उपभोग नाटकीय ढंग से घट गया। महत्वपूर्ण बात यह है कि मध्य अमरीका के एक चौथाई से अधिक वन 1960 से अब तक पशु फार्म के लिए नष्ट किए जा चुके हैं। ये पशु फार्म न केवल वनों के लिए ही अनर्थकारी सिद्ध हुए अपितु मिट्टी के लिए भी संकट का कारण बने। पशु फार्मिंग के कारण पांच से सात वर्षों में मिट्टी की उत्पादकता बहुत कम हो गई है।

यदि एक और उदाहरण लिया जाए तो वह पश्चिमी अफ्रीका के साहेल क्षेत्र का होगा जहां एक प्रमुख सूखे के कारण 1969 से 1974 के मध्य लगभग 10,000 लोगों की जाने गईं। ये सूखा फ्रान्सीसी नीति के कारण पड़ा जिसके द्वारा इस क्षेत्र में वनस्पति तेल की प्राप्ति के लिए मूंगफली की पैदावार की गई थी। पश्चिमी कृषकों को उन खेतों में जहां खाद्यान्न पैदा होते थे मूंगफली पैदा करने के लिए बाध्य किया गया। मूंगफली की पैदावार ने धीरे धीरे मिट्टी को खराब कर दिया। यही स्थिति पारम्परिक परती भूमि और वन्य भूमि की भी हुई जो मूंगफली की पैदावार के लिए उपयुक्त नहीं थी। इसके कारण कृषि भूमि और चरागाहों के मध्य संतुलन बिगड़ गया। मूंगफली की पैदावार के लिए भूमि विस्तार से खानाबदोश जनजातियों को उनके खेतों से मरुस्थलों में ढकेल दिया गया। इस प्रकार आहार उपलब्ध कराने वाली एवं पशुओं के लिए चारा पैदा करने वाली भूमि नाटकीय रूप से घटती चली गई और साहेल की जनजातियां सूखे के लिए तैयारी किए बिना अपने आदमियों और पशुओं से हाथ धो बैठीं।

पश्चिमी देशों द्वारा नाभिकीय अपशिष्ट के निपटान के लिए पूर्व उपनिवेशों का उपयोग अग्रणी देशों द्वारा तीसरी दुनिया में पर्यावरण अपकर्ष का एक और उदाहरण है। विकसित देशों से नाभिकीय अपशिष्ट लाकर तीसरी दुनिया में ढेर कर दिया गया जो उनके हानिकर प्रभावों से बिल्कुल अनभिज्ञ थे।

फिर भी यह सत्य है कि 20वीं शताब्दी में विश्व की जनसंख्या में असाधारण वृद्धि हुई जिसका कारण विश्व के कुछ भागों में हुआ जनसंख्या विस्फोट था। जनसंख्या की यह वृद्धि भी पर्यावरण में घातक मानवीय हस्तक्षेप के लिए सक्षम है। मानव बल में वृद्धि हमारे पर्यावरण पर ऐसा दबाव डालती है जिसे वह सहन नहीं कर पाता। इसके अतिरिक्त विकसित आधुनिक प्रौद्योगिकी जो शायद हमारे प्राकृतिक संसाधनों के अभाव के लिए उत्तरदायी है उसे पर्यावरण के दुरुपयोग को कम करने और अपने प्राकृतिक संसाधनों के कुशलतापूर्वक उपयोग के लिए काम में ला सकते हैं। पश्चिम बेहतर प्रौद्योगिकी और संसाधनों की पहुंच के कारण इस दिशा में नेतृत्व प्रदान कर सकता है। पर्यावरण के लिए खतरा

मानवजाति के लिए भी खतरा है। सम्पूर्ण विश्व ही विनाश की चपेट में हैं न कि उसके कुछ भाग। अतः एक सीमा के आगे ये विकसित देशों और विकासशील देशों के मध्य संघर्ष नहीं रह जाता बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति की समस्या बन जाता है। इस संदर्भ में पर्यावरणीय राजनीति वास्तव में विश्व राजनीति है जिसे विश्व के परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए।

बोध प्रश्न 1

1) उन मुद्दों पर पांच पंक्तियां लिखिए जिन पर राष्ट्रीय पर्यावरणीय समूहों के प्रतिनिधियों ने अमरीकी राष्ट्रपति के साथ उठाया।

.....

.....

.....

.....

2) पर्यावरण के प्रश्न पर कौन-कौन से विभिन्न दृष्टिकोण है।

.....

.....

.....

.....

.....

22.4 पर्यावरण की राजनीति : भारतीय संदर्भ

सार्वभौम संदर्भ के समान ही भारतीय संदर्भ में पर्यावरणीय राजनीति का सुस्पष्ट रूप से ध्रुवीकरण हुआ है। यहां इस ने पर्यावरण और विकास के मध्य एक विवाद का रूप धारण कर लिया है। आइए दोनों दृष्टिकोणों के अपने अपने तर्क वितर्क पर दृष्टि डालें।

22.4.1 पर्यावरण बनाम विकास

पर्यावरणीय चेतना के प्रारंभ ने विकासात्मक परिप्रेक्ष्य और पर्यावरणीय परिप्रेक्ष्य के मध्य विवाद को जन्म दिया। विकासात्मक परिप्रेक्ष्य कुछ सरकारी शाखाओं द्वारा, उद्योगों द्वारा, विकास के सम्बन्ध में वैचारिक कार्यकलाप और उनके लाभभोगियों द्वारा प्राप्त प्रतिनिधित्व और आर्थिक विकास के आधिपत्य के लिए मूलरूप से तर्क प्रस्तुत करता है और पर्यावरण अपकर्ष को विकास और सम्पन्नता की उचित कीमत के रूप में देखता है। दूसरी ओर पर्यावरण विज्ञानी इस प्रकार के विकास पर प्रश्न उठाते हैं और पर्यावरणीय सुरक्षा को अटल और अनिवार्य समझते हैं। पर्यावरण के लिए सक्रिय रूप से जुड़े पर्यावरणविद् जैसे बाबा आम्टे, मेधा पाटेकर, सुन्दर लाल बहुगुणा और बहुत से स्वयंसेवी ग्रुप और एजेन्सियां युद्ध छेड़े हुए हैं। ये संस्थाए कई प्रकार की गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हैं जिनमें वनों को कटाव से बचाना, वनरोपण, बड़े बांधों के निर्माण को रोकना, जल प्रदूषण से बचाव आदि इसमें सम्मिलित हैं। इनमें से कुछ संस्थाएं निम्नलिखित हैं :

- केरल सस्त्र साहित्य परिषद केरल की चलियार नदी को जल प्रदूषण से बचाने में सक्रिय रूप से जुड़ी हुई है। यह प्रदूषण अन्य कारणों के अतिरिक्त रेयन मिल के कारण होता है।

- मध्य प्रदेश का शहडौल ग्रुप एक कागज मिल के कारण शहडौल जनपद की नदी को प्रदूषण से बचाने के लिए लड़ रहा है।
- मिट्टी बचाव अभियान दोषपूर्ण सिंचाई तन्त्र के कारण होने वाली जलाक्रान्ति के कारण कृषकों को संगठित करने में सक्रिय है।
- विज्ञान और पर्यावरण केन्द्र पर्यावरण सम्बन्धी मुद्दों के प्रलेखन में सक्रिय है।

सबसे गम्भीर संघर्ष गत कुछ वर्षों से बड़े बांधों के निर्माण के सम्बन्ध में दो दृष्टिकोणों के मानने वालों के मध्य हो रहा है। यह संघर्ष पर्यावरणविदों और विकासवादियों के मध्य वास्तविक झगड़े की जड़ है। बांध के समर्थक पंजाब में भाखड़ा नांगल बांध के निर्माण के फलस्वरूप होने वाली हरित क्रान्ति का उदाहरण देते हैं। विरोधी हरित क्रान्ति के कारण परिवर्तनशील कृषि ढांचे को चारा के संसाधनों में आई कमी का कारण मानते हैं और हरित क्रान्ति के लिए कृषि-रसायनों, उर्वरकों और कीटनाशकों के अविवेकपूर्ण प्रयोग से वहां के मनुष्यों पर होने वाले दुष्प्रभावों के लिए इनको ही उत्तरदायी ठहराते हैं। इससे पूर्व कि हम बांध पर कुछ अधिक विस्तार से विचार विमर्श करें आइए हम भारत के कुछ महत्वपूर्ण पारिस्थितिकीय आन्दोलनों पर विचार करें।

22.4.2 चिपको और अपिक्को आन्दोलन

हिन्दी और कन्नड़ के इन दो शब्दों का समान अर्थ है "लिपट जाना"। ये आन्दोलन हिंसा का प्रयोग किए बिना पेड़ों से लिपट कर वनों की कटाई रोकने की लोकप्रिय पहल को प्रदर्शित करता है। इस आन्दोलन की प्रारंभिक जड़ें भारत के मध्यकाल में मिलती हैं। आज के राजस्थान से विश्नोई सम्प्रदाय उस समय अपने वृक्षों से लिपट जाते थे जब स्थानीय शासक के कारिन्दे अपने उद्देश्यों के लिए वृक्ष काटने आया करते थे। आधुनिक भारत में उत्तर प्रदेश के चमौली जनपद की गोपेश्वर नामक पहाड़ी नगर में नगर वासियों ने यही पेड़ों से लिपट जाने की विधि अपनाई और इस प्रकार विश्व का सबसे अधिक जाना पहचाना प्रथम पारिस्थितिक आन्दोलन प्रारंभ हुआ।

चिपको आन्दोलन 1973 में उस समय प्रारंभ हुआ जब इलाहाबाद की खेलों का सामान बनाने वाली एक कम्पनी के प्रतिनिधि दस पेड़ काटने गोपेश्वर पहुंचे। उस क्षेत्र के निवासियों ने उन्हें पेड़ काटने से रोका किन्तु वे दृढ़ रहे। तब लोगों को अपने पेड़ों से लिपट जाने का विचित्र उपाय सूझा ताकि इस प्रकार वह पेड़ काटने से बचा सकें। आने वाले दिनों में आसपास के क्षेत्रों के लोगों में यह एक सामान्य आदत बन गई और जब कोई ठेकेदार या उद्योग के लोग कटाई करने आए तो उन्होंने यह करना शुरू कर दिया। 1974 में गौरा देवी के नेतृत्व में महिलाएं भी बड़े पैमाने पर इस आन्दोलन से जुड़ गईं: मजे की बात यह है कि राज्य सरकार ने इस आन्दोलन के गुणों की जानकारी के लिए एक समिति नियुक्त की जिसने रिपोर्ट दी कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी वृक्षों का विनाश रोकना न्याय संगत है। समिति ने यह निष्कर्ष निकाला कि सुदूर हिमालय में वाटरशैडों के स्थित होने की संवेदनशील परिस्थिति के कारण हर प्रकार से पेड़ों के काटे जाने को निषिद्ध कर देना चाहिए ताकि वृक्षों का पुनर्जनन हो सके। गोपेश्वर से चण्डीप्रसाद भट्ट और टिहरी से सुन्दर लाल बहुगुणा ने आन्दोलन का नेतृत्व किया जो आज भी पूरी शक्ति से चमौली जनपद में चल रहा है।

अपिक्को आन्दोलन कर्नाटक के सिरसी जनपद के सलकानी वनों में 1983 में प्रारंभ हुआ और चिपकों की रूपरेखा के अनुसार ही चलता रहा। गांव के 160 पुरुष, स्त्रियां और बालक अपने वृक्षों से लिपट गए और वृक्षों को काटे जाने से बचा लिया। उन्होंने युवक मण्डली नामक एक संस्था की स्थापना की जिसने दो प्रमुख मुद्दों पर शिकायतों की ओर ध्यान आकृष्ट किया:

- ठेकेदारों द्वारा व्यापारिक कटाई अनेकों वृक्षों को नष्ट करती है, और
- सागौन और गन्धसफेदा की एक-धान्य कृषि द्वारा प्राकृतिक वनों का प्रतिस्थापन।

शीघ्र ही आन्दोलन दूसरे क्षेत्रों में भी फैल गया जहां अपिक्को कार्यकर्ता माचिस बनाने वाले ठेकेदारों और निर्माताओं से सफलतापूर्वक निपट रहे थे। पाण्डूराव हेगड़े अपिक्को आन्दोलन के एक महत्वपूर्ण नेता थे। कुछ मामलों में युवक मण्डली द्वारा ये संकेत दिया गया कि एक वृक्ष की कटाई में कम से कम दस वृक्षों को हानि पहुंचती है। भारतीय विज्ञान संस्थान बंगलौर द्वारा की गई खोज ने अपिक्को कार्यकर्ताओं के निर्णय को उचित ठहराया। उनकी रिपोर्ट में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया कि पेड़ों की अधिक कटाई और बहुत से पेड़ों का इस प्रक्रिया में विनाश पारिस्थितिकीय तबाही का कारण बन सकता है।

22.4.3 बांध बनाना या बांध न बनाना

स्वतन्त्र भारत की आर्थिक विकास की योजनाओं में बांधों के निर्माण को प्रमुख स्थान प्राप्त था। कुल 1554 बड़े बांधों का या तो निर्माण हो चुका है या निर्माण कार्य चल रहा है। इस कार्य पर कुल अनुमानित 10,556 करोड़ रुपये के व्यय होने की संभावना है जो कि भारत के नियोजित व्यय का 14% है। जैसा कि इससे पूर्व बताया जा चुका है बांधों की व्यवहार्यता विकास के समर्थकों और पर्यावरणविद् के मध्य बुरी तरह ध्रुवित हुई है। वास्तव में बांध के निर्माण के विषय में विविध विचार पर्यावरण के प्रश्न पर परस्पर को व्यक्त करते हैं। बांध के प्रस्तावक केवल सिंचाई, जल विद्युत शक्ति उत्पादन और बाढ़ नियन्त्रण के क्षेत्र में ही इसकी उपलब्धि नहीं मानते बल्कि दूरस्थ क्षेत्रों में जल पहुंचाने के कार्य को भी इसी की उपलब्धि मानते हैं। 1954 से 1979 के मध्य 25 वर्षों भारत की जलविद्युत उत्पादन क्षमता 12 गुना बढ़ गई और सिंचाई क्षमता में 9.7 मिलियन हेक्टेयर से 26.6 मिलियन हेक्टेयर की वृद्धि हुई। यही कारक भारत में अधिकतर खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता का कारण बना। इसके विपरीत पर्यावरणविद् दीर्घकालिक गंभीर पारिस्थितिकीय और अन्य विपत्तियों की ओर इशारा करते हैं जो इन बड़ी योजनाओं से जुड़ी हैं। पर्यावरणविदों द्वारा किए गए कुछ प्रतिबन्ध निम्नलिखित हैं :

- कुछ बांधों के अनुमानित लाभों को बढ़ा चढ़ाकर प्रस्तुत किया गया है,
- इन लाभों के वितरण को अत्यन्त असंतुलित पाया गया है। मुख्य रूप से बाहरी लोगों का हित उन लोगों की कीमत पर हुआ जो इन परियोजनाओं से बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि विस्थापित लोग शायद ही कभी लाभान्वित होते हैं।
- केवल कुछ ही बांधों (1554 में से 17) को बाढ़ नियन्त्रण के लिए तैयार किया गया था। कभी कभी बांधों के कारण भी बाढ़ की स्थिति पैदा हुई है क्योंकि उसके अतिरिक्त जल को छोड़ना पड़ता है। 1978 में पंजाब के बांध के जलाशय द्वारा अप्रत्याशित वर्षा के अधिक जल को सोख न सकने के कारण बाढ़ आ गई और परिणामस्वरूप 65000 लोग बेघर हो गए।
- बड़े बांध से अधिक तीव्र गति से गाद भरने और मिट्टी के खराब होने का भय भी सम्मिलित है।
- वह अपरिहार्य रूप से आवासों के लिए विनाश का कारण होते हैं और ऐसे क्षेत्रों के जलमग्न हो जाने का कारण भी बनते हैं जिनमें वन्य प्राणी, पौधे और वन पाए जाते हैं। अत: फलस्वरूप बहुमूल्य जैव विविधता और जीन संचय का नाश होता है।
- विशाल जलाशयों के निर्माण के कारण भी भूकम्प आ सकते हैं।
- छोटी नदियां और छोटी एवं जीव विहीन हो जाती हैं अत: वह प्रदूषण भार को सहन नहीं कर पातीं।
- विस्थापित लोग के अपर्याप्त मुआवजा दिए जाने का के कारण कंगाल हो जाते हैं। आदिवासी कृषक और पहाड़ी लोग बांध परियोजनाओं का प्रमुख रूप से निशाना बने हैं। इनका लाभ नगरी जनसंख्या को पहुंचा है।

उनके तर्क का सार यह है कि प्रभावशाली लोगों के लिए पर्यावरणीय एवं मानवीय कीमत ही इसका लाभ

है। बांध का ढ़ांचा सिविल इंजीनियर के दृष्टिकोण से तैयार किया जाता है जिसमें वहां के पारिस्थितिकीय तंत्र पर प्रभाव पर कोई विचार नहीं किया जाता। दीर्घकालिक परिणामों पर आमतौर से ध्यान नहीं दिया जाता। इसके अतिरिक्त बांध का निर्माण विकास की कुछ धारणाओं पर टिका हुआ है जो कि ग्रामीण जनसंख्या के एक बड़े भाग और आदिवासी जनसंख्या की उपेक्षा करती है और केवल शहरी जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा करती है।

बांध निर्माण के विषय में संघर्ष और विरोध का इतिहास 1960 के दशक से प्रारंभ होता है। दामोदर घाटी निगम द्वारा नौ बांधों की शृंखला के निर्माण की परियोजना का विरोध पर्यावरण के आधार पर पश्चिमी बंगाल के सिविल इंजीनियर कपिल भट्टाचार्य ने किया। नर्मदा नदी के सरदार सरोवर बांध का विरोध प्रभावित लोगों ने प्रसिद्ध पर्यावरणविद् मेधा पाटेकर के नेतृत्व में इतना अधिक किया कि उसने एक लम्बे संघर्ष का रूप धारण कर लिया। नर्मदा बचाव आन्दोलन अब भी नर्मदा घाटी में अत्यन्त सक्रिय है। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश की टिहरी पहाड़ियों में बांध बनाने के प्रस्ताव का स्थानीय लोगों ने सुन्दर लाल बहुगुणा के नेतृत्व में डटकर विरोध किया जो अब भी सक्रिय है।

इस प्रश्न को महत्व की दृष्टि से देखा जाए तो पता लगता है कि इनमें से अधिकांश पर्यावरणविदों का आश्य इन परियोजनाओं पर प्रतिबन्ध लगवाना नहीं है। उनमें से कुछ ने सिंचाई और शक्ति की विकासीय आवश्यकताओं की पूर्ति के महत्व को स्वीकार किया है। किन्तु इस विरोध के पीछे ये विचार कार्यरत हैं कि बांध निर्माण की योजना बनाते समय पर्यावरण के प्रति चिन्ता को ध्यान में रखा जाए और ऐसे मार्ग प्रशस्त किया जाएं कि विकास को प्रोत्साहन मिले और जहां तक संभव हो विनाश या पर्यावरण अपकर्ष न हो।

22.5 पर्यावरण की राजनीति एवं पर्यटन

पर्यावरण पर बहस पर्यटन के तथ्य के लिए गंभीर प्रभाव पैदा करती रही है। यदि सारी सम्बद्ध समस्याओं को ध्यान में रखे बिना पर्यटन की योजना बनाई जाए तो पर्यटन पर्यावरण अपकर्ष और प्राकृतिक संसाधनों की क्षीणता का साधन बन सकता है। आपने इन में से कुछ के विषय में इस खण्ड की इकाई 19 में पढ़ा। पर्यावरण के विभिन्न घटकों पर पर्यटन के प्रभाव के सम्बन्ध में इस पाठ्यक्रम के खंण्ड 8 और 9 में अत्यधिक विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। किन्तु पर्यावरण का विनाश पर्यटन के प्रत्येक जोखिम में निहित नहीं है। ये केवल एक अनुमान मात्र है। दूसरी ओर पर्यटन पर्यावरण की सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण साधन हो सकता है। आप इस सम्बन्ध में भी खण्ड 5 की 14वीं इकाई में अध्ययन कर चुके हैं। अतः पर्यटन एक ऐसा क्षेत्र हो सकता है जहां विकास और पर्यावरण से सम्बन्धित परस्पर विरोधी परिस्थितियों की रक्षा हो सके। पर्यटन निश्चित रूप से विकास का एक साधन है किन्तु इसे पर्यावरण की कीमत पर बढ़ना नहीं चाहिए जो न केवल पर्यावरण के लिए उत्पादनकारी होगा किन्तु स्वयं पर्यटन के लिए भी हानिकारक होगा। अपने वन्य प्राणियों, रेतीले समुद्र तटों, नदियों, पर्वतों और आर्द्रस्थलों सहित स्वच्छ एवं स्वस्थ पर्यावरण एक उन्नत पर्यटन के विकास की संभावनाएं प्रस्तुत करता है। प्राकृतिक संसाधनों में समृद्ध क्षेत्र पर्यटकों के लिए आदर्श गन्तव्य स्थानों और पर्यटन उद्योग के लिए स्पष्ट रूप से प्रेरक सिद्ध होगा। अतः पर्यावरण की सुरक्षा सुनिश्चित करना उद्योग के हित में होगा। पर्यटन के क्षेत्र में पर्यावरणविदों की चिन्ता प्रतिध्वनित होनी चाहिए। इसके लिए पर्यटन उद्योग के नीति निर्माताओं को चाहिए कि पर्यावरण जानकारी अर्जित करें और पारिस्थितिकीय तन्त्र की कार्यप्रणाली से परिचित हो जाएं। पर्यावरण नियमों और कानूनों का पर्यटन उद्योग द्वारा आदर किया जाना चाहिए। पर्यटन विकास के लिए बनाए गए इन नियमों को लचीला बनाने के लिए राजनीतिक दबावों या सम्बन्धों के उपयोग की आदत को न केवल हतोत्साहित करना होगा वरन् उसकी निन्दा भी करनी होगी। तब ही पर्यटन जगत् के लोग एक दूसरे को संतुष्ट करके एक दूसरे के समर्थक हो सकते हैं।

बोध प्रश्न 2

1) चिपको आन्दोलन पर पांच वाक्य लिखिए।

.....

.....

.....

.....

2) बड़े बांध बनाने के विरुद्ध पर्यावरणविदों के कौन-कौन से प्रमुख तर्क हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

22.6 सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा कि पर्यावरण की राजनीति का शुभारंभ सातवें दशक के अन्तिम वर्षों में प्रारंभ हुआ और बीसवी शताब्दी में आठवें और नवें दशकों में एक विश्व पर्यावरण आन्दोलन के रूप में अपने चरम बिन्दु पर पहुंच गया। प्रारंभ में यह आन्दोलन स्थानीय आवश्यकताओं के साथ शुरू हुआ और दूसरे चरण में विश्व परिप्रेक्ष्य तक पहुंच गया।

आप पर्यावरण और विकास से उसके सम्बंधों के प्रश्न के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों से भी परिचित हो चुके हैं। उसके बाद इकाई में विश्व संदर्भ से हटकर भारतीय संदर्भ के विषय को लिया गया और कुछ महत्वपूर्ण पारिस्थितिकीय आन्दोलनों जैसे चिपको और अपिक्कों आन्दोलनों पर विचार किया। इसमें पर्यावरणविदों और विकास के प्रस्तावकों के मध्य होने वाले वाद विवाद के सार पर भी प्रकाश डाला गया। अन्ततः इस इकाई में पर्यटन उद्योग के लिए बहस के महत्व को उजागर किया गया।

22.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए उप भाग 22.3.1।

2) देखिए उप-भाग 22.3.2 एवं 22.3.3 ।

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उप भाग 22.4.2 ।

2) देखिए उप-भाग 22.4.3।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

नागर विमानन एवं पर्यटन मन्त्रालय : **नेशनल एक्शन फॉर टूरिज्म**, मई 1992, भारत सरकार

लिण्डे के० रिचर : **द पॉलीटिक्स ऑफ टूरिज्म इन एशिया**, हवाई विश्वविद्यालय, होनालुलू-1989

रतनदीप सिंह : **टूरिज्म टुडे मार्केटिंग एण्ड प्रोफाइल**, कनिश्क, दिल्ली-1992 भाग 1और 2

वरनेस वुल्फ गेंग (संपादन): **ए सस्पेक्टस आफ इकॉलॉकिल प्रॉबलम एण्ड एन्वायरमेन्टल अवेएरनेस इन साउथ एशिया**, मनोहर, नई दिल्ली, 1993

इस खण्ड के लिए अभ्यास

नोट : स्टडी सर्किल में अपने परामर्शदाता से इन कार्यकलापों के विषय में विचार विमर्श कीजिए।

अभ्यास 1

अपने क्षेत्र की परिवहन ढांचागत सुविधा की एक सूची बनाइए।
क्या वह पर्यटन के विकास के लिए पर्याप्त है।

अभ्यास 2

अपने क्षेत्र में प्रचलित नियमों और कानूनों की सूची बनाइए और पर्यावरण के सुधार के लिए अपने कुछ उपाए प्रस्तुत कीजिए।

अभ्यास 3

पर्यावरण की राजनीति से सम्बद्ध कुछ बातें पिछले एक माह के अखबारों में से छांटिए। क्या उन्हें राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है ?

अभ्यास 4

अपने क्षेत्र के कुछ अपशिष्ट निपटान के उपायों की सूची बनाइए। क्या आप इसके सुधार के कुछ अपने उपाए प्रस्तुत कर सकते हैं।

खंड
7

दबाव और न्यूनतम सीमारेखाएं

इकाई 23

दबावों को पहचानना और न्यूनतम सीमारेखाओं को समझना 5

इकाई 24

मेजबान/स्थानीय जनसमुदाय 14

इकाई 25

पर्यटक का व्यवहार 25

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें 35

विशेषज्ञ समिति

श्री अजय माहुरकर
इतिहास संकाय
इग्नो

श्री अशोक चंदोला
टूरिज्म कंसलटेंट
नई दिल्ली

श्री आशिष कु. सिंह
मैनेजिंग डायरेक्टर
केरल टूरिज्म डेवलेपमेंट
कारपोरेशन
त्रिवेंद्रम

डॉ. गीता केकर
विज्ञान विद्यापीठ
इग्नो

डॉ. इकबाल मलिक
निदेशक, वातावरण
नई दिल्ली

श्री जहांगीर घड़ियाली
जनरल मैनेजर
वेलकम ग्रुप होट ल
औरंगाबाद

डॉ. जसवंत सोखी
विज्ञान संकाय
इग्नो

प्रो. कपिल कुमार
निदेशक
सेंटर फॉर एक्सटेंशन
एजुकेशन, इग्नो

श्री के.टी. सुरेश
कोआर्डिनेटर, इक्वेशन
बैंगलोर

सुश्री लतिका नाथ
वर्ल्ड लाइफ फाउंडेशन
देहरादून

डा. नीना राव
हेड डिपार्टमेंट ऑफ
टूरिज्म, कॉलेज ऑफ
वोकेशनल स्टडीज नई दिल्ली

श्री प्रदीप सांखला
मैनेजिंग डायरेक्टर
डायनेमिक्स टूर एंड
ट्रैवेल्स प्राइवेट लिमिटेड
नई दिल्ली

श्री पी. राज
डायरेक्टर
क्लाईट सरविसेज बीबीडीडी
वर्ल्ड वाइड नेटवर्क
मुम्बई

डॉ. रवीन्द्र कुमार (संयोजक)
इतिहास संकाय
इग्नो

कार्यक्रम संयोजक : प्रो. कपिल कुमार

पाठ्यक्रम दल:

डॉ रवीन्द्र कुमार
श्री अजय माहुरकर
डॉ. गीता केकर
डॉ. जसवंत सोखी
श्री सलिल मिश्र
प्रो. कपिल कुमार
} पाठ्यक्रम संयोजक

खंड निर्माण दल

इकाई संख्या	इकाई लेखक	संकाय सदस्य
23	सुश्री आर० राजशेखर सेंटर फार साईंस एंड इनवायरनमेंट नई दिल्ली	श्री रवीन्द्र कुमार
24	श्री असीम प्रकाश शोध छात्र ज. ने. वि. नई दिल्ली	श्री रवीन्द्र कुमार
25	श्री शशांक सिन्हा लेक्चरर, पी. जी. डी. ए. वी. कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली	प्रो. कपिल कुमार
खंड संयोजक डा. रवीन्द्र कुमार		

अनुवाद	अनुवाद परिष्कार	संकाय सदस्य
प्रो. मोहम्मद अमीर अध्यक्ष भूगोल विभाग इटावा महाविद्यालय इटावा	सुश्री सीमा कुमारी नई दिल्ली	डा. रवीन्द्र कुमार

सामग्री निर्माण

प्रो. कपिल कुमार
निदेशक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

नई, 1998

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 1998

ISBN-81-7605-343-0

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुन: प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

NMDC-210

BTS-05/290

खंड 7 दबाव और न्यूनतम सीमारेखाएँ

पर्यावरण से सम्पर्क स्थापित करते ही किसी न किसी सीमा तक ऐसे परिवर्तन प्रारंभ हो जाते हैं जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण को प्रभावित करते हैं। इन परिवर्तनों में से कुछ की तो क्षतिपूर्ति हो जाती है क्योंकि उनका प्रभाव अल्पकालिक होता है। इस प्रकार पर्यावरण कुछ समय बाद या तो क्षतिपूर्ति कर लेता है या फिर परिवर्तित हो जाता है। दूसरी ओर परस्पर क्रिया के दौरान कभी-कभी पर्यावरण पर ऐसा प्रभाव पड़ता है जिसकी क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती है। ऐसी परिस्थितियों में प्रभावित क्षेत्र इस हद तक क्षतिग्रस्त हो जाता है कि पर्यावरण का पुनरुद्धार संभव नहीं हो पाता। व्यापार से जुड़े होने के नाते हमारे लिए इसी प्रकार के परिवर्तन चिंता के केंद्र बिंदु हैं। ऐसी ही परिस्थितियों में क्षति को रोकने का प्रयास यदि टाला गया तो उसका परिणाम सम्पूर्ण मानवता के लिए घातक और विनाशकारी सिद्ध होगा। अत: हमारे लिए पर्यटन के उन दबावों को स्पष्ट रूप से समझना नितान्त आवश्यक है जो पर्यावरण को स्थाई रूप से प्रभावित करते हैं। इसके साथ साथ पर्यटन के हस्तक्षेप के फलस्वरूप पर्यावरण के उन प्रभावित क्षेत्रों के विषय में भी जानकारी प्राप्त करनी होगी जो विनाश के खतरे की न्यूनतम सीमारेखा पर पहुँच चुके हैं या पहुँचने वाले हैं। इस खंड में पर्यटन के फलस्वरूप पर्यावरण पर पड़ने वाले दबावों और खतरे की रेखा पास खड़े पर्यावरण क्षेत्रों का जिक्र किया गया है। इसमें तीन इकाइयाँ सम्मिलित हैं जैसे दबावों को पहचानना और न्यूनतम सीमारेखाओं को समझना, (इकाई 23) मेजबान/स्थानीय जनसमुदाय (इकाई 24) और पर्यटक का व्यवहार (इकाई 25)

इकाई 23 में पर्यावरण पर पड़ने वाले दबावों को पहचानने और उन सीमारेखाओं को समझने की कोशिश की गई है जिसे पार करने के बाद सुधार की गुंजाइश नहीं रहेगी। आप इस बात को समझेंगे कि प्राकृतिक क्षेत्र के पर्यटन के लिए अच्छा पर्यावरणीय योजना और प्रबंधन निर्णायक साबित होता है। अधिकांश प्राथमिक उत्पादन और गौण निर्माण के समान इस उद्योग में पर्यावरण का आघात बाहर से नहीं पड़ता है। प्राकृतिक क्षेत्र का पर्यटन संभवत: ऐसा उद्योग है जिसमें पर्यावरणीय संघात कम और आर्थिक लाभ टिकाऊ होता है। खराब ढंग से आयोजित एवं प्रबंधित पर्यटन की स्थिति हर प्रकार से इसके विपरीत होगी अर्थात अधिक पर्यावरणीय क्षति होगी जिसके कारण आर्थिक लाभ कम होगा। हमने इस इकाई में इसे और इससे जुड़े दबावों तथा न्यूनतम सीमा रेखाओं को परखने का प्रयास किया है।

मेज़बान/स्थानीय जनसमुदाय हमारी अगली इकाई (संख्या 24) है। इसमें हमने आदर्श परिभाषा से भी आगे बढ़कर मेज़बान के सामाजिक परिवेश और भौतिक परिवेश को सम्मिलित करके समझने का प्रयास किया है। यह एक जाना माना सत्य है कि पर्यटकों का स्थल पर आगमन स्थानीय लोगों के लिए न केवल आर्थिक अवसर प्रदान करता है बल्कि उनके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भौतिक परिवेश पर स्थाई प्रभाव छोड़ता है यहाँ तक कि कभी-कभी इस प्रक्रिया में वह भौतिक परिवेश को विकृत भी कर देता है। अत: मेज़बान/स्थानीय जनसमुदाय और जिस परिवेश में वह स्थित है बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। इस इकाई में इन्हीं संदर्भों में मेज़बान/स्थानीय जनसमुदाय पर विचार किया गया है।

इस खंड की अंतिम इकाई (संख्या 25) पर्यटक के व्यवहार के विषय में है। इसमें हमने अपने ध्यान को पर्यटक शब्द का अर्थ समझने पर केंद्रित किया है और पर्यटकों को गैरजिम्मेदाराना व्यवहार से पैदा होनेवाली उलझनों को अनुभव करने का प्रयास किया है। हमारे लिए पर्यटकों के पारिस्थितिकी के प्रति सद्भावपूर्ण व्यवहार की आवश्यकता को समझना भी जरूरी है। हमने यहाँ कुछ ऐसे उपायों पर विचार किया है जिनके द्वारा पर्यटक-पर्यावरण संतुलन को उचित रूप से बनाए रखा जा सकता है।

इकाई 23 दबावों को पहचानना और न्यूनतम सीमारेखाओं को समझना

इकाई की रूपरेखा

23.0 उद्देश्य

23.1 प्रस्तावना

23.2 पर्यावरण पर दबाव

- 23.2.1 वन्य जीवन
- 23.2.2 समुद्री तट और समुद्र
- 23.2.3 पर्वत

23.3 न्यूनतम पर्यावरणीय सीमारेखाएँ

- 23.3.1 प्रदूषण
- 23.3.2 जनसमुदाय
- 23.3.3 प्राकृतिक संसाधनों का दोहन

23.4 कुछ हल

23.5 सारांश

23.6 शब्दावली

23.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

23.0 उद्देश्य

पर्यटन को लाभकारी क्रिया के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। अधिकतर लोगों के लिए यह एक भूमि उपयोग का एक बेहतरीन और कारगर माध्यम है। इसके साथ-साथ यह एक प्रदूषण रहित, रोजगार पैदा करने वाली और विदेशी मुद्रा विनिमय कमाने वाली क्रियाकलाप है। वर्षों से इसी रूप में पर्यटन निरन्तर अग्रसर है। परंतु शोध कार्य करने वालों के अनुभव और परिणामों से पता चलता है कि यदि इसे अनियोजित रूप से विकसित किया गया तो ये क्रियाकलाप हमारी पारिस्थितिक व्यवस्था के लिए खतरनाक हो सकती है। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

- पर्यटन के कारण गन्तव्य स्थल के पर्यावरण पर पड़ने वाले दबावों को समझ लेंगे,
- पर्यटन के कारण उत्पन्न न्यूनतम सीमा रेखा के मुद्दों को भी समझ पाएँगे,
- इस समस्या की प्रकृति को पहचान सकेंगे, और
- आप ऐसे उपाय जान लेंगे जिन्हें पर्यटन को प्रोत्साहित-विकसित करते समय उपयोग में लाना चाहिए।

23.1 प्रस्तावना

आज पर्यटन एक प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय उद्योग है। इस उद्योग का एक क्षेत्र जो बहुत तीव्र गति से विकसित हो रहा है वह है प्राकृतिक क्षेत्रों में पर्यटन और मनोरंजन। नदी का किनारा, संरक्षण आरक्षित क्षेत्र, पर्वत, समुद्र तट और समुद्र की ओर ही पर्यटन स्तर और मनोरंजन का विकास हो रहा है जिनमें मनोरंजन मूल रूप से प्राकृतिक क्षेत्रों में होता है।

अच्छी पर्यावरणीय योजना और प्रबंधन विशेष रूप से प्राकृतिक क्षेत्र पर्यटन में इसलिए निर्णायक हैं क्योंकि पर्यावरणीय प्रभाव उद्योग के लिए बाहरी नहीं हैं उदाहरणार्थ जैसे वह अधिकांश प्राथमिक उत्पादन और गौण निर्माण उद्योग में हैं। यदि उचित ढंग से आयोजित और प्रबंधित किया जाए तो पर्यावरणीय क्षेत्र पर्यटन संभावनाओं की दृष्टि से एक ऐसा उद्योग है जिसमें पर्यावरणीय नुकसान कम से कम है और आर्थिक लाभ अपेक्षाकृत अधिक और टिकाऊ है। इसके विपरीत अनियोजित, अनियंत्रित और अविवेकपूर्ण प्राकृतिक पर्यटन पर्यावरण को नुकसान ज्यादा पहुँचाएगा और आर्थिक लाभ का अंश कम और अल्पकालिक होगा। इनके संबंध में और सम्बद्ध दबावों और न्यूनतम सीमारेखाओं के संबंध में आगे विचार किया जा रहा है।

23.2 पर्यावरण पर दबाव

पर्यटन, भारत में सबसे तीव्र विकसित होने वाले उद्योगों में से एक है और प्राकृतिक क्षेत्र पर्यटन उसका एक महत्वपूर्ण अंग है। फिर भी पर्यटन को खुला छोड़ देने से पृथ्वी की भंगुर पारिस्थितिक व्यवस्था अस्त व्यस्त हो सकती है। पर्यटकों की बढ़ी हुई संख्या अपनी पारिस्थितिक व्यवस्था के नाजुक संतुलन पर निशेधात्मक प्रभाव डालने के कारण विवाद का विषय रही है। यहाँ हम गौर करेंगे कि पर्यटकों का मनोरंजन किस प्रकार पर्यावरण पर प्रभाव डालता है।

23.2.1 वन्य जीवन

वन्य प्राणियों के लिए बनाए गए राष्ट्रीय उद्यान और संरक्षण पर्यटन और मनोरंजन के स्तर को बढ़ा देते हैं। पर्यटन क्षेत्र को नियंत्रित करने वाले अधिकारी यह विश्वास करते हैं कि उचित नियमन के द्वारा प्रकृति और पर्यटन के मध्य एक संतुलन बनाकर रखा जा सकता है। किंतु सत्य कुछ और ही बयान करते हैं। पर्यटन में वृद्धि होने से कश्मीर में पक्षियों (या नम भूमि की प्रजातियों) की संख्या घट गई है। इसने उन्हें अधिक ऊँचे पर्वतों की ओर उड़ जाने पर विवश कर दिया है। पर्यटकों के मनोरंजन के कारण मुच्छल कुटरी (विस्कर्ड टर्न) और भारत की महत्वपूर्ण फुदकी का डल झील के क्षेत्र में आना बहुत हद तक प्रभावित हुआ है। पर्यटन दबाव के कारण लगभग यही स्थिति दिल्ली के निकटवर्ती उद्यानों जैसे कार्बेट, सरिस्का और रणथम्भोर की भी है।

यहाँ तक कि जंगल की सैरगाहों ने भी काफी हद तक क्षति पहुँचाई है। पर्यटकों के लिए कॉटेजों के निर्माण हेतु वनों को काटना पड़ा; मोलेम-महावीर वन्य जीवन विहार के उदाहरण सामने हैं। यही स्थिति तमिलनाडु में वेल्ला नदी के मुहाने स्थित पिचानारम मैन्ग्रोव वन की है। इस मैन्ग्रोव पर सामान्य जंगली पौधों का अधिकार हो सकता है जिसके कारण इसके नष्ट हो जाने की संभावना है। ये मैन्ग्रोव तटीय कटाव, ज्वारीय कटाव और तूफानों के विरुद्ध प्रतिरोधक का कार्य करते थे। पूर्वी तट के ये मैन्ग्रोव फूलों और मछलियों की विभिन्न प्रजातियों के लिए प्रसिद्ध है। अब इनका 40 % नष्ट हो चुका है। इनके कारण और बढ़ते वाणिज्यिकरण के कारण गाँव जल स्रोत के निकट आते जा रहे हैं। जल के पास बसने के कारण वे कूड़ा करकट जल में फेंक सकते हैं और जो अन्ततः वृक्षों को ही प्रभावित करेंगे। नियोजन और प्रबंधन का अभाव यहाँ निर्णायक सिद्ध हो रहा है।

23.2.2 समुद्री तट और समुद्र

समुद्रों और तटों की पारिस्थितिकी बहुत नाजुक है। इसका मुख्य कारण यह है कि यहाँ दो पारिस्थितिक रूप–धरातल और जलस्थल के बीच परस्पर आदान प्रदान होता है। इन दोनों के मध्य संतुलन बनाए रखना अतिआवश्यक है क्योंकि समुद्र के किनारे रहने वाली संस्कृतियाँ सुकुमार होती हैं। समुद्र तटों पर विकसित होनेवाला पर्यटन मूलतः विलासितापूर्ण होता है। इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है। –होटला रिसॉर्ट के निर्माण से पूर्व आगुआडा गाँव गोवा के समुद्र तट पर बसा एक शान्तिपूर्ण स्थान था जहाँ ताड़ी निकालने वाले, मछुआरे और कृषक एक आत्मनिर्भर जीवन जी रहे थे। होटल

कम्पनियों ने गाँव की बड़ी-बड़ी जमीनें खरीद लीं और अपनी आवश्यकता के अनुसार सड़कों के निर्माण के लिए घने वनों को काट डाला जिसका परिणाम यह निकला कि उस क्षेत्र की प्राकृतिक जल निकास व्यवस्था अस्त व्यस्त हो गई।

आसपास के इलाकों में भी नए होटल बने जिन्होंने न केवल होटल निर्माण के लिए जमीन खरीदी वरन इनपर गोल्फ कोर्स का भी निर्माण किया। इन परिस्थितियों ने इस क्षेत्र को बहुत अधिक परिवर्तित कर दिया। समुद्र के अतिरिक्त प्राकृतिक सुरम्य मनमोहक स्थल का स्थान मानव निर्मित संरचनाओं ने ले लिया।

इस स्थिति को एक और उदाहरण के द्वारा सविस्तार समझा जा सकता है। अण्डमान निकोबार द्वीपों का पर्यटकों के स्वर्ग के रूप में प्रस्तुत और प्रचारित करना पारिस्थितिक रूप से अत्यंत विनाशकारी सिद्ध हुआ। इन द्वीपों में मुक्त बंदरगाह, शॉपिंग कॉम्पलैक्स होटल, कैसीनों, रेस कोर्स, गहरे जल में गोताखोरी, जल क्रिड़ा और स्क्यूबा डाईविंग की सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। इस विकास के कारण उत्कृष्ट वर्षा वनों और अछूते औशधीय एवं शाकीय पौधों के असीम भंडार को सुरक्षा का संकट उत्पन्न हो गया है। कुछ द्वीपों पर अब भी 85 % से अधिक क्षेत्र पर वन फैले हुए हैं। इन द्वीपों पर फूल वाले पौधे की कुल 2300 प्रजातियों के पाए जाने का अनुमान है जिनमें से 100 जातियाँ अब तक लुप्त हो चुकी हैं। कुछ क्षेत्रों में जानवरों और पक्षियों की संकटापन्न प्रजातियाँ मौजूद हैं। अण्डमान की सर्वोत्कृष्ट विशेषता वहाँ का मूंगा है जो नीले समुद्री जल में चमकीला श्वेत और गुलाबी दिखाई देता है। विकास पर चाहे जितना नियंत्रण हो अन्ततः यह मूंगे को नष्ट कर देगा। अधिकारीगण उत्सुक पर्यटकों को अवैध ढंग से द्वीपों में घुसाने में असमर्थ होंगे जहां वह उन नग्न आदिवासियों को देखना चाहेंगे जो सयोंगवश समाप्ति की कगार पर पहुँच चुके हैं क्योंकि उनके आवास उनसे छीन लिए गए हैं। इनके आवासीय स्थलों पर अतिक्रमण होने से इनकी संख्या अब उंगलियों पर गीनी जा सकती है। (महान अण्डमानवासी-28, ओंर्ग-98, सेंण्टीविलीज़- 50 और जरवा- 250) द्वीप के जीवन की निर्वाह व्यवस्था के लिए आवश्यक असंख्य भौतिक, रासायनिक एवं जैविक प्रक्रियाएं सब की सब परस्पर निर्भरशील हैं।

किसी भी उप व्यवस्था में चाहे वह वृक्षों से ढकी हुई पहाड़ियां हों या तटीय मैन्ग्रोव किसी भी प्रकार का विघटन अन्य सारी व्यवस्था को जोखिम में डाल देगा। लगभग 200 से अधिक वृक्षों की प्रजातियों के पत्तों को छाँटने और उनमें से केवल 10% को ही हटाने से 55 % पत्तों के विनाश का कारण बन जाएगा। पर्यटन केवल और अधिक बरबादी और अस्थिरीकरण ही ला सकता है। पारिस्थितिकी तो दूर की बात है द्वीपों पर पेय जल का घोर अभाव है। वर्तमान पर्यटन ने लक्षद्वीप के मूंगे को काफी हद तक नष्ट कर दिया है। पर्यटक गतिविधियां जैसे खोदना, कूड़ा करकट डालना, मूंगे के खंडों को उलटना पलटना, स्क्यूबा एवं गोताखोरी इन कोमल पोलियों के लिए मृत्यु समान हैं जो हजारों वर्षों से निर्मित हो रही प्रवाल भित्तियों को क्षतिग्रस्त कर देते हैं।

23.2.3 पर्वत

पर्वत पर्यटकों द्वारा लाई गई बरबादी से अछूते नहीं हैं। इस दृष्टि से लद्दाख विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिसके सारे रास्ते ट्रेक्किंग करने वालों के द्वारा फेंके गए कचरे और गंदगी से भरे पड़े हैं। यह पाया गया है कि पर्वत और घाटियां आलू, फलों, कच्ची पक्की सब्जियों, अण्डों के छिलकों, दवाओं और आहार के पैकेटों, टीन के डिब्बों और ढक्कनों और सूखे भोजनों और इन सबसे बुरा, मानवीय मलों से भरी पड़ी हैं। नेपाल में अकेले माउंट एवरेस्ट से 200 किलोग्राम कचरा हटाया गया है। शिखर की ओर आयोजित प्रत्येक अभियान के पश्चात बहुत बड़े पैमाने पर वनों की कटाई होती है। पर्यटकों में से केवल 7 % ही लकड़ी के स्थान पर इंधनों का उपयोग करते हैं। इसीलिए अधिक ऊँचाइयों पर वनस्पति विरल है।

डलझील पानी की गन्दगी और जालों के कारण मृत्यु के कगार पर पहुँचने वाली एक और मिसाल है। सबसे अधिक प्रदूषण वे 8000 हाउस बोट फैलाते हैं जिनमें उचित मल मूत्र निकास की सुविधा नहीं है इसलिए सारा अपशिष्ट जल में ही बहा दिया जाता है जिसमें बैक्टीरिया और विभिन्न प्रकार के वायरस पलते हैं। श्रीनगर के शहरी वनों को जिन्हें राष्ट्रीय उद्यान कहा जाता है पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अब गोल्फ कोर्स के रूप में परिवर्तित करने का प्रयास किया जा रहा है। ये उद्यान असंख्य वन्य प्राणियों और पक्षियों का आश्रय क्षेत्र है और डलझील का अप्रवाह क्षेत्र भी है। पारिस्थितिकीविज्ञों को भय है कि यदि उद्यान के दलदल को भरा गया तो यह झील के पारिस्थितिक आधार को अस्त व्यस्त कर देगा।

कुमायूं एवं गढ़वाल हिमालय क्षेत्र में भी पर्यटन ने प्रत्यक्ष रूप से तबाही फैलाई है। अत्यंत उत्तम प्रकार के बहुत बड़े क्षेत्र में फैले हुए वन और चरागाहों को पर्यटन विकास के लिए चुना गया। आगंतुकों की संख्या का मूल्यांकन किए बिना सारे महत्वपूर्ण नगरों में इमारतें खड़ी कर दी गईं हैं। ये इमारतें स्वयं कुरूप और आँखों में चुभने वाली हैं, स्थानीय वास्तुशिल्पीय पर्यावरण से यहाँ तक कि आस पास की प्रकृति से भी मेल नहीं खाती हैं। उदाहरणार्थ एक छोटी बस्ती के पर्यटकों के लिए बने बंगले कम 2% ही उपयोग हो पाता है फिर भी उत्तर प्रदेश सरकार एक और बंगला बनाने की तैयारी कर चुकी है जो पड़ोस के एक जंगल के टुकड़े को साफ करके बनाया जाएगा।

"पर्यटन ही पर्यटन को बरबाद करता'' की कहावत के बिलकुल अनुकूल उदाहरण हम पहाड़ी सैरगाहों की दुर्दशा के रूप में देख सकते हैं। भवन निर्माण से न केवल जंगलों को काटा जाता है बल्कि कस्बों में नगरीय विकास की एक संस्कृति को लाने का भी प्रयास किया जाता है। इन छोटी छोटी सामाजिक आर्थिक समस्याओं के अतिरिक्त अनियंत्रित पर्यटन पर्यावरण को विनाश की अंतिम सीमारेखा की ओर ले जा रहा है।

बोध प्रश्न 1

1) बढ़ते हुए पर्यटन के परिणामस्वरूप वन्य जीवन पर दबाव की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यटन और समुद्रों तथा समुद्री तटों की पारिस्थितिकी के मध्य क्या संबंध हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

3) पर्यटन किस प्रकार पर्वतीय पारिस्थिति की को बिगाड़ता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

23.3 न्यूनतम पर्यावरणीय सीमारेखाएँ

पर्यटन एक बड़ा व्यवसाय है–शायद सबसे बड़ा नागरिक व्यवसाय है जिसमें अनुमानित 420 लाख पर्यटक 40 मिलियन अमेरीकी डॉलर प्रति वर्ष व्यय करते हैं। यह उद्योग दूसरे उद्योगों से न बेहतर है न बुरा, और यदि आप उद्योग का संबंध विकास से जोड़ते हैं तो आप पर्यटन का समर्थन करेंगे। अत: हमारे लिए यह आवश्यक है कि पर्यटन के संदर्भ में न्यूनतम पर्यावरणीय सीमारेखाओं को समझें। क्योंकि यही पर्यटन के उन रास्तों को निर्धारित करेंगे जिन पर पर्यटन को भविष्य में चलना है। हम यहाँ ऐसी सीमा रेखाओं की तीन घटकों पर विचार करें, जैसे बढ़ता हुआ प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों का बढ़ता हुआ शोषण और बढ़ती हुई जनसंख्या। यदि उचित रूप से समय रहते इनका प्रबंध न किया गया तो ये हमारी प्रकृति या पारिस्थितिक तंत्र कों भंयकर रूप से नष्ट कर सकता है। निम्नलिखित तीन पक्ष परस्पर सम्बद्ध हैं फिर भी हम उनका अलग-अलग अध्ययन करने का प्रयास करेंगे।

23.3.1 प्रदूषण

दावा किया जाता है कि पर्यटन उद्योग एक ऐसा बेजोड़ सौम्य उद्योग है जिसमें धुएं की चिमनी की आवश्यकता नहीं होती और खर्च किए गए प्रत्येक डॉलर का गुणक प्रभाव होता है। यह उन लोगों की दलील है जिनका उसमें स्वार्थ है। यह सत्य है कि पर्यटन धुआँ नहीं उगलता किंतु प्रदूषण बहुत से अन्य तरीकों से आता है और पर्यटन ने कुछ अपने अलग प्रकार के प्रदूषण पैदा किए हैं।

दुर्भाग्यवश अबतक का अनुभव कहता है कि जो बिगड़े हुए नहीं हैं उन्हें आसानी से बिगाड़ा जा सकता है। पर्यटन को अब मानवकृत पारिस्थितिकी की हस्तक्षेपों जैसे खनन एवं वन-अवरोपण से अलग नहीं किया जा सकता। विकासशील देशों में एक दिक्कत और है औद्योगिक संसार के धनी पर्यटक यहाँ आते हैं और यहाँ के गरीब लोग उनकी सेवा करते हैं और अमीर पर्यटकों की सेवा करते हुए वे प्राकृतिक संसाधनों के शोषण को सुनिश्चित नहीं कर सकते हैं।

पर्यावरण की वहन क्षमता के संदर्भ में पर्यटन विकास पर्यावरण को प्रभावित करता है। विभिन्न प्रकार के विकास के परिणामस्वरूप पर्यावरण पर अलग-अलग ढंग से प्रभाव पड़ता है और उनमें से कई केवल पर्यटन से ही जुड़े हैं। यदि इन कुप्रभावों पर रोक नहीं लगाया गया तो वह पारिस्थितिक असंतुलन उत्पन्न करने की न्यूनतम सीमारेखा पार कर जाएगा।

पर्यटन उद्योग में प्रदूषण दूसरे प्रकार के होते हैं। यदि होटलों, रेस्तरां और अन्य पर्यटन सुविधाओं के लिए मल निपटान की व्यवस्था नहीं की गई है तो भूमिगत जल से प्रदूषित हो जाएगा, या यदि मल का सही ढंग से उपचार नहीं किया गया तो यह जमीन के ऊपर जल क्षेत्र को दूषित कर देगा। वायु प्रदूषण बढ़ते हुए पर्यटन का नतीजा है। पर्यटकों के लिए और पर्यटकों के द्वारा मोटर गाड़ियों जैसे कारों, बसों और मोटर साइकिलों के क्षेत्र विशेष में अधिक प्रयोग किए जाने के कारण और खास तौर पर उन प्रमुख पर्यटन केंद्रों पर जहाँ केवल सड़क मार्गों से ही पहुँचा जा सकता है इस प्रकार का प्रदूषण उत्पन्न हो सकता है। यदि पर्यटन विकास उचित रूप से सुनियोजित, विकसित एवं स्थल के अनुरूप न किया गया हो या अभी इसका निर्माण चल रहा हो तो वायु में उपस्थित धूल और गंदगी भी वनस्पति रहित क्षेत्रों में प्रदूषण फैला सकते हैं।

वायुवानों, मोटर नौकाओं और कभी कभी विशेष प्रकार के पर्यटक आकर्षण जैसे मनोरंजन उद्यानों का शोर निकटवर्ती निवासियों और अन्य पर्यटकों के लिए कष्टदायक एवं क्षुब्ध कर देने के स्तर तक पहुँच जाता है।

यह प्रदूषण मनुष्यों के लिए अपेक्षाकृत कम हानिकर है क्योंकि हम बचाव के रास्ते अपना सकते हैं किन्तु इनसे शेष सम्पूर्ण जीवमण्डल को क्षति पहुँचाती है।

23.3.2 जनसमुदाय

जनसमुदाय का हमारी पारिस्थितिक व्यवस्था से बहुत महत्वपूर्ण संबंध है क्योंकि वही हमारी मौलिक अस्तित्व के लिए विभिन्न प्रकार के साधन जुटाता है। बुनियादी तौर पर आहार जमीन/धरातल से पैदा होता है या प्राप्त किया जाता है जिसे अधिक दोहन से बचाने के लिए सुरक्षा उपायों की आवश्यकता होती है। आश्रय के लिए धरातल/स्थान की आवश्यकता होती है किन्तु बढ़ती हुई आबादी ने न केवल स्थान बल्कि हर समान का अभाव पैदा कर दिया जाता है। वास्तव में हम बहुत जटिल स्थिति में हैं क्योंकि दुनिया को कृषीय उत्पादन के लिए अधिक जमीन की आवश्यकता है और इसके साथ ही बढ़ती हुई जनसंख्या के रहने के लिए भी इसकी आवश्यकता है।

जैसा कि हमने आगे आनेवाले उपभाग (23.3.3) में विचार किया है कि संसाधनों के लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया सन् 1700 में शुरू हुई जो आज तक चल रही है। विश्व महायुद्ध II में यह विशेष तौर पर कियाशील हुआ।

प्रौद्योगिकी ने रसायनशास्त्र के माध्यम से कृत्रिम रेशों, प्लास्टिक, अकार्बनिक कीटनाशक, सीसा युक्त इंधन और ऐसे कई प्रकार के उत्पादों की सहायता से, जो अन्ततः पर्यावरण को विशाक्त करेंगे एवं जैविक रूप से कियाशील पदार्थों के घुसपैठ को ही बढ़ावा देंगे, जीवन को सुखद बनाया। औद्योगिक प्रौद्योगिकी के इस विस्फोट में युद्धोपरान्त होने वाली जनसंख्या विस्फोट और जुड़ गया। परिणामस्वरूप वायु, पृथ्वी और जल के प्रदूषण में रसायनों और रासायनिक अवशिष्ट के कारण घातक रूप से वृद्धि हुई। शीघ्र ही प्रदूषकों के विशैले प्रभाव को समाप्त करने और उनके प्रभाव के अनुसार सामंजस्य स्थापित करने की स्वाभाविक प्रक्रिया समाप्त होने लगी। मानवीय किया कलापों और उनके द्वारा निर्मित उत्पाद पारिस्थितिक तंत्र की सीमाओं को चुनौती देने लगे।

दिनोंदिन मनुष्य के बढ़ते कार्यकलाप जीवमण्डल द्वारा निर्धारित सीमारेखा को पुनर्निधारित कर रहे हैं। ग्रीन हाउस गैसों के बहुत बड़े पैमाने के शहरी औद्योगिक विमुक्ति के कारण मौलिक वायुमण्डलीय प्रकियाएं संशोधित होती जा रही हैं क्योंकि ये ग्रीन हाउस गैसें वायुमण्डल की निचली परत में तापन उत्पन्न करती हैं, समतापमण्डलीय ओजोन परत को प्रभावित करने वाली क्लोरा फ्ल्यूरोकार्बन गंधक तथा नाइट्रोजन ऑक्साइड भी उत्पन्न करती है जो अम्लीय निक्षेपण का कारण बनती हैं। बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण पर्यावरण का अधिक से अधिक दोहन करने के लिए ये सब प्रयास किए जा रहे हैं। यदि उचित ढंग से प्रबंधन किया गया तो यह हमारे पर्यावरण के सम्पूर्ण विनाश का कारण भी बन सकता है।

23.3.3 प्राकृतिक संसाधनों का दोहन

प्रकृति के जीवित रहने के अपने अलग तरीके हैं और मनुष्य का अधिक हस्तक्षेप उस प्रक्रिया को अस्त व्यस्त कर देता है जो पारिस्थितिकी को बनाए रखता है। पर्यावरणीय दृष्टि से भंगुर और अतिसंवेदनशील क्षेत्रों में पर्यटन का विकास होने से स्थानीय रूप से प्राप्त संसाधनों का दोहन होता है ताकि पर्यटकों को मौलिक सुख साधन उपलब्ध कराया जा सके। हालांकि प्राकृतिक संसाधनों के दोहन का प्रश्न केवल पर्यटन के संदर्भ में पूर्ण रूप से नहीं समझा जा सकता और हमें इस समस्या को बड़े परिदृश्य में देखना पड़ेगा।

17 वीं शताब्दी तक प्राकृतिक संसार के दोहन का अधिकार और प्रतिफल अधिकतर विशिष्ट अभिजात वर्ग के हाथ में था। 17 वीं शताब्दी के उतरार्ध में हुई प्रजातांत्रिक क्रांतियों ने, जिसमें अमेरीकी क्रांति 1775-1783 और फ्रांसीसी क्रांति 1789-1799 सम्मिलित है, अधिकांश पाश्चात्य समाजों के ढांचे में फेरबदल प्रारंभ कर दिया। इसके साथ ही जनसाधारण की उत्पादक संसाधनों तक पहुँच तक वृद्धि हो गई, और आर्थिक तथा सामाजिक प्रतिष्ठा को सुधारने के लिए उनकी योग्यता भी बढ़ी। इस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों के दोहन का वैद्य अधिकार समाज के आम जन तक पहुँचा।

लगभग उसी समय–17 वीं शताब्दी के मध्य में औद्योगिक एवं वैज्ञानिक क्रांतियाँ प्रारंभ हुईं। उद्योग के क्षेत्र में बढ़ी हुई क्षमता के साथ नए सिरे से संसाधनों को संसाधित करने के लिए मशीनों और शक्ति के साधनों को काम में लाया जाने लगा। भाप के इंजन के साथ ही रेलमार्गों का शुभारंभ हुआ, पानी के जहाज चलने शुरू हुए और इनके कारण दोहन के नए क्षेत्र खुले। विज्ञान की नई खोजों के कारण प्रकृति की मौलिक अवधारण में क्रांतिकारी परिवर्तन आए। अभी तक भगवान के द्वारा बनाया गया और उसी के द्वारा चलाया जाने वाला विश्व अब इन क्रांतियों के पश्चात भगवान के स्थान पर भौतिकी और रसायनशास्त्र के आधारभूत सिद्धांतों के अनुसार कार्य करने लगा। औद्योगिक और वैज्ञानिक क्रांतियों ने सामान्य व्यक्तियों को संसाधनों के दोहन करने और आर्थिक लाभ कमाने की बेहतर योग्यता प्रदान की।

18 वीं शताब्दी उपनिवेशवाद और विश्व व्यापार के द्वारा पाश्चात्य संस्कृति के विश्वव्यापी प्रसार की पराकाष्ठा थी। पर्यावरणीय दोहन की पश्चिमी प्रणाली इस प्रकार दूर दूर तक फैल गई और उन क्षेत्रों में भी मनुष्यों और प्रकृति के आपसी संबंध का मौलिक दर्शन बिलकुल भिन्न था वहाँ भी यह प्रणाली प्रचलित हो गई।

विडम्बना यह है कि पर्यावरण गरीब देश के लिए अधिक चिंता का विषय है क्योंकि वहाँ के अधिकतर लोगों का रोजगार धरती पर ही आश्रित होता है। उनमें से अधिकांश को जलस्रोतों, तालाबों, कुआँ या फिर सार्वजनिक नलकूपों से जो सैकड़ों परिवारों की प्यास बुझा रहे हैं पानी लेने के लिए दूर दूर तक पैदल यात्रा करनी पड़ती है। अतः यह अक्सर कहा जाता है कि किसी गरीब देश में पर्यावरण का दोहन विलासिता है जिसे वह बर्दाश्त करने की स्थिति में नहीं होता है।

23.4 कुछ हल

अपने पर्यावरण पर पड़ने वाले दबावों को नियंत्रण में रखना बहुत आवश्यक है। जैसा कि ऊपर विचार किया जा चुका है कि विभिन्न दबावों और न्यूनतम सीमारेखाएँ पर्यावरण के प्रति हमारे व्यवहार के औचित्य पर ही प्रश्न चिह्न लगाने लगे हैं। यह तर्क भी दिया जाता है कि पर्यटन हाँलाकि धुँआ रहित उद्योग है फिर भी वह पर्यावरण के प्राकृतिक संतुलन के विनाश में भागीदार है।

अतः यह विचार व्यक्त किया जाता है कि इस समस्या को बहुत विस्तृत परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए। इसे केवल पर्यावरण के लिए उपयुक्त पर्यटन प्रबंधन तक ही सीमित नहीं करना चाहिए। विद्यालयों के पाठ्यक्रम में अन्य विषयों के मूलभूत भाग के रूप में पर्यावरणीय शिक्षा को सम्मिलित किया जाना चाहिए ताकि कोई भी कार्य करते वक्त संरक्षण का ख्याल रहे। अतः एक अलग विषय के रूप में उसे सम्मिलित करना नितांत आवश्यक है ताकि पारिस्थितिकी को अधिक औपचारिक ढंग से पढ़ाया जा सके और उसकी धारणाएं सरलता के साथ पूर्णरूप से समझी जा सकें। अतः पर्यावरणीय अध्ययन एक अनिवार्य विषय के रूप में होना चाहिए। अध्ययन सामग्री जैसे पाठ्य पुस्तकें, श्रव्य दृश्य साधन, पोस्टर, पेम्पलेट आदि ऊपर वर्णित समस्याओं को दृष्टि में रखकर तैयार किया जाना चाहिए। यह सहायता सामग्री पारिस्थितिकी की धारणाओं को समझाने में सक्षम होनी चाहिए। संरक्षण और पर्यावरणीय शिक्षा बच्चों की स्कूली गतिविधियों का महत्वपूर्ण अंग होना चाहिए। वन्य प्राणी को प्रोत्साहन देना चाहिए और युवाओं के कार्यकलापों में पर्यावरणीय शिक्षा को शामिल करना चाहिए।

ऐसे अवसरों का फायदा उठाना चाहिए जब पर्यटक/सामान्य जनता राष्ट्रीय उद्यानों, चिड़ियाघरों आदि में पौधों और प्राणियों के सम्पर्क में आते हैं तो उन्हें संरक्षण के उद्देश्यों और मानवों के अस्तित्व और कुशलता के लिए उनके योगदान से अवगत कराना चाहिए। ऐसी संरक्षण शिक्षा अनिवार्य शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करने के साथ साथ आरक्षित क्षेत्रों पर से दबाव हटाने में सहयोग भी देता है और विशेष रूप से भंगुर अथवा अनोखी पारिस्थितिक व्यवस्था की सुरक्षा में भी सहायता करता है। लोकप्रिय प्राणी जैसे हिरण को उन पारिस्थितिक व्यवस्था को ज्यादा अच्छी तरह समझने के लिए प्रयोग किया जा सकता है। संरक्षण को मानवीय अभिरुचियों और आकांक्षाओं के केंद्र बिन्दु के रूप में देखने के लिए लोगों का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना अनिवार्य है।

बोध प्रश्न 2

1) प्रदूषण क्या है और यह हमारे पर्यावरण के लिए हानिकर क्यों है ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) जनसंख्या विस्फोट पर्यावरण के लिए क्यों समस्याएं उत्पन्न करता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

3) आम लोगों में पर्यावरणीय जागरुकता बढ़ाने के लिए कुछ उपाय सुझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

23.5 सारांश

पारंपरिक दृष्टि से पर्यटन को धुँआ रहित क्रिया के तौर पर वर्णित किया जाता रहा है किंतु जैसा कि हम इस इकाई में विचार कर चुके हैं ये भी पर्यावरणीय असंतुलन उत्पन्न करते हैं। हमने पर्यटन के परिणामस्वरूप पर्यावरण पर दबाव को विश्लेषित किया है और दूसरी ओर उन न्यूनतम सीमारेखाओं को समझा है जो भविष्य के खतरे से हमें आगाह कर रहे हैं। जनसंख्या प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के प्रश्न घनिष्ठ रूप से परस्पर संबंधित हैं। अतः सुझाव यह है कि आप केवल पर्यटन को ही

समझने का प्रयास न कीजिए बल्कि सामाजिक गतिविधियों में भी पर्यावरण के संरक्षण का ख्याल रखिए।

23.6 शब्दावली

अजैविक कारक : वह जो बेजान हों, इनमें पर्यावरण की वह भौतिक और रासायनिक परिस्थितियाँ सम्मिलित हैं जो अनिवार्यत: जैव प्रकारों से सम्बद्ध नहीं होती हैं।

जैविक कारक : जो सजीव हैं, इनमें वे पौधे प्राणी, और जीवाणु सम्मिलित हैं जो आपस में प्रतिस्पर्द्धा करते हैं या हस्तक्षेप करते हैं।

23.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए उपभाग 23.2.1
2) देखिए उपभाग 23.2.2
3) देखिए उपभाग 23.2.3

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उपभाग 23.3.1
2) देखिए उपभाग 23.3.2
3) देखिए भाग 23.4

इकाई 24 मेजबान/स्थानीय जनसमुदाय

इकाई की रूपरेखा

24.0 उद्देश्य

24.1 प्रस्तावना

24.2 स्थानीय लोगों के लिए अवसर
- 24.2.1. आर्थिक अवसर
- 24.2.2 विभिन्न संस्कृतियों के बीच आदान प्रदान
- 24.2.3 सांस्कृतिक गौरव का नवीनीकरण

24.3 स्थानीय लोगों की भागीदारी
- 24.3.1 सहभागिता की सीमा
- 24.3.2 भागीदारी : सच या झूठ

24.4 मेजबानों/स्थानीय लोगों पर दबाव
- 24.4.1 आर्थिक सुरक्षा और स्थानीय समुदाय
- 24.4.2 पर्यटन की सामाजिक कीमत
- 24.4.3 पर्यटन और पर्यावरणीय प्रभाव

24.5 पर्यटन और संस्कृति
- 24.5.1 स्थानीय प्रथाएं
- 24.5.2 भौतिक संस्कृति
- 24.5.3 नैतिक आचरण

24.6 सारांश

24.7 शब्दावली

24.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

24.0 उद्देश्य

निम्नलिखित बातों पर विचार करना इस इकाई का उद्देश्य है :

- पर्यटन के परिणामस्वरूप स्थानीय लोगों के लिए उपलब्ध अवसर ,
- स्थानीय सहभागिता का स्तर और पर्यटन उद्योग से लाभ, यदि कोई हो ,
- स्थानीय संस्कृति पर पर्यटन का प्रभाव और भौतिक दृश्य।

24.1 प्रस्तावना

पर्यटन अब कुछ अवकाश लेने का पर्याय बन गया है। इसे सामान्य तौर पर प्रवासियों की यात्रा और ठहराव और उससे उत्पन्न परिघटना और संबंधों के समुच्चय के रूप में देखा जा सकता है; यह याद रखना चाहिए कि पर्यटन की सीमा में स्थाई निवास शामिल नहीं होता है। इन पर्यटकों तथा स्थाई लोगों या जैसा कि पर्यटन मानव विज्ञान कहता है मेजबान/स्थानीय लोग तथा मेहमान जनसंख्या के मध्य परस्पर आदान प्रदान होना अनिवार्य है। यहाँ मेजबान से तात्पर्य स्थान विशेष के मूल निवासियों से है जहाँ पर्यटक जाते हैं। यह इकाई मेजबान या आतिथेय की प्राचीन व्याख्या से भी आगे जाती है

जिसमें न केवल सामाजिक पर्यावरण वरन भौतिक पर्यावरण भी सम्मिलित है। अत: पर्यटकों की यह यात्रा स्थानीय लोगों को न केवल आर्थिक अवसर उपलब्ध कराती है बल्कि सामाजिक सांस्कृतिक और भौतिक पर्यावरण पर स्थाई प्रभाव डालती है किन्तु कभी कभी भौतिक पर्यावरण को बिगाड़ती भी है। इसलिए पर्यटन के दबावों और न्यूनतम सीमारेखाओं पर की गई परिचर्चा में मेजबान/स्थानीय लोगों तथा वह परिवेश जहाँ वह स्थित है बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। हम आने वाली परिचर्चा में इन्हीं बातों को समझने का प्रयास करेंगे।

24.2 स्थानीय लोगों के लिए अवसर

पर्यटन मेजबान या आतिथेय जन समुदायों के लिए विविध अवसर प्रदान कर सकता है। उदाहरणार्थ यह आर्थिक विकास तथा साथ ही साथ पारस्परिक सांस्कृतिक आदान प्रदान के लिए परिस्थितियाँ पैदा करता है। हालाँकि इन अवसरों से लाभ उठाते समय अतिथेय/स्थानीय लोगों की नजाकत या भंगुरता की क्षति का खतरा बना रहता है। इसलिए अनियंत्रित पर्यटन विकास के कारण ऐसे दबाव मेजबानों के मूलरूप को परिवर्तित करने का कार्य प्रारंभ कर देते हैं जो कभी कभी लाभ देने के बजाए हानि की ओर ले जाता है। इसलिए हमें इन अवसरों को अल्प/दीर्घ कालिक नुकसान के परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए जो मेजबानों के सम्मुख पैदा हो सकती है।

24.2.1 आर्थिक अवसर

पर्यटन से कुछ प्रत्यक्ष लाभ होते हैं । यह स्थानीय लोगों के लिए रोजगार एवं अल्प आय के साधन उपलब्ध कराता है और उनके लिए (अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन द्वारा) विदेशी मुद्रा अर्जित करता है। इससे स्थानीय समुदाय के जीवन स्तर में सुधार आता है और समग्र क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय आर्थिक विकास में भी योगदान दे सकता है। पर्यटन कार्यकलापों में निवेश का गुणक प्रभाव पड़ता है। स्थानीय दुकान से पर्यटक द्वारा खरीदी गई दस्तकारी से दुकानदार को आय होती है। वह इस आमदनी से भोजन खरीदकर खाता है और यदि इस क्रय विक्रय में आयात सम्मिलित हो तो आय का कुछ भाग देश के बाहर निकल जाता है किन्तु बचा हुआ धन खाद्यान बेचने वाले की आय बन जाता है। यह धन फिर खर्च किया जाता है और यह आय और व्यय का क्रम चलता रहता है। आर्थिक गुणक की यह प्रक्रिया क्षेत्र एवं देश की सकल राष्ट्रीय आय की वृद्धि में सहयोग देता है। इसके अतिरिक्त आर्थिक दृष्टि से पिछड़े क्षेत्रों में पर्यटकों द्वारा उपलब्ध कराए गए रोजगार और आय, विशेष कर नवयुवकों का प्रवसन रूक सकता है। पर्यटन के कारण पैदा होने वाले रोजगार के अवसर तीन प्रकार के होते हैं।

क) **प्रत्यक्ष रोजगार :** होटल आदि जैसी पर्यटन सुविधा के निर्माण से प्रत्यक्ष रोजगार उत्पन्न होता है। यह पूंजी निवेश उद्योग है जिससे मुख्य रूप से बाहरी लोग लाभान्वित होते हैं। फिर भी पर्यटन मौसमी रोजगार के अवसर उपलब्ध कराता है। बहुत से स्थानीय लोग पर्यटन के मौसम में पर्यटक गाइड के रूप में या पर्यटकों को विभिन्न परिवहन के साधनों (जैसे खच्चर, पालकी आदि) से लोगों को ले जाने का कार्य करते हैं।

ख) **अप्रत्यक्ष रोजगार :** पर्यटन के द्वारा अन्य आर्थिक क्षेत्रों जैसे कृषि, मछली पालन कई प्रकार के निर्माण उद्योग, हस्तकला, परिवहन आदि के विकास और विस्तार से अप्रत्यक्ष रोजगार पैदा होता है।

ग) **प्रेरित रोजगार :** पर्यटन की आय से स्थानीय लोगों द्वारा खर्च की गई आय से रोजगार के ये अवसर पैदा होते हैं। पर्यटन ज्यादा से ज्यादा महिलाओं को रोजगार दे सकता है और कई परम्परागत समाजों में महिलाओं के प्रशिक्षण एवं रोजगार द्वारा उनके उद्धार का अवसर भी पैदा हो जाता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि पर्यटन निश्चित ही रोजगार और आय के अवसर पैदा करता है। किन्तु पर्यटन और रोजगार के विषय पर उपलब्ध साहित्य पर ध्यान देने से कुछ क्षुब्ध कर देने वाले तथ्य सामने आते हैं। सर्वप्रथम, पर्यटन के आय उत्पन्न करने वाले प्रभाव और रोजगार के उत्पन्न होने के बीच निकट का संबंध है परंतु इनका पारस्परिक संबंध स्पष्टता से उभ नहीं सका है। इसका अर्थ यह है कि उद्योग से होने वाले अधिक लाभ के अनुरूप प्रत्यक्ष रूप से नौकरियों के अनुपातिक अवसरों की वृद्धि से नहीं होती है। दूसरी बात यह है कि पर्यटन के कारण उत्पन्न रोजगार आम तौर से श्रम सम्बद्ध होने के कारण निम्नस्तरीय आय वाला होता है। जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है पर्यटन रोजगार अधिकतर मौसमी होता है।

24.2.2 विभिन्न संस्कृतियों के बीच आदान प्रदान

पर्यटन क्षेत्र विशेष के निवासियों और वहाँ जाने वाले पर्यटकों के लिए एक दूसरे की संस्कृति को समझने और उसके बारे में और अधिक जानने के अवसर प्रदान करता है जो बेहतर पारस्परिक समझ और ज्ञान का कारण बनता है या कम से कम एक दूसरे से भिन्न मूल्य व्यवस्थाओं तथा परम्पराओं के प्रति सहनशीलता पैदा करता है। भारत जैसे बहु जातीय देश में घरेलू पर्यटन लोगों को पारस्परिक-सांस्कृतिक बोध के अवसर प्रदान करता है और परिणामस्वरूप देश के विविध जनसमुदायों में राष्ट्रीय एकता की भावना पैदा करता है।

किंतु विभिन्न संस्कृतियों का परस्पर मिश्रण समाज में कुछ समस्याएं भी पैदा कर सकता है। जैसे तीसरी दुनिया में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों की बढ़ती उपस्थिति को मानवशास्त्री सांस्कृतिक संक्रमण की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण तत्व मान रहे हैं जहाँ लोग एक दूसरे के परस्पर सम्पर्क में आते हैं और एक दूसरे की सांस्कृतिक विरासत को ग्रहण करते हैं। इस मामले में, पर्यटन द्वारा लाए गए सशक्त पाश्चात्य विचार एवं व्यवहार की उपस्थिति का प्रभाव 'दूर्बल' संस्कृति पर पड़ सकता है और वह उस पर हावी हो सकता है। अत: हम यह पाते हैं कि तीसरी दुनिया के लोग फ़ूहड़ ढंग से पाश्चात्य जीवन शैली और आदतों की नकल करते हैं और इस प्रक्रिया में अपने पारम्परिक सिद्धांतों एवं प्रथाओं को विकृत कर बैठते हैं।

24.2.3 सांस्कृतिक गौरव का नवीनीकरण

पर्यटन आतिथयों/स्थानीय लोगों में अपनी संस्कृति के प्रति गौरव का अनुभव करने का अवसर प्रदान करता है। यह गौरव अनुभव करने की भावना उस समय और भी सशक्त होती है जब की पर्यटक उनकी प्रशंसा करते हैं और उन्हें पसन्द करते हैं। इस प्रकार पर्यटन अल्पसंख्यक सांस्कृतियों समुदायों को अपनी अलग पहचान बनाए रखने के योग्य बनाता है।

सांस्कृतिक गौरव का नवीनीकरण समुदाय को अपनी अलग संस्कृति और पहचान के प्रति चेतना जागृत करता है और वह एक समुदाय के रूप में व्यवहार करने लगते हैं। एक वर्ग के लोगों का अन्य वर्ग/वर्गों से स्वयं की पृथक पहचान के उद्देश्य से अपनी संस्कृति के किसी पक्ष का आत्मपरक सांकेतिक या प्रतीकात्मक उपयोग उनकी अपकेन्द्री प्रवृतियों का साधन बन सकता है। यदि पर्यटन विकास की प्रकृति ऐसी हो कि स्थानीय समुदाय को स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने से वंचित कर दिया जाए और नगर तथा देहात के मध्य विकास का अन्तर बढ़ता रहे तो इसकी संभावना और अधिक हो जाती है।

बोध प्रश्न 1

1) क्या पर्यटन आतिथेय या मेजबान समुदाय को कोई आर्थिक लाभ उपलब्ध कराता है? इस संबंध में अपने विचारों से अवगत कराइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यटन और सांस्कृतिक गौरव के नवीनीकरण के बीच क्या संबंध है ? संक्षेप में वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

24.3 स्थानीय लोगों की भागीदारी

इस भाग में अपने क्षेत्र में पर्यटन गतिविधियों में स्थानीय जनसंख्या की भागीदारी का विवेचन किया गया है।

24.3.1 सहभागिता की सीमा

पर्यटन स्थानीय जनसंख्या को कई तरह से सम्मिलित करता है।

प्रथम श्रेणी में वह लोग सम्मिलित हैं जो निरंतर और प्रत्यक्ष रूप से पर्यटकों के सम्पर्क में हैं : खान पान व्यापार, परिवहन, दुकानों, यात्रा एजेंसी आदि में लगे कर्मचारी। वे पर्यटन को इसलिए सहयोग देते हैं क्योंकि वे उस पर आश्रित हैं और शायद वह उसके बिना बेरोजगार हो जाएंगे। इसलिए वह पर्यटकों का स्वागत करते हैं। उनका व्यवहार स्वाभाविक आतिथ्य के आधार पर या फिर सेवारत होने की प्रसन्नता (जैसा कि अक्सर कहा जाता है) के आधार पर निर्धारित नहीं होता बल्कि केवल पैसा कमाने की इच्छा के आधार पर निर्धारित होता है।

दूसरी श्रेणी के अन्तर्गत वह जनसमूह आते हैं जो प्रत्यक्ष तौर पर और निरंतर पर्यटकों के सम्पर्क में रहते हैं किंतु अपनी आय का मात्र आंशिक भाग ही पर्यटन से प्राप्त करते हैं क्योंकि वह केवल पर्यटन के मौसम में ही पर्यटन से सम्बद्ध रहते हैं। वे पर्यटक केंद्रों पर या उसके निकट रहते हैं और विभिन्न प्रकार के कार्यों जैसे खेती, हस्तशिल्प की बिक्री, और प्रदर्शनीय कला के उत्पादन में लगे रहते हैं। उनका पर्यटन से जुड़ा होना और उसके फलस्वरूप व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित नकारात्मक प्रभावों का ज्ञान अक्सर उनके पर्यटन के प्रति स्वभाव को आलोचनात्मक बना देता है। इस प्रकार हमें ज्ञात होता है कि इस वर्ग के सदस्य पर्यटन से होने वाले अतिरिक्त लाभों का अनुमान लगा लेते हैं जैसे कृषकों के लिए अतिरिक्त आय। किन्तु वह उसके कारण होने वाली हानियों जैसे उनके निजी जीवन में हस्तक्षेप एवं पर्यावरणीय क्षति के प्रति अधिक आलोचनात्मक रहते हैं।

तीसरी श्रेणी उन लोगों की है जो स्थानीय संभ्रांत अति विशिष्ट वर्ग से सम्बद्ध हैं और पर्यटन के विकास से अधिकतम लाभ अर्जित करते हैं क्योंकि वह वित्तीय दृष्टि से समर्थ होने के कारण पर्यटन की गतिविधियों में धन लगाने में सक्षम हैं। यह वर्ग प्रभावशाली ढंग से पर्यटन को समर्थन देता है।

चौथा वर्ग स्थानीय लोगों का बड़ा वर्ग है जिनका पर्यटकों से सम्पर्क नहीं है या वह उन्हें केवल सरसरी तौर से आते जाते देखते हैं यहाँ विविध प्रकार के व्यवहार संभव हैं जैसे स्वीकृति, अस्वीकृति रुची उदासीनता। इनमें से अन्तिम बहुत आम हैं।

एक और वर्ग है जिसमें वे नागरिक सम्मिलित हैं जो पर्यटन का विरोध करते हैं। कभी कभी यह विरोध संगठित रूप में होता है। यह वर्ग पर्यटन से होने वाली क्षति की ओर इश्तेहारों और सम्बद्ध अधिकारियों को भेजे गए आवेदनों द्वारा ध्यान आकर्षित कराने का प्रयास करते हैं और कभी कभी प्रदर्शनों द्वारा विरोध प्रकट करते हैं।

24.3.2 भागीदारी : सच या झूठ

गत 20-30 वर्षों में जिस प्रकार का पर्यटन हमारे यहाँ विकसित हुआ उसने स्थानीय जनसंख्या को बाहरी व्यापार और पर्यटकों के हितों के लिए उपयोगी बना दिया। हम में से अधिकांश लोगों के लिए अत्यंत निराशाजनक बात यह हुई कि पर्यटक उद्योग का मनोविज्ञान और समाजशास्त्र अभी तक पर्यटक दृष्टिकोण और व्यवहार्य से सम्बद्ध रहा और मेजबान जनसमुदाय की सम्पूर्ण रूप से उपेक्षा की गई है। ऐसा इसलिए हुआ कि पर्यटन का प्रमुख उद्देश्य क्षेत्र/देश की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक सम्पदा का दोहन करना रहा है और वहाँ के लोग की कोई अहमियत नहीं रह गई। स्थानीय लोगों की सांस्कृतिक गतिविधियाँ केवल पर्यटक बाजार में पर्यटन को प्रोत्साहित करने और बेचने के लिए ही दरकार होती है।

ईमानदारी के साथ यह कहा जा सकता है कि यह स्थिति सम्पूर्ण रूप से बाहरी स्वार्थों की पैदा की हुई नहीं है। आतिथेय जनसंख्या भी आंशिक रूप से इस उपेक्षा के लिए दोषी है।

पर्यटन के प्रमुख लक्ष्य वह क्षेत्र हैं जहाँ मानव एवं भौतिक संसाधन दोनों ही सस्ते दामों में उपलब्ध हों। ऐसे क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर अधिसंरचनात्मक सुविधाओं पर निवेश ऐसा प्रलोभन है जो स्थानीय लोगों को पर्यटन प्रोत्साहकों के इस वचन पर विश्वास करने को विवश करता है कि पर्यटक से प्राप्त राजस्व उनके क्षेत्र में विशेष कर और सामान्य रूप से और सम्पूर्ण देश में विकास और आधुनिकीकरण को बहुत तेज कर देगा। जबकि वास्तविकता यह है कि पर्यटन का विकास स्थानीय लोगों के समझ से परे होता है। बहुत कम स्थानीय लोग इसमें बराबर के साझेदार होते हैं और यह अपवाद चालाक व्यापारियों या विशिष्ट वर्ग के लोगों तक सीमित होता है। स्थानीय लोगों को यह समझाया जाता है कि उन्हें बाजार के अनुरूप होना चाहिए अर्थात केवल उन्हीं चीजों का उत्पादन करना चाहिए जो बिकती हैं। अतः स्थानीय लोगों को ही पर्यटकों के अनुकूल स्वयं को बदलना पड़ता है। वह किसी और तरह से कार्य नहीं कर सकते। कोई इस बात की चिंता नहीं करता कि उनसे पूछा जाए कि कहीं ये गतिविधियां उनकी मान्यताओं से टकराती तो नहीं या उनके विचारों के प्रतिकूल तो नहीं है। यह वह अत्यंत सामान्य विधि है जिसके द्वारा मेजबान जनसंख्या पीछे धकेल दी जाती है।

पर्यटन के घातक विकास में स्थानीय लोगों की भागीदारी इस प्रकार है कि किसी विशेष क्षेत्र में यह विकास वास्तविक नहीं होती बल्कि इसका आभास मात्र होता है। ऐसा इसलिए भी होता है कि जो कुछ भागीदारी स्थानीय जनसंख्या आर्थिक गतिविधियों के रूप में करती है उसमें उसकी भागीदारी कम और बाहरी लोगों की भागीदारी ज्यादा होती है और लाभ का अधिकांश हिस्सा भी उन्हीं के पास चला जाता है।

बोध प्रश्न 2

1) पर्यटन में मेजबान जनसंख्या की भागीदारी के स्तर की विवेचना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यटन प्रोत्साहकों के बाहरी व्यापार में स्थानीय जनसंख्या किस प्रकार सहयोग देती है ? विवेचना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

24.4 मेजबानों/स्थानीय लोगों पर दबाव

स्थानीय लोग/मेजबान गत कुछ दशकों में जिस प्रकार हाशिए पर जा खड़े हुए हैं उसने वास्तव में पर्यटन के आगामी विकास की संभावना को संकट में डाल दिया है। हमें इन दबावों को समझ लेना चाहिए।

24.4.1 आर्थिक सुरक्षा और स्थानीय समुदाय

इसमें कोई संदेह नहीं है कि पर्यटन स्थानीय समुदाय को रोजगार और आय प्रदान कर एक सीमा तक आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है और कर रही है। मोटे तौर पर लगाए गए एक अनुमान के अनुसार सम्पूर्ण विश्व में लगभग एक करोड़ व्यक्ति पर्यटन उद्योग में कार्यरत हैं और कई करोड़ लोग अप्रत्यक्ष रूप से इस उद्योग पर गुजारा करते हैं। इसके अतिरिक्त पर्यटन का एक और आयाम है। वह औद्योगिक शहरी क्षेत्रों और कृषीय ग्रामीण क्षेत्रों के बीच की आर्थिक खाई को पाटने की संभावनाएं प्रस्तुत कर सकता है। अत: अक्सर इसे ग्रामीण क्षेत्रों से निर्गमन को मन्द करने वाला और उस क्षेत्र को विकसित करने वाला आर्थिक रामवाण समझा जाता है जहाँ अपनी प्राकृतिक सम्पदा के अतिरिक्त बेचने के लिए कुछ नहीं है।

उपर्युक्त बातों के प्रकाश में कहा जा सकता है कि पर्यटन आतिथेय समुदाय के लिए एक सीमा तक आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। किन्तु इस सिक्के का एक दूसरा पहलू भी है जिसकी राजनैतिक परिचर्चाओं में शायद ही कभी चर्चा की जाती हो। पर्यटन में रोजगार अधिकांशत: आकर्षक नहीं होते हैं। कार्य की परिस्थितियाँ कठोर, कार्य का समय अनियमित होता है। पर्यटन के मौसम में कार्य का भार इतना बढ़ जाता है कि नियत समय में देर तक काम करना लगभग अनिवार्य हो जाता है और काम करने वाला अतिथियों की दया का पात्र होता है। दूसरी ओर आय औसत से भी कम होती है। बहुत सी नौकरियों में किसी प्रकार के कौशल की जरूरत नही होती है और घटिया समझी जाती है जैसे परोक्ष में हो रहे कार्य अर्थात रसोई या सफाई के कार्य। पर्यटन अप्रसन्नता और नैराष्य की ओर भी ले जाता है क्योंकि पर्यटन व्यापार में धन शहर के व्यापारिक संस्थानों से आता है और उसमें अधिकांश अधिशेष वापस वहीं चला जाता है।

इसके अतिरिक्त आर्थिक विश्लेषण से यह बात सामने आती है कि पर्यटन में निवेश करने से आय में गुणक प्रभाव से वृद्धि होती है। इस आर्थिक गुणक से सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि होती है। परंतु निर्विवाद रूप से यह साबित हो चुका है कि सकल घरेलू उत्पाद में साधारण सी वृद्धि का अर्थ विकास नहीं है। अत: पर्यटन स्थल में असंतुलित आर्थिक वृद्धि तो हो सकती है किंतु यह विकास नहीं है। यह भी प्रमाणित है कि पर्यटन से आवश्यक वस्तुओं, अचल सम्पति और परिवहन की कीमतों में वृद्धि होती है जिसके कारण मेजबान समुदाय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

24.4.2 पर्यटन की सामाजिक कीमत

जैसा इस इकाई में पहले बताया जा चुका है पर्यटन विभिन्न संस्कृतियों के विषय में जानने और समझने का अवसर प्रदान करता है। यह पर्यटकों के द्वारा आतिथेय संस्कृति के अवसर का मूल्यांकन के अवसर उपलब्ध कराता है जिसके परिणामस्वरूप स्थानीय लोगों का अपनी संस्कृति के प्रति गौरव का अनुभव होता है। किंतु इसके साथ ही साथ पर्यटक प्रोत्साहन की सामाजिक लागत बहुत अधिक है जिसका तुलनात्मक उल्लेख कहीं नहीं होता।

पर्यटन से आतिथेय समुदाय के समाज में गंभीर परिवर्तन होता है। इससे उनमें पर्यटकों की उपभोक्ता आदतों और व्यवहार की नकल करने की इच्छा जागृत करता है यह अपने ही लोगों में असंतोष पैदा करता है, यहाँ तक कि वह समर्पण कर देता है क्योंकि स्थानीय लोगों की अपेक्षा पर्यटकों का जीवन स्तर बेहतर होता है। यह उनमें हीन भाव, कुंठा आदि पैदा करता है।

यही नही पर्यटन साहित्य में इस तथ्य को उजागर किया जाता है कि यह उद्योग कामवासना, बाल वेश्याक्रम, विभिन्न प्रकार के अपराधों और संगठित जुए की वृद्धि से संबंधित है। भारत में इसके प्रमुख उदाहरण कुछ तटीय क्षेत्र हैं जहाँ पर्यटकों के आने के कारण सामाजिक पतन सुधरने की सीमा से कहीं आगे निकल चुका है। यही अंत नहीं है बल्कि बहुत सी ऐसी जगहें भी मौजूद हैं जहाँ पर्यटन और अपराधों की वृद्धि में सीधा संबंध है।

पर्यटन कुछ बहुत गंभीर बीमारियों के प्रसार का साधन भी है पर्यटकों के आने और वेश्यावृत्ति में वृद्धि के सीधे संबंधों को देखा जाए तो ऐड्स का भय स्थानीय समुदाय के सिरों पर मंडराता रहेगा। पर्यटन में स्थानीय प्रथाओं, परम्पराओं और मानकों को विकृत करने की प्रवृत्ति पाई जाती है जिसके परिणामस्वरूप पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन विघटित होता है। यह कभी कभी भाषा और सांस्कृतिक मानकीकरण आदि में विकृति पैदा करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि पर्यटन निश्चित रूप से थोड़ी आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है किंतु इसके लिए बहुत बड़ी सामाजिक कीमत चुकानी पड़ती है। इसके अतिरिक्त इन बुराइयों को आमतौर से छिपाया जाता है या उसका रूप बदल कर प्रस्तुत किया जाता है। कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है जैसे तर्क इन बुराइयों के समर्थन में प्रस्तुत किए जाते हैं।

24.4.3 पर्यटन और पर्यावरणीय प्रभाव

पर्यटन यदि पूर्ण रूप से नियोजित और नियंत्रित हो तो पर्यावरण के रखरखाव और विकास में कई प्रकार से सहयोग दे सकता है। जैसे पर्यटन महत्वपूर्ण प्राकृतिक क्षेत्रों के संरक्षण और उद्यानों तथा आरक्षित क्षेत्रों के विकास, जिसमें राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय उद्यानों की स्थापना भी शामिल है, के लिए धन उपलब्ध कराने और उन्हें उचित ठहराने में सहयोग दे सकता है क्योंकि वे पर्यटकों के लिए आकर्षण केंद्र हैं। ये उद्यान काफी हद तक उपयुक्त पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में सहायक होते हैं। इसके अतिरिक्त समुद्री संरक्षण (जैसे अण्डमान) बहुत ध्यान आकर्षित कर रहा है क्योंकि वह पर्यटकों के लिए महत्वपूर्ण आकर्षण है। पर्यटन पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण के लिए भी प्रोत्साहन देता है और धन उपलब्ध कराने में सहयोग करता है।

किंतु पर्यावरण पर पर्यटन के निषेधात्मक प्रभाव इन लाभों को निरर्थक कर देते हैं। फिर भी जहाँ तक भारत का प्रश्न है (इसे सम्पूर्ण तीसरी दुनिया का प्रश्न भी कहा जा सकता है) पर्यटन के फलस्वरूप होने वाले पर्यावरणीय असंतुलन का मुकाबला करने की कोई पर्याप्त सुविधा यहाँ उपलब्ध नहीं है। अत: अधिकांश पर्यटन स्थलों पर हम निम्नलिखित प्रकार का प्रदूषण पाते हैं :

जल प्रदूषण : दोषपूर्ण मलजल निस्सरण, होटलों, सैरगाहों आदि में मलबा हटाने के खराब प्रबंधन के कारण जल दूषित हो जाता है क्योंकि इनकी निकासी निकटवर्ती नदी, झील या समुद्र में कर दी जाती है।

वायु प्रदूषण : पेट्रोल और डिजल से चलने वाली गाड़ियों (कार, बस और मोटर साइकिल) के अधिक उपयोग के कारण वायु प्रदूषण फैलता है । जो पर्यटन क्षेत्र केवल सड़क मार्ग से जुड़े हैं वहाँ इन वाहनों का अपेक्षाकृत ज्यादा प्रयोग होता है।

मलबा निपटारे की समस्या : मलबे की कटाई , होटलों, रेस्तरांओं और मनोरंजन स्थलों से अनुचित ढंग से ठोस मलबे के निपटारन के कारण चारों ओर गंदगी फैलती है। इसके अलावा इससे कृमि रोग तथा प्रदूषण जैसी पर्यावरणीय स्वास्थ्य समस्याएं पैदा होती हैं।

पारिस्थितिक विघटन : प्राय: देखा गया है कि पर्यटकों द्वारा भंगुर पर्यावरण का अति उपयोग पारिस्थितिक क्षति की ओर ले जाता है। उदाहरणार्थ समुदायों के स्थानीय मार्ग उन घोड़ों के रौंदने से क्षति ग्रस्त हो जाते हैं जो मनोरंजन के लिए कुछ तटीय और पहाड़ी क्षेत्रों में उपयोग किए जाते हैं। स्कीइंग करने के लिए ढालों पर वृक्षों की कटाई करने से भूमिक्षरण, भूस्खलन और हिम स्खलन की संभावना बहुत बढ़ जाती है। यदि अनियंत्रित फोटोग्राफी की जाए या पशुओं को कुछ खिलाया जाए तो पशुओं के व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है। पर्यटन विकास के कारण अतिक्रमण से उनका आवास स्थल अस्त व्यस्त हो जाता है या वास स्थान घट जाता है। तटीय एवं पर्वतीय पर्यावरण विशेष रूप से अति उपयोग या अनुचित विकास के कारण असुरक्षित है। पर्यटकों द्वारा निशानी के तौर पर ले जाने के लिए आवश्यकता से अधिक संग्रह या संकटापन्न प्रजातियों की लतक, समुद्री शंख, मूंगा, कछुए की खोपड़ी और ऐसी ही अन्य वस्तुओं का स्थानीय लोगों द्वारा पर्यटकों के हाथों बेचा जाना इन प्रजातियों को समाप्त कर सकता है। नौकाओं एवं जहाजों के लंगर से मूंगे का टूटना एक प्रमुख समस्या बन गई है जैसा कि अण्डमान एवं निकोबार द्वीपों में देखा जा सकता है।

इस प्रकार की पर्यावरणीय क्षति आतिथेय क्षेत्र/अंचल में किसी भी प्रकार के पर्यटन विकास को बाधित कर देती है हालाँकि वह इसके बावजूद सीमित आर्थिक लाभ के लिए पर्यटकों को आमंत्रित करते हैं। उपर्युक्त विवेचन से यह तथ्य स्पष्ट हो चुका है कि सीमित आर्थिक सुरक्षा और लाभ के नाम पर स्थानीय लोग असीमित सामाजिक व पर्यावरणीय नुकसान सहन करते रहते हैं।

बोध प्रश्न 3

1) आतिथेय या मेजबान जन समुदाय के लिए पर्यटन किस प्रकार की सुरक्षा उपलब्ध कराता है और क्या आर्थिक आधार पर उसे उचित ठहराया जा सकता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) इस सुरक्षा की कौन सी सामाजिक कीमत चुकानी पड़ती है ?

.....

.....

.....

.....

.....

3) पर्यटन का पर्यावरण पर लाभकारी प्रभाव पड़ता है। आलोचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

24.5 पर्यटन और संस्कृति

स्थानीय लोगों और पर्यटकों की मुठभेड़ तीन मुख्य परिस्थितियों में होती है; एक तो जहाँ कोई पर्यटक कोई सामान या सेवा आतिथेय से मोल प्राप्त कर रहा है, दूसर तब जब पर्यटक और आतिथेय एक दूसरे को साथ साथ पाते हैं (जैसे समुद्र तट पर या नाइट क्लब में) और जहाँ दोनों परस्पर बदली जाने वाली वस्तुओं या विचारों सहित आमने सामने होते हैं। इस प्रकार का कोई भी परस्पर कार्यकलाप दोनों को प्रभावित करता है विशेष रूप से संस्कृति के क्षेत्र में। हमारा सांस्कृतिक, सामाजिक और नैतिक ढाँचा उस अनेक मुख वाले राक्षस से बहुत अधिक प्रभावित होता है जिसे जनपर्यटन कहते हैं। हम निम्नलिखित तीन उप भागों में संस्कृति पर पर्यटन के प्रभाव का अध्ययन करेंगे।

24.5.1 स्थानीय प्रथाएँ

पर्यटन देश/क्षेत्र की प्रत्येक सम्पत्ति अर्थात सांस्कृतिक सम्पत्ति या प्राकृतिक सम्पत्ति को पर्यटक बाजार में बिकनेवाले माल में बदल देता है। एक सीमा तक इस प्रक्रिया से स्थानीय सांस्कृतिक गतिविधियों को आर्थिक समर्थन प्राप्त होता है। इसके तहत स्थानीय संगीतकारों की सहायता की जाती है या सांस्कृतिक शिल्पकृति आदि बनाने में भी निवेश किया जाता है अन्यथा जो सार्वभौमीकरण (एकल अर्थव्यवस्था, एकरूप संस्कृति) के आक्रमण के कारण लुप्त हो सकता है। किंतु पर्यटकों के आगमन और बाजार पर इसके पड़ने वाले प्रभाव के कारण पर्यटकों की माँग को पूरा करने के लिए देशी कला के स्वरूप और प्रकृति को परिवर्तित किया जाने लगा। घरेलू पर्यटक नए नए अनुभव प्राप्त करने के लिए आते हैं। उनकी रुचि स्थानीय संगीत सुनने और कुछ जातीय/जनजातीय समुदायों के अनुष्ठानों नृत्यों को देखने में होती है। रंग बिरंगी विवरणिका पर्यटकों आतिथेय समाज के अतीत के मौलिक परिवेश को जाने का वचन देती है। उनके सामने सब कुछ ऐसे परोसे जाने का वचन दिया जाता है मानो इतिहास दुहराया जा रहा हो। संस्कृति का यह व्यापारीकरण पैसा कमाने के लिए है न कि निजी विश्वास या संतोष के लिए। किसी विशेष समुदाय द्वारा किया जाने वाला नृत्य उनसे सम्बद्ध देवता में उनके अटल विश्वास के लिए किया जाता था।

24.5.2 भौतिक संस्कृति

सांस्कृतिक पुनर्जागरण या ह्रास का सबसे प्रत्यक्ष संकेत तीसरी दुनिया के समाजों में पारस्परिक कला की दशा में प्रतिबिंबित होता है। पर्यटक हस्तशिल्प के बाजारों में वृद्धि ने स्थानीय उत्पादन को नकारात्मक एवं सकारात्मक दोनों ही दिशाओं में प्रेरित किया है।

बहुत से सकारात्मक प्रभावों में से एक निस्संदेह यह है कि कई प्रकार की नष्ट होती हुई पारम्परिक कलाओं को पर्यटकों के आनेवाले धन से बढ़ावा मिला है। दूसरी ओर हस्तशिल्प के तैयार बाजार के दबाव मात्र से ही कौशल और 'एयर पोर्ट आर्ट' कहलाई जानेवाली सस्ती नकल के उत्पादन के कारण गुणवत्ता में गिरावट आई है। कुछ पर्यवेक्षकों का दावा है कि इस संस्कृति की आवश्यकता से अधिक बिक्री से वास्तविक वस्तु इतनी विकृत और रूपांतरित हो गई है कि गोआ और राजस्थान जैसे राज्यों के शिल्पी परम्परागत प्रारूप, आकार और प्रकार भूल चुके हैं।

24.5.3 नैतिक आचरण

स्थानीय लोगों पर पर्यटन के प्रभाव के विषय में लिखे विस्तृत साहित्य से यह स्पष्ट है कि पर्यटकों के आगमन में वृद्धि और यौन विक्रय (वेष्यावृत्ति), विभिन्न प्रकार के अपराधों और संगठित जुए में होने वाली वृद्धि से सीधा संबंध है।

विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले पर्यटकों का स्थानीय निवासियों पर और विशेष रूप से नौजवानों पर पड़ता है और इससे उनके नैतिक मूल्यों और सोचने विचारने के ढंग में अंशत: या पूर्णत: परिवर्तन आता है। इससे एक समुदाय की विभिन्न पीढ़ियों में टकराव भी हो सकता है और उनके बीच सोचने विचारने के दृष्टिकोण का अन्तराल बढ़ सकता है। इससे सांस्कृतिक चरित्र, आत्म सम्मान और सम्पूर्ण सामाजिक पहचान का ह्रास हो सकता है क्योंकि दौलतमन्द और प्रतीयमान रूप से सफल तड़क भड़क से परिपूर्ण पर्यटकों के साथ आई विदेशी संस्कृति का सीधा प्रभाव स्थानीय समाज पर पड़ता है। अबतक आपको यह भली भांति स्पष्ट हो गया होगा कि मेजबान संस्कृति की परवाह किए बिना पर्यटन के विकास से जो आर्थिक लाभ होता है वह इसके लिए चुकाई गई सामाजिक कीमत से काफी कम होता है।

बोध प्रश्न 4

1) स्थानीय प्रथाओं पर पर्यटन का क्या प्रभाव पड़ता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) क्या आप समझते हैं कि मेजबान संस्कृति पर पड़ने वाला सकारात्मक प्रभाव नकारात्मक प्रभाव से ज्यादा महत्वपूर्ण होता है ?

.....

.....

.....

.....

24.6 सारांश

इस इकाई में हमने देखा कि पर्यटन रोजगार और आय उत्पन्न करके, आर्थिक ढाँचे में सुधार लाकर और उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करके निश्चित रूप से कुछ आर्थिक लाभ उपलब्ध कराता है। किंतु दूसरी ओर इसके कारण वस्तुओं और अचल सम्पत्ति की कीमतें बढ़ जाती हैं, और पर्यटन का सबसे अधिक क्षुब्ध कर देने वाला पक्ष स्थानीय प्रथाओं और परम्पराओं पर पड़ने वाला उसका नकारात्मक प्रभाव है। अगर हम पर्यटन के प्रतिकूल सामाजिक प्रभावों को देखें तो कुल मिलाकर पर्यटन के कारण होने वाले आर्थिक लाभ बहुत कम दिखाई देता है। मेजबान संस्कृतियों की वास्तविकताओं को ध्यान में रखकर ही सावधानीपूर्वक योजना बनाना पर्यटन विकास का सही तरीका है।

24.7 शब्दावली

सैलानी/पर्यटक : स्वेच्छा से अस्थाई तौर पर इस आशा में अपेक्षाकृत लम्बी यात्रा करने वाला कि वह यात्रा के अनुभव से आनन्द उठा सकेगा।

आतिथेय/स्थानीय जनसमुदाय : उस स्थान की जनसंख्या जिसे पर्यटक सैरगाह के रूप में पसन्द करता है।

24.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए उपभाग 24.2.1

2) देखिए उपभाग 24.2.3

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उपभाग 24.3.1

2) देखिए उपभाग 24.3.2

बोध प्रश्न 3

1) देखिए उपभाग 24.4.1

2) देखिए उपभाग 24.4.2

3) देखिए उपभाग 24.4.3

बोध प्रश्न 4

1) देखिए उपभाग 24.5.1

2) देखिए उपभाग 24.5.1, 24.5.2, एवं 24.5.3

इकाई 25 पर्यटक का व्यवहार

इकाई की रूपरेखा

25.0 उद्देश्य

25.1 प्रस्तावना

25.2 आगंतुक की परिभाषा

25.3 भारत : पर्यटन स्थल और पर्यटक

25.4 पर्यटक व्यवहार और पर्यावरण

- 25.4.1 पर्यटक और भौतिक पर्यावरण
- 25.4.2 सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश और पर्यटक व्यवहार
- 25.4.3 पर्यटक व्यवहार और आर्थिक परिवेश

25.5 असंतुलन की रोकथाम

- 25.5.1 पर्यटकों की भूमिका
- 25.5.2 सरकार की भूमिका

25.6 सारांश

25.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

25.0 उद्देश्य

पर्यटन आजकल विश्व की अर्थव्यवस्था में निर्णायक भूमिका निभाने लगा है। वास्तव में भ्रमण और पर्यटन मिलकर धन, लाभ और रोजगार की दृष्टि से सबसे बड़ा उद्योग है। इसकी संभावना प्रतिदिन बढ़ रही है क्योंकि विदेशी और घरेलू दोनों प्रकार के पर्यटकों की संख्या में जबरदस्त वृद्धि हुई है। एक तरफ जहाँ पर्यटक इस व्यापार की रीढ़ है और इसी के बल पर करोड़ों रुपयों का उद्योग खड़ा है वहीं यह भी नहीं भूलना चाहिए कि उनके गैर जिम्मेदाराना व्यवहार से पर्यावरण बर्बाद हो रहा है। अतएव इस इकाई में हमारा उद्देश्य आपको :

- आगंतुक शब्द का अर्थ समझाना है,
- पर्यटकों के एक संक्षिप्त इतिहास और आज की दुनिया में उनके बढ़ते हुए महत्व से अवगत कराना है,
- गैरजिम्मेदाराना पर्यटक व्यवहार के कुपरिणामों से अवगत कराना है ,
- आगंतुकों की ओर से एक पारिस्थितिक संवेदी व्यवहार की आवश्यकता का महत्व समझाना है, और
- आगंतुक पर्यावरण संतुलन को ठीक तरह बनाए रखने के कुछ उपाय के बारे में बताना है।

25.1 प्रस्तावना

इस समय यह कहना अनावश्यक है कि पर्यटकों की संख्या जितनी ज्यादा होगी पर्यटन से होने वाली आमदनी उसी अनुपात में बढ़ती जाएगी। इससे सम्बद्ध आंकड़ों को देखने से बात और भी स्पष्ट हो जाएगी। विश्व पर्यटन संगठन (WTO) के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लगभग पचास करोड़ पर्यटकों ने 1993 में यात्रा की और इन यात्राओं में तीन हजार चालीस करोड़ (304 बीलियन)

अमेरीकी डॉलर खर्च किए। विश्व के कुल निर्यात में पर्यटन का हिस्सा 8 प्रतिशत है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में सेवाओं में 30 प्रतिशत से भी अधिक हिस्सा और पूरी दुनिया में दस करोड़ से भी ज्यादा रोजगार प्रदान करता है। यह किसी भी एक अकेले औद्योगिक क्षेत्र की तुलना में अधिक लोगों को रोजगार देता है और जिसका अधिसंरचनात्मक सुविधाओं (ढुलाई, परिवहन और रेस्तरां) पर निवेश अनुमानतः 30 हजार करोड़ (3ट्रिलियन) अमरीकी डॉलर है। यह कहना नितांत स्वभाविक है कि यह पर्यटक महत्व के स्थानों की ओर सदैव बढ़ती हुई भ्रमणकारियों की संख्या के कारण संभव हुआ है। विश्व पर्यटन संगठन (WTO) के अनुसार दक्षिण एशिया में अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों के आगमन में नवें दशक के अन्तिम पाँच वर्षों में 5.25 प्रतिशत वृद्धि की आशा है जबकि शेष सम्पूर्ण विश्व में संभावित वृद्धि 4.4 प्रतिशत होने की उम्मीद है। पर्यटन की दृष्टि से एशिया में आनेवालों की सबसे बड़ी संख्या भारत में आती है। ऐसे पर्यटकों के बड़े पैमाने पर आगमन से आगन्तुकों का व्यवहार विशेष रूप से पर्यावरण के साथ उनके संबंधों के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। फिर भी आगन्तुक व्यवहार के संबंध में विस्तृत विचार विमर्श से पहले हमें आगन्तुक शब्द का क्या अर्थ है यह समझ लेना चाहिए।

25.2 आगन्तुक की परिभाषा

पर्यटन के संदर्भ में आगन्तुक का मतलब पर्यटक होता है। अतः व्यावहारिक दृष्टि से आगन्तुक का अर्थ पर्यटक है। इस इकाई में आगन्तुक एवं पर्यटक का पर्याय के रूप में उपयोग किया गया है।

पर्यटन में प्रमुख भूमिका पर्यटक की है। उसकी उपस्थिति के बिना पर्यटन अर्थहीन है। टूरिस्ट (पर्यटक) शब्द की उत्पत्ति तेरहवीं शताब्दी में हुई थी। टूर (भ्रमण) शब्द से टूरिस्ट (पर्यटक) बना है और यह टूर लैटिन शब्द टर्नस से निकला है जिसका अर्थ चक्र या घूमने वाला चक्र है।

सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इस शब्द का उपयोग एक जगह से दूसरी जगह की यात्रा करने, घूमने निकलने या देश या प्रदेश के प्रमुख भागों को छूते हुए गोलाकार भ्रमण करने के संदर्भ में किया जाता था। बाद में टूरिस्ट शब्द की कई परिभाषाएं सामने आईं।

पर्यटक आंकड़ों को एकत्र करने और अन्तर्राष्ट्रीय संगति को सुनिश्चित करने के महत्व का अनुभव करते हुए 1937 में लीग ऑफ नेशन्स की सांख्यिकीय विशेषज्ञ समीति ने परिभाषा निश्चित की। लीग ऑफ नेशन्स ने सदस्य देशों की सहमति से विदेशी पर्यटक शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया है :

कोई व्यक्ति प्रायः जहाँ का निवासी हो उसके अतिरिक्त किसी देश में कम से कम 24 घंटे के लिए जाता है। अन्य देशों के भ्रमण के अनेक कारण हो सकते हैं; सुख के लिए, घरेलू कारणों से, स्वास्थ्य, व्यापार, शिक्षा, प्रतिनिधिक सभा (वैज्ञानिक, प्रशासनिक, धार्मिक, क्रीड़ा आदि)। इसमें वह लोग भी सम्मिलित हैं जो समुद्री रास्तों से घूमने आते हैं 24 घंटे से भी कम ठहरते हैं।

विदेशी पर्यटक के सामान घरेलू पर्यटक शब्द के लिए कोई सर्वतः मान्य परिभाषा नहीं है फिर भी इसके लिए कुछ मापदंड निर्धारित किए जा सकते हैं :

निवास स्थान : आम तौर से देश की सीमा में ही भ्रमण करने वाले सैलानियों को घरेलू पर्यटक कहा जाता है।

भौगोलिक सीमा : राष्ट्रीय क्षेत्र के भीतर

भ्रमण की अवधि : अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटक की मान्य परिभाषा के अनुसार घरेलू पर्यटक वह है जो कम से कम 24 घंटे अपने सामान्य निवास से अलग रहकर समय व्यतीत करता है या दूसरे स्थल पर रात गुजारता है।

इसमें दो और बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

की गई यात्रा की दूरी : यह दूरी 40 से 160 किलोमीटर के मध्य हो सकती है।

प्रेरणा : लाभकर कार्यों के अतिरिक्त किसी और उद्देश्य से उस स्थान की यात्रा।

कभी कभी घरेलू पर्यटन में केवल अवकाश अथवा फुरसत की यात्रा ही सम्मिलित होती है। अब हम पर्यटन और पर्यटक के संक्षिप्त इतिहास पर एक दृष्टि डालेंगे और पता लगाएंगे कि पर्यटक गतिविधि से हाल में हुई तीव्र वृद्धि के क्या कारण हैं

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में पर्यटक इस विषय पर हमारी परिचर्चा भारत पर ही केंद्रित होगी। ऐतिहासिक अभिलेखों से यह स्पष्ट है कि विजयी यूनानी, व्यापारी रोमवासी, विद्वान चीनवासी और व्यापार करने वाले अरब किसी न किसी कारण से भारत की यात्रा पर आते रहे। ह्वान सिआंग, फाहियान, अलबरूनी, अब्दुल रज्जाक और मारकोपोलो जैसे अमर पर्यटकों के विस्तृत विवरणों से हम अपने देश के अतीत से परिचित हुए हैं। अलबरूनी अपनी पुस्तक किताबुलहिन्द में धर्म एवं दर्शन, सामाजिक व्यवस्था, नागरिक एवं धार्मिक कानून, भूगोल, खगोलशास्त्र, उत्सव, आचरण एवं प्रथाएं और विविध प्रकार के अनेक विषयों से सम्बद्ध सूचनाएं प्रदान करता है। अलबरूनी ने पृथ्वी का विवरण देते समय भारत और उसकी नदियों, सरिताओं, पर्वतों, नगरों और लोगों का बहुत सुन्दर वर्णन [illegible] है। अलबरूनी उसका उल्लेख भी करता है जिसे आधुनिक समय में पारिस्थितिक संतुलन कहत प्रकृति की सुरक्षा की आवश्यकता भी व्यक्त करता है। अलबरूनी के समान ही बाबर भी अपने संस्मरण बाबरनामा में "लम्बे चौड़े देश हिन्दुस्तान" का सविस्तार विवरण प्रस्तुत करता है। वह भूगोल और जलवायु के विषय में लिखता है। भारत की तुलना मुस्लिम देशों से करते हुए वह कहता है कि भारत एक विचित्र देश है। उसके पहाड़, नदियाँ, जंगल, शहर खेत, पशु, वनस्पति, लोग, भाषा, वर्षा और हवाएं सब ही भिन्न हैं। बाबर भारत की वनस्पतियों एवं पशुओं का बहुत स्पष्ट वर्णन करता है। अत्यन्त महत्वपूर्ण होने के बावजूद इससे पहले पर्यटन विनाशकारी कभी नहीं रहा। यही नहीं पर्यटन और पर्यटकों की संख्या बहुत प्रतिबन्धित और नियंत्रित रही है। धन्य है आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण, नगरीकरण, परिवहन और संचार में विकास कि सारी दुनिया 'सार्वभौम ग्राम' में बदल गया है और मानव जीवन मशीनी हो गया है। आजकल मनुष्य निर्णय लेने के तनाव से बचने के लिए यात्रा करता है और भीड़ भाड़ वाले प्रदूषित नगर से भागने के लिए भी उसे भ्रमण करना पड़ता है। मानव तंत्र किसी बैटरी के सामान है जिसे समय समय पर आवेशित करना पड़ता है, एक वर्ष में एक अवकाश के पुराने प्रारूप के स्थान पर उपभोक्ता उन्मुख समाज में लोग वर्ष में 2-3 बार घूमने के लिए निकलने लगे हैं। भारत का पर्यटक व्यापार का अंश काफी प्रभावशाली रहा है। 1994 में विदेशों से लगभग 18 लाख के आसपास पर्यटक भारत आए। घरेलू पर्यटन भी बहुत तेजी से बढ़ा रहा है क्योंकि देशवासियों में अधिक अवकाश लेने की इच्छा भी पैदा हुई है और अतिरिक्त खर्च करने के लिए आय भी उपलब्ध हुई है। भारतीय अनुभवों की विशालता, विविधतापूर्ण भू-आकशति और संस्कृतियों के अन्तर्मिश्रण ने भारत को पर्यटकों का स्वर्ग बना दिया है।

25.3 भारत : पर्यटन स्थल एवं पर्यटक

इस अनुभाग में हम उन कारकों का मूल्यांकन करेंगे जिनके कारण अन्य पर्यटन स्थलों की तुलना में भारत का महत्व बढ़ता जा रहा है। इसके अलावा भारत के अन्य पर्यटन स्थलों और प्रकारों का भी अवलोकन करेंगे। यह आगन्तुकों या पर्यटकों के व्यवहार को समझने के लिए अच्छा साधन होगा।

भौगोलिक दृष्टि से भारत की प्राकृतिक विशेषताएं अनुपम हैं जैसे अप्रीतिकर हिम, मरुस्थल और गगनचुम्बी पर्वत श्रेणियाँ, उर्वर जलोढ मिट्टी के उपजाऊ मैदान, उष्णकटिबन्धीय वर्षा प्रचुर वन और घुमावदार समुद्र तट। जातीय दृष्टि से यह देश अलग-अलग प्रजातियों का सम्मिश्रण है जिनमें मूल निवासी और बाद में आए हुए अप्रवासी, आक्रमणकारी एवं अधिवासी शामिल हैं। इस देश में हर प्रकार की मानव अभिव्यक्तियों को फलने फूलने के लिए उपयुक्त उर्वर धरती मिली। यह अभिव्यक्ति चाहे

भाषा के संबंध में हो, वेशभूषा, भोजन कला, या फिर कौशल के विषय में. यह सदैव पर्यटकों को आनन्दित करने हेतु और पर्यटकों के लक्ष्य के अनुरूप होती है।

देश का अनुपम भौतिक और सांस्कृतिक परिदृष्य पर्यटकों को आकृष्ट करता है। इसमें विदेशी और देशी दोनों प्रकार के पर्यटक शामिल होते हैं और इनकी रुचि और पसंद भी अलग-अलग होती है।

किसी पर्यटन स्थल का आकर्षण और वहाँ पर्यटकों का जाना कई कारकों पर आधारित होता है। अत: मौसम और जलवायु उनपर गहरा प्रभाव डालते हैं। गर्म देशों से आए लोग शिमला, मसूरी, दार्जिलिंग आदि पर्वतीय स्थलों पर जाना पसंद करेंगे। अन्तर्देशीय पर्यटक के लिए मौसम महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उत्तरी भारत के कुछ क्षेत्रों जैसे दिल्ली, आगरा, इलाहाबाद के लोग अपनी गर्मियाँ पर्वतीय स्थलों पर या दक्षिणी भारत के समुद्री जलवायु वाले क्षेत्रों में बिताना चाहते हैं

लोगों की पसंद भी बहुत महत्वपूर्ण है। ऐसे लोग जो इतिहास या पुरातत्व में रुचि रखते हैं वह महलों, दुर्गों, खुदाई के स्थलों और ऐतिहासिक महत्व के स्थानों का भ्रमण करते हैं। वन्य जीवों में रुचि रखने वाले पर्यटक या वनस्पति विज्ञानी, प्राणी विज्ञानी, पक्षी विहारों, वनस्पतिक उद्यानों वन्यजीव आरक्षित क्षेत्रों आदि को वरीयता देंगे। जो लोग व्यापार में रुचि रखते हैं वह अपनी गतिविधियाँ महानगरों जैसे दिल्ली, मुम्बई , कलकत्ता, चेन्नई, बंगलौर आदि तक ही सीमित रखेंगे। प्रकृति प्रेमी पर्यटक घाटियों, समुद्र के रेतीले तटों, पहाड़ी स्थलों आदि पर जाना पसंद करेंगे। संस्कृति में रुचि रखने वाले पर्यटक सांस्कृतिक स्थलों, शिल्प ग्राम, राजस्थान के अन्दरूनी इलाकों, ठेठ देशी गाँवों आदि देखने में रुचि रखते हैं।

कुछ ऐसे स्थान हैं जहाँ वर्ष भर पर्यटकों का आवागमन होता रहता है जैसे गोवा, कोवलम। ये महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल हैं जो विभिन्न प्रकार के सैलानियों का आदर संत्कार करते हैं। यहाँ रोमांचक खेलकूद का विशेष इंतजाम है।

अत: संक्षेप में पर्यटन स्थल निम्नलिखित रूप से वर्गीकृत किया जा सकता है :

- सांस्कृतिक स्थल– जैसे ठेठ गाँव, शिल्प ग्राम वाले गाँव
- प्राकृतिक स्थल– जैसे पहाड़, तट, बंदरगाह, द्वीप, घाटी, मरुस्थल
- वन्यजीव स्थेल– जैसे वन्यजीव आरक्षित क्षेत्र, वनस्पतिक उद्यान
- ऐतिहासिक महत्व के स्थल– जैसे दिल्ली, आगरा, जयपुर
- धार्मिक महत्व के स्थल– दक्षिणी भारत के मंदिरों के नगर, जैसे पुरी
- व्यापारिक क्षेत्र– जहाँ पूर्णरूप से विकसित बाजार है
- शैक्षिक महत्व के स्थान– जैसे विश्वविद्यालय आदि

इस संदर्भ में याद रखने योग्य महत्वपूर्ण बात यह है कि जो भी स्थल कोई पर्यटक देखता है या जहाँ भी जाता है वहाँ उसके और उस स्थल के पर्यावरण के बीच परस्पर सम्पर्क होता है। इस क्रिया कलाप में वे एक दूसरे को प्रभावित करते हैं और यह संबंध बहुआयामी होता है।

25.4 पर्यटक व्यवहार एवं पर्यावरण

पर्यटक किस प्रकार आचरण करता है, और वह कहाँ कहाँ घूमा फिरा, किस प्रकार वह लोगों से बातचीत करता है और वह खर्च किस प्रकार करता है आदि क्रिया कलापों से उसके पूरे व्यवहार का पता चलता है। अपने व्यवहार के हर पक्ष से पर्यटक सकारात्मक या नकारात्मक रूप से पर्यावरण को प्रभावित करता है। यहाँ हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि इस इकाई में हम अपना ध्यान आगंतुकों के व्यवहार के निषेधात्मक प्रभावों पर ही ध्यान केंद्रित करेंगे। हालाँकि इसका उद्देश्य पर्यटक व्यवहार के सकारात्मक प्रभाव को कम से कम करके आंकना नहीं है। हमारे विचार का संबंध 'परजीवी'

पर्यटकों से है अर्थात वह लोग जो अपने इस आगमन से अधिकतम दोहन चाहते हैं। पर्यटकों का यह वर्ग पर्यावरण की जरा सी भी परवाह नहीं करता। इस प्रकार की समस्या शिक्षित तथा पारिस्थितिक संवेदी पर्यटकों के साथ नहीं होती।

इस भाग को सरल और अधिक स्पष्ट करने के लिए हम पर्यावरण को विभिन्न घटकों में विभक्त करेंगे क्योंकि पर्यावरण में केवल भौतिक या जैविक पर्यावरण ही सम्मिलित नही है बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश भी शामिल है। इस प्रकार हम इन तीन घटकों को केंद्र में रखकर विचार विमर्श करेंगे, जैसे

- भौतिक पर्यावरण
- सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश, और
- आर्थिक परिवेश

25.4.1 पर्यटक और भौतिक पर्यावरण

एक पर्यटक अपनी अनेक प्रकार की गतिविधियों और तौर तरीकों से पर्यटन स्थल के आसपास के भौतिक पर्यावरण को अस्तव्यस्त कर सकता है। ऐसी परिस्थितियों में पर्यावरण पर पड़ने वाला प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि पर्यावरण पर किस सीमा तक बाहरी हस्तक्षेप हो रहा है और यह क्षेत्र किस हद तक पर्यटन का भार सहन कर सकता है। ऐसे ही बहुत से अनोखे पर्यावरण में पर्यटक को केवल दिन में सैर करने की अनुमति ही मिलती है और नियन्त्रित परिस्थितियों में स्थानीय समुदायों से उन्हें दूर रखा जाता है। यह स्थिति लक्षद्वीप द्वीपों की है जहाँ एक निर्जन द्वीप, बंगाराम, को पर्यटन विकास के लिए चुना गया। फिर भी बहुत से परम्परागत पर्यटक स्थलों में, जो बंगाराम की श्रेणी में नहीं आते, भौतिक पर्यावरण बहुत संरक्षित नहीं है। ऐसे स्थानों पर पर्यटकों के कार्यकलापों के कारण निम्नलिखित समस्याएं सामने आती हैं:

- **जूठा भोजन** – इसमें कागज के डिब्बे, पॉलीथीन के पैकेट, छोड़ा हुआ खाना, बोतलें, पत्तल आदि शामिल होता है। यह समस्या व्यापक रूप धारण कर चुकी है। पर्यटक अपने साथ खाद्य सामग्री लाते हैं जिनके अवशेष लापरवाही के साथ फैलाकर चले जाते हैं। अतः गोवा के तट पर आपको बोतल और पैकेट जगह जगह पर फैले हुए मिलेंगे। इनमें से कुछ अवशेष नष्ट किए जा सकते हैं जबकि प्लास्टिक से बनी वस्तुएं नष्ट नहीं की जा सकती या उसके विघटन में बहुत समय लगता है। यह प्राकृतिक सौन्दर्य नष्ट कर देता है।
- **कूड़े का ढेर (खाद्य पदार्थ के अतिरिक्त)** – यह पर्यटकों से जुड़ी महत्वपूर्ण समस्या है। पर्यटक इस बात से लगभग अनभिज्ञ होता है कि उसका यह कार्य भौतिक पर्यावरण को कितनी क्षति पहुँचा सकता है। तिरूपति या पुरी की मन्दिर नगरी इसके स्पष्ट उदाहरण हैं। यहाँ आनेवाले श्रद्धालु अनुष्ठानों आदि के पश्चात उनके लिए व्यर्थ हो जाने वाले सामानों को इधर उधर फेंक देते हैं। अतः भूमि ही नहीं निकटवर्ती जल भी दूषित हो जाता है।
- **ऐतिहासिक स्थल** – पर्यटकों के लापरवाह व्यवहार का ऐतिहासिक स्थलों पर कई प्रकार से प्रभाव पड़ता है। फिल्म की शूटिंग करने वाले पर्यटकों के कारण एक विशेष प्रकार की समस्या पैदा होती है। अक्सर यह पाया गया है कि फिल्म शूटिंग के दौरान उस ऐतिहासिक स्मारक का वैभव स्थाई तौर पर क्षतिग्रस्त हो जाता है। यही समस्या दुर्ग, द्वीप, या समुद्र तट जैसे स्थलों के लिए भी सत्य है। ऐतिहासिक स्थलों के साथ एक और समस्या जुड़ी हुई है। यहाँ आने वाले पर्यटक अपना, अपने साथियों का नाम तथा अपने आने की तारीख इनकी दीवारों-छतों आदि पर खुरच कर लिख देते हैं। कभी कभी अपने आने की यादगार के तौर पर वहाँ का संगमरमर, किसी पत्थर के टुकड़े या अंश तोड़ कर ले जाना भी एक गंभीर और ऐतिहासिक स्मारक को क्षतिग्रस्त करने वाली समस्या है।

- **वन्य जीव एवं वनस्पति स्थल** – इन स्थलों की अपनी अलग समस्या है। किसी चिड़ियाघर या जीव आरक्षित क्षेत्र में पशुओं को छेड़ना या परेशान करना एक आम आदत है। इसके अतिरिक्त स्थानीय लोगों के साथ गुप्त सहयोग करके शासन के प्रतिबंध के बावजूद जानवरों का शिकार बहुत बड़ी समस्या है। वृक्षों की शाखाओं को तोड़ना और उनके तनों पर अपना नाम खोदना भी एक अलग प्रकार की समस्या है।

- **द्वीप और तट** – बहुत से ऐसे पर्यटक भी आते हैं जो अनजाने में स्थानीय पर्यावरण को हानि पहुँचाते हैं. जैसे अत्यधिक तैराकी या स्क्यूबा डाइविंग से न केवल जल प्रदूषित होता है बल्कि समुद्री जीवों का आवास भी अस्त व्यस्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त पर्यटकों द्वारा मूंगा तोड़ना, विशेष रूप से लक्ष द्वीप में, या फिर समुद्री सीप और घोंघे या पत्थर आदि तोड़कर ले जाना भी भौतिक पर्यावरण को प्रभावित करता है।

इस प्रकार पर्यटक कई प्रकार से पर्यटन स्थल के भौतिक पर्यावरण को नुकसान पहुँचाता है, जिनमें से कुछ का उल्लेख हमने ऊपर किया। अब हम यह देखेंगे कि किसी स्थान का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश पर्यटकों के आने से किस प्रकार प्रभावित होता है।

25.4.2 सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश एवं पर्यटक व्यवहार

यदि पर्यटन को विस्तृत परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो यह विभिन्न संस्कृतियों का परस्पर मिश्रण है। आगन्तुक यह कम ही अनुभव करते हैं कि एक अलग संस्कृति, जीवनशैली और सामाजिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस प्रकार एक सांस्कृतिक आदान प्रदान की प्रक्रिया चलते रहती है जिसमें आपस में मिलती हुई संस्कृतियाँ (विशेष रूप से अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए सत्य है) एक दूसरे पर प्रभाव डालती हैं। संस्कृति संक्रमण की ये प्रक्रिया थोड़ी सी एकतरफा है। देशी लोग विदेशी व्यवहार तो सीख लेते हैं किंतु विदेशी अपने कम समय के ठहराव के कारण ऐसा नहीं कर पाते। ऐसा विभिन्न बातों से व्यक्त होता है :

- **मन में बैठी हुई फिजूल खर्ची की आदत :** स्थानीय लोगों में या पर्यटकों में फिजूल खर्ची की आदत अधिक समृद्ध समुदायों से आती है जो पर्यटन के दौरान सामान्य जीवन में जैसे खर्च करते हैं उससे अधिक खर्च करते हैं। इसके बहुत से अप्रत्यक्ष नतीजे निकलते हैं क्योंकि जब स्थानीय लोगों के पास धन का अभाव हो जाता है तो वे कभी कभी अवैध कार्य भी करने लगते हैं।

- **नग्नता और मदिरापान :** नग्नता एवं मदिरापान की आदत कुछ पर्यटक अपने साथ लाते हैं। ये विशेष रूप से गोवा और कोवलम के लिए सत्य है। ये बात किसी न किसी तरह विदेशियों के लिए स्वीकार्य हो सकती है किंतु यहाँ भारत में इसके कारण पारम्परिक सामाजिक ढाँचे के टूटने का भय निहित है।

- **वस्त्र एवं भोजन :** कपड़ा पहनने और भोजन करने की आदतों की दृष्टि से भी विदेशियों और देशी लोगों में बड़ा अन्तर है, विशेष रूप से यदि आप की पृष्ठभूमि ग्रामीण या उपनगरीय है। इस कारण कई बार स्थानीय लोग अपना प्रतिरोध प्रकट रहते हैं या सहयोग देना बंद कर देते हैं।

- **धर्म :** यह सर्वविदित तथ्य है कि पर्यटकों और स्थानीय निवासियों के धार्मिक विश्वास एक दूसरे से भिन्न होते हैं परंतु समस्या उस समय उत्पन्न हो जाती है जब पर्यटक या तो अपने धार्मिक विश्वास को देशी लोगों के विश्वास पर आरोपित करने का प्रयास करते हैं या उसमें हस्तक्षेप करते हैं। इससे कभी कभी नीयत खराब न होते हुए भी, केवल उत्सुकतावश या जानकारी प्राप्त करने के लिए किसी प्रकार की धार्मिक चर्चा समस्या का कारण बन सकती है।

- **जातीयता** : कभी कभी प्रजातियों, जातीयता आदि के विषय में जानने के उत्साह में पर्यटक जाने अनजाने आदिवासियों की प्रथाओं में हस्तक्षेप कर बैठते हैं। आदिवासी इसका विरोध करते हैं और अक्सर उनका यह विरोध हिंसक रूप ले लेता है। अभी हाल ही में अण्डमान निकोबार में आदिवासियों द्वारा पर्यटकों पर प्रहार किए जाने की कई घटनाएं घटित हुई हैं। इसी प्रकार पर्यटकों का धन और विश्व दृष्टिकोण आदिवासी धार्मिक अनुष्ठान, धर्मक्रियाएं, प्राचीन कला, घरेलू जीवन और सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्र की गतिविधियों को रूपांतरित कर देते हैं। उदाहरणार्थ लद्दाख में मठ उत्सव अब शीत ऋतु में नही होते जो पर्यटन की दृष्टि से उपयुक्त समय नहीं है। वाणिज्यिकरण के कारण इसे अब ग्रीष्म ऋतु में आयोजित किया जाता है जब पर्यटक आते हैं। अन्दरूनी ग्रामीण अथवा आदिवासी क्षेत्रों में पर्यटक की घुसपैठ अन्य प्रकार की उलझनें पैदा कर सकता है। पर्यटक देशी लोगों को वस्तु के रूप में परिवर्तित कर देता है, उनके चित्र उतारता है, उनके घरों, जीवन शैली के फोटो खींचता है। उन्हें छूकर देखते हैं कि क्या वह वास्तविक है। वह उन स्थानीय लोगों द्वारा पहने जाने वाले वस्त्रों और गहनों की बोली लगाता है। उनके संगीत को रिकॉर्ड करता है और उनकी संस्कृति का विश्लेषण करता है। इसका परिणाम यह निकलता है कि स्थानीय लोग पर्यटकों के प्रवेश को लेकर बंट जाते हैं। वह लोग जो पर्यटन उद्योग के नौकर होते हैं पर्यटकों के अत्यंत वैयक्तिक क्षेत्रों में घुसपैठ को प्रोत्साहन देते हैं किंतु दूसरे लोग अपनी संस्कृति के रूपांतरण पर नाराज होते हैं।
- **नशीली दवाओं का सेवन, वेश्यावृत्ति एवं बाल वेश्यावृत्ति** : आजकल पर्यटन स्थलों में नशीली दवाओं का अवैध व्यापार और बाल वेश्यावृत्ति कुछ पर्यटकों के घृणित रूप को प्रदर्शित करता है। व्यक्तिगत लाभों के लिए पर्यटन की भावना को समाप्त करने का यह एक घृणित कार्य है।

इसी प्रकार सांस्कृतिक आदान प्रदान के क्रम में कई समस्याएं पैदा होती हैं, जैसे भाषा, संचार, बोलचाल का व्यवहार, विचार विमर्श के विषय, जिन्हें यदि उचित ढंग से निपटाया न गया तो अप्रिय निष्कर्ष पैदा हो सकते हैं। किसी स्थान/स्थल की सामाजिक परिवेश पर पर्यटकों के परिणाम पर विचार करते समय मेहमान-मेजबान संबंध महत्वपूर्ण पक्ष बन जाता है। मेहमान-मेजबान संबंधों में कभी कभी ऐसी परिस्थितियां विभिन्न चरणों पर उत्पन्न हो सकती है जो दूसरी परिस्थितियों की ओर ले जाए। और ऐसा मेहमान या मेजबान के दृष्टिकोण के कारण हो सकता है। मेज़बान की दृष्टि से विविध परिस्थितियां निम्न प्रकार हो सकती है :

क) सबका मुसकान के साथ स्वागत,

ख) शांत एवं अलग-थलग रहिए,

ग) पैसा छीनिए या धोखा दीजिए,

घ) मित्रतापूर्वक रहिए।

यदि पर्यटन को स्वस्थ स्थानीय परिवेश मापदंड के अनुसार आयोजित न किया गया तो कभी भी स्थानीय लोगों के रवैये में परिवर्तन हो सकता है।

मुसकान– ठंडापन– लूट खसोट– विद्वेश

या

विद्वेश– मित्रता आदि (टी. एस-2 के खंड 1 की इकाई 3 भी देखिए)

25.4.3 पर्यटक व्यवहार एवं आर्थिक परिवेश

किसी स्थान के आर्थिक परिवेश पर पर्यटक का स्थाई प्रभाव पड़ता है। जब पर्यटन स्थानीय अर्थव्यवस्था से जोड़ा जाता है तो यह निश्चित रूप से क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को लाभ पहुँचाता है। अतिथि-आतिथेय संबंध इस बात पर निर्भर होता है कि पर्यटन स्थानीय लोगों को कितना लाभ

पहुँचाता है। इसके अतिरिक्त जहाँ पर्यटकों और स्थानीय लोगों के मध्य अंतर होता है वहां पर्यटन के खिलाफ स्थानीय प्रतिरोध जन्म लेता है और पर्यटकों के कुछ आचरणों का विरोध किया जाता है। जैसे हैदराबाद में दुल्हन खरीदने की प्रथा के खिलाफ विरोध के रूप में प्रकट हुआ है। कभी कभी पर्यटन पर नव-उपनिवेशी प्रवृत्ति हावी हो जाती है जहां पर्यटन का अधिकांश लाभ विदेशी नियंत्रण के कारण देश से बाहर जाता है। कुछ मामलों में निजीकरण के कारण स्थानीय नियंत्रण कम हुआ, किंतु भारत में निजी एवं सरकारी क्षेत्र पर विदेशी नियंत्रण लगातार बढ़ता जा रहा है। जन सांस्कृतिक प्रभाव के अतिरिक्त नव-उपनिवेशी नियंत्रण में विदेशी प्रभाव बढ़ता जाता है और स्थानीय विशेषज्ञों तथा स्थानीय प्राथमिकताओं को दरकिनार कर दिया जाता है। पर्यटकों के विरूद्ध आतंकवादी गतिविधियां और हिंसा या उन्हें दी जाने वाली धमकी इस प्रकार के पर्यटन विकास का परिणाम हो सकती है। इसके अतिरिक्त कला एवं कौशल या स्मृति चिह्न व्यापार की वृद्धि ऐसे उत्पादों के बाजार को बढ़ा कर भी या तो उत्पादक को लाभ नहीं पहुंचता या देशी कला को लें जाने योग्य बनाकर उसके महत्व को बहुत गिरा देता है। इनके अलावा कुछ और आर्थिक कुपरिणाम निम्नलिखित हैं :

- पर्यटन कभी कभी और कहीं कहीं स्थानीय लोगों और प्रायः परम्परागत आर्थिक कार्यकलाप जैसे कृषि, मछली पालन, ताड़ी निष्कासन, आदि की कीमत पर विकसित हुआ है।
- जहाँ पर्यटन ही आय का एकमात्र साधन है वहाँ मौसमीयता एक प्रमुख आर्थिक समस्या है और इससे मौसमी बेरोजगारी फैलती है। इस प्रकार पर्यटन की अक्सर "उत्सव या अकाल" उद्योग कहा जाता है। दस्तकारों पर पर्यटन का प्रभाव खास तौर पर मौसमी होता है और पर्यटन में यदि किसी कारण रूकावट आती है तो वह सम्पूर्ण रूप से बर्बाद हो जाते हैं। कशमीर एक ज्वलंत उदाहरण है।

अंधाधुंध और अत्यधिक खरीददारी ने दस्तकारी का व्यावसायीकरण कर दिया है। यही कारण है कि बहुत से शिल्पग्राम जहाँ कभी सस्ते दामों में हस्तशिल्प मिला करते थे अब बहुत महंगे और आम आदमियों की पहुँच से बाहर होकर रह गए हैं। यह स्थिति हस्तशिल्प की गुणवत्ता में गिरावट (जैसे असल हस्तशिल्प की नकल जो बाजार में पहुँच जाती है) और मानवीय मूल्यों में ह्रास का कारण बनती है। ऐसी हालत में छोटा और निर्धन शिल्पी सबसे अधिक घाटे में रहता है। और यह सब कुछ ऐसे क्षेत्रों में कृत्रिम मुद्रा स्फीति की ओर ले जाते हैं। इस तरह यह क्रम जारी रहता है।

किसी पर्यटन स्थल का एकतरफा आर्थिक विकास भी पर्यटक के फिजूल खर्ची का नतीजा होता है। इसलिए केवल ऐसी वस्तुओं का उत्पादन प्रारंभ होता है जिसकी पर्यटकों में मांग होती है। ये प्रवृत्ति कभी कभी मौलिक एवं उपभोक्ता वस्तुओं के अभावया उनकी कीमतों में बढ़ोत्तरी का कारण बनती है।

बोध प्रश्न 1

1) पर्यटक पर्यटन स्थल के भौतिक पर्यावरण पर अपना प्रभाव किस प्रकार डालता है ? वर्णन कीजिए।

.....

.....

2) पर्यटक स्थल के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश को निषेधात्मक तरीके से प्रभावित करने वाले प्रमुख व्यवहार रूपों का जिक्र कीजिए।

.....

.....

.....

3) पर्यटक व्यवहार और उस स्थान के आर्थिक परिवेश के तीन प्रमुख पहलुओं की विवेचना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

25.5 असंतुलन की रोकथाम

इस भाग में इन परिस्थितियों से निपटने की चर्चा की गई है। देश के अन्दर और बाहर आने जाने वाले पर्यटकों और परिणामस्वरूप बढ़ती हुई पर्यटक यात्राओं की दृष्टि से यह और अधिक अनिवार्य बन गया है। अपनी परिचर्चा को व्यवस्थित करने की दृष्टि से हमने इस भाग को दो उपभागों में विभक्त किया है।

- आगन्तुक की भूमिका
- सरकार की भूमिका

25.5.1 पर्यटकों की भुमिका

जिस प्रकार आगन्तुकों को सम्पूर्ण रूप से अपनी यात्रा से आनन्द लेने का अधिकार है उसी प्रकार उस स्थान विशेष के पर्यावरण के प्रति उनके कुछ कर्तव्य भी हैं :

- पर्यटकों को चाहिए कि वे अपने अवशेषों का निपटारन सावधानी पूर्वक करें। इसमें खाद्य पदार्थ, कूड़ा, बोतलें आदि शामिल हैं। सभी स्थानों पर उन्हें इसका ख्याल रखना चाहिए। इससे न केवल उस स्थान का भौतिक सौंदर्य बरकरार रहेगा बल्कि वह जब पुन: वहाँ आएंगे तो वह स्थान उन्हें वैसा ही खूबसूरत मिलेगा।
- पर्यटकों को उन स्थानों की संस्कृति एवं सामाजिक परम्पराओं के प्रति सतर्क रहना चाहिए जहाँ वे जाते हैं। उन्हें स्थानीय रीति रिवाजों में हस्तक्षेप करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। इसके साथ ही उन्हें गन्तव्य स्थल की भाषा, वहाँ के सामाजिक लोकाचार की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। वहाँ के लोगों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करना चाहिए न कि मनोरंजन के तौर पर उन पर बोझ बनना चाहिए।
- पर्यटकों को दूसरों की सहायता करनी चाहिए जिनमें स्वयं और स्थानीय लोग दोनों ही शामिल हैं ताकि उस स्थान की सामाजिक-आर्थिक परिवेश की पवित्रता बनाई रखी जा सके। यदि स्थानीय लोग अपने उत्तरदायित्व के प्रति लापरवाह या असावधान हैं तो पर्यटकों को उन्हें सलाह देनी चाहिए और उन्हें शिक्षित करना चाहिए।
- इन सबसे महत्वपूर्ण है कि पर्यटक पर्यटन के प्रति उदार रवैया अपनाएं और स्वयं को संपूर्ण पृथ्वी को सुरक्षित रखने में सक्रिय भागीदारी समझें। ऐसा ही सार्वभौम एवं मानवीय दृष्टिकोण हितकर होगा।

25.5.2 सरकार की भूमिका

पर्यटन स्थल के विकास और रखरखाव से सम्बद्ध शासन एवं अधिकारियों को भी कुछ उपाय करना चाहिए।

- अब यह मान्य धारणा है कि पर्यटन योजना को संपूर्ण योजना से अलग नहीं समझना चाहिए बल्कि समग्र भौतिक एवं आर्थिक योजना का संगठित भाग समझना चाहिए। इसे व्यवहार में भी लाना चाहिए।
- विदेशी तथा देशी दोनों ही प्रकार के पर्यटकों की रूपरेखा तैयार करना पर्यटन योजना एवं विकास कार्य (देखिए टी.एस-2 के खंड-1 की इकाई 1 व 2) में अत्यंत प्रभावी भूमिका निभा सकता है।
- पर्यटकों की संख्या को नियंत्रित रखना भी स्वस्थ अतिथि-आतिथेय संबंधों को प्रोत्साहित करने में बहुत महत्व रखता है। उदाहरणार्थ भूटान एक निर्धारित संख्या से अधिक पर्यटकों को प्रतिवर्ष अपने देश में आने की अनुमति नहीं देता क्योंकि वह समझते हैं कि अधिक संख्या में पर्यटकों के आने से देश पर भौतिक एवं सामाजिक बोझा बढ़ेगा।
- पर्यटन स्थलों के पर्यावरण की सुरक्षा से संबंधित नियमों को कड़ाई के साथ लागू करना चाहिए। प्रयास करना चाहिए कि यदि उपलब्ध नियमों में कोई कमी है तो उसे दूर कर दिया जाए।
- पारिस्थितिक पर्यटन एवं टिकाऊ अथवा नियंत्रित पर्यटन अधिकारियों का आदर्श होना चाहिए। किसी निर्धारित समय में किसी निश्चित पर्यटक स्थल पर आनेवाले पर्यटकों की संख्या को प्रतिबंधित/नियंत्रित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। ऐसा करना पर्यटन को प्रतिबंधित करना नहीं है बल्कि यह एक वैकल्पिक विधि है।
- वीडियो-ऑडियो कैसेट्स जैसे मनोरंजन के माध्यमों और पर्यटन विभाग के लोगों के द्वारा आगंतुकों में जागृति उत्पन्न करनी चाहिए और पर्यावरण की सुरक्षा की आवश्यकता के विषय में शिक्षित करना चाहिए।
- निजी क्षेत्र को इसमें सम्मिलित कर भी पर्यटन को काफी हद तक सुरक्षित किया जा सकता है।

परस्पर सम्बद्ध एजेंसियों और पर्यटकों के सहयोग से पर्यटन को पर्यावरण का मित्र बनाया जा सकता है। "भारत की देखना भारत को प्यार करना है"– यही हमारा आदर्श वाक्य होना चाहिए।

बोध प्रश्न 2

1) किसी पर्यटक स्थल के पर्यावरणीय संतुलन की रोकथाम में पर्यटक की भूमिका का वर्णन कीजिए।

.....

.....

2) पर्यावरण के साथ दुर्व्यवहार को रोकने के लिए अधिकारी किस प्रकार पर्यटक के व्यवहार को नियंत्रित कर सकते हैं ?

.....

.....

25.6 सारांश

पर्यटकों के द्वारा पर्यावरण के लिए पैदा किए गए खतरे की दृष्टि से पर्यटक व्यवहार का अध्ययन आवश्यक है। विविध भौतिक एवं सांस्कृतिक स्थलों वाला भारत विशाल संख्या में आनेवाले पर्यटकों की मेहमाननवाजी करता है और यहाँ आनेवाले पर्यटकों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। पर्यटक अपने व्यवहार एवं आचरण के कारण एक से अधिक प्रकार के मनोरंजन स्थलों के पर्यावरण को प्रभावित करते हैं। ये न केवल भौतिक पर्यावरण को नष्ट करते हैं बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश को भी नुकसान पहुँचाते हैं। इसलिए इस समस्या से सावधानी के साथ निपटना चाहिए। इसमें पर्यटक एवं पर्यटन अधिकारी दोनों का ही योगदान अपेक्षित है।

25.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए उपभाग 25.5.1

2) देखिए उपभाग 25.4.2

3) देखिए उपभाग 25.4.3

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उपभाग 25.5.1

2) देखिए उपभाग 25.5.2

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

वन्दना शिवा	:	वायलेंस ऑफ ग्रीन रेवोल्यूशन
आर कारसन	:	द सी एराउंड अस, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क, 1951
आर मार्श	:	राइट्स ऑफ नेचर, यूनिवर्सिटी ऑफ विसलॉनसिन प्रेस, मैडिसन, 1989
वरनेस वुल्फगेंग (एड.)	:	आस्पेक्ट्स ऑफ इकॉलॉजीकल प्राब्लम्स एंड एन्वारमेंटल अवेयरनेस इन साउथ एशिया, नई दिल्ली, 1993

NOTES

खंड

8

पर्यावरण पर प्रभाव

इकाई 26

वनस्पति एवं वन्यजीवन 5

इकाई 27

महाड़ 32

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें 47

इस खंड के लिए अभ्यास 48

विशेषज्ञ समिति

श्री अजय माहुरकर
इतिहास संकाय
इं.गां.रा.मु.वि.

श्री अलोक चंदोला
टूरिज्म कंसलटेंट, नई दिल्ली

श्री अशीष कुमार सिंह
मैनेजिंग डायरेक्टर
केरल ट्रिज्म डेवलेपमेंट
कारपोरेशन, त्रिवेन्द्रम

डॉ. गीता केकर
विज्ञान विद्यापीठ, इं.गां.रा.मु.वि.

डॉ. इकबाल मलिक
निदेशक, वातावरण
नई दिल्ली

श्री जहांगीर घड़ियाली
जनरल मैनेजर
वेलकम ग्रुप होटल, औरंगाबाद

डॉ. जसवंत सोखी
विज्ञान संकाय, इं.गां.रा.मु.वि.

प्रो. कपिल कुमार
निदेशक
सेंटर फॉर एक्सटेंशन
एजुकेशन, इं.गां.रा.मु.वि.

श्री के.टी. सुरेश
कोआर्डिनेटर, इक्वेशन, बंगलूर

सुश्री लतिका नाथ
वर्ल्ड लाइफ फाउंडेशन
देहरादून

डॉ. नीना राव
हेड डिपार्टमेंट ऑफ टूरिज्म
कालेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज
नई दिल्ली

श्री प्रदीप सांखला
मेनेजिंग डायरेक्टर
डायनेमिक टूर एंड ट्रैवेल्स
प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

श्री पी. राज
डायरेक्टर क्लाइंट सर्विसेज बीबीडीडी
वर्ल्ड वाइड नेटवर्क बम्बई

डॉ. रवीन्द्र कुमार (संयोजक)
इतिहास संकाय, इं.गां.रा.मु.वि.

कार्यक्रम संयोजक : प्रो. कपिल कुमार

पाठ्यक्रम दल :

डॉ रवीन्द्र कुमार
श्री अजय माहुरकर } पाठ्यक्रम संयोजक

डॉ. गीता केकर
डॉ. जसवंत सोखी
श्री सलिल मिश्र
प्रो. कपिल कुमार

खंड निर्माण दल

इकाई सं.	लेखक	संकाय सदस्य, इं. गां. रा. मु. वि
26	डा० जसवन्त सोखी विज्ञान विद्यापीठ इं.गा.रा.मु.वि.	श्री सलिल मिश्र
27	सुश्री क्वीनी प्रधान शोध छात्र ज.ने.वि.वि.	श्री सलिल मिश्र
		सहयोग सुश्री विद्या आनन्द श्री एल.डी. नॉबर्ट

खंड संयोजक
श्री सलिल मिश्र

अनुवाद	अनुवाद परिष्कार	संकाय संदस्य
श्री प्रकाश परिहार म.प्र. पर्यटन, भोपाल	सुश्री सीमा कुमारी	जसवन्त सोखी सुश्री संगीता पांडे इं.गां.रा.मु.वि.
श्री महेश चन्द्र नई दिल्ली		

नवम्बर, 1998

© इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 1998

ISBN-81-7605-457-7

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुन: प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

NMDC-210

BTS-05/326

खंड-8 पर्यावरण पर प्रभाव

इस खंड में पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई है और पर्यटन उद्योग से उन पर पड़ने वाले सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के प्रभावों के बारे में भी बताया गया है। इस मायने में यह (और इससे आगे का) खंड पारिस्थितिकी, पर्यावरण और पर्यटन पर इस समूचे पाठ्यक्रम का एक विहंगम अवलोकन है। पर्यावरण पर प्रभाव की इस चर्चा को दो खंडों (खंड 8 तथा 9) में बांटा गया है, दोनों विषयवस्तु एक ही है। खंड-8 में दो इकाइयां हैं, जिनमें क्रमशः वनस्पति और वन्यजीवन तथा पर्वत विषयों को विस्तार से चर्चा के लिए लिया गया है।

वस्तुतः ये इकाइयां पर्यावरण के साथ पर्यटन विकास के नाजुक रिश्ते की छानबीन करती हैं, इनसे यही सार्थक निष्कर्ष निकलता है कि यह रिश्ता दुतरफा है। इसके साथ यह भी पता चलता है कि पर्यावरण के संरक्षण में पर्यटन के लाभकारी तरीके से उपयोग की काफी गुंजाइश है।

इकाई 26 की रूपरेखा भारत के वनस्पति और वन्यजीवन पर एक सार संग्रह के उद्देश्य से बनाई है। इसमें हमारे देश के जीव-भौगोलिक प्रदेशों की विशिष्टता को दर्शाने वाले वनस्पति और वन्यजीवन के बारे में भी बताया गया है। वन्यजीव प्रजातियों की चर्चा इसमें उनकी अभिलाक्षणिक आवास स्थितियों की पृष्ठभूमि में की गई है, जिसमें स्थानिक (endemic), एवं संकटापन्न (endangered) प्रजातियों पर प्रकाश डाला गया है। इसके अलावा मानव के जीवन के लिए वन्यजीवन के महत्व को भी बताया गया है। इकाई के अंतिम अनुभाग में पर्यटन संबंधी विभिन्न गतिविधियों से हमारे देश की वनस्पति और वन्यजीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण दिया गया है। पर्वतों से जुड़ी तीन उप-विषयवस्तुओं की चर्चा **इकाई 27, पर्वत** में की गई है। इसमें पर्वतों से संबंधित बदलते दृष्टिकोणों और धारणाओं के बारे में बताया गया है। ब्रिटिश शासक जिस दृष्टि से पर्वतों को देखते थे वह हमारी पारंपरिक धारणाओं से एकदम अलग था। इसके बाद इसमें आप महत्वपूर्ण हिल-स्टेशनों जैसे दार्जिलिंग, शिमला, ऊटी और नैनीताल आदि किस प्रकार अस्तित्व में आए, यह जानेंगे। पर्वतों से हिल-स्टेशनों में इनके कायांतरण में सड़कों, रेल लाइनों, नवीन प्रशासनिक भवनों, विद्यालयों और गिरजा घरों के निर्माण और विशाल आबादी के बसाव की भूमिका रही है। अंततः इस नए परिदृश्य के परिणामों के बारे में चर्चा की गई है। पर्यटन स्थलों और प्रशासनिक केन्द्रों में पर्वतों के विकास का उनके भूदृश्य, स्थानीय जन जीवन और पर्यावरण के लिए निहित परिणाम थे। इस इकाई में आपको यही सब बताया जा रहा है।

अगले खंड यानी पर्यावरण पर प्रभाव-2 में भी यही विषय जारी रहेगा, जिसका केन्द्र बिन्दु होंगे पर्यटन के संदर्भ में पर्यावरण के अन्य घटक।

आभार

इकाई 26 वनस्पति और वन्यजीवन को अन्तिम रूप देने में हमारी सहायता करने के लिए हम पर्यावरण एवं वन मंत्रालय की डा० सुजाता अरोड़ा और दिल्ली विश्वविद्यालय की डा० रीतू शर्मा की विशेष आभारी हैं।

इकाई 26 वनस्पति एवं वन्यजीवन

इकाई की रूपरेखा

26.0 उद्देश्य
26.1 प्रस्तावना
26.2 जीव भौगोलिक प्रदेश और वन्यजीव
- 26.2.1 प्रदेश 1: ट्रांस-हिमालय
- 26.2.2 प्रदेश 2: हिमालय
- 26.2.3 प्रदेश 3: भारतीय मरुस्थल
- 26.2.4 प्रदेश 4: अर्ध शुष्क
- 26.2.5 प्रदेश 5: पश्चिमी घाट
- 26.2.6 प्रदेश 6: दक्षिण प्रायद्वीप
- 26.2.7 प्रदेश 7: गंगा का मैदान
- 26.2.8 प्रदेश 8: उत्तर-पूर्वी भारत
- 26.2.9 प्रदेश 9: द्वीप
- 26.2.10 प्रदेश 10: समुद्र तट

26.3 वन्यजीवन का महत्व
26.4 वन्यजीवन पर पर्यटन का प्रभाव
26.5 सारांश
26.6 शब्दावली
26.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

26.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य होने चाहिए कि आप :

- वनस्पति और वन्यजीवन की परिभाषा दें सकें;
- वनस्पति और वन्यजीवन के बीच भेद कर सकें और इन पारिभाषिक शब्दों को उनके सही संदर्भ में प्रयोग कर सकें;
- हमारे देश की विभिन्न जीव-भौगोलिक प्रदेशों में पाई जाने वाली वन्य जीवन प्रजातियों पर एक लेख तैयार कर सकें;
- मानवजाति के लिए वन्यजीवन के महत्व को समझा सकें;
- वन्यजीवन पर पर्यटन के प्रभावों का विश्लेषण तथा उनका विवेचन कर सकें।

26.1 प्रस्तावना

इस इकाई का आरंभ हम उन दो पारिभाषिक शब्दों के अर्थ और उनकी व्यापकता को समझते हुए करेंगे जो इस इकाई के शीर्षक में है, यानी वनस्पति और वन्यजीवन। आप कहेंगे कि यह तो बड़ा ही आसान है, वनस्पति किसी एक क्षेत्र में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों को कहते हैं। इसी तरह वन्यजीवन में सभी जन्तु आते हैं जो एक निश्चित क्षेत्र में, ठीक ठीक कहतें तो वन्य क्षेत्र में रहते हैं भले वे बड़े हों या छोटे, शाकाहारी हों या मांसाहारी, आखेट-जंतु और पक्षी। जरा ठहरिए क्या यह शब्द 'वन्य क्षेत्र' आपके मस्तिष्क में कुछ उत्सुकता पैदा नहीं कर रहा है ? वन्य क्षेत्र उन क्षेत्रों को कहा जाता है जो हमारी पहुंच से बाहर होते हैं; या यूं कह लें इनमें मानव का आवागमन या दखल

नहीं होता। इसका निहित यही अर्थ है कि उन क्षेत्रों में पाई जाने वाली प्राणि जातियां प्राकृति के साथ पूर्ण तादात्म्य में रहती हैं; वे उस क्षेत्र की जलवायु, मृदा प्रारूपों तथा समग्र भौगोलिक परिस्थितियों के प्रति अनुकूलित रहती हैं। इसके अलावा ये मानव की देखभाल और सहायता के बिना ही अपने बलबूते पर जीवित रहने और अपना जीवन-चक्र पूर्ण करने में समर्थ होती हैं। ये तो रही बात वन्य क्षेत्र की, तो अब 'वन्यजीवन' शब्द का दायरा क्या है ? क्या इसमें सिर्फ विविध प्रकार का जंतु जीवन ही आता है ? इसका उत्तर यही है कि अब ऐसा नहीं माना जाता। वर्तमान में, वन्यजीवन का दायरा सिर्फ जंतुओं तक ही सीमित नहीं। अब इसमें वन्य परिस्थितियों में पाए जाने वाले सभी प्राणी मात्र-जंतु, पादप, सूक्ष्म जीव और अन्य अल्पज्ञात जीव आते हैं।

स्थानिक प्रजाति-एक भूभाग विशेष तक परिसीमित प्रजाति, जैसे *ऐजैडिरैक्टा इंडिका* (नीम) भारतीय उपमहाद्वीप की स्थानिक प्रजाति है।

संकटापन्न प्रजाति: जब किसी प्रजाति की संख्या घटकर गिनी चुनी रह गई हो या उसका आवास इतना सिमट गया हो कि वह प्रजाति विलुप्त होने के कगार पर हो और अगर उसे पर्याप्त संरक्षण न मिले, तो उस प्रजाति को संकटापन्न माना जाता है।

इस तरह 'वनस्पति' वन्यजीवन का ही एक घटक है। अब आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि ये दोनों पारिभाषिक शब्द न तो एक दूसरे के पूरक हैं और ना ही विलोम, जैसा कि 'पुराना मत' था, जो आज तक कुछ लोगों में अभी तक बना हुआ है। इस इकाई में हम अपने देश के विभिन्न जीवभौगोलिक प्रदेशों की विशेषता दर्शाने वाले वन्यजीवन के चर्चा करेंगे। आप दस जीवभौगोलिक प्रदेशों के बारे में परिचित होंगे, जिनके बारे में खंड-1 की इकाई 3 के अनुभाग 3.4 में बताया गया था और इस पाठ्यक्रम की इकाई 4 के अनुभाग 4.5 में भी जिन पर संक्षेप में बताया जा चुका है। इन प्रदेशों को हम एक-एक कर लेंगे और उनकी विशिष्ट भौगोलिक स्थितियों की पृष्ठभूमि में उनके वन्य जीवन पर चर्चा करेंगे। इससे आप वन्यजीवों को दर्ज करने और उन्हें उनकी आवासी स्थितियों से जोड़ने में सक्षम हो सकेंगे। पाठ में दिए गए वन्य प्रजातियों को ढेर सारे चित्र आपको इन संबंधों की पुष्टि करने में सहायक होंगे। प्रत्येक जीवभौगोलिक प्रदेश के वन्यजीवन के वर्णन में स्थानिक और संकटापन्न प्रजातियों की जानकारी भी शामिल है। जब आप किसी दिन ऐसे किसी एक प्रदेश का दौरा करना चाहें, या किसी परियोजना पर काम करना चाहें या फिर संरक्षण के कार्य मे योगदान करना चाहें तो यह जानकारी आपके लिए उपयोगी साबित होगी। अगले अनुभाग में हम वन्यजीवन के महत्व के बारे में संक्षेप में बताएंगे जिसके बारे में आप इकाई-4 (अनुभाग 4.5) में पढ़ चुके हैं। अंतिम अनुभाग में वन्यजीवन पर पर्यटन के प्रभावों के बारे में विस्तार से वर्णन दिया गया है। आशा है आपको इस इकाई के अध्ययनों में आनंद आएगा।

उपजाति : यह एक प्रजाति का वर्गिकी प्रविभाग (subdivision) है, जिसमें अन्य उपजातियों के बीच आकृतिक (morphological) भिन्नताएं कुछ कम ही होती हैं, मगर इनका भौगोलिक विवरण या पारिस्थितिकी भिन्न होती है, जैसे 'A' प्रजाति में अनेक उपजातियां a_1, a_2, a_3 आदि होती है।

आकृतिकी (morphological) जीवों की संरचना या बनावट का अध्ययन है।

किस्म: यह उपजाति का एक वर्गिकी प्रविभाग है, जिसमें एक रूप लक्षणों वाले प्राणि आते हैं जिनकी उत्पत्ति आनुवंशिक पार्थक्य के कारण या कृषिकी विभिन्न विधियों के फलस्वरूप होती है।

आनुवंशिक रूप से पृथक जीवों के समूह अन्य समान समूहों के सदस्यों के साथ आनुवंशिक द्रव्य का आदान-प्रदान नहीं करते। या यूं कहें, आनुवंशिक रूप से पृथक जीवों के दो समूह मुक्त रूप में परस्पर प्रजनन नहीं कर सकते हैं।

26.2 जीव भौगोलिक प्रदेश और वन्यजीवन

यूं तो हमारा देश समूचे भूखंड का मात्र 2 प्रतिशत है मगर यह जैव-विविधता का भंडार है। संपूर्ण विश्व की ज्ञात जैव-विविधता का लगभग 5 प्रतिशत हमारे देश में ही विद्यमान है। सजीव जीवों की ज्ञात श्रेणियों के आंकड़ों से ही आपको हमारे देश की 'विपुल जैव विविधता' का अहसास हो जाएगा। हमारे देश में जंतुओं की लगभग 81,000 प्रजातियां हैं, जिनमें 50,000 प्रजातियां कीटों की हैं, और पक्षियों की 1200 प्रजातियां, तो अन्य विभिन्न वर्गों के पादपों की 45,000 प्रजातियां पाई जाती हैं, जिनमें पुष्पी पादपों की 15,000 प्रजातियां शामिल हैं।

इसके अलावा इन प्रजातियों की अनेक उपजातियां हो सकती हैं, जिनकी अनेक किस्में हो सकती हैं। यही भारत के वन्यजीवन को समूचे विश्व में सबसे संपन्न बनाते हैं। ऐसी विपुल-जैव विविधता का मुख्य कारण है असाधारण रूप से विविध आवासों की भारत में उपलब्धि है। ट्रांस हिमालय के ठंडे और शुष्क उच्च तुंगता वाले भूभाग से लेकर दक्षिण भारत के उष्णकटिबंधी वर्षवन, पश्चिम में झुलसा देने वाला गर्म थार का मरुस्थल से लेकर पूर्वी तट क्षेत्रों के घने कच्छ वनस्पति वन (mangrove forests) और इसी बीच में ऐसी अनेक भिन्नताएं। असल में आवासों के इस व्यापक दायरे को देखने के लिए हमारा समूचा जीवन भी कम पड़ जाएगा।

आपने खंड-1 में पढ़ा ही है कि देश को दस जीव-भौगोलिक प्रदेशों में बांटा गया है। ये हैं : ट्रांस-हिमालय, हिमालय, भारतीय मरुस्थल, अर्ध शुष्क, पश्चिमी घाट, दक्षिण प्रायद्वीप, गंगा का मैदान,

• ये आंकड़े अब तक सर्वे किए गए 70 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्रफल पर आधारित हैं, यह सर्वे अभी जारी है।



	1.	ट्रांस-हिमालय		6.	दक्षिण प्राय द्वीप
	2.	हिमालय		7.	गंगा का मैदान
	3.	भारतीय मरुस्थल		8.	उत्तर-पूर्वी भारत
	4.	अर्ध-शुष्क		9.	द्वीप
	5.	पश्चिमी घाट		10.	समुद्र तट

चित्र 1 :भारत के जीवभौगोलिक प्रदेश डब्ल्यू०ए०रॉजर्स और एस०एस०पंवार, 1988 से। प्लैनिंग अ वाइल्ड लाइफ प्रोटेक्टेड एरिया नेटवर्क इन इंडिया, खंड-1, पर्यावरण, वन एवं वन्यजीवन विभाग, भारत सरकार।

उत्तर पूर्वी भारत, द्वीप और समुद्रतट (चित्र 1 भी देखें)। इस वर्गीकरण का विकास भारतीय वन्यजीवन संस्थान के रॉजर्स और पांवर (1988) ने किया था, जिसका व्यापक रूप से अनुकरण किया जा रहा है। ये जीवभौगोलिक प्रदेश क्या है ? ये दरअसल प्रमुख प्रजाति-समूहों के द्योतक हैं। इसके अलावा, इन 10 प्रदेशों में प्रत्येक भौतिक, जलवायु और ऐतिहासिक परिस्थितियों की विशिष्टताओं का भी सूचक है। हिमालय और गंगा का मैदान यूं तो दो निकटवर्ती प्रदेशों के उदाहरण हैं, मगर वे एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं।

ये आंकड़े अब तक सर्वे किए गए 70 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्रफल पर आधारित हैं, यह सर्वे अभी जारी है।

26.2.1 प्रदेश-1 : ट्रांस-हिमालय

यह प्रदेश लगभग 1,86,200 वर्ग कि० मी०* में फैला है.जिसमें मुख्यत: लद्दाख और लाहौल-स्पीति आते हैं। यह प्रदेश भारत के भीतर के समूचे क्षेत्र से कहीं ज्यादा विस्तृत है, जिसका कारण है उच्च तुंगता वाले पर्वतीय भूभाग, जिनकी ऊंचाई 4500-6000 मीटर तक है। इस स्थलाकृति को भी जोड़ें तो उसका क्षेत्रफल लगभग 26 लाख वर्ग कि० मी० आता है।

* इस क्षेत्रफल में पाकिस्तान के अवैध कब्जे का 83,308 वर्ग कि० मी० और सन् 62 से चीन के अधीन 41,500 वर्ग कि०मी० क्षेत्रफल शामिल है।

पर्यावरण पर प्रभाव

ट्रांस-हिमालयी प्रदेश का वन्यजीवन

अपनी कठोर जलवायु स्थितियों और अवास्य दुर्दम्य भूभाग के कारण इस प्रदेश का पारिस्थितिक तंत्र अति भंगुर और संवेदनशील है। भारत के इस प्रदेश में तीन पर्वतमालाएं पसरी हुई हैं : जसंकार, लद्दाख और काराकोरम। प्रत्येक ढाल प्रावण्य (slope) का अपना एक प्रधान घाटी-प्रावण्य तंत्र (vally-slope system) है। जीव विज्ञान की दृष्टि से यह तीनों पर्वत-मालाएं अति रोचक हैं। पूर्व में लद्दाख और जसंकार पर्वतमालाएं तिब्बती पठार के दक्षिणी छोर और एक आंतरिक जल-निकास कच्छ और झील प्रणालियों के उद्गम से जा मिलती है। जैसे त्सो मोरारी। उत्तर में इसका अधिकांश क्षेत्र हिम-रेखा से ऊपर है। सियाचिन ग्लेशियर, इस क्षेत्र का एक मुख्य घटक है, जिसका क्षेत्रफल 1,180 वर्ग कि० मी० है। वस्तुत: यह ध्रुव प्रदेश से बाहर इस तरह का सबसे बड़ा क्षेत्र है।

स्टेप (steppe)- एक शुष्क घासीय मैदान

किसी पादप या समुदाय की नेट प्राथमिक उत्पादकता (net primary productivity) उसके शुष्क भार में अर्जित सकल वृद्धि है।

लद्दाख और लाहौल-स्पीति की वनस्पति मुख्यत: एक विरल अल्पाइन-स्टेप (घास का मैदान) है। इसके अलावा यहां अनेक स्थानिक प्रजातियां भी पाई जाती हैं। पाकिस्तान और तिब्बत के साथ-साथ भारत के अंदर इस क्षेत्र में समूचे विश्व के विपुल वन्य भेड़ों और बकरियों के समुदाय हैं। भेड़ों की यहां आठ विशिष्ट प्रजातियां और उपजातियां मिलती हैं। यूरियल, या शापु, अरगलि या नयन, मार्को पोलो भेड़

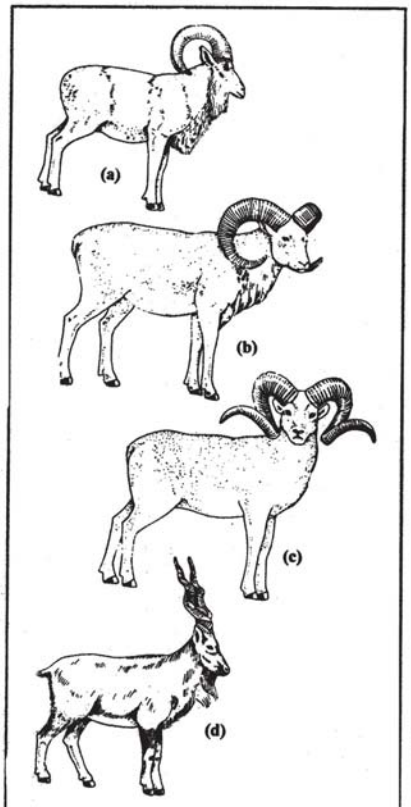

चित्र 2 : ट्रांस-हिमालय प्रदेश में भेड़ की प्रजातियां : a) यूरिल (*ओविस ओरिएंटैलिस*); b) नयन (*ओ.एमॉन हॉजसोनाइ*); c) मार्को पोलो (ओ.एमॉन पोलाइ); और d) मारखोर (*कैप्रा फाल्कनेरी*)

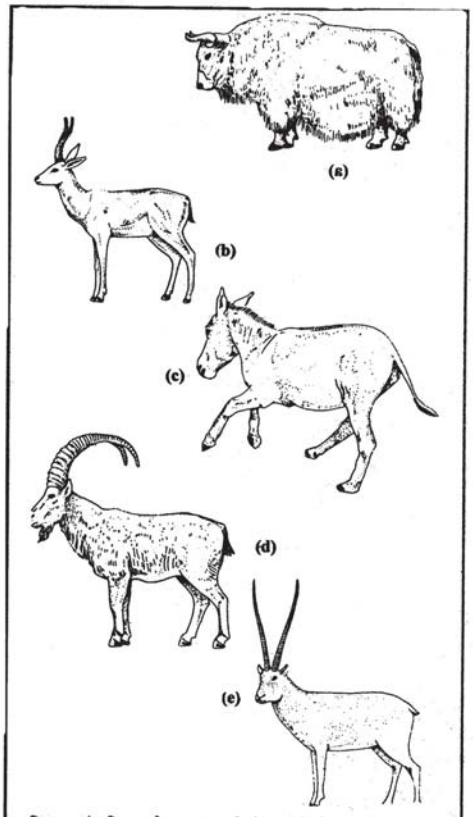

चित्र 3 : ट्रांस-हिमालय के कुछ शाकाहारी जंतु : a) जंगली याक (*बॉस ग्रनिएंस*); b) गेज़ेल चिंकारा (*गेज़ेला गेज़ेला*); c) तिब्बती गधा (*इक्वस हेमिओनस*); d) सकिन (*कैप्रा इबेक्स*);और e) तिब्बती हिरन (*पैंथोलोप्स हॉजसोनाई*)।

मारखोर चित्र (2a-d) और भराल (Blue sheep)। चपटे पठारी क्षेत्रों में चरने वाले जंतुओं का एक विशिष्ट समुदाय मिलता है जिसमें जंगली याक, तिब्बती गधा, तिब्बती कुरंग (गुजेल), साकिन (Ibex) और तिब्बती मृग हैं (चित्र 3a-e देखें)। इन शाकाहारी जंतुओं के अतिरिक्त मांसाहारी जंतुओं का इतना ही विशिष्ट समूह भी मिलता है, जिसमें साह (Snow Leopard)] भेड़िया पैलास कैट और अन्य छोटे जंतु जैसे मारबल्ड पोल कैट, पाइक और मॉर्मोट चित्र (4a-d) आदि आते हैं। इनमें पैलास कैट स्थानिक है। झीलों और कच्छों में भी अपना एक विशिष्ट पक्षिजात (avifauna) पाया जाता है, जिसमें काले कंठ वाला कृष्णग्रीव सारस शामिल है जो एक प्रवासी पक्षी है। किसी एक क्षेत्र के पक्षियों को सामूहिक रूप से पक्षी जात कहा जाता है।

इस पारिस्थिक तंत्र की प्राथमिक उत्पादकता बहुत कम है, इसलिए जीव संख्याओं में भारी तुंग प्रवास (altitudinal migration) देखने को मिलता है। मानव का बढ़ता दखल इस बेहद भंगुर पारिस्थितिक-तंत्र के नाजुक पारिस्थितिकी संतुलन को संकट की ओर धकेल रहा है।

26.2.2 प्रदेश-2 : हिमालय

भारत में हिमालय पर्वत श्रृंखला पश्चिम में भूमध्यसागरी क्षेत्रों से लेकर पूर्व में आर्द्र चीन-मलय क्षेत्रों तक कोई 2,000 कि० मी० तक फैली हुई है। भारत में इस प्रदेश में 236,300 वर्ग कि०मी० क्षेत्रफल आता है जो भारत के सकल भू पृष्ठ का लगभग 7 प्रतिशत है। खड़ी ढालों, कच्ची मिट्टी (असंपीडित मृदा) और भारी वर्षा के कारण यहां का पर्यावरण बेहद कठोर रहता है। जिस पर मानव आबादी का दबाव और इमारती लकड़ी, जलावन और भोजन की मांग बड़ी उग्र है। इन सभी कारणों से इस पारिस्थितिक तंत्र में बड़ी तेज गति से ह्रास हुआ है जिसके फलस्वरूप इस प्रदेश में पाए जाने वाले जैविक स्रोतों की भारी क्षति हुई है। भारत में अन्यत्र की तुलना में संकटापन्न प्रजातियों की संख्या हिमालय में सबसे अधिक है।

हिमालय प्रदेश का वन्यजीवन

आवासी और प्रजाति विविधता के मामले में हिमालय प्रदेश भारत में सबसे विपुल क्षेत्रों में एक है। इस प्रदेश की सीमा कई अन्य परिस्थितिक तंत्रों से मिलती है (चित्र 1 देखिए) इसका वन्यजीवन इतना विविध है कि हमें इसके बारे में जानने के लिए तुंगीय और देशांतरीय पर्वतमालाओं के साथ-साथ इसके पूर्व-पश्चिमी अक्ष के समांतर देखना जरूरी हो जाता है। आइए पहले हिमालय की तुंगता और देशांतरीय पर्वतमालाओं में पाए जाने वाले वन्यजीवन का अवलोकन करें। ये हैं :

i) **निचले उपोष्ण गिरिपाद :** इनमें विशेष मिश्रित पर्णपाती वनस्पति समुदाय पाया जाता है जो चीड़ पाइन (चित्र 5a) और फिर बांज (Ban oak) में जा मिलता है। प्राणिजात में मुख्यतः सांभर, मुंटजैक (Muntjac) जंगली सूअर (चित्र 6a-c), काला भालू, गोरल (चित्र 6d) और कलीज फीजेंट हैं। पर्णपाती समुदाय उन पादपों को कहा जाता है जो अपनी पत्तियां मौसम आने पर त्याग देते हैं।

ii) **शीतोष्ण क्षेत्र :** ये 3500 मीटर से नीचे स्थित होते हैं। इस प्रदेश में वनस्पति प्रारूपों का जटिल मिश्रण पाया जाता है, जिसमें मेपिल (चित्र 5b) और अखरोट, मोरू तथा बांज (चित्र 5c) के वन और नाना किस्म के

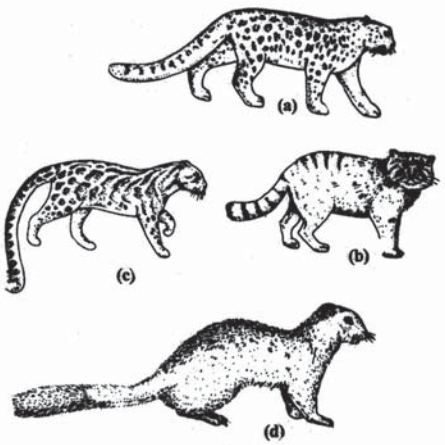

चित्र 4 : ट्रांस-हिमालय प्रदेश के कुछ मांसाहारी जंतु। a) साह (*पैंथरा अन्सिया*) b) पैलास कैट (*फेलिस मैनुल*) ; c) मार्बल पोल कैट (*फेलिस मारमोरैटा*) और मारमॉट (*मारमॉट कौडेटा*)।

शंकुवृक्ष (कोनिफर) ब्लू पाइन, फर (देवदारू) और स्प्रूस है। (चित्र 5d-g)। ये सभी तुंगता अनुक्रम में उगते हैं। प्राणिजात में कस्तूरी मृग (चित्र 6e), सेराव (चित्र 6f), कोकला और मोनल फीजेंट आते हैं। जाड़ों में उच्च-तुंग प्राणिजात, जैसे ताहर (Tahr) (चित्र 6g) इन क्षेत्रों की ओर चले आते हैं।

iii) उप अल्पाइन क्षेत्र : इस क्षेत्र में भूर्ज और रोडोडेन्ड्रॉन (बुरूंश) (चित्र 5b) के वन और (कुंज) झाड़ीदार वनस्पति पाई जाती है जो किस्म-किस्म की बूटियों से भरे घास-स्थलों को अपने में समाए रहते हैं। ये समुदाय अल्पाइन समुदायों में जा मिलते हैं, 5000 मीटर की ऊंचाई पर जिनमें वनाच्छादन विरलतर या छिटपुट रह जाता है तथा जहां बस चट्टानों और बर्फ की प्रधानती रहती है। यहां कस्तूरी मृग, सेराव और ताहर निचली पर्वतमालाओं में भराल के साथ पाए जाते हैं। उधर पश्चिम में अधिक ऊंचाई पर साकिन अधिक पाए जाते हैं। तुंगता (ऊंचाई) के साथ-साथ वनीय क्षेत्रों के फीजेंट की जगह हिम मुर्गी (snow cock) ले लेती है। चीते की जगह हिम तेंदुआ और भेड़िया ले लेते हैं। काले भालू की जगह भूरा-भालू ले लेता है।

पूर्व पश्चिम अक्ष के समांतर चलने पर हमें अभिलाक्षणिक समुदाय भी दिखाई देते हैं। हम इस अक्ष को तीन उप-प्रदेशों को विभाजित करते हैं। ये हैं : पश्चिमी, मध्य और पूर्वी प्रदेश।

i) पश्चिमी प्रदेश : यह अपेक्षतया शुष्क क्षेत्र हैं जिसमें देवदार (चित्र 7a) और ब्लू पाइन वन पाए जाते हैं। इसे अलावा इसमें घास स्थलियों के व्यापक विस्तार देखने को मिलते हैं। इस क्षेत्र की विशेषता बोविडों (bovids) की अनेक प्रजातियां हैं। जैसे इनमें भराल, साकिन, मारखोर, गोरल, सेराव और ताहार। ताहर अब कश्मीर से लुप्त ही हो चुका है। हंगुल जो कि लाल-हिरन की उपजाति है, इस क्षेत्र तक ही सीमित है।

वृक्षीय जंतु - वृक्षवासी यानी पेड़ों में रहने वाले जंतु।

ii) मध्य प्रदेश : विशाल शाकाहोरी जंतुओं का इसमें लगभग नगण्य प्रतिनिधित्व है। साकिन, मारखोर और हंगुल की आबादी घटकर लगभग शून्य हो चुकी है। सिक्कमी महामृग तो भारतीय भूभाग से विलुप्त हुआ मान लिया गया है।

iii) पूर्वी प्रदेश : अन्य क्षेत्रों में पाए जाने वाले भूरा भालू, भराल व ताहर यहां नहीं मिलते। मिश्मि ताकिन नामक एक शाकाहारी जंतु यहां मिलता है (चित्र 8a)। इस क्षेत्र में अपेक्षाकृत उच्च वृक्ष रेखा (tree line) पाई जाती और यह क्षेत्र अधिक ऊंचाई पर मिलने वाले वृक्षीय वन जन्तुओं को अवलंबन देता है। बिन्टुरॉग, लाल पाण्डुक (Red panda) ;(चित्र 8b.c) और लघु बिडालवंशी यहां पाए जाने वाले पूर्व के विशिष्ट प्राणिजात घटक हैं। आर्किड यहां प्रचुर मात्रा में है (चित्र 7b,c) में इनके दो उदाहरण दिखाए गए हैं और अल्पाइन क्षेत्रों में झाड़ीदार, नाटे रोडोडेन्ड्रॉन काफी संख्या में मिलते हैं।

इस प्रदेश के लगभग सभी पादप और जंतु समूहों में स्थानिकता काफी ज्यादा पाई जाती है। यद्यपि कुछ प्रजातियां हिमालय में व्यापक रूप से मिलती हैं, अन्य प्रजातियों का दायरा थोड़े में सिमटा मिलता है। स्थानिक प्रजातियों के अलावा इनमें कुछ संकटापन्न प्रजातियां भी हैं। जैसा कि पहले बताया गया है इस क्षेत्र को अति ह्रासमान पारिस्थितिक तंत्र माना जाता है। कई बड़े स्तनधारी संकटापन्न प्रजातियों की सूची में है। इसके संकेत मिल रहे हैं कि भारतीय क्षेत्र से सिक्कमी महामृग का लोप हो चुका है। सभी प्रमाण संकेत दे रहे हैं कि कश्मीर से ताहर विलुप्त हो चुका है सो वेस्टर ट्रैगोपान की भी यही नियति रही है। मारखोर, ताहर और सेराव की आबादी में भारी कमी आ चुकी है। हंगुल महामृग तो वस्तुत: एक आरक्षित क्षेत्र तक सिमट कर रह गया है।

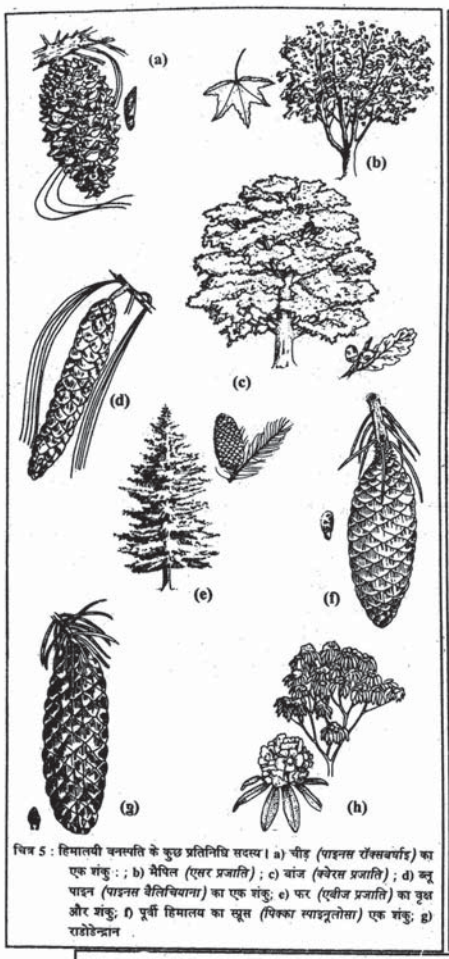

चित्र 5 : हिमालयी वनस्पति के कुछ प्रतिनिधि सदस्य। a) चीड़ *(पाइनस रॉक्सबर्घाई)* का एक शंकु : ; b) मैपिल *(एसर प्रजाति)* ; c) बांज *(क्वेरस प्रजाति)* ; d) ब्लू पाइन *(पाइनस वैलिचियाना)* का एक शंकु; e) फर *(एबीज प्रजाति)* का वृक्ष और शंकु; f) पूर्वी हिमालय का स्प्रूस *(पिक्का स्पाइनूलोसा)* एक शंकु; g) राडोडेन्ड्रान

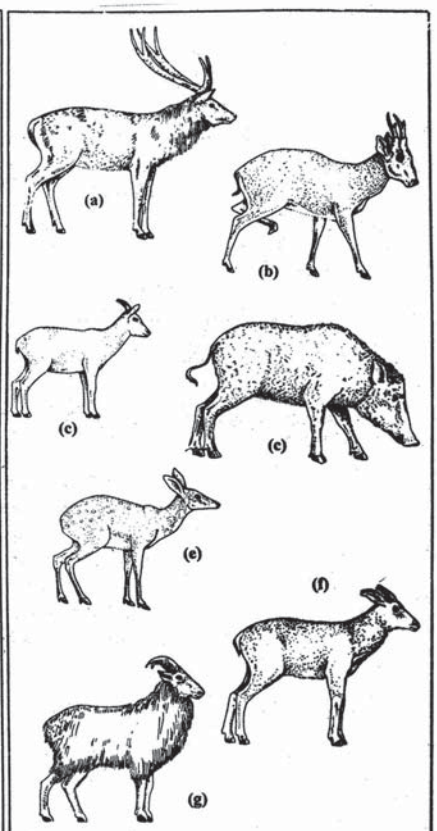

चित्र 6 : हिमालय की तुंग और देशांतर पर्वतमालाओं में पाए जाने वाले वन्यजीवों की कुछ प्रजातियां a) साभर *(सेर्वस यूनिकलर)* ; b) मुटजैक *(मुंटिएकस मुटजैक)* ; c) जंगली सूअर *(सुस सिरोफा)* ; d) गौरल *(निमॉरीडस गोरल)* e) कस्तूरी मृग *(मॉस्कस मास्किफेरस)* f) सेराव *(कैप्रिकॉर्निस सुमेट्रेन्सिस* और g) ताहर *(हेमीट्रैगस जेमलैक्विस)*।

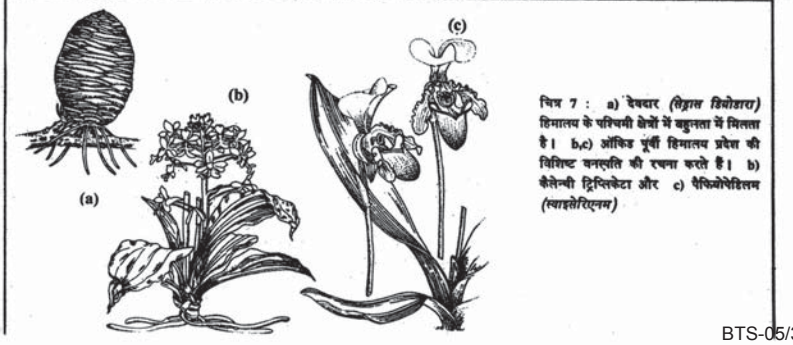

चित्र 7 : a) देवदार *(सेड्रास डियोडारा)* हिमालय के पश्चिमी क्षेत्रों में बहुलता में मिलता है। b,c) ऑर्किड पूर्वी हिमालय प्रदेश की विशिष्ट वनस्पति की रचना करते हैं। b) कैलेन्थी ट्रिप्लिकेटा और c) पैफिओपेडिलम *(स्याइसेरिएनम)*

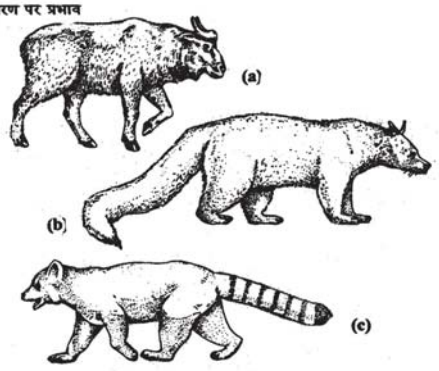

चित्र 8 : पूर्वी हिमालय की कुछ जंतु प्रजातियां। a) साकिन *(न्यूडोरकैस टैक्सीकलर)* और लाल पांडुक *(ऐंथुरस फुलजेन्स)*।

26.2.3 प्रदेश-3 : भारतीय मरुस्थल

देश के पश्चिमी भाग में स्थित है यह प्रदेश और इसे थार वन मरुस्थल कहा जाता है। यह पश्चिमी गुजरात और पश्चिमी राजस्थान के भूभाग में फैला हुआ है। पंजाब और हरियाणा के कुछ भाग कभी इस मरुस्थल का अंग थे लेकिन सिंचित खेती ने स्थिति बदल डाली है। जीवभौगोलिक दृष्टि से थार सहारा-अरबी मरुस्थल के उस तंत्र का एक पूर्वी विस्तार है जो ईरान, अफगानिस्तान, बलूचिस्तान से होता हुआ भारत-पाकिस्तान सीमा तक फैला हुआ है। वर्षा के बेहद मौसमी होने और पशुधन के भारी दबावों के कारण यह एक भंगुर और संवेदनशील पारिस्थतिक तंत्र बन गया है।

भारतीय मरुस्थल का वन्यजीवन

मरुस्थली प्रदेश का वन्यजीवन विचित्र और अनूठा है। यह इसलिए नहीं कि इसमें भारी विविधता या घनत्व है। बल्कि यह मरुस्थली परिस्थितियों के प्रति असाधारण पारिस्थितिकी अनुकूलनों के कारण है। इनमें अनेक प्रजातियां थार का मरुस्थल की स्थानिक प्रजातियां हैं। जंगली गधे की एक विशिष्ट उपजाति कच्छ की खाड़ी में सिमट कर रह गई है। पाकिस्तान में इसकी आबादी लुप्त हो चुकी है। इसके अलावा मरू लोमड़ी मरूबिलाव (चित्र 9a), डूबारा सारंग (Houbara bustard) और भाटतीतर (sandgrouse) की कुछ जातियां भी थार क्षेत्र तक सीमित रह गई हैं। हंसावर *(फ्लैमिंगो)* जैसे पक्षियों के लिए पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में एक मात्र प्रजनन स्थल इसी भूभाग में है। ये कच्छ की खाड़ी में ही प्रजनन करते हैं। (चित्र 10a) इसके अलावा कई प्रजातियों के नाम संकटापन्न प्रजातियों की सूची में दर्ज हैं। उदाहरण के लिए चिंकारा, या काला हिरन ब्लैकबक या काला हिरन (चित्र 10b) भेड़िया, स्याहगोश (caracal) चित्र (9c) और सारंग (Great Indian Bustar) (चित्र 10b) की अच्छी खासी आबादी इसी प्रदेश में मिलती है। पादप समुदाय

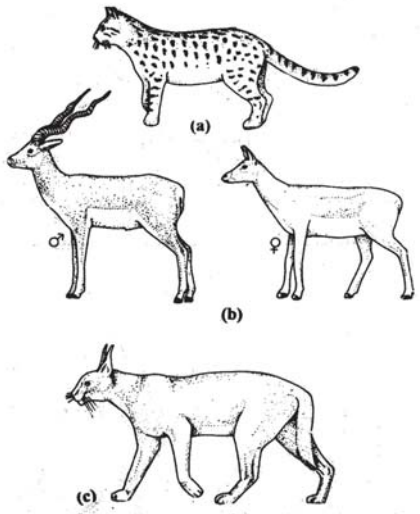

चित्र 9 : a) मरु बिलाव *(फेलिस तिबिका)*; ब्लैकबक (काला हिरन) *(एंटीलोप सर्विकापी)* नर और मादा (♂) और स्याह-गोश *(फेलिस कैराकल)*।



चित्र 11 : कावुल *(प्रोसोपिस ज्यूलिफ्लोरा)* की एक टहनी। इस प्रदेश में व्यापक रूप से वितरित यह एक मध्यम ऊंचाई वाला जलाभावसह (शुष्क मरू जलवायु में उगने वाला) वृक्ष है यह।

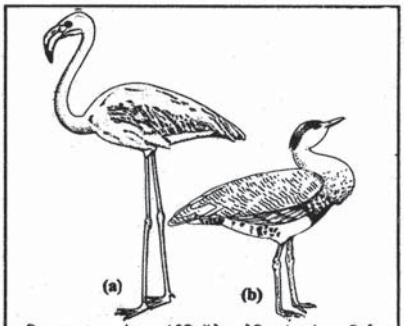

चित्र 10 : a) एक हंसावर *(फीनिकॉप्टेरस रोजियस)* । हंसावर सिर्फ मरूस्थलों में ही प्रजनन करते हैं। सारंग (Great Indian Bustard) *(कोरियोटिस नाइग्रिसेप्स)*, मरू वासी एक और पक्षी प्रजाति।

भी बेहद अनूठे हैं। कच्छ की खाड़ी में हर मानसून में काफी इलाकों में खारे या लवण जल की बाढ़ आ जाती है और ऐसे में लवणमृदोद्भिदों (halophytes) की एक विशिष्ट कच्छ लवण झाड़ियों के पादप समुदाय यहां उग आते हैं। *प्रोसोपिस सिनरेरिया* (Prosopis cineraria) *सैल्वाडोरा ओलिओपाइडिस* (Salvadoraoleoides) आदि भारतीय मरूस्थल में आम वृक्ष हैं। मानव बसासत ने मरू भूमि को काफी बदल डाला है, जिसके फलस्वरूप *प्रोसोपिस ज्यूलीफ्लोरा* (Prosopis juliflora) जैसी आकर्षक एक स्थानिक प्रजातियां बड़े पैमाने पर अब फैल रही हैं।

26.2.4 प्रदेश-4 : अर्ध शुष्क

508,000 वर्ग फेली कि०मी० के क्षेत्रफल में फैला यह प्रदेश हमारे देश के कुल भूभाग का 15% क्षेत्र घेरे हुए हैं। अनेक घास प्रजातियों और स्वादिष्ट, खाई जा सकने वाली झाड़ियों की उपस्थिति ने इस प्रदेश को नाना प्रकार के कई वन्यजीव प्रजातियों का प्रिय अरण्य बना दिया है। इस प्रदेश की सीमा पश्चिमी गुजरात और राजस्थान, महाराष्ट्र से मिलती है और इसमें पंजाब, हरियाणा और मध्य प्रदेश के भूभाग आते हैं।

अर्ध शुष्क प्रदेश का वन्यजीवन

इस प्रदेश का पश्चिमी एशिया, मुख्यतः पाकिस्तान, ईरान, मध्य-पूर्व और उत्तरी अफ्रीका के साथ दृढ़ जैविक संबंध है। यहां पाए जाने वाले पादपों में अफ्रीका सजातियता दिखाई देती है। जैसे *ऐकेशिया* प्रजातियां, *ऐनोगाइसस* प्रजातियां, *बैलेनाइटीज* प्रजातियां, *कैप्पैरिस* प्रजातियां और *ग्रिविया* प्रजातियां (चित्र 12)। अरावली और उससे जुड़ी पहाड़ियों की

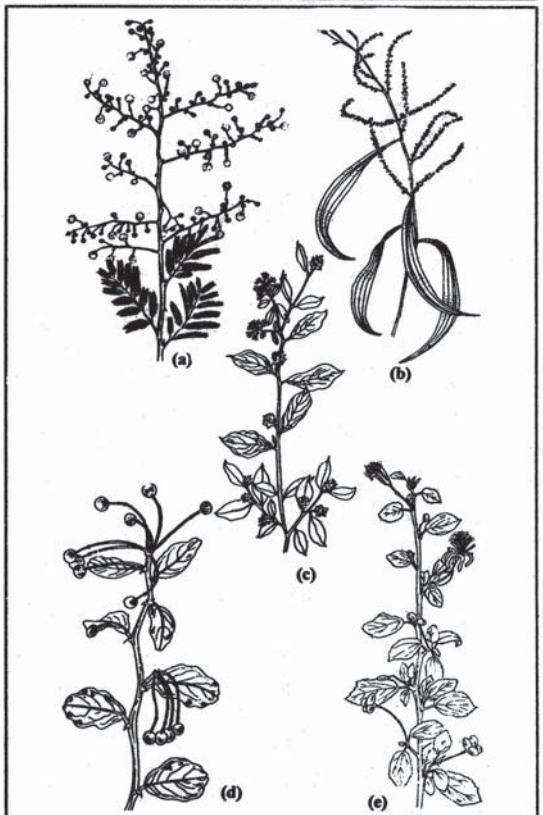

चित्र 12 : अर्ध-शुष्क प्रदेश के पादप : a) *ऐकेशिया न्यूफोफिया* (रोंज); b) *ऐकेशिया ऑरीक्यूलिफोर्मिस* (आस्ट्रेलियाई वाटल); c) *ऐनोगाइसस पेन्डुला* (धोय, सिरस); d) *कैप्पैरिस सैपियारिया* (कंथारी); और e) *ग्रिविया टीनैक्स* (रामधना)।

NMDC-210

BTS-05/337

ढालों पर आपको *एनागाइसस पेन्डुला (Anogeisus pendula)* के यूथी वन देखने को मिल जाएंगे। यह प्रजाति इस रूप में सिर्फ इसी क्षेत्र में पाई जाती है। इस क्षेत्र के इतर ऐ *पेन्डुला* उत्तरी मध्य प्रदेश के जंगलों में सागौन के साहचर्य में मिलता है।

प्राणिजात में बड़े शाकाहारी जंतु मिलते हैं - काला हिरन (ब्लैक बक), चौसिंगा, गुजेल और नीलगाय (चित्र 13a), सांभर वनाच्छादित पहाड़ियों और शीतल नम घाटी क्षेत्रों तक ही सीमित पाए जाते हैं। मांसाहारी जंतुओं में एशियाई शेर गुजरात में सिमट कर रह गया है और चीता तो लुप्त ही हो चुका है। इस प्रदेश में पाई जाने वाली अनेक प्रजातियां का घनत्व बहुत घट गया है और ये संरक्षण की रुचि के केन्द्र हैं जैसे स्याहगोश, सियार, भेड़िया, रीछ (sloth-bear) (चित्र 13b), काला हिरन (ब्लैक बक), सारंग, लघुतृणमयूर या खरमोर (Lesser Florican) (चित्र 13c), हंसावर और जलमुर्गी की प्रजातियां। नदियों और झीलों में भी विशाल जीवरूप मिलते हैं जैसे मगरमच्छ - मगर और घड़ियाल तथा कछुओं की आबादी, तारक समुद्री कच्छपों (Star Tortoise) की विशालतम आबादी इसी प्रदेश में मिलती है।

26.2.5 प्रदेश-5 : पश्चिमी घाट

पश्चिमी घाट भारत के प्रमुख सदाबहार उष्णकटिबंध वन भागों में एक हैं। ये कुल 160,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैले हुए हैं। पश्चिम में यह प्रदेश समुद्र तट से घिरा है और पूर्व में इसकी सीमा दक्षिण प्रायद्वीप प्रदेश से लगी हुई है। सदाबहार उष्णकटिबंधी वन इस प्रदेश के लगभग एक तिहाई क्षेत्रफल को घेरे रहते हैं। हाल के कुछ वर्षों में इन वनों का एक बड़ा भाग इस कदर नष्ट हो चुका है कि इनका संरक्षण चिंता का बहुत बड़ा विषय बन गया है। इसका कारण इसकी असाधारण जैविक विपुलता है। भारत के लगभग दो तिहाई स्थानिक पादप इसी भूभाग में सिमटे हुए हैं। किंतु इनमें से अनेक प्रजातियों की उपयोगिता का दोहन अभी तक नहीं हो सका है। नाना प्रकार के जैविक समुदायों को आश्रय आधार देने के अलावा इस प्रदेश के वन यहां के जलीय चक्र को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

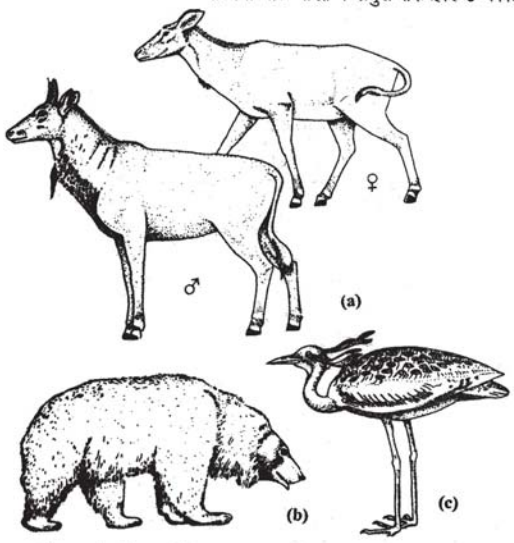

चित्र 13 : अर्ध-शुष्क प्रदेश के कुछ प्राणिजात घटक : a) *नीलगाय बॉस्लैफस ट्रैगोकैमिलस* मादा (♀) और नर; b) रीछ (*मेलुर्सस अर्सिनस* और खरमोर (*लिफियोटिडीज़ इंडिका*)।

पश्चिमी घाटों का वन्यजीवन

पश्चिमी घाटों का विस्तार लगभग 1,500 कि० मी० लंबा है, यह क्षेत्र अपने में तापमान और वर्षा की भारी प्रवणता समेटे रहता है, जिसके फलस्वरूप नाना प्रकार के जातीय संबंध उत्पन्न होते हैं। देशांतरत: घाट पश्चिम में समुद्र सतह से फैलते हुए एकाएक उठता हुआ 2,700 मीटर ऊंचे एक अति विदरित पठार में जा पहुंचते हैं और फिर उतने ही आकस्मिक ढंग से यह 500 मीटर से नीचे दक्षिण मैदानों में उतर जाते हैं। यह प्रवणता सदाबहार से अर्धसदाबहार, आर्द्र पर्णपाती से शुष्क पर्णपाती वनस्पति रूपों में परिवर्तनों का मुख्य कारण हैं। यह लंबी पर्वत श्रृंखला कुछ स्थानों पर चौड़ी घाटियों द्वारा कटी रहती हैं, जिससे अल्प गमनशील प्रजातियों का बिखराव रूकता है और स्थानीय जाति-उद्भव को प्रोत्साहन मिलता है। इसके प्रमुख जीवभौगोलिक अवरोध वन-अंतराल हैं मेयर गॉर्ज, पालघाट अंतराल और शेनकोट्टा अंतराल जो नीलगिरी अन्नामलै और अगस्त्यमलै पर्वत खंडों को एक दूसरे से अलग रखते हैं। इस प्रदेश के समग्र भूभाग की चर्चा कर लेने के बाद आइए अब इसके पादप जीवन के बारे में जानें।

भारत में पाई जाने वाली पुष्पी पादपों की कोई 15,000 प्रजातियों में से 4,000 यानी 27 प्रतिशत इसी प्रदेश में मिलती हैं। तिस पर अचरज यह कि पश्चिमी घाट समूचे भूभाग का सिर्फ 5 प्रतिशत है। इन 4,000 प्रजातियों में भी लगभग आधी (1,800 प्रजातियां) सिर्फ इसी भूभाग में पाई जाती हैं।

इस प्रदेश के 1,500 कि०मी० विस्तार में पाई जाने वाली भौगोलिक भिन्नताओं के बारे में हम पहले बता चुके हैं। इसी तरह सदाबहार वनसंरचना भी इन घाटों की समूचे विस्तार में समरूप नहीं रहती। इनकी प्रभावी प्रजातियों की पहचान के आधार पर इनके विशिष्ट विभाजनों का वर्णन सारणी- 1 में दिया गया है।

सारणी -1 : पश्चिमी घाटों के विस्तार में पाए जाने वाले प्रमुख प्रकार की वनस्पतियां।

क्रमांक	वनस्पति	प्रभावी कारक
1)	*ब्राइडेलिया-सिजीयिम-फाइकस-टर्मिनेलिया*	शीतकाल तापमान तथा शुष्क मौसम की अवधि
2)	*मिमेसिलोन-सिजीजियम-ऐक्टिनोडाफेन*	
3)	*पर्सिया-होलीगार्ना-डायोस्पायॉस*	
4)	*डिप्टेरोकार्पस-मिस्वा-पैलैक्विअम*	
5)	*कलेनिया-मिस्वा-पैलैक्विअप*	
6)	*पर्वतीया शोला वन*	उच्च तुंगता
7)	*नदीतट/दलदली वन, मिरिस्टिका (चित्र 4)*	जलाक्रांत घाटी



चित्र 14 : *मिरिस्टिका* की फल सहित एक टहनी।

यद्यपि इन वनों में उत्तर पूर्वी भारत और अंदमान के वनों से भारी पारिस्थितिक समानता पाई जाती है तथापि अपने प्रजाति संघटन में ये बेहद भिन्न होते हैं। डिप्टेरोकार्पेसी इमारती वृक्ष कुल की 26 प्रजातियों में 13 सिर्फ पश्चिमी घाटी में ही पाई जाती है; कहीं और नहीं। इनमें से 4 अति स्थानगत स्थानिक प्रजातियां संरक्षण चिंता का विषय हैं। *होपिया जैकबी* नामक एक प्रजाति का पुनर्सग्रहण हुए पूरे 50 वर्ष बीत चुके हैं। ये प्रजातियां इमारती लकड़ी की गुणवत्ता को उन्नत बनाने के लिए बेहद महत्वपूर्ण आनुवंशिक स्टॉक का काम करती हैं।

आइए अब इस प्रदेश को प्राणिजात पर दृष्टि डालें। इसके अपने स्थानिक प्राणिजात घटक होने के साथ-साथ, प्रायद्वीपी भारत में पाए जाने वाले अधिकांश कशेरूकी प्रजातियों की अच्छी खासी संख्या इसी प्रदेश में है। इस प्रदेश में न पाए जाने वाले विशाल स्तनधारी हैं तो सिर्फ गुजेल, ब्लैकबक और नीलगाय का शुष्क बोविड जंतु समूह, जो संबद्ध निम्न प्राणिजात के साथ अदृश्य रहता है। इसके साथ ही आद्र घासस्थलों के प्राणिजात, अनूपमृग (चित्र 15a) और अरान भैंस, यहां नहीं मिलते। कंशेरूकी जंतुओं में, सभी समूहों के स्थानिग वर्ग पाए जाते हैं। उभयचरों में स्थानिक वर्गों का अनुपात असाधारण रूप से विशाल होता है - यानी जीनसों का आधा, और अधिकांश प्रजातियां स्थानिक होती हैं। स्थानिग वर्ग के रूप में अलवणजलीय मछलियां भी रूचि का विषय हैं और इनमें उत्तर पूर्वी भारत के वर्गों से सजातीयता पाई जाती है। भारतीय जीव भौगोलिक अवधारणा के विकास में 'होरा और सतपुरा सिद्धांत' के गढ़ने में इनकी बड़ी महती भूमिका रही है। अनेक सरीसृप और पक्षी प्रजातियां घाटों तक परिसीमित हैं। ट्रैवंकोर कच्छप और केन कछुआ ऐसे दो संकटापन्न वर्ग हैं जो मध्य-पश्चिमी घाट में एक छोटे से क्षेत्र में सिमटे हुए हैं। इस क्षेत्र को कूर्ग-ट्रैवेंकोर भी कहते हैं। इसी प्रदेश में 62 स्तनधारी जीनस हैं, जिसमें से एक जोकि एक कृतंक (rodent) है, स्थानिक है। जीवभौगोलिक रुचि के बंधनों के अनेक उदाहरण इस प्रदेश में है : जैसे ताहर के जरिए हिमालय के साथ उत्तर-पूर्वी भारत और श्रीलंका के साथ।

जीनस और प्रजाति: जीनस वंश यानी जीनस का बहुवचन है। स्पिशीज यानी प्रजाति बहु और एकवचन में एक ही है। मानव, जिसे *होमो सेपियन्स* कहा जाता है में *होमो जीनस* है और *सेपियंस* है प्रजाति। ध्यान देने की बात यह है कि मानव के पूर्वजों का जीनस तो वही रहता है मगर सिर्फ प्रजाति ही बदलती है- *होमो इरेक्टस, होमो हैबिलिस, होमो कैनामेंसिस*।

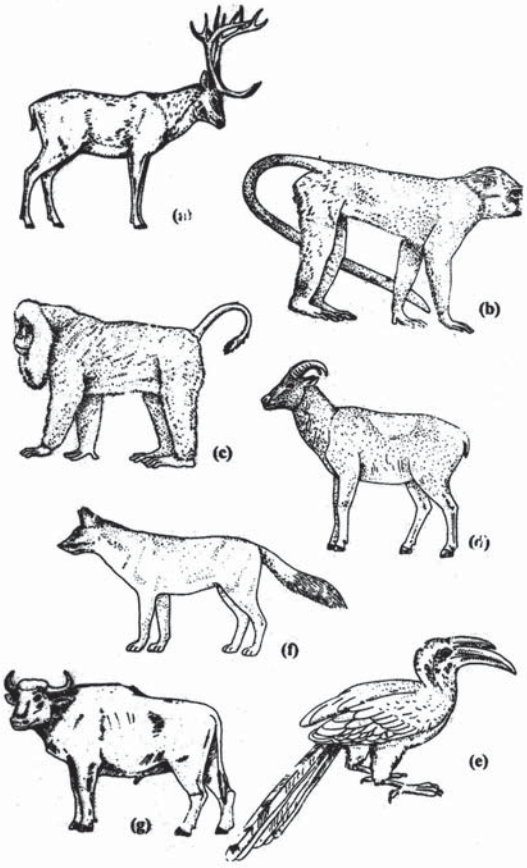

पश्चिमी घाट मे ही पाई जाने वाली प्रसिद्ध प्रजातियां इस प्रकार हैं :

प्राइमेटों (primates) में - नीलगिरि लंगूर और सिंहपुच्छ वानर (चित्र 15b,c)

कृंतक (rodents) - प्लैटाकेंथेमिस और दक्षिणी घाट की कंटकी डोरमाउस।

गिलहरी (squirrels) - रैटुफा इंडिका की अनेक उपजातियां जिनके पृथक रूप महाराष्ट्र, मैसूर, मालाबार और तमिलनाडु के घाटों में मिलते हैं। भूरी गिलहरी तमिलनाडु के वनों में दो स्थानों तक सीमित हैं।

मांसाहारी (carnivores) - दक्षिण सदाबहार वन में मालबरी गंध बिलाव, उत्तरी पर्णपाती वनों में रस्टी स्पॉटेड कैट।

खुरदार (ungulates) - नीलगिरि ताहर (चित्र 15d) नीलगिरि से लेकर अगस्त्यमलै पर्वतीय घासस्थलों तक।

घनेश (Hoonbills) - मालाबार धूसरी घनेश (चित्र 15e) इन स्थानिक प्रजातियों के अलावा भी पाई जाने वाली अन्य प्रजातियां हैं : बाघ, धोले, (चित्र 15f) रीछ, हाथी और गौर (चित्र 15g)।

26.2.6 प्रदेश-6 : दक्षिण प्रायद्वीप

यह प्रदेश भारत में सबसे विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है, जो संपूर्ण भूमि का लगभग 43% है और इसका क्षेत्रफल 1,421,000 वर्ग कि० मी० है। इस प्रदेश का एक बड़ा भाग यूं मानव द्वारा काफी बदल दिया गया है, किंतु इसमें कुछ वन क्षेत्र अब भी पाए जाते हैं, जैसे मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और उड़ीसा में।

चित्र 15 : पश्चिमी घाट के प्राणिजात a) अनूप (दलदल) मृग *(सेरेव्स इयुवौसेली)*; नीलगिरी लंगूर *(प्रिसबाइटिस जॉनी)*, सिंहपुच्छ वानर (Lion-tailed Macaque); नीलगिर ताहर *(हेमीट्रैगस हाइलाकायस)*; मालबारी धूसरी घनेश (Malabar grey Hornbill) *(टोकुस बाइरोस्ट्रिस)* f) धोले *(कुऑन अल्पाइनस)* और गौर *(बॉस गौरस)*।

इस प्रदेश में पर्णपाती वन, कंटकी वन और अवनत झाड़ीदार वनस्थलियां पाई जाती हैं। पूर्वी घाट में अर्ध-सदाबहार वन और आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के मैदानों के समुद्रतटीय छोरों पर शुष्क सदाबहार वन या कंटकी कुंज पाए जाते हैं।

उत्तरी प्रदेश में साल और विशेषकर उत्तर-पूर्व में सागौन (चित्र 16) वृक्षों की बहुतायत वाले वन पाए जाते हैं जिनमें विविध प्रजातियां (*टर्मिनेलिया, ऐनोगाइसस, क्लोरोजाइलॉन*) भी मिलती है। प्रदेश के दक्षिणी अर्धभाग में शुष्क, कंटकी वन मिलते हैं जिनमें *ऐकैशिया, ऐलबिज्जिया ऐमारा* और *हार्डविकिया* का संबंध पाया जाता है। प्राकृतिक घासीय मैदान दुर्लभ हैं।

समूचे प्रदेश में प्राणिजात प्रजातियां व्यापक रूप से मिलती हैं, जैसे चीतल (चित्र 17a), सांभर, नीलगाय, चौसिंगा, भौंकू मृग (barking deer) और गौर। कुछ प्रजातियां जैसे ब्लैक बक शुष्क खुले क्षेत्रों तक सीमित पाई जाती हैं। प्रजातियों की लघु, अवशिष्ट आबादी भी मिलती हैं जैसे हाथी (बिहारी, उड़ीसा और कर्नाटक, तमिलनाडु) और अरान (जंगली भैंस) (उड़ीसा, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के मिलन स्थल के एक छोटे से इलाके में)। हार्ड ग्राउंड स्वैम्प डियर (अनूप मृग) अब मध्य प्रदेश के सिर्फ एक स्थान में ही सीमित होकर रह गया है। घड़ियाल गंगा में मिलने वाली कुछ नदियों और

महानदी के एक स्थल विशेष तक सिमट कर रह गया है। मांसाहारी जंतुओं में रस्टी स्पॉटेड कैट छुटपुट संख्याओं में मध्य भारत में ही मिलती है। भेड़िये असघन संख्याओं में शुष्क क्षेत्रों में देखे जाते हैं। बाघ, तेंदुआं, रीछ, गौर, सांभर, चीतल, चौसिंगा और जंगली सूअर विशेषकर पर्णपाती क्षेत्रों में उच्च घनत्व में मिलते हैं।

जहां तक वनस्पति जात घटकों की बात है, तो इस प्रदेश में कई रोचक विशेषताएं देखने में आती हैं। मध्य पर्वत श्रेणियां उच्च तुंगता पर उगने वाले शीतोष्ण वनस्पति जात के आरंभ का सूचक हैं। पूर्वी घाट कुछ स्थानिक रूपों की शरणस्थली है जिनमें पहाड़ी मैना (चित्र 7b) जैसे पक्षी, निम्न कशेरूकी और अकशेरूकी भी शामिल हैं। मूल्यवान स्थानिक पादप संसाधन जैसे रेड सैंडर और चंदन वृक्ष वन भी तत्काल संरक्षण चिंता का विषय है। इसी तरह नम सागौन, दक्षिणी और तटीय साल, अम्ब्रेला थार्न आदि प्रजातियां और विशेष रूप से अर्ध-सदाबहार समुदायों और शुष्क सदाबहार वन के संरक्षण के उपायों की भी आवश्यकता है।



चित्र 16 : सागौन (*टेक्टोना ग्रैन्डिस*) की एक पुष्पी टहनी।

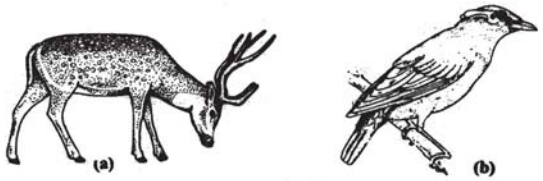

चित्र 17 : दक्षिण प्रायद्वीप में पाए जाने वाले चीतल (*ऐक्सिस ऐक्सिस*) और पहाड़ी मैना (*ग्रैक्यूला रिलिजियोसा*)।

26.2.7 प्रदेश-7 : गंगा का मैदान

इस प्रदेश में विश्व के सबसे उपजाऊ क्षेत्र हैं और यह एक घने और बढ़ती मानव जनसंख्या को संबल प्रदान करता है। यह लगभग 359,400 वर्ग कि० मी० क्षेत्रफल में फैला हुआ है। इसके अधिकांश भूभाग में पाई जाने वाली मूल वनस्पति अब लुप्त प्राय: हो चुकी है, क्योंकि इसके एक बहुत बड़े हिस्से में से खेती होने लगी है। एकमात्र प्राकृतिक वनस्पति और वन्यजीव इसके उत्तर में पाए जाते हैं - यानी शिवालिक पर्वतमालाओं और निकटवर्ती भबर तराई-दुआर पट्टी में। इस प्रदेश में भारी संख्या में झीलें और मौसमी दलदल पाए जाते हैं। इनमें प्राय: जलनिकास नहीं हुआ होता है। यह क्षेत्र प्रवासी जलमुर्गियों का आवास है।

गंगा के मैदान का वन्यजीवन

सदियों पहले यह वन्यजीवों से भरपूर था जिनमें मुख्य थे गैंडा, हाथी, भैंस और अनूपी मृग (स्वैंप डियर)। समय बीतने के साथ-साथ जैसे जैसे अधिकाधिक भूभाग में खेती बढ़ती गई इनकी संख्या घट गई और ये लुप्त हो गए। मगर इसके पश्चिमी क्षेत्रों में नीलगाय, ब्लैकबक और चिंकारा की छोटी अवशिष्ट आबादियां सघन कृषि क्षेत्रों के बीच अब भी पाई जाती हैं। उत्तर में स्थित तराई की घासस्थलियों में कुछ जगहों पर अनूपी मृग और पाढ़ों (Hogdeer) की आबादी मिलती हैं (चित्र 18a)। गैंडा, चरत (Bengal Floricon) दृढ़लोमी खरगोश पूर्वी तराई या दुआर में कम संख्या में पाए जाते हैं। सांभर-चीतल समुदाय भाबर के वनों में मिलता है, जिसमें गोरल खड़ी ढालों वाले जंगलों में पाए जाते हैं। कलीज फीजेंट के साथ ये प्राणिजात हिमालयी परिवेश में संक्रमण के आरंभ के सूचक हैं। जैसे कि

पहले बताया गया है, यह क्षेत्र प्रवासी जलमुर्गी का एक मुख्य शीतकालीन पोषण स्थल है, जो यहां असाधारण घनत्व और विपुलता में पाया जाता है। नमस्थलियों और नदियों में मगर और घड़ियाल की आबदियां, गंग-डाल्फिन (चित्र 18b) की अवशिष्ट आबादियां और अलवणजलीय कछुए की 20 प्रजातियों वाला एक विपुल समुदाय भी इस प्रदेश में मिलता है।

26.2.8 प्रदेश-8 : उत्तर पूर्वी भारत

उत्तर-पूर्वी भारत का यह प्रदेश भारतीय, भारत-मलय और भारत-चीनी प्रदेशों के बीच का एक संक्रमण प्रदेश है। साथ ही यह प्रदेश हिमालय पर्वतों और प्रायद्वीपी भारत का मिलन-स्थल है। अपनी विपुल जैव विविधताओं के कारण यह भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे महत्वपूर्ण प्रदेशों में एक है। इसकी अनेकों प्रजातियां इसी क्षेत्र की स्थानिक हैं। सिर्फ पादप जातियों में ही यह विविधता नहीं बल्कि जंतुओं में भी ऐसी प्रजाति-विपुलता मिलती है जो दुनिया में अन्यत्र कहीं नहीं मिलती। यह प्रदेश लगभग 171,423 वर्ग कि० मी० के क्षेत्रफल में फैला हुआ है और इसमें आसाम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड और त्रिपुरा राज्य आते हैं। इस क्षेत्र का 40% भाग वनों से घिरा है।

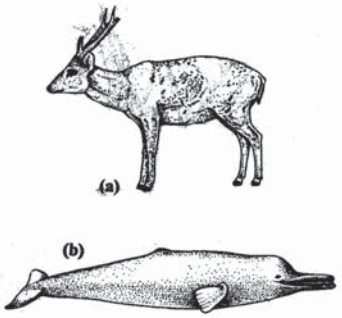

चित्र 18 : a) पाढ़ा (*ऐक्सिस पोर्सिनस*); b) गंगा डाल्फिन (*प्लैटेनिस्टा गैंजेटिका*); जो गंगा के मैदान में पाए जाते हैं।

विविध आवास परिवेशों के साथ-साथ दीर्घकालिक भूगर्भी स्थिरता ने स्थानिक पादप और जंतु समूहों के विकास में योगदान किया है। उत्तर पूर्वी भारत की जैवविविधता में योगदान करने वाली कई प्रजातियां इस भूभाग तक सीमित है। या फिर वे छोटे-छोटे स्थानिक भागों, जैसे खासी पहाड़ियों में सिमटी पाई जाती हैं। एकमात्र उत्तर-पूर्व में ही वह मूल आवास है जो कभी उत्तरी भारत का उभय आवास हुआ करता था। इस प्रदेश में ब्रह्मपुत्र घाटी अपने में एक अनूठी प्राकृतिक वनस्पति को समेटे हुए है - अनूप (swamps) घासस्थलियां (grasslands) और सीमावर्ती वनस्थल तथा वन। विशेषरूप से इन घासस्थलियों में पाए जाने वाले विशाल प्राणिजात की पूर्ण विपुलता को यदि कहीं देखा जा सकता है वह इन भूभागों में। गैंडा, भैंसा, अनूपीमृग, पाढ़ा, बनैल (pygmy hog) और दृढ़लोमी खरगोश इसके प्राणिजात हैं। इसी क्षेत्र में हाथियों की सबसे बड़ी संख्या मिलती है। यह जल मुर्गी तथा अन्य पक्षियों का वायु मार्ग भी है जिससे होते हुए ये पक्षी शीत ऋतु में इस उपमहाद्वीप की उष्णता और साइबेरिया तथा चीन स्थित अपने ग्रीष्मकालीन अरण्यों के बीच सफर करती हैं। इस प्रदेश का जैव वैज्ञानिक अध्ययन काफी कम हुआ है और अनेक प्रजातियों की खोज और उनका वर्णन किया जाना अभी बाकी हैं। यहां विद्यमान कहीं अधिक उच्च कोटि की जैविक उपयोगिताओं के दस्तावेज-बद्ध किए जाने की भारी संभावनाएं हैं।

उत्तर-पूर्वी इकाईयों में पूर्व और दक्षिण-पूर्व की ओर भारत-चीन और भारत-मलय से बंधुता पाई जाती है। अनेक प्रजातियां उभयधर्मी हैं और एक भाग से दूसरे भाग में एक क्रमिक विनिमय देखने को मिलता है। स्वयं ब्रह्मपुत्र नदी जंतुओं के लिए नहीं बल्कि अनेक पादप प्रजातियों के लिए भी एक प्रकीर्णन अवरोध का काम करती है। उदाहरण के लिए स्वर्ण लंगूर (चित्र 19a), दृढलोकी खरगोश और बनैल इसके उत्तरी तट तक परिसीमित रहते हैं। उधर हूलू गिबन (Hoplock Gibbon) (चित्र 19b) और ठूंठ-पुच्छ वानर (Stump tailed macaque) इस नदी के दक्षिणी तट में परिसीमित मिलते हैं। सदाबहार वनों में प्रभावी वितानी वृक्ष *मेसुआ आसमिका* सिर्फ उत्तरी तट पर पाया जाता है तो *डिप्टेरोकार्पस मैक्रोकार्पस* और *शोरिया आसामिका* सिर्फ दक्षिण तट की ओर ही पाए जाते हैं।

आसाम की पहाड़ियों में विविधत की दो और प्रवणताएं विद्यमान रहती हैं : एक तुंगता प्रवणता और दूसरी वर्षा प्रवणता।

1) तुंगता प्रवणता जो मेघालय पठार के दक्षिणी पाद में 300 मीटर नीचे से लेकर 1960 मीटर पर स्थित मेघालय के उच्चतम तक वर्मा सीमा पर समूचे मणिपुर प्रांत में 3200 मीटर पर स्थित

उच्चतम बिंदु तक होती है। यह तुंगता परास उष्णकटिबंधी सदाबहार और अर्ध-सदाबहार वन, उष्णकटिबंधी आर्द्र पर्णपाती वन, उपोष्णी पर्वत वन और शीतोष्ण समुदायों को अपने में घेरे रहता है। मणिपुर की ऊंची चोटियों में पूर्णत: एक अर्ध-अल्पाइन झाड़ीदार वनस्पति देखने में आती है।

2) वर्षा प्रवणता खुले (अनावरित) दक्षिणी ढालों जैसे दक्षिण मेघालय में चेरापूंजी पर की 11,000 मि० मी० वार्षिक वृष्टि से लेकर 1,500 मि० मी० वार्षिक वृष्टि वाले आच्छादित वृष्टिछाया (rain shadow) के ढाल। स्थानिक प्रजातियों में मैग्नोलिएसी कुल के सदस्य पादप संक्रमित क्षेत्रों में उगते हैं, तो बाल्सीमिनेसी व्यापक रूप से वितरित मिलते हैं।

मेघालय अपने वानस्पतिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है, जिनमें अधिकांश शिलौंग-चेरापूंजी के पठारी भूभागों के उच्च तुंगता वाले बांज वन हैं। त्रिपुरा-मिजोरम सीमा के समीप के भूभाग में वन्यजीव प्रजातियों की असाधारणा विविधता पाई जाती है, जिसमें चार दुर्लभ प्राइमेट (नरवानर) प्रजातियां भी वास करती हैं। ये है हूकू गिबन, पर्णवानर और सूकर-पुच्छ तथा ठूंठ पुच्छ वानर।

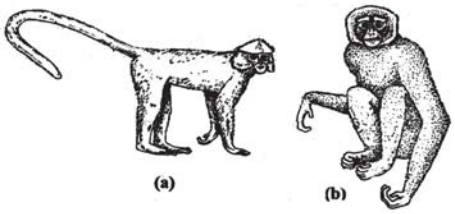

चित्र 19 : उत्तर पूर्व भारत में पाए जाने वाले a) स्वर्ण लंगूर (*निसिटीबस कौकैंग*); और
b) हूलॉक गिबन (*हाइलोबेटीज हूलॉक*)।

26.2.9 प्रदेश-9 : द्वीप

जीव भौगोलिक प्रदेशों की इस श्रेणी में हम बंगाल की खाड़ी में अंडमान निकोबार द्वीपसमूह और अरब सागर में लक्षद्वीप के बारे में बताएंगे।

अंडमान और निकोबार उत्तर-दक्षिण दिशा में फैले 348 द्वीपों का समूह है। इनका एकल भू क्षेत्रफल लगभग 8,327 वर्ग कि० मी० है और ये 590 कि०मी० तक फैले हैं। अंडमान द्वीप बर्मा-भारत तट से छिछले महाद्वीप समुद्र द्वारा अलग हैं। निकोबार मुख्य भूमि अंडमान और भीतर से लगभग 800 मीटर गहरे जलमार्गों द्वारा एक दूसरे से पृथक रहते हैं। ये द्वीप दरअसल बर्मा की अराकन पर्वतमाला का विस्तार हैं और नर्कोडम द्वीप ज्वालामुखी हैं और ये अभी भी सक्रिय समझे जाते हैं। अंडमान द्वीप बर्मा के साथ बंधुता दर्शाते हैं, उधर सुमात्रा से मात्र 90 कि०मी० दूर निकोबार द्वीपों में दक्षिण-पूर्व एशिया से बड़ी ही जीव भौगोलिक घनिष्ठता पाई जाती है। अंडमान और निकोबार द्वीप भारत के तीन उष्णकटिबंधी आर्द्र सदाबहार वन प्रदेशों से बंधन दर्शाते हैं। इनके वनस्पति एवं प्राणिजात, जो कि भारत में कहीं अन्यत्र नहीं मिलते, कई प्रकार से अनूठे हैं।

अंडमान और निकोबार द्वीपों का वन्यजीवन

वन्यजीवन की बात करने से पहले, संक्षेप में हम इसके जीव भौगोलिक स्थलों के बारे में जान लें। अंडमान द्वीपसमूह में 6,491 वर्ग कि०मी० क्षेत्रफल में फैले 324 द्वीप शामिल हैं। इनका अधिकांश क्षेत्र 'महा अंडमान' ने घेर रखा है, जो द्वीपों का बना है। ये द्वीप संकरी खाड़ियों द्वारा एक दूसरे से पृथक रहते हैं। ये हैं : उत्तर, मध्य, दक्षिण अंडमान तथा बारतांग और रटलैंड द्वीप। लिटिल अंडमान दक्षिण से कुछ दूरी पर है। निकोबार समूह कुछ छोटा है जिसमें सिर्फ 24 द्वीप हैं। इसमें तीन उपखंड है : उत्तरी समूह के टेरेसा, तिलंगचोंगे कमोर्ता और लिटिल निकोबार व ग्रेट निकोबार।

इस प्रदेश में एक अनूठे किस्म का पादप और जन्तु जीवन है, जो भारी स्थानिकता दर्शाता है। इन द्वीपों का स्तनधारी प्राणिजात काफी कम संख्या में पाया जाता है। इसका मुख्य कारण अंडमान और निकोबार द्वीपों का पार्थक्य तथा उनका छोटा आकार हो सकता है। स्तनधारी जंतुओं में कृंतकों और चमगादड़ों की प्रधानती रहती है। सैकड़ों वर्ष पहले, इन द्वीपों में सूअर लाए गए थे, अब इन्हें 'अंडमान सूअर' कहते हैं। इनके अलावा, चितिदार मृग, पाढ़ा, भौंकू मृग (बार्किंग डियर), बकरियां, हाथी, सांभर, तेन्दुआ और ताड़-गंधमार्जार (चित्र 20a) आदि कुछ अन्य प्रजातियां भी यहां विद्यमान हैं, इनमें से कुछ प्रजातियां इन द्वीपों में खूब फल-फूल रही हैं, ऐसा विश्वास है कि ये इन द्वीपों की मूल प्राणिजात को कम कर रही हैं, जिसमें हैं जमीन में घोंसला बनाने वाली पक्षी और साधारण चूहा। देशज स्तनधारी प्रजातियां, जिनका संरक्षण आवश्यक है, उनमें शामिल हैं निकोबारी वानर जिसे केकड़ा-भक्षी वानर भी कहा जाता है और व्यापक रूप से पाया जाने वाला दीर्घ-पुच्छ वानर की एक विशिष्ट नस्ल, निकोबारी वृक्ष छुछुंदर और अंडमान निकोबार के तट से लगे समुद्र में साधारणतया पाया जाने वाला डुगोंग (चित्र 20b)।

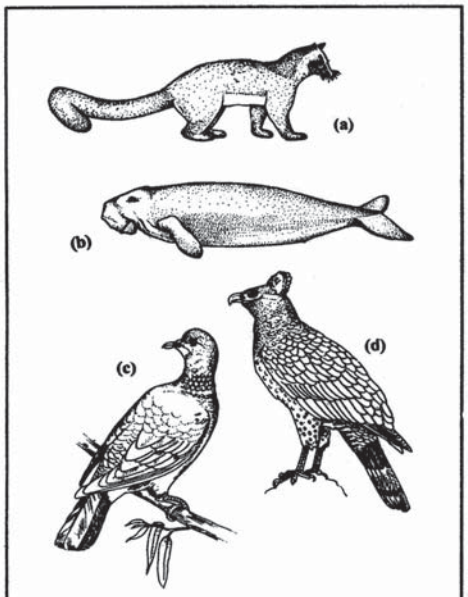

चित्र 20 : अंडमान और निकोबार द्वीपों के कुछ प्राणिजात। a) ताड़गंधमार्जार (*पैग्यूमा बार्बेटा*); b) डुगोंग (*डुगोंग*); c) अंडमान वन कबूतर (*बा एल्फिन्स्टोनाइ*); और सूप उकाब (*स्पिलोर्निस चीला*)।

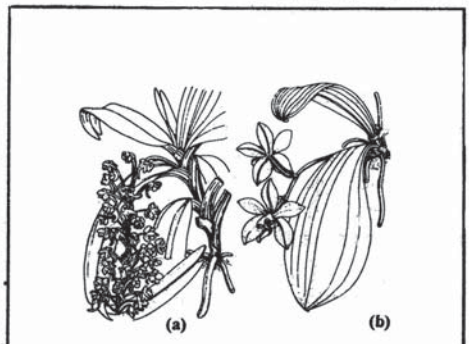

चित्र 21 : अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की दो ऑर्किड प्रजातियां a) *एरिडीज एमिरिती* : b) फेलीनोप्सिस स्पीलियोसा।

पक्षीजात में पक्षियों के 225 विशिष्ट वर्ग हैं जिनमें से 112 इन द्वीपों की स्थानिक हैं। कुछ विचित्र उदाहरण हैं टीला बनाने वाला पक्षी जो बलुई तटों और वेलांचली वनों में पाया जाता है और निकोबार मेगापोड। यह अति संकटापन्न है। एक और रोचक स्थानिक पक्षी प्रजाति नार्कोन्डम धनेश हैं, जो अंडमान के पूर्व में स्थित 7 वर्ग कि० मी० क्षेत्रफल वाले ज्वालामुखीय द्वीप नार्कोन्डम में ही पाई जाती है। सूप उकाब तथा अंडमान या धूसरी हंसक ('Andaman's or Grey Teal), जो कि खारे तथा अलवण वन तालाबों में पाई जाने वाली यूथी बत्तख है, अंडमान द्वीपों तक परिसीमित हैं और ये अत्याधिक संकटापन्न है। यह देखने में आया है कि कई स्थानिक प्रजातियां 'सघन सदाबहार वनों' तक ही सीमित रहती हैं जैसे निकोबारी कबूतर, अंडमानी वन कबूतर (चित्र 20c), निकोबारी टुइयां तोता, निकोबारी किरीटी सूपी उकाब (चित्र 20d)। इन स्थानिक प्रजातियों के संरक्षण के लिए इनके मूल आवास स्थलों का तत्काल सुरक्षित करने की आवश्यकता है।

सरीसृप और एमफ़ीबिया : सरीसृपों और उभयचरों की अनेक प्रजातियां इन द्वीपों में स्थानिक हैं। इनमें कई प्रजातियों की खोज अभी तक नहीं हुई है और इन पक्षियों में अनेक की आचरण पारिस्थितिकी को समझा जाना बाकी है। कुछ रोचक सरीसृप और उभयचर प्रजातियों में खारे जल का मगर है जो अब उत्तरी मध्य और लिटिल अंडमान तथा ग्रेट निकोबार और कुछ तटपार द्वीपों की कुछ संकरी खाड़ियों तक ही सिमट कर रह गया है। इन द्वीपों में समुद्री कछुए की चार प्रजातियां पाई जाती हैं - हरा रिड़ले, हॉक्स बिल और लैदरी। इनमें से लैदरी कछुए का भारत में एकमात्र बसेरा इस समय निकोबार द्वीपों के समुद्र तट हैं। अधिकांश हॉक्स बिल कछुओं के नीड़न स्थल और लगभग आधे हरे कछुओं (Green

turtles) का नीड़न स्थल अंडमान और निकोबार द्वीप समूहों में ही है। छोटी-छोटी संख्या में पाया जाने वाला एशियाटिक बॉक्स टर्टल, जो कि एक अलवणीय कछुआ है, की संख्या में भारी कमी भी चिंताजनक है। मत्स्य और प्रवाल: अंडमान और निकोबार द्वीप नाना प्रकार की तटीय विविधताएं दर्शाते हैं जैसे अगरान नदमुख, बलुई और पंकिल समुद्रतट, प्रवाल भित्तियां (coral roofs), लैगून (lagoon) और समुद्री भृगु (marine cliff) । ऐसा कहा जाता है कि भारत के इन जल क्षेत्रों में सबसे अधिक मत्स्य और प्रवाल पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त यहां व्हेल एवं डल्फीन की अनेक प्रजातियां अक्सर देखने में मिलती हैं।

पादप : भारत में पाई जाने वाली पुष्पी पादपों की 15,000 प्रजातियों में कोई 2,200 प्रजातियां इन द्वीपों में मिलती हैं (चित्र 21 में ऐसी दो पादप प्रजातियां दिखाई गई हैं)। इनमें से 200 तो केवल स्थानिक हैं। शेष में 1,300 प्रजातियां भारत में अन्यत्र कहीं नहीं मिलतीं और ये प्रजातियां बर्मा, मलेशिया और इंडोनेशिया भूभागों की प्रजातियों से निकटता प्रदर्शित करती हैं। इसका यह मतलब है कि भारत की 15,000 पुष्पी पादप प्रजातियों का लगभग 10 प्रतिशत 8,000 वर्ग कि०मी० क्षेत्र में फैले अंडमान-निकोबार के वनों तक ही परिसीमित है। इस भाग के वन आवरण के विस्तार पर उपलब्ध गहन आंकड़ों से यह निराशाजनक बात उजागर होती है कि पिछले 100 वर्षों में यह आधा रह गया है। इस दर से आने वाले समय में लगभग 400 प्रजातियां यानी 20 प्रतिशत अदृश्य हो जाएंगी। याद रहे कि ये प्रजातियां भारत में अन्यत्र नहीं मिलती।

चैम्पियन और सेठ*(1968) के अनुसार इस प्रदेश में विद्यमान वनीय वनस्पति की सात श्रेणियां इस प्रकार हैं : सदाबहार वन, अर्ध सदाबहार; पर्वत शिखर, वृद्धिरूद्ध सदाबहार वन, आर्द्र पर्णपाती वन, अनूप वन और गरान वन। इसके अलावा कुछ वनेतर पादप समुदाय भी समुद्र तट पट्टियों में - अलवणजलीय पोखरों और चट्टानी भूगुओं - में पाए जाते हैं। ज्वालामुखीय बैरन द्वीप में घास-कुंज स्थलियों का आवरण पाया जाता है। छोटे द्वीपिकाओं में घासीय-टहनी वाले दृढ़पर्णी कुंज पाए जाते हैं। अंडमान की अनेक प्रजातियों में बर्मा और उत्तर-पूर्वी भारत से बंधुता देखने में आती है। डिप्टेराकार्पेसी एक ऐसा उदाहरण है जिसकी प्रजातियों में इसकी दक्षिण भारतीय किस्मों से कोई बंधुता नहीं दिखाई देती।

निकोबार की इंडोनेशिया से बंधुता है। इन द्वीपों में डिप्टेरोकार्पस तो नहीं पाया जाता, मगर इनमें वृक्षी-पर्णांग और ताड़ वृक्षों की भारी विविधता पाई जाती है। ग्रेट निकोबार का ऑर्किड वनस्पतिजात इन द्वीपों की इंडोनेशिया से बंधुता को पुष्ट करता है। अब तक दर्ज 36 प्रजातियों में 21 इस भूभाग के अलावा भारत में कहीं और नहीं पाई जाती है। इनमें से 20 प्रजातियों वनों में ही वास करती हैं और शेष एक प्रजाति वनाच्छादित पहाड़ियों की चोटियों पर स्थित खुले चट्टानी घास स्थल में पाई जाती है। अंडमान द्वीपों के विपुल जैविक संसाधन, पोर्ट ब्लैयर में भारतीय वानस्पतिक और प्राणि सर्वे के स्थायी फील्ड स्टेशन स्थापित करने का मुख्य कारण रहे हैं।

लक्षद्वीप समूह या अरब सागर द्वीप

ये द्वीप कोई 25 द्वीपिकाओं के बने हैं, जिनके मुख्यत: तीन समूह हैं : उत्तर में अमीनदीवी द्वीप, मध्य में लक्काद्वीव या कैननोर द्वीप और दक्षिण में स्थित लगभग 175 कि०मी० लंबा एक अकेला द्वीप मिनिकॉय द्वीप। ये द्वीप प्रवाल मूल के होते हैं और इनमें प्रवालभित्ति लैगून का एक विशिष्ट तंत्र पाया जाता है। इनका पूरा भू क्षेत्र लगभग 109 वर्ग कि०मी० हैं, जिसमें भित्ति, शलाका और द्वीपिकाएं शामिल हैं। इनमें से सिर्फ 10 द्वीपों में स्थायी मानव बस्तियां हैं, जिनमें 25,000 लोग बसे हुए हैं। यहां जनसंख्या का घनत्व 870 व्यक्ति प्रति वर्ग कि०मी० है। अब अधिकांश द्वीपों में नारियल की खेती होती है, सो प्राकृतिक वनस्पति बहुत कम ही बची रह गई है। इन भंगुर पारिस्थितिक तंत्रों को पर्यावरण संबंधी जो मुख्य खतरे हैं वे हैं : एक सीमेंट कारखाने का निर्माण, जिसमें जीवाश्म प्रवाल भित्ति का चूना-पत्थर प्रयोग होगा, तटीय क्षेत्रों में व्यावसायिक स्तर पर मछली पकड़ने का काम और स्थानीय

*एच०जी० चैम्पियन के एस.के.सेठ 1968 : फॉरेस्ट टाइप्स ऑफ इंडिया, भारत सरकार प्रेस, नई दिल्ली

संसाधनों के लिए पर्यटन की बढ़ती मांग।

कुछ छोटे द्वीप एक अनूठी पांड़ानुस-कैसुअरिना की प्रवाल भित्तियों में अभितटीय समुद्री परिस्थितिकी तंत्रों के ऐसे कई उदाहरण हैं, जिनके संरक्षण की तत्काल आवश्यकता है। छिछले समुद्री लैगूनों में समुद्री आवृतबीजी पादपों से निर्मित चरागाह पाया जाता है। जो डुगोंग के भरण स्थल हैं। ये द्वीप कच्छपों के लिए भी प्रमुख भरन-स्थल हैं, ओर इनमें हरे कछुओं के कुछ नीड़न स्थल भी पाए जाते हैं। समुद्री पक्षियों की अनेक प्रजातियों के नीड़न-स्थल निर्जन द्वीपीकाओं में पाए गए हैं जैसे : बभ्रु-पंखी गंगचील, नॉडीगंगचील, श्वेतगोपक नॉडी गंगाचील, लघु-किरीटी गंगाचील और कज्जली गंगचील। कुछ समुद्री पक्षी इतने विचित्र हैं कि अपने नीड़न-स्थल के लिए इन्होंने सिर्फ दो ही द्वीपिकाओं को चुना हैं। ये हैं पिट्टी और बलियापानी। इन पक्षियों के अंडों के संग्रहण पर प्रतिबंध लगा होने के बावजूद भी लोग यह कार्य कर रहे हैं।

26.2.10 प्रदेश-10 : समुद्र तट

भारत में एक विस्तृत समुद्र तट है जो 5689 कि०मी० तक फैल हुआ है (श्रीनिवास, 1969)*। पश्चिम में अरब सागर, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक और केरल राज्यों के तटों को स्पर्श करता है। पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में बंगाल के सुंदरवन, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश और केरल राज्यों को स्पर्श करती है। भारतीय प्रायद्वीप के दक्षिणी उच्चांतरीय (promontory) को मनार की खाड़ी भिगोती है और तमिलनाडु के दक्षिणी भागों के तटों को हिंद महासागर को स्पर्श करता है।

समुद्रतटों का वन्यजीवन

समुद्र तटों का भूविज्ञान बेहद विविध है और इसी के अनुसार पांच समुदाय बताए जाते हैं :

a) गरान - इनमें समुद्रोन्मुखी से लेकर स्थलोन्मुखी तरह-तरह के समुदाय पाए जाते हैं। ये नंदमुखी लैगूनों और डेल्टा प्रदेशों के आमने सामने मिलते हैं।

b) बालू समुद्र तट - इनमें उत्थित समुद्रतट और विशिष्ट पादप समुदाय सम्मिलित हैं जैसे *कैसुअरिना-कैलोफाइलम-पांडानुस*।

c) पंक मैदान - इनमें विभिन्न अनुक्रमिक चरणों से लेकर पूर्णत: स्थलीय वनस्पति की एक श्रेणी मिलती है।

d) उत्थित प्रवाल और शैलीय तट रेखाएं।

e) समुद्री आवृतबीजी चरागाह।

तटीय वन्यजीव की कुछ रोचक प्रजातियां इस प्रकार हैं : डुगोंग, नदमुख के आविल सागर की कुबड़ी डॉल्फिन; नदमुख या लवणजलीय मगर; ओलिव रिडले, हरे हाक्सविल तैदरी और लॉगरहैड समुद्री कच्छप; नदमुख कच्छप - सुदंरवन के *बटागुर बैस्कर* और विशाल मृदुखोली नदमुख कछुआ; उत्कल - बंगाल तट की मछली *पेलोलिस बर्बोनी*; पंकलंघी (mudskippers) या अर्धस्थलीय गोबी, एनीमोन के साहचर्य में लघु केकड़े; गुरान के पक्षेजात समुदाय, मंक मैदान और लैगून। गरानों के उच्च क्षेत्रों में चित्तिदार मृग (spotted deer), सूअर गोह (monitor lizard), बंदर और सुंदरवन बाघ।

भारत में विश्व के सबसे अच्छे गरान अनूप मिलते हैं, देश में गरानों का बड़ा क्षेत्र पश्चि बंगाल के सुंदरवन में स्थित है, जिसका क्षेत्रफल 4,200 वर्ग कि०मी० है। मुख्य गरान प्रजातियां हैं *ऐवीसीनिया ऑफिसिनैलिस, एक्योकैरिया ऐगलोचा, हेरिटिएगा फोर्मीस,* राइजोफोरा *म्यूक्रोनैटा* (चित्र 22a) *जाइलोकार्पस ग्रैनेटम*। इस क्षेत्र में अनेक मोलस्क, पॉलिकीट और मधुमक्खियां भी पाई जाती हैं। गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक और केरल राज्यों में पश्चिमी तटीय भागों में पाई जाने वाली प्रजातियां इस प्रकार हैं : *ऐवीसीनिया, मैरिना, ऐ० ऑफिसिनैलिस, सीरियोप्स टैगल, सैल्वाडोरा प्रेसिक*,

* के०एस० श्रीनिवास, 1969, फाइकोलॉजिका इंडिका खंड I-II बाटैनिकल सर्वे ऑफ इंडिया, कलकत्ता।

(चित्र 22b), *राइजोफोरा, म्यूक्रोनैटा, सोनरेशिया, एल्बा, एकान्थस, इलिकोल्यिस* और *हेरिटिएरा लिटोरैलिस*। पूर्वी तट पर उड़ीसा, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु राज्यों में भी तटीय गरान मिलते हैं। इस भाग में प्रमुख प्रजातियां है *बुगुइएरा सिलंड्रिका, बी०पैरवीफ्लोरा, राइजोफोरा, म्यूक्रोनैटा, फ़ीनिक्स, पामोसा, ऐवीसीनिया ऑफिसिनैलिस, ऐ०मैरीना और सीरियोप्स टैगल*। इसके अलावा तटों में अनेक किस्म के पादपप्लक (phytoplanktons) और समुद्री शैवाल भी पाए जाते हैं (चित्र 23 में दो रूप दिखाए गए हैं)।

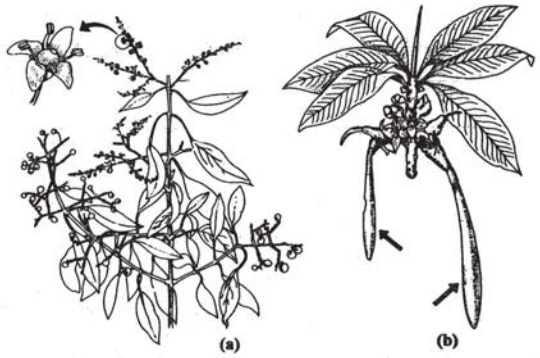

चित्र 22 : भारतीय तटवर्ती भागों में सामान्यतया पाए जाने वाले पापद a) *सैल्वाडोरा प्रेसिका* की टहनी, इसे 'पीलू' के नाम से जाना जाता है। b) *राइजोफोरो* प्रजाति। मातृ पादप पर ही अंकुरित दो पादप कों (तीर के चिह्न) को ध्यान से देखिए।

तटों के प्रवाल भित्तियां का संबंध है। इन्हें हम तटीय पारिस्थितिकतंत्र का ही एक अंग मान कर चलेंगे। प्रवाल भित्तियों का निर्माण आश्मिक प्रवाल पॉलिपों के कैल्सियमी कंकालों से होता है। इन पॉलिपों में प्रवाल वास करते हैं जो कोमलकायी, अरीय सममित समुद्री कशेरूकी जीव हैं। एक निवह के प्रत्येक प्रवाल को पॉलिप कहते हैं। हजारों लाखों वर्षों तक ऐसे लाखों प्रवाल कंकालों के सामूहिक दृढ़ीभवन के फलस्वरूप इन प्रवाल भित्तियों की रचना होती है। ये भित्तियां अक्सर बहुत गहरे तक जा पहुंचती हैं और एक बार में सैकड़ों किलोमीटर दूर तक फैली रहती हैं। प्रवाल भित्तियों में भी विपुल जैव-विविधता देखने को मिलती है।

कई किस्म की मछलियां जिन्हें प्रवाल भित्ति मत्स्य भी पुकारा जाता है भी इस आवास में पाई जाती है।

प्रवाल भित्तियों को मुख्य तीन प्रकारों में बांटा गया है :

i) तटीय प्रवाल भित्तियां सबसे सामान्य प्रकार है। ये तट से समुद्र की ओर निकलती हैं और द्वीप को और महाद्वीपीय भूखंड को घेरे रहती हैं। ii) रोधिका प्रवाल भित्तियां, जो तटीय प्रवाल भित्तियां की तरह तो होती हैं मगर छिछले लैगूनों द्वारा भूखंड से पृथक रहती हैं। iii) प्रवाल द्वीप वलय या अडल सामान्य रूप से

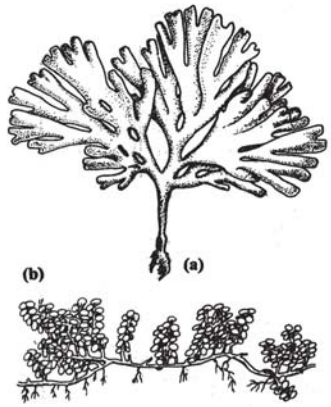

चित्र 23 : प्रचुर मात्रा में उगते शैवाल तटीय वनस्पति का एक बड़ा भाग है। a) *स्टीकोस्पर्मम मार्जिनैटम* : b) कौलैर्पा पेल्टैटा।

हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में पाए जाते हैं। ये जल-निमग्न ज्वालामुखियों के शिखर पर पाए जाते हैं और प्राय: अंडाकार या वृत्ताकार होता है और इनके बीच में एक लैगून मिलता है।

बोध प्रश्न 1

1) वनस्पति और वन्यजीवन शब्दों की व्याख्या दीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) दो ठोस कारण दीजि जो यह बताते हों कि वन्यजीवन और वनस्पति शब्दों का प्रयोग प्रसंग एक दूसरे से भिन्न है।

.....

.....

.....

.....

3) जीव भौगोलिक प्रदेश किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

.....

4) नीचे दी गई तालिका को पूरा करें :

क्रमांक	हमारे देश के जीवभौगोलिक प्रदेश	भौतिक स्थितियां

26.3 वन्य जीवन का महत्व

इस पाठ्यक्रम की इकाई-4 के उप-अनुभाग 4.5.2 में आप जैवविविधता के महत्व के बारे में पढ़ चुके हैं। आपको याद होगा कि जैव-विविधता हमें अपने आस-पास दिखाई देने वाले नाना किस्म के जीवन रूप हैं। इस विविधता में प्रजातियों में, प्रजातियों के बीच और पारिस्थितिक तंत्रों में पाई जाने वाली विविधता सम्मिलित है। यह शब्द संपूर्ण विश्व के संदर्भ में भी प्रयुक्त होता है। जैवविविधता में वन्य तथा संवर्धित दोनों प्रकार की प्रजातियां आती हैं। वन्यजीव प्रजातियों की संख्या चूंकि संवर्धित प्रजातियों से कई गुना अधिक है इसलिए उपरोक्त संदर्भ में हुई चर्चा को वन्यजीवन के लिए माना जाना चाहिए। संक्षेप में इतना दोहरा लेना पर्याप्त होगा कि जैवविविधता का भारी आर्थिक महत्व हैं। वनों से व्युत्पन्न इमारती लकड़ी, गोंद, रेजिन, तेल, मोम, रंजक और रबड़ जैसे अनेक उत्पादों की भारी वाणिज्यी उपयोगिता है। कई जनजातियों जैसे वनवासी लोग भोजन, चारे और यहां तक कि मनोरंजन के लिए वन्यजीवन पर आश्रित रहते हैं। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि अनेक वन्य प्रजातियों की औषधीय उपयोगिता है और अनिगिनत प्रजातियों का संभाव्य-उपयोगिताओं का दोहन किया जाना अभी बाकी है। वन्यजीवन जीनपूल का भी कृषि के क्षेत्र में अत्यधिक महत्व है। वन्य से प्राप्त अनेक जीनों से फसलों को उन्नत बनाया गया है। वन्यजीवन का एक और पक्ष रखे बिना इनकी बात अधूरी रह जाएंगी, जो कि मानव के लिए सौंदर्य, अचरज, आनंद और मनोरंजन का एक प्राकृतिक स्रोत है। शरतकाल मे पत्तों का रंग बदलते देखना, वनफूलों की सुगंध लेना और कभी कुछ ऊंचाई में जुंबिश लेती चील को निहारना जैसे कई सुखद अनुभव हैं, जिन्हें आप शब्दों में बयान नहीं कर सकते। न ही ये अनुभव आप पैसे से खरीद सकते हैं। फिर सर्वोपरि बात तो यह है कि वन्यजीवन का हमारी पारिस्थितिकी में भारी महत्व है। प्रत्येक प्रजाति अन्य प्रजातियों के साथ पारस्परिक-क्रिया करती है और पारिस्थितिक तंत्र के भीतर तथा बाहर ऊर्जा व द्रव्यों के अंतरण में भूमिका निभाती है। इसलिए प्रत्येक प्रजाति अपने तरीके से पारिस्थितिक तंत्र को स्थायित्व प्रदान करने में अपना योगदान करती है। यदि कई प्रजातियों का लोप हो जाए तो विविधता में ह्रास हो जाता है। इसके फलस्वरूप पादप और जंतु-संख्याओं पर नाना प्रकार के नियंत्रण और संतुलन भी कम हो जाते हैं। प्रजातियों का विलोप हो जाने पर परभक्षण, परजीविता व स्पर्धा का स्थायीकारी प्रभाव भंग हो जाता है। फलत: पारिस्थितिक तंत्र ऐसी विघ्न-बाधाओं के प्रति संवेदनशील हो जाता है जो कभी-कभी इसके विनाश का खतरा बन जाती है।

इस प्रकार वन्यजीवन का महत्व निस्संदेह असीम है। इतना ही महत्वपूर्ण है प्राकृतिक अवस्था में इसका संरक्षण। वन्यजीवन के बिना मानव जाति के अस्तित्व की कल्पना भी मुश्किल है। यदि आप भारत के इतिहास पर दृष्टि डालें तो आप आश्चर्य में पड़ जाएंगे आज से 2000 वर्ष पूर्व भी भारतवासी वन्यजीवन के महत्व को अच्छी तरह से समझते थे। यही कारण है कि उनमें अपने आसपास के जीवों के प्रति दया थी और वे प्रकृति का आदर किया करते थे।

सड़कें

किसी पर्यटन-स्थल तक पहुंचने के लिए सड़कों का निर्माण अति महत्वपूर्ण है। सड़कों का निर्माण ऐसे क्षेत्र को काट-साफ करके किया जाता है जो कई प्रजातियों का आवास हो सकता है। ये प्रजातियां अंतत: उस क्षेत्र से अपदस्थ हो जाती है। इस तरह सड़क बिछाने के सीधा परिणाम अंतत: आवास में खलबली और उसका नाश है। एक ओर सड़कें जहां हमारी आवश्यकताएं हैं, वहीं दूसरी ओर से पर्यटन-स्थलों में जनसंख्या आधिक्य का कारण बन गई हैं। इसका सटीक उदाहरण बद्रीनाथ है। सन् 1967 में इस तीर्थस्थल ने 40,000 पर्यटकों को आकर्षित किया था। इसके सड़क से जुड़ते ही एक वर्ष के भीतर यानी 1968 में यहीं संख्या तीन गुना उछलकर 1, 25,000 पहुंच गई थी। आज इस चंया की क्या बात करें, जो अब लाखों में है। सड़क ने गंगोत्री यात्रा को सुगम तो बना दिया है, लेकिन इसने समीप के जंगल को नष्ट करने के साथ-साथ उस क्षेत्र की पारिस्थिकी और प्राकृति सौंदर्य को भी भारी क्षति पहुंचाई है।

संकटापन्न प्रजातियों की सूची : संकटापन्न घोषित प्रजातियों को निजी संगठनों ने सूचीबद्ध किया है। 'रेड डेटा बुक' ऐसी ही एक सूची है जिसका उल्लेख आजकल काफी हो रहा है। यह विभिन्न किस्मों की प्रजातियों की स्थिति पर जानकारी देने वाली खुले पन्नों वाली ग्रन्थमाला है। इस ग्रंथ को नियमित रूप से नवीनतम जानकारियों से लैस किया जाता है, जिसे प्रकृति संरक्षण के अंतरर्राष्ट्रीय संगठन - इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजरवेशन आफ नेचर एण्ड नेचुरल रीसोरसीज (IUCN) जारी करता है। यह संगठन मोर्गेस, स्विटजरलैंड में स्थित है। रेड यानी कि लाल वस्तुत: उस खतरे का सूचक है, इसमें दर्ज पादप और जंतु प्रजातियां मौजूदा समय में समूचे विश्व में जिससे गुजर रही है। 'रेड डेटा बुक' को 1966 में पहली बार IUCN के विशेष उत्तरजीविता आयोग (Special Survival Commission) ने सूची में दर्ज प्रजातियों के गठन, संरक्षण और देखभाल (प्रबंधन) मार्गदर्शिका के रूप में किया था। इस ग्रंथ में संकटापन्न स्तनधारियों तथा पक्षियों के संबंध में जानकारी अन्य जंतुओं ओर पादपों से अधिक विस्तृत है। विलुप्ति के खतरे का सामना कर रहे अल्प जीवों की जानकारी भी इसमें दी जाती है।

इस प्रकाशन के गुलाबी पन्नों में गंभीर रूप से संकटापन्न प्रजातियों के नाम हैं। जंतुओं की स्थिति जैसे ही बदलती है, इसके ग्राहक पाठकों को नए पन्ने भेज दिए जाते हैं। हरे पन्ने उन प्रजातियों के लिए हैं, जो कभी संकटापन्न थे किंतु वे अब संकटापन्न नहीं रहे। जैसे-जैसे समय बीत रहा है, गुलाबी पन्नों की संख्या बढ़ती जा रही है। दु:ख की बात है कि हरे पन्नों की संख्या गिनी-चुनी ही रह गई है।

26.4 वन्य जीवन पर पर्यावरण का प्रभाव

पिछले भाग में विभिन्न जीवभौगोलिक प्रदेशों में वन्यजीवन की व्याख्या करते हुए हम कुछ संकटापन्न तथा विलुप्त हुई प्रजातियों पर चर्चा कर चुके हैं। इस संदर्भ में सोचना यह है कि कभी प्रचुर संख्या में पाई जाने वाली इन प्रजातियों के संकटापन्न या विलुप्त होने के क्या कारण रहे होंगे ? इन कारणों में हमें गौर करना होगा। मौजूदा परिस्थितियों में पर्यावरण और उसमें पाए जाने वाले जीवन के निम्नीकरण के लिए कई क्रमिक और संचयी कारक उत्तरदायी हैं। इन कारकों की सूची तो काफी लम्बी है परन्तु पर्यटन इसमें प्रमुख कारक है। आइए जानें कैसे।

पर्यटन का अभिप्राय है अपनी रुचियों और लक्ष्यों पर आधारित, संसारभर में व्याप्त परिघटनाएं, संबंध और विविध लक्ष्य। ये छुट्टियां मनाने (आराम करने) से लेकर प्राकृतिक या ऐतिहासिक स्थलों का अन्वेषण करने या तीर्थ यात्राएं हो सकती हैं। इन सबके लिए कुछ मूल आधारित संरचना की आवश्यकता है जैसे कि रहने की व्यवस्था करना, बुनियादी सुख सुविधाएं, खान-पान, सड़कें, परिवहन और कूड़े का निपटान। यहां तक तो सब ठीक है, लेकिन वन्यजीवन इससे किस प्रकार प्रभावित हो सकता है ? वन्यजीवन पर पर्यटन के मिले-जुले प्रभाव होते हैं - कुछ सकारात्मक और कुछ नकारात्मक। आइए सकारात्मक प्रभावों पर पहले चर्चा करें। सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव है कि यह पर्यटकों को पर्यावरण के प्रति सजग बनाने में सहायक होता है। इसके अलावा, संरक्षण संबंधी कदम उठाने और प्रदूषण को कम करने के लिए पहल करने तथा आवश्यक कदम उठाने के लिए उन्हें प्राय: प्रोत्साहित करना है। इसने ऐतिहासिक स्थलों, स्मारकों, वन्यजीवन और मनोरम पर्यावरण के रख रखाव के लिए भी प्रोत्साहित किया है। इसकी एक और सकारात्मक विशेषता यह है कि इसने अनुसंधान और पर्यावरणीय प्रभावों पर अध्ययनों को भी बढ़ावा दिया है। वन्यजीवन पर पर्यटन द्वारा प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों की सूची लम्बी है। मुख्य बात यह है कि, इसके द्वारा वन्यजीवन को होने वाली क्षति की पूर्ति नहीं की जा सकती। आइए अब हम पर्यटन से संबंधित उन क्रियाओं/कारकों का अध्ययन करें, जिन्होंने वन्यजीवन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है।

पर्यटक आवास

होटलों, कैम्पिंग, स्थलों, कारवां-पर्यटन और पर्वतारोहण कुटीरों के निर्माण से भी वनों का नाश और अनेक वन्य प्रजातियों के आवास के क्षति पहुंचती है। फिर निकटवर्ती क्षेत्रों की प्रजातियां भी इन स्थलों में पर्यटकों के निरंतर आवागमन से अस्त व्यस्त और प्रभावित होती हैं। प्रवालों के उपयोग से समुद्र तटों पर होटलों आदि पर्यटक-आवासों का निर्माण निकटवर्ती क्षेत्रों में दूर तक विद्यमान वन्यजीवन को सिर्फ अस्त-व्यस्त ही नहीं करता, बल्कि उसको नष्ट भी कर डालता है।

परिवहन

पर्यटकों को लाने-ले जाने के लिए वायु, जल और भूतल परिवहन के विभिन्न साधन वन्यजीवन को अस्तव्यस्त तो करते ही हैं, वरन् ये अपने धुएं और अधिक शोरगुल के कारण प्रदूषण को भी बढ़ाते हैं। ध्यान रहे कि वाहनों की बात क्या की जाए जिन इलाकों में लोगों का अत्याधिक पैदल आवागमन हो वह भी वहां की वनस्पति को संघटन को बदल डालता है। अब फ्रांस के ब्रिटोना समुद्र तट पार गिलनान द्वीप समूह का उदाहरण ले लीजिए, जो प्राकृतिक रूप से उगने वाले नार्सिसी के लिए विख्यात हैं। कुछ ही समय पहले जानकारी में आया है कि इस प्रदेश से नार्सिसी का धीरे-धीरे नाश हो रहा है। इसका कारण उन्हें पर्यटकों द्वारा रौंदा जाना और उनके शल्क कंदों (bulbs) को उखाड़कर ले जाना था। इस पौधे के सौंदर्य से आकर्षित पर्यटक परिणामों को जाने बिना इसके शल्क-कंदों को लेकर चलते बनते थे। छोटे जंतुओं के अंडों को कुचल डालने और उन्हें मार डालने में वाहन यातायात का सबसे बड़ा हाथ रहता है। हालांकि यह असावधानीवश या अनजाने में हो जाता है।

नार्सिसी पुष्पी पौधे हैं जिनका सम्बंध अमेरिलिडेसी कुल से है।

वन्यजीवन को कई तरह से प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभावित करने वाला यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारकों में एक है।

i) वन्य पादपों और पुष्पों का अंधाधुंध संग्रहण : असंगठित और असावधानी पूर्वक किए जाने वाले वानस्पतिक और प्राणि पर्यटन आयोजनों के चलते ही वन्य पादपों का उखाड़ा और वन्य जंतुओं को पकड़ा जाता है। इसका असर उस क्षेत्र विशेष में स्थापित वन्यजीवन पर पड़ता है। इन्हें अज्ञानवश किया गया कार्य कहा जा सकता है। मगर उन पेशेवर वानस्पतिक और प्राणि संग्रहकर्ताओं की क्या कहें जो व्यापार के लिए वन्य प्रजातियों का सामूहिक संग्रह करते हैं। इसी प्रकार, बद्री-केदार के तीर्थाटन पर जाने वाले पर्यटक भगवान शिव को ब्रह्म कमल (*सौसुरिया लापा*) चढ़ाते हैं। पर्यटक जितना धनी होता है वह उतने ही अधिक ब्रह्म कमल चढ़ाता है। इस तरह के अनेक प्रचलनों के कारण हमारी धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर ऐसी ही कई प्रजातियां समाप्त होजाती हैं या वे विलुप्ति की कगार पर पहुंच जाती हैं। वनस्पति का अंधाधुंध विनाश करने वाली एक और गतिविधि टेंट - के खंभों और जलावन के लिए पेड़ों का कटान है। उच्च अल्पाइ क्षेत्रों में जलावन की बेहद आवश्यकता पड़ती है। अरमनाथ का जाने वाले यात्री अक्सर *जूनीपेरस* की लकड़ी इकट्ठा करते हैं (चित्र 24) जो रेजिन (राल) होने के कारण गीली होने पर भी जल जाती है।



चित्र 24 : जूनीपेरस वृक्ष का पर्णसमूह और शंकु दर्शाती एक शाखा।

इन पेड़ों के अत्यधिक कटान के चलते आज यह संकटापन्न प्रजातियों की सूची में शामिल हो गई हैं।

वन्यजीवन में व्यवधान पर्यटन ने अनेक वन्य जंतुओं के भरण और प्रजनन स्वभावों को प्रभावित किया। नीचे दिए गए उदाहरणों से आपको यह बात और स्पष्ट हो जाएगी। अर्जेंटीना, ब्राजील, कैरीबियाई देश, मेक्सिको, जापान, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका, नार्वे और ब्रिटेन जैसे देशों में खेल दर्शन का तमाशा 10 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से लोकप्रिय होता जा रहा है। यह देखने में आया है कि पर्यटकों का नौकाओं या हवाई जहाजों से इन मछलियों का अत्यधिक हस्तक्षेपी अवलोकन इन प्राणियों में खतरनाक स्तर तक तनाव पैदा करता है। यह इसके सामान्य प्रजनन में व्यावधान उत्पन्न करता है जिसके फलस्वरूप ये मृत-शिशुओं को जन्म देते हैं।

पर्यटकों से वन्यजीवन को हो रहे खतरे का भली भांति दस्तावेज बद्ध किया हुआ एक और उदाहरण भूमध्य सागरीय हरा कच्छुआ कैरेटा है। प्रत्येक वर्ष कोई 800-1000 की संख्या में इसके व्यस्क मादा कछुए प्रजनन के लिए तटों पर घरोंदे बनाते हैं। अन्य समुद्री प्राणियों की तरह ये भी समुद्र में रहते हैं और इसके पृष्ठ जल में विद्यमान मछलियों, क्रस्टेशियन जंतुओं, शैवालों और जैलीफिश का भक्षण करते हैं। कुछ वर्षों से इनकी प्रजनक संख्या में भारी गिरावट देखने में आ रही है। यह गिरावट के छः मुख्य कारण हैं : a) होटल आदि के रूप में तटों के विकास के फलस्वरूप प्रजनन स्थलों का विनाश एक महत्वपूर्ण कारण है। b) मांस और खेल के लिए अनेक कछुओं का भारी संख्या में शिकार किया जाता है। c) प्रदूषण जो विशेष रूप से प्लास्टिक की थैलियों और तेल ईंधन के पिंड से फैल रहा है, उसने भी इन पर अपना दुष्प्रभाव छोड़ा है। जैलीफिश की तरह दिखाई देने वाली प्लास्टिक की थैलियों को खाने से भी इन कछुओं की मौत हो जाती है। पर्यटन के बढ़ने-फैलने के साथ-साथ प्लास्टिक की ये थैलियां समुद्र में यत्र-तत्र सर्वत्र दिखाई देने लगी हैं। अस्सी के दशक में माल्टा के समीप हुए एक सर्वेक्षण में प्रत्येक वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल में प्लास्टि की 1200-4000 थैलियां पाई गई थी। स्थिति में कोई सुधार आने के बजाय यह बिगड़ती ही गई है। d) प्रजनन प्रकृति में उपजे विकार। मादा कछुए स्वभाव से बेहद संकोची है। उनके प्रजनन स्थल तटों में थोड़ा सा भी शोरगुल उन्हें तट पर आकर अंडे देने से डरा देता है। यदि वे अंडे देते भी हैं तो इनको अंडों के खोजी लोग जिनमें कई पर्यटक हैं, उन्हें स्फुटित नहीं होने देते। इन लोगों से जो अंडे बच जाते हैं वे जब नवजात कछुओं को जन्म देते

हैं, इनमें से कई को तो लोमड़ियां खा जाती हैं। e) अंडों में उष्मायन के 52 दिनों के बाद उत्पन्न होने वाले नवजात कछुए प्रकाशानुवर्ती (phototrophic) होते हैं। इसका यह अर्थ है कि अपने खोलों से बाहर निकलने के बाद वे प्रकाश की ओर सहज ही चल पड़ते हैं क्योंकि समुद्र भूमि से अधिक प्रकाशमान होता है। समुद्र तटों पर तेजी से बढ़ते पर्यटन स्थलों साधनों के कारण हजारों नवजात कछुए मर जाते हैं, क्योंकि वे समुद्र की ओर न जाकर इन स्थलों में आते प्रकाश की तरफ चल पड़ते हैं। f) भूमध्यसागरीय तटों पर चार-पहिया वाहनों की बढ़ती आवाजाही भी कछुओं के अंडे देने के कई घोसलों को नष्ट कर रही है।

पर्यटन से जुड़ी गतिविधियों को अनेक जंतुओं और पक्षियों के मौसमी और प्रादेशिक प्रवास व्यवहार में व्यवधान जनक पाया गया है। सड़कों, कुटीरों, होटलों और कैम्पों का निर्माण और उनका प्रयोग प्रवासी जंतुओं को नुकसान पहुंचाता है। इसका एक ज्वलंत उदाहरण भरतपुर पक्षी उद्यान है, जो कभी साइबेरियाई सारसों का एक प्रिय प्रवास स्थल था। अब हम यह सुनते और जानते हैं कि यहां अब इन मेहमान पक्षियों का एक जोड़ा भर देखा जाना ही हर्ष का विषय बन जाता है। हर वर्ष भारी संख्या में पर्यटक और पक्षी दर्शन के लिए इस स्थल में एकत्र होते हैं। पर इन पक्षियों का दर्शन दुर्लभ होते जा रहा है, जिससे पर्यटन-स्थल के रूप में इस उद्यान के भविष्य पर एक प्रश्नचिन्ह लग गया है।

शिकार और प्राकृतिक आवास-स्थलों में अतिक्रमण से भी वन्यजीवन प्रभावित होता है। फोटोग्राफी भी इनके लिए हानिकर है। बड़े जंतुओं और पक्षियों पर प्रभाव तो स्पष्ट दिखाई देता है, मगर सरीसृपों कीटों और अन्य किस्म के जंतुओं पर पड़ने वाले प्रभावों पर कोई विशेष अध्ययन नहीं हुए हैं। पारिस्थितिकी संतुलन के लिए जंतु भी इतने ही महत्वपूर्ण है। पर वन्यजीवन की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है। यह देखने में आया है कि अभयारण्यों, राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव-विहारों में नित भारी संख्या में आने वाले पर्यटकों के नियमित संपर्क में आने से अनेक उग्र जंतुओं ने अपना उग्र-स्वभाव छोड़ दिया है। उदाहरण के लिए लोग उनकी तरफ खाने की चीजें, चाकलेट आदि फेंकते हैं, इसने भालू और वानरों जैसे वन्य जन्तुओं को कोमल स्वभाव का बना डाला है, तथा वे दर्शकों से और पाने के लिए लालायित रहते हैं।

यह एक सामान्य मानवीय प्रवृति है कि प्राणी उद्यानों में आने पर लोग वन्य प्राणियों के समीप आना चाहते हैं। किंतु यह उन्हें परेशानी में डालता है और कई वन्य प्रजातियां इसे पंसद भी नहीं करती। उनके एकांत में यह विघ्न उन पर बुरा असर डालता है, विशेषकर ऐसे जंतुओं पर जो एकांत में प्रजनन करते हैं। उदाहरण के लिए महासारंग अपने घोंसले की ताकझांक करने वाले लोगों से बड़ा उद्वेलित हो उठता है। इसके परिणामस्वरूप यह प्रजनन ही नहीं करता है।

iii) वन्यजीवों के स्मृतिचिन्ह: यह स्वाभाविक है कि पर्यटक जिस जगह जाते हैं वे वहां से कुछ स्मृतिचिन्ह बटोर लाते हैं। यह भी एक चिन्ताजनक विषय है खासकर जब स्मृतिचिन्ह वन्यजीवों से तैयार किए जा रहे हैं। इस उद्देश्य के लिए वन्य जन्तुओं को पकड़ा और मार दिया जाता है या उनका शिकार किया जाता है। मरे हुए जंतु उनके फर, खालें, हाथी दांत के आभूषणों, सींगों, पूंछों, खुरों से चाबी के छल्लों जैसे कई प्रकार के सामान इन जंतुओं के-जीवन की कीमत पर या उनके शरीरों को जख्म देकर ही बनाए जा सकते हैं। तितलियों तक को नहीं छोड़ा जाता। संग्रहकर्ताओं की सामग्री के रूप में तितलियों को भी खूब तलाशा जाने लगा है। सो तितलियां की अनेक प्रजातियां अब संकटापन्न जीवों की सूची में आ गई है।

iv) खेल: स्कूबा और नौकायन के साधनों का बेतरतीब उपयोग, सिर्फ-राइडिंग के पेट्रोल चालित वाहन और मनोरंजन के अन्य वाहन पानी में हानिकारक अवशेष छोड़ जाते हैं। इसका परिणाम है जल-निकायों में धीरे-धीरे बढ़ता प्रदूषण। बदले में यह प्रदूषण इन जलनिकायों में वास करने वाले वन्यजीवों को प्रभावित करता है। अनगिनत वन्यजीवन संरक्षण अभियानों के बावजूद भी - आखेट जंतु कई पर्यटकों का प्रिय खेल है। कुछ पक्षियों और जंतुओं के आखेट के लिए पर्यटकों और लोगों को दिए जाने वाले सीमित लाइसेंसों की आड़ मे कई कीमती जंतुओं का शिकार अभी भी जारी है।

पर्यटक जहां जाते हैं और ठहरते हैं, उस जगह कुछ अपशिष्ट पदार्थों का पैदा होना और छूट जाना स्वाभाविक है। धीरे-धीरे हम सब, पर्यटन-स्थलों पर फैले कूड़ा-करकट को रोजमर्रा की बात मानने लगे हैं। हिमालय में ट्रेकिंग की बात तो छोड़िए अभयारण्यों और वन्यजीव आरक्षित क्षेत्रों में भी पालिथीन की थैलियों, बोतलों और डिब्बों के दृश्य अब आम होते जा रहे हैं। तिस पर पर्यटन आवास सुविधाओं से मल को संसाधित किए बिना ही निकटवर्ती नदियों या समुद्र में छोड़ दिया जाता है। इसके तात्कालिक नहीं तो वन्यजीवन और अंततः संपूर्ण पारिस्थितिक तंत्र पर दीर्घकालीन प्रभाव पड़ते हैं।

विश्व-विख्यात डल झील इस अप्रभावी अपशिष्ट व्यवस्था की शिकार बन गई है। डल झील में अब तक यही हुआ है और अब भी यही हो रहा है कि उसमें तमाम चलने वाली हाउस बोटों से झील में भारी मात्रा में अपशिष्ट पदार्थ और मल-मूत्र छोड़ दिया जाता है, जिससे इसका पानी पोषक तत्वों से समृद्ध हो जाता है। इसके फलस्वरूप हुई भरपूर शैवाल वृद्धि ने इसके पानी को पूर्णतः अवरूद्ध कर दिया है। यह वृद्धि पानी में घुली ऑक्सिजन को कम कर देती है, जिससे झील में मछली और अन्य जलकीटों की मृत्यु हो जाती है। इसी प्रकार ऐसे अपशिष्ट पदार्थों के आ मिलने से अन्य जल-निकाय भी बेहद प्रदूषित हो जाते हैं। कुंभ मेले को ही लीजिए। इस मौके पर लाखों लोग एक ही समय में एक ही जगह पर इकट्ठा होते हैं और पवित्र स्नान करते हैं। इसके फलस्वरूप कोलीफार्म जीवाणु की संख्या जो सामान्यतया 300 होती है वह कुंभ मेले के तत्काल बाद बढ़कर 16,500 तक हो जाती है और बहती जलधारा में कई किलोमीटर तक यही संख्या बनी रहती है।

जल निकायों के अलावा, वनविहीन स्थलों पर भी अपशिष्ट पदार्थ डाल दिए जाते हैं। यह खरपतवारों की भरपूर वृद्धि के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करते हैं, जो बदले में इनसे परस्पर-क्रिया करने वाली अन्य प्रजातियों को प्रभावित करता है। यही नहीं ये त्याज्य पदार्थ अपने साथ कई प्रकार के कीट और अन्य रोगाणुओं को साथ लेकर आते हैं, जो दुर्लभ संवेदनशील प्रजातियों के लिए खतरा पैदा करते हैं। हालांकि हम अपशिष्ट-पदार्थों को पैदा होने से रोक तो नहीं सकते पर दो कार्य अवश्य किए जा सकते हैं। एक त्याज्य-पदार्थों के उत्पादन को कम से कम रखा जाए और दो यह सुनिश्चित किया जाए कि जितना भी अपशिष्ट पैदा हो वह जैवनिम्नीकरण (biodegradeable) हो। सबसे बड़ा चिंता का कारण है तो जैव-निम्नीकरणीय (non-biodegradable) अपशिष्ट है, क्योंकि जैव-निम्नीकरणीय अपशिष्ट कालांतर में अपने-अपने पोषण-चक्रों में अन्य जीवन-चक्र के लिए प्रवेश कर जाते हैं।

कुछ भी कह लिया जाए यह निश्चित है कि पर्यटन उद्योग न सिर्फ बना रहेगा। बल्कि यह फूलता-फालता भी रहेगा क्योंकि इसका एक देश के आर्थिक विकास में निश्चित योगदान है। यह समझा जाना जरूरी है कि सांकेतिक रूप से पर्यटन और पर्यावरण साथ-साथ चलते हैं। आज कई पर्यटन-स्थलों पर भारी दबाव है और वे धीरे-धीरे अपनी वह प्राकृतिक विशेषता और सौंदर्य को खो रहे हैं, जिसके लिए पर्यटक यहां आया करते हैं। हमारे सामने हमेशा यही प्रश्न होना चाहिए कि तब क्या होगा जब पर्यटन-स्थल पर्यटकों में कोई आकर्षण पैदा नहीं कर पाएंगे ? इसलिए सोने का अंडा देने वाली मुर्गी को हलाल मत होने दीजिए, बल्कि उसे बचाइए। यही कारण है कि 'इको टूअरिज्म' संपोषणीय पर्यटन (Sustainable tourism) या उत्तरदायित्व पूर्ण पर्यटन को बढ़ावा दिया जा रहा है। इस संबंध में TS-1, खंड -2, इकाई- 9 और खंड-4, इकाई- 16 को दोहराइए।)।

बोध प्रश्न 2

1) वन्यजीवन को मानवजाति के लिए एक अमूल्य संसाधन क्यों माना जाता है ? पांच कारण बताइए।

.....

.....

.....

.....

2) वन्यजीवन पर पर्यटन और संबंधित क्रिया-कलापों द्वारा पड़ने वाले प्रभावों के बारे में बताइए।

.....

.....

.....

.....

26.5 सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा कि :

- वनस्पति किसी एक क्षेत्र विशेष में पाई जाने वाले पूर्ण पादप जीवन को कहते है।
- वन्यजीवन में सूक्ष्म और वृहद दोनों स्तरों पर सभी जीव आते हैं, जो मानव की देखभाल के बिना ही प्राकृतिक परिस्थितियों में पाए जाते हैं।
- भारत को दस जीवभौगोलिक प्रदेशों में बांटा गया-है– ट्रांस हिमालय, हिमालय, भारत का मरूस्थल, अर्ध शुष्क, पश्चिमी घाट, दक्षिण प्रायद्वीप, गंगा का मैदान, उत्तरपूर्वी भारत, द्वीप और समुद्रतट। प्रत्येक प्रदेश की अपनी कुछ निश्चित भौगोलिक और जैविक विशेषताएं हैं। कुछ जैविक घटकों की यह विशिष्टता है कि वे कुछ विशेष प्रदेशों में तो पाए जाते हैं, अन्यत्र नहीं।
- वन्यजीवन की उपयोगिता असीम हैं हमारे लिए यह प्राकृतिक सौंदर्य, आश्चर्य और आनंद का एक स्रोत ही नहीं बल्कि मानवजाति के एक बहुत बड़े हिस्से को संबल भी प्रदान करता है। मानव जाति के लिए वन्यजीवन 'जीनपूल' बेहद उपयोगी है विशेषकर पादप और पशुधन को और उन्नत बनाने में। सबसे बड़ी बात तो यह है कि वन्यजीवन इस ग्रह में पारिस्थितिकीय संतुलन को बनाए रखने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।
- पर्यटन संबंधी अनेकों गतिविधियों ने प्रत्यक्ष या अपरोक्ष रूप से वन्यजीवन को प्रभावित किया है सड़कें और पर्यटक आवासों का निर्माण वन्य क्षेत्रों में परिवहन का उपयोग और पर्यटकों का व्यवहार कुछ ऐसे व्याक क्षेत्र में हैं जो वन्यजीवन पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहे हैं।

26.6 शब्दावली

पक्षिजात (Avifauna)	किसी एक क्षेत्र में पाए जाने वाले सभी पक्षी
जैव विविधता (Biodiversity)	सभी स्रोतों के जीवों की विविधता जिनमें स्थलीय, समुद्री तथा अन्य जलीय पारिस्थितिक तंत्र और पारिस्थितिकीय कांप्लेक्स आते हैं, जिनके ये जीव एक अंग होते हैं। इसमें प्रजातियों में, प्रजातियों के बीच और पारिस्थितक तंत्रों में पाई जाने वाली विविधता सम्मिलित हैं।
बोविड (Bovid)	ये खुरदार, स्तनधारी जंतु हैं। बोविडों की लगभग 120 प्रजातियां हैं। इनमें कुरंग, गवल, बकरी और ओरिक्स शामिल हैं।
केल्सियमी (Calcareous)	जिनमें कैल्सियम कार्बोनेट या उसका आवरण पाया जाता है।

पारिस्थितिकतंत्र (Ecosystem)	:	अपने भौतिक पर्यावरण के साथ परस्पर-क्रिया करते जीव समुदाय की एक संकटापन्न अवधारणा है।
संकाटापन्न (Endangered)	:	कोई प्रजाति तब संकटापन्न कहलाती है जब से उसके निकट भविष्य में विलुप्त होने का खतरा हो। या एक प्रजाति विशेष की संख्या इतनी कम हो जाती है कि वह संकटापन्न हो सकती है।
स्थानिक पादप (Endemic Plant)	:	सिर्फ किसी एक क्षेत्र विशेष या भाग में पाया जाने वाला पादप। अनेक उष्णकटिबंधी द्वीपों में स्थानिक प्रजातियां पाई जाती हैं। मगर विश्व में कहीं और नहीं पाई जाती।
सदाबहार वन (Evergreen Forest)	:	ऐसे वन जिनमें स्थायी रूप से हरे पादपों का बाहुल्य रहता है। यानी पत्तियों का उगना और झाड़ना, मौसमी न होकर एक सतत प्रक्रम है।
प्राणिजात (Fauna)	:	एक क्षेत्र विशेष में पाए जाने वाले जंतुओं के लिए प्रयोग किया गया एक सामूहिक-शब्द।
वनस्पति-जात (Flota)	:	एक क्षेत्र या आवास विशेष में विद्यमान पादपों का सूचक, एवं सामूहिक-शब्द।
लवण मृदोद्भिद् (Haloplytes)	:	ऐसा पादप जो सोडियम क्लोराइड या अन्य सोडियम लवणों से भरपूर मिट्टी में उग सकता है।
अकशेरूकी (Invetoribrates)	:	ऐसे जंतुओं का एक प्रमुख समूह, जिनमें रीढ़ या आंतरिक कंकाल नहीं पाया जाता है।
कुंज (Scrub)	:	निम्नकोटि की मृदा वाली भूमि की एक पट्टी, जो साधारणतया सघन, बौने या वृद्धि रूद्ध वृक्षों और झाड़ियों से ढकी रहती हैं।
समुद्री शैवाल (Seaweed)	:	सागर में उगने वाले शैवाल।
कशेरूकी (Vertebrates)	:	रीढ़ वाले जंतुओं का एक प्रधान समूह।

26.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 26.1 देखिए।

2) भाग 26.1 देखिए।

3) भाग 26.2 देखें। जीवभौगोलिक क्षेत्र का अभिप्राय जीवन रूप पर आधारित प्रदेशन्यास से है। इसमें उस क्षेत्र की भौतिक परिस्थितियों को भी शामिल किया जाता है।

4) भाग 26.2 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 26.3 देखें।

2) भाग 26.4 देखें।

इकाई 27 पहाड़

इकाई की रूपरेखा

27.0 उद्देश्य
27.1 प्रस्तावना
27.2 पहाड़ों के बारे में अवधारणाएं
  27.2.1 हिन्दुओं की दार्शनिक अवधारणाएं
  27.2.2 मध्ययुगीन शासकों की अवधारणाएं
  27.2.3 अंग्रेजी शासकों की अवधारणाएं
27.3 हिल स्टेशनों का विकास
  27.3.1 शिमला
  27.3.2 दार्जिलिंग
  27.3.3 नीलगिरी
  27.3.4 नैनीताल
27.4 पहाड़ों में राजनीतिक घटनाओं का ऐतिहासिक कालक्रम
27.5 स्थानीय समुदायों का विस्थापन
27.6 आमोद प्रमोद एवं पर्यावरण
27.7 पर्यावरणीय प्रभाव
27.8 सारांश
27.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

27.0 उद्देश्य

इस इकाई में पर्वतीय (हिल टूरिज्म) से पहाड़ों के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों क बारे में चर्चा की गई है। इस इकाई के अध्ययन में आप

- आधुनिक काल से पहले जो (premodern) पहाड़ों के संबंध में रखी जाने वाली अवधारणाओं व सोच की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे
- शिमला, दार्जिलिंग, ऊटी, नैनीताल जैसे विशिष्ट हिल स्टेशनों की स्थापना व विकास के संबंध में जान सकेंगे
- पहाड़ों में रहने वाले स्थानीय मूल समुदायों के विस्थापन के संबंध में अगवत हो सकेंगे और
- पहाड़ों पर स्थापित नई बस्तियों तथा बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण पहाड़ों के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों से परिचित हो सकेंगे।

27.1 प्रस्तावना

पहाड़, स्वाभाविक रूप से आपके मन को एक भव्यता तथा विशालता का गहरा आत्मबोध पैदा कराते हैं; कोई धूल भरी हुई पगडंडियां, उच्च भूमि चारागाहों के पीछे दूर दिखाई देने वाली शिखरों की कोमलता को भंग नहीं करती है। लाल, पीले और बैंगनी फूलों की चादर ओढ़े तथा विविध वनस्पतियों की समृद्धि इस पृथ्वी पर ही स्वर्ग का आभास करा देते हैं। वनस्पति जगत, सीढ़ीदार खेत, घने बेल-बूटे, हंसते उपवन, ऊंची-नीची चोटियां, हरी-भरी घाटियां, इठलाते झरने और बलखाती लहरें हमारी कल्पनाओं को सजीव कर देती हैं। पहाड़ों पर ये प्राकृतिक दृश्य मन को लुभा लेते हैं।

अनादिकाल से मानव मन तथा अनुभूति पहाड़ों की दूर दूर तक फैली पुरातन उन्मुक्त श्रृंखलाओं की

की शाश्वत भव्यता हमें पहाड़ों पर चढ़ने को प्रेरित करती हैं। मानवीय गतिविधियों से होने वाले पर्यावरणीय प्रभाव, निश्चित रूप से अध्ययन का एक महत्वपूर्ण विषय है, पर इसके पूर्व प्राचीन काल से इन पहाड़ों के संबंध में विभिन्न सोच, कल्पना व अवधारणाओं के बारे में विचार करें और जानें।

27.2 पहाड़ों के बारे में अवधारणाएं

उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में नीलगिरी पर्वत प्रमुख भारतीय पर्वत हैं। इस उप महाद्वीप की सामाजिक व्यवस्थाओं में इन पहाड़ों के प्रति पर्यावरणीय प्रवृत्ति तथा विचारात्मक अवधारणा के संबंध में विविध दृष्टिकोण सामने आए हैं।

27.2.1 हिन्दुओं की दार्शनिक अवधारणा

हिन्दू धर्म की आस्था के अनुसार, हिमालय पर्वत के भौगोलिक महत्व या प्राकृतिक सौंदर्य की अपेक्षा धार्मिक महत्व कहीं अधिक है। आइए, महाकवि भारती की कुछ पंक्तियों का उदाहरण देंखे जिससे हिन्दू धर्म की हिमालय के प्रति अवधारणा बिल्कुल स्पष्ट हो जाएगी। कवि भारती कहते हैं– "सभी हिन्दुओं के लिए, सिवाय उनके जो हिमालय के स्थानीय निवासी हैं, हिमालय पर्वत यथार्थ की अपेक्षा काल्पनिक विचारधारा है। कैलाश पर्वत को रहने की संभावित जगह की अपेक्षा भगवान शिव के निवास का स्थान अधिक माना जाता है। भारती कहते हैं– "वहां रहने वाले लोगों और उनकी झोपड़ियों की अपेक्षा ऋषियों तथा मुनियों का हिमालय हिन्दुओं के लिए एक आदर्श के-रूप में अधिक महत्वपूर्ण है।"

प्रसिद्ध विद्वान एन्थोनी डी. किंग द्वारा लिखे गए लेख का यह अंश हिन्दुओं की विचारधारा को अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है।

"हिन्दू धर्म के अनुसार प्राकृतिक सौंदर्य का स्थान सामाजिक आमोद प्रमोद या आत्म स्वार्थ संतुष्टि का स्थान नहीं है। यह स्वयं पर नियंत्रण करने, शांतिपूर्ण वातावरण में ध्यान लगाने का उपयुक्त स्थान है जिससे मन और मस्तिष्क प्रकृति से ईश्वर की ओर उन्मुख होता है। यह अवधारणा हिमालय के अतिरिक्त कहीं और इतने अच्छे तरीके के चरितार्थ नहीं होती है। इसलिए पवित्र मूर्तियों, मंदिरों और धार्मिक श्रद्धा के स्थानों के आसपास धीरे-धीरे धार्मिक आस्था के शहर विकसित हुए जो आदिकाल से संतों, ऋषियों और मुनियों द्वारा इस अप्रतिम प्राकृतिक सौंदर्य के स्थान के रूप में चुने गए थे जहां भक्तगण श्रद्धालु अपनी तपस्या, योगसाधना, निश्चल, शांत, पवित्र वातावरण से निर्विघ्न संपादित कर सकें।"

बदरीनाथ, केदारनाथ, कैलाश मानसरोवर, वैष्णव देवी तथा तिरूपति जैसे धार्मिक महत्व व आस्था के पवित्र स्थलों का विकास इसी हिन्दू धार्मिक अवधारणा का परिणाम व प्रतीक है। पहाड़ी क्षेत्रों में स्थानीय वस्तियों तथा उनके आस-पास का शाश्वस्त सौंदर्य अछूता रहा।

27.2.2 मध्यकालीन शासकों की अवधारणा

मध्यकाल में भारत में तुर्क तथा अफगान शासकों का आगमन हुआ। तुगलक काल में हिमालय की तराई में कांगड़ा क्षेत्र को शाही नियंत्रण में लाया गया। पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले स्थानीय समुदायों को शाही नियंत्रण तथा शासन के अधिकार क्षेत्र में लाए जाने का यह पहला प्रयास था। पश्चिमी क्षेत्र में रहने वाले पहाड़ी बीर बांकुरो ने लगातार इन शाही आक्रमणों का डटकर विरोध व सामना किया।

मुगल शासकों के राज्य काल में पहली बार श्रीनगर के गर्मी के मौसम में आरामगाह बनाने का प्रयास किया गया। मुगल शासकों के अभिजात्य वर्ग ने नीचे मैदानी इलाकों की कड़ी झुलसाने वाले गर्मी को स्थान परिवर्तन की अपेक्षा विकास संबंधी निर्णयों से झेलने का प्रयास किया। इन सकारात्मक तथा विकासीय निर्णयों के अन्तर्गत पहाड़ों पर गर्मियां बिताने के बजाय जमीनी तहखाने, बारादरिया open walled pavilions तथा प्रकाश परिवर्तित करने वाला सफेद संगमरमर का उपयोग भवन निर्माणों के लिए बड़े-बड़े हॉलों तथा पर्याप्त सिंचाई युक्त भव्य उद्यानों का निर्माण करने के निर्णय करने के पक्ष में निश्चय हुआ।

27.2.3 अंग्रेज शासकों की अवधारणाएं

19 वीं शताब्दी में ब्रिटिश राज के भारत में पूरी तरह स्थापित होने के बाद पहली बार लगभग सभी बड़े महत्वपूर्ण पहाड़ों को विकासीय योजना के अंतर्गत लाया गया। पहली बार पहाड़ों के प्रति धार्मिक आस्था के केन्द्रों को रिसॉर्ट केन्द्र के रूप में परिवर्तित करने का कार्य प्रारंभ हुआ। यूरोपीय दृष्टिकोण के अनुसार पहाड़ों के प्रति एक आश्चर्य और कौतुहल की अवधारणा की जगह अब एक नए रोमांच तथा अन्वेषण की इच्छा अधिक व्याप्त और मुखरित हुई। जो सत्रहवीं शताब्दी में यूरोप में प्रचलित अवधारणा की प्रतीक तथा एक हद तक साम्यता के लिए हुए थी।

विज्ञान दर्शन तथा तकनीक के क्षेत्र में हुई प्रगति ने शताब्दियों से चली आ रही सोच तथा विचारधारा में क्रांतिकारी परिवर्तन किए। अब पहाड़ों में अनेक संभावनाएं दिखाई देने लगीं। पहाड़ों की अहलादित करने वाली शुद्ध हवा तथा प्राकृतिक वातावरण की शुद्धता ने प्रकृति प्रेमियों तथा यात्रियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। 19 वीं शताब्दी के दौरान पहाड़ों पर किए जाने वाले प्रयोगों और पर्यावरणीय परिवर्तन के पीछे ब्रिटिश विचारधारा तथा भारतीय मौसम का हाथ था। इसके कारण एक नई बस्तियों या हिल स्टेशनों की स्थापना प्रारंभ हुआ। ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में ऐसे लगभग 200 हिल स्टेशन अस्तित्व में आए।

ब्रि.टेश विचारधारा के अनुसार हिल स्टेशन का अवधारणात्मक तथा व्यावहारिक परिप्रेक्ष्य दर्शाते थे। 18 वीं शताब्दी के यूरोप के रोमोंटिक्स ने हिमालय के प्रति नई सुखद मीठी कल्पनाएं उत्प्रेरित की। पहाड़ी क्षेत्रों की शाश्वत नीरवता, अभेद्य और अक्षत भूमि ने औद्योगिक यूरोप को शंका का दृष्टि से देखने वाले रोमोंटिक्स को आकर्षित किया। पहाड़ी पर्यावरण में सुंदर, प्राकृतिक सौंदर्य से ओत-प्रोत स्थान छुट्टियां और अवकाश बिताने के लिए कंट्री रिट्रिट बनाने के लिए सर्वथा उपयुक्त प्रतीत हुए। हिमालय की रोमांचक, अनोखी आकर्षक छवि से वे आनंदित हो गए। ईमली ईडन ने शिमला की पहाड़ियों के बारे में लिखा है- "इतनी सुंदर, जहां घाटियों में सफेद बादल तैरते से दिखाई देते हैं।'' शिमला की सबसे ऊंची चोटी पर स्थित जैको प्वाइंट के बारे में वो लिखती हैं- गुलाबी और सफेद बादलों का झुंड उनके ऊपर तैर रहा था और उनमें से कुछ के सुरमई (purple) शीर्ष उनके बीच एक टापू की तरह निकले हुए थे। बादल परदों के समान और वहां की घाटियां कचहरी हो गई थीं जो सूरज की सुनहरी किरणों से लिपटी हुई थीं और उनकी आकार हीनता के लिए, जिसका कारण यह पहाड़ियां हैं। अक्सर कोहरे से घाटियां छिपी रहती हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी का एक समकालीन फौजी अफसर, हिमालय क्षेत्र की यात्रा करने वाला डी.जे.एफ. नेवाल बर्फ से ढंकी कंचनजंघा की पर्वत श्रेणियों की भव्यता व मोहकता से अचंभित रह गया था। वह लिखता है जिसने भी डूबते सुरज की सुनहरी किरणों से कंचनजंघा के शिखरों को देखा है, रात की परछांइयां पहाड़ों की तलहटी पर धीरे-धीरे छा रही है। क्या कोई ऐसे भव्य, अनोखे दृश्यों को आजीवन भूला सकता है जो सारी दुनिया में अद्वितीय और विलक्षण है।

चौड़ी, चमकदार, इठलाती बहती संगीत नदी की अदभुत दृश्यावली, पश्चिमी दिशा से आने वाली वर्षा से बनी उसकी जलधाराएं तथा सहायक नदियां, तिस्ता नदी का गहरे कंच रंग के पानी का ऊफान, बेल-बूटों से घिरे उसके किनारे और समीपस्थ भूखंडों के अद्भुत दृश्य किसी भी प्रकृति प्रेमी के लिए बेशक मनमोहक अनुभव उत्पन्न करते हैं।

ब्रिटिश साम्राज्यवादी राज्य की व्यावहारिक जरूरतों तथा अंग्रेजों के हिन्दुस्तानी मौसम के कड़वे तीखे अनुभवों ने भी पहाड़ों पर हिल स्टेशन विकसित करने की आवश्यकता को प्रतिपादित किया। ब्रिटिश साम्राज्य की व्यावहारिक जरूरत यह थी कि उपनिवेश की उत्तर-पश्चिम सीमाओं की सैन्य सुरक्षा भी करती थी। एक तरफ तो ब्रिटिश राज्य को सैन्य महत्व के दृष्टिकोण से अफगानिस्तान और तिब्बत में बढ़ते रूसी प्रभाव को रोकने के लिए भी हिल स्टेशनों को विकसित करना अनिवार्य और महत्वपूर्ण था तथा दूसरी ओर हिमालय में रहने वाले वीर, साहसी, अति उत्साही गोरखों को भी नियंत्रण में रखना था।

ब्रिटिश अभिजात्य वर्ग को भारत के मैदानों की भीषण गर्मी असहनीय लगी। भारत के मैदानी इलाके

अनेक घातक बीमारियों से भरे पड़े थे। विशेष रूप से गर्मी के महीनों में तेजी से फैलने वाले मलेरिया, हैजा तथा काला बुखार जैसी बीमारियों ने यूरोपवासियों को परेशान किया। 1828 में कैप्टेन पीटरमुंडी को शिमला की जलवायु अंग्रेजों के लिए अनुकूल लगी। 19 वीं शताब्दी में यूरोप में प्रचलित अवधारणा में स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूकता थी। यूरोपीय शुद्ध ताजी हवा, स्वास्थ्यवर्द्धक पानी, रोज का थोड़ा नियमित शारीरिक व्यायाम और स्नान पर बहुत जोर देते थे। पहाड़ों की इस स्वास्थ्यवर्द्धक और स्फूर्ति कारक वाली आबोहवा इस यूरोपीय अवधारणा के अनुकूल साबित हुई। अंग्रेज शासक लायड ने दार्जिलिंग को सेनिटोरिम बनाने के लिए पूर्णतः उपयुक्त पाया।

भारतीय पहाड़ों की आबोहवा उन्हें अपने देश (इंगलैंड) के वातावरण से मिलती जुलती थी। देश की याद ने उन्हें पहाड़ों में हिल स्टेशनों को विकसित करने के लिए प्रेरित किया। भारतीय पहाड़ उन्हें अपने देश समान लगे।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में भारत के वायसराय लॉर्ड लिटन अपनी ऊटी की यात्रा के दौरान इंगलैंड की याद आने पर बहुत भावुक हो गए।

"दोपहर में वर्षा हो रही थी तथा सड़कों पर कीचड़ भर गया था। पर ऐसी सुंदर अंग्रेजी बारिश, ऐसी बढ़िया इंगलैंड की मिट्टी। कल्पना करें हर्ट फोर्डशायर की गालियां, डेवोनशायर का शहरी इलाका, वेस्टमोरलैंड की झीलें, स्कॉच के झरने ट्राउट तथा लूस्टीनियन की दृश्यावलियां की।'' इन सभी कारणों से तथा नए उत्पादन के तरीकों से जो औद्योगिकी पर निर्भर थे तथा शहरी संस्कृति के कारण भारत में हिल रिसार्टस का उदय हुआ।

पूर्व औपनिवेशक से औपनिवेशिक काल तक पहाड़ों पर पर्यावरण के पर बदलते प्रभाव का भी संकेत है। यह इन तथ्यों से परिलक्षित है :

- इन पहाड़ी स्थलों के विकास के दौरान विकासीय दृष्टिकोण तथा प्राकृतिक सौंदर्य की अवधारणा के बीच उत्पन्न संघर्ष
- पहाड़ों में शक्ति और सत्ता के बदलते समीकरण
- स्थानीय पहाड़ी समुदायों तथा निवासियों का विस्थापन और
- आदर्श व संस्कृति के बदलते प्रतिमान जो महज आमोद प्रमोद तथा स्वास्थ्य लाभ पर आकर केंद्रित हो गए हैं।

बोध प्रश्न 1

1) पहाड़ों के प्रति पारम्परिक हिन्दू विचारधारा पर पांच वाक्य लिखिए।

.....

.....

.....

.....

2) पहले की अवधारणाओं से ब्रिटिश अवधारणा किस तरह अलग थी ?

.....

.....

.....

.....

27.3 हिल स्टेशनों की स्थापना

एक बार जहां यूरोपीय यात्रियों ने भारत के पहाड़ों के प्राकृतिक सौंदर्य और आनन्द को पहचान लिया, तो फिर इन पहाड़ों पर हिल रिसॉर्ट-एवं-ग्रीष्म कालीन राजधानी बनाने का पूरा प्रयास किया। 19 वीं शताब्दी के दौरान पहाड़ों पर लगभग 200 हिल स्टेशन बनाए गए। उत्तर में शिमला से लेकर लान्डूर तक, पूर्व में दार्जलिंग तथा दक्षिण में ऊटी और कोडयकनाल तक भारतीय गर्मी से पीड़ित अनेक अंग्रेज अभिजात्य वर्ग के लोगों की आवश्यकता के अनुरूप अनेक हिल स्टेशन विकसित हो गए।

अंग्रेजों की आशाओं, आकांक्षाओं के परिणामस्वरूप पहाड़ों के स्थानीय प्राकृतिक वास में अनेक परिवर्तन करने पड़े। फिर पहाड़ों के प्राकृतिक भूदृश्य को मिटाते हुए स्वास्थ्य लाभ के उद्देश्य से एक स्थानीय विभेदीकरण से युक्त नई शहरी व्यवस्था उभरी। 19 वीं शताब्दी के दौरान कुछ प्रमुख हिल स्टेशनों के उदय तथा विकास का अध्ययन करते हुए हम पहाड़ों पर इनके पर्यावरणीय प्रभावों को समझने की कोशिश करेंगे।

27.3.1 शिमला

पंजाब राज्य में शिमला (31.6 डिग्री उत्तर, 77.1 डिग्री पूर्व) 7000 फीट से अधिक ऊँचाई पर हिमालय मध्य स्कंध पर स्थित है। एक पहाड़ी जैको (जिसका पहले भी उल्लेख किया जा चुका है) लगभग 1000 फीट ऊँची है जो चारों ओर से देवदार, ओक तथा रोडोडेन्डरोन के वृक्षों से घिरी हुई है। यह पहाड़ी शिमलाह या शुमलाह स्टेशन जैसा कि यहां के स्थानीय पहाड़ी लोगों द्वारा पुकारा जाता है (यह नाम मंदिर की देवी श्यामली से लिया गया है) के पूर्व में स्थित है। इस स्थान का नाम शिमलाह या शुमलाह यहां स्थित श्यामली देवी के मंदिर से लिया गया है। प्रास्पेक्ट हिल तथा आब्जरवेटरी हिल पहाड़ों के पश्चिमी भाग में स्थित है। आननडाले जैसी सुंदर पहाड़ी घाटी में अंग्रेजों के जमाने में सामाजिक जीवन केंद्र थी अप्रैल के माह में यहां पत्थरों पर सुंदर खिले हुए पीले फूल दिखते हैं मुख्य पहाड़ी के उत्तरी इलाके में पहाड़ों की फैली चोटियों पर एलिसियम की पहाड़ियां हैं जिनका नाम लार्ड आकलैंड की दो इडन बहनों के नाम पर पड़ा है।

1904 के गजेटियर के अनुसार शिमला एक उजाड़ पहाड़ी इलाका था जो गोरखा युद्ध की समाप्ति पर 1816 में सेगोली की संधि के द्वारा अंग्रेजों ने अपने कब्जे में रखा था। उसके बाद वर्तमान शिमला का पूरा इलाका अंग्रेजों द्वारा क्योनथाल तथा कोठी के राजा तथा पटियाला के महाराज से खरीद लिया गया था। वायसराय सर जॉन लारेन्स के समय 1864 में जब शिमला को गर्मियों की राजधानी बनाने का निर्णय लिया गया तभी से शिमला के विकास में तेजी आई थी। सन 1868 से 1881 के बीच इस जिले की जनसंख्या लगभग 32.9% बढ़ गई थी। यह सारी आबादी अकेले शिमला शहर में ही बढ़ी। 1891 में शिमला में 13034 की आबादी 1901 में बढ़कर 13960 हो गई थी।

1878 में पहली बार लार्ड लिटन के समय में शिमला में अच्छी सड़कें बनाने की योजना को कार्यान्वित किया गया। जैको पहाड़ी के पीछे दो चौड़ी सड़कें गार्टन कासल इस्टेट तथा 'लेडिज' मिली के नीचे बनाई गई। वायसराय लॉज से लेकर जैको पहाड़ी तक लगभग 10 मील लम्बाई तक माल रोड को चौड़ा किया गया, उसमें सुधार किया गया तथा उस सड़क को चौपहिया परिवहन साधनों के आने जाने के लायक बनाया गया। 1879 में माल रोड की स्थिति काफी अच्छी होने के कारण वहां पहियों वाले वाहनों का आना जाना शुरू हो गया था। अब झम्पान तथा डांडियों का स्थान रिक्शा ने ले लिया था।

बींसवी शताब्दी के प्रारंभ में इन पहाड़ों पर मोटरों का आना जाना शुरू हो गया था। शिमला में अब तक व्यापार तथा व्यावसायिक गतिविधियां भी बढ़ गई थीं। बड़ा बाजार लक्कड़ बाजार, संजौली बाजार जैसे छोटे छोटे स्थानीय हाट बाजार धीरे-धीरे बढ़ने लगे। लक्कड़ बाजार मुख्यत: जलान्धर तथा होशियारपुर से आए लकड़ी की बढ़िया नक्काशी करने वाले कारीगरों द्वारा विकसित किया गया था। शिमला में सीमांत तथा अन्तरक्षेत्रीय व्यापार के कारण लोक निर्माण विभाग के द्वारा शिमला कालका के बीच पहाड़ों को काटकर बैलगाड़ी के आने जाने के लायक सड़क बनाई गई। यह सड़क 58 मीटर

लम्बी थी। सन् 1900 में कैथू तथा संजौली के बीच सड़क का निर्माण करने की योजना बनाई गई जिसमें कि खच्चरों तथा सर पर बोझा ढोने वाले कुलियों के लिए माल के अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता संभव हो सके। पहाड़ों के नीचे बनाई गई पक्की सुरंग तथा सजौली-कैथ सड़क शिमला बाज़ार तथा सजौली के बीच सीधा संचार साधन था जो विशेष रूप से अंग्रेज के द्वारा निजी तौर पर उपयोग में लाए जाने वाले माल से भिन्न था। माल रोड को बहुत वैज्ञानिक ढंग से सीधी कतार में बनाया गया है जिसके दोनों ओर व्यवस्थित तथा नियोजित ढंग से बनाई गई पक्की दुकानें थीं जो ज्यादातर यूरोपियन लोगों के स्वामित्व में थी। अंग्रेजों के समय यह स्थान एलायंस बैंक ऑफ शिमला का मुख्यालय था जो 1874 में यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया के विघटन होने पर बनाया गया था। इसके अतिरिक्त वहां दिल्ली तथा लंदन बैंक, बैंक ऑफ अपर इंडिया (मेरठ) थीं तथा पंजाब बैंकिग कम्पनी लाहौर की शाखाएं थीं। मेसर्स बरार एंड कम्पनी शिमला का पहला यूरोपीय व्यावसायिक प्रतिष्ठान था। शिमला में अब नए शहरी केन्द्र, होटल, बोर्डिंग हाउस तथा सेनिटोरिम उभरे तथा इनमें नई व्यावसायिक व आर्थिक गतिविधियों का सचालन शुरू किया गया।

1845 में माल रोड पर होटल पैवेलियन स्थापित किया गया। अगले कुछ सालों में इस होटल में बिलियर्ड, टेबल टेनिस, टेनिस कोर्ट तथा नाचने के लिए अलग से एक हॉल बनाया गया। इसी बीच शिमला एक प्रधान व्यावसायिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ जहां विदेशी व्यापार को प्रोत्साहन मिला। शिमला में अफीम, आलू, ऊन, बोराक्स, ऊनी कपड़े, अर्धरत्न पत्थर, बकरियां तथा घोड़े व्यापार की प्रमुख वस्तुएं थीं।

20वीं शताब्दी में पहाड़ों के पर्यावरण में बाहरी घुसपैठ हुई। कालका शिमला के बीच एक छोटी लाइन वाला रेलवे मार्ग सन 1900 में बनाया गया जो 1903 में सार्वजनिक यातायात के लिए खोल दिया गया। अब शिमला से मैदानों तक का लम्बा रास्ता मात्र साढ़े सात घंटे की यात्रा था।

इन सब कारणों से 1830 में शिमला के 30 घर बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ तक बढ़कर 2000 हो गए थे।

27.3.2 दार्जलिंग

अंग्रेजी शासन के समय बंगाल के लेफ्टिनेंट गर्वनर की ग्रीष्म कालीन राजधानी राजशाए डिविजन के अन्तर्गत आती थी। 26 डिग्री 30' 50' तथा 27 डिग्री 12' 44' आक्षांश तथा 88 डिग्री 30' डिग्री और 88' 56' 35' देशांतर के बीच समुद्र तल से 7500 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। 1234 वर्ग मील का यह क्षेत्र अर्ध चंद्राकार आकार वाला क्षेत्र है। 1901 में दार्जलिंग की कुल जनसंख्या 94722 थी।

दार्जलिंग शब्द दारज्व-लिंग का अपभ्रंश है जिसकी तिब्बती भाषा में अर्थ होता है लामा धर्म की रहस्यमय शक्ति जो बौद्ध मठ को दी जाने वाली पवित्र संज्ञा थी। यह बौद्ध मठ दार्जलिंग में ऑवजस्लेटरी हिल के शिखर पर स्थित था। इस क्षेत्र में स्थानीय आदिवासी लेपचाओं की मान्यता है कि यह स्थान देवताओं की प्रिय संतान की स्थली है। तिताल्या और सगोली की संधि के अन्तर्गत नेपाल दरबार ने इस इलाके की 4000 वर्ग मील की भूमि सन 1816 में ईस्ट इंडिया कम्पनी को दे दी गई थी।

तकनीकी दृष्टि से यह क्षेत्र सिक्किम के राजा के अधीनस्थ था और उसकी ओर से ईस्ट इंडिया कम्पनी ने हस्तक्षेप किया था। सन 1835 में सिक्किम के राजा ने अनौपचारिक रूप से यह क्षेत्र गर्वनर जनरल लार्ड विलियम बेन्टिक के समय में ईस्ट इंडिया कम्पनी को सौंप दिया था। दार्जलिंग गजेटियर में दार्जलिंग की प्राकृतिक स्थिति के बारे में लिखा– "अपने आप में अकेला, अलग यह सुंदर शहर पहाड़ी चोटियों पर बसा है जो हिमालय के मध्य में विस्तृत फैली घाटी के रूप में उभरता है।

वर्ष 1866, दार्जलिंग के इतिहास में एक नए युग की शुरुआत के रूप में महत्व रखता है। इसकी सीमाओं में परिपूर्ण शांति स्थापित हो गई थी। 1908 के दार्जिलिंग गजेटियर ने लिखा– "इसके बाद अज्ञात रूप से सभ्यता और प्रगति का नया स्वरूप सामने आया।'' दार्जलिंग के विकास से जुड़े यूरोपीय अधिकारियों में कैप्टेन लायड का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। जिन्होंने दार्जलिंग शहर की खोज

करके एक टी.बी. सैनिटोरियम तथा 8000 फीट की ऊँचाई पर स्थित जलपहाड़ पर स्वास्थ्य लाभ के लिए फैजी डिपो बनाने के लिए जगह हासिल की थी। डॉ. कैम्पबेल को इस क्षेत्र में चाय की खेती प्रारंभ करने तथा जिले के सामान्य विकास के लिए तथा लार्ड नेपियर को दार्जलिंग स्टेशन बनाने की योजना तथा निचले मैदानों से ऊपर पहाड़ी इलाके तक सड़क निर्माण के लिए याद रखा जाएगा।

दार्जलिंग में तराई से पहाड़ों तक जाने वाली मोटर सड़क का निर्माण 1861 में प्रारंभ हुआ। यह इंजिनियरिंग का एक अदभूत नमूना था जिसकी वजह से बाद में इस क्षेत्र में रेलवे लाइन बिछाने का कार्य तुलनात्मक रूप से बहुत सरल हो गया। उसी समय गंगा नदी से सिलीगुड़ी तक एक लम्बी चौड़ी सड़क बनाने का कार्य प्रारंभ हुआ। यह निर्माण कार्य 14.7 लाख की लागत से वर्ष 1861 में प्रारंभ हुआ। निर्माण के इस कार्य के पहले इस साहसिक कार्य के प्रणेता जे.डी.हुकर (1848) तथा लोरेटो कान्वेन्ट की नन्स ने कलकत्ता से लेकर इस पहाड़ी क्षेत्र तक की लम्बी यात्रा हाथियों, डोलियों, नावों तथा लकड़ी के तख्तों पर की। यह सब विकास कार्य उत्तरी सीमा क्षेत्र में व्यवसाय के विकास तथा पहिया वाहनों के आवागमन के विकास की दृष्टि से हो रहा था।

सन 1881 में दार्जलिंग हिमालय रेलवे लाइन के निर्माण से कलकत्ता से दार्जलिंग तक की लम्बी यात्रा मात्र एक दिन में पूरी की जा सकती थी। रेलवे निर्माण के इस इंजीनियरिंग कौशल तथा रेलवे यात्रा का सबसे अधिक आकर्षण यह था कि दार्जलिंग के समीप रेलवे लाइन एक तरह से पूरी घूम कर अंग्रेजी भाषा के 'यू' शब्द की तरह बिछाई गई जिसे 'बतासिया लूप' कहा जाता है।

1881 से 1891 के बीच दार्जलिंग की आबादी दोगनी हो गई थी। दार्जलिंग को वहां उगाई जाने वाली हरी पत्तियों वाली स्वादिष्ट लाजवाब चाय ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दे दी। डॉ. कैम्बेल के प्रोत्साहन के कारण वहां चाय के बगान भारी मात्रा में लगाए गए। दार्जलिंग की नमी वाली आबोहवा चाय की खेती की सफलता सुनिश्चित करती है।

27.3.3 नीलगिरी

दक्षिण भारत की इन पहाड़ियों में सबसे पहले फेरीरी के मानारेकाटे (1602-1603) ने यात्रा की थी। सत्रहवीं शताब्दी के पहले से यूरोपवासी नीलगिरी पहाड़ियों से परिचित थे। नीलगिरी का त्रिनमाला पहाड़ियों का दक्षिण भारतीय हिन्दुओं के लिए बड़ा धार्मिक महत्व है क्योंकि इन पहाड़ियों के शीर्ष पर प्रसिद्ध पवित्र तिरूपति मंदिर स्थित है। पहाड़ों के प्रति धार्मिक महत्व व आस्था की अपेक्षा अंग्रेजों ने पहाड़ों के प्रति व्यावसायिक लाभ का व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया था। ऊटी तथा कोडइकनाल लोकप्रिय हिल स्टेशन थे जो दक्षिण प्रायद्वीप में कार्यरत अंग्रेज समाज के अभिजात्य वर्ग की आकांक्षाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे।

ऊटी का वर्तमान (ऊटकमंड या ऊटी) नाम कैसे पड़ा यह अपने आप में अनेक विवादों से घिरा विषय है। मुंड का अर्थ टोडा भाषा में गांव होता है। नीलगिरी पहाड़ियों के इस हिस्से में रहने वाली मूल आदिवासी प्रजाति टोडा कहलाती है। टोडा लोग इस स्थान को पटखमुंड कहा करते थे। प्रथम ब्रिटिश अधिकारी सर फ्रेडरिक प्राइस जिन्होंने ऊटी के विकास के इतिहास का पता लगाया है इस मत के हैं। इस नाम का अपभ्रंश यहां बाहर से आकर बसने वाले कृषि समुदाय बडागारों ने प्रचलित किया है। धीरे-धीरे अंग्रेजों ने इस हिल स्टेशन को खोजकर पहले इसे वोटाकायमंड कहना शुरू किया, बिगड़ते बिगड़ते अब यह ऊटकमुंड या ऊटी के नाम से जाना जाता है।

कोयम्बटूर के जिलाधीश सुलिबान ने सबसे पहले पूरे जोर शोर तथा लगन से ऊटी के विकास का कार्य प्रारंभ किया था। उनके प्रयासों से सबसे पहले वर्ष 1827 में यहां पहला मिलिटरी सेनेटोरियम स्थापित हुआ था। 19 वीं शताब्दी के अंत तक पूरे दक्षिण भारत में ऊटकमंड गर्मी के मौसम में सबसे अधिक लोकप्रिय स्वास्थ लाभ का केंद्र (हेल्थ रिसॉर्ट) बन गया था।

सुलिवन ने सबसे पहले 1822-23 में काले पत्थरों का पहला बंगला बनवाया था जिसका नाम काला बंगला रखा गया था। श्री मुगाई से प्रारंभ होकर कोटागिरी तथा डिमहटी से होती हुई नीलगिरी तक पहुंचने वाली पहली सड़क बनाई गई। सर फेडरिक प्राइस का मानना था कि इस क्षेत्र की भूमि कृषि योग्य नहीं है परंतु इस क्षेत्र में रहने वाले बडागर कृषकों के समुदाय ने इस आशंका को असत्य सिद्ध

कर दिया था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह हुई कि सुलिवान ने इस पहाड़ी इलाके में कृषि, फला और फूलों की खेती के लिए नए आधुनिक उन्नत तरीकों को लागू किया। सुलिवान ने यूरोप से विशेष रूप से अच्छे मालियों तथा किसानों को वहां बुलाकर पहली बार इस क्षेत्र में सेबा, आड़ू तथा स्ट्राबेरी जैसे फलों की खेती करवाई तथा उटकमंड में अंग्रेजी सब्जियों की भी पैदावार शुरू की। जी, जो पहाड़ों के निचले पठारों में गैर महत्वपूर्ण तथा सस्ती फसल मानी जाती थी प्राइस का कहना है कि बडागर कृषक समुदाय को इसके पैदावार की जानकारी पहले से थी जिसे वे 'सुलिवन गांगी' के नाम से जानते थे तथा इसके बीज सबसे पहलें प्राइस महोदय ने यूरोप से आयात करवाए थे।

1827 में ऊटी को फौजी छावनी में परिवर्तित कर दिया गया था। मेजर केल्सो ने यहां पर स्थानीय हाट तथा अंग्रेजों के लिए विशिष्ट बाजार बनवाए। मद्रास स्थित अंग्रेज सरकार के आदेशों के तहत यहां सबसे पहले कैप्टन अन्डरवुड ने विकलांग फौजियों के लिए एक अच्छा सेनिटोरियम, अंग्रेज अफसरों के लिए अच्छे पक्के, सुरक्षित मकान तथा पहाड़ों में पहली बार आने वाले अंग्रेजों के लिए उपयुक्त आवासीय व्यवस्था की। 1842 से 1848 के बीच गवर्नर टिवीडेल के नेतृत्व में पहली बार ऊटकमंड से कोटगिरी तक सड़क बनवाई गई। 1880 तथा 1890 के बीच पूरे ऊटकमंड तथा उसके समीपस्थ स्थानों में पक्की सड़कों का निर्माण करवाया गया। संरक्षण के कार्य को प्राथमिकता दी गई। सड़कों पर गैस बत्ती वाले लैम्प लगवाए गए, जल आपूर्ति की व्यवस्था की गई। ऊटकमंड से गंदे पानी के निकास के लिए उपयुक्त लाइनों की योजना शैगनैसी द्वारा की गई और उसका क्रियान्वयन भी किया जो पूरे भारत में सबसे उत्तम निकास व्यवस्था थी। ऊटकमंड की पहाड़ी और उसके चारों ओर गोंद के पेड़ लगवाए गए। अलग से एक अच्छे पक्के दैनिक हाट बाजार का निर्माण करवाया गया। 1860 से 1870 के बीच मद्रास रेल लाइन को काफी अच्छी तरह से विस्तारित किया गया। सिनचोना के पेड़ तो वर्तमान तक शासन के आधिपत्य में थे उन्हें भी ऊटकमंड में लगवाया गया।

27.3.4 नैनीताल

नैनीताल उत्तरी भारत का एक अन्य प्रसिद्ध हिल स्टेशन है जो 19 वीं शताब्दी में ब्रिटिश राज्य के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में कुमायूं पहाड़ियों में स्थापित किया गया। नैनीताल 29 डिग्री 22 अंक्षास तथा 79 डिग्री 29' 35" देशांतर के बीच समुद्र तल से 6409 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। वर्ष 1902 में इस स्थान की जनसंख्या 8455 थी जो पर्यटन के लिए अनुकूल मौसम में बहुत तेजी से बढ़ती थी। यह हिल स्टेशन एक सुंदर झील के किनारे सुंदर वादियों में स्थित है तथा मैदान में रहने वाले यूरोपियनों के लिए एक अत्यधिक लोकप्रिय तथा पंसदीदा समर रिसॉर्ट था। 19 वीं शताब्दी के एक समकालीन भूगर्भशास्त्री श्रीमान ओलडहॉम का मानना है कि वह घाटी जहां "नैनीताल" अनेक सुंदर पहाड़ियों से घिरा हुआ स्थित है अनेक प्रकार के पत्थरों जैसे खंडित स्तरित चट्टानों तथा चूने के पत्थर से बनी है। उनमें एक ही समानता है कि वे अपनी बनावट में काफी अव्यवस्थित हैं तथा अपनी शैल वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में टूटे फूटे हैं। 19 वीं शताब्दी में एक बार जहां नैनीताल उत्तर पश्चिमी सूबे और अवध के लेफ्टिनेंट गर्वनर ग्रीष्म कालीन आराम गाह बन गया तब हिमालय की वादियों में बसे नैनीताल की स्थानीय बस्ती ने हिमालय की इस पर्वत श्रेणी में तेजी से परिवर्तन किया। पहाड़ों में चारों ओर बैलगाड़ियों के आने जाने के लिए मार्ग बनवाए गए। वनों में पेड़ लगवाए गए जिसमें ओक के वृक्षों की बहुलता थीं। कुमायूं की टिम्बर कम्पनी ने जो मुख्यत: अंग्रेजों के स्वामित्व में थी, नैनीताल के सघन वनों का दोहन व्यावसायिक लाभों के लिए करना शुरू कर दिया था। इस क्षेत्र में अंग्रेजों द्वारा भारी संख्या में आने के कारण अंग्रेज व्यापारियों ने अपनी रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने क लिए व्यावसायिक गतिविधियां तथा दुकाने स्थापित कर दीं। उत्तर में नैनीताल की सबसे ऊँची चोटी चाइना पीक (8508 फीट) तथा पश्चिम में देवपाथा (7987 फीट) तथा दक्षिण में आर्यपाथा (7461 फीट) की चोटी है।

देश के अन्य प्रमुख लोकप्रिय हिल स्टेशन हैं : पंचमढ़ी, महाबलेश्वर, डलहौजी, मसूरी तथा शिलांग इत्यादि। इन तमाम हिल स्टेशनों को स्थापित होने से पहाड़ों में पाई जाने वाली स्थानीय वनस्पतियों तथा पहाड़ों के सामान्य प्राकृतिक वासों पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस पक्ष पर हम इसी खंड की इकाई 27.7 में और अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे।

27.4 पहाड़ों में राजनीतिक घटनाओं का ऐतिहासिक कालक्रम

लम्बाई और चौड़ाई के विस्तार में पहाड़ अपनी अदम्य शक्ति और भव्यता को प्रदर्शित करते हैं। हिन्दू धर्म की अवधारणा के अनुरूप जैसे पहले ऊपर बताया जा चुका है हिमालय को अनेक पवित्र देवी देवताओं का निवास स्थल माना जाता है। इस दृष्टि से हिमालय पर्वतों को भी धार्मिक व आस्था की अवधारणा तथा व्यवस्था के रूप में वंदनीय और श्रद्धा का प्रतीक माना जाता है। मोक्ष की तलाश में आध्यात्मिक गुरूओं ने पहाड़ में रहनेवाली स्थानीय पहाड़ी प्रजातियों की पूरी तरह उपेक्षा की है। मध्यकालीन अवधि में प्रथमतः तुगलकों और बाद में मुगल शासकों द्वारा हिमालय क्षेत्र के राजपूत राजाओं तथा स्थानीय आदिवासी समुदायों पर अपनी सत्ता और निरंकुशता का दबदबा बनाया था।

ब्रिटिश कालीन समय में पहली बार सत्ता के लिए षडयंत्र करने की प्रवृत्ति अधिक प्रबल हुई क्योंकि इस क्षेत्र की धरती तथा अकृष्टपूर्व सघन वनों पर पर्याप्त प्रभाव स्थापित करने के लिए उनके पास पर्याप्त तकनीकी, वैज्ञानिक, औद्योगिक तथा आर्थिक संसाधन थे। इस प्रक्रिया ने पहाड़ों की पारिस्थितिकी संतुलन को काफी हद तक गड़बड़ा दिया है। शक्ति व सत्ता को प्राथमिकता दी गई तथा ब्रिटिश राज के बढ़ते हुए प्रशासकीय प्रभाव के कारण पहाड़ों के प्राकृतिक वास में प्रशासकीय तंत्र की सत्ता का प्रवेश हो गया।

पहाड़ी समाज में सत्ता, वर्चस्व, आधिपत्य और ऊधीनता का समावेश हुआ। समाज वर्गों में विभाजित हुआ। यह पहली बार अंग्रेजों के समय में हुआ। पहाड़ी क्षेत्रों के बड़े पैमाने पर औपनिवेशीकरण ब्रिटिश सत्ता द्वारा किया गया अंग्रेजों के साम्राज्यवादी हितों, सामरिक स्वार्थों, प्रतिरक्षा तथा व्यापार के कारण पर्यावरणात्मक और पारिस्थितिकी बदलाव आए। शक्ति और कठोर प्रशासन के बल पर अंग्रेजों ने प्रकृति पर अपना अधिकार जमा लिया और कबीलों तथा प्रकृति का सामंजस्य टूट गया। इस भाग में हम साम्राज्यवादी शासन के राजनैतिक उद्देश्यों की चर्चा करेंगे। पहाड़ों पर विशिष्टता का आधिपत्य ब्रिटिश राज की नीति का एक अभिन्न अंग था तथा ब्रिटिश हुकूमत द्वारा अन्य समकालीन हिन्दू राजाओं तथा विदेशी प्रतिद्वंद्वियों पर अपनी सत्ता और ताकत के प्रदर्शन की कोशिश था। सर बर्टल फ्ररे ने इस भव्य राजसी महत्वाकांक्षी धारणाओं सत्ता बारे में कहा था- "प्रत्येक महान भारतीय शासक जो सभ्यता के प्रति जरा भी जागरूक है वो अपने लिए गर्मियों तथा ठंड के मौसम में अलग अलग मकान बनवाता है। तीखी सड़ी गर्मी के कुछ महीनों में पहाड़ों पर रहना, अच्छा प्रशासन चलाने के लिए प्रेरणादायक, स्फूर्ति प्रदान करने वाला माना जाता था। इसके अतिरिक्त कुछ सामरिक एवं राजनैतिक महत्व के मुद्दे भी दांव पर लगे थे। विशेषकर हिमालय की क्षेत्र सरहदी व्यापार तथा वहां पाई जाने वाली बहुमूल्य इमारती लकड़ियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। साम्राज्यवादी स्थापत्य शैली पहाड़ी इलाकों में राजसी सत्ता के प्रदर्शन का सशक्त प्रतीक बन गई थी। वास्तुकला के रूप में ही मनुष्य सभ्यता का प्रमाण छोड़ देता है। स्थापत्यविदिक कार्यों द्वारा किसी भी कलाकार के "बौद्धिक सौंदर्य" का प्रदर्शन कलात्मक ढंग से होता है। इसके अतिरिक्त निर्माण कार्य में प्रयोग में लाई जाने वाली वस्तुएं एवं निर्माण सामग्री किसी भी शासन काल की भौतिक संस्कृति का परिचायक भी होती है। भारत में ब्रिटिश स्थापत्य कला के प्रदर्शन या प्रमाणों में ब्रिटिश राज्य के दृष्टिकोण परिलक्षित होते हैं।

शिमला में निर्मित वायसराज लाज, अनेक शासकीय कार्यालय, लेफ्टिनेंट गवर्नर गर्वनरों के आवास एवं कार्यालय भवन तथा सचिवालय, ब्रिटिश साम्राज्य की अखंड तथा शक्तिशाली सामर्थ्य एवं सत्ता के प्रतीक हैं। पूर्व में बने पहले के छोटे छप्पर वाले छोटे कमजोर मिट्टी के मकानों तथा शीघ्र ही लोहे तथा सीमेंट से बनी पक्की भव्य इमारतों ने ले लिया था।

आब्जरवेटरी हिल के ऊपर भव्य वायसराज लॉज का निर्माण पहाड़ की चोटी पर एक बड़ा हिस्सा समतल सपाट कर बड़ी मेहनत से बनाया गया था। हेनरी इरविन नामक इंजीनियर के निर्देशन में इस लॉज का निर्माण कार्य 1886 सं. प्रारंभ किया गया था तथा दो वर्षों में इसे पूरा कर लिया गया था। इस वायसराय लॉज में रुकने वाले प्रथम व्यक्ति वायसराय लार्ड डफरिन थे।

यह लॉज ट्यूडर शैली में बनाया गया है परंतु अधिकांश हिस्सा पास पड़ोस के पत्थर की खदानों से निकले गए ग्रे पत्थरों से बनाय गया है। इस लॉज का मुख्य भाग तीन हिस्सों में है। पश्चिमी हिस्से में

दो मंजिले हैं तथा रसोई वाला हिस्सा पांच मंजिला है। किचन, बेकरी, शराब खाना, बर्तन, क्राकरी रखने के लिए अलग कमरे, विशेष रूप से बनाई गई सीढ़िया, नाचघर तथा 19वीं शताब्दी की आधुनिक अवधारणा को ध्यान में रखते हुए लिफ्ट भी लगी हुई है। ऊटकमंड गर्वन्मेंट हाउस तत्कालीन मद्रास के गर्वनर ड्यूक ऑफ बकइनघम के नेतृत्व में दिशा निर्देश में 1877 में बनवाया गग था। यह इंगलैंड के बंकिघम शायर में स्टोव से बनी शाही आवास व्यवस्था की अनुकृति ही है। यह काफी बड़ी भव्य इमारत है तथा इसमें सुंदर स्नानागर तथा सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाए गए कई कमरे हैं।

बंगाल के लेफ्टिनेंट गर्वनर के लिए दार्जलिंग में गर्मियों में रहने के लिए बनाया गया विशेष आवास 'शबबेरी' कृत्रिम रूप से बनाए गए सुंदर बगीचे के लिए प्रसिद्ध है। यह शासकीय अवास किसी गांव में बने एक सुंदर भव्य फार्म हाउस का आभास देता है। बाद में यहां एक अन्य दरबार हॉल भी बनाया गया। शिमला में वर्ष 1880 में बड़े पैमाने पर सार्वजनिक भवन निर्माण के कार्य शुरू किए गए। सचिवालय भवन, सेना मुख्यालय, डाकघर भवन, लोक निर्माण सचिवालय, टेलीग्राफ आफिस, विदेश कार्यालय के बड़े भव्य कलात्मक भवन बनवाए गए। इस प्रकार यह बड़े सार्वजनिक भवन पहाड़ी क्षेत्र में अंग्रेजी सत्ता और प्रभुत्ता के प्रत्यक्ष प्रतीक एवं प्रमाण थे। पहाड़ों का वातावरण इंगलैंड के महानगरों में रहने वाले औपनिवेशिक अभिजात्यवर्ग के लोगों की आवश्यकताओं तथा रुचियों के अनुरूप बदला गया। शिमला में विदेशी कार्यालय, पहाड़ी का समतल करके बनाया गया था। यह एक विशेष इंगलिश शैली (chalet style) में बनाया गया है। सेना प्रमुख के रहने के लिए स्नौडौन भवन 1873 में खरीदा गया था। पंजाब के लेफ्टिनेन्ट गर्वनर का शासकीय आवास सन 1800 में पंजाब सरकार द्वारा खरीदा गया था। औपनिवेशिक राज्य के अभिजात्य वर्ग की श्रेष्ठता तथा उच्चता को बनाए रखने तथा अपने ही प्रशसकीय तंत्र से निचले वर्गों से दूरी बनाए रखने के लिए पहाड़ों के पर्यावरण में एक प्रशासकीय दूरी बनाए रखने की परम्परा लागू की गई। इसीलिए शिमला की सबसे ऊँची चोटी पर अपनी श्रेष्ठता तथा प्रशासकीय तंत्र के कड़े अनुशासन को बनाए रखने के लिए वायसरॉय तथा आर्मी कमान्डर के मकान बनाए गए थे। रूडयार्ड किपलिंग ने सत्ता की संरचना में इस अलगाव व विलगाव का सच्चा प्रमाण शिमला में देखा। उन्होंने देखा- "शिमला एक तरह से बिलकुल नई दुनिया थी। यहां प्रशासकीय तंत्र ऊपर से नीचे क्रमानुसार रहता था। पहाड़ों पर पदानुक्रम सबने देखा और अनुभव किया होगा जहां छोटे सबके के कर्मचारियों को कोई परवाह नहीं की जाती थी। यहां वायसरॉय तथा फौजी अफसरों के सहायक तथा ए.डी.सी. भी थे। शिमला में निर्मित वायरॉज लॉज पूरे पैमाने पर अपनी भव्यता, उच्चता प्रभाव तथा साम्राज्यिक संस्कृति की सत्ता का द्योत्तक थां। दुनिया में ऐसी बहुत थोड़ी सी जगहें होगी, जहां उच्चतम अधिकारी वाकई इतनी ऊँचाई पर रहते हों।'' वायसरॉय तथा फौज के सेनाध्यक्ष के रहने की जगह सबसे ऊँचाई पर थी। इस इलाके की उबड़ खाबड़ पथरीली जमीन को प्रभावशाली की विशिष्ट फौजी, आमोद धार्मिक आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया गया था।

पहाड़ों पर धार्मिक संस्थाएं शासकों की आध्यात्मिक आवश्यकता की पूर्ति तो किया ही करती थी साथ में वे स्थानीय निवासियों/आदिवासियों के उपनिवेशवाद के प्रति सकारात्मक रवैया अपनाने में मददगार थी। ब्रिटिश साम्राज्यिक प्रयासों के साथ-साथ धार्मिक संस्थाओं द्वारा किए गए ये प्रयास इस क्षेत्र में सभ्यता एवं प्रगति का प्रसार करने की दिशा में एकदम थे।

ऊटकमंड में सेंट स्टीफेन्स चर्च, सेंट थॉमर्स चर्च, रोमन कैथोलिक चर्च, कान्वेन्ट और यूनियन चैपल तथा जियोन चैपल का निर्माण किया गया। दार्जलिंग में सेंट एन्ड्रयू चर्च की स्थापना 1887 में की गई जो इंगलैंड के चर्च के अधीन था। यूनियन चैपल 1869 में बनाया गया। शिमला में क्राइस्ट चर्च माल रोड पर सबसे ऊँचाई पर स्थित था। साम्राज्यिक सत्ता संरचना के केंद्र में यह चर्च स्थित थां क्योंकि राज्याभिषेक तथा अन्य शाही कार्यक्रम इस चर्च के परिसर में आयोजित हुआ करते थे। शैक्षणिक संस्थाओं तथा विद्यालयों का भी सत्ता संगठन तथा संरचना में महत्वपूर्ण स्थान था। शिक्षा एक प्रभावशाली मार्ग व दिशा दे रही थी जिससे शासकों या उनके बच्चों को आम अन्य लोगों से पदानुक्रम में सर्वोच्च रखा जा सके। पहाड़ों का स्वच्छ, शुद्ध वातावरण, बच्चों के पोषण और विकास के लिए आदर्श वातावरण प्रदान करता था। 1907 में दार्जलिंग गजेटियर के अनुसार- "थोड़े ही दिनों में दुबले,

पतले, निस्तेज, जिद्दी तथा चिड़चिड़े बच्चे, मोटे ताजे गुलाबी तंदुरूस्त तथा सक्रिय हो जाते थे। बहुत से बच्चे जो मैदानी इलाकों में पेट की बीमारियों या बीच बीच में आने वाले बुखार से हमेशा पीड़ित रहते थे वे थोड़े ही दिनों में पहाड़ पर आकर बिलकुल ही अलग प्रकार के हो जाते थे और जल्द की अंग्रेज बच्चों की तरह स्वस्थ और लाल गोल मटोल हो जाते थे।

पहाड़ों में शिक्षा लोकप्रिय हो गई थी, जिससे वातावरण में पर्याप्त परिवर्तन आया। ऊटकमंड में ब्रीकस मेमोरियल स्कूल, शिमला में कलकत्ता विश्वविद्यालय से जुड़ा विशप कॉटन स्कूल तथा दार्जिलिंग में सेटपाल स्कूल, सेंट जोसेफ स्कूल तथा लोरेट कान्वेंट तथा नैनीताल में शेरवुड स्कूल की स्थापना की गई।

इस पहाड़ों का उन्मुक्त शुद्ध वातावरण व पर्यावरण इस तरह बदल गया कि अंग्रेजों का प्रभाव. सामाजिक संरचना तथा भौतिक पर्यावरण दोनों पर दृष्टिगोचर होने लगा।

बोध प्रश्न 2

1) शिमला किस प्रकार एक लोकप्रिय हिल स्टेशन बना ? इस पर 10 वाक्य लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) पहाड़ों पर किस प्रकार नई अंग्रेजी स्थापत्य शैली विदेशी सत्ता की प्रतीक बनी ?

.....

.....

.....

.....

27.5 स्थानीय समुदायों का विस्थापन

भारतीय पहाड़ अनेक स्थानीय आदिवासी समुदायों की आश्रम स्थल है। ये आदिवासी प्रकृति के साथ बहुत घुल मिल कर रहते हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन यापन जंगल से मिलने वाली अनेक चीजों पर निर्भर करता है। वनों के साथ नियमित निरंतर सम्पर्क में आने के कारण वे एक विनिर्दिष्ट मूल्य व्यवस्था तथा जीवन शैली विकसित कर लेते हैं तथा पहाड़ों के मूल पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट होने से बचाने के लिए एक विशेष परम्परा को स्थापित करते हैं। पहाड़ों पर अनेक धार्मिक स्थान तथा पूजा व श्रद्धा के प्रतीक स्वरूप अनेक देवी देवताओं की मूर्तियों की उपस्थिति वहां की जमीन के संरक्षण के लिए एक पारम्परिक अवधारणा को बढ़ावा देती है।

ऊटकमंड में टोडा, दार्जिलिंग तथा सिक्किम क्षेत्र के लेपचा तथा कुमायूं क्षेत्र के डोम वहां के स्थानीय पुराने आदिवासी माने जाते हैं। इन सबका प्रकृति से बड़ा अच्छा तालमेल, तादात्म्य तथा स्नेह रहता है। यह निवासी पारम्परिक झूम शैली में कृषि करते हैं तथा एक दूसरे से अधिक दूरी पर बनी अकेली झोपड़ियों में अलग अलग रहते हैं।

कई स्थानों पर विशेष कर ऊटकमंड तथा गढ़वाल क्षेत्रों में पूर्णत: विकसित तथा सीढ़ी दार खेतों को उस क्षेत्र में जाने वाले अनेक यात्रियों/पर्यटकों ने देखा है। ऊटकमांड से बाहर आकर बसे कृषक समुदाय बडागर तथा दार्जलिंग में नेपालियों ने कृषि उत्पादन का कार्य सबसे पहले प्रारंभ किया था।

सामान्य रूप से पहाड़ी क्षेत्र में भूमि स्वामित्व में गहरी असमानता थी। रामचंद्र गुहा ने टेहरी गढ़वाल गढ़वा और कुमायूं के अध्ययन में पाया कि पूरे गांव के समुदाय में गहरा मतैक्य था। इस एकरूपता व मतैक्य की संस्थात्मक भावाभिव्यक्ति थी ग्राम पंचायत। वनों और जंगलों के प्रति अपार श्रद्धा और पवित्रता की भावना ने एक प्राकर के वनों के चारों ओर एक सुरक्षात्मक घेरा डाल दिया था। यही वन उनके लिए प्रमुख संसाधन थे।

हालाँकि यह सब उपनिवेश राज्य की सत्ता के हस्तक्षेप से धीरे धीरे खत्म होता चला गया। यह ह्रास या अवरोध नीचे दिए गए उदाहरणों से पूर्णत: स्पष्ट है :

विगत कुछ सालों में चाय के बगान लगाने वाले यूरोपियनों तथा सक्त उत्साही नेपाली कृषकों ने इन पहाड़ों पर अधिकांश वृक्षों की भरी पैमाने पर अवैध कटाई कर ली जबकि स्थानीय वन विभाग, कृषि की पुरानी प्रणाली के विरूद्ध है। यही कारण है कि यहां की रहने वाली आदिवासी समुदायों को पहाड़ी स्थलों से अन्यत्र भागना पड़ा, विस्थापित होना पड़ा।

उपरोक्त कथन मूलत: दार्जिलिंग में रहने वाले मूल लेपचा निवासियों की करुण व दरुण स्थिति के बारे में बतलाता है यही बात अन्य स्थानों पर लागू होती है।

वैज्ञानिक प्रबंधन तथा आरक्षित वनों ने इन स्थानीय निवासियों की पारम्परिक गतिविधियों पर अंकुश लगा दिया तथा उन्हें सीमित कर दिया। प्रकृति के साथ उनकी साम्यता और एकरूपता धीरे धीरे उखड़ती गई तथा सीमित हो गई। वनों में रहने वाले स्थानीय आदिवासियों को वनों में और अधिक अंदर घने इलाकों में खदेड़ दिया गया। चूंकि वे अपने जीवन यापन के लिए कृषि की पुश्तैनी गतिविधियां करने से वंचित हो गए थे अत: उन्हें औपनिवेशीय प्रशासकीय तंत्र में अनेक छोटे मोटे निम्न स्तर के कार्य करने के लिए मजबूर होना पड़ा। वनों के बड़े बड़े भूखंड आरक्षित करने का अर्थ व उद्देश्य यह था कि वनों पर आश्रित रहने वाले समुदायों का अपने प्राकृतिक वा पर अधिकाधिक नियंत्रण खो देना। वाणिज्यिक वानिकी के लिए सामूहिक मालिकाना हक को समाप्त कर व्यक्तिगत मालिकाना अधिकार को महत्व दिया गया। इसके कारण इंसानों तथ जंगलों के बीच संबंध प्रभावशाती ढंग से टूट गए। खंड 4 की इकाई 12 में विकासीय योजनाओं को स्थानीय पहाड़ी समुदायों पर पड़ने वाले व्यापक प्रभाव के विषय में विस्तार से बताया गया है।

27.6 आमोद प्रमोद तथा पर्यावरण

भारत में राज चलाने के लिए आए और आकर बसने वाली विदेशी व्यक्तियों का व्यवहार, आदतें तथा आमोद प्रमोद व मनोरंजन की गतिविधियों ने पहाड़ों के पर्यावरण में गहरा परिर्वतन किया। आप पहले ही जान चुके हैं कि नए नए भवानों का निर्माण, नई सड़कें, रेल लाइनें बिछाना, नई वास्तुशिल्प, बड़े बड़े चर्च तथा शैक्षणिक संस्थाओं के भवन निर्माण की गतिविधि ने किस प्रकार वर्तमान में पहाड़ों पर उपलब्ध सुंदर भूदृश्यावलियों तथा पर्यावरण का विनाश किया तथा विपरीत प्रभाव डाला।
उपनिवेशवादियों के बसने और हस्तक्षेप के कारण स्थानीय मूल निवासियों को अन्यत्र विस्थापित होना पड़ा। इस सबके अतिरिक्त ब्रिटिश शासकों की मनोरंजन गतिविधियों ने पर्यावरण को बुरी तरह प्रभावित किया। यह एक तरह से भारतीय पहाड़ों को पूर्ण रूप से पर्यटन के केन्द्र में परिवर्तित व विकसित करने की प्रक्रिया का शुभारंभ ही था। उदाहरण के लिए छोटे बड़े जानवरों का शिकार रोमांच प्रिय यूरोपियनों/अंग्रेजों का सबसे पसंदीदा मनोरंजन तथा समय काटने का साधन था। वास्तव में सभी हिल स्टेशनों पर शिकार समस्त गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। पर्यटकों के देखने के लिए पहाड़ों के घने जंगलों में अनेक जंगली जानवर थे, शिकार के लिए विशेष यात्राएं आयोजित की जाती थीं। इस प्रकार पहाड़ों के घने जंगलों में छोटे बड़े जानवर तथा अनेक पक्षियों का रोमांच प्रिय शिकार के शौकीन उत्सुक व्यक्तियों द्वारा पीछा किया जाता था। इसी कारण पहाड़ी इलाकों में वन्य

प्राणी जीवन का एक बड़ा हिस्सा धीरे धीरे खत्म हो गया, कम हो गया।

उसी प्रकार पहाड़ों में उपलब्ध प्राकृतिक भूदृश्यावलियों तथा सुंदरता को पर्यटकों की रुचि के अनुरूप कृत्रिम तरीके से बड़े बड़े उद्यानों तथा वानस्पतिक उद्यानों में संरक्षित-परिवर्तित किया गया। सार्वजनिक उद्यान बनाए। ऊटकमंड में, उद्यान लगाने के लिए विशेष तौर से किन (ken) एक माली बुलवाया गया था ताकि वो अपने निर्देशन तथा देख रेख में बगीचा लगवाने का कार्य करवा सके। शिमला में आनाडाले उद्यान विशेष रूप से सुंदर फूलों के पौधे लगाने के लिए विकसित किया गया था।

इस प्रकार औपनिवेशिक समुदायों के सदस्यों के आमोद प्रमोद तथा मनोरंजन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पहाड़ों के पर्यावरण में अनेक परिवर्तन, संशोधन तथा कृत्रिम रूप से उन्नयन किया गया। घुड़सवारी तथा पोलो जैसे खेलों के लिए विस्तृत सपाट बड़े मैदानों की जरूरत पड़ती थी परंतु क्रिकेट जैसे खेलों के लिए भी पहाड़ों की ऊँची नीची जमीन को समतल करने की आवश्यकता थी। (ऊटकमंड, नैनीताल तथा कोडइकनाल जैसे हिल स्टेशन में वर्तमान यह सुविधाएं हैं) पाल वाली नावें चलाने तथा नौका विहार के लिए बड़ी कृत्रिम झीलें बनाने या वर्तमान में उपलब्ध जल स्रोतों की दिशा बदलने की आवश्यकता थी। अच्छी किताबें पढ़ने के शौक, जो संभ्रांत पढ़े लिखे ऊँचे तबके के अंग्रेज वर्ग का एक लोकप्रिय शौक था, के कारण बड़ी लाइब्रेरी की जरूरत पड़ी। शिमला, मसूरी तथा दार्जीलिंग के ठंड के मौसम में मनोरंजन के लिए स्केटिंग रिंग तथा बर्फ के खेल खेलने के लिए रिंग बनाने की योजना बनाई गई। पर्यावरण में इसी प्रकार का परिवर्तन व संशोधन किया गया कि सामाजिक मेल मिलाप तथा मनोरंजन को पर्याप्त प्रोत्साहन मिल सके। इसलिए शिमला की मालरोड जो ब्रिटिश काल से सभी प्रमुख सामाजिक गतिविधियों का केंद्र थीं, विशेष रूप से इस प्रकार बनाई गई थी कि वो शिमला शहर के लगभग बीचों बीच लम्बाई में स्थित थी तथा जिसके माध्यम से शिमला में बड़े-बड़े चर्च, मुख्य होटल, वाचनालय, सांस्कृतिक क्लब तथा अंग्रेजों द्वारा चलाए जाने वाले डिपार्टमेंटल स्टोर्स तक आसानी से जाया जा सके।

27.7 पर्यावरणीय प्रभाव

हिमालय तथा नीलगिरी पहाड़ों की सुंदर दृश्यावलियों तथा अप्रतिम प्राकृतिक सौंदर्य ने यूरोपवासियों को अपनी ओर आकर्षित किया था। यदि भारतीय इन हिमाच्छादित चोटियों से आध्यात्वाद की ओर आकृष्ट हुए थे तो यूरोपवासी इन पहाड़ों के रोमांस से आकर्षित हुए थे। विशिष्ट वर्ग के यूरोपवासियों के आगमन के कारण पहाड़ों में अनेक पर्यावरणीय परिवर्तन हुए। यह परिवर्तन प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति शाश्वत प्रेम तथा विकासीय गतिविधियों के बीच हुए द्वंद्व के रूप में सामने आया। भारी मात्रा और पैमाने में हुए निर्माण कार्यों के कारण पहाड़ों पर बुरा असर पड़ा। जैसे जैसे अंग्रेज सत्ता पहाड़ों पर स्थापित हुई ये हिल स्टेशन शीघ्र ही शहरी केंद्रों के रूप में परिवर्तित और विकसित हो गए। यह कार्य दो कारणों से हुआ। एक तो ब्रिटिश राज की प्रशासकीय आवश्यकताओं के कारण और दूसरा यूरोपियनों के मनोरंजन की रुचियों के कारण। बड़े पैमाने पर पेड़ों की अंधाधुंध कटाई करके तथा ऊबड़ खाबड़ पथरीली जमीन को समतल करके व्याक निर्माण कार्य प्रारंभ करवाए गए। अकृष्टपूर्व अछूती पहाड़ी भूमि पर सुनियोजित ढंग से सड़कें बनवाई गई तथा रेलवे लाइन बिछाने के लिए वनों का दोहन किया गया तथा रेलवे स्लीपर बनाने के लिए जंगल की टिम्बी लकड़ियों का भरपूर उपयोग किया गया। पहाड़ी क्षेत्रों में अंग्रेजी प्रशासन तथा सत्ता के शहरी नगर नियोजन का साधन बने। इन विकासीय निर्माण कार्यों ने रोमांसवादियों के आदर्शवादी ग्रामीण परिप्रेक्ष्य को चोट पहुंचाई। स्थानीय पहाड़ी लोग अंग्रेजों को अच्छे आकर्षक लगे तथा उन्हें वे पहाड़ों की प्राकृतिक सौंदर्य का अभिन्न अंग ही मानते थे। उन स्थानीय पहाड़ियों के उत्साह तथा रंगीन पहनावे का शौक तथा त्योहारों को उमंग से मनाने के उत्साह ने अंग्रेजों की "ओरिएंट'' की मान्यता को सुदृढ़ किया। इसके साथ ही अंग्रेज राज के सभ्यता और प्रगति को बढ़ावा देने के उद्देश्य तथा व्यावसायिक लाभ पर नजर रखने के परिप्रेक्ष्य ने स्थानीय मूल निवासियों को अंग्रेजों को बनाए और उन पर थोपे गए अनेक कड़े नियम कायदों का पालन करने के लिए मजबूर किया। वनों से प्राप्त की जाने वाली उपयोगी वस्तुओं पर स्थानीय समुदायों का असीमित अधिकार अंग्रेज राज्य की वैज्ञानिक वन प्रबंधन तकनीक तथा आरक्षित

वनों की नीति के कारण बहुत सीमित हो गया। हिल स्टेशनों पर स्थानीय निवासियों की गतिविधियां और भी अधिक सीमित हो गई क्योंकि हिल स्टेशन के बडे हिस्से विशेष रूप से अंग्रेजों के उपयोग के लिए आरक्षित कर लिए गए।

साफ सफाई तथा स्वास्थ्य के प्रति अंग्रेजों के आग्रह के कारण स्थानीय निवासियों के लिए और अधिक कडे नियम बनाए गए। स्थानीय निवासियों की गतिविधियों तथा आने जाने पर कृत्रिम तौर से नियंत्रण लग गया। स्वास्थ्य तथा साफ सफाई पर विशेष रूप से अधिक ध्यान दिए जाने का उद्देश्य स्वच्छता के प्रति अंग्रेजी दृष्टिकोण के अनुसार स्थानीय लोगों के जीवन की दैनिक दिनचर्या नियंत्रित करना था। इसके पहले ये निवासी इन उन्मुक्त पहाड़ों के स्वछंद निरंकुश मालिक थे तथा यह पहाड़ी समुदाय अपने प्राकृतिक नैसर्गिक प्राकृतिक वास से पूरी सभ्यता तथा अनुरूपता बनाए हुए थे। धीरे धीरे वे अंग्रेजों के अधीन हो गए तथा उनका महत्व कम होता चला गया।

हिल स्टेशनों में व्यापक परिवर्तन तथा बड़े पैमाने पर किए गए और करवाए जाने वाले निर्माण कार्यों से पहाड़ों के पर्यावरण पर अनेक प्रकार से विपरीत प्रभाव पडा। पेड तथा वनों की अधाधुंध कटाई तथा तेजी से होने वाले बडे पैमाने पर हुए निर्माण कार्यों ने संरक्षण की समस्या पैदा कर दी। पहाड़ों पर उस क्षेत्र की क्षमता से अधिक प्रगति की तेज रफ्तार के कारण पहाड़ों के पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी संतुलन के बिगडने की संभावना थी। पहाड़ों की शुद्ध, स्वच्छ हवा धीरे-धीरे पहाड़ों पर बसने वाली निरंतर बढ़ती आबादी द्वारा फैलाई जाने वाली अपशिष्ट तथा अन्य फैलाई गई गदंगी की दुर्गंध में बदले गई। गंदे पानी के निकास तथा नालियों की व्यवस्था पहाड़ों में अचानक बढ़ी हुई आबादी का दबाव सहने में असमर्थ थी।

बींसवी शताब्दी तक पर्यावरण में हो रहा ह्रास चिंतनीय हो गया। पहाड़ों का स्वास्थ्यवर्द्धक तथा आनन्द प्रदान करने वाला वातावरण जो विकलांग और मरीजों के लिए उपयोगी था धीरे धीरे दूषित होने लगा। अधिक आबादी, अधिक निर्माण कार्य तथा अत्यधिक भीड़ के कारण पहाड़ी क्षेत्रों में भूस्खलन तथा भूमि क्षरण की प्रक्रिया अधिक होने लगी। वर्ष 1820 में नैनीताल में एक भीषण भूस्खलन हुआ। इसने भीषण हृदय विदारक परिणामों तथा गहरे पर्यावरण ह्रास के सामने लाकर रख दिया जिसका मूल कारण पहाड़ी क्षेत्रों में विकासीय कार्य व प्रगति थे। मकान, उद्यान, सड़क तथा टेनिस कोर्ट बनाने के लिए पहाड़ों की अनियंत्रित अंधाधुंध कटाई तथा तोड़ फोड़ के कारण पहाड़ों की प्राकृकि भूव्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई। नैनीताल में सड़कों के निर्माण के लिए पत्थरों की खुदाई के लिए भारी विस्फोट करना जरूरी हो गया। इस हिल स्टेशन का पूरा दक्षिणी भाग, आसानी व सरलता से टूटने वाली चट्टानों से भरा हुआ था। इस भाग में पाई जाने वाली ये पथरीला पहाड़ियां प्राकृतिक रूप से पाई जाने वाली घास तथा झाड़ियों तथा पेड़ों के कारण आपस में मजबूती से जुड़ी थीं। नैनीताल के तेजी से होने वाला विकास ने विशषकर शेर का डान्डा वाली पहाड़ी के विकास ने जल निकासी समस्या उत्पन्न कर दी। इन इलाकों में भारी वर्षा का पानी जो अपने प्राकृतिक बहाव के कारण नीचे ढलान की ओर बहता था। रास्ते में घास, झाड़ियां, पेड़ पौधों के वहां की मिट्टी को बहा नहीं सकता था जिसके कारण भूस्खलन नहीं हो पाता था या बहुत कम होता था। हालांकि भारी पैमाने पर पहाड़ों की अनियंत्रित कटाई के कारण तथा सड़कों और मकानों के निर्माण के लिए पहाड़ी भूमि के समतलीकरण के कारण वर्षा का पानी पहाड़ी के भीतरी भाग में ही जमा रहता था और जहां भी उसे रास्ता मिलता था वहां से निकलकर नैनीताल के ताल में मिल जाता था जिससे ताल प्रदूषित होता था। वर्षा का पानी जो पहाड़ों में घुस जाता था उसे निकलने के लिए रास्ता नहीं मिल पाता था जिससे पूरे पहाड़ी क्षेत्र में पानी भर जाता था। इससे पहाड़ी इलाकों में दरार पड़ जाती थी तथा पहाड़ों का धसान होता है। चूंकि इन प्रक्रियाओं में प्राकृतिक वनस्पतियां उखड़ जाती हैं इससे वर्षा का पानी बहकर बडे बडे गड्ढों में भर जाता है। जिससे पहाड़ों की खड्ड के निचले किनारे लगातार कटते रहते हैं। इन सब कारणों से संरक्षण तथा स्वच्छता के लिए समस्याएं उत्पन्न होती है। यह सब हानिकारक पर्यावरणीय प्रभावों को परिलक्षित करते हैं जो पर्यटन उद्योग तथा व्यावसायिक वाणिज्यिक गतिविधियों की संस्थाओं को आपसी सहयोग से पैदा होती है।

ऊटकमंड में व्यावसायिक लाभ के लिए भारी संख्या में गोंद के पेड़ लगाने के लिए शोला के हरे भरे

पेड़ काट डाले गए। इस प्रक्रिया ने स्वास्थ्य समस्याएं भी पैदा कर दी जो इन व्यावसायिक विकासीय कार्यों के कारण पहाड़ी क्षेत्रों में नहीं थी। सांस्कृतिक रूप से परिवर्तित कृत्रिम वातावरण के कारण समस्या उत्पन्न हुई जैसा की ऊपर नैनीताल के विषय में बतलाया गया है जिसने पहाड़ों के नाजुक संवेदनशील पारिस्थितिकी को भी असंतुलित कर दिया। पहाड़ों में पानी के निकास की समस्या उत्पन्न हुई आबादी के लिए पेयजल की गंभीर कमी हुई तथा प्राकृतिक झरनों तथा झीलों में प्रदूषण हुआ। 1908 में फेडरिक प्राइस ने इन विकासीय कार्यों के कारण पड़ने व होने वाले ऋणात्मक प्रभावों को इन शब्दों में व्यक्त किया है :

पुराने जमाने में सुलिवान के अलावा भी बहुत से लोगों ने ऊटकमंड के बारे में बहुत सी बढ़ी-चढ़ी बातों की भविष्यवाणी की है जिनके अनुसार इस गर्म ऊटकमंड के बारे में बहुत सी बढ़ी-चढ़ी बातों की भविष्यवाणी की है जिनके अनुसार इस गर्म ऊटकमंड क्षेत्र में यूरोप के गोशान देश और इंगलैंड के सुहावने मौसम वाली जगह है। जहां यूरोपवासी आसानी व सरलता से बस सकते हैं जहां यूरोपीय अनेक प्रकार के फार्म, उद्यान तथा डेयरी फार्म से खूब धन काम सकते हैं। इसकी तुलना "भारतीय आदर्श" से की गई है। मगर यह भविष्यवाणी न पूरी हो सकी और न पूरी होगी। उसने यह भी महसूस किया कि शिकार की प्रवृत्ति ने शीघ्र ही पहाड़ों में वन्य जगत को हानि पहुंचाई। कम कर दिया। शिकार के नाम पर प्रत्येक प्रकार का जानवर फिर चाहे वह चौपाया हो या पंख वाले पक्षी सब बेरहमी से मार डाल गए। डाडो बेट्टा तथा स्नोडोन की पहाड़ियों से सांभर हमेशा के लिए खत्म हो गए। एक भी जंगली मुर्गी का दिखाना अनोखा माना जाता था। पहाड़ों का स्वरूप पूरी तरह बदल गया। सिर्फ भौतिक विकास की प्रगति ही दिखलाई पड़ती थी। पहाड़ों की सुंदर दृश्यावलियों के सौंदर्य, मन हरने वाले प्राकृतिक गुणों व आकर्षण पर कोई ध्यान नहीं दिया गया।

बोध प्रश्न 3

1) किस प्रकार अंग्रेजों की आमोद प्रमोद की गतिविधियों ने पहाड़ों के भू-दृश्यों को प्रभावित किया है ?

.....

.....

.....

.....

2) विकासीय योजनाओं के प्रभाव, पर्यटन उद्योग तथा अधिक जनसंख्या ने किस प्रकार पहाड़ों के पर्यावरण पर असर डाला ? इस पर दस वाक्य लिखें ।

.....

.....

.....

.....

27.8 सारांश

इस इकाई का प्रारंभ पहाड़ों के संबंध में अनादिकाल से विभिन्न दृष्टिकोणों व प्रचलित अवधारणाओं के संबंध में आपको परिचित कराने से किया गया है। पारम्परिक भारतीय सोच पहाड़ों के प्रति सम्पूर्ण श्रद्धा की थी, इसके परिणामस्वरूप पहाड़, तीर्थ केन्द्रों के रूप में विकसित हुए। भारत में अंग्रेजों के आगमन से पहाड़ों के प्रति नई अवधारणा विकसित हुई। एक ओर तो पहाड़ों के प्रति रोमांटिक तथा रोमांचक अवधारणा थी जिसके कारण यह पहाड़ रहस्य तथा सुंदरता के स्रोत बने और दूसरी ओर

पहाड़ों के अन्य सकारात्मक तथा लाभात्मक पहलूओं को भी उभारा गया। इन्हीं दोनों प्रकार की अवधारणाओं के कारण दार्जलिंग, शिमला, ऊटी तथा नैनीताल जैसे कुछ प्रसिद्ध लोकप्रिय हिल स्टेशनों का विकास हुआ। इस इकाई में हिल स्टेशनों के निर्माण की प्रक्रिया को भी विस्तृत रूप से बतलाया गया है।

हिल स्टेशनों के विकास ने पहाड़ों में आबादी को बढ़ावा दिया वहां अधिक लोगों तथा नई स्थापत्य कलाओं को प्रोत्साहित किया। इस इकाई में हिल स्टेशनों के विकास का विवरण दिया गया। इसकी वजह से पहाड़ों की प्राकृतिक भूव्यवस्था में तथा वहां रहने वाले सीधे साधे सरल पहाड़ी लोगों के समुदाय के जीवन में भी परिवर्तन हुआ। इन सब विषयों पर इस इकाई में चर्चा की गई है।

26.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आप अपने उत्तर में हिन्दू धर्म की अवधारणा में प्रकृतिगत पहलुओं की अपेक्षा पहाड़ों के धार्मिक महत्व पर अधिक बल दें। देखें उपभाग 27.2.1

2) आपके उत्तर में निम्न बातों को महत्व दिया जाना चाहिए।
   क) सौन्दर्यात्मक तथा रोमान्टिक
   ख) औषधियुक्त तथा व्यावसायिक
   ग) ब्रिटिश अवधारणा के अनुसार सैनिक तथा फौजी महत्व

बोध प्रश्न 2

1) देखें उपभाग 27.3.1

2) आपके उत्तर में यह समाहित होना चाहिए
   क) किस प्रकार पहाड़ों में अपनाई गई स्थापत्य शैली पहाड़ी स्थानों पर अंग्रजों के प्रभुत्व को दर्शाती है।
   ख) किस प्रकार नई स्थापत्य इस क्षेत्र में पहाड़ों के पर्यावरण के ऊपर अपनी यांत्रिकी, वैज्ञानिकी तथा औद्योगिक प्रभुता का प्रतिनिधित्व करती थी।
   ग) किस प्रकार सरकारी भवन अपने आप में सत्त संरचना की विभिन्न स्थितियों की प्रतीक थी ? देखें भाग 27.4

बोध प्रश्न 3

1) आपके उत्तर में यह स्पष्ट होना चाहिए

क) किस प्रकार शिकार की प्रवृत्ति ने पाए जाने वाले वन्य प्राणियों को प्रभावित किया ?

ख) किस प्रकार क्रिकेट, घुड़सवारी, पोलो तथा गोल्फ खेलने वालों ने पहाड़ों की भूदृश्यावली को बदल डाला।

ग) देखें उपभाग 25.7

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

लइक फतेह अली : अबर एन्वायरमेंट, एन.वी.टी., नई दिल्ली

रामचंद्र गुहा और : दिस फिशरल लैंड : एन कौलोजिकल हिस्ट्री आफ इंडिया,

पर्यावरण पर प्रभाव

माधव गाडगिल

आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, नई दिल्ली. 1992

एक्सेंट, कम्पोजिशन, डेंसिटी ग्रोइंग स्टॉक एंड एनुवल इंक्रिमेंट आफ इंडिया फारेस्ट, फारेस्ट सर्वे आफ इंडिया, मिनिस्ट्री आफ एन्वायरमेंट एवं फारेस्ट, भारत सरकार, 1995

इस खण्ड के लिए अभ्यास

अभ्यास 1

आप अपना भ्रमण कार्यक्रम विशिष्ट रूप से वन्य जगत तथा वनस्पति जगत अलग बनाएं। अपने क्षेत्र में पाए जाने वाले पेड़ पौधों और पक्षियों की सूची बनाएं।

अभ्यास 2

अभ्यास 1 के माध्यम से एकत्रित जानकारियों के पैकेज को माध्यम बनाकर, पर्यटकों को आकर्षित करने का प्रयास करें। एक टूरिस्ट गाइड के रूप में इस एकत्रित जानकारी के माध्यम से अपने क्षेत्र में पर्यटकों को आकर्षित करने का प्रयास करें।

अभ्यास 3

किसी भी पहाड़ी स्थल में उपलब्ध स्थापत्य शैली पर एक टिप्पणी तैयार करें तथा इसकी आप अपने शहर में बने मकानों, दुकानों की निर्माण शैली से तुलना करें। यदि आपको कुछ अन्तर दिखलाई पड़े तो उसे अलग से लिखें।

अभ्यास 4

किसी भी पहाड़ी शहर के पर्यावरण पर टिप्पणी लिखें। अब इन विशेषताओं का पर्यटन के लिए प्रोत्साहन के रूप में विश्लेषण करें। पर्यावरण के उन पहलूओं को भी समझने की कोशिश करें जिनका पर्यटकों तथा पर्यटन उद्योग के कारण ह्रास हुआ है।



खंड

9

पर्यावरणीय प्रभाव-2

इकाई 28
नमभूमि 5

इकाई 29
द्वीप तथा समुद्री तट 14

इकाई 30
खेलकूद-रोमांचकारी, गोल्फ, जलक्रीड़ा 25

इकाई 31
होटल तथा रिसॉर्ट 35

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें 50

इस खंड के लिए अभ्यास 50

विशेषज्ञ समिति

श्री अजय माहुरकर
इतिहास संकाय
इं.गां.रा.मु.वि

श्री अलोक चंदोला
टूरिज्म कंसलटेंट, नई दिल्ली

श्री अशीष कुमार सिंह
मैनेजिंग डायरेक्टर
केरल टूरिज्म डेवलेपमेंट
कारपोरेशन, त्रिवेन्द्रम

डॉ. गीता केकर
विज्ञान विद्यापीठ, इं.गां.रा.मु.वि.

डॉ. इकबाल मलिक
निदेशक, वातावरण
नई दिल्ली

श्री जहांगीर घड़ियाली
जनरल मैनेजर
वेलकम ग्रुप होटल, औरंगाबाद

डॉ. जसवंत सोखी
विज्ञान संकाय, इं.गां.रा.मु.वि.

प्रो. कपिल कुमार
निदेशक
सेंटर फॉर एक्सटेंशन
एजुकेशन, इं.गां.रा.मु.वि.

श्री के.टी. सुरेश
कोआर्डिनेटर, इक्वेशन, बंगलूर

सुश्री लतिका नाथ
वर्ल्ड लाइफ फाउंडेशन
देहरादून

डॉ. नीना राव
हेड डिपार्टमेंट ऑफ टूरिज्म
कालेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज
नई दिल्ली

श्री प्रदीप सांखला
मेनेजिंग डायरेक्टर
डायनेमिक टूर एंड ट्रेवेल्स
प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

श्री पी. राज
डायरेक्टर क्लाइंट सर्विसेज बीबीडीडी
वर्ल्ड वाइड नेटवर्क त्रिवेंद्रम, बम्बई

डॉ. रवीन्द्र कुमार **(संयोजक)**
इतिहास संकाय, इं.गां.रा.मु.वि.

कार्यक्रम संयोजक : प्रो. कपिल कुमार

पाठ्यक्रम दल :

डॉ रवीन्द्र कुमार
श्री अजय माहुरकर } **पाठ्यक्रम संयोजक**

डॉ. गीता केकर
डॉ. जसवंत सोखी
श्री सलिल मिश्र
प्रो. कपिल कुमार

खंड निर्माण दल

इकाई सं.	लेखक	संकाय सदस्य, इं. गां. रा. मु. वि.
28	सुश्री रुचिका देवा हिन्दू कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय	श्री सलिल मिश्र
29	श्री शशांक सिन्हा दयाल सिंह कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय	श्री सलिल मिश्र
30	श्री ओ.पी. सिंह शोध छात्र, इतिहास विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय	श्री सलिल मिश्र
31	श्री नीरज सहाय भगत सिंह कालेज दिल्ली विश्वविद्यालय	श्री सलिल मिश्र **सहयोग** सुश्री विद्या आनन्द श्री एल.डी. नॉबर्ट

खंड संयोजक
श्री सलिल मिश्र

अनुवाद	अनुवाद परिष्कार	संकाय संदस्य
श्री प्रकाश परिहार म.प्र. पर्यटन, भोपाल	सुश्री सीमा कुमारी	डॉ. रविन्द्र कुमार इं.गां.रा.मु.वि.

जुलाई, 1998

© इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 1998

ISBN 81-7605-363-5

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

NMDC-210

BTS-05/374

खंड 9 पर्यावरणीय प्रभाव -2

यह इकाई पिछली इकाई का ही विस्तार है तथा इसमें भी लगभग उन्हीं विषयों की चर्चा की गई है अर्थात पर्यटन के विभिन्न अवयवों तथा होटल, रिसॉर्ट तथा जलक्रीड़ा का पर्यावरण पर पड़ने वाला प्रभाव। इस खंड की दो इकाइयाँ (इकाई 30 में खेलकूद-रोमांचकारी, गोल्फ तथा जलक्रीड़ा तथा इकाई 31 में होटल तथा रिसॉर्ट) पर्यटन के विभिन्न घटकों पर केंद्रित है। इसमें पर्यावरण पर पड़ने वाले अनेक प्रभावों की भी चर्चा की गई है। इस खंड की दो इकाइयाँ पर्यावरण के अन्य घटकों (इकाई 28 नमभूमि, इकाई 29 द्वीप तथा समुद्री तटों) पर केंद्रित है तथा उन पर पर्यटन के पड़ने वाले प्रभावों की विस्तार से चर्चा की गई है। (पर्यटन, पर्यटक व्यवहार, पर्यटन उद्योग, अधिसंरचना आदि)

इकाई 28 विभिन्न वनस्पति जगत तथा प्राणी जगत को जीवित रखने में तथा पारिस्थितिकी तंत्र से संबंधित कार्यों को पूरा करने में नमभूमि की भूमिका तथा पर्यटन के क्षेत्र में उनके महत्वों पर भी चर्चा की गई है। इसमें देश के कुछ बड़े प्रमुख महत्वपूर्ण नमभूमि की सूची भी दी गई है तथा अधिक पर्यटन के कारण उन पर आने वाले गहरे संभावित खतरों को भी बतलाया गया है। इसके साथ ही साथ इन नमभूमि के संरक्षण के लिए उठाए जाने वाले एहितियाती कदमों के बारे में भी बताया गया है।

इकाई 29 द्वीप एवं समुद्री तट – इसमें भी द्वीपों एवं समुद्री तटों के संदर्भ में वही प्रक्रिया अपनाई गई है। इसमें विभिन्न प्रकार के मौजूदा द्वीपों तथा समुद्री तटों एवं उनके निर्माण की प्रक्रिया बतलाई गई है। इसके बाद कुछ प्रमुख द्वीपों तथा प्रख्यात समुद्री तटों की सूची दी गई है तथा उन विभिन्न प्रकारों का उल्लेख किया गया है जिनके माध्यम से पर्यटक और पर्यटन-उद्योग द्वीपों तथा समुद्री तटों के पर्यावरण को प्रभावित करते हैं।

इकाई 30 खेलकूद-रोमांचकारी, गोल्फ तथा जल क्रीड़ा – में पर्यटन से जुड़े कुछ खेल तथा खेल गतिविधियों का अध्ययन किया गया है यथा गोल्फ, पर्वतारोहण, स्कीईंग, ग्लाइडिंग सरीखे रोमांचक खेल आदि तथा सेलिंग, विन्ड सर्फिंग, रिवर राफटिंग, स्कूबा डाइविंग तथा स्नारकेलिंग सरीखे पानी से जुड़े रोमांचक खेलों का भी वर्णन किया गया है। इस इकाई में इन रोमांचक खेलों के लिए उपयुक्त परिवेश (गोल्फ मैदान के निर्माण) बनाने तथा उनके क्रियान्वयन से पर्यावरण पर पड़ने वाले विपरीत प्रभावों (यथा जलक्रीड़ा खेले जाने के कारण पड़ने वाले विपरीत प्रभाव) का भी परीक्षण किया गया है। पर्यटन के प्रचार, प्रसार व प्रोत्साहन के लिए हालाँकि इन रोमांचक खेल संबंधी गतिविधियों को प्रतिबंधित करने की सिफारिश नहीं की गई परंतु इस इकाई में इन खेल गतिविधियों के प्रोत्साहन से पर्यावरण के मूल्यों में होने वाले अवमूल्यन तथा ह्रास को कम करने के प्रयासों व उपायों का भी उल्लेख किया गया है।

इकाई 31 होटल तथा रिसॉर्ट में होटल के उद्भव, विकास तथा पर्यटन के लिए उनके महत्व का परीक्षण किया गया है। इस इकाई में देश में पर्यटन उद्योग की वर्तमान दशा का उल्लेख तथा विभिन्न वर्गों में उनका वर्गीकरण भी किया गया है। होटल उद्योग से होने वाले पर्यावरणीय ह्रास को भी इस इकाई में समझाया गया है। इस इकाई में होटलों से होने वाले पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करने के अनेक सुरक्षात्मक उपायों का भी उल्लेख किया गया है।

इकाई 28 नमभूमि

इकाई की रूपरेखा

28.0 उद्देश्य
28.1 प्रस्तावना
28.2 नमभूमि क्या है
28.3 नमभूमि क्षेत्र का महत्व
  28.3.1 नमभूमि की विशेषताएं
  28.3.2 नमभूमि के कार्य
28.4 भारतीय नमभूमि क्षेत्र
28.5 पर्यटन का प्रभाव
28.6 अत्यधिक पर्यटन और नमभूमि क्षेत्र
28.7 नमभूमि क्षेत्रों का संरक्षण
28.8 सारांश
28.9 शब्दावली
28.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

28.0 उद्देश्य

इस इकाई में नमभूमि क्षेत्र की चर्चा की गई है तथा पर्यटन के कारण नमभूमि क्षेत्र पर पड़ने वाले प्रभावों को समझाया गया है। इस इकाई के उद्देश्य इस प्रकार हैं :

- नमभूमि क्षेत्र के संबंध में जानकारी प्रदान करना,
- नमभूमि क्षेत्र के महत्व व कार्यों की जानकारी,
- पर्यटन से नमभूमि क्षेत्र पर पड़ने वाले प्रभाव से आपको अवगत कराया गया है, और
- नमभूमि क्षेत्र के संरक्षण के संबंध में सुझाव दिए गए हैं।

28.1 प्रस्तावना

मानव प्रजाति ने हमेशा अपने लाभों के लिए अपने आस-पास के परिवेश में उपलब्ध संसाधनों का दोहन किया है। वायु, जल, भूमि, वायुमंडल, तथा जीवित प्राणी–यह सभी तत्व एक या अन्य रूप में मानव प्रणाली के लिए उपयोगी हैं। नमभूमि क्षेत्र अभी कुछ दिनों से अत्यधिक उपयोगी प्राकृतिक संसाधन तंत्र के रूप में चिन्हित किए गए हैं। इस इकाई में नमभूमि क्षेत्र की परिभाषा के साथ तथा भारत के कुछ नमभूमि क्षेत्र की चर्चा की गई है। यह इकाई नमभूमि क्षेत्र के उद्भव तथा दुनिया के सभी भागों में इसके उपयोग व महत्व तथा पर्यटन के क्षेत्र मे उसके उपयोग से होने वाले प्रभावों, परिणामों से परिचित कराती है। अधिक पर्यटन से इन नमभूमि क्षेत्रों पर छाने वाले गहरे संकट का भी वर्णन किया गया है। अन्ततः यह इकाई इन नमभूमि क्षेत्रों के संरक्षण के संबंध में कुछ विशिष्ट विधियां बताती हैं।

28.2 नमभूमि क्या है?

शब्दकोष में नमभूमि क्षेत्र को मुख्य रूप से दलदल या भूमि के नम हिस्से के रूप में परिभाषित किया है परंतु सामान्य बोलचाल और उपयोग के लिए नमभूमि क्षेत्र ठहरे हुए पानी के उन बड़े क्षेत्रों को

मान लिया गया है जो चारों ओर भूमि से घिरे रहते हैं। नमभूमि क्षेत्र की अन्तर्राष्ट्रीय रूप से मान्य परिभाषा यह है – "कोई भी प्राकृतिक या मानव निर्मित, स्थाई या अस्थाई पानी, दलदल या ईंधन वाली जलाऊ लकड़ी का वह जमीनी हिस्सा जिसमें पानी थमा हुआ हो या बह रहा है–वह पानी चाहे ताजा हो, गंदा हो या नमक युक्त खारा हो जिसमें समुद्री जल भी हो सकता है जिसमें पानी की गहराई 6 मीटर से ज्यादा न हो।"

भारत की नमभूमि क्षेत्र लद्दाख के अति ठंडे इलाके से लेकर नमी युक्त वातावरण वाले इम्फाल तक राजस्थान के गर्म रेगिस्तानी इलाके से लेकर इम्फाल की अधिक नमी वाले क्षेत्रों तक तथा मौसमी बारिश वाले मध्य भारत के मैदानी इलाकों तथा दक्षिणी आर्द्र इलाकों तक अलग-अलग स्थित तथा व्याप्त है।

ऐसा अनुमान लगाया गया है कि भारत वर्ष में उपलब्ध फैले नमभूमि क्षेत्र का क्षेत्रफल 41 लाख हैक्टेयर में फैला हुआ है जिसमें से 15 लाख हैक्टेयर प्राकृतिक रूप से निर्मित तथा शेष 26 लाख वर्ग हैक्टेयर मानव निर्मित है।

इस इकाई में हमने नमभूमि क्षेत्र की पारिस्थितिकी के महत्व तथा पर्यटन उद्योग का उन पर पड़ने वाले प्रभावों के संबंध में आपका ध्यान केंद्रित करने का प्रयास किया है।

पर्यटन के छात्रों को भारत में उपलब्ध इन नमभूमि क्षेत्र की प्राथमिक जानकारी होना जरूरी है क्योंकि दूर-दूर तक फैले पानी के विशाल क्षेत्रों को देखना सुखकर लगता है। ये नमभूमि क्षेत्र प्राय: देशी व विदेशी पर्यटकों को अपने प्राकृतिक सौंदर्य के कारण अपनी ओर आकर्षित, आमंत्रित करते हैं। इन नमभूमि क्षेत्रों में नौकायान, पालवाली नावें, मछली का शिकार, डालफिन्स, वन्य प्राणी तथा अन्य देशों से उड़कर आने वाले देशान्तर गामी मेहमान पक्षियों के अतिरिक्त आकर्षण हो सकते हैं। भारत के कुछ बड़े नमभूमि क्षेत्रों में तथा चिल्का झील, उदयपुर झील तथा श्रीनगर स्थित डल झील कुछ प्रमुख पर्यटन स्थल हैं। इसके अतिरिक्त वैसे भी इन नमभूमि क्षेत्र का ज्ञान अनिवार्य है क्योंकि प्रकृति के संतुलन को बनाए रखने में इन नमभूमि क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका व कार्य होते हैं। यह नमभूमि अन्न नियंत्रण, जल भण्डारण तथा उसके शुद्धिकरण, समुद्री तटों के बचाव तथा समुद्र व नदी के किनारों के क्षेत्रों को यथावत बनाए रखने में बड़ा योगदान देते हैं। इन सबका विस्तृत विवरण इस इकाई के उपभाग 28.3.2 में किया जाएगा।

28.3 नमभूमि क्षेत्र का महत्व

जैसा कि इस इकाई के भाग 28.2 में बताया गया है कि भारत में अनेक नमभूमि क्षेत्र हैं। इनके महत्व को भौतिकी, रसायनिक और जैविक प्रक्रियाओं के संदर्भ में देखा जाना चाहिए जो कि इन नमभूमि क्षेत्रों में होती है। इसके अन्तर्गत भंडारण, बीजों का अंकुरित होना, आयन परिवर्तन, पोषण प्राप्ति, पानी का जमीन द्वारा सोखा जाना, बैक्टेरिया तथा फंगस का पनपना, गैसीकरण, नोषजनीकरण तथा जैविक परिवर्तन इत्यादि सम्मिलित हैं।

28.3.1 नमभूमि की विशेषताएं

पूरे विश्व में कोई भी नमभूमि क्षेत्र महत्वपूर्ण माने जाते हैं बशर्ते उनमें निम्न विशेषताएं हों :

- इसे प्राकृतिक या लगभग प्राकृतिक होना चाहिए और यह जैव भौगोलिक क्षेत्र के अनुरूप होना चाहिए।
- कभी भी तटीय व्यवस्था, या बड़ी-बड़ी नदियों के सिंचित प्रदेश की प्राकृतिक व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण जैविक, पारिस्थितिकी तथा जलीय भूमिका निभाते हों।
- ये अनुपम या विशेष प्रकार के नमभूमि क्षेत्र हों, या
- वनस्पति जगत या प्राणी जगत की कोई अद्भुत, विलक्षण या लुप्त होने वाली, संकटापन्न में प्रजाति के जीवनयापन या अस्तित्व में सहायक सिद्ध हों।

28.3.2 नमभूमि क्षेत्र के कार्य

चूंकि प्राय: सभी नमभूमि क्षेत्र में अनेक प्रकार के पौधे तथा जीवों का प्रकृतिवास हुआ करता है तथा यह नमभूमि क्षेत्र उथले, कम गहरे जल क्षेत्र हुआ करते हैं तथा जल में रहने वाले पक्षियों तथा छोटे जलीय जीवों के आवास स्थान होते हैं। इस प्रकार के नमभूमि क्षेत्र के उदाहरण हमें सारी दुनिया में देखने को मिलते हैं। स्पेन में स्थित कोटा डौन्ना का नमभूमि क्षेत्र लगभग पूरे यूरोप की समस्त पक्षी प्रजातियों में से आधी प्रजातियों की संख्या के जीवों का रहने का घर है। जिसमें अनेक प्रजातियाँ लगभग लुप्त होने की कगार पर हैं। उसी प्रकार ग्रिस का वाटर लगून "अलयागी किटोरस" लगभग मेडेटेरियन समुद्र में रहने वाली कोई 7000 प्रजातियों की समुद्री चिड़ियों के लिए अच्छी खासी चिड़िया आबादी है।

भारतवर्ष में राजस्थान के अन्तर्गत भरतपुर स्थित भरतपुर नमभूमि क्षेत्र, सायवेरिया से आने वाली देशांतरगामी सारसों का मौसमी डेरा है। पक्षी प्रजातियों को संरक्षण तथा देशांतरगामी पक्षियों के लिए मौसमी ठिकाना देना प्राय: अधिकांश नमभूमि क्षेत्र विनिर्दिष्ट कार्य हैं। पक्षियों को ठिकाना देने या उनके सुस्ताने के लिए जगह देने के अलावा,यह नमभूमि क्षेत्र अनेक प्रकार की मछलियां, सीपियों, तथा कई प्रकार के जलीय जीव जन्तु प्राणियों के पनपने के स्थान हैं। उड़ीसा की चिल्का झील में डेल्फिन मछलियां हैं जो उस क्षेत्र में यहाँ वहाँ विशेषकर नदी के समुद्र के मिलने के स्थान पर अधिकतर विचरती रहती हैं। समुद्र के किनारे स्थित नमभूमि क्षेत्र, समुद्र तथा मीठे पानी के बीच अथवा मीठे पानी और अधिक संख्या में विविध जीवों के रहने के भूमि क्षेत्र के बीच जोड़ने की कड़ी होते हैं।

पारिस्थितिकी की दृष्टि से नमभूमि क्षेत्र महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। वे पानी के पूरे क्षेत्रफल को नियमित और नियंत्रित करते हैं तथा एक बड़े प्राकृतिक छन्ने की तरह कार्य करते हैं और जैसा कि ऊपर बताया गया है अद्भुत पोषण गतिशिलता को प्रदर्शित करते हैं। पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में पोषण की पुर्नप्राप्ति, अधिक नाइट्रोजन के विसर्जन, फास्फेट तत्व को निष्क्रीय करने तथा राक्सिन तत्वों का अन्य घुलनशील रसायनिक तत्वों तथा भारी धातुओं को पौधों के द्वारा आत्मसात कर लेने की गुणवत्ता के आधार पर तथा दूषित विसर्जित पानी के शुद्धिकरण में भी सहायक होते हैं।

इसके अलावा समुद्री तटों के पास स्थित नमभूमि क्षेत्र में पनपने वाले छोटे पौधे, समुद्र के कारण होने वाले कटाव के लिए भी प्राकृतिक रूप से एक मजबूत आड़ का कार्य करते हैं। समुद्र स्तर के बढ़ने के संभावित खतरों का डर सारी दुनिया में बना रहता है। इस संभावित खतरों को रोकने के लिए एक त्वरित उपाय के रूप में विशेषज्ञों ने समुद्र के किनारे कीचड़ में फलने और बढ़ने वाले पौधे (मैनग्रोव) लगता है। कीचड़ों में पनपने वाले पौधों (मैनग्रोव) से युक्त भारत तथा बंगला देश के नमभूमि क्षेत्र, बंगाल की खाडी के खतरनाक समुद्री तूफान के विरूद्ध सशक्त सक्षम प्रतिरोधक का काम करते हैं। इस प्रकार यह नमभूमि क्षेत्र बाढ़ को रोकने में सहायता पहुँचाते हैं।

पर्यावरण के संदर्भ में भी नमभूमि क्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वह पानी की रक्षा करते हैं तथा उसकी गुणवत्ता बढ़ाते हैं तथा स्थानीय मौसम को भी नियंत्रित रखते हैं। पानी की गुणवत्ता में सुधार लाने का प्रयोग, नमभूमि क्षेत्र के उपयोग के द्वारा ठंडे मौसम में किया जाता है। शहरी क्षेत्रों में नमभूमि क्षेत्र प्राकृतिक रूप से दूषित पानी को रोकने तथा विसर्जित अपशिष्ट में उपलब्ध पोषक तत्वों का कृषि तथा मछली पालन के माध्यम से बड़े प्रभावशाली ढंग से उपयोग किया जा सकता है। नमभूमि क्षेत्र बाढ़ नियंत्रण, पानी की गुणवत्ता को नियंत्रित करने तथा सूखा प्रभावित क्षेत्रों में कृषि उत्पादन बढ़ाने में अहम भूमिका निभाते हैं।

बोध प्रश्न 1

1) नमभूमि क्षेत्र क्या हैं? पांच वाक्यों में लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) उन स्थानों/देशों के नाम बताइइए जहाँ यह नमभूमि क्षेत्र स्थित है।

.....

.....

क) कोटाडोन्न

.....

.....

3) नमभूमि क्षेत्र द्वारा किए जाने वाले मूलभूत कार्यों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

28.4 भारतीय नमभूमि क्षेत्र

भारत के अनेक प्राकृतिक नमभूमि क्षेत्र के उत्तर या दक्षिणी भारत की प्रमुख नदियों के नदी तंत्र से जुड़े हुए है। इसके अतिरिक्त दूसरी ओर अनेक नदी तंत्र व्यवस्था को मजबूत करने के लिए बनाई गई, निर्मित अनेक बहुउद्देशीय परियोजनाओं के पूर्ण होने पर भी अनेक मानव निर्मित नमभूमि क्षेत्र प्राप्त हुए हैं। पंजाब में समतल और बीस नदियों के संगम पर निर्मित हरीके बराज, पंजाब में भाखरा नांगल बांध तथा बिहार-नेपाल की सीमा पर निर्मित कोसी बराज। इन सबके अलावा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक प्राकृतिक झीलों के अलावा हमारे पास कृत्रिम नमभूमि क्षेत्र भी हैं। उदाहरण के लिए कावर झील, चिल्का झील, पिचोला परिसर तथा सुखना झील विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त हमारे यहाँ 6740 कि.मी. क्षेत्रफल का दलदल क्षेत्र भी उपलब्ध है। हमारे देश में नदी मुहानों पर बनी इस प्रकार की दलदल भूमि अधिकांशत: पश्चिम बंगाल का सुंदरवन क्षेत्र तथा अंडमान



चित्र 1 : रेणुका झील

निकोबार द्वीप समूह में है जो भारत में इस प्रकार की विविध उपलब्ध डेल्टाओं के 80% भाग है। शेष अन्य डेल्टा क्रमशः उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु कर्नाटक, मध्यप्रदेश, गुजरात तथा गोवा राज्यों में है।

भारत के कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण नमभूमि क्षेत्र हैं : कौल्लेरू (आंध्रप्रदेश), वूलर (जम्मू काश्मीर), चिल्का (उड़ीसा), लोकतक (मणिपुर), भोज (मध्यप्रदेश), सांभर (राजस्थान), पिचोला (राजस्थान), अष्टमुदिर (केरल), सस्थमकोटबा (केरल), हरिका (पंजाब), कंजली (पंजाब), उजनि (महाराष्ट्र), सुखना (चण्डीगढ़), रेणुका (हिमांचल प्रदेश), काबर (बिहार), नाल सरोवर (गुजरात), डल झील (श्रीनगर)।

28.5 पर्यटन का प्रभाव

इस भाग में हम पर्यटन उद्योग का इन नमभूमि क्षेत्र पर पड़ने वाले प्रभाव तथा उसके क्या परिणाम होते हैं इस पर चर्चा करेंगे। कुछ विशेष नमभूमि क्षेत्रों की विनिर्दिष्ट विशेषताओं से भी हम आपको अवगत कराएंगे।

पर्यावरणविदों ने पर्यटन केंद्रों पर होने वाले पर्यावरणीय नाश व ह्रास के लिए पर्यटन को एक अहम कारण माना है। पर्यटन योजनाओं की अकुशल, अनुपयुक्त संयोजना, तथा इस उद्योग की खतरनाक, बेहताहाशा, अनियंत्रित वृद्धि इस नाश व ह्रास के महत्वपूर्ण एवम उत्तरदायी कारक हैं। उदाहरण के लिए आज से 60 वर्ष पहले श्रीनगर में स्थित डल झील का क्षेत्रफल 25 वर्ग कि.मी. था वो आज सिकुड़कर मात्र 10 वर्ग कि.मी. रह गया है। सम्भवतः यह अधिक पर्यटकों तथा उनके द्वारा फैलाए गए प्रदूषण के कारण ही हुआ है।

उड़ीसा की चिल्का झील, पर्यटकों के लिए स्वर्ग मानी जाती है, यहाँ पानी का काफी लम्बा फैलाव है जो झील के चारों और अनेक छोटी-छोटी हरी भरी पहाड़ियों से घिरी तथा देशांतरगामी विविध मेहमान पक्षियों से भरी रहती है। इस झील के चारों ओर अनेक सुंदर स्थान हैं जिन्हें पर्यटन केंद्रों के रूप में विकसित किया जा सकता है। भारत शासन के पर्यटन विभाग ने इन संभावित विकसित किए जा सकने वाले स्थानों में से 4 स्थल क्रमशः समालाद्वीप, राम्भ, बरकुल, तथा सतपदा स्थान का चयन किया है। बरकुल में एक जलक्रीड़ा परिसर विकसित करने की निर्माण योजना प्रारंभ हो चुकी है तथा सतपदा में पर्यटक कुटिर निर्माण की जाने की योजना विचाराधीन है। वहीं कालीजय नामक एक सुंदर मंदिर भी है जो हजारों पर्यटकों को आकर्षित करता है। इसके अतिरिक्त चिल्का झील के आसपास तीन अन्य आकर्षण हैं : डौल्फिन, ब्लैक बक, तथा आयस्टर्स। इनके बारे में पर्यटकों को पर्याप्त जानकारी नहीं है। चिल्का झील के समीप सतपदा तथा आराखुंड क्षेत्रों के बीच जहां चिल्का झील आकर समुद्र में मिलती है, में लगभग 50 बड़ी डौल्फिन स्वतंत्र रूप से निश्चित मस्ती में तैरती हैं। दूसरी ओर बंगाल की खाड़ी तथा चिल्का झील के बीच एक संकरी पट्टी के क्षेत्र में काफी अधिक संख्या में काले हिरंण (ब्लैक बक) रहते हैं। अन्ततः इन स्थानों पर न सिर्फ मनोरंजन पर्यटन बल्कि रोमांचक, धार्मिक तथा पारिस्थितिकी पर्यटन विकसित करने की आपार संभावना है।

हालांकि जब किसी स्थान पर आने वाले पर्यटकों की संख्या उस स्थान विशेष के पर्यावरण के सहनीय शक्ति से ज्यादा हो जाती है तब कठिनाइयां प्रारंभ हो जाती हैं। अवकाश पर्यटन अपने साथ पर्यटकों की बड़ी भीड़ साथ लाता है जो संवेदन शून्यता के साथ थोड़े समय में ज्यादा पैसा बटोरना चाहते हैं। नदी या झीलों के किनारों पर अनेक होटल या अन्य आवासीय इकाइयां अनियोजित ढंग से निर्मित कर दी जाती हैं। इन होटल की विसर्जित अपशिष्ट, विसर्जित कचरा तथा गरर का पानी सीधे नमभूमि क्षेत्रों में पहुँचकर उसके पानी को दूषित करते हैं। कई बार इन नमभूमि क्षेत्रों में नौकाचालन के लिए अनधिकृत व अनियोजित ढंग से अस्थाई जेट्टी बना ली जाती है। प्रायः इन निर्माण कार्यों को कार्यान्वित करते समय समीपस्थ उपलब्ध नमभूमि क्षेत्रों में उठने वाली लहरों की प्रकृति का ध्यान नहीं रखा जाता है जिसका संबंधित नमभूमि क्षेत्र पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। जल्दी ही नमभूमि क्षेत्रों के किनारों पर अनावश्यक मिट्टी जमना शुरू हो जाती है तथा नमभूमि क्षेत्र का क्षेत्रफल धीरे-धीरे घटना शुरू हो जाता है। थोड़े समय बाद लकड़ी की बनी सादी डोंगियों का स्थान मोटर से चलने वाली मोटर बोट ले लेती है जो चलने में न सिर्फ भारी आवाज पैदा करती है बल्कि चालन के समय

नमभूमि क्षेत्र के पानी में मोबिल आयल, पेट्रोल तथा डीजल के अंश भी बिखेरते जाती है। इसके अतिरिक्त अनेक असंवेदनशील तथा संकुचित दृष्टिकोण के पर्यटक वहाँ की स्थानीय पारिस्थितिकी व्यवस्था में उपलब्ध कुछ विलक्षण, महत्वपूर्ण, असामान्य बहुमूल्य वनस्पतियां अथवा अन्य वन्य प्राणी प्रजातियों को छोड़कर नुकसान पहुँचाते हैं। इस प्रकार की अनेक समस्याएं न सिर्फ चिल्का झील बल्कि सभी प्रमुख महत्वपूर्ण तथा बड़े नमभूमि क्षेत्रों को अनुभव करना पड़ता है। हालाँकि अब सब ओर से एकमत होकर यह निर्णय ले लिया गया है कि पर्यावरणीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए पर्यटन का विकास किया जाना चाहिए तथा यह विकासीय प्रचार योजनाएं समीपस्थ, उपलब्ध नमभूमि क्षेत्रों के विकास व संरक्षण की योजनाओं के अनुरूप व सामंजस्य में होना चाहिए।

28.6 अत्यधिक पर्यटन और नमभूमि क्षेत्र

अधिक पर्यटन नमभूमि क्षेत्रों पर अनेक प्रकार के विपरीत प्रभाव डालता है। उनमें से कुछ इस प्रकार के हैं :

देशान्तरगामी पक्षियों के संख्या में कमी – ठंड के महीनों में दूरदराज के देशों से हजारों मील की दूरी तयकर किसी नमभूमि क्षेत्र में उड़कर आना तथा तीन चार माह विश्राम कर फिर वापस अपने देश लौट आने की प्रक्रिया या आदत की सोच ही दिमाग भन्ना देती है परंतु एक बात सुनिश्चित है कि यह देशान्तरगामी परदेशी पक्षी किसी एक खास नमभूमि क्षेत्र पर आकर हर वर्ष इकट्ठे होते हैं क्योंकि उन्हें वहाँ का पर्यावरण, वातावरण दोस्ताना, सुरक्षित, शांतिपूर्ण वह सहज लगता है और उन्हें सरलता से पर्याप्त भोजन की भी उपलब्धता रहती है। अधिक पर्यटन के भार या दबाव का अर्थ है अधिक शोर, अधिक प्रदूषण। यहाँ तक कि कई असंवेदनशील, अबौद्धिक पर्यटकों द्वारा तेज आवाज में रेडियो या टेप चलाने से इन आने वाले देशगामी परदेशी विदेशी पक्षियों के आने की संख्या में कमी होती है। उदाहरण के लिए हम जानते हैं कि राजस्थान की भरतपुर झील में आने वाले सायबेरियन सारसों ने अब आना बंद कर दिया है। उसी प्रकार चिल्का झील में अनेक कारणों से कई प्रकार की जलीय जीव प्रजातियां अब हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो गई हैं

अधिक दोहन/अधिक शिकार – प्राय: प्रत्येक नमभूमि क्षेत्र में खूब मछलियां पाई जाती हैं। सबसे असहनीय व्यवहार या कार्य उन नमभूमि क्षेत्रों में नावों का उपयोग है जो मछलियों के प्रजनन क्षेत्र में किया जाता है। मोटर बोट चलाने की तेज आवाज के कारण यह मछलियां डर कर भाग जाती हैं अथवा कई बार मर भी जाती हैं।

मिट्टी का जमाव – शायद यह सबसे अधिक नुकसान पहुँचाने वाली समस्या है जिसका सामना प्रत्येक नमभूमि क्षेत्र को करना पड़ता है। पानी एकत्रित होने के क्षेत्र में मानवीय गतिविधियों से मिट्टी का जमाव होता है। जिससे नमभूमि क्षेत्र को भारी नुकसान पहुँचता है। यह मिट्टी का जमाव, नमभूमि क्षेत्र के आसपास उपलब्ध वन या छोटी-मोटी झाड़ियों वाले क्षेत्र के विनाश से होता है जिसके कारण सामान्य तौर से, वर्षा अपने साथ अधिक मिट्टी बहाकर नमभूमि क्षेत्र तक ले जाती है या फिर नमभूमि क्षेत्र के तलहटी में जमा होती जाती है जिससे नमभूमि क्षेत्र की गहराई तेजी से कम होने लगती है। इससे नमभूमि क्षेत्र की तलहटी में उपलब्ध, विद्यमान वनस्पतियां मर जाती हैं जो देशान्तरगामी पक्षियों के लिए उपयुक्त पर्याप्त भोज्य सामग्रियां होती हैं।

क्षेत्रफल का संकुचन – नमभूमि क्षेत्र के आकारों का संकुचन एक अन्य समस्या है जो प्राय: सभी नमभूमि क्षेत्रों को झेलनी पड़ती है। आमतौर पर यह देखने को मिलता है कि नमभूमि क्षेत्र के बड़े हिस्सों को घर बनाने के लिए पाट दिया जाता है। ऐसे भी प्रकरण हैं जहाँ पहले तो नमभूमि क्षेत्र के बड़े भाग झींगा मछलियों के पालन/उत्पादन के लिए अथवा पर्यटक परिसर बनाने के लिए निजी व्यक्तियों के ठेके पर दिए जाते हैं। नमभूमि के आसपास समीपस्थ भूमि क्षेत्रों में होने वाले अवैद्य अतिक्रमणों के कारण भी इन नमभूमि क्षेत्रों का क्षेत्रफल घटता जाता है। यह अतिक्रमण मछली पालन या अन्य जलीय जीवों के उत्पादन के लिए हो सकते हैं जैसा कि चिल्का झील में हुआ है। मानवीय अतिक्रमण के कारण ही श्रीनगर की प्रसिद्ध खूबसूरत डल झील अब छोटी हो गई है।

प्रदूषण – तमाम नमभूमि क्षेत्र अधिक शोरगुल तथा गैरजिम्मेदराना ढंग से फेंके गए कचरे तथा

पर्यटकों द्वार खाली पैकेट, पॉलीथिन की थैलियाँ, खाली बोतलें तथा खाने पीने के बचे सामान को लापरवाही से कहीं भी फेंक देने पर प्रदूषित होते हैं तथा प्रायः सभी नमभूमि क्षेत्रों द्वारा अनुभव किया जाने वाला प्रमुख संकटों में से एक है। नमभूमि क्षेत्रों की सीमा पर आवासीय वस्तियों से निकलने वाली गंदगी, गंदा पानी तथा ठोस नगरीय अपशिष्ट भी इन्हीं नमभूमि क्षेत्रों में विसर्जित होता है।



नमभूमि क्षेत्र पर अधिक पर्यटन का संभावित प्रभाव

आंध्र प्रदेश स्थित पुलिकट झील जो एक समय मुर्गियों के उत्पादन/प्रजनन एक प्रमुख केंद्र था उसे आज अनेक रासायनिक प्रदूषण के कारण गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया है।

उपरोक्त सूचीबद्ध समस्याएं सामने आई हैं तथा अति पर्यटन के कारण नमभूमि क्षेत्र पर पड़ने वाली भारी दबाव के कारण और विकराल हो गई हैं। हालाँकि पर्यटन को इन क्षेत्रों में पूरी तरह से प्रतिबंधित करने और पर्यटकों की संख्या नियंत्रित करने से समस्या का हल निकलने वाला नहीं। इसके विपरीत ऐसी विधियाँ ईजाद की जानी चाहिए ताकि पर्यटक पारिस्थितिकी संतुलन को असंतुलित किए बिना प्राकृतिक सौंदर्य की छटा का आनन्द उठा सके व प्रशंसा कर सके।

28.7 नमभूमि क्षेत्रों का संरक्षण

अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के नमभूमि क्षेत्रों पर प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन ईरान के रमसर शहर में पहली बार फरवरी 1971 में आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में विश्व स्तर के महत्वपूर्ण प्रमुख नमभूमि क्षेत्रों की सूची तैयार की गई थी। इस सूची में स्थान पाने वाले भारत के दो नमभूमि क्षेत्र थे : चिल्का झील, भरतपुर झील। धीरे-धीरे नमभूमि क्षेत्रों का संरक्षण, अन्य बनाई जाने वाली योजनाओं में सम्मिलित किया जाने लगा और भारत सरकार ने राष्ट्रीय नमभूमि प्रबंधन समिति का गठन किया। हालाँकि किसी भी नमभूमि क्षेत्र के द्वारा पर्यटकों को समायोजित करने की क्षमता के अन्तर्गत टिकाऊ विकास का उपयुक्त स्तर व मार्ग निर्धारित करने से ही सफलता मिल सकती है। पारिस्थितिकी तंत्र की उसके यर्थाथ सम्भव मूल्यों के संरक्षण के लिए प्रबंधन की प्रभावशीलता का आंकलन के लिए आवश्यक जानकारी तथा सांख्यिकी उपलब्ध कराने के लिए लम्बी अवधि के शोध की आवश्यकता है।

सही एवं उपयुक्त दृष्टि से नमभूमि क्षेत्र आजकल पक्षियों का अवलोकन करने के प्रमुख केंद्र हो गए हैं। इस प्रकार पर्यटकों के आकर्षण के लिए अनेक प्रकार के नमभूमि क्षेत्रों को पर्यटन आकर्षण केंद्र के रूप में विकसित करने का प्रस्ताव है। भरतपुर के समीप सरिस्का पक्षी अभ्यारण्य ने आदर्श प्रस्तुत किया है। आखिरकार किसी भी अभ्यारण्य का तबतक कोई मूल्य या महत्व नही हैं जबतक मानव प्रजाति तथा पक्षी आपस में एक दूसरे से सम्पर्क संवाद नहीं कर पाएं। हालाँकि यह अनुभव किया

जाना कहीं महत्वपूर्ण है कि पर्यटकों के आगमन की संख्या को बहुत कड़ाई से नियंत्रित करने की आवश्यकता है इसके लिए नमभूमि क्षेत्रों को तीन क्षेत्रों में बांटा जा सकता है।

- नमभूमि क्षेत्रों के आसपास मानवीय गतिविधियों के क्षेत्र
- बफर क्षेत्र (आड़ का काम करने वाला क्षेत्र)
- संरक्षण क्षेत्र, नमभूमि के मुख्य हिस्से, जहाँ किसी भी प्रकार के पर्यटन हस्तक्षेप की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

नमभूमि क्षेत्र के संरक्षण का अर्थ यह नहीं है कि नमभूमि क्षेत्रों को एक प्रतिबंधित क्षेत्रों की तरह अलग-अलग कर दिया जाए बल्कि एक महत्वपूर्ण उपयोगी संसाधन के रूप में उसका धनात्मक तरीके से उपयोग किया जाना चाहिए। एक सफल प्रबंधक अधिक जानकारियों की माँग करता है कि नमभूमि क्षेत्र वास्तव में किस तरह कार्य करते हैं ताकि टिकाऊ ढंग से उनका उपयोग मछली पालन, जल जैविक पालन, पर्यावरण की सामान्य गुणवत्ता वृद्धि, शैक्षणिक तथा शोध कार्यों के लिए किया जा सके।

पारिस्थितिकी की दृष्टि से इन विशेष क्षेत्रों को संरक्षित करने के लिए बहुत अधिक प्रयास किए जा रहे हैं। सर्वसाधारण की जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ यह स्पष्ट है कि विश्व संरक्षण रणनीति की अवधारणा में सब कुछ समाहित है।

- अनिवार्य पारिस्थितिकी प्रक्रियाओं में तथा जीवन के लिए जरूरी व्यवस्था का रखरखाव
- जैविक विविधता का अनुरक्षण
- जैव प्रजातियों तथा पारिस्थितिकी तंत्र का टिकाऊ उपयोग
- जनोन्मुखी दृष्टिकोण

तथा उपरोक्त तीनों बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप उपयुक्त पारिस्थितिकी नीतियों का निर्धारण किया जाना चाहिए।

यदि इस पारिस्थितिकी तंत्र को सुरक्षित तथा संरक्षित रखा जाना है तो इस प्रकार की विशिष्ट नीतियों को निर्धारित करना होगा। नमभूमि क्षेत्रों के संरक्षण तथा प्रबंधन का विषय भावनात्मक आधार पर नहीं होना चाहिए। और न सिर्फ विशिष्ट प्रजातियों के संरक्षण के लिए बल्कि इस पारिस्थितिकी तंत्र को यथार्थ आर्थिक, पारिस्थितिकी लाभों के लिए जाना चाहिए।

बोध प्रश्न 2

1) नीचे दिए गये नमभूमि क्षेत्रों व उनके स्थानों का उपयुक्त मिलान कीजिए।

क) कौल्लेरू	i) बिहार
ख) लोकतक	ii) महाराष्ट्र
ग) पिचोला	iii) आंध्रप्रदेश
घ) उजनी	iv) गुजरात
च) काबर	v) राजस्थान
छ) नालसरोवर	vi) मणिपुर

2) पर्यटन का नमभूमि क्षेत्रों पर पड़ने वाले प्रभाव पर एक टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

28.8 सारांश

भारत की धनी तथा भौगोलिक विविधता ने हमें दुनिया के कुछ बेहतरीन नमभूमि क्षेत्र दिए हैं। भरतपुर, चिल्का तथा चिल्का झील पारिस्थितिकी दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटकों के लिए गहरे आकर्षण के केंद्र हैं। इसलिए पर्यटन के इस प्रकार के विकास पर जोर होना चाहिए ताकि परिवर्तन की दृष्टि से महत्वपूर्ण इन क्षेत्रों को वांछित संरक्षण भी मिले और पर्याप्त प्रचार/प्रसार भी।

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप पौधों तथा प्राणी जगत को टिकाऊ बनाने के लिए तथा महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी संबंधी कार्य करने की दृष्टि से नमभूमि क्षेत्रों के अर्थ, कार्य व महत्व को समझ गए होंगे। पर्यटन के लिए उनके महत्व पर इस इकाई में प्रकाश डाला गया है। बढ़ता हुआ पर्यटन इन नमभूमि क्षेत्रों पर अनेकों प्रकार के खतरे और समस्या पैदा करता है। इन सबसे नमभूमि क्षेत्रों द्वारा प्रेषित अनेक महत्वपूर्ण वनस्पतियां तथा जैविक प्रजातियां लुप्त हो सकती हैं। अब तक आप हमारे नमभूमि क्षेत्रों द्वारा संभावित विकट संकटों से अवगत हो चुके होंगे। आवश्यकता है नमभूमि क्षेत्रों को उनकी समस्त अनिवार्य विशेषताओं को यथावत जीवित रखते हुए उनके संरक्षण के लिए विभिन्न उपायों को विकसित करने की।

28.9 शब्दावली

ईकोटोन : दो प्राकृतिक निवास स्थल के बीच का स्थान जहाँ विभिन्न प्राणी प्रजाति विचरण कर सकें अर्थात दो भिन्न-भिन्न पारिस्थितिकी तंत्र जहाँ एक स्थान से दूसरे स्थान पर अलग होते हैं।

दलदल : निचला दलदली क्षेत्र

हिन्टरलैंड : समुद्री किनारों के समीपस्थ शहरी क्षेत्र

मैनग्रोव : वे समसीतोष्ण क्षेत्र जो दलदली किनारों पर विकसित होते हैं।

जैटी : वह मानव निर्मित अस्थाई या स्थाई निर्माण कार्य जिसके सहारे नदी, तलाब या नमभूमि क्षेत्र या समुद्र में नौकाचालन या नौका विहार की जाती है।

मिट्टी का जमाव : पानी के कारण पैदा होने वाला कीचड़

28.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 28.2
2) क) स्पेन
   ख) ग्रीस
3) देखिए उपभाग 28.2.2

बोध प्रश्न 2

क) iii)
ख) vi)
ग) v)
घ) ii)
च) i)
छ) iv)

2) देखिए भाग 28.5
3) देखिए भाग 28.7

इकाई 29 द्वीप एवं समुद्री तट

इकाई की रूपरेखा

29.0 उद्देश्य
29.1 प्रस्तावना
29.2 पर्यटन और पर्यावरण
29.3 द्वीपों तथा समुद्री तटों का महत्व
29.4 द्वीपों का वर्गीकरण तथा निर्माण प्रक्रिया
29.5 द्वीप : भौगोलिक वितरण
29.5.1 अंडमान तथा निकोबार द्वीप-समूह
29.5.2 लक्षद्वीप-समूह
29.6 समुद्री तट एवं उनकी निर्माण प्रक्रिया
29.7 समुद्री तट एवं उनका भौगोलिक वितरण
29.7.1 पश्चिमी घाट के समुद्री तट
29.7.2 पूर्वी किनारे के समुद्री तट
29.8 पर्यावरण को खतरा
29.8.1 पर्यटकों द्वारा फैलाया गया प्रदूषण
29.8.2 अधिसंरचना के कारण ह्रास
29.9 समस्या का निराकरण
29.10 सारांश
29.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

29.0 उद्देश्य

पर्यटन आज दुनिया का सबसे बड़ा और तेजी से विकसित हो रहा व्यवसाय है और आज इसने उद्योग का दर्जा प्राप्त कर लिया है। पर्यटन उद्योग में 5000 लाख से अधिक अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों से लगभग 3000 लाख अमरीकी डॉलर की आय होती है। इस शताब्दी के अंत तक अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या 6000 तथा आय 5300 लाख अमेरीकी डॉलर पहुँचने की संभावना है जिसके कारण यह धुआँ रहित उद्योग इस भारी आवागमन के बढ़ते दबाव के भार से छूट रहा है। इस परिदृश्य में पर्यटन और पर्यावरण के अंतरसंबंधों की सूक्ष्म तीखी विवेचना व परीक्षण की आवश्यकता है। इस इकाई का उद्देश्य है कि आप :

- पर्यटन उद्योग में द्वीपों तथा समुद्री तटों के तुलनात्मक महत्व को समझ सकें,
- अनियंत्रित पर्यटन से द्वीपों तथा समुद्री तटों के पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को जान सकें, और
- द्वीपों तथा समुद्री तटों के पर्यावरण पर आए संकटों से उन्हें संरक्षित व उन्हें बचाए रखने की आवश्यकता से उसके लिए किए जाने वाले प्रयासों से अवगत हो सकें।

29.1 प्रस्तावना

समुद्री और जमीनी क्षेत्रों के मिलन स्थल पर स्थित ये द्वीप तथा समुद्री तट पर्यटन के प्रसार तथा पर्यटन उद्योग के विकास को प्रोत्साहित करते हैं। इस इकाई में पर्यावरण की दृष्टि से द्वीपों और समुद्री तटों पर और प्रकृति में मनुष्य के हस्तक्षेप के रूप में पर्यटन पर विचार किया गया है। द्वीपों तथा समुद्री तटों का इस इकाई में अलग से वर्णन किया गया है। इसमें द्वीपों को पहले लिया गया है

और उन्हें अलग-अलग वर्गों में वर्गीकृत किया गया है। इसके बारे में आपको देश के दो प्रमुख द्वीप समूह क्रमशः अंडमान निकोबार तथा लक्ष्य द्वीप के बारे में बताया गया है।

उसी प्रकार यह इकाई समुद्री तटों को भी पारिभाषित करती है तथा उन प्रक्रियाओं की भी चर्चा की गई है जिससे इनका निर्माण होता है। उसके बाद इस इकाई में भारत की पश्चिमी तथा पूर्वी सीमा पर स्थित समुद्र तटों पर भौगोलिक दृष्टि से वितरित समुद्र तटों की विनिर्दिष्ट विशेषताओं को भी बतलाया गया है। अन्ततः यह इकाई यह भी बतलाती है कि समुद्र तट तथा द्वीप किस तरह से पर्यटन को प्रभावित करते हैं तथा उन स्थितियों में सुधार लाने के उपाय भी सुझाते हैं।

29.2 पर्यटन और पर्यावरण

पर्यावरण और पर्यटन परस्पर एक दूसरे से संबंधित हैं। इसमें पर्यटन के लिए एक अच्छे पर्यावरण की आवश्यकता होती है। इसमें सामाजिक-आर्थिक परिवेश भी शामिल होता है क्योंकि आर्थिक वातावरण तो निश्चित रूप से एक नियंत्रित, अनुशासनात्मक तथा नियमित पर्यटन से ही संभव है। पर्यावरण के स्तर में गिरावट के परिणाम से पर्यटन में कमी हो सकती है जबकि अनियंत्रित पर्यटन का परिणाम पर्यावरण का ह्रास व स्तरहीनता है। इस पाठ्यक्रम के खंड 5 में इसी विषय का विशेष तौर से विवेचन किया गया है। जैव भौगोलिक में समस्त भौतिक, रसायनिक तथा जैविक स्थितियां जो किसी भी जीव द्वारा अनुभव की जाती है उसके अन्तर्गत मौसम, मिट्टी, पानी, प्रकाश, सम्रीपस्थ वनस्पतियां, व्यक्ति तथा अन्य प्रजातियों के प्राणी ही मिलकर सम्पूर्ण पर्यावरण बनाते हैं। पर्यावरण गतिशील भी होता है। पर्यावरण स्थितियां, दिन मौसम ऋतुओं तथा अन्य कारकों की दृष्टि से अलग-अलग समय पर भिन्न-भिन्न भी होती हैं। स्थितियों को सरल बनाने तथा पर्यटन के संदर्भ में पर्यावरण के दो प्रमुख अवयवों पर मुख्य रूप से हम केंद्रित रहेंगे। प्रथमतः भौतिक पर्यावरण तथा दूसरा सामाजिक परिवेश। मूल चर्चा पर वापस आते हुए कोई भी यह आश्चर्य कर सकता है कि आज पर्यावरण के स्तर के गिरावट पर इतनी चीख चिल्लाहट क्यों हो रही है? पर्यटन तो हमेशा से ही रहा है, पर्यटन का लम्बा पुराना इतिहास है, परंतु पर्यावरण के संरक्षण की आवश्यकता व गंभीरता कभी इतनी गंभीर नहीं थी। पहले जैसे कभी नहीं हुआ वैसा अब हुआ है औद्योगीकरण, शहरीकरण, तकनीकी विकास। यह दुनिया अब वैसी नहीं रही जैसे पहले हुआ करती थी। मानव जीवन अब इस विकास और उत्थान के साथ इस दौड़ के साथ कदम ताल करते हुए अब बहुत तेज और गतिशील हो गया है। इसके अतिरिक्त परिवहन के अन्य तीव्र गति के साधनों के कारण, विकसित हो रही अति आधुनिक संचार व्यवस्था ने लोगों के यहाँ आना जाना बहुत सरल सुविधाजनक कर दिया है। इन सब कारकों का स्वाभाविक परिणाम अन्तर्राष्ट्रीय व घरेलू पर्यटन गतिविधियों में तेजी से उभरकर सामने आया है। एक ओर जहाँ विदेशी पर्यटक के लिए व्यवसाय आमोद-प्रमोद, लोग बाग तथा संस्कृति, इतिहास पुरातत्व तथा सारे विश्व की जानकारियां महत्वपूर्ण प्रभाव डालने वाले कारक होते हैं। वहीं देशी पर्यटकों के लिए आमोद-प्रमोद, लोग, संस्कृति, धार्मिक स्थल, इतिहास व पुरातत्व सबसे महत्वपूर्ण कारक होते हैं। पर्यटन स्थल तथा यात्रा के स्थान अलग-अलग होते हैं जिससे पहाड़, नदियां, घाटियां ऐतिहासिक स्मारक, मरुस्थल, मंदिर, चर्च, द्वीप तथा समुद्री तट सब कुछ सम्मिलित हैं। इस इकाई में हम विभिन्न प्रकार के द्वीप तथा समुद्री तटों से आपको परिचित कराएंगे।

29.3 द्वीपों तथा समुद्री तटों का महत्व

भारत में जब भौगोलिक दृष्टि से इतनी अधिक विविधता है, वहाँ पर्यटन के माध्यम से पर्यटकों को देने के लिए बहुत कुछ है। बर्फ में फिसलने के खेल के लिए हिमालय पर्वत सर्वथा उपयुक्त है, स्केटिंग, लम्बी दूरी तक पैदल चलना, पदचालन, भारत के सुंदर कलात्मक भव्य मंदिर, किले, महल, मूर्तिकला, चित्रकारी, स्मारक, तथा पुरातत्वीय अवशेष 3000 वर्षों से भी अधिक प्राचीन हैं। खजुराहो के मंदिर, सांची स्तूप, अजंता तथा एलौरा की गुफाएं, आगरा और दिल्ली में उपलब्ध भव्य, विरासत महत्व के लिए और इसके अलावा, और भी बहुत कुछ अनेक लोगों के लिए उपयुक्त आकर्षण है, विशेषकर जिन्हें इतिहास और पुरातत्व में विशेष रुचि है। वन्य प्राणी जीवन में रुचि रखने वालों के लिए अनेक राष्ट्रीय वन्योद्यान तथा अभ्यारण्य हैं। उसी प्रकार द्वीपों तथा समुद्री तटों के क्षेत्र में भी भारत बहुत

धनी है। ठंडे प्रदेशों के विदेशी पर्यटकों को उजली धूप तथा गुनगुने पानी वाले समुद्री तटों की उपलब्धता, आधुनिक पर्यटन का एक बहुत बड़ा तथा महत्वपूर्ण हिस्सा है। अमेरिकी तथा यूरोपी देशों के शौकीन पर्यटकों के मनोरंजन तथा आमोद-प्रमोद की सीमा जहाँ एक ओर भूमध्य सागर तथा कैरेबियन समुद्र के तटों पर आकर समाप्त हो जाती है। अब एशिया तथा प्रशांत समुद्र के तटों की ओर बढ़ रही है। इस दिशा में भारत की एक बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका है। अरब सागर के किनारे के समुद्री तट नहाने तथा जलक्रीड़ा के रोमांचक खेलों तथा सेलिंग तथा सफिंग के लिए पूर्णत: उपयुक्त हैं। पश्चिमी भारत में पुरी-कोणार्क के क्षेत्र सफेद साफ रेतीले तट तथा गुनगुना मौसम बर्फीले यूरोप से लाखों की संख्या में पर्यटकों को आकर्षित कर सकता है। पानी के अंदर और नीचे खेले जाने वाले रोमांचक खेलों के लिए अंडमान तथा लक्षद्वीप के द्वीप समूह आदर्श हैं। प्राकृतिक विज्ञानियों और फोटोग्राफरों के लिए पानी के अंदर का जीवन काफी आकर्षक होता है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि रेत, समुद्र, फेन, पानी और वायु सब मिलकर समुद्री तट को आकर्षक बना देते हैं। यह उन भारतवासियों को और भी आकर्षक लगेगा जिन्होंने कभी समुद्र देखा हो। जहाँ तक देशी पर्यटकों का प्रश्न है, सर्वेक्षण के अनुसार समुद्री तटों का उनमें सबसे अधिक आकर्षण है। इसके बाद आते हैं मंदिर, धार्मिक स्थान, ऐतिहासिक जगहें, पहाड़ी इलाके, प्रसिद्ध शहर, वन्य प्राणी इत्यादि। इस प्रकार द्वीपों और समुद्री तटों का विदेशियों के साथ देशी पर्यटकों के लिए भी एक विशिष्ट महत्व व आकर्षण है।

29.4 द्वीप का वर्गीकरण तथा निर्माण प्रक्रिया

द्वीपों अथवा समुद्री तटों के भौगोलिक वितरण के संबंध में चर्चा करने से पहले हम उसकी परिभाषा तथा उनके अस्तित्व के लिए आवश्यक स्थितियों से परिचित हो जाएं। द्वीप प्राय: भूमि के वे टूकड़े होते हैं जो चारों और पानी से घिरे रहते हैं। यहाँ समुद्र अपने आप में अकेले या फिर समूहों में पाए जाते हैं। छोटे द्वीपों का स्थानीय महत्व होता है तथा वे झीलों या नदियों में मिल सकते हैं, नीचे दिए गए चित्र में द्वीपों का वर्गीकरण तथा उनके बनने की प्रक्रिया दर्शायी गई है।

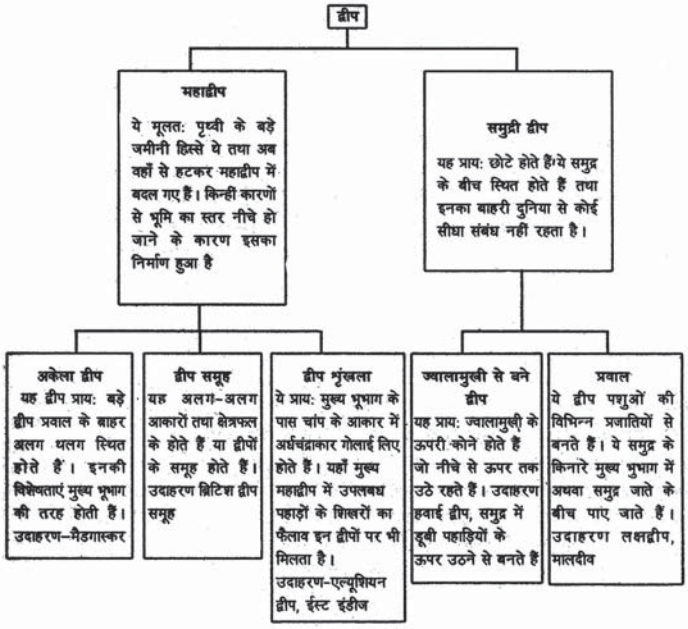

29.5 द्वीप : भौगोलिक वितरण

सबसे पहले यहाँ बता देने की आवश्यकता है कि हम अपनी चर्चा सिर्फ उन द्वीप समूहों तक सीमित रख रहे हैं जो पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस प्रकार हमारी सूची में भारतीय द्वीप समूहों में मात्र दो द्वीप समूह आते हैं और वे हैं लक्ष्य द्वीप समूह तथा अंडमान निकोबार द्वीप समूह।

29.5.1 अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह

बंगाल की खाड़ी में फैला यह द्वीप समूह छोटे बड़े लगभग द्वीपों 300 द्वीपों का समूह है। इनमें से अधिकांश द्वीप (लगभग 265) पूर्णत: निर्जन हैं। वे या तो आकार में बहुत छोटे हैं या फिर वहाँ पेय जल का अभाव है। अंडमान तथा निकोबार दो बड़े द्वीप समूह जो कभी बड़े महाद्वीप के हिस्से थे, आज एक दूसरे से 10 डिग्री की दूरी पर अलग-अलग स्थित हैं। भूगर्भशास्त्रीय अध्ययन के आधार पर यह द्वीप समूह दक्षिण पूर्व एशिया के मूल भूगर्भ के ही हिस्से हैं जिसमें आज उत्तर पश्चिमी भारत, बर्मा, थाइलैंड, मलेशिया तथा इन्डोनेशिया स्थित है। यद्यपि अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह की आबोहवा समशीतोष्ण है परंतु आसपास लगे समुद्र से लगातार आनेवाली ठंडी हवाओं के झोंकों से यह मौसम बड़ा सुहावना रहता है।

अंडमान द्वीप समूह के उत्तरी छोर पर लैंडफिल द्वीप है। उसके बाद तीन बड़े अन्य द्वीप हैं--उत्तरी अंडमान, मध्य अंडमान तथा दक्षिणी अंडमान। यह तीनों द्वीप एक दूसरे से बीच में उथले समुद्र से अलग-अलग हैं। निकोबार द्वीप समूह में महत्वपूर्ण द्वीप हैं – ग्रेट निकोबार, कार निकोबार चौवरा ट्रैरसा, ननकाउनी, कटचल तथा लिटिल निकोबार। इन द्वीपों की अर्थव्यवस्था मुख्यत: लकड़ी पर आधारित उद्योगों पर टिकी हुई है। इसके अतिरिक्त मछली पालन, पर्यटन तथा पानी के जहाजों के निर्माण का उद्योग भी महत्वपूर्ण है। खेती योग्य छोटे इलाकों में चावल, नारियल तथा सुपारी की पैदावार होती है। अन्य प्रमुख फसलें हैं गन्ना, फल सब्जियाँ आदि। गरम मसाले तथा रबर की पैदावार के भी प्रायस किए जा रहे हैं।

यद्यपि यहाँ यात्रा करना प्रतिबंधित है परंतु पर्यटन के लिए यह द्वीप खुले हुए हैं तथा यहाँ के सुंदर, शांत, निर्जन समुद्री तट तथा प्रवालों की तहें पर्यटकों के लिए गहरे आकर्षण तथा आनन्द के स्थान हैं। अंडमान निकोबार की राजधानी पोर्ट ब्लेयर में सेल्यूलर जेल तथा नृतत्व संग्रहालय पर्यटन आकर्षण के प्रमुख केंद्र हैं।

इसके अतिरिक्त वहाँ मैरिन म्यूजियम, प्राणी उद्यान, हैरिट पर्वत, चिड़िया टापू, वान्डर समुद्री तट, वायपर द्वीप तथा दिलथामन जलाशय भी दर्शनीय स्थलों के रूप में उल्लेखनीय हैं। 1992 में भारत सरकार ने यह द्वीप विदेशी पर्यटकों के लिए भी खोलने का निर्णय लिया है।

इन द्वीप समूहों और देश के कुछ प्रमुख शहरों के बीच सीधी वायु सेवा उपलब्ध है। इंडियन एयरलाइन्स, दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास के पोर्ट ब्लेयर हवाई सेवा चलाती है। पोर्ट ब्लेयर तक पहुँचने के लिए कलकत्ता. मद्रास तथा विशाखापट्टनम से जहाजरानी सेवा भी उपलब्ध है।

29.5.2 लक्षद्वीप समूह

यह भारत की सबसे छोटी केंद्र प्रशासित इकाई है। लक्षद्वीप, छोटे-छोटे द्वीपों की अर्धचंद्राकर चांप है जिसमें 12 द्वीप, 3 प्रवाल द्वीप तथा 5 पानी में डुबे समुद्री किनारे हैं। 32 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैले 36 द्वीपों में सिर्फ 19 द्वीपों पर मानव बस्तियाँ हैं। ये सब प्रवाल द्वीप हैं। इन द्वीपों में रहने वालों की अपनी एक खास जीवन शैली तथा आजीविका के अलग-अलग धंधे हैं जिनमें मुख्यत: नारियल की खेती, नारियल की रस्सी बनाना तथा मछली पालन है। आज भी इन द्वीपों में रोजमर्रा के काम में आने वाली चीजें यहाँ बनाई या उगाई नहीं जाती हैं। काम की सभी चीजें यहाँ बाहर से लाई जाती हैं।

निकोबार द्वीप समूह के चेरियन, सुहेली, वलियाकारा तथा टिकारा द्वीप अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन के लिए चुने गए हैं। इन द्वीपों पर पर्यटन का एकमात्र बड़ा आकर्षण जलक्रीड़ा है क्योंकि यहाँ प्रत्येक द्वीप प्रणाली की ऊँची-ऊँची दीवारों से घिरा हुआ तथा बीच के शुद्ध साफ ठहरा हुआ पानी जलक्रीड़ा

विशेषकर स्नोरकेलिंग तथा विन्डसर्फिंग के लिए सबसे अधिक उपयुक्त हैं। पर्यटकों के लिए खोले गए इन पाँच द्वीपों में काटेजों में रहने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है।

बोध प्रश्न 1

1) विश्व में विभिन्न प्रकार के पाए जाने वाले द्वीपों पर एक टिप्पणी लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूहों के बारे में एक टिप्पणी लिखें तथा इन द्वीपों पर पर्यटकों के लिए क्या-क्या और कौन-कौन से प्रमुख पर्यटन आकर्षण हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

29.6 समुद्री तट एवं उनकी निर्माण प्रक्रिया

समुद्री तट समुद्र के किनारे पर पदार्थों का प्राकृतिक जमाव है; सामान्यत: यह वह हिस्सा है जहाँ समुद्र के किनारे आने वाली लहरें, जमीनी हिस्से पर अधिकतम दूरी तक जाती है तथा लौटकर उस बिन्दु तक वापस आती है जहाँ आकर वे समुद्र में पुन: मिल जाती हैं। समुद्र के किनारों पर यह जमावट समुद्र की तटीय विशेषता है और यह समुद्र के क्रियात्मक, निर्माणात्मक कार्यों का एक प्रमुख परिणाम है। समुद्र की लहरों के माध्यम से साथ बहाकर आने वाले पदार्थों में ज्यादातर रेत तथा पत्थरों के छोटे-छोटे टुकड़े, सीपियाँ तथा छोटे समुद्री जीव होते हैं जो जमीन से टूटकर मिट्टी से निकलकर बह जाते हैं और लहरों के माध्यम से समुद्र के किनारे-किनारे एक खास तरीके से बिखर और छितरा जाते हैं।

क) दूर से तेजी से आने वाली समुद्री लहरें जो समुद्री तटों के समानान्तर आती हैं वे किनारे की मिट्टी, पत्थर आदि हल्के पदार्थ हवा की दिशा में दूर तक ले जाती हैं।

ख) इसके बाद लौटती हुई लहरें, किनारों पर समुद्र की तलहटी की मिट्टी उखाड़ देती है और फिर किनारे की ओर आने वाली लहरें उसे दूर-दूर तक बिछा देती हैं। इस प्रकार छोटी वस्तुएं यथा मिट्टी और बारीक महीन रेत किनारों पर ही इकट्ठी हो जाती हैं।

लहरों के इस प्रकार नियमित रूप से तेजी से आने जाने के कारण किनारे पर इकट्ठा हुए पदार्थ यथा छोटे-छोटे पत्थर, सीप, घोंघे तथा रेत के बारीक टुकड़े लहरों के साथ दूर-दूर तक व्यवस्थित रूप से बिछ जातें हैं तथा लौटती हुई लहरों के साथ पास वाले किनारे पर जमा हो जाते हैं। सीधी सपाट निचली भूमि पर यह समुद्री तट मीलों की लम्बाई में बन जाते है जैसा कि पश्चिमी मलेशिया में हुआ है और इसके विपरीत ऊँची उबड़-खाबड़ असमान पथरीली जमीन जो अचानक नीची होकर समुद्र में

घुस जाती है वहाँ समुद्री तट छोटे बनते हैं तथा ऐसी प्राकृतिक भौगोलिक दशा में लम्बी दूरी तक फैले समुद्र तट का पेरी तरह अभाव रहता है।

29.7 समुद्री तट एवं उनका भौगोलिक वितरण

भारत के दक्षिणी हिस्सों से लगी हुई सीमारेखा पर यह समुद्री तट 7500 कि.मी. से ज्यादा लम्बाई में फैले हैं। इसलिए हमें भारत की सीमाओं के पश्चिमी तथा पूर्वी समुद्री सीमाओं के किनारे-किनारे बहुत सारे समुद्री तट को देखने को मिलते हैं, हालाँकि अधिक विकसित, विशेषकर पर्यटन की दृष्टि से उपयोगी और लोकप्रिय समुद्री तट हमें पश्चिमी हिस्से में अधिक मिलते हैं क्योंकि समुद्री किनारों की सीधी रेखा तथा लहरों की गति अधिक तेज प्रवाह के साथ तथा अधिक ताकत से आती है। इसलिए पश्चिमी किनारों के समुद्री तटों पर जलक्रीड़ा एक नियमित आकर्षण और विशेषता है जबकि पूर्वी सीमा के समुद्री तट अपनी मौलिक प्राकृतिक सुंदरता के लिए अधिक सराहे जाते हैं।

29.7.1 पश्चिमी घाट के समुद्री तट

भारत की दक्षिण पश्चिम सीमा के अन्तर्गत गुजरात, महाराष्ट्र गोवा, कर्नाटक तथा केरल राज्यों की बाहरी सीमा समुद्र से लगी हुई है। महाराष्ट्र में अधिक विकसित समुद्र तट नहीं है। मुम्बई शहर के चौपाटी तथा जुहू में शहरी क्षेत्रों में चौड़े, सपाट, विस्तृत समुद्री तट हैं तथा वे अधिकांश स्थानीय शहरवासियों द्वारा ही काम में लाये जाते हैं।

- **गोवा** – यहाँ देश के सबसे बढ़िया समुद्री तट हैं। गोवा प्रदेश में समुद्री तटों पर चमकता सूरज, मीलों रेत की कतारों को सुखाता रहता है। बैगाटोर, अंजना, आगुडा, बाग्म, कालनघुटे तथा केन्डोलीन के समुद्री तट, किनारे पर खजूर के पेड़ों की लम्बी कतार फैली हुई है। अन्य समुद्री तट मीरामार और कोल्वा में हैं। इन समुद्री तटों पर पारासेलिंग, याचिंग, विंडसर्फिंग तथा गहरे समुद्र में गोताखोरी के रोमांचक खेल अधिक लोकप्रिय हैं जिनके लिए पर्याप्त सुविधा व आवश्यक व्यवस्थाएं उपलब्ध हैं। हर प्रकार की आवासीय व्यवस्था इन तटों पर भारी संख्या में भरी पड़ी हैं जिसके अन्तर्गत डीलक्स रिसॉर्ट से लेकर मध्यमवर्गीय आयवाली आवासीय व्यवस्थाएं हैं।
- **दीव** – गोवा प्रदेश का एक हिस्सा, मुख्य भूमि मार्ग से दक्षिण छोर पर स्थित एक छोटा सा द्वीप – अब यहाँ एक विदेशी औपनिवेशिक राज्य का आकर्षक एक पुराना शहर है जो सफेद रंग में पुते तथा खपरैल वाले पुराने पुर्तगाली मकानों से भरा पड़ा है। इसके अतिरिक्त यहाँ एक अलग-थलग, वीरान, शांत, निर्जन साफ फैला हुआ समुद्री तट भी है।
- **गुजरात** – गुजरात प्रदेश को भी अनेक सुंदर समुद्र तट प्राकृतिक रूप से मिले हैं। उसमें से एक है अहमदपुर मांडवी जहाँ एकमात्र मुख्य आकर्षण एक परम्परागत बीच रिसॉर्ट है। यहाँ छोटी-छोटी आवासीय कुटीरें गुजराती ग्रामीण वास्तुकला के आधार पर बनाई गई हैं जिनके सामने शांत, निर्जन लम्बे फैले समुद्री तट हैं जो पूरे राज्य में जलक्रीड़ा का प्रमुख आकर्षण केंद्र है।
- **केरल** – राज्य की राजधानी त्रिवेंद्रम से 16 कि.मी. की दूरी पर स्थित भारत का सबसे अधिक लोकप्रिय समुद्री तट कोवलम है।

29.7.2 पूर्वी किनारे के समुद्री तट

बंगाल की खाड़ी के साथ भारत की पूर्वी सीमाओं पर लम्बे समुद्री तट हैं। धूप में डूबे हुए सुनहरी रेत वाले मनभावन समुद्री तटों की छटा देखेते ही बनती है जो बेतहाशा हजारों मील की दूरी तक फैली हुई है। पूर्वी तटों के अन्तर्गत उड़ीसा, आंध्रप्रदेश तथा तमिलनाडु प्रदेश की बाहरी सीमाएं समुंद्री तटों से मिली हुई हैं।

- आंध्रप्रदेश – आंध्रप्रदेश के समुद्री तट, विशेष रूप से समुद्री किनारे तथा हरे भरे पूर्वी घाट समुद्री तट प्रेमियों के लिए पूरी तरह स्वर्ग हैं। नेपथ्य में छोटी-छोटी पहाड़ियों के साथ-साथ, छोटी-छोटी दरारों में आड़ा तिरछा घुस आया समुद्री पानी का जमाव (लमून) दिखाई देता है

जिसमें हमेशा सफेद झाग भरा रहता है। तेजी से विकसित हो रहा आधुनिक औद्योगिक शहर विशाखापट्टनम या विजाग पर्यटकों और सैलानियों को उड़ीसा के गोपालपुर के अदभुत प्राकृतिक दृश्यों का आनन्द उठाने का अवसर देता है। विशाखापट्टनम से मात्र 24 कि.मी. की दूरी पर स्थित भीमुनिपट्टनम का एक शानदार शांत समुद्री तट जहाँ नीलाभ स्वच्छ पानी और नारियल के पेड़ों की हरियाली देखते ही बनती है।

- **उड़ीसा** – इस प्रदेश की राजधानी भुवनेश्वर से 60 कि.मी. की दूरी पर स्थित पुरी का समुद्री तट है जो उस स्थान के धार्मिक महत्व के कारण फीका सा पड़ गया है। भुवनेश्वर से 85 कि मी. की दूरी पर स्थित गोपालपुर एक दूसरा शांत, सुंदर, स्वच्छ, आकर्षक समुद्री तट है।
- **तमिलनाडु** – मद्रास में स्थित मैरीना समुद्री तट दुनिया के बड़े लम्बे फैले समुद्री तटों में एक माना जाता है।

29.8 पर्यावरण को खतरा

समुद्री तटों तथा द्वीपों का पर्यावरण एक ओर मानवीय गतिविधियों तथा अतिक्रमण से और दूसरी ओर कुछ प्राकृतिक विपदाओं से खतरे में है। प्राकृतिक विपदाओं के अन्तर्गत चक्रवात अत्यधिक वर्षा, स्थानीय अशांति तथा कभी-कभी कहीं कुछ विषैले पौधों, पेड़ों, वनस्पतियों की उपस्थिति सब कुछ सम्मिलित है जिसके कारण पूरे के पूरे प्रवाल द्वीप नष्ट हो जाते हैं। मानवीय अतिक्रमण प्राय: औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, अवैध निर्माण कार्य तथा पर्यटन के कारण होते हैं। यहाँ हम मुख्यत: पर्यटन और पर्यटन उद्योग से होने वाले दुष्प्रभावों पर ही अपना ध्यान केंद्रित करेंगे। पर्यटन के कारण समुद्री तटों तथा द्वीपों का क्षरण, स्तरहीनता, ह्रास दो प्रकार का है। इन स्थानों पर अधिक पर्यटनों के आने से उत्पन्न किया गया प्रदूषण और दूसरा है अधिसंरचना के विस्तार से आने वाली गिरावट। आइए हम दोनों पक्षों को एक-एक अलग करके देखें।

29.8.1 पर्यटकों द्वारा फैलाया गया प्रदूषण

पर्यटकों द्वारा पर्यटन स्थलों पर अपने पीछे खाली बोतलें, डिब्बे, शीशियाँ, पॉलीथिन थैलियाँ, खाने पीने का बचा खुचा सामान छोड़ जाना सभी स्थानों पर अनुभव की जाने वाली समस्या है। अपनी यात्राओं का अधिक से अधिक लुत्फ उठाने के इरादे से सभी पर्यटक (देशी और विदेशी भी) अपने साथ कुछ न कुछ खाने पीने का सामान ले जाते हैं और अपना मजा खत्म हो जाने पर बची हुई भोज्य सामग्री, डिब्बे बोतलें वहीं उसी स्थान पर बेतरतीबी और लापरवाही से छोड़ जाते हैं। बचा हुआ खाना, पॉलीथीन थैलियाँ, डिब्बे, बोतलें समुद्री किनारों पर यहाँ-वहाँ बिखरी पड़ी रहती हैं इससे न सिर्फ उस सुंदर प्राकृतिक स्थान की दृश्यावली खराब होती है बल्कि वहाँ का वातावरण व पर्यावरण भी खराब होता है।

इनमें से कुछ सामग्रियों को जल्द नष्ट न किया जा सकता है (पॉलीथीन थैलियाँ कांच की बनी चीजें) इन्हें नष्ट होने में ज्यादा समय लगता है। यह सब पर्यावरण के लिए गहरा खतरा पैदा करते हैं। छोड़े गए सामानों की प्रकृति, प्रकार व संख्या अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग होती हैं। उड़ीसा में पुरी जो मूलत: धार्मिक आस्था का पवित्र स्थल है वहाँ बचा और फेंका सामान प्राय: धार्मिक आस्था का होता है। वहीं गोवा के समुद्री तटों पर छोड़ी तथा फेंकी गई सामग्री बियर की खाली बोतलें हो सकती हैं। उसी प्रकार अभी काफी समय तक मुम्बई की चौपाटी पर भेलपुरी का बचा हिस्सा यहाँ वहाँ समुद्री तट पर बिखरा दिखाई देता था। पर्यटकों तथा सैलानियों द्वारा अपने पीछे छोड़े गए कचरों तथा त्याज्य वस्तुओं के ढेर लगने से समुद्री तटों का प्रदूषण होना तथा मलमूत्र का विसर्जन भी इस देश में लगभग सभी स्थानों पर एक विशेष प्रमुख समस्या है। इस दिशा में लक्षद्वीप के प्रवाल द्वीप सबसे अधिक प्रभावित हैं। साफ सफाई और स्वच्छता की कमी तथा उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठाने के प्रति स्वभावगत आलस्य व वितृष्णा के कारण भी अनेक समुद्री तटों पर बहुत गंदगी फैल जाती है। यह कहने की जरूरत नहीं है कि साफ सुथरे समुद्र तटों से हमारे समुद्र के किनारे स्थित मछुआरों के गाँव में फैलने वाली संक्रामक बीमारियों को काफी हद तक रोका जा सकता है।

29.8.2 अधिसंरचना के कारण ह्रास

इसमें गतिविधियां भी आती हैं जिसमें मनुष्य प्रत्यक्ष रूप से भागीदार नहीं है हालाँकि मनुष्यों द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष अवरोध के वर्गीकरण को बहुत सस्ती से देखा नहीं जाना चाहिए क्योंकि इन दोनों तरीकों के अवरोधों की जड़ में मानव प्रजाति ही है। यह बड़ी संस्थागत गतिविधियां जो एक या अन्य दृष्टिकोण से पर्यटन के प्रचार प्रसार से संबंधित हैं। उदाहरण के लिए रिसार्टस, होटल, दूरसंचार तथा परिवहन के लिए लाइन बिछाने, गोल्फ मैदान विकसित करने, छोटी मोटी हस्तकलाओं तथा उपभोक्ता वस्तुओं के निर्माण के छोटे उद्योग स्थापित करने या फिर समुद्र के किनारे खाने-पीने के छोटे स्थल बनाने आदि। यह सब किसी भी प्राकृतिक स्थल को नष्ट करते हैं और संबंधित क्षेत्र की पारिस्थितिकी को भी गंभीर रूप से प्रदूषित व असंतुलित करते हैं।

- भवन तथा निर्माण संबंधी अन्य गतिविधियां फिर चाहे उनका उद्देश्य गेस्ट हाउस, रेस्तरां या फिर होटल बनाने का हो प्राय: लहरों के आने की आखिरी सीमा से 500 मीटर तक की दूरी घेर लेती है।
- इसके अतिरिक्त शासन के कड़े निर्देशों के अनुसार समुद्र तट के किनारे कोई भी भवन निर्माण, समीपस्थ लगे नारियल के पेड़ों की ऊँचाई से ज्यादा नहीं होने चाहिए। उसका भी प्राय: उल्लघंन किया जाता है। कई बार ऐसा उल्लघंन स्वयं संस्थाओं द्वारा भी किया जाता है।

यदि आपने कोवलम समुद्री तट की यात्रा की हो तो आप स्वयं इसका प्रत्यक्ष प्रमाण देख सकते हैं। कई बार निर्माण कार्यों के कारण, जमीन को खोदकर पानी निकालने का काम किया जाता है इसका पारिस्थितिकी तंत्र पर गहरा दुष्प्रभाव पड़ता है। खुदाई के स्थानों पर छोटे मोटे जीवों की हत्या तो बड़ी स्वाभाविक क्रूरता है। खुदाई के कामों से, समुद्र के किनारे जमीन के अंदर की रेत बुरी तरह अवयवस्थित हो जाती है और वह नीचे की ओर बह व सरक जाती है। इसके कारण पानी को साफ करने वाले अनेक छोटे मोटे जीव मर जाते हैं या फिर उन्हें खाने-पीने का सामान प्राप्त होने के सुराख बंद हो जाने से इन जीवों की मृत्यु हो जाती है। झींगे और घोंघों जैसे सूक्ष्म नाजुक जीवों की हालत सबसे बुरी होती है। जमीन के अंदर घुस आए समुद्री पानी तथा प्रवाल द्वीपों का लगातार विस्फोट किए जाने के कारण पारिस्थितिकी तंत्र में जबर्दस्त बदलाव आने तथा प्रवाल जीवों की सामूहिक हत्या से समुद्र तटों पर जमीन के अधिक कटने तथा प्रवाल दीवारों के नीचे मिट्टी, कीचड़ अधिक जमने का खतरा बढ़ जाता है। लक्षद्वीप तथा देश के अनेक भागों में प्रवाल दीवारों पर अनेक खुदाई की जाती है। पहले कभी एक बार जहाँ पानी के नीचे अनेक सुंदर विविध जलीय वनस्पतियों तथा जीवों के सुंदर उद्यान हुआ करते थे वे अब पूरी तरह बरबाद हो गए हैं और वाटर लगून पूरी तरह उजाड़ नजर आते हैं इससे न सिर्फ वर्तमान पर्यटन स्थलों पर बल्कि भविष्य में विकसित किए जा सकने वाले स्थानों पर भी विपरीत असर पड़ता है।

एक अन्य महत्वपूर्ण कारक जो संबंधित पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करता है वह है अंधाधुंध वनों की अवैध कटाई। वनों की कटाई का पर्यटन से बहुत पास का संबंध है। इन वनों की कटाई मुख्यत: समुद्र के किनारों पर रिसॉर्ट विकसित करने या फिर हस्तकला तथा उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन के लिए छोटे-छोटे उद्योग लगाने, परिवहन यातायात सुविधा के लिए नए मार्ग बनाने, मछली पालन केंद्र स्थापित करने, आवासीय निर्माण इत्यादि कारणों से की जाती है। इन सब कारणों से द्वीपों तथा तटों के पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी तंत्र को असंतुलित करने के लिए विकराल समस्याएं हैं। अंडमान तथा निकोबार द्वीप समुहों के हरे भरे घने जंगलों का लकड़ी के व्यापारियों द्वारा अंधाधुंध अवैध कटाई के कारण उस क्षेत्र के जंगलों को गहरा खतरा पैदा हो गया है। इसके अलावा लक्षद्वीप में कम क्षमता वाले एवरो विमानों के उतरने के लिए हवाई पट्टी के निर्माण योजना को भी अनेक पर्यावरणविदों के कोप का भोजन बनना पड़ा है। ऐसा कहा जाता है कि ऐसी हवाई पट्टी बनाने के लिए करीब एक लाख हरे भरे पेड़ों को काटना होगा। एक बड़े हिस्से से पेड़ पौधे कटने तथा जमीन के साफ समतल होने के कारण सूरज की तेज किरणों के सीधे सम्पर्क में आने से उस क्षेत्र का तापमान बढ़ने से, जमीन के अंदर पानी का स्तर नीचे गिरेगा जिसके परिणामस्वरूप नारियल के खेतों तथा पेड़ों को भी प्रभावित करेगा जिसके परिणामस्वरूप स्थानीय शहरवासियों की आर्थिक व्यवस्था प्रभावित होगी। इसी प्रकार समुद के किनारे दलदली वनों के हटाए जाने से जैसा कि आंध्रप्रदेश, कच्छ तथा पश्चिमी समुद्र तटीय

इलाकों में किया गया है, के कारण उस क्षेत्र विशेष पर पारिस्थितिकी तंत्र पर दुरगामी ऋणात्मक प्रभाव पैदा कर सकते हैं।

जलक्रीड़ा तथा रोमांचक पर्यटन से जुड़े खेल, वर्तमान उपलब्ध समस्याओं की और विकट बना देते हैं। यदि किसी स्थान विशेष पर गहरे समुद्र में गोताखोरी का खेल बहुतायत में लगातार किए जाएं तो उस स्थान विशेष पर रहने वाले समुद्री जीवों की जीवन शैली, पर्यटकों द्वारा चलाई जाने वाली तेज गति की आवाज करने वाली मोटर बोट से भी प्रभावित होती है। अंडमान निकोबार तथा लक्षद्वीप दोनों द्वीप समूह के लिए जहाँ पारिस्थितिकी तंत्र अत्यंत संवेदनशील व नाजुक है यह बात सही प्रतीत होती है। मछली मारना या रोमांचक खेलों के नाम पर भारी मात्रा में मछली पकड़ने या शिकार करने से भी समुद्रीय पारिस्थितिकी प्रभावित होती है। खेलों की बात करते समय गोल्फ के खेल के संबंध में विशेष सुरक्षा व व्यावहार किया जाना चाहिए। गोल्फ उद्योग एक लाभप्रद व्यवसाय है जो एक बहुत बड़ा पर्यटन आकर्षण है क्योंकि इसके माध्यम से बड़ी मात्रा में धनराशी प्राप्त होती है परंतु इससे क्षेत्रीय पर्यावरण पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। गोल्फ का खेल, अपने सूरज से तपे वनों तथा लम्बे हरे मैदानों के साथ पर्यटन को बढ़ावा देता है। परंतु गोल्फ के बड़े मैदान अपने बिछे हुए टर्फ में भारी मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है तथा आसपास की पेड़ों की कटाई/छटाई से उस क्षेत्र विशेष की जैव विविधता पर गहरा प्रभाव पड़ता है अत: गोवा, पुरी, कोणार्क क्षेत्रों में तथा अंडमान निकोबार द्वीपों पर गोल्फ के मैदान बनाने की योजना से इन समस्याओं का निराकरण नहीं होना है। इस कृत्रिम हरियाली को बहुत समझ-बूझकर करने की आवश्यकता है।

29.9 समस्या का निराकरण

आजकल पारिस्थितिकी पर्यटन टिकाऊ पर्यटन तथा नियंत्रित पर्यटन के बारे में बहुत कुछ कहा जा रहा है हालाँकि इन सबको सुव्यवस्थित रूप से व्यवहार में लाने के लिए अनेक उपाय सुझाए जा सकते हैं।

- सबसे पहले तो किसी पर्यटक स्थल पर आने वाले पर्यटकों की संख्या नियंत्रित की जाए। नियंत्रित पर्यटन का अर्थ यह नहीं कि सिर्फ पर्यटन स्थल को पर्यटकों के लिए पूरी तरह बंद कर दिया जाए। यह पर्यटन के व्यवसाय का एकमात्र स्वस्थ तरीका है। सेशेलस नियंत्रित पर्यटन का अच्छा उदाहरण है।
- समुद्री तटों पर द्वीपों के पर्यावरण के खतरों से निपटने के लिए कड़े नियम कायदे बनाए जाने चाहिए तथा उपलब्ध नियमों का कड़ाई से पालन करवाया जाना चाहिए। समुद्र तट से एक निश्चित सीमा पर निर्माण कार्य करने तथा भवनों की ऊँचाई निश्चित रखने संबंधी शर्तों का कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए। पर्यटन की प्रभावशाली संयोजन, परिणामोनुखी योजना निर्धारण तथा बढ़ते पर्यटकों के आवागमन को समायोजित करने के लिए विशेष मास्टर प्लान बनाए जाने चाहिए। फ्लोरिडा में मियामी समुद्र तट, स्पेन के भूमध्यसागरीय समुद्र तटों पर टोरेमॉलिनस और कॉस्टा ब्रैवा में अदूरदर्शी और गलत योजनाओं के अभाव में वहाँ के पर्यावरण पर बुरा असर पड़ता है। खंड 4 की इकाई 11 में पर्यटन के परिप्रेक्ष्य में मास्टर प्लान के महत्व व उपयोगिता के बारे में बतलाया गया है।
- कम लोकप्रिय व कम चर्चित द्वीपों व समुद्री तटों को विकसित करने का प्रयास किया जाना चाहिए ताकि अधिक चर्चित व लोकप्रिय समुद्री तटों तथा द्वीपों पर आने वाले पर्यटकों की भरी भीड़ को नए विकसित स्थानों की ओर मोड़ा जा सके। तमिलनाडु में भीमुनिपट्टनम सरीखे समुंद्री तटों पर ध्यान देने की आवश्यकता है।
- अन्तत: सब कुछ, बहुत कुछ पर्यटकों के ऊपर निर्भर है। अत: पर्यटकों इन संवेदनशील विषयों पर जागरूकता तथा गंभीरता जागृत करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

यदि यह सब प्रयास किए जाएं और पर्याप्त सावधानियाँ बरती जाएं तो शायद यह धुआँ शून्य उद्योग कहीं अधिक सार्थक परिणाम देगा तब शायद कोई अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन के क्षेत्र में 'गोल्डन होर्डस'

सरीखे किताब को नहीं पढ़ेगा जिसमें आधुनिक विदेशी पर्यटकों की तुलना ऐसे बर्बरों से की गई है जो पूर्व से चली आ रही विरासत महत्व की प्राचीन संस्कृतियों पर ऐसे ही टूट पड़े हैं जैसे कभी बर्बर जंगली जातियों ने रोम पर आक्रमण किया था।

बोध प्रश्न 2

1) पश्चिमी तथा पूर्वी समुद्री किनारों पर स्थित भारतीय समुद्री तटों पर टिप्पणी लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) समुद्री तटों तथा द्वीपों का पर्यावरण पर्यटन से कैसे प्रभावित होता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

29.10 सारांश

इस इकाई में समुद्री तटों तथा द्वीपों को पर्यावरण के अनुपूरक के रूप में देखा गया है तथा यह बताया गया है कि वे पर्यटन से किस तरह प्रभावित होते हैं। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप अच्छी तरह से समझ गए होंगे कि समुद्री तट तथा द्वीप किस तरह बनते हैं तथा भारत में वे कहां-कहां स्थित हैं। आपने जाना कि द्वीप मूलत: दो प्रकार के होते हैं महाद्वीपीय तथा समुद्रीय। महाद्वीपीय द्वीप अनेक प्रकार के द्वीपों में विभाजित होते हैं (इकाई में बना चार्ट देखें)। अंडमान तथा लक्षद्वीप समूह मुख्यत: बड़े महाद्वीपों के अलग हुए हिस्से हैं जो भारत की भौगोलिक सीमा पर निर्मित है। उसी प्रकार भारतीय प्राकृतिक भौगोलिक सीमा के पश्चिमी, दक्षिणी तथा पूर्वी सीमा पर कोई 7500 कि.मी. लम्बी समुद्री सीमा फैली हुई है। इस इकाई में आपको पश्चिमी घाटों तथा देश के दक्षिणी पूर्वी सीमा में उपलब्ध समुद्री तटों का भी वर्णन किया गया है। आप उन विभिन्न तरीकों से भी अवगत हो चुके हैं जिनके माध्यम से पर्यटन इन द्वीपों तथा समुद्री तटों पर्यावरण पर हानिकारक प्रभाव डालता है। एक ओर पर्यटकों की भारी भीड़, किसी भी स्थान की क्षमता से अधिक इकट्ठी होकर वहाँ बची हुई सामग्रियों को अनुत्तरदायी तरीकों से छोड़कर समुद्री तटों तथा द्वीपों को प्रभावित करती हैं। वहीं दूसरी ओर पर्यटन उद्योग अनावश्यक अतिनिर्माण तथा अधिसंरचना संबंधी निर्माण कार्यों के माध्यम से दूरगामी दुष्परिणाम देते हैं जिससे द्वीपों तथा समुद्री तटों का आकार बिगड़ जाता है तथा उससे वहाँ उपलब्ध पर्यावरण, जैव विविधता तथा पारिस्थितिकी तंत्र प्रभावित होता है। अन्तत: इस इकाई में उन साधनों व प्रयासों को भी सुझाया गया है जिसके माध्यम से द्वीपों तथा समुद्री तटों पर पर्यटन से पड़ने वाले दुष्प्रभावों को कम से कम किया जा सकता है।

29.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें भाग 29.4

2) देखें उपभाग 29.5.1

बोध प्रश्न 2

1) देखें भाग 29.7

2) आप अपने उत्तर में पर्यटकों के व्यवहार तथा पर्यटन उद्योग के बारे में अलग-अलग चर्चा करें तथा उनसे समुद्री तटों व द्वीपों के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों को भी बताएं। देखें भाग 29.8

इकाई 30 खेलकूद-रोमांचकारी, गोल्फ, जलक्रीड़ा जलक्रीड़ा

इकाई की रूपरेखा

30.0 उद्देश्य
30.1 प्रस्तावना
30.2 खेल
30.3 रोमांचक खेल
  30.3.1 ट्रेकिंग, पर्वतारोहण तथा रॉक क्लाइम्बिंग
  30.3.2 स्कीईंग
  30.3.3 हॉट एयर बैलूनिंग तथा ग्लाइडिंग
30.4 गोल्फ
30.5 जलक्रीड़ा
  30.5.1 नौकायान
  30.5.2 विन्ड सर्फिंग
  30.5.3 कैनोइंग
  30.5.4 रीवर रैफ्टिंग
  30.5.5 गोताखोरी
30.6 पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को रोकने के उपाय
30.7 सारांश
30.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

30.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप निम्नलिखित बातों की जानकारी प्राप्त करेंगे :

- भारत में रोमांचक खेलों, गोल्फ तथा जलक्रीड़ाओं की संभावना तथा वर्तमान स्थिति,
- पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव, और
- पर्यावरण पर पड़ने वाले निषेधात्मक प्रभाव को रोकने के लिए किए जाने वाले प्रयास।

30.1 प्रस्तावना

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पहले भी आपने देखा कि देश की विभिन्न सुंदर दृश्यावली, वनस्पतियाँ तथा जीव जन्तु, प्राणी जीवन बढ़ते पर्यटन के कारण किस तरह दुष्प्रभावित होते हैं। यह इकाई आपको विभिन्न रोमांचक खेलों से, पर्यावरण पर पड़ने वाले विभिन्न प्रकार के प्रभावों से परिचित करा रही है।

पर्यटन अब आधुनिक सभ्यता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। यह लोगों के लिए आमोद प्रमोद व मनोरंजन की गतिविधियाँ तथा सरकार के लिए नियमित राजस्व का साधन है। पर्यटन के लिए यह रोमांचक खेल उत्प्रेरक की तरह काम करते हैं जो पर्यावरण पर पड़ने वाले विपरीत प्रभावों के संबंध में समस्याओं को समझने तथा इन दुष्प्रभावों को रोकने तथा कम करने के लिए किए जाने वाले प्रयासों की उपयोगी जानकारी देती है जो वर्तमान परिस्थितियों में एक गहरी चिंता का विषय बना हुआ है।

30.2 खेल

आम बोलचाल की भाषा में, खेल वे शारीरिक क्रियाएं हैं जो मेहनत, शरीर निर्माण तथा मनोरंजन के लिए की जाती हैं। समय और स्थान के संदर्भ में खेलों के प्रचलन तथा उदय के बारे में निश्चित रूप से पता लगाया जाना बहुत कठिन है। यह वे शारीरिक क्रियाएं गतिविधियाँ हैं जो आदिमानव के लिए अपने आसपास के प्राकृतिक वातावरण में सामंजस्य बनाने के लिए और उसके अस्तित्व के लिए अति आवश्यक थीं। वे बाद में आगे चलकर खेलों के नाम से जानी जाने लगीं। शिकार करना, मछली पकड़ना आज के आधुनिक काल में रोमांचक खेलों के रूप में माने जाते हैं परंतु भूर्व में इनका व्यवहार, उपयोग या कार्यान्वयन जीवन यापन के लिए किया जाता था। अब यह अनुमान लगाने का विषय है कि कब ये गतिविधियाँ या शौक खेल माने जाने लगे। परंतु आज भी दुनिया की अनेक प्रजातियां इन गतिविधियों को अपनी रोजमर्रा की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए करती है। सभ्यता के विकास के साथ मानव जाति अपने मनोरंजन, आमोद-प्रमोद तथा शारीरिक परिश्रम के लिए अनेक विधियों का आविष्कार कर लिया और इस प्रकार अनेक प्रकार के खेल अस्तित्व में आए। आधुनिक काल में सैंकड़ों प्रकार के खेल सारी दुनिया में अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग तरीकों से खेले जाते हैं। इस इकाई में हम उनमें से मात्र तीन प्रकार के खेलों पर अपनी चर्चा केंद्रित करेंगे : रोमांचक खेल, जल क्रीड़ाएं।

30.3 रोमांचक खेल

हम यह बता दें कि प्रारंभ में ही हमने जलक्रीड़ा तथा रोमांचक पर्यटन को अलग-अलग वर्ग में रखा है परंतु पानी में खेले जाने वाले ऐसे खेल हैं जो रोमांचक खेल की श्रेणी में आते हैं जिनका हम विस्तार से वर्णन जलक्रीड़ा के वर्ग में करेंगे।

रोमांचक खेल प्राय: घर के बाहर मैदान में खेले जाते हैं। भारत की भौगोलिक विविधता के कारण बाहर खेले जाने वाले रोमांचक खेलों के लिए उपयुक्त मैदान तथा उचित वातावरण उपलब्ध है। भारतवर्ष की नैसर्गिक तथा कृत्रिम दृश्यावलियां ट्रेकिंग, पर्वतारोहण, रॉक क्लाइम्बिंग, स्कीईंग, हाट एयर बैलूनिंग के लिए सर्वथा पूर्णत: उपयुक्त हैं। रोमांचक खेलों में रुचि रखने वाले विदेशी, अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए बाहरी मैदानों में विविध रोमांच की उपलब्धता के कारण ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सस्ती दरों पर उक्त उपलब्धता भी आकर्षण का एक प्रमुख कारण है।

30.3.1 ट्रैकिंग, पर्वतारोहण तथा रॉक क्लाइम्बिंग

भारतवर्ष अपनी विविध भौगोलिक प्राकृतिक स्थितियों के कारण ट्रेकिंग, पर्वतारोहण तथा रॉक क्लाइम्बिंग के लिए जम्मू काश्मीर से लेकर पश्चिम बंगाल तक लगभग सभी राज्यों में पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। गर्मी के महीनों में भारत के उत्तरी प्रदेशों के जम्मू काश्मीर, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश तथा सिक्किम के राज्यों के पहाड़ी इलाकों में जो सबके सब हिमालय की तराई पर स्थित हैं, पर्यटकों का ध्यान अधिक आकर्षित होता है तथा इन पर्यटन स्थलों पर अच्छी खासी भीड़ भी होती है। यह प्रदेश ट्रेकिंग की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध कराते हैं। इन प्रदेशों में ट्रैकिंग तथा पर्वतारोहण के लिए उपयुक्त मौसम जुलाई से लेकर अक्टूबर के मध्य रहता है तथा इसमें भी अगस्त तथा सितंबर के महीने सर्वथा अनुकूल होते हैं। सामान्यत: इन प्रदेशों में पहाड़ों की ऊँचाई समुद्र तल से 9,000 से लेकर 14,500 है। परंतु ट्रैकिंग मार्गों के दौरान बीच में पड़ने वाले कुछ कठिन समुद्र तल से 18,000 फीट या उससे भी कुछ अधिक ऊँचाई पर स्थित हैं। भारत के लगभग सभी प्रमुख तथा लोकप्रिय ट्रैकिंग मार्ग, भारत की राजनैतिक व भौगोलिक सरहदी सीमाओं के काफी नजदीक हैं। कुछ स्थितियों में यदि ट्रैकिंग करने वाले रोमांचक पर्यटन या सैलानी, भारत की भौगोलिक सीमा को पार करना चाहते हैं तो उन्हें इसकी पूर्व अनुमति प्राप्त करनी पड़ती है।

लद्दाख के दूरस्थ, ऊबड़ खाबड़, पथरीले तथा दूरूह बीहड़ इलाकों में तथा जम्मू की शिवालिक पहाड़ों के पहाड़ी इलाकों में काश्मीर राज्य का पर्यटन विभाग ट्रैकिंग तथा पर्वतारोहण करने के लिए शौकीन

खेलकूद-रोमांचकारी, गोल्फ, जलक्रीड़ा

रोमांच पसंद पर्यटकों के लिए अनेक अच्छे अवसर व सुविधा उपलब्ध कराता है। तुलनात्मक रूप से मीलों लम्बे फैले चीड़ के मैदान, कलकल करते पहाड़ी झरने, जो बीच-बीच में पहाड़ों की ओट में ओझल हो जाते हैं और थोड़ी देर बाद फिर अल्हड़ता से बहते दिखाई देने लगते हैं तथा थोड़ी दूरी पर बर्फों से ढकी श्वेत चोटियां ट्रैकिंग करने वालों के लिए कहीं अधिक आत्मीय तथा प्राकृतिक सौंदर्य की विविधता के साथ कहीं अधिक मनोहर तथा रोचक अवसर प्रदान करती हैं। जम्मू काश्मीर राज्य के कुछ प्रमुख तथा अधिक लोकप्रिय ट्रैकिंग मार्ग निम्नानुसार हैं : पहलगाम से श्रीनगर, लेह से लामायूरू, वानलूरसी, तास्ला-माग्यूर तथा सपसोल होते हुए वापस लेह तक। किश्तवार से श्रीनगर तक, तथा डोडा से होते हुए माहेरवाह, जय, कंसार, गांधो, किल्होटान, कांतिधर, कांति. मालपडरी तथा मीजा होते हुए वापस डोडा तक।

पश्चिम बंगाल में सर्वाधिक लोकप्रिय ट्रैकिंग मार्ग दार्जीलिंग से प्रारंभ होकर मान्यभंजांग, टोंग्ल्यू और संदाक्फू से होता हुआ निकलता है। 115 कि.मी. लम्बे इस पूरे ट्रैकिंग मार्ग में बर्फ से अच्छादित कंचनजंघा पर्वत की श्रेणियां तथा नेपाल, सिक्किम और भूटान देशों में उपलब्ध हिमालय पर्वत की विभिन्न ऊँचाई की चोटियों के दर्शन होते हैं।

जम्मू काश्मीर में अनुभव की जाने वाली स्थितियों के विपरीत पश्चिम बंगाल में ट्रैकिंग की स्थितियां कहीं अधिक सहज तथा पर्याप्त सुविधायुक्त हैं। पश्चिम बंगाल में ट्रैकिंग के लिए अप्रैल से मई तक तथा अक्टूबर से नवम्बर तक के महीने अधिक उपयुक्त हैं। रोमांचक प्रवृति वाले तथा रोमांचक खेलों में रुचि रखने वाले इच्छुक व्यक्तियों के लिए दार्जीलिंग स्थित हिमालयन माउन्टेनियरिंग इंस्टीच्यूट में ट्रैकिंग, माउन्टेनियरिंग तथा पर्वतारोहण के लिए विभिन्न अवधि के प्रशिक्षण सत्र चलता है।

हिमाचल प्रदेश के ट्रैकिंग मार्गों पर जैव वैज्ञानिकों को इस क्षेत्र की विविध तथा विशेष वनस्पतियां तथा जैव विविधता का अध्ययन करने के लिए तथा फोटोग्राफर्स को पहाड़ों की हरीतिमा तथा उसके आंचल में बसी पहाड़ी जनजातियों की जीवन शैली के अद्भुत रोचक चित्रों को उतारने का भरपूर अवसर मिलता है। इस प्रदेश में ट्रैकिंग के लिए उपयुक्त समय अप्रैल से जून के मध्य तक का है तथा इस क्षेत्र के प्रमुख और लोकप्रिय रोचक ट्रैकिंग मार्ग हैं : कुल्लू-मनाली, लाहौल स्पिति, चम्बा-कांगरा और शिमला किन्नौर।

सिक्किम प्रदेश में शायद ही एक गज जमीन भी सीधी, सपाट, समतल मिले यहाँ पर जमीन की समुद्र तल से ऊँचाई 244 मीटर से प्रारंभ होकर कंचनजंघा पर्वत की 8535 मीटर की ऊँचाइयों तक पहुँचती हैं। सिक्किम राज्य का पर्यटन विभाग, पश्चिमी सिक्किम के इलाके में दस दिनों की अवधि का ट्रैकिंग पैकेज आयोजित करता है जो पेमायंगस्ते से प्रारंभ होता है जहाँ सिक्किम का एक पुराना पवित्र बौहर मठ है। प्रदेश के कुछ महत्वपूर्ण ट्रैकिंग मार्ग इस प्रकार हैं। पेमायांगस्ते से जोगरी तक, पेमायांगस्ते से गंगटौक तक, नया बाजार से पेमायांगस्ते तक।

उत्तर प्रदेश में ट्रैकिंग के रास्ते प्राय: भव्य ऊँची भव्य पहाड़ियों की छांव, बर्फीले ग्लेशियर, विशेष प्रकार के फूलों से अच्छादित कंच हरी घाटियां, गुढ़ वन, आलौकिक नीली झीलें, इठलाते पहाड़ी झरने, चित्ताकर्षक गांव और मित्रवत पहाड़ी बस्तियों के बीच से होकर गुजरते हैं जबकि पश्चिम बंगाल तथा जम्मू काश्मीर के ट्रैकिंग मार्ग बड़ी आसानी से ट्रैकिंग करने वालों की रोमांचक प्रवृत्ति को प्रकृति के अथाह विस्तृत सौंदर्य के बीच तृप्त करते हैं। परंतु उत्तर प्रदेश में ऐसी दो यात्रा में प्राकृतिक सौंदर्य तथा धार्मिक आस्था का सुंदर संगम होता है। कभी पहुँचे न जा सकने वाले प्रसिद्ध धार्मिक स्थल केदारनाथ, बदरीनाथ, यमुनोत्री तथा गंगोत्री आज अच्छे बस मार्गों से जुड़ गए हैं जो ट्रैकिंग करने वालों के लिए सहायक हो गए हैं। कोई भी शौकीन ट्रैकर कुमायूँ की पहाड़ियों के ढलान, शिवालिक पहाड़ियों, अल्मोड़ा, रानीखेत तथा कौसानी की वादियों में ट्रैकिंग कर आता विभोर हो सकता है। पर्वतारोहण करने वालों के लिए सम्पूर्ण गंगोत्री क्षेत्र में कुछ अति आकर्षक, सुंदर तथा चुनौती भरे शिवलिंग मेरू, केदारनाथ, भगीरथ, बुंदेरपंच की चोटियां हैं जिसमें जंगली फूलों से भरे स्वर्गिक मैदान भी पड़ते हैं। उत्तर प्रदेश में उत्तर काशी की बीहड़ पहाड़ी इलाका पहाड़ों पर चढ़ने वालों के लिए सर्वथा उपयुक्त है। पहाड़ों पर चढ़ने वाले शौकिया तथा नौसिखिया पर्वतारोहियों के लिए मसूरी के आसपास का इलाका अनेक अलग अलग कम और ज्यादा ऊँचाई की पहाड़ी चोटियां उपलब्ध कराता

है। उत्तर काशी स्थित नेहरू माउन्टेनियरिंग संस्थान इच्छुक पर्वतारोहियों को पर्याप्त प्रशिक्षण तथा पर्वतारोहण के लिए आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराता है।

30.3.2 स्कीईंग

बर्फ पर फिसलने के खेल को स्कीईंग के नाम से जाना जाता है। स्कीईंग मुख्यत: ठंड के मौसम का खेल है। यह खेल प्राय: दिसम्बर के अंत से प्रारंभ होता है और मार्च तक चलता है। ठंड के मौसम में खेले जाने वाले अधिकांश रोमांचक खेल काश्मीर, हिमाचल तथा उत्तर प्रदेश में केंद्रित हैं। पिछले कुछ वर्षों से स्कीईंग के प्रति एक गहरा आकर्षण हो चला है क्योंकि पूरे विश्व कि तुलना में भारत, सबसे सस्ते दरों पर स्कीईंग उपलब्ध कराता है। स्कीईंग का खेल सीखने वालों के व्यक्तिगत रूप से तथा सामूहिक रूप से व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है। सीखने वालों के सामने अलग-अलग कम या ज्यादा दूरी तथा कोणों के ढलाव होते हैं जिसमें थोड़ी या अधिक दूरी तक स्कीईंग करना, इस खेल को खेलने वाले को तय करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त दूसरी तरफ एक प्रशिक्षित तथा अनुभवी स्कीईंग करने वालों के लिए वहाँ बहुत अधिक आनन्द व रोमांच उपलब्ध है।

काश्मीर में गुलमार्ग, हिमाचल प्रदेश में मनाली तथा नारखंडा तथा उत्तर प्रदेश में औली में अलग-अलग अनेक स्थानों पर बर्फ से ढकी चोटियां तथा अलग-अलग ढलाव उपलब्ध हैं। कुछ स्थानों पर ऊँचे स्थानों से स्की करने वालों के लिए ऊँची चोटी तक पहुँचने के लिए स्की लिफ्ट भी लगी है। उत्तर प्रदेश के औली स्थान पर ठंड के महीनों में खूब बर्फ जम जाती है जिसके चारों और घने जंगल हैं जिससे बर्फीली ढलानों पर आने वाली तेज ठंडी हवा की गति या तो पूरी तरह थम जाती है या फिर नियंत्रित हो जाती है। औली में ही नए सीखने वाले खिलाड़ियों के लिए छोटी दूरी तक कम ढलान वाली बर्फ से ढकी पट्टियाँ तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षक रहते हैं। इस खेल में रुचि रखने वाले, प्रशिक्षित अनुभवी, साहसी, खिलाड़ियों के लिए दुर्गम लम्बी दूरी की ढलाने भी हैं। पाइन के घने जंगलों के खुशबूदार पेड़ों के बीच स्कीईंग करने का विशेष आकर्षण और रोमांच औली में है। मनाली औली तथा गुलमार्ग में कठिन से कठिन तथा सरल से सरल स्कीईंग ढलान उपलब्ध हैं। हैली स्कीईंग में, स्कीईंग करने वाले शौकीन खिलाड़ियों को एक हैलीकॉप्टर से छोटे समूह को किसी ऊँची पहाड़ी की चोटी पर ले जाया जाता है और फिर वहाँ से पर्यटक स्कीईंग करते हैं।

30.3.3 हॉट एयर बैलूनिंग तथा ग्लाइडिंग

भारत में खेला जाने वाला अपेक्षाकृत यह नया खेल है, जो पहले कभी बड़े शहरों में अभिजात्य वर्ग के रईस लोगों के लिए ही सीमित थे, परंतु धीरे-धीरे यह खेल अधिक प्रचलित और लोकप्रिय होते जा रहे हैं। उत्तर प्रदेश में हरिद्वार तथा देहरादून की घाटियों के बीच सबसे पहली बार हॉट एयर बैलूनिंग का रोमांचक खेल प्रारंभ किया गया था। गर्म हवा के गुब्बारे में उड़ने का उपयुक्त समय अक्टूबर से मार्च के बीच रहता है। इस मौसम में आसपास का तापमान कम रहता है और गुब्बारे के अंदर की गर्म हवा हल्की हो जाती है जिससे गुब्बारे को ऊपर उड़ने में सहायता मिलती है। गुब्बारे के नीचे एक हुक से बड़ी टोकनी लटकी रहती है। गुब्बारे में दिशा नियंत्रित करने का एक उपकरण लगा रहता है। किसी भी गुब्बारे में नीचे लगी टोकनी में एक बार में अधिकतम चार व्यक्तियों को उड़ने के लिए एक साथ बैठाया जा सकता है।

ग्लाइडिंग के खेल में कोई भी साहसी व्यक्ति पतंग की आकार के एक बड़े फ्रेम में लटक कर हवा में उड़ता है जो ग्लाइडर कहलाता है। इस ग्लाइडर को उड़ाने वाला व्यक्ति या खिलाड़ी अपने शरीर के अंगों के नियंत्रण से इस ग्लाइडर को नियंत्रित करता है। पैरा ग्लाइडिंग वस्तुत: पैराशूट की सहायता से और ग्लाइडर से उड़ने का मिश्रण है। इस खेल को शुरू-शुरू में खेलने वाले नए या उत्सुक खिलाड़ियों के लिए हल्के ढलान अधिक उपयुक्त होते हैं जिसमें जमीन की कुछ फुट की ऊँचाई से थोड़ी दूर तक सफलता से उड़कर तथा ग्लाइडर को नियंत्रित करने की कला आ जाने के बाद कोई भी व्यक्ति अधिक ऊँचाई से लम्बी दूरी की उड़ान के लिए छलांग लगा सकता है और जमीन से हजारों फीट की ऊँचाई पर उड़ सकता है। औली (उत्तर प्रदेश), पिथैरागढ़ (उत्तर प्रदेश) तथा मनाली (हिमाचल प्रदेश) पैराग्लाइडिंग तथा हैंग ग्लाइडिंग खेलों के लिए उपयुक्त स्थल है।

बोध प्रश्न 1

1) उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू काश्मीर के प्रमुख ट्रैकिंग मार्ग कौन-कौन से हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) अक्टूबर से मार्च माह तक का समय हॉट एयर बैलूनिंग के लिए क्यों सर्वोत्तम माना जाता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

30.4 गोल्फ

वर्ष 1829 में पहली बार यह खेल भारत में अंग्रेजों द्वारा लाया गया था और बड़ी जल्दी गोल्फ का खेल लोकप्रिय हो गया। धीरे-धीरे अंग्रेजों ने हर प्रमुख केंद्रों पर गोल्फ क्लब तथा गोल्फ के मैदान



चित्र 1 : शिमला के समीप गोल्फ मैदान

शुरू कर दिए। ब्रिटेन के बाहर, दुनिया के सबसे पुराने गोल्फ कोर्स में से एक कलकत्ता में स्थित है। आज देश के प्राय: सभी प्रमुख बड़े शहरों में कम से कम एक गोल्फ मैदान है। काश्मीर के गुलमार्ग स्थान को आज दुनिया का सबसे अधिक ऊँचाई पर स्थित 18 होल वाला गोल्फ मैदान होने का गौरव प्राप्त है। आज भारत में, वर्तमान में 132 गोल्फ कोर्स तथा 60 नए निर्माणाधीन गोल्फ कोर्स होने का दावा कर सकता है जिसमें से कुछ बहुत भारी राशि निवेष करके बनाए गए हैं। पहले कभी यह खेल अभिजात्य वर्ग के लिए प्रतिष्ठा का प्रतीक था परंतु आज यह खेल सभी के लिए एक सा लोकप्रिय हो गया है। आज भारत के कुछ प्रमुख शहरों यथा दिल्ली, बंगलोर, मद्रास, कलकत्ता, श्रीनगर तथा शिमला में बड़े लोकप्रिय गोल्फ मैदान हैं। इसके अतिरिक्त कई अन्य शहरों में भी यह खेल खेलने की सुविधा है।

30.5 जलक्रीड़ा

भारत की भौगोलिक विविधता अनेक प्रकार के पानी में खेले जाने वाले रोचक व रोमांचक खेलों की संभावना उपलब्ध कराती है और उनमें से अधिकांश को रोमांचक खेलों की श्रेणी में रखा जा सकता है। भारत के लगभग अधिकांश तटीय प्रदेश – गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, उड़ीसा तथा आंध्र प्रदेश समुद्र तट पर समय बिताने की सुविधा उपलब्ध कराते हैं। इनमें से कुछ स्थानों पर विन्ड सर्फिंग तथा याचिंग की सुविधा है तो लक्षद्वीप समूह में प्राय: प्रत्येक द्वीपों को घेरे स्वच्छ साफ पारदर्शी नीले समुद्र में पानी के अंदर की जाने वाली गहरी तथा उथली गोताखोरी की उत्तम सुविधा उपलब्ध है। उत्तर प्रदेश में साल भर पानी से भरी बहने वाली नदियां अनेक लोकप्रिय रोमांचक खेल यथा रैफटिंग तथा कैनोईंग के लिए आदर्श ठिकाने हैं।

30.5.1 नौकायान

भारत में नौकायान का इतिहास काफी पुराना तथा समृद्ध है। इसकी शुरुआत 1830 में हुई थी जब पहली बार बम्बई में पाल वाली नावों की दौड़ आयोजित की गई थी। इस दौड़ प्रतियोगिता में पहला इनाम एक सोने का सिक्का था। उसके बाद इस खेल में काफी प्रगति हुई है तथा लोकप्रियता भी बढ़ी



चित्र 2 : विंड सर्फिंग

है। पाल वाली नावें चलाने तथा उसकी दौड़ प्रतियोगिता अधिक लोकप्रिय हुई है। अब इस खेल में विभिन्न प्रकारों की सेल बोट (पाल वाली नाव) की उपलब्धता को देखा व आंका जा सकता है। व्यक्तिगत तौर पर इस प्रकार के नाव चलाने के लिए 'कैडट' तथा 'आपटिमिस्ट' नामक सेल बोट्स उपलब्ध हैं तथा उसी प्रकार पेशेवर चालन के लिए उपलब्ध विशेष प्रकार से निर्मित याचों के नाम 'इंटरप्राइस' 'लाइटनिंग' तथा 'सी बर्ड' हैं। भारत में प्राकृतिक रूप से बड़े सुंदर समुद्री किनारे हैं तथा पाल वाली नाव चलाने के लिए बढ़िया मौसम तथा दुनिया के कुछ बेहतरीन सुंदर गोवा तथा बम्बई सरीखे बन्दरगाह भी हैं।

30.5.2 विन्ड सर्फिंग

पानी में खेला जाने वाला यह रोमांचक खेल भारत में बहुत पुराना नहीं है परंतु अब यह इतना अधिक सामान्य और लोकप्रिय हो गया है कि लगभग प्राय: हर समुद्री तटों पर यात्रियों और पर्यटकों के लिए एक नियमित, आसान मनोरंजन के रूप में यह सुविधा उपलब्ध है। यह अकेले खेला जाने वाला खेल है जो विभिन्न वाटर स्पोर्ट्स क्लब तथा समुद्र के किनारे स्थित अच्छी बड़ी होटलों के माध्यम से खेला जा सकता है। विन्ड सर्फिंग प्राय: पाल लगी हुई छोटी नाव पर लगे सेल बोर्ड के सहारे पानी में घूमता है। इसकी बढ़ती हुई लोकप्रियता को नई तकनीक तथा नए प्रकार के अच्छे उपकरणों से और बढ़ गई है। एक बार जिसे बोर्ड पर स्वयं को नियंत्रित करने आ गया फिर विन्ड सर्फिंग करने वाला व्यक्ति स्वयं अपनी ओर नई तकनीक ईजाद कर सकता है।

30.5.3 कैनोइंग

कैरेबियन द्वीपों के मूल कैरिबवासियों द्वारा समुद्र में जाने के लिए प्रयुक्त की जाने वाली खोखली नावों से ही कनुस नावों का विकास किया गया है। यह बड़ी-बडी खोखली नावें, बड़े-बड़े पेड़ों के तनों से बनाई जाती हैं जिनको विशेष आकार दिया जाता है तथा बीच में विशेष रूप से उसको गहरा किया जाता है ताकि नाव चलाने वाला व्यक्ति उसमें आसानी से बैठ सके। यह शब्द कनुस – कनु शब्द से आया है जिसका कैरेबियन भाषा में अर्थ पोली नाव से है।

इस तरह विशेष प्रकार का नाव कनुस का चालन एक आनन्ददायक खेल है जो अभी हाल ही के वर्षों में बहुत लोकप्रिय हो गया है। यह अकेला खेला जाने वाला खेल है तथा कनु चलाने से ज्यादा उसकी दौड़ में भाग लेना अधिक रोमांचक होता है तथा रीवर रैफ्टिंग की अपेक्षा इसमे अधिक चतुराई तथा शारीरिक नियंत्रण की आवश्यकता होती है।

भारत में प्राकृतिक नदियों की बहुतायात, भारी संख्या में लगने वाला कनु कैम्पों तथा अवकाश पैकेजों के कारण इस खेल को और अधिक भारी लोकप्रियता हुई है।

30.5.4 रीवर रैफ्टिंग

रैफ्टिंग प्राय: पानी में न डूबने वाली सिंथेटिक रबर के बने रैफ्टस पर की जाती है और इसकी लम्बाई 8 इंच से 16 इंच तक होती है। रैफ्टिंग प्राय: 6 से 12 व्यक्ति मिलकर रैफ्ट पर ही बैठ कर करते हैं। वे लोग जो नदी की लम्बाई की दिशा में प्रकृतिक सौंदर्य तथा रोमांच का मिलाजुला आनन्द उठाना चाहते हैं उनके लिए नदी में रैफ्टिंग करना एक उपयुक्त व आदर्श व आदर्श चुनाव है। इसके लिए सबसे उपयुक्त स्थल उत्तर प्रदेश में देवप्रयाग से ऋषिकेश तक 70 कि.मी. की लम्बाई तक गंगा का बहता पानी है। एक अक्टूबर से मार्च के मध्य तक का समय रीवर रैफ्टिंग के लिए सर्वथा उपयुक्त है। रीवर रैफ्टिंग करने वाले कुछ अनुभवी, स्थापित विशेषज्ञों का यह कहना है कि भारत की गंगा, अलकनंदा तथा भागीरथी नदियों में रीवर रैफ्टिंग के लिए दुनिया के सबसे अधिक सुंदर स्थल विकसित किए जा सकते हैं।

30.5.5 गोताखोरी

इसके भी दो प्रकार हैं। सांस लेने के अति आधुनिक उपकरणों व पर्याप्त व्यवस्था के साथ समुद्र के गहरे नीचे उतरकर गोताखोरी करना तथा गहरे समुद्र की तलहटी में घूमना, तैरना, इसे स्कूबा डाइविंग कहते हैं। इसके अतिरिक्त उथले समुद्र में कम गहराई तक साधारण आवश्यक उपकरणों के साथ पानी के नीचे तैरने के रोमांचक खेल को स्नोकर्लिंग कहा जाता है। समुद्र के अंदर गोता लगाने

वाले को समुद्र के नीचे अंदर सुंदर प्राकृतिक दृश्यावली, को निहारने का अवसर दोनों खेलों में मिलता है। समुद्र के अंदर उपलब्ध समुंद्रीय वनस्पतियां तथा जीव जन्तुओं का अध्ययन स्कूवा डाइविंग की मदद से किया जाता है परंतु रोमांच के शौकीन व्यक्ति मनोरंजन और रोमांच की संतुष्टि के उद्देश्य से यह खेल खेलते हैं। स्कूवा डाइविंग तथा स्नोकलिंग खेलों के शौकीनों को लक्षद्वीप समूहों में उपलब्ध साफ नीला समुद्र, बहुतायत में मिलने वाली समुंद्रीय जैव सम्पत्तियों व आकर्षण के लिए अधिक व आकर्षक सुविधा प्रदान करता है।

30.6 पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को रोकने के उपाय

यद्यपि यह रोमांचक खेल निश्चित रूप से पर्यटन के लिए उत्प्रेरक की तरह काय करते हैं और पर्यटन निश्चत रूप से देश की अर्थव्यस्था में एक महत्वपूर्ण योग कारक है। परंतु कई अर्थों में यह पर्यटन के लिए खतरा पैदा करने वाला भी सिद्ध हो रहा है। इस खेल के ऋणात्मक पक्ष हैं–प्रदूषण, पर्यावरण ह्रास, प्राकृतिक दृश्यावली के सौंदर्य में गिरावट तथा पारिस्थितिकी तंत्र का असंतुलन।

ट्रैकिंग, माउन्टेनियरिंग, रॉक क्लाइम्बिंग तथा स्कीईंग पहाडों के पर्यावरण को प्रभावित करते हैं। ट्रैकिंग करने वाले पहाड़ों पर चलने वाले तथा पर्वतारोही प्राय: वहाँ उपलब्ध असमान्य वनस्पतियों तथा जैव प्रजातियों को नष्ट कर देते हैं। इस प्रकार पर्यटकों की बढ़ती संख्या से इन क्षेत्रों में और भी कई प्रकार के क्षरण होते हैं। पहाड़ी स्थलों पर खाने पीने की बची हुई सामग्री, खाली डिब्बे, टूटी और छोड़ी गई बोतलें, उस क्षेत्र में आने जाने वाले रोमांचक प्रेमी व्यक्तियों द्वारा यहां वहां छोड़ने, छितराने तथा लापरवाही के कारण पर्यावरण को गहरा खतरा रहता है। हिमालय पर्वत पर ट्रैकिंग करने वाले तथा प्राय: आने वाले पर्वतारोहीयों के कारण इस प्रकार लापरवाही से छोड़े गए सामानों तथा फेंके गए कचरों के कारण माउन्ट एवरेस्ट के पास साउथ कोल स्थान को दुनिया का सबसे अधिक ऊँचाई पर स्थित कचरे की पेटी कहा जाता है। रात को किए जाने वाले कैम्प फायर के कारण स्थानीय वनस्पतियों व जैव प्रजातियों को नष्ट होने का भय बना रहता है। भारत में स्कीईंग प्राय: प्राकृतिक रूप से उपलब्ध ढलानों पर ही की जाती है परंतु कई बार स्कीईंग करने वालों के स्तर तथा योग्यता के अनुरूप उपलब्ध पहाड़ों को काटकर या बारूद से फोड़कर कृत्रिम ढलान भी बनाए जाते है। इससे प्राकृतिक रूप से उपलब्ध उस क्षेत्र की जैव विविधता को भी गहरा नुकसान पहुँचाता है। अच्छी तरह से तथा लंबी दूरी तक स्कीईंग करने वालों के मार्ग तथा सुविधा के लिए पहाड़ों के किनारों को बुलडोजर से पाटा जाना है ताकि अधिक बर्फ जमा हो सके। इससे भूस्खलन तथा भूमि क्षरण की संभावना बढ़ जाती है तथा पर्यावरण को क्षति पहुँच सकती है।

गोल्फ एक ऐसा खेल है जो पर्यावरण को बहुत गंभीरता से प्रभावित करता है। गोल्फ का मैदान बनाने के लिए अधिक क्षेत्रफल का विस्तृत, सपाट, जमीन का टुकड़ा तथा भारी लागत लगती है। गोल्फ के मैदान में लगने वाली भारी लागत को देखते हुए प्राय: खेती के लिए काम में लाई जा रही उपजाऊ जमीन भी क्रय करके काम में लाई जाती है जिससे उस क्षेत्र की फसलों की मात्रा सिर्फ मनोरंजन के लिए प्रभावित होती है। गोल्फ के मैदान जब पहाड़ी क्षेत्रों में बनाए जाते हैं तब इन पहाड़ी इलाकों को समतल और सपाट बनाने के लिए बारूद से तोड़-फोड़ की जाती है। इस प्रकार पहाड़ों की भूमि जो फलों की खेती के लिए उपयुक्त होती है उसका उपयोग गोल्फ मैदान बनाने के लिए किया जाता है। गोल्फ कोर्स की एक विनिर्दिष्ट बनावट भी अन्य पर्यावरणीय संकट है। कृत्रिम पहाड़ियां ढलान छोटे जलाशय रेतीले हिस्से ये सब कृत्रिम पर्यावरण स्थानीय जैव विविधता के नाश के मूल्यों पर होती है। गोल्फ खेलने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर की एक विशेष प्रकार की घास पट्टियां विदेशों से आयात की जाती हैं जिसके रख-रखाव पर भारी व्यय होता है। इस विशेष प्रकार के घास के मैदान तथा आस-पास के पेड़ पौधों की देखभाल के लिए रसायनिक खादें, कीटनाशक दवाइयां, तथा विशेष प्रकार की अन्य औषधियां तथा प्लांट हार्मोन्स का छिड़काव कई एकड़ों में किया जाता है। लगातार होने वाली बारिश तथा वर्षा का पानी जमीन में रिसने के कारण ये सभी खाद दवाइयां गोल्फ के मैदानों से बहकर समीपस्थ अन्य खेतों की उपयोगी उपजाऊ जमीन तथा जमीन के अंदर पानी की सतह को प्रभावित तथा प्रदूषित करते हैं जिससे पर्यावरण तथा जैव विविधता को हानि पहुंचाती है।

सेलिंग, कनोईंग, रीवर, रैफ्टिंग, स्कूबा, डाइविंग सरीखे जलीय खेल से समुद्री किनारे नदियां तथा अन्य जलाश्य प्रभावित होते हैं तथा अन्य क्षरण होता है। इन खेलों के कारण गंदगी का फैलना, किनारों का

टूटना, देशांतरगाती मेहमान पक्षियों का व्यवधान तथा पानी के अंदर रहने वाले जलीय पौधों तथा प्राणियों का भी नाश होता है। यद्यपि पाल वाली नावों के चालान से संबंधी प्राकृतिक दृश्यावली मनोहर दिखाई देती है परंतु इससे जलीय प्राणी जगत को भारी क्षति पहुँचती है।

पर्यावरण पर पड़ने वाले अनेक दुष्प्रभावों के अतिरिक्त पर्यटन से भी पड़ने वाले अनेक हानिकारक दुष्प्रभाव भी इन जलीय खेलों के कारण अधिक घातक और व्यापी हो जाती हैं। इन खेलों के खेले जाने के स्थान पर स्थित होटल, रिसॉर्टर्स तथा अन्य आवासीय इकाइयों के निर्माण भी कुछ अन्य कारण हैं जिससे पर्यावरण प्रभावित होता है। इन खेलों को अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए तथा इनके आयोजकों के व्यावसायिक हितों को अधिक बढ़ाने की दृष्टि से इन खेलों के स्थान तक पहुँचने के लिए सड़क निर्माण तथा परिवहन से उत्पन्न प्रदूषण का गहरा निषेधात्मक परिणाम पर्यावरण पर पड़ता है।

अत: यह आवश्यक है कि इन खेलों से होने वाले दुष्प्रभावों पर पर्याप्त वांछित अंकुश लगाया जाए। पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का, विशेषकर उस क्षेत्र में उपलब्ध जैव विविधता के विशेष संदर्भ में, किसी भी स्थान पर स्कीईंग रिसॉर्ट, गोल्फ कोर्स रिर्साट, वाटर स्पोर्टस रिसॉर्टस तथा बीच रिसॉर्टस स्थापित व प्रारंभ करने के पूर्व, विशेष आकलन किया जाना चाहिए। गोल्फ के मैदान बनाने तथा उसके रखरखाव पर तेज कीटनाशक खाद तथा अन्य विशाक्त दवाइयों का उपयोग और प्रयोग कम से कम करना चाहिए। गोल्फ मैदान बनाने के लिए उपयोगी उपजाऊ स्थान पर परती, गैर उपजाऊ बंजर जमीन का ही उपयोग किया जाना चाहिए। पहाड़ी इलाकों में छोटे गोल्फ के मैदान बनाए जाने चाहिए तथा गोल्फ कोर्स और स्कीईंग के ढलान बनाने के लिए प्राकृतिक उपलब्ध भूमि रचना का ही उपयोग करना चाहिए। कृत्रिम ढलान के निर्माण को अधिक बढ़ावा नहीं दिया जाना चाहिए। भारी संख्या में आने वाले पर्यटकों के कारण पर्यावरण को गहरी क्षति होती है। इसलिए किसी भी स्थान विशेष की क्षमता के अनुरूप पर्यटकों की संख्या नियंत्रित की जानी चाहिए तथा अपनी अमर्यादित तथा अनुत्तरदायी गतिविधियों से पर्यावरण को हानि पहुँचाने वालों को कड़ा से कड़ा दंड किया जाना चाहिए तथा इस दिशा में और कड़े नियम बनाकर उनका सख्ती से पालन करवाया जाना चाहिए। भारत में गोताखोरी करने वाले कई लोग प्रवालों की अवैध तस्करी में लिप्त हैं जिससे सामुद्रिक जीवन को गहरी क्षति होती है। इन गतिविधियों को पर्याप्त नियंत्रण, निरीक्षण, कड़े नियमों तथा कड़े दंड से रोका जा सकता है। इसके अतिरिक्त शासन के स्तर पर पर्यटकों तथा शौकीन खिलाड़ियों को भी प्रशिक्षित करने का सहारा लिया जा सकता है।

बोध प्रश्न 2

1) गोल्फ का खेल तथा पानी में खेले जाने वाले विभिन्न रोमांचक खेल किस प्रकार पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) जलक्रीड़ा, ट्रैकिंग तथा गोल्फ मैदानों के निर्माण को रोके बिना पर्यावरण को होने वाले नुकसान को कम करने अथवा रोकने के संबंध में आप क्या सुझाव दे सकते हैं ?

.....

.....

.....

.....

30.7 सारांश

भारत की भौगोलिक विविधता के कारण खेल शौकीनों के लिए यहाँ ढेर सारी संभावनाएं हैं। यहां के पहाड़, नदियां, मनोहर दृश्यावलियां क्रमश: पर्वतारोहण, ट्रैकिंग, गोल्फ तथा रोमांचक जलक्रीड़ाओं में रुचि रखने वालों को अपना शौक पूरा कर सकते हैं परंतु अनियंत्रित पर्यटन के कारण ऐसे खेल प्रेमी पर्यटकों की बहुत भीड़ बढ़ गई है जिससे पर्यावरण पर अनेक प्रकार के घातक दुष्प्रभाव हो रहे हैं। अत: इन दुष्प्रभावों को रोकने की नितांत अनिवार्य आवश्यकता है ताकि पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन यथावत दीर्घजीवी बना रह सके।

30.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें उपभाग 30.3.1

2) देखें उपभाग 30.3.3

बोध प्रश्न 2

1) देखें भाग 30.6 आपको अपने उत्तर में गोल्फ मैदान बनाने में आने वाली कठिनाइयां जो पर्यावरण व्यवस्था को प्रभावित करती है तथा जल संबंधी खेलों से प्राकृतिक किनारे, पक्षियों को होने वाले व्यावधान तथा पानी में उपलब्ध जैव विविधता के समाप्त होने वाले खतरों को समझाइए।

2) कृपया अपने व्यक्तिगत निरीक्षण के अनुभव एवं 30.6 भाग के आधार पर अपना उत्तर लिखें

इकाई 31 होटल तथा रिसॉर्ट

इकाई की रूपरेखा

31.0 उद्देश्य

31.1 प्रस्तावना

31.2 अधिसंरचनात्मक सुविधाओं के रूप में होटल व रिसॉर्ट

- 31.2.1 परिभाषा और प्रारंभिक इतिहास
- 31.2.2 वर्गीकरण
- 31.2.3 त्वरित कार्यवाही के क्षेत्र

31.3 पर्यावरण ह्रास

- 31.3.1 प्रत्यक्ष प्रमाण
- 31.3.2 प्रभाव–तात्कालिक एवं दूरगामी

31.4 बचाव के उपाय

- 31.4.1 सरकार की भूमिका
- 31.4.2 होटल मालिकों की भूमिका
- 31.4.3 संचार माध्यमों तथा गैर सरकारी संस्थाओं की भूमिका
- 31.4.4 मौज-मस्ती करने वाले पर्यटकों की भूमिका
- 31.4.5 शहर नियोजकों तथा प्रशासकों की भूमिका

31.5 सारांश

31.6 शब्दावली

31.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

31.0 उद्देश्य

इस इकाई के उद्देश्य हैं कि आप :

- पर्यटन उद्योग में होटल तथा रिसॉर्ट के महत्व से परिचित हो सकें,
- उनके द्वारा अनुभव की जाने वाली समस्याएं जान सकें, और
- होटल व रिसॉर्ट तथा पर्यावरण के मध्य संबंध को समझ सकें

इससे यह आशा की जाती है कि इस इकाई के अध्ययन के बाद आप होटल/रिसॉर्ट तथा पर्यावरण के बीच संतुलन रखने की आवश्यकता को समझ सकेंगे तथा ऐसा करने के लिए किए जाने वाले प्रयासों को भी जान पाएंगे।

31.1 प्रस्तावना

भारत में अब होटल व्यवसाय ने एक अलग उद्योग का दर्जा पा लिया है। होटल निर्माण में लगी हुई राशि पूरे पर्यटन उद्योग में निवेशित पूंजी का लगभग 76.8% है। आज भारत के शहरी परिवेश एवं संस्कृति में होटल तथा रिसॉर्ट एक विशेष महत्वपूर्ण स्थान बन गए हैं। इसके विकास में अनेक कारकों और कारणों ने योगदान दिया है। सबसे महत्वपूर्ण कारकों में पर्यटन को दिया जाने वाला महत्व तथा विगत कुछ वर्षों से भारत का बदलता आर्थिक दृश्य पटल है। पर्यटन का संगठन तथा आवासीय इकाइयों को बढ़ावा देने की आवश्यकता को समझने के कारण, निजी कम्पनियों केंद्रीय तथा राज्य शासनों द्वारा बनाए जाने वाले होटल तथा होटल श्रृंखला इसी के परिणाम हैं। इसके अन्तर्गत केंद्रीय पर्यटन विभाग का उपक्रम भारतीय पर्यटन विकास निगम तथा अलग-अलग राज्यों में उन राज्य के पर्यटन निगमों द्वारा निर्मित और संचालित होटल हैं। हालाँकि विरासत महत्व के कुछ पुराने भव्य

महलों तथा ऐसी ही कुछ अन्य महत्वपूर्ण पुरानी भव्य इमारतों को हेरिटेज होटल में परिवर्तित करने को कुछ लोग उन भवनों के एतिहासिक तथा विरासत मूल्यों का अवमूल्यन होना मानते हैं।

औद्योगीकरण, दूरसंचार, परिवहन के साधनों का विकास तथा मशीनीकरण व आधुनिकीकरण के कारण अब बहुत सारे लोग व्यवसाय, व्यावसायिक उद्देश्य, शिक्षा, आमोद प्रमोद तथा सामाजिक जरूरतों के कारण अब पहले से कहीं अधिक यात्रा करने लगे हैं। ये होटल तथा रिसॉर्ट मूलत: इन यात्रियों/पर्यटकों तथा सैलानियों को आवासीय व्यवस्था उपलब्ध कराते हैं जिन्हें अपनी यात्राओं के दौरान अपने घर से बाहर रहना और रूकना पड़ता है। ये होटल तथा रिसॉर्ट अन्तर्राष्ट्रीय विदेशी पर्यटकों, देशी पर्यटकों, व्यावसायियों, विशेषज्ञों, विभिन्न वर्गों के मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। इसलिए यह कहा जाता है कि मूलत: यह उपयोगिता सेवाएं हैं। होटल तथा रिसॉर्ट के दूसरे भी अन्य उपयोग हैं। वे विदेशी मुद्रा अर्जित करते हैं। विदेशी पर्यटकों से मिलने वाली विदेशी मुद्रा का लगभग 50% अंश इन्हीं आवासीय इकाइयों को मिलता है। होटल तथा रिसॉर्ट के विकास का सामाजिक पक्ष व महत्व भी है। ऐसा कहा जाता है कि अपने घर से बाहर होटल तथा रिसॉर्ट के रूप में उपलब्ध इन आवासीय व्यवस्थाओं ने विभिन्न देशों के लोगों की संस्कृति, रीति रिवाज, व्यवहार तथा परम्पराओं को समझना सरल कर दिया है तथा अन्तर्राष्ट्रीय समझदारी को बढ़ावा दिया है।

होटल तथा रिसॉर्ट का पर्यावरण पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है। उनके नियोजन की प्रवृत्ति तथा प्रकृति उनके आसपास के पर्यावरणीय परिवेश को या तो सुंदर बनाती है या फिर उसके वर्तमान स्तर में गिरावट भी ला सकती है। होटल तथा रिसॉर्ट सकारात्मक तथा क्रियात्मक बदलाव लाने वाले होते हैं तथा सामुदायिक जीवन तथा जीवन यापन के स्तर को परिवर्तित या उसमें गुणवृद्धि लाने के लिए अधिक अवसर प्रदान करते हैं। होटल तथा रिसॉर्ट का बहुमूल्य योगदान उसके सुंदर भवनों के प्रति आकर्षण का जिससे उस क्षेत्र की भव्यता, महत्व, रोजगार के अवसर, उसमें कार्यरत कर्मचारियों को दिए जाने वाले वेतन भत्तों तथा स्थानीय खरीद की संभावनाओं का पता चलता है। इन सबके अलावा ये (होटल तथा रिसॉर्ट) उस क्षेत्र के समुदाय के सामाजिक जीवन के केंद्र बिंदु होते हैं। होटल व्यवसाय अधिक पूंजी लगाने वाला और उसी अनुपात में लाभ देने वाला व्यवसाय है, हालाँकि यदि पर्यटक होटलों में अधिक कीमत देने को तैयार हैं तो बदले में उसी अनुपात में वे ज्यादा अच्छे स्तर की तथा अधिक सेवाओं/सुविधाओं की अपेक्षा करेंगे। सेवा के क्षेत्र में चमक दमक तथा उपेक्षा की प्रवृत्ति के कारण होटल की छवि खराब हो सकती है तथा इससे पर्यटन के क्षेत्र में विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। भारतवर्ष औसतन कम आय वाला देश है और सामान्य मध्यवर्गीय या अल्प आय वर्ग के यात्रियों के लिए मंहगे होटलों का लाभ उठाना या उनमें रूकना संभव नहीं हैं इसके कारण उनके स्थान पर सस्ते विकल्पों के रूप में सस्ती, स्तरहीन, असुविधाजनक होटल बन रहे हैं जिनमें निर्धारित शासकीय नियमों/अधिनियमों तथा कानूनों का पूरी तरह उल्लंघन किया जाता है तथा पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों की ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता है या फिर दिया ही नहीं जाता है। इसके होने वाले दुष्परिणाम या तो तुरंत दिखाई पड़ने लगते हैं या काफी समय तक आसानी से दिखाई नहीं पड़ते हैं तथा समझ में नहीं आते हैं पर इनके दुरगामी घातक परिणाम होते हैं। होटल, रिसॉर्ट तथा पर्यावरण एक दूसरे से संबंधित हैं तथा तीनों कारकों में एक का भी ह्रास नि:सन्देह अन्य कारकों पर भी गहरा प्रभाव डाल सकता है।

31.2 अधिसंरचनात्मक सुविधाओं के रूप में होटल तथा रिसॉर्ट

अभी पिछले कुछ वर्षों में आमोद-प्रमोद तथा मनोरंजन का प्रजातांत्रीकरण तथा भारी संख्या में लोगों की भागीदारी के कारण, पर्यटन का बहुत विकास हुआ है। किसी भी पर्यटक द्वारा यात्रा के दौरान किसी स्थान पर रूकने के कारण, उस यात्री तथा स्थान दोनों के बीच तेजी से बढ़ रही परस्पर आदान-प्रदान तथा गहरे संबंधों के कारण यह कहा जा सकता है कि इन दोनों कारकों ने पर्यटन को पर्याप्त मात्रा में जन सामान्य की रुचि बनाने में गहरा योगदान दिया है। पर्यटन को एक तरह से यात्रा करने वालों तथा बाहरी व्यक्तियों द्वारा अस्थाई रूप से पर्यटकों के ठहराव के लिए किसी स्थाई आवास की आवश्यकता नहीं और न ही धनोपार्जन के उद्देश्य से होता है।

इसीलिए होटलों को पर्यटन उद्योग के प्राथमिक तत्व के रूप में देखा जा सकता है। देश के समस्त सुंदर परिवेश एवं प्राकृतिक दृश्यावलियां, यहां के मौसम की खूबियां तथा मनोरंजन और खेलकूद की समस्त उपलब्ध सुविधाएं भी होटल तथा रिसॉर्ट संसाधनों के विकास के बिना भारत में आने वाले पर्यटकों के व्यवसाय को पूरा नहीं किया जा सकता है। पर्यटन उद्योग में अधिसंरचनात्मक अवयव के रूप में होटल तथा रिसॉर्ट का महत्व है; इसीलिए कहा भी जाता है "होटल नहीं तो पर्यटन भी नहीं"। मूलतः अधिसंरचना से तात्पर्य जमीन पर तथा जमीन से नीचे ऐसे निर्माण कार्य जो रिहायशी क्षेत्र के लिए आवश्यक हैं, जो बाहर की दुनिया के साथ दूर संचार व्यवस्था से जुड़े हुए हों, जो मुख्यतः सभी मानवीय गतिविधियों के आधार हों। जब हम पर्यटन से जुड़ी अधिसंरचना की बात करते हैं तब इससे न सिर्फ आवासीय व्यवस्था बल्कि परिवहन व्यवस्था, पर्यटन से जुड़े रोमांचक खेल, ट्रैवेल एजेंसियां, टूर ऑपरेटर्स, मनोरंजन उद्योग तथा ऐसी भी कुछ गतिविधियां/व्यवस्थाएं सम्मिलित होती हैं। आर्थिक विकास की गति में तेजी लाने के लिए इसके पहले पर्यटन से जुड़ी अधिसंरचना का विकास व निर्माण कार्य अनिवार्य होता है। आज तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्था में सभी जगह अधिसंरचना के निर्माण में पर्याप्त पूंजी निवेश किया जा रहा है। भारत में आज उपलब्ध अपर्याप्त अधिसंरचना में बढ़ोत्तरी करने की आवश्यकता है तथा होटल और रिसॉर्ट का भी एक उचित दिशा में विकास एक स्वागत योग्य प्रयास होगा।

यदि व्यापक संदर्भ में आज देखा जाए तो पर्यटन का विकास बहुपक्षीय गतिविधि है जिसमें अनेक गतिविधियां होती हैं परंतु अधिकांश गतिविधियां परस्पर अन्तर्संबंधित होती हैं जिसके अन्तर्गत होटल के मालिकों और संचालकों के बीच समन्वय तथा सहयोग, राजस्व में वृद्धि, विदेशी मुद्रा अर्जन, विभिन्न सामाजिक तथा सांस्कृतिक मेल मिलाप को बढ़ावा देना, राष्ट्रीय एकीकरण, सार्वजनिक तथा सामाजिक सुविधाओं का विकास करना तथा स्थानीय हस्तकलाओं, सांस्कृतिक गतिविधियों को संरक्षण, सहायता व बढ़ावा देना.सब कुछ शामिल रहता है।

31.2.1 परिभाषा और प्रारंभिक इतिहास

होटल शब्द की उत्पति अति प्राचीन है और इसका उदय लैटिन भाषा के मूल शब्द "हास्पिताले" या फ्रैंच भाषा में पूर्व से प्रचलित शब्द "ओस्टेलेरिये" से उत्पन्न माना जा सकता है। होटल की विभिन्न परिभाषाओं के अन्तर्गत निम्नलिखित अवधारणाएं प्रचलित व मान्य हैं। सड़क मार्ग से यात्रा करने वाले अपरिचित यात्रियों की मौज मस्ती का ठिकाना – एक बड़ी सराय, एक ऐसा स्थान जहां रूकने और खाने-पीने की व्यवस्था मिलती है। साधारण बोलचाल की भाषा में होटल का तात्पर्य एक ऐसे स्थान से है जहां समाज के हर वर्ग के लोग, आमोद-प्रमोद व मनोरंजन की सुविधा खरीदने को तैयार हैं वहां उनका स्वागत होता है बशर्ते उस स्थान पर वह सुविधा, इच्छुक ग्राहकों के द्वारा क्रय करने के लिए उस समय उपलब्ध हो। इस सुविधा के अन्तर्गत आवासीय, खाने-पीने की व्यवस्था तथा इसके अतिरिक्त कुछ अलग अन्य सामान्य जरूरतों की पूर्ति में सामान्य निर्धारित दरों के साथ-साथ यात्रियों को अपनी व्यक्तिगत, स्थाई निवास के बाहर एक आत्मीय सुरक्षित आवासीय वातावरण उपलब्ध कराते हैं।

इस प्रकार घर से बाहर रूकने की प्रवृत्ति तथा आवश्यकता के अनेक उदाहरण काफी पहले से देखने को मिलते हैं या देखे जा सकते है। भारतीय इतिहास के संदर्भ में पहले से ऐसे कई गांव हुआ करते थे जहां पथिकों को रूकने के लिए बड़े-बड़े कमरे तथा छोटी कोठरियां हुआ करती थीं। बाद में पथिकों के रूकने की इस प्रकार की व्यवस्था मंदिरों में भी की जाने लगी। जिसका वर्णन मैगस्थनीज के संस्मरण व यात्रा वृतांतों में पढ़ने को मिलता है। ईसा से 350 वर्ष पूर्व धार्मिक यात्रा करने वाले श्रद्धालुओं के लिए धर्मशालाएं या विशेष धार्मिक आवासीय इकाइयां हुआ करती थीं। आज भी ये उपयोग में हैं। बौद्ध मठ तथा तत्कालीन धनिकों के बड़े मकानों के बाहर बनी अन्य सहायक आवासीय इकाइयों में भी रूकने की व्यवस्था हुआ करती थीं। तंबुओं में रूकने का चलन काफी बाद में प्रारंभ हुआ है।

इसाई धर्म के प्राचीन पवित्र ग्रथों में कारवां सराय का उल्लेख मिलता है। होरालिक्स ने ईसा 37 वर्ष पूर्व रोम शहर से 16 कि.मी. की दूरी पर एक सुविधा जनक सराय 'एरिसिया' का उल्लेख किया है। उसी प्रकार ईसा के बाद सन् 100 में रोम के समीप ओस्ट्रिया से 14 मील की दूरी पर, इसी प्रकार

पथिकों व यात्रियों के विश्राम के लिए लारेन्स हाउस नामक सुविधाजनक आवासीय सुविधा का उल्लेख आया है।

रोमवासियों की विजय के पूर्व ब्रिटेन में 'बीचस' तथा 'ब्रिथनिबस' नाम से बड़े बड़े खुले मकानों की देख रेख करने वालों का महत्वपूर्ण वर्ग हुआ करता था। रोमवासियों द्वारा स्थापित की गई आवासीय व्यवस्थाओं को 'डायवर सोना' (सराय) ऐलै हाउस या 'बिबुलियम' के नाम से जाना जाता था। प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक चौसर की कृति केन्टबरी टेलर्स में रेबार्ड नामक स्थान में एक ऐसी सराय का उल्लेख है जिसमें आज की आधुनिक होटल की सारी सुविधाएं उपलब्ध हुआ करती थीं। वर्ष 1880 से ही होटल शब्द अधिक लोकप्रिय और सर्वमान्य में प्रचलित हुआ है। लंदन में यह शब्द 1760 के बाद प्रयोग में लाया गया। यद्यपि पेरिस में इसकी जगह 'होटल गिरनी' के नाम से प्रचलित है।

पूरे यूरोप में और विशेषकर ग्रेट ब्रिटेन में सन् 1637 से मुख्य मार्गों पर बने 'स्टेज कैबिन्स' बहुत महत्वपूर्ण हो गए थे। वर्ष 1840 में जब रेल सेवाएं प्रारंभ हो गईं तब लम्बी दूरी तक चलने वाली बस सेवाओं को काफी गहरा धक्का लगा और इसके कारण मुख्य राजमार्गों पर बनी सरायों के व्यवसाय व लोकप्रियता में गिरावट आई अब रेल व्यवस्था व्यावहारिक रूप से हो गई थीं तथा प्रमुख रेलवे जंक्शन के पास शहरों में होटलों का विकास होना शुरू हो गया। 19वीं शताब्दी के अंत तक मोटर साइकिल तथा मोटर कार के आविष्कार के बाद लम्बी दूरी के मुख्य राजमार्गों के किनारे स्थित होटल तथा सराय एक बार फिर पुन: अधिक लोकप्रिय तथा चर्चित और मालामाल होने लगे। वर्ष 1878 में गठित सायकलिस्ट टूरिंग कल्ब तथा सरायों का सर्वेक्षण और निरीक्षण कर इन आवासीय इकाइयों के किराए तथा उनमें विभिन्न सुविधाओं की सूची बनाकर रखना शुरू कर दिया। लन्दन में सबसे पहले 1774 में ए.डी. डेविड लो नामक व्यक्ति ने आधुनिक वर्तमान होटलों का पूर्ववर्ति स्वरूप बनाया। अमेरिका में मुख्य मार्गों पर बने बड़े फार्म हाउसों का उन्नयन तथा विस्तार कर बंदरगाहों पर सराय तथा सार्वजनकि रूप से किराए पर उपलब्ध होने वाले होटलों का निर्माण किया जाने लगा। होटलों के निर्माण तथा उनके व्यावसायिक संचालन में असली गति द्वितीय विश्व युद्ध के बाद आई। भारत में होटलों का चलन व उपयोग 20वीं शताब्दी में प्रारंभ हुआ।

31.2.2 वर्गीकरण

होटल तथा रिसॉर्ट का वर्गीकरण कोई आसान कार्य नहीं है। सबसे बड़ी कठिनाई यह आती है कि एक ही प्रकार की गतिविधि के लिए अलग-अलग नामों का उपयोग किया जाता है, इसलिए आवासीय इकाईयों की स्थिति उनमें उपलब्ध सुविधाओं के प्रकार, उक्त संस्था की कोई अतिरिक्त विशेषता, यानी अनेक आधार पर वर्गीकरण किया जा सकता है। मुख्यत: होटलों के तीन प्रकार के वर्गों में बाँटा जा सकता है।

क) **रिसॉर्ट होटल** – प्राय: ऐसी होटल किसी नमभूमि क्षेत्र, झील, या समुद्र के किनारे या पहाड़ों पर स्थित हैं। ऐसी होटलों में रूकने वाले पर्यटकों तथा यात्रियों का मुख्य उद्देश्य मुख्यत: मौजमस्ती के लिए, स्वास्थ्य लाभ या फिर परिवर्तन के नाम पर आराम या विश्राम करना होता है। इस प्रकार के रिसॉर्ट गर्मी ठंड या गुनगुने ठंडे की ऋतुओं में अधिक उपयुक्त होते हैं। इस प्रकार के होटल गोवा, पुरी, दक्षिण भारत में केरल के कोवलम समुद्री तट पर तथा उत्तर भारत की ऊँचाई वाले पहाड़ी स्थानों पर बने हुए हैं। गोवा में स्थित लीलाबीच होटल इस प्रकार के रिसॉर्ट होटल का एक अच्छा उदाहरण हैं। मसूरी नैनीताल, कुल्लू तथा शिमला जैसे पहाड़ी इलाकों में हिल रिसॉर्टस हैं। यह रिसॉर्ट व्यवसाय की दृष्टि से प्राय: मौसमी हुआ करते हैं तथा किसी विशेष मौसम में खेले जाने वाले खेल यथा स्कीईंग की सुविधा के आधार पर कमाई करते हैं। इस प्रकार के होटलों में कान्फ्रेंस रूम, मीटिंग रूम, एक मध्य श्रेणी का रेस्तरां, बैठने के लिए लॉन, तथा मनोरंजन के लिए एक अलग कमरा तथा गोल्फ, स्वीमिंग पूल, टेनिस, स्केटिंग, आइस स्केटिंग तथा नौका चालन की सुविधा रहती है।

ख) **थोड़े समय ठहरने वाले होटल** – यह सामान्य होटल प्राय: व्यावसायियों तथा सामान्य यात्रियों व पर्यटकों के द्वारा आवश्यकता के समय उपयोग में लाई जाती हैं। शहरों के बीचों-बीच, शहर के मुख्य इलाकों में या फिर रेलवे स्टेशन या बस स्टैन्ड, एयरपोर्ट के पास के होटल इसी श्रेणी में आते हैं। एयरपोर्ट के पास बने होटल का प्राय: यात्रियों द्वारा एक विमान सेवा से आकर दूसरी फ्लाइट

पकड़ने के बीच कुछ समय प्रतीक्षा करने या खाली समय का उपयोग करने के लिए काम में लाई जाती है। सेन्ट्रूर होटल श्रृंखला के होटल इसके अच्छे उदाहरण हैं। ऐसे होटलों में पर्यटकों व यात्रियों का संक्षिप्त ठहराव होता है इसीलिए इस प्रकार के होटलों में उपलब्ध कराई जाने वाली सेवाएं भी उसी प्रकृति की होती हैं।

ग) **आवासीय होटल** – यह वे होटल होते हैं जहाँ ग्राहकों को महीनों के आधार पर एक सत्र विशेष के लिए या एक निश्चित लम्बी अवधि के लिए किराए पर दी जाती हैं। ये अपार्टमेंट होटलों के नाम से जाने जाते हैं। यह होटल तमाम आवश्यक फर्नीचर के साथ या उसके बिना भी हो सकते हैं। सुविधाओं के अन्तर्गत व्यक्तिगत सेवा के लिए एक नौकर, ओढ़ने बिछाने के कपड़े, खाना खाने के लिए एक डायनिंग रूम, कमरे में खाना व नाश्ता पहुँचाने की रूम सर्विस की सुविधा और यदि संभव हो तो शराब पीने के लिए अलग से एक विशेष आरामदायक जगह होती है।

उपर्युक्त सामान्य वर्गीकरण के अतिरिक्त कुछ अन्य प्रकार के भी होटल होते हैं जैसे अन्तर्राष्ट्रीय होटल; व्यावसायिक होटल, मोरेल्स तथा तैरती होटल, अन्तर्राष्ट्रीय होटल प्राय: पश्चिमी शैली में बनाए जाते हैं तथा प्राय: यह होटल बड़े औद्योगिक शहर या महत्वपूर्ण प्रमुख पर्यटन स्थलों पर स्थित होते हैं। इन बड़ी होटलों को अनेक स्तर तथा उपलब्ध कराई जाने वाली उत्तम श्रेणी की सेवा सुविधा के आधार पर पांच से लेकर एक सितारा तक की श्रेणी प्रदान की जाती है। इन होटलों में उपलब्ध सुविधाओं के अन्तर्गत आयासीय व्यवस्था, रेस्तरों, बार रूम होते हैं। ये होटल कपड़े को धोने, आयरन करने तथा वाहनों की मरम्त के लिए व वाहनों को खड़ी करने के लिए गैराज सुविधा भी होती है। ये बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय होटल निजी कम्पनियों के स्वामित्व में होते हैं तथा इनका संचालन एक संचालक मंडल द्वारा किया जाता है। ऐसे होटल के अन्तर्गत ताज समुह, मौर्य शेरेटन, ओवेराय समूह द्वारा संचालित होटल शामिल हैं।

आर्थिक उदारीकरण के दौर में अब अनेक अन्तर्राष्ट्रीय होटलों के समूह के साथ व्यावसायिक अनुबंध कर संयुक्त उपक्रम बनाए जा रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप सेवा के क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति व गुणवत्ता में वृद्धि आई है। दिल्ली में स्थित हॉली डे इन इस प्रकार के व्यावसायिक अनुबंध के बाद होटल हिल्टन के नाम से जानी जाती है। हिल्टन होटल समूह संभवत: दुनिया का सबसे बड़ा और विस्तृत होटल समूह है। इस क्षेत्र के व्यवसाय में भारी वृद्धि होने से अनेक नए व्यावसायिक होटल अस्तित्व में आए हैं। ये व्यावसायिक होटल प्राय: बड़े कार्यालयों, रेस्तराओं तथा मनोरंजन केंद्रों के पास खोले गए हैं या खोले जाते हैं। निजी व्यक्तियों द्वारा चलाए जा रहे ये व्यावसायिक होटल सुविधाजनक व शांतिपूर्ण वातावरण के साथ-साथ साधारण अच्छा खाना-पीना भी उपलब्ध कराते हैं। औद्योगिक शहरों में स्थित व्यावसायिक होटलों में आवश्यकता के अनुरूप व्यावहारिक आवास व्यवस्था, साफ सुथरे ढंग से स्वादिष्ट खाना बनाने की व्यवस्था रहती है। मोटल्स एक अन्य प्रकार की होटल होती है जिसमें काम करने वाले कर्मचारियों की संख्या अपेक्षाकृत कम होती है क्योंकि वहां अधिकांश काम यांत्रिक ढंग से त्वरित रूप से होते हैं। यह प्राय: अधिक चलने वाले मार्गों पर, सड़क मार्ग से यात्रा करने वाले पर्यटकों के लिए, उनकी वाहन के रख रखाव और सुधार के लिए वर्कशॉप के साथ हुआ करती हैं। इस प्रकार के होटलों में रूकने वाले व्यक्ति अपने हाथ से स्वयं अपना काम करते हैं। इन होटलों का किराया और दरें भी तुलनात्मक रूप से कम होती हैं। दिल्ली से चंढीगढ़ के बीच सड़क मार्ग पर अपनी वाहनों से यात्रा करने पर आपको इस प्रकार के कई मोटल्स देखने को मिलेंगे। तैरने वाली होटल या हाउसबोट या शिकारा काश्मीर में पर्यटकों से पर्याप्त आय प्राप्त करने के अच्छें साधन हैं। इन हाउस बोट में सजे सजाए ड्रांइग रूम, बैठने का कमरा, बेडरूम, पूरे कमरे में दीवार से दीवार तक बिछा नर्म गलीचा चौबिस घंटे मिलने वाला ठंडा तथा गर्म पानी तथा स्वादिष्ट खाने की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। इस प्रकार की आवासीय व्यवस्था में व्यक्तिगत देखभाल तथा सत्कार सबसे महत्वपूर्ण पक्ष होते हैं। सूक्ष्म स्तर पर देखा जाए तो ये होटल अपने आप में एक बड़ी अकेली संस्था होती है। इस संस्था के मूल मुख्य विभाग क्रमश: राजस्व विभाग, उपयोगिता विभाग, अन्य सेवाएं, रखरखाव व सुधार विभाग तथा कुछ अन्य अप्रत्यक्ष सेवाएं जो पूरक आय में सहायक होती हैं। होटल में आवास व्यवस्था, भोजन तथा पेय योग्य वस्तुएं उपलब्ध रहती हैं और सेवा का अर्थ है ग्राहकों व मेहमानों को सभी सेवाएं व सुविधाएं, उनके निर्धारित मूल्यों के भुगतान पर उपलब्ध कराना। इन सबका संचालन

राजस्व विभाग द्वारा किया जाता है। उपयोगिता संबंधी तथा अन्य अनिवार्य सेवाओं तथा यांत्रिकी, विद्युतीय, वातानूकूलित संयंत्र तथा इस प्रकार की अन्य सुविधाओं से बहुत अधिक आय नहीं होती है। अन्य सुविधाओं के लिए किराये पर मिलने वाली दुकानों से हो सकता है। सीधे तौर पर स्वयं होटलों द्वारा न चलाई जाए परंतु वे होटलों के लिए अतिरिक्त आय का माध्यम होती हैं जो ग्राहकों के लिए आवश्यकता की चीजें या सुविधा उपलब्ध कराती हैं यथा ब्यूटीपार्लर, ट्रैवेल एजेंसी, कलात्मक चीजों की दुकान इत्यादि। साधारण तौर पर किसी भी होटल की साख तथा बाजार में उसकी प्रतिष्ठा का अनुमान मांग व पूर्ति की वित्तीय शक्तियों के आधार पर आंकी जाती है जिसके अंतर्गत अन्य पक्षों तथा सूचना एवं जानकारी, होटल में रूकने वाले ग्राहकों तथा उनके बहुमूल्य सामानों की सुरक्षा पर आश्रित होती है, रूकने वालों ग्राहकों में अधिकांशत: पर्यटक ही होते हैं।

31.2.3 त्वरित कार्यवाही के क्षेत्र

होटल को प्रभावित करने वाली समस्याएं सत्कार क्षेत्र से या फिर होटल उद्योग में उद्यमिता से संबंधित हो सकती हैं। सेवा क्षेत्र की समस्याओं से पर्यटकों का आना सीधे तौर पर प्रभावित होता है। अत: पर्यटन की दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण उद्योग है। होटल तथा रिसॉर्ट सत्कार उद्योग के अन्य अवयव हैं। यह व्यक्तिगत सेवा का व्यवसाय भी है जिसमें ग्राहकों को एक सम्मानीय मानव प्राणी के रूप में महत्व देने की अत्यधिक आवश्यकता है तथा इस उद्योग में किसी भी पर्यटक की आकांक्षाओं व अपेक्षाओं को साकार व संतुष्ट करने का नैतिक उत्तरदायित्व होता है।

हाउस कीपिंग गतिविधि के अन्तर्गत – कमरों की सफाई, उन्हें व्यवस्थित रखना, ओढ़ने बिछाने के कपड़े तथा चादरें गिलाफ, कम्बल तथा तौलिया आदि उपलब्ध कराना, स्वच्छ पेय जल, विद्युत व्यवस्था फर्नीचर तथा होटल में रूकने वाले ग्राहकों व पर्यटकों को कमरे में वांछित सेवा उपलब्ध कराना आता है और यही सबकुछ व्यवस्थित, त्वरित सेवा पर्यटकों का ध्यान किसी भी होटल की ओर आकर्षित करती है। असंतोषजनक, अव्यवस्थित, सुस्त तथा अस्वच्छ स्तरहीन हाउस कीपिंग से होटल तथा रिसॉर्ट की साख को धक्का लगता है।

भारत में अनेक होटल तथा रिसॉर्ट अपने आस-पास की भू दृश्यावलियां तथा उस इकाई के निर्माण के स्थान पर विशेष कोई ध्यान दिए बिना अनियोजित रूप से निर्मित और विकसित किए जाते हैं। होटल डिजाइन में होटल निर्माण के स्थान का चयन बहुत प्रभावशाली कारक होता है। वही बात होटल रिसॉर्ट के निर्माण में भी लागू होती है। अनियोजित ढंग से निर्मित किए गए होटल न सिर्फ शहरों का भू दृश्य व सौंदय को बिगाड़ते हैं बल्कि शहरों में उपलब्ध साफ क्षितिज रेखा में भी भौंडे रूप से व्यवधान पैदा करते हैं। उसी प्रकार किसी भी स्थान पर होटल निर्माण करते समय उस स्थान विशेष की मौसम संबंधी स्थितियों व विशेषताओं यथा – तेज चमक, सूरज की रौशनी, दिन व रात का तापमान, वर्षा, आर्दता, आने वाली आंधी इत्यादि का भी विशेष ध्यान देना चाहिए। साख निर्माण की समस्या होटल तथा रिसॉर्ट को बहुत अधिक प्रभावित करती हैं। ऐसा माना जाता है कि भारत में होटलों की गुणवत्ता तुलना में पश्चिमी देशों के होटल की तरह हो ही नहीं सकती हैं। होटलों के बारे में सामान्य सोच या कल्पना यही है कि किसी भी बड़े शहर में अग्रिम आरक्षण के बिना होटल में कमरे नहीं मिल सकते हैं। इसके विपरीत होटल चलाने वालों का भ्रम यह है कि उनकी होटल इकाई प्रथम श्रेणी के स्तर की है। परंतु सच्चाई तो यह है कि हमारे देश के अच्छे होटलों की सेवा सुविधाओं के स्तर की तुलना पश्चिमी देशों की मध्यम श्रेणी के होटलों से भी नहीं की जा सकती है।

इस देश में सामान्य पर्यटकों की 75% समस्याएं मुख्यत: असंतोषजनक आवास तथा उनमें दी जाने वाली सुविधाओं से संबंधित है। वर्ष 1945 में गठित सार्जेन्ट कमेटी ने सबसे पहले यह बताया था कि हमारे देश में विदेशी पर्यटकों के साथ-साथ देशी पर्यटकों की आवश्यकता के अनुरूप होटलों की उपलब्ध संख्या अपर्याप्त है। वर्ष 1956 में भारत सरकार के पर्यटन विभाग ने होटल आवास की उपलब्धता का सर्वेक्षण करवाया था। उस सर्वेक्षण प्रतिवेदन में भी भारत में उपलब्ध आवास सुविधा में होटल के कमरों की संख्या बढ़ाने की अनुशंसा की गई थी। उस वर्ष पर्यटन विभाग की प्राक्कलन समिति का भी मानना था कि इस क्षेत्र में स्थिति बहुत संतोषजनक नहीं है। वर्ष 1977 में हैदराबाद स्थित प्रशासकीय स्टाफ ट्रेनिंग कालेज तथा वर्ष 1982-83 में कलकत्ता स्थित भारतीय सांख्यिकी

संस्थान द्वारा किए गए सर्वेक्षण के अनुसार भारतीय पर्यटन उद्योग के विकास में अच्छे होटलों का अभाव एक सबसे बड़ा कारण है। अत: यह कहा जा सकता है कि लगभग पिछले 40 वर्षों में होटलों के संबंध में समिति और अवधारणा यथावत बनी हुई है।

कुछ पर्यटकों के पास सीमित बजट होता है, दूसरे शब्दों में अनेक पर्यटकों की खर्च करने की क्षमता सीमित होती है। इसीलिए वे ज्यादा मंहगे होटलों का उपयोग व उपभोग करने में असमर्थ होते हैं। इस दिशा में सस्ती दरों की निजी होटल भी ऐसे पर्यटकों की आवश्यकता व मांग की पूर्ति नहीं कर पाते हैं।

होटल उद्योग के विकास का तुलनात्मक अध्ययन यह बताता है कि वर्ष 1963 से 1984 तक होटल की संख्या 186 से बढ़कर 427 तक पहुँच गई है। हालाँकि यह वृद्धि अधिकांशत: 3 से 5 सितारा होटलों की श्रेणियों में हुई है। सरकारी स्तर पर अपने कर्मचारियों को दी जाने वाली अवकाश यात्रा सुविधा प्रदान किए जाने के कारण देशी पर्यटकों की संख्या में भी आशातीत वृद्धि हुई है।

यद्यपि जनता होटल के नाम पर कुछ लोकप्रिय सस्ती दरों की होटलों का निर्माण जरूर हुआ है पर उसकी संख्या बहुत कम है। इसके अतिरिक्त इसमें सेवा और सुविधा भी बहुत संतोषजनक और पर्याप्त नहीं है। न्यूनतम सुविधाओं के साथ स्वच्छ वातावरण तथा त्वरित सेवा प्रदान करने वाली सस्ती दरों की होटल विकसित करने के लिए प्रयास किया जाना चाहिए। नई दिल्ली में अशोक यात्री निवास के नाम से होटल के निर्माण व व्यावसायिक चालन से इस दिशा में श्री गणेश हो चुका है जिसमें मध्यम आय वर्ग के पर्यटकों को सस्ती आवास व्यवस्था उपलब्ध कराई जाती है।

होटल उद्योग में इच्छुक उद्यमियों के सामने आने वाली कुछ प्रमुख समस्याएं हैं – उपयुक्त भूमि की अनुपलब्धता, वित्तीय ऋणों की कमी, होटल उद्योग में काम करने वाले कुशल प्रशिक्षित अनुभवी योग्य मानव संसाधन की कमी। किसी भी शहर के नगरीय निर्माण योजना में होटलों के निर्माण के लिए अलग से भूमि आरक्षित व आवंटित की जानी चाहिए तथा उचित दरों पर यह भूमि होटल निर्माताओं को उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

आइ.एफ.सी.आई., आई.डी.बी.आई सरीखी वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने वाली संस्थाओं को कम ब्याज दरों पर होटल निर्माण को आसानी से वांछित ऋण उपलब्ध कराना चाहिए जिससे उस क्षेत्र के स्थानीय लोगों को अधिक से अधिक रोजगार व आय का अवसर मिल सके।

बोध प्रश्न 1

1) होटल तथा रिसॉर्ट पर्यटन संबंधी अधिसंरचना को क्यों महत्वपूर्ण अवयव माना जाता हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) होटल उद्योग के कुछ क्षेत्रों में और अधिक सुधार की आवश्यकता है, टिप्पणी करें।

.....

.....

.....

.....

.....

31.3 पर्यावरण ह्रास

होटल उद्योग एक आकर्षण उद्योग है परंतु उसके कुछ उत्तरदायित्व भी हैं। यह विकास सिर्फ संख्यात्मक नहीं बल्कि गुणवत्ता पूर्ण तथा पर्यावरण के अनुरूप भी होना चाहिए। भारत सरकार के पर्यावरण मंत्रालय ने इस दिशा में कुछ विशेष निर्देश तैयार किए हैं परंतु प्राय: व्यावसायिक और त्वरित आर्थिक लाभ के लिए उन नियमों/अधिनियमों तथा दिशा निर्देशों का उल्लंघन किया जाता है।

पर्यटन तथा आमोद-प्रमोद संबंधी गतिविधियां अनेक प्रकार से पर्यावरण को प्रभावित करती हैं। यदि पर्यटकों की यात्रा किसी स्थान पर निश्चित समय के अंतराल तक ही सीमित रहती है तो इससे पर्यावरण पर बहुत अधिक विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता है तथा इस प्रभाव को नियंत्रित भी किया जा सकता है। यद्यपि होटल तथा रिसॉर्ट निर्मित इकाइयां होती हैं जो आमोद-प्रमोद तथा मनोरंजन की गतिविधियां उपलब्ध कराती हैं। किसी भी होटल तथा रिसॉर्ट की उपयुक्त स्थिति तथा उसके भवनों की आकर्षण, सुंदर निर्माण शैली तथा वास्तुकला किसी भी भू दृश्यावली पर प्रभाव डालती है परंतु इन इकाइयों में रूकने वाले पर्यटकों द्वारा त्याज्य तथा विसर्जित गंदगियों के कारण स्थानीय गंदगी की समस्या खड़ी हो सकती है तथा इससे उस क्षेत्र विशेष में उपलब्ध जैव प्रजातियों-को नुकसान हो सकता है। बहुत से पर्यटक जो हिल रिसॉर्ट में रूकते हैं वहाँ से जाते समय उस स्थान पर अपने पीछे खाली डिब्बें, बोतलें, पॉलीथीन की थैलियां, टिशू पेपर, सेनेटरी पेपर तथा अन्य उपयोग की हुई अनुपयोगी चीजें छोड़ जाते हैं या लापरवाही से बिखरा जाते हैं। नैनीताल, कुल्लू, मनाली, शिमला, मसूरी तथा देश के पर्यावरण की दृष्टि से संवेदनशील कई अन्य इलाकों में उस स्थान विशेष तथा उसके आसपास के आसन्न स्थानों का प्राकृतिक सौंदर्य व परिवेश को यथावत बनाए रखने के लिए क्या-क्या किया जाना चाहिए और क्या-क्या नहीं किया जाना चाहिए। इस संबंध में सभी पर्यटकों/व्यक्तियों के विस्तृत दिशा निर्देशों की सूची प्रदान की जानी चाहिए। उसी प्रकार वाट रिसॉर्ट न सिर्फ समुद्री किनारों को निर्जनता, स्तब्धता तथा स्वच्छता को प्रभावित करते हैं बल्कि इन रिसॉर्टस से निकलने वाली विसर्जित गंदगी भी भारी मात्रा में समीपस्थ स्थित समुद्र या नदी के पानी में प्रवाहित की जाती है। पर्यटकों की इन गतिविधियों से न सिर्फ नदी तथा समुद्र के किनारों को क्षति ही पहुँचती है बल्कि पानी में रहने वाले जलीय जैव प्राणी को भी बाधा पहुँचती है। केरल, पुरी तथा गोवा के समुद्री तटों पर पर्यटक न सिर्फ गंदगी फैलाते हैं बल्कि तेज आवाज में रेडियो, ट्रांजिस्टर तथा टेप रिकार्डर भी बजाते हैं।

वनों में स्थापित फॉरेस्ट रिसॉर्ट से, वनों में लुप्त होने की कगार पर स्थित वन्य प्रजातियों को भी गंभीर खतरा होने का डर बना रहता है। जंगलों में पर्यटकों के अत्यधिक, अनियंत्रित आवागमन से जंगल के जानवर भयभीत हो जाते हैं। जंगल के अंदर उपलब्ध वन्य प्राणियों को प्राकृतिक अवस्था में उन्मुक्त रूप से विचरण करते हुए देखते समय पर्यटकों द्वारों उपयोग किए जाने वाले तेज प्रकाश के टॉर्च या सर्च लाइट तथा तेज आवाज में बजाए जाने वाले संगीत उपकरणों से भी वनों के प्राकृतिक पर्यावरण को अपरोक्ष रूप से व्यवधान पहुँचता है। फॉरेस्ट रिसॉर्ट स्थापित और विकसित करने के पीछे यही एक उद्देश्य है कि प्रकृति प्रेमी पर्यटक वनों के शांत, सुंदर, प्राकृतिक, पवित्र वातावरण का भरपूर आत्मिक आनन्द उठा सकें। यद्यपि अधिक संख्या में फॉरेस्ट रिसॉर्ट विकसित करने से आगे चलकर धीरे-धीरे वननाशन की समस्या में बदल सकती है।

पर्यटन महत्व के स्थलों पर प्राय: अनियोजित तथा बेतरतीबी से तथा काफी अधिक संख्या में संकुचित रूप से होटलों का निर्माण कर लिया जाता है। मसूरी जैसे हिल स्टेशन की यात्रा करने पर हमें यह देखने को मिलता है कि किस भद्दे ढंग से मसूरी के पहाड़ों के खूबसूरत ढलानों पर सीमेंट कांक्रीट के पक्के स्थाई निर्माण कार्य खड़े कर दिए गए हैं। यह अनियंत्रित, अनियोजित निर्माण कार्य ऐसे सुंदर पहाड़ी स्थलों की प्राकृतिक शोभा को न सिर्फ नष्ट ही करते हैं बल्कि उसके साथ ही साथ उन पहाड़ी स्थलों पर उपलब्ध सीमित संसाधनों पर भी अनावश्यक रूप से भारी दबाव डालते हैं। होटल भवन निर्माण के लिए प्रयुक्त की जाने वाली सीमेंट, ईंट, गिट्टी, रेत जैसी सामग्रियां भी बड़ी मात्रा में निर्माण स्थल के पास जमा कर दी जाती है। ऐसे होटल जो नदी के किनारे पर निर्माणाधीन हैं वे निर्माण कार्य के बाद बची हुई अनुपयोगी निर्माण सामग्री, कचरा तथा नालियों का पानी सब पास की नदी में ही डाल देते हैं। गंगा नदी का अपना एक विशेष धार्मिक महत्व है। इस पवित्र नदी के किनारे

स्थित अनेक शहर, विशेषकर वाराणसी शहर में गंगा के किनारे बहुत सारी होटल हैं जो इस प्रकार की व्यावहारिक समस्या के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। भारतवर्ष में रेलवे स्टेशनों तथा अन्तरराज्यीय बस अड्डों के आसपास पहले से ही स्थित आबाद घनी बस्तियों में भी अनेक छोटी-छोटी होटलें बना दी जाती हैं। यद्यपि पर्यटक रेलवे स्टेशन तथा अन्तरराज्यीय बस अड्डों के पास उनकी उपलब्धता के कारण ऐसे होटलों में रूकना पसंद करते हैं।

31.3.1 प्रत्यक्ष प्रमाण

पर्यावरण से संबंधित नियमों शर्तों को तोड़ा मरोड़ा तथा उनका उल्लंघन किया जाता है। पारिस्थितिकी तंत्र से संबंधित विभिन्न अध्ययनों तथा प्रचार तंत्र की सक्रिय भूमिका से अनेक ऐसे प्रकरण सामने आए हैं जहां अनेक होटल तथा रिसॉर्ट पर्यावरण ह्रास के लिए उत्तरदायी सिद्ध हुए हैं। इन समस्याओं के प्रत्यक्ष प्रमाणों के कुछ उदाहरण इस तथ्य को सिद्ध करने के लिए दिए जा रहे हैं।

नैनीताल के रिर्साट की प्रकृति के अध्ययन से पता चलता है कि इस क्षेत्र में अनेक शिकायतें दर्ज की गई हैं। रिसॉर्ट का प्रमुख संसाधन खतरे में है। बारबार आने वाले प्रमुख पर्यटकों में से 30% पर्यटकों ने नैनीताल के पास नौका विहार करने वाली भारी भीड़ के झीलों में अपनेपन या स्वतंत्र वातावरण की अनुभूति की कमी की शिकायत की है। 25% पर्यटकों ने पर्यटकों की आवासीय व्यवस्था के लिए बनाई गई लोकप्रिय आवासीय इकाइयों तथा फ्लैट्स के नवीनीकरण की माँग की है। 30% पर्याटकों ने उस क्षेत्र में उमड़ने वाली भारी भीड़ से संकुचित वातावरण तथा होने वाली घुटन के प्रति असंतोष व्यक्त किया है। यह बात ध्यान में लाई जानी चाहिए कि आमोद-प्रमोद के लिए तथा पर्यटन की दृष्टि व उद्देश्य से उत्तर प्रदेश पर्यटन विकास निग़म तथा पर्वतीय विकास निगम द्वारा बनाए गए रिसॉर्ट तथा अन्य आवासीय इकाइयां दुर्दशा की हालत में हैं। यह बात भी सामने आई है कि नैनीताल में, उस स्थान की पर्याप्त क्षमता से कहीं अधिक पर्यटक आते हैं। पर्यटक मौसम में वहां आने वाले पर्यटकों की बेतहाशा भीड़ तथा इसी अवधि में नैनीताल में उपलब्ध होटलों की कमी पड़ जाती है।

नैनीताल में स्थित तल्ली ताल और मल्ली ताल में जहां अत्याधिक पर्यटकों की भीड़ की चहल पहल रहती है वहां बहुत तेजी से पर्यावरण का ह्रास हो रहा है तथा वहां की स्थानीय इकाइयों पर भी भारी दबाव है।

अनेक झीलों तथा जलाशयों में पर्यटन विकास की प्रबल संभावना है हालाँकि इन झीलों और जलाशयों के पास पर्यटकों की भारी भीड़ से इन जलाशयों के अस्तित्व को गहरा संकट पैदा हो गया है। ऐसा बतलाया गया है कि अनेक शहरी जलाशयों को बचाने के लिए यदि जल्दी ही सुरक्षात्मक प्रयास और उपाय नहीं किए गए तो देश में पर्यटन की दृष्टि से प्रमुख जलाशयों तथा डल झील, ऊटी झील तथा कोडई कनाल की झीलें जल्दी ही समाप्त हो जाएंगी।

इन जलाशयों के विनाश के प्रमुख कारक हैं – अनियंत्रित पर्यटन, निरंकुश अनियोजित विकासीय कार्य, पहाड़ी ढलानों पर खेती, जनसंख्या वृद्धि, पेड़ों की कटाई तथा नित नए नए होने वाले निर्माण कार्य। डल झील के बारे में कहा गया है कि किसी समय में इस विस्तृत क्षेत्रफल में फैली इस झील का खुला साफ पानी का क्षेत्र घटकर अब मात्र 15 वर्ग कि.मी. ही रह गया है। दो दशकों में इस प्रसिद्ध झील का फैले हुए पानी का क्षेत्रफल 24 कि.मी. से घटकर सिर्फ 15.5 वर्ग कि.मी. ही रह गया है। इस झील का पानी भी प्रदूषित हो गया है। इस पर्यावरण ह्रास का मूल प्राथमिक कारण अतिक्रमण तथा रिहायशी कार्यो के लिए पानी के क्षेत्र को पाटकर निर्माण कार्य किया जाना है, इससे इस झील के सम्पूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र को गहरा झटका लगा है। यहां इस झील पर पर्यटकों के लिए विशेष प्रकार के सुंदर आवास व्यवस्था के रूप में उपलब्ध हाउस बोट (शिकारा) भी बहुत हद तक पर्यावरण ह्रास के लिए उत्तरदायी है। यही शिकारे डल झील में रहने वाले जैव प्रजातियों को भी नष्ट करते हैं। इसी तरह ऊटी झील को भी अनियंत्रित भारी भीड़ वाले पर्यटन के कारण काफी नुकसान हुआ है। वर्ष 1823 में जहां इस झील में फैले पानी का क्षेत्रफल 65 हैक्टेयर था वहीं अब यह झील घटकर, सिकुड़कर सिर्फ 14 हैक्टेयर रह गई है। वर्तमान में इसकी गहराई भी 14 मी. से घटकर मात्र 4.5 मी. ही रह गई है। यह माना जाता है कि ऊटी झील के आसपास कुकरमुत्ते की तरह उग रहे होटल तथा घरों के विसर्जित ठोस अपशिष्ट इस झील में ही प्रवाहित किए जाते हैं। इन सबके अतिरिक्त बढ़ती हुई शहरी आबादी का दबाव तथा गलत ढंग से की जाने वाली कृषि प्रणाली व व्यवस्था ने भी

इस झील के पतन में बड़ा योगदान दिया है। ऐसा बताया गया है कि कोडई कनाल झील की मूल गहराई भी अब मात्र एक तिहाई रह गई है। इस तालाब में पेट की बीमारी फैलाने वाले अनेक बैक्टेरिया पनप गए हैं। इस खंड की इकाई 28 में नमभूमि क्षेत्र या जलाशय में पर्यावरण के ह्रास के बारे में अलग से विस्तार में बताया गया है।

जैसा कि पहले ही ऊपर बताया गया है कि होटलों के अनियोजित ढंग से विकास के कारण पारिस्थितिकी तंत्र पर गहरा दुष्प्रभाव हो सकता है। हर शहर तथा पर्यटन स्थलों में कुछ मार्ग पूर्णत: निर्माण निषेध होना चाहिए क्योंकि इस प्रकार के निर्माण कार्यों से भूमि क्षरण में गति आती है। अभी हाल ही में हिमाचल प्रदेश के बार्गार स्थान में एक निर्माणाधीन होटल के कारण पर्यावरण ह्रास होना पाया गया है। निर्माण कार्य से प्रदुषण फैला है और यदि यही सिलसिला आगे भी इसी प्रकार अबोध रूप से चलता रहा तो इसके दुष्कर परिणाम होंगे। वन शोध संस्थान देहरादून के विशेषज्ञों के इस विषय में और अधिक गंभीर परीक्षण करने के निर्देश दिए गए हैं। इस विषय में रूड़की स्थित मुद्रा विज्ञान विभाग से भी अभिमत लिया गया है। जांच पड़ताल करने पर पाया गया है कि उक्त होटल का निर्माण स्थल सेस्मिक नक्शे के जोन, क्रमांक 5 में स्थित होना पाया गया है जिसके कारण उस क्षेत्र में अधिक भूकम्प आने की संभावना हो गई है।

पर्यावरण मंत्रालय भारत सरकार ने सभी निर्माणाधीन होटलों को कुछ निश्चित मापदंड, नियम, अधिनियम तथा शर्तों व दिशा निर्देश का पालन करना अनिवार्य कर दिया है। प्रदूषण नियंत्रण मंडलों ने भी सभी होटलों को अपने परिसर में प्रदूषण रोकने के लिए विशेष नियंत्रण उपकरण लगाने के निर्देश दिए हैं। यह उपकरण यह दर्शाते हैं कि होटलों द्वारा पैदा किए जाने वाले तथा फैलाए जाने वाले प्रदूषण सीमा में हैं अथवा नहीं। कलकत्ता की पार्क स्ट्रीट पर स्थित एक होटल ने अपने होटल में प्रदूषण नियंत्रण के उपकरण न लगाने के लिए प्रदेश के प्रदूषण नियंत्रण मंडल ने काफी नाराजगी व्यक्त की है। ऐसा ही एक अन्य उपकरण उसी राज्य की दीघा नामक जगह से भी सुनने में आया है तथा वह होटल पास में स्थित समुद्र में प्रदूषण फैलाता पाया गया है। पश्चिमी बंगाल के प्रदूषण नियंत्रण मंडल ने इन होटलों में प्रदूषण नियंत्रण उपकरण अनिवार्य रूप से लगाने के निर्देश दिए हैं।

देश के वन संसाधन बहुत बहुमूल्य और उतना ही महत्वपूर्ण है क्योंकि वह अपने आप में कई अदभुत तथा लुप्त होने वाली वन्य/वनस्पति प्रजातियों को समाहित किए रहता है। जैसा की पहले ही चर्चा की जा चुकी है कि यदि फॉरेस्ट रिसॉर्ट के विकास पर पर्याप्त गंभीर ध्यान न दिया गया तो यह महत्वपूर्ण अदभुत तथा विलक्षण वन्य प्रजातियों के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकता है। पर्यावरण मंत्रालय ने शेर को एक विलाण अदभुत बहुमूल्य धरोहर महत्व की प्रजाति करार दिया है। सरकार ने कई अन्य वन क्षेत्रों को आरक्षित घोषित कर दिया है जिसमें किसी भी प्रकार के शिकार या रोमांचक पर्यटन पर पूर्णत: कड़ा प्रतिबंध है। शेरों की प्रजाति के दीर्घजीवी संरक्षण के लिए एक विशेष योजना – प्रोजेक्ट टाइगर प्रारंभ की गई है जिसका एक मात्र उद्देश्य शेर प्रजाति को बचाए रखना है। अभी हाल ही में राजस्थान के सारिस्का प्राणी अभयारण्य के संरक्षित क्षेत्र में एक निजी होटल कम्पनी को वन भूमि आवंटित कर दी गई है। इस पर अनेक पर्यावरणवादी ने गहरी आपत्ति उठाई है। यह जान बूझकर पक्षपात पूर्ण आवंटन है जिसमें वन विभाग ने कतिपय कुछ अधिकारियों ने भ्रष्टाचार के कारण समझते बूझते हुए वन संरक्षण तथा पर्यावरण संरक्षण व प्रोजेक्ट टाइगर अधिनियम की उपेक्षा की है। राजस्थान में सारिस्का टाइगर रिजर्व की स्थापना 1978 में की गई थी जिसमें 368 बीघा जमीन को पूर्णत: आरक्षित क्षेत्र घोषित की गई थी। अभी हाल ही में अनेक होटल निर्माताओं तथा अनेक वनाधिकारियों द्वारा इन अनिवार्य महत्वपूर्ण वन अधिनियम के उल्लंघन किए जाने के संबंध में समाचार पत्रों में काफी भर्त्सना व आलोचना की तथा उसे सार्वजनिक रूप से जन सामान्य में प्रचारित किया।

31.3.2 प्रभाव–तात्कालिक एवं दूरगामी

पर्यावरण ह्रास में होटल तथा रिसॉर्ट का उत्तरदायित्व बहुआयामी है। हो सकता है इससे होने वाले दुष्प्रभावों को तत्काल रूप से भौतिक परिवर्तनों को देखा व पहचाना नहीं जाए या कुछ समय तक अनुभव भी नहीं किया जा सके परंतु कम समयावधि में अनुभव किए जाने वाले दुष्प्रभावों को नीचे बताया गया है।

अस्वस्थ्य परिवेश में वृद्धि – होटल चलाने वाले तथा मौज मस्ती करने वालों के बड़े समूह की गलत तथा अनुपयुक्त गतिविधियों के कारण अस्वस्थ परिवेश पैदा हो सकती है, हालाँकि कम समयावधि में होने वाले दुष्प्रभावों को तत्काल भौतिक रूप से अनुभव न हो। नालियों में गंदगी का विसर्जन, निर्माण संबंधी सामग्रियों का ढेर लगना, अनियोजित एवं अस्वच्छ समीपस्थ वातावरण तथा अनियंत्रित अव्यवस्थित सेवाएं असुविधाजनक परिवेश निर्मित करते हैं। मनोरंजन, आमोद-प्रमोद, मौज मस्ती करने वालों की गतिविधियां तथा खाने पीने का बचा सामान फेंकने तथा छोड़ने, खाली डिब्बे, दूध के डिब्बे, सेनेटरी नैपकिन्स, टायलेट रॉल्स, पेपर नैपकिन्स, अधिक हो हल्ला, समीपस्थ भूमि क्षेत्र को रौंदना तथा रेडियो और टेपरिकार्डर को ऊँची आवाज में बजाने से प्रदूषण होता है।

भद्दे निर्माण कार्य तथा घुटन – पर्यटक मौसम में प्रत्येक होटल तथा रिसॉर्ट अपनी भरपूर क्षमता में चलते हैं। हालाँकि कम आय वाले पर्यटक सस्ती होटलों की तलाश में रहते हैं। पिछले दो दशकों में ढेर सारे सस्ते होटलों की कुकुरमुत्ते की तरह भारी बाढ़ आई है। ये सस्ते होटल या तो निजी रिहायशी मकानों को होटल में बदलकर या फिर बिना किसी वैध स्वीकृति और अनुमति के मनमाने ढंग से निर्मित कर लिए जाते हैं। इस प्रकार यह अनियंत्रित, अव्यवस्थित, अनियोजित तथा भद्दे निर्माण से उस शहर विशेष या पर्यटन स्थल की स्वाभाविक शोभा बिगड़ती है बल्कि उस स्थान के मुख्य मार्गों तथा गलियों को भी ये आवंछित होटल संकरा कर देते हैं। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के पास इस तरह विकसित ढेर सारे सस्ते होटल इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। कलकत्ता तथा वाराणसी शहरों में भी लगभग ऐसे उदाहरण देखने को मिलते हैं।

ठहरने वालों की कमी – हालाँकि पर्यटकों का व्यवहार किसी भी होटल में उपलब्ध कराई जाने वाली सेवा व सुविधाओं के आधार पर निर्धारित होती है परंतु किसी भी होटल के बाहरी दिखावट तथा साख भी महत्वपूर्ण कारक है। ऐसे कई होटल हैं जिनके द्वारा पर्यावरण संबंधी शर्तों तथा दिशा निर्देशों का उल्लंघन करने की शिकायत मिलती है और इससे यह भी सिद्ध हो गया है कि इसके कारण इन होटलों की साख पर भी प्रश्न चिह्न लग गए हैं। किसी भी होटल या रिसॉर्ट का बाहरी आकर्षण, भद्दी निर्माण शैली, वास्तुकला, बनावट तथा सजावट भी पर्यटकों को अपनी और कम ही आकर्षित करेंगे।

तत्काल दिखाई पड़ने वाले या अनुभव किए जाने वाले इन परिणामों तथा दुष्प्रभावों के अलावा कुछ गंभीर प्रवृति के भी दुष्प्रभाव हो सकते हैं। हालाँकि होटल तथा रिसॉर्ट इस प्रकार के गंभीर दुष्परिणामों के लिए सीधे रूप से उत्तरदायी नहीं होते हैं फिर भी उनकी एक बड़ी अहम भूमिका होती है। होटलों तथा रिसॉर्टस के कारण होने वाले कुछ तात्कालिक तथा दूरगामी परिणामों को नीचे बताया जा रहा है।

पर्यावरण ह्रास और पर्यटन – होटल तथा रिसॉर्ट पर्यटन के महत्वपूर्ण अवयव हैं। यदि ये अवयव कमजोर हो गए तो नि:संदेह रूप से पर्यटन उद्योग को प्रभावित करेंगे। जैसा कि पहले भी चर्चा की जा चुकी है कि बहुत जल्दी होटल तथा रिसॉर्ट की अधिवासिता अनुपात कम हो जाएगा। किसी भी होटल की अच्छी स्थिति तथा स्वस्थय परिवेश से उसकी साख बढ़ेगी और साथ ही साथ आय भी। इसके अतिरिक्त ये आवासीय इकाइयां अपने आसपास के वातावरण को सुंदर बनाने में पर्याप्त योगदान दे सकते हैं। होटलों का विकास तथा देखरेख इस प्रकार होनी चाहिए ताकि खराब दिखने वाली भू दृश्यावली छिप जाए तथा पर्यावरण में गुणवत्ता आए। पेड़ पौधे, बेल, लता, झाड़ियां तथा फूलों के रोपित करने से आसपास के वातावरण की सुंदरता बढ़ेगी ही।

मिट्टी का क्षरण – होटलों तथा रिसॉर्ट्स के अनियोजित विकास से मिट्टी पर हानिकारक असर हो सकता है। सरकार द्वारा कुछ क्षेत्रों को संरक्षित क्षेत्र के रूप में आरक्षित कर दिया जाता है। जैसे ही इस प्रकार के निर्माण कार्य प्रारंभ होते हैं तो उस स्थान विशेष के पोषण चक्र में बाधा उत्पन्न होती है तथा वहां के मिट्टी के पोषक तत्व भी खत्म हो जाते हैं। पहाड़ी ढलानों में मिट्टी का क्षरण तथा स्खलन बहुत तेजी से होता है। हिल रिसॉर्ट प्राय: ढलान वाली पहाड़ी जमीन पर ही बनाए जाते हैं।

वननाशन तथा प्रजातियों की कमी – बाघ आरक्षित अभ्यारण्य में निजी होटल निर्माता को भूमि आवंटन किए जाने वाला सारिस्का प्रकरण मात्र एक छोटा सा नमूना है। स्थानीय तौर पर किए जाने वाला अतिक्रमण तथा धीरे-धीरे वन क्षेत्रों में की जाने वाली पेड़ों की अवैध कटाई के कारण अनेक

जैव प्रजातियों के समाप्त होने का खतरा बढ़ता जा रहा है। वनों की पारिस्थितिकी तंत्र में बहुत सारी प्रक्रिया में अन्तर्संबंधित तथा परस्पर आपस में गुंथी रहती है तथा इस प्राकृतिक श्रृंखला में एक भी कड़ी टूटने से गंभीर परिणाम हो सकते हैं जिसकी मिलीजुली परस्पर होने वाली प्रतिक्रियाओं से अनेक वन प्रजातियों के नष्ट होने का खतरा बढ़ जाता है। किसी प्राणी या कृषि की जंगली हमेशा के लिए समाप्त हो सकती है तथा उस प्रजाति के और बढ़ाने तथा पनपने के लिए वांछित जैविक परिस्थितियां भी हमेशा-हमेशा के लिए विनाश के गर्त में चली जाती हैं।

मौसम तथा शुष्कता में परिवर्तन – यदि होटल तथा रिसॉर्ट बनाने के लिए वन काटे जाते हैं तो इससे वननाशन की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलेगा। वननाशन के कारण आसपास के इलाकों में पंक्तियां कम हो जाती हैं जिससे अन्ततः वर्षा भी कम होती है। वननाशन से धीरे-धीरे शुष्क प्रकार की वनस्पति की पैदावार बढ़ती है।

जलीय पौधों का विनाश – ऐसी होटल या रिसॉर्ट जो किसी जलाशय, नदी या समुद्र के किनारे बने रहते हैं वे आसपास के जलीय क्षेत्रों में उपलब्ध वनस्पतियों के विनाश में योगदान देते हैं। इन रिसॉर्ट में रूकने वाले तथा आमोद-प्रमोद करने वाले सैलानी, अपने ठहराव के दौरान पास के वातावरण में गंदगी फैलाते हैं तथा तेज आवाज में संगीत सुनकर ध्वनि प्रदूषण फैलाते हैं। ये पर्यटक कई बार झीलों से मछलियों की शिकार करते हैं तथा पानी में विविध प्रकार की नावें तथा मोटर बोट चलाने में व्यस्त रहते हैं। इन सब गतिविधियों से पानी के अंदर पनपने वाली वनस्पतियां प्रभावित होती हैं। इन जलाशयों, नदियों तथा समुद्र के पास स्थित रिसॉर्ट की गंदगी तथा नालियों का विसर्जित दूषित पानी तथा ठोस अपशिष्ट का इस पानी में प्रवाहित किए जाने से, जलाशयों तथा नदी में मिट्टी जमने की प्रक्रिया तेजी से शुरू हो जाती है। हमारे देश में कई जलाशय धीरे-धीरे इसी कारण घटते और टूटते जा रहे हैं। श्रीनगर का डल झील इसका जीवित प्रमाण है।

सांस्कृतिक ह्रास – वन प्रधान तथा आदिवासियों के रहने वाले क्षेत्रों में होटल तथा रिसॉर्ट के विकास से वहां के रहने वाले स्थानीय व्यक्तियों को नियमित निर्धारित जीवन शैली में परिवर्तन आ सकता है क्योंकि होटल तथा रिसॉर्ट भवन स्थाई भवन होते हैं। ऐसे क्षेत्रों में पर्यटकों का आना जाना भी लगभग स्थाई हो जाता है। आदिवासियों तथा वनों में रहने वाले सीधे-सीधे सरल लोगों का पर्यटकों से लगातार सीधे सम्पर्क इन लोगों के सही विकास में सहायक नहीं होते हैं क्योंकि पर्यटकों का उद्देश्य कोई शैक्षणिक न होकर मात्र सामयिक रूप से मनोरंजन तथा यथा संभव उस क्षेत्र का दोहन भी होता है।

31.4 बचाव के उपाय

होटल तथा रिसॉर्ट से होने वाले पर्यावरण ह्रास के प्रति धीरे-धीरे लोगों में जागरूकता बढ़ रही है। हालाँकि सरकार तथा विभिन्न वर्गों के लोगों को पर्यावरण के इस ह्रास को रोकने के साधन तथा



चित्र 3 : नई दिल्ली में एक होटल

इसको नियंत्रित करने के तरीके ढूंढने के लिए जागृत करना ही पर्याप्त नहीं है। यह उत्तरदायित्व प्रत्येक व्यक्ति तथा संस्था का भी है विशेषकर जो किसी भी दृष्टि से पर्यटन उद्योग से जुड़ा हुआ है। पर चाहे वह होटल में रूकने वाला कोई पर्यटक हो, होटल में कार्यरत कर्मचारी या फिर वो टूर ऑपरेटर्स या ट्रैवेल एजेंसी की संस्था भी हो सकती है। पर्यटन ह्रास को रोकने में पर्याप्त सतर्कता और यथासंभव प्रयास अनेक वर्गों द्वारा की जा सकती है। उनमें से कुछ प्रमुख वर्ग निम्नानुसार हैं।

31.4.1 सरकार की भूमिका

सरकार की भूमिका सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। सरकार को चाहिए कि इसके लिए कड़े नियम



चित्र 4 : गोआ में कॉम्प्रेंस विला



चित्र 5 : पर्यावरण प्रिय आवास

निर्धारित करें और यह भी देखे कि इन नियमों का उतना ही सख्ती से पालन भी हो। यदि पर्यावरण संरक्षण अधिनियम का कड़ाई से पालन होता तो शायद सारिस्का अभयारण्य में हुई दुर्घटना नहीं होती। पर्यावरण मंत्रालय को चाहिए कि पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए विभिन्न उपकरणों को होटल तथा रिसॉर्ट में अनिवार्य रूप से लगवाएं। जिस प्रकार कलकत्ता की पार्क स्ट्रीट तथा दीघा में स्थित होटलों में लगाए गए हैं। पर्यावरण मंत्रालय को चाहिए कि भूकम्प से संबंधित संवेदनशील क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दे। अभी हाल ही में बागौर में एक होटल मालिक को 1.00 लाख रुपए की जुर्माना राशि भुगतान करने का आदेश दिए हैं। साथ ही साथ देहरादून स्थित वन शोध संस्थान को यह भी जांच करने के आदेश दिए गए हैं कि क्या उस होटल निर्माण से भूमिक्षरण व स्खलन को बढ़ावा

NMDC-210

मिलेगा? संक्षिप्त में पर्यावरण के नाजुक संवेदनशील क्षेत्रों में होटल तथा रिसॉर्ट अतिक्रमण न करे इसको सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त कठोर नियम व कानून बनाए गए हैं। जरूरत सिर्फ पर्याप्त संवेदनशीलता तथा दृढ़ इच्छा शक्ति की तथा प्रचलित उपलब्ध नियमों कायदों को कड़ाई से लागू किए जाने की है।

31.4.2 होटल मालिकों की भूमिका

होटल व्यवसाय काफी तड़क भड़क, चमकदार तथा बाहरी दिखावे का व्यवसाय है। चूंकि पर्यटकों की ओर से आवास व्यवस्था की मांग बढ़ती जा रही है पर्यावरण के प्रति निर्धारित मापदंडों की परवाह किए बिना अनेक होटलों का निर्माण हो रहा है। यहां होटल निर्माता तथा संचालक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। सबसे पहले होटल बनवाने वाले ऐसी जगहों का चयन करें जहां होटल निर्माण की गतिविधि आस पास के भू दृश्य को खराब न करे तथा वह निर्माण कार्य पूर्णत: पर्यावरण के प्रति मित्रवत हो। उसी प्रकार होटल की नालियों का गंदा पाती तथा विसर्जित किए जाने वाले ठोस अपशिष्ट के विसर्जन के प्रति भी सतर्क रहें। तीसरे वे पर्यटकों को तथा स्वयं होटल में काम करने वाले अपने सभी मातहत अधिकारियों व कर्मचारियों को इस दिशा में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए उस विषय में पर्याप्त दिशा निर्देश की सूची उपलब्ध कराए और चौथे होटल निर्माता ऐसी निजी कम्पनियों से सहायता प्राप्त करे जो पर्यावरण के अनुरूप उपयुक्त पौधे लगाने तथा हरियाली बढ़ाने का कार्य करती हैं।

31.4.3 संचार माध्यमों तथा गैर-सरकारी संस्थाओं की भूमिका

पर्यावरण ह्रास के प्रति जागरूकता मुख्यत: संचार माध्यमो, गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा पैदा की जानी चाहिए और फैलाना चाहिए। विभिन्न रिपोर्टों के प्रकाशन के बाद ही इस प्रकार की संस्थाएं सक्रिय और गतिशील हो जाती हैं। गैर सरकारी संस्थाओं को पर्यावरण ह्रास पर पर्याप्त और अधिक सर्वेक्षण और शोध कार्य करना चाहिए। दिल्ली स्थित विज्ञान तथा पर्यावरण संस्था तथा अनेक गैर सरकारी संस्थाएं इस दिशा में बहुत गंभीरता से कार्य कर रही हैं

31.4.4 मौज/मस्ती करने वाले पर्यटकों की भूमिका

मौज-मस्ती करने वाले पर्यटकों की अनुशासनहीन गतिविधियां भी पर्यावरण ह्रास के लिए बहुत सीमा तक उत्तरदायी हैं। मनोरंजन तथा विविध आमोद-प्रमोद की व्यवस्था कराने वालों को होटलों तथा रिसॉर्टस से अलग नहीं रखा जा सकता है क्योंकि उनका मुख्य उद्देश्य अपने ग्राहकों को मनोरंजन तथा मौज मस्ती उपलब्ध कराना होता है। मौज मस्ती उपलब्ध कराने वालों को भी अनुशासित रहना चाहिए तथा पर्यटन स्थलों में उन्हें पर्यटकों द्वारा किसी प्रकार का कचरा या प्रयुक्त सामान फेंकने नहीं देना चाहिए। उन्हें इस इलाके को बरबाद नहीं करना चाहिए न ही किसी और को किसी प्रकार का प्रदूषण फैलाने देना चाहिए।

31.4.5 शहर नियोजकों और प्रशासकों की भूमिका

शहर नियोजकों को होटल निर्माताओं के लिए इस ढंग से उपयुक्त जमीन आवंटित करनी चाहिए कि होटल निर्माण के बाद भी शहर में पर्याप्त जगह हो तथा शहर में ज्यादा भीड़ भी न हो। इसके साथ ही निर्मित होटलों से शहर में दिखने वाली स्पष्ट और साफ क्षितिज रेखा में भी व्यवधान न पैदा हो। प्रशासकों को चाहिए कि किसी भी दशा में होटलों के अनधिकृत निर्माण की अनुमति न दी जाए। उन्हें इस बात का भी ख्याल रखना चाहिए कि शहर में मौजूद होटल और रिसॉर्ट किसी भी ढंग से शहर में प्रदूषण न फैलाएँ।

बोध प्रश्न 2

1) होटल तथा रिसॉर्ट पर्यावरण के स्तर को किस तरह प्रभावित करते हैं ?

.....

.....

2) होटल तथा रिसॉर्ट के द्वारा पर्यावरण के ह्रास के तात्कालिक परिणाम क्या होते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

3) पर्यावरण को खराब करने से किस प्रकार होटल तथा रिसॉर्ट पर नियंत्रण रखा जा सकता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

31.5 सारांश

होटल तथा रिसॉर्ट, किसी भी पर्यटन अधिसंरचना के महत्वपूर्ण अंग हैं और वे अपने आप में भी एक अलग उद्योग बन गए हैं। बदलते हुए आर्थिक परिवेश, व्यवसाय में वृद्धि, आमोद-प्रमोद व अवकाश का प्रजातंत्रीकरण तथा अधिक संख्या में लोगों के द्वारा पर्यटन का उपभोग करने की प्रवृत्ति ने पर्यटन के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। होटल की परिकल्पना मुख्यत: पश्चिमी देशों की है। भारत में होटल तथा रिसॉर्ट का विकास कमजोरियों से भरा हुआ है। होटलों को अनियोजित, अनियंत्रित निर्माण से ही पर्यावरण प्रभावित होता है। ऐसी स्थिति लाने में पर्यटकों का भी हाथ है। पर्यावरण के गिरावट के प्रति संचार माध्यमों तथा गैर सरकारी संस्थाओं की बढ़ी हुई सक्रिय भूमिका के कारण इस गिरावट को रोकने के लिए विभिन्न संस्थाओं की भूमिका व योगदान की आवश्यकता है।

31.6 शब्दावली

अधिसंरचना	:	किसी भी संस्था या अर्थव्यवस्था का आधारभूत ढाँचा तथा पूंजी।
विरासत	:	विरासत महत्व के पचास वर्ष से अधिक पुराने भवनों, स्मारकों, महलों, किलों को परिवर्तित कर बनाए गए होटल।
सैस्मिक मैप	:	भूकम्प का पता लगाने के लिए बनाए जाने वाले नक्शे।
मनोरंजन करने वाली	:	पर्यटकों का वह समूह जो मौज मस्ती की गतिविधियों में व्यस्त हो।

31.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें भाग 31.2

2) देखें उपभाग 31.2.3

बोध प्रश्न 2

1) देखें भाग 31.3

2) देखें उपभाग 31.3.2

3) देखें उपभाग 31.3.3

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

लायेक फतेह	:	*आवर एन्वायरमेंट*, नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया	
		द स्टेट ऑफ इंडियाज एन्वायरमेंट द फर्स्ट सिटीजन रिपोर्ट, सेन्टर फार साइन्स एंड एन्वायरमेंट, नई दिल्ली, 1982	
		द स्टेट ऑफ इंडियाज एन्वायरमेंट द सेकेंड सिटीजन रिपोर्ट, सेन्टर फार साइन्स एंड एन्वायरमेंट, नई दिल्ली, 1985.	
सुहिता चोपड़ा	:	*टूरिज्म डेवलेपमेंट इन इंड़िया*	नई दिल्ली, 1993
वीरेन्द्र कौल	:	*टूरिज्म एंड इकॉनोमी*	नई दिल्ली, 1994

इस खंड के लिए अभ्यास

अभ्यास 1

इस खंड की इकाई 28 में दी गई परिभाषा के आधार पर आपके शहर के आसंपास के उपलब्ध नमभूमि क्षेत्रों को पहचानिए। उनकी लम्बाई, चौड़ाई, परिधि, क्षेत्रफल तथा गहराई नापिए तथा यह पता लगाइए कि वे कौन कौन सी वनस्पतियों तथा जैव प्रजातियों को आश्रय देते हैं?

अभ्यास 2

अपने शहर का सर्वेक्षण करें तथा उन व्यक्तियों की सूची बनाएं जो एक पर्यटक के रूप में समुद्री तट देख आए हैं। पर्यटकों द्वारा समुद्रीय रिसॉर्ट पर किए जाने वाले प्रदूषण के संबंध में उनकी जागरूकता और अनुभव की जानकारी लीजिए। यदि वे इस विषय में जागरूक नहीं हैं तो उन्हें पर्यटकों के इस व्यवहार के बारे में अवगत व संबोधित करें।

अभ्यास 3

यदि आप समुद्र के किनारे लगे हुए किसी गांव या शहर में रहते हैं तो किसी भी समुद्री तट पर जाएं और यह देखें कि वहां लोग किस प्रकार और कितनी गंदगी फैलाते हैं। यदि आपके गांव या शहर में कोई टूरिस्ट रिसॉर्ट है तो वहां आने वाले पर्यटकों के व्यवहार का गंभीरता से अध्ययन करें। गंदगी के विसर्जन की पर्यटकों की आदतों तथा व्यावहार पर एक टिप्पणी तैयार करें। कुछ लोगों से इस बारे में बात करने की कोशिश करें।

अभ्यास 4

आप अपने शहर के किसी होटल में जाएं। वहां पर्यटकों व ग्राहकों को दी जाने वाली संस्थाओं के आधार पर होटल की श्रेणी का पता लगाएँ। वहां उस होटल में गंदगी के विसर्जन की व्यवस्था के बारे में पता लगाएं। एक टिप्पणी तैयार करें कि क्या काम में लाया जाने वाला तरीका या व्यवस्था उपयुक्त है अथवा नहीं? सलाह सत्र में अपने साथियों तथा अपने प्रशिक्षक सलाहकार से इस विषय पर पर्याप्त चर्चा करें।

NOTES

NOTES

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
प्रयागराज

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥



सेक्टर-एफ, शान्तिपुरम, फाफामऊ, प्रयागराज-211021
www.uprtou.ac.in
टोल फ्री नम्बर - 1800-120-111-333